ओ३म्

तिहास
ार्य प्रतिनिधि सभा
तर प्रदेश

१८८६ - १९९२

ओ३म्

आर्य समाज की प्रगतियों एवं आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश

का

७५ वर्षीय इतिहास

★
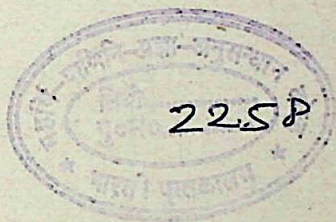
सम्पादक
शिवदयालु

प्रकाशक
हीरक जयन्ती समिति, आ० प्र० सभा,
उत्तर प्रदेश, लखनऊ
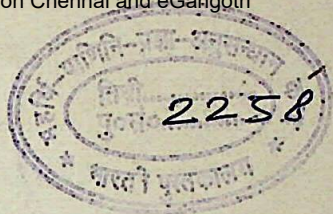
नम्र-निवेदन

उत्तरप्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसामाजिक गति विधियों से सम्बन्ध रखने वाला यह ७५ वर्षीय इतिहास पाठकों के सामने है। प्रतिनिधि सभा को स्थापित हुये ७५ वर्ष हो गए। उसी के उपलक्ष्य में हीरक जयन्ती महोत्सव मनाया जा रहा है। और इस इतिहास की रचना हुई है। सन् १९१२ में सभा के २५ वर्ष पूरे होने पर गुरुकुल वृन्दावन भूमि में रजत जयन्ती उत्सव और सन् १९३७ में ५० वर्ष होने पर स्वर्ण जयन्ती उत्सव मेरठ में मनाया गया था। रजत जयन्ती के समय वैदिक वैजयन्ती नामक सभा का २५ वर्षीय इतिहास मुद्रित हुआ था। सन् १९३७ में भी सभा के आदेश से मैंने स्वर्ण जयन्ती इतिहास लिखा था परन्तु वह प्रकाशित नहीं हो पाया। सभा कार्यालय में कहीं लुप्त हो गया। अब इस हीरक जयन्ती का इतिहास लिखने का कार्य भी आर्यप्रतिनिधि सभा ने मुझे सौंपा था और मैंने एतदर्थ पर्याप्त सामग्री का संकलन भी कर लिया था परन्तु मैं अपने हृदय रोग के कारण इतिहास लिखने का कार्य न कर सका। इसी बीच में मेरे छोटे भाई श्री सतीशंकर शर्मा अत्यन्त रुग्ण हो गए और १८ अप्रैल १९६३ को उनका देहावसान भी हो गया। इन सब दैवी विपत्तियों के कारण मैं इतिहास लिखने में समर्थ न हो सका।

अन्ततः मेरे तथा सभा प्रधान श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री एम० पी० के अनुरोध से मेरठ निवासी श्री पं० शिवदयालु जी ने यह कार्य बड़ी परिश्रम शीलता और तन्मयता से सुयोग्यता पूर्वक सम्पन्न किया। श्री पं० शिवदयालु जी का परिचय देने की आवश्यकता नहीं, उन्हें आर्य जगत् भलीभांति जानता है। क्योंकि वे आर्यप्रतिनिधि सभा के मन्त्री रह चुके हैं। कर्मठ कार्यकर्त्ता समाज सेवी तथा प्रसिद्ध आर्य नेता हैं। देश के स्वातंत्र्य आन्दोलन में भी उन्होंने पद-प्रभुता की कुछ भी परवाह न कर निःस्वार्थ भाव से पूर्ण सहयोग दिया और अनेक कष्ट सहे। आप संस्कृत, हिन्दी

और अंग्रेजी के विद्वान् एवं सुलेखक हैं। आपने इन भाषाओं में कई ग्रन्थ भी लिखे हैं। ऐसे अनुभवी लेखक द्वारा सभा के ७५ वर्षीय इतिहास का लिखा जाना अवश्य ही गौरव की बात है। मैं अपनी और सभा की ओर सें पण्डित जी को धन्यवाद देता हूं।

—हरिशंकर शर्मा

सम्पादकीय-वक्तव्य

श्री पं० हरिशंकर जी शर्मा एवं सभा प्रधान श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री के आदेशानुसार मैं ६ मार्च को आगरे पहुंचा। श्री शर्मा जी से इतिहास की रूपरेखा के सम्बन्ध में विचार विनिमय हुआ और जो कुछ सामग्री श्री पण्डित जी ने संकलित की हुई थी उसको लेकर १५ मार्च को लखनऊ सभा-भवन पहुंच कर इतिहास लिखने का कार्य आरम्भ कर दिया। पूरा एक मास अनवरत परिश्रम कर यह ४५० पृष्ठ का इतिहास लिखकर तैयार किया जो आर्य जनता की सेवा में प्रस्तुत है।

प्रान्त के बहुत से प्रमुख आर्य समाजों ने भी अपने वृतान्त भेजने का कष्ट नहीं किया। जिसकी यत्किंचित् पूर्ति सभा के काग़जात की छानबीन करके की गई है।

इतिहास को दो भागों में विभक्त किया गया है। प्रथम भाग में १८ अध्याय हैं। प्रथम एवं द्वितीय अध्यायों में उत्तर प्रदेश के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय गौरव का उल्लेख कर महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के उत्तरा खंडमें सं० १९११ वि० से योगियों की खोज से आरम्भ कर सं० १९४१ वि० में आगरा से अंतिम विदा लेने सम्बन्धी ऋषि जीवन गाथाओं एवं प्रचार यात्राओं का चित्रण किया गया है। तृतीय अध्याय में सभा की स्थापना (दिसम्बर सन् १८८६ ई० से लेकर आज तक की समस्त गति विधियों एवं मौलिक कार्यों की चर्चा की गई है। चतुर्थ एवं पंचम अध्यायों में मथुरा जन्म-शताब्दी एवं दीक्षा-शताब्दी मेरठ व बरेली के आर्य महासम्मेलनों एवं देश की स्वाधीनता हित आर्यसमाज द्वारा किये गए बलिदानों तथा हैदराबाद सत्याग्रह व हिन्दी रक्षा आन्दोलन में प्रान्त के योगदान का वर्णन किया गया है। छठे अध्याय में आर्यसमाज द्वारा की गई धार्मिक क्रान्ति का उल्लेख किया गया है। अध्याय ७ से ११ तक शुद्धि, अछूतोद्धार, गोरक्षा, समाजसुधार एवं सेवाकार्यों का संक्षिप्त वर्णन है। १२ वां अध्याय आर्य-कुमारसभा एवं आर्यवीरदल की गतिविधियों का परिचायक है। अध्याय १३ में स्त्री शिक्षा एवं मातृ-शक्ति उद्बोधन सम्बन्धी कार्यों का दिग्दर्शन पाठकों को उपलब्ध होगा। १४ वें तथा १५ वें अध्यायों में आर्यमित्र एवं आर्य आश्रमों का वर्णन है। अध्याय १६ में शिक्षा के क्षेत्र में आर्यसमाज के

क्रान्तिकारी कार्य कलापों का दिग्दर्शन किया गया है। अध्याय १७ में प्र के स्वर्गीय प्रसिद्ध आर्य विद्वानों, नेताओं, व्याख्याताओं, शास्त्रार्थ मह रथियों, साहित्यिकों, कवियों एवं कर्मठ कार्यकर्त्ताओं का किंचित् परि कराने का प्रयत्न किया है तथा अध्याय १८ में वर्तमान आर्यविद्वा आदि का वर्णन दिया गया है।

इतिहास के द्वितीय भाग में उत्तर प्रदेश के ५४ जिलों के आर्यसमाजों कार्य विस्तार का संक्षिप्त चित्रण जिला क्रम से किया गया है। अन्त में सभा प्रधान एवं मंत्रियों की नामावली, सभा द्वारा प्रकाशित ग्रन्थों की सूची, उपदेशक संघ के मान्य सदस्यों के शुभनाम तथा सभा के आरम्भ से ले आज तक के उपदेशकों प्रचारकों के नामों की सूचियाँ दी गई हैं जिन्हो नाना कष्टों का सामना करते हुये ऋषि के सन्देश को ग्राम २ और घर पहुंचाने का प्रयत्न किया है।

इतिहास में अनेक ऐसे महानुभावों का परिचय नहीं दिया जा सका, जिनका परिचय देना इतिहास के गौरव को बढ़ाने वाला होता। मैं उन सब ही महानुभावों से क्षमा का प्रार्थी हूं। समय की न्यूनता एवं इतिहास के निर्धारित कलेवर के कारण आर्यसमाजों एवं संस्थाओं का परिचय भी जितना देना चाहिये था, नहीं दिया जा सका। इसके लिये उन आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं से क्षमा याचना करता हूं। अनेक समाजों ने इतिहास छप चुकने के बाद परिचय भेजने का कष्टकिया है उनका वृत्तान्त तो बिल्कुल भी छापने मेंमैं असमर्थ हो गया। आशा है वह इसके लिये मुझे दोषी न ठहरा एंगे।

जिस जल्दी में इतिहास लिखा गया है एवं जिन नाना बधाओं का सामना करते हुए इतिहास छपा है उसमें अनेक त्रुटियों का रह जाना स्वाभाविक है। इसके लिये पाठक क्षमा करेंगे।

अन्त में श्री पं० हरिशंकर जी शर्मा का अत्यन्त आभार मानता हूं जिन्होंने इतिहास लिखने में मेरा पूरा २ मार्ग दर्शन किया और बिना उनके मार्ग दर्शन के इस अल्पकाल में इसका लिखना सम्भव ही न होता। दूसरे मैं श्री चन्द्रदत्त जी तिवारी का भी विशेष आभार मानता हूं कि जिन्होंने इसके छपवाने, कागज उपलब्ध करने, ब्लाक बनवाने आदि में विशेष परिश्रम किया है। श्री तिवारी जी के इस अनथक परिश्रम बिना इसका समय पर मुद्रित होना भी सम्भव न था।

—शिवदयालु

विषय-सूची

प्रथम-भाग

द्वितीय भाग

आर्य समाज विस्तार तथा कार्य परिचय

परिशिष्ट

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी।

प्रथम-भाग

१ उत्तर प्रदेश-दिग्दर्शन

जनसंख्या की दृष्टि से उत्तरप्रदेश भारतवर्ष का सबसे बड़ा प्रदेश है। इसका प्राचीन नाम ब्रह्मावर्त व ब्रह्मर्षि प्रदेश के नाम से प्रसिद्ध था। यह प्रदेश ब्रह्म-वेत्ता ऋषियों का विशेष केन्द्र रहा है। इस प्रदेश में ऐसे महान् योगी जन्मे हैं जिन्होंने यौगिक विभूतियों का विश्व में विस्तार किया। परम पावनी वैदिक ऋचाओं पर गम्भीर चिन्तन कर बड़े २ आख्यान ग्रन्थ उपनिषद्, दर्शन आदि का यहां निर्माण हुआ। रामायण और महाभारत जैसे संस्कृत महा काव्यों की रचना भी इसी प्रदेश में हुई थी।

इस प्रदेश में गंगा एवं यमुना नामक भारत की दो महती पुण्य सलिला सरितायें प्रवाहित हैं। इतना ही नहीं, इन दोनों पयस्विनियो के उद्गम स्थान गंगोत्री और यमुनोत्री नामक पर्वत कन्दरायें भी इसी प्रदेश में हैं। उत्तर प्रदेश का केदारखन्ड जहां ध्रुवधारा की धवल धारा प्रकट हुई है और जहां आदि जगत् गुरू शंकराचार्य ने समाधि ली थी, आज सम्पूर्ण भारत का महान् तीर्थ बना हुआ है। भारत का ऐसा कोई प्रदेश नहीं जहां के यात्री सहस्त्रों की संख्या में प्रति वर्ष इस खण्ड में पदार्पण न करते हों।

भागीरथी तट पर दूसरा प्रसिद्ध तीर्थ बदरीनारायण है जहां कभी महर्षि वेदव्यास के गुरू बदरी ऋषि ने तप किया था। और जिनके पुनीत नाम से यह प्रदेश प्रसिद्धि को प्राप्त हुआ।

इसी प्रदेश में गंगा यमुना का सुन्दर संगम प्रयागराज भी है जिसको महा-कवि तुलसीदास ने अपने "रामचरित मानस" में तीर्थराज की संज्ञा दी है।

इसी प्रयागराज के निकट भरद्वाज ऋषि का महान् आश्रम था। जहां प्रवास काल में मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने कुछ काल निवास कर दिव्य अस्त्र शस्त्रों के संचालन की शिक्षा प्राप्त की थी।

ऐतरेय ब्राह्मण के लेखानुसार इसी प्रदेश के गंगा यमुना के तटों पर भारत के अत्यन्त प्राचीन चक्रवर्ती सम्राट् भरत के चार में से दो ऐन्द्र महाभिषेक (International Coronations) हुए थे। उस समय एशिया के क्रमशः ५५ और ७८ नरेशों ने सम्राट् भरत के प्रति बड़ी श्रद्धा से अपनी मान्यता प्रदर्शित की थी। कालान्तर में इसी प्रतापी सम्राट् के नाम पर हमारा देश भारतवर्ष नाम से प्रसिद्ध हुआ।

इसी प्रदेश में विश्व की दो महती विभूतियां अर्थात् मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् राम और योगिराज महात्मा कृष्ण का प्रादुर्भाव हुआ। भारत की प्राचीन राजधानी और राम की जन्म भूमि अयोध्या भी इसी प्रदेश में है। पुण्य सलिला सरयू जिसके तट पर कभी राम ने क्रीड़ा की थी, इसी प्रदेश में है। इसी प्रदेश में वह कालिन्दी तट भी है जहाँ कृष्ण ने बाल-लीला कीं थी और कालिया जैसे भयंकर राक्षस को मारा था।

प्राचीन नगरी अयोध्या कभी वशिष्ठ, वामदेव जैसे महर्षियों का निवास स्थान था। यह दोनों उस समय भारत के चक्रवर्ती साम्राज्य का पौरोहित्य करते थे। अयोध्या के निकट महर्षि विश्वामित्र का पवित्र आश्रम था, जहां विश्वामित्र यज्ञ रक्षा के निमित राम और लक्ष्मण को पता दशरथ से मांग कर ले गये थे, और उन्हें विभिन्न अस्त्र संचालन की शिक्षा दी थी। चित्रकूट पर्वत जहां बनवास काल में राम ने अपने अनुज लक्ष्मण और पत्नी सीता सहित कुछ समय निवास किया था और जहां उनके लघु भ्राता भरत ने उनसे जाकर भेंट की थी, और अयोध्या लौटने का आग्रह किया था इसी प्रदेश में है। यह स्थान भी तीर्थ के नाम से प्रसिद्ध है। इसी प्रदेश में महर्षि अत्रि का वह आश्रम भी था जहां ऋषि-पत्नी अनसूया ने मातेश्वरी सीता को नारी-धर्म की शिक्षा दी थी। इसी प्रदेश में महर्षि बाल्मीकि का वह विख्यात आश्रम है जहां बाल्मीकि रामायण की रचना हुई थी और जहां मातेश्वरी सीता ने अपनी गर्भावस्था में निवास कर लव-कुश नामक दो वीर कुमारों को जन्म दिया था। इसी

स्थल पर महर्षि कण्व का वह प्रसिद्ध आश्रम था जहां भारत के प्रतापी सम्राट् भरत की माता शकुन्तला का लालन-पालन हुआ था।

योगिराज कृष्ण की जन्म-भूमि मथुरा भी इसी प्रदेश में है। मथुरा-नरेश कंस का वह कारागार जिसमें कृष्ण का जन्म हुआ था आज भी ध्वस्त दशा में विद्यमान है। भाद्रपद कृष्णाष्टमी की अर्धरात्रि को माता देवकी के गर्भ से इसी कारागार में कृष्ण का जन्म हुआ था। यहीं से नवजात शिशु कृष्ण को प्रच्छन्न रूप से कारागार के बाहर लाया गया और गोकुल ग्राम में नन्द गोपाल के यहां रखा गया। वहां उसका लालन-पालन हुआ और वे नन्दलला तथा गोप पत्नी यशोदा के पुत्र के नाम से प्रसिद्ध हुए। किशोरावस्था में ही कृष्ण ने अन्यायी राजा कंस के कुशासन के विरुद्ध आन्दोलन छेड़ दिया और टोलियाँ बना कर दूध, दही, माखन पर लगाए गए करों के विरुद्ध सक्रिय प्रतिरोध आरम्भ किया। जो ग्वालने समझाने बुझाने पर भी नहीं मानती थीं और मथुरा में जाकर दूध, दही, माखन पर कंस को कर देकर उनका विक्रय करती थीं, उनका दूध, दही माखन कृष्ण की टोली द्वारा छीन लिया जाता था। जिस प्रकार इस युग में महात्मा गाँधी नमक चोर कहाए उसी प्रकार उस युग में कृष्ण माखन चोर के नाम से प्रसिद्ध हुए। अन्ततोगत्वा कृष्ण ने कंस का सर्वनाश किया और मथुरा को उसके आतंक से मुक्त किया। कंस के सहयोगी शिशुपाल, जरासंध जैसे प्रबल राजाओं को भी कृष्ण ने धूल धूसरित कर दिया।

इसी प्रदेश में पांडवों की राजधानी हस्तनापुर (मेरठ) भी विद्यमान है, जहां उनके चचेरे भाई दुर्योधन ने उत्पात मचा रखा था और दुष्ट शकुनी के परामर्श से पांडवों को नष्ट करने पर वह उतारू हो गया था। वह लाक्षा गृह जहां दुर्योधन ने प्रच्छन्न रूप से पांडवों को भस्म कर डालने का षड़यन्त्र रचा था इसी प्रान्त के बरणावा ग्राम (मेरठ) में खन्डहर रूप में विद्यमान है।

इस समय के भारत के महान् साम्राज्य संचालक महामंत्री भीष्म पितामह और महात्मा विदुर भी इसी प्रदेश में निवास करते थे। वेद संहिताओं का सम्पादक तथा वेदान्त सूत्र के रचयिता महर्षि वेदव्यास ने भी इसी प्रदेश को सुशोभित किया था।

संसार की समस्त भाषाओं की जननी देववाणी संस्कृत का महान् केन्द्र काशी (वाराणसी) इसी प्रदेश के पूर्व भाग में, गंगा तट पर विद्यमान

है । संस्कृत के बड़े २ दिग्गज वैयाकरण एवं दार्शनिक काशी धाम में ही हुए हैं।

आर्य संस्कृति के महान् प्रचारक महात्मा बुद्ध ने लुम्बनी कानन में जन्म ले तथा गया क्षेत्र में घोर तम तप कर सर्व प्रथम धर्म चक्र का प्रवर्तन इसी प्रदेश के वाराणसी निकटवर्ती सारनाथ नामक नगर में किया था। यह सारनाथ आज विश्व के बौद्धों का सबसे महान तीर्थ स्थान माना जाता है। इस प्रदेश में बुद्ध ने तांत्रिकों एवं वाम मार्गियों से कड़ा मोर्चा लेकर

उनकी जड़ों को उखाड़ फेंका था, इसी प्रदेश के कुशीनगर (गोरखपुर) नगर में महात्मा बुद्ध ने निर्वाण पद प्राप्त किया था। यह कुशीनगर भी आज बौद्धों का दूसरा महान् तीर्थ बना हुआ है।

हिमालय पर्वत से प्रवाहित अनेक धाराओं को अपने में समाविष्ट करती हुई और पर्वत को चीरती हुई भागीरथी इसी प्रदेश के हरिद्वार स्थान पर प्रकट हुई है। यह उत्तराखंड का द्वार हरिद्वार आज उत्तर प्रदेश का ही नहीं, अपितु समस्त भारतवर्ष के आकर्षण का केन्द्र बना हुआ है। यहां का प्राकृतिक सौन्दर्य एवं संस्कृत शिक्षाप्रचार विश्व विश्रुत है। भारत के प्रमुख संस्कृत शिक्षाणालय गुरूकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी, गुरकुल महाविद्यालय ज्वालापुर, ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम, कन्या गुरूकुल आदि इसी हरिद्वार में स्थित हैं। सबसे पहला गुरूकुल इसी प्रदेशं के बुलन्दशहर जिले के सिकन्दराबाद नगर में स्थापित हुआ था।

राष्ट्र-भाषा हिन्दी का महान् केन्द्र भी उत्तरप्रदेश ही है। यहां ही हिन्दी के दोनों महान् काव्य सूरसागर और 'रामचरित-मानस' महात्मा सूर और संत तुलसीदास जी द्वार लिखे गए। इन दोनों महापुरुषों की जन्म भूमि भी उत्तरप्रदेश ही है। यवनकाल में आर्य संस्कृति रक्षा का महान् कार्य भी सूर और तुलसी की रचनाओं ने किया। उस समय घर घर तुलसी और सूर के पदों का श्रद्धापूर्वक पाठ किया जाता था।

संस्कृत के विश्व विख्यात कवि कालिदास भी इसी प्रदेश की विभूति थे। हिन्दी के एक से एक बढ़कर विख्यात कवि एवं संत इसी प्रदेश में हुए। भूषण गंग, देव, घाघ, गिरधर, श्रीपति, नरहरि, बीरबल, पद्मावत, कबीर, रविदास, रहीम, रसखान, उस्मान, तोष, दास, कुलपति, सुखदेव, भारतेन्दु आदि इसी प्रदेश की विभूतियाँ थीं।

सन् १८५७ ई० में प्रथम भारतीय स्वातंत्र्यसमर का सूत्रपात भी इसी प्रदेश के क्रान्तिकारी नगर मेरठ से हुआ था। स्व० मंगल पांडेय वह प्रमुख सैनिक था जिसने मेरठ में अंग्रेजी शासन के विरुद्ध शंखनाद निनादित किया इस समर के अनेक सेनानी नाना जी, ठा० कुँवर सिंह अदि इसी प्रदेश की विभूतियां थीं। झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई जिसने स्वातन्त्र्य समर में अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिये इसी प्रदेश के राजा गंगाधर राव की वीर पत्नी थी। इसी वीराङ्गना ने अपने प्रवल पराक्रम से १९ वीं शताब्दी में एक वार पुनः महाराणी दुर्गा तथा पद्मिनी की याद ताज़ा कर दी।

आर्य हिन्दू संस्कृति रक्षा हेतु काशी में हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक महामना मदनमोहन मालवीय भी इसी प्रदेश की दिव्य विभूति थे।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्राण तथा हिन्दी को भारत की राष्ट्रभाषा बनाने के हेतु अनथक परिश्रम करने वाले राजर्षि टण्डन भी इसी प्रदेश की विभूति थे।

भारत के यशस्वी गृहमंत्री स्व० पं० गोविंदबल्लभ पंत, जिन्होंने नायक-जाति से वेश्या वृत्ति का निराकरण करने एवं गढ़वाल शिल्पकारों की डोला-पालकी-समस्या को हल कराने में आर्यप्रतिनिधिसभा उत्तर प्रदेश का पूरा पूरा हाथ बटाया था, इसी प्रान्त के नर रत्न थे।

भारतीय स्वातन्त्र्य समर के वीर सेनानी और सन् १९४७ से आज तक भारत के प्रधानमंत्री पद को सुशोभित करने वाले वीर जवाहरलाल नेहरू भी इसी प्रदेश की विभूति हैं।

अतः उत्तर प्रदेश के परम प्राचीन ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक गौरव को हृदयंगम कर नवीन युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी का अपनीं योग-पिपासा एवं जिज्ञासा-वृत्ति की शान्ति के निमित्त इस प्रदेश में पधारना स्वाभाविक ही था।

संवत् १९११ वि० के अन्तिम भाग में ऋषि दयानन्द ने उत्तराखंड की यात्रा आरम्भ की और लगभग दो वर्ष यहाँ योगियों की खोज में बिताए। तत्पश्चात् एक वर्ष अनुगांग प्रदेश में अर्थात् गंगा के किनारे हरिद्वार से काशी तक विचरण करते रहे और योग-सम्बन्धी विभिन्न अनुशीलन किए। तत्पश्चात् नर्मदा श्रोत तक पहुंचने के लिए प्रस्थान किया। सं० १९१३ वि० से १९१५ के अन्त तक तीन वर्ष का काल ऋषि के अज्ञातवास एवं घोर

तपश्चरण का काल था। नहीं कह सकते इस बीच वे युग पुरुष कहां कहां गए और क्या क्या साधनाएँ करते रहे। इतना अवश्य प्रतीत होता है कि उन दिनों ऋषि के अन्दर अनार्ष ग्रन्थों के प्रति घोर अनास्था तथा आर्ष ग्रन्थों के अध्ययन की ओर तीव्र आस्था जाग्रत हो उठी थी। अतः वे योग्य गुरू की खोज करते करते सं० १९१६ वि० में मथुरा नगरी में वैदिक व्याकरण एवं साहित्य के सूर्य गुरू विरजानन्द दण्डी की कुटिया के द्वार पर खड़े मिलते हैं।

निरन्तर चार वर्ष अर्थात् सं० १९१६ से सं० १९२० वि० तक ऋषि ने अष्टाध्यायी, महाभाष्य, दर्शन ब्राह्मण एवं वेदों का अध्ययन किया और तत्पश्चात् गुरू से विदा हुए। और गुरु-दक्षिणा में जीवन पर्यन्त वेदप्रचार करने का व्रत धारण किया। सं० १९२१ व २२ वि० आगरा में जाकर वेदों के अनुशीलन में व्यतीत किये। लगभग एक वर्ष मध्यभारत व राजस्थान में प्रचारयात्रा पर रहकर वर्ष के अन्तिम दिनों में उत्तर प्रदेश में आ गए। और सं० १९२४ से १९३० तक उत्तर प्रदेश में ही पाखंड-खंडन, वैदिकधर्म प्रचार, संस्कृत विद्यालयों की स्थापना, शास्त्रार्थ आदि में विशेषरूप से व्यतीत किए केवल इस बीच में दो बार वह विहार, बंगाल में कुछ काल के लिये प्रचारार्थ गए। इसी बीच सत्यार्थ प्रकाश की रचना कर उसे प्रकाशित कराया।

सं० १९३१ व ३२ वि० में अधिकतर ऋषि विहार मध्यभारत, राजस्थान, गुजरात एवं महाराष्ट्र आदि में प्रचार यात्रा करते रहे। सं० १९३३ वि० के आरम्भ में ऋषि को पुनः उत्तर प्रदेश में ही प्रचारकार्य करने एवं ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका लिखने में संलग्न पाते हैं।

सं० १९३३ से, ३७ वि० तक के ४ वर्ष ऋषि ने वैदिकधर्म प्रचार, मत मतान्तरों के खंडन, शास्त्रार्थ, आर्यसमाज स्थापना एवं ग्रन्थ लेखन आदि में व्यतीत किए। इसी बीच सं० १९३४ व ३५ का पर्याप्त समय ऋषि का वीर भूमि पंजाब में प्रचार करते हुए व्यतीत हुआ।

सं० १९३७ वि० के अंतिम दिनों में स्वामी जी महाराज ने आगरा नगर (उत्तर प्रदेश) से अंतिम विदा ली। और दो वर्ष राजस्थान आदि में प्रचार करते हुए वहां के अजमेर नगर में ही अपने पार्थिव शरीर की इतिश्री करदी।

इसी प्रकार ऋषि जीवन के २७ वर्षों में से अज्ञातवास एवं अन्य प्रान्तों के प्रचार सम्बन्धी ७ वर्षों को छोड़कर २० वर्ष उत्तर प्रदेश में ही व्यतीत हुए। इस प्रकार यह उत्तर प्रदेश ही ऋषि के योगियों के अनुसंधान, विशेष शिक्षण, वेदानुशीलन, ग्रन्थ-निर्माण, पाखंडखंडन धर्मप्रचार एवं शास्त्रार्थ कार्यों का विशेष केन्द्र रहा है। रूढ़िवाद के गढ़ उत्तर प्रदेश को झकझोरने में ऋषि ने अपनी सर्वाधिक शक्ति लगाई और एक एक स्थान पर ७ व ८ बार जाकर और मासों रह कर प्रचार किया। अतएव यह प्रदेश ऋषि का सबसे अधिक ऋणी है,

२ उत्तर प्रदेश में ऋषि की प्रचार यात्रा

संवत् १९११ विक्रमी का अन्तिम भाग था, जब हरिद्वार में कुम्भ समारोह हो रहा था। लगातार आठ वर्षों से नर्मदा-तट और आबू पर्वत के भिन्न-भिन्न स्थानों में योग्य गुरु की खोज में भ्रमण करता हुआ ३० वर्ष का यह युवा संन्यासी हरिद्वार पहुंचा। उस समय यह भावी जगद्गुरु कितने योगियों और तत्वदर्शियों के सामने शिष्य भाव से उपस्थित हुआ होगा इसे कौन कह सकता है? वह स्वयं कहता है—"मैंने हरिद्वार का वह पहला ही कुम्भ देखा था। मैंने कभी यह कल्पना भी न की थी कि कुम्भ के मेले में इतने त्यागी और तत्वदर्शी पुरुष आवेंगे।" इन सब महापुरुषों के सत्संग का उस जिज्ञासु संन्यासी ने अवश्य लाभ उठाया होगा। इस कुम्भ समारोह के अवसर पर चंडी के जंगल में योगाभ्यास करते हुए स्वामी जी ऋषिकेश गये और वहाँ कुछ काल तक योगाभ्यास किया। फिर वे टिहरी चले गये। सबसे पहले वहीं हिन्दू धर्म के सबसे घृणित और वाम मार्गियों के तंत्र-ग्रन्थों से उनका साक्षात् हुआ, जिनसे वे अत्यन्त विस्मित और उत्तेजित हो उठे। स्वामी जी हिमालय के हृत्प्रदेश में स्थित केदारनाथ तथा बदरी नारायण की यात्रा को चल दिये। केदारनाथ में एक निर्मल चरित्र साधु गंगागिरि से उनका परिचय हुआ जो धीरे-धीरे घनिष्टता में परिणत हो गया। इनके साथ स्वामी जी लगभग दो मास तक बड़े आनन्दपूर्वक रहे। कभी योगतत्वों पर और कभी ब्रह्मज्ञान के प्रसंग पर वार्तालाप होता था। तदनंतर वे तुंगनाथ, त्रियुगी नारायण आदि पर्वत शिखर स्थित तीर्थ स्थानों में भ्रमण करते हुए, बदरीनारायण पहुंचे।

स्वामीजी को विश्वास था कि इन हिमाच्छादित पर्वत-मालाओं के मध्य बड़े-बड़े योगियों का अवश्य निवास होगा। अतः योग-साधना में पारंगत होने की प्रबल आकांक्षा के कारण उन्होंने अनेक दुर्गम घाटियों और गिरि-शृंगों में योगियों का अनुसंधान किया। कष्टों की पराकाष्ठा उस समय होती है जब वे भूख से व्याकुल होकर बर्फ के टुकड़े से अपनी बुभुक्षा-शान्ति का असफल प्रयत्न करते हैं और क्लांत, परिश्रांत, क्षतविक्षत तथा चेतना शून्य होकर अलकनन्दा के गर्भ में गिरने को लाचार होते हैं, परन्तु सौभाग्य से किसी न किसी प्रकार अलकनन्दा के हिमखंड-मंडित उद्‌गम के पार हो जाते हैं। इतने कष्ट सहकर भी स्वामी दयानन्द योगियों के अनुसंधान में सफल न हो सके। इससे उन्हें अवश्य बड़ी निराशा हुई। परन्तु एक प्रकार से यह अच्छा ही हुआ क्योंकि यदि वे इस कार्य में सफल हुए होते तो सम्भवतः हिमालय की गुफाओं में योगाभ्यास में लग जाते और योग-सिद्धि करने पर संसार से विरक्त हो जाते। इस प्रकार हिन्दू-संसार एक महान् वेदाचार्य के उदात्त उपदेशों से वंचित हो जाता।

यह वह समय था जब स्वामी दयानन्द की एक मात्र प्रबल इच्छा योगी बनने की थी। परोपकार की भावना का तब तक उदय नहीं हुआ था। अन्य धार्मिक पुस्तकों के साथ-साथ हठ-प्रदीपिका, योग बीज और शिवसंध्या आदि योग सम्बन्धी पुस्तकों का अध्ययन भी होता था। इन्हीं पुस्तकों में उन्होंने नाड़ीचक्र का भी वृतान्त पढ़ा। इस वृतांत का वस्तु स्थिति से कहाँ तक सामंजस्य है, इस आत्म जिज्ञासा के प्रबल प्रभाव से प्रेरित होकर वे आत्म तुष्टी का अवसर खोजने लगे। दैव योग से यह अवसर भी गढ़ मुक्तेश्वर में मिल गया। गंगा के प्रवाह में बहते हुए एक शव को बाहर निकालकर उसे चीर-फाड़कर पुस्तकों में दिये हुए वर्णन से उसके नाड़ी-चक्र का मिलान किया तो उसमें कुछ भी साम्य न पाया। फलत : शव-देह के टुकड़ों के साथ ही साथ पुस्तकों के भी टुकड़े-टुकड़े कर डाले और उन्हें नदी में प्रवाहित कर दिया। वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि सांख्य, पातंजल आर्षग्रन्थों के अतिरिक्त योग-विषयक अन्य सारे ग्रन्थ मिथ्या हैं। जड़ेश्वर महादेव के मंदिर में बालक मूलशंकर के मस्तिष्क में जिस संशय का बीजारोपण हुआ था, वही आगे चलकर व्यावहारिक संसार-क्षेत्र के व्यक्तिगत अनुभव से अधिकाधिक पुष्ट होता गया और योगलालसा के भीतर दबी हुई सी ज्ञान-

पिपासा-वृत्ति अधिकाधिक वलवती होकर, अपने विशुद्ध रूप में सामने आगयी, जिसने जिज्ञासु दयानन्द को सत्यासत्य निर्णय करा देने वाले सच्चे गुरू के अनुसंधान में प्रवृत्त कर दिया। स्वामीजी की अभिलाषा पूर्ण हुई और प्रज्ञाचक्षु दण्डी विरजानन्द के रूप में उन्हें अभिलषित गुरू मिल गया। यह कार्य अचानक ही नहीं हो गया, प्रत्युत कई वर्षो से स्वामी दयानन्द दण्डी विरजानन्द के अद्भुत पाण्डित्य और विद्वत्ता की प्रशंसो सुनते आरहे थे।

सं० १९१६ वि० में मथुरा में दण्डी विरजानन्द के आश्रम में जव पहले-पहल गुरू-शिष्य का साक्षात्कार हुआ और शिष्य ने गुरू से अपना संकल्प प्रकट किया तो गुरू ने वही बात कही जो वे अन्य शिष्यों से कहा करते थे अर्थात्- "आज तक जो कुछ तुमने मनुष्य-प्रणीत ग्रन्थों में पढ़ा है वह सब भूल जाओ, क्योंकि जव तक मनुष्य-प्रणीत ग्रन्थों का प्रभाव रहेगा, तब तक आर्षग्रन्थों का प्रकाश तुम्हारे चित्त में प्रवेश न कर सकेगा। और यदि कोई मनुष्य-प्रणीत ग्रन्थ तुम्हारे पास हो तो उसे यमुना के प्रवाह में फेंकदो....।" ऐसी दृढ़ अनास्था थी उनको अनार्ष ग्रन्थों में ! शेखर, मनोरमा आदि ब्याकरणों के खण्डन में दण्डीजी ने एक 'वाक्य मीमांसा 'नामक ग्रंथ रचा था और पाणिनि अष्टाघ्यायी के प्राय: आधे भाग का भाष्य भी किया था, परन्तु पीछे उन्होंने इस भय से कि उनकी रचनाओं का प्रचार होने पर मूल ग्रन्थों का प्रचार घट जायगा, उन पुस्तकों को यमुना में फिकवा दिया। इससे प्रतीत होता है कि दण्डीजी श्रुति-प्रतिपादित धर्म के ही समर्थक थे और वैदिक धर्म को ही सत्य-सनातन मानते थे। यद्यपि दण्डीजी की आयु अस्सी वर्ष से भी अधिक हो गयी थी तथापि वे सदा इसी चिन्ता में निमग्न रहते थे कि वैदिक धर्म पुन: किस प्रकार प्रतिष्ठित हो।

दण्डी विरजानन्द जन्मांध थे परन्तु उनकी जिव्हा पर सव शास्त्र नृत्य करते थे। उनकी विचार शक्ति सब शास्त्रों को पढ़ाने में असाधारण थी। शब्द-शास्त्र के अवधारण और मीमांसा करने में तो उनकी प्रतिभा अलौकिक थी। इसलिये सर्वसाधारण में वे 'व्याकरण-सूर्य कहे जाते थे। उनका पाण्डित्य अपूर्व था, उनकी प्रतिभा असाधारण थी और उनकी स्मरणशक्ति विस्मयकारक थी। चक्षुहीन होने के कारण कोई उन्हें सूरदास, कोई धृतराष्ट्र और कोई प्रज्ञाचक्षु के नाम से पुकारता था। उनका पाठशाला स्थापन का उद्देश्य

साधारण नहीं था। उसके मूल में एक गूढ़ उद्देश्य निहित था। वे अपने विद्यार्थियों से प्रायः कहा करते थे—"आज मैं जिस अग्नि को धूमाकार में तुम्हारे भीतर प्रविष्ट करता हूं कल वह महाग्नि में पर्यवसित होकर भारत-भूमि के भ्रान्त मत और भ्रान्त विश्वास के जंजाल को भस्मीभूत कर डालेगी।" ऐसा महान् उद्देश्य रखने वाले दण्डी विरजानन्द धन्य थे और धन्य थे इस उद्देश्य की पूर्ति करने वाले शिष्य दयानन्द।

इस अध्ययन-काल में स्वामी दयानन्द के भोजनादि का प्रबन्ध करने वाले गुजराती ब्राह्मण श्री अमरलाल जोशी का नाम भुला देना घोर कृतघ्नता होगी। इनके विषय में स्वामी दयानन्द स्वयं लिखते हैं—"आहार और गृह आदि की मुक्त हस्त से सहायता करने के कारण मैं अमरलाल का नितांत आभारी हूं। भोजन के सम्बन्ध में वे इतने यत्नपर रहते थे कि जब तक मेरे भोजन का प्रबन्ध न हो जाता था तब तक वे स्वयं भोजन न करते थे। वस्तुतः अमरलाल एक महदन्तःकरण के मनुष्य थे, इसमें कोई भी सन्देह नहीं है।" इस कार्य ने अमरलाल को अपर कर दिया, क्योंकि 'जिस अग्नि को धूमाकार में विरजानन्द ने दयानन्द के भीतर भरा था,' उसे प्रज्वलित करने में अमरलाल का बड़ा हाथ है।

इस प्रकार स्वामी दयानन्द दण्डीजी की पाठशाला में प्रविष्ट हुए। सूर्यमंडल से अविश्रांत तेजो राशि के समान निःसृत्त अथवा पर्वत निर्झर से अनवरत वारिधारा के समान प्रसृत्त दण्डीजी की वागिन्द्रिय-प्रसूत शास्त्र प्रवचन की अनवरुद्ध धारा में बार-बार स्नान करके दयानन्द कृतकृत्य होगये। नये आचार्य के पास नयी पद्धति से पढ़ना दयानन्द ने आरंभ किया। पहले वे पाणिनि-सूत्रों का अध्ययन करने लगे। दण्डीजी की अध्यापन-नीति कुछ अपूर्व थी, परन्तु साथ ही इस नवीन शिष्य की मेधा-शक्ति भी विलक्षण थी। वस्तुतः जिस प्रकार दयानन्द ने विरजानन्द के समान आचार्य्य कहीं इससे पूर्व न देखा था इसी प्रकार दयानन्द के समान शिष्य भी विरजानन्द के पास पहले कभी न आया था। स्वामीजी ने दण्डीजी के पास अष्टाध्यायी महाभास्य पर पूर्ण अधिकार प्राप्त कर लिया था। महाभाष्य में तो वे ऐसे व्युत्पन्न होगये थे कि सारा ग्रन्थ उनकी जिह्वा पर था। तदनंतर उन्होंने अन्य आर्ष ग्रन्थों का अध्ययन आरंभ किया और अल्पकाल में ही सर्वशास्त्र-निष्णात हो गये। दयानन्द विरजानन्द के विशेष कृपापात्र बन गये थे। पढ़ाते समय वे अपने इस प्रिय

शिष्य को 'कालजिह्व 'और 'कुलक्कर' आदि प्यार के नामों से सम्बौधित किया करते थे। इन शब्दों का अर्थ है, 'असत्यका खण्डन करने में काल के समान जिह्वा वाला और 'खूँटा अर्थात खूँटे के समान निश्चल'। दण्डीजी को विश्वास होगया कि अब उन्हें अपने उद्देश्यों की पूर्ति कराने वाला उत्तरा-धिकारी मिल गया। सत्य-शास्त्र-निर्धारण के लिये दण्डी विरजानन्द ने स्वामी दयानन्द के हाथ में अष्टाध्यायी महाभाष्यरूपी कुंजी देदी, और भावी शास्त्र संग्राम में अजेय रहने के लिये आर्षज्ञानरूपी अक्षय कवच पहना दिया। निघंटु और निरुक्तादि वैदिक ग्रन्थों में निपुण करके वेद-व्याख्यान और वेद के प्रकृत अर्थों के अवधारण की रीति बतलादी और शिष्य के सारे संशपों का क्रमश: समाधान कर डाला। स्वामी दयानन्द ने शिक्षा समाप्त कर पूर्ण तृप्ति अनुभव की। इस विषय में उन्होंने आगरे में पण्डित सुन्दरलाल जी से स्वयं कहा था कि 'बहुत दिनों तक ज्ञान का अन्वेषण करके और बहुत से स्थानों में भ्रमण करके अन्त में विरजानन्द के पास आने से मेरी तृप्ति हुई।'

लगभग चार वर्ष में अपनी शिक्षा समाप्त करके जब शिष्य गुरू के सामने विदा माँगने उपस्थित हुए तो गुरुदेव ने प्रेमपूर्वक कहा—"सौम्य मैं तुम से किसी भी प्रकार के धन की दक्षिणा नहीं चाहता। मैं तुमसे तुम्हारे जीवन की दक्षिणा चाहता हूं। तुम प्रतिज्ञा करों कि जितने दिन जीवित रहोगे, उतने दिन आर्यावर्त्त में आर्ष-ग्रन्थों की महिमा स्थापित करोगे, अनार्ष ग्रन्थों का खण्डन करोगे और भारत में वैदिक धर्म की स्थापना में अपने प्राण तक अर्पण कर दोगे।" शिष्य केवल 'तथास्तु' कहकर गुरू के चरणों में प्रणत हो गये। तत्पश्चात् मथुरा से प्रस्थान कर वे आगरा की ओर चल दिये।

यह संवत् १९२१ वि० के ग्रीष्म काल का आरंभ था। आगरा पहुंच कर स्वामी दयानन्दजी बालूगंज के पास यमुना के तट पर सेठ गुल्लामल के बाग़ में टिके। उस समय पंडित सुन्दरलाल आगरा के सम्भ्रान्त पुरुषों में थे। वे डाक विभाग में उच्चतर पद पर प्रतिष्ठित थे और एक धर्म-पिपासु सज्जन थे। उन्होंने स्वामीजी महाराज से अष्टाध्यायी पढ़नी प्रारम्भ की और अष्टाध्यायी के चार अध्याय पढ़े। स्वामीजी सुन्दरलालजी से इतनी प्रीति करने लगे थे कि आगरा से जाते समय उन्होंने सुन्दरलाल को अपने गले से रुद्राक्ष की माला उतार कर देदी थी। सुन्दरलाल इस माला को बड़े यत्न

से रखते थे, इसके अतिरिक्त स्वामीजी ने सुन्दरलाल को कुछ योग की क्रियाएँ भी सिखाईं थीं। स्वामीजी का अधिकांश समय योगाभ्यास में ही व्यतीत होता था। कभी-कभी वे अठारह-अठारह घंटे तक एक आसन पर ध्यानावस्थित होकर बैठे रहते। पंडितों से शास्त्र-चर्चा होती थी। उस समय अनार्ष ग्रन्थों की निकृष्टता-प्रतिपादन करने के अतिरिक्त और किसी ग्रन्थ का खण्डन-मण्डन न होता था।

सुधार-कार्य के लिये अभी स्वामीजी उद्यत न हुए थे। पण्डित विष्णुलाल-मोहनलाल पण्डया के पूछने पर आपने कहा था कि "मैं अभी विचार कर रहा हूं।" स्वामीजी कहा करते थे कि जब तक मैं सम्पूर्ण रूप से वेदों का अध्ययन और मनन न कर लूँगा, तब तक गुरूदेव का आदेश पूर्णतया कार्यरूप में परिणत न कर सकूँगा। पंडित सुन्दरलाल ने उनके कहने पर जयपुर राज्य के पुस्तकालय से ऋग्वेद की पुस्तक मँगाकर उन्हें दी थी। इस समय उनका मन सन्देह-दोला में झूमा करता था, अनेक संकल्प-विकल्प उठते थे। समय-समय पर मथुरा जाकर अथवा पत्र द्वारा अपनी शंकाओं का समाधान करते रहते थे।

उस समय राजनीतिक अवस्था तो सारे भारत की एक ही थी। सदियों की गुलामी से तन-छीन मन-मलीन होकर वृद्ध भारत लड़खड़ाते पाँवों के बल काल-यापन कर रहा था। अनेक बार उसने अपनी दासता की बेड़ियाँ तोड़ डालने का असफल प्रयास भी किया था। यह सौभाग्य की बात थी कि उन दिनों अंग्रेज-शासन में पूर्ण धार्मिक स्वतंत्रता थी। और स्वामीजी के मार्ग में कोई विशेष बाधा न डाली जाती थी।

हिन्दू समाज की अवस्था शोचनीय थी। आश्रम चतुष्टय का तो चिन्ह तक मिट गया था और वर्णव्यवस्था जाति-उपजातियों में टुकड़े-टुकड़े होकर समाज के शरीर को खोखला बना चुकी थी। शताब्दियों के अत्याचारों से पीड़ित होकर और हिन्दू-समाज की डगमगाती नैया को देखकर सहस्रों दलित हिन्दू 'प्रभु ईसा'और' पैगम्बर मुहम्मद साहब की शरण ले रहे थे। बंगाल प्रान्त में कन्या उत्पन्न होते ही विधवा बना दी जाती थी और आजन्म वैधव्य के कठोर व्रत को धारण करने के लिये बाध्य की जाती थी, परन्तु पुरुष अपनी अनेक शादियां करते न थकते थे। राजस्थान कन्या-वध जैसी भयंकर प्रथा के दोष से कलंकित था और उत्तर प्रदेश भी बालविवाह और वृद्ध विवाह के फल

स्वरूप सहस्त्रों-लाखों विधवाओं की आह से जर्जर हो रहा था। दहेज की अनुचित प्रथा के फलस्वरूप अनेक बेमेल जोड़ों से गार्हस्थ्य जीवन अशांत और संकट मय होगया था कहीं कन्या-विक्रय और कहीं पुत्र-विक्रय की आसुरी प्रथाओं से हिन्दू-समाज बदनाम हो चला था। कुछेक सम्भ्रान्त परिवारों को छोड़कर बालिकाओं को शिक्षा देना अधर्म ही समझा जाता था। बाल विधवाओं के आर्तनाद् से सारा देश शोकागार बना हुआ था।

देश की ऐसी शोचनीय परिस्थिति में धार्मिक अवस्था क्या रही होगी, इसका सहज ही अनुमान किया जासकता है। वेद-वेदांगों की शिक्षा तो प्राय: लुप्त ही होगई थीं। थोड़े-से पंडित जो वेदों को लिए बैठे थे, वे भी उसके वास्तविक तात्पर्य को या तो समझते न थे या स्वार्थवश या प्रमादवश उसके अनुकूल आचरण न करके शब्दों के भवँर-जाल में जनता को भुलाये हुए थे। वैदिक मंत्रों के एक-एक शब्द के भिन्न-भिन्न मनमाने अर्थ करके अनेक पंथ चल पड़े। कितने ही सम्प्रदायों का प्रादुर्भाव होगया था। तात्विक विवेचन का स्थान वाह्याडम्बर ने लेलिया। आर्ष ग्रन्थों का प्राय: लोप होगया। अनार्ष ग्रन्थों का बोलबाला था। तिलक-कंठी प्रयोग ही धर्म का सर्वस्व समझा जाने लगा।। मूर्ति-पूजा का जोर था। इतना ही नहीं, वाममार्गियों ने तंत्र-ग्रन्थों की रचना करके पंच-मकारों का खुल्लम खुल्ला प्रचार किया जिससे व्यभिचार और अनाचार का द्वार खुल गया। इन बातों को देखकर क्या यह समझा जाय कि उस समय धर्म का वास्तविक स्वरूप भारत से उठ ही गया था? नहीं, यह बात न थी। धर्म के, वेदों के, उपनिषदों और धर्म-शास्त्रों के वास्तविक स्वरूप को समझने वाले ज्ञानियों वा विद्वानों का एक वर्ग अवश्य था, परंतु ऐसे तत्वदर्शी या तो संसार से विरक्त होचले थे अथवा अधर्म से आक्रान्त हिन्दू समाज के रोग को असाध्य समझकर उससे उदासीन हो बैठे थे। साथ ही ऐसे भी ज्ञानी थे जो धर्म के इस प्रकार ह्रास को देखकर व्याकुल एवम् उद्विग्न हो उठे थे और उसकी रक्षा के लिये चिन्तित थे। दण्डी विरजानन्द ऐसे ही महापुरुषों में से थे। वार्धक्य के कारण स्वयं तो वे इस कार्य के सम्पादन में असमर्थ थे, परन्तु एतदर्थ अपनी शिष्य-मंडली को तैयार कर रहे थे। आगे चल कर स्वामी दयानन्द को शिष्य रूप में पाकर वे समझने लगे कि अब मत-मतान्तर रूपी श्रृगालों में भगदड़ मचादेने वाला नर-सिंह उत्पन्न होगया है।

यह थी उस काल की सामाजिक, और धार्मिक परिस्थिति। स्वामी उस ने देखा कि मार्ग कण्टकावीर्ण है शत्रु-सेना के असंख्य दलों का अकेले दयानन्द को मुकाबला करना होगा। मुकाबला क्या है तलवार की धार पर चलना है, प्रचण्ड वेग से चलने वाली नदी की शत-सहस्र धाराओं को रोकना है। परंतु 'यतो धर्मस्ततो जय: 'के अटल सिद्धान्त में पूर्ण विश्वास रखने वाले स्वामी दयानन्द इस प्रकार की विघ्न-बाधाओं से घबराने वाले न थे। अन्त में वे तीन-चार वर्ष के गंभीर चिन्तन के पश्चात् खण्डन-मण्डन की दुधारी तलवार लेकर रण-क्षेत्र में उतरे। अपनी शक्ति की जाँच करने के लिये उन्होंने आगरा में श्री वैष्णव मत के खण्डन पर एक छोटी-सी पुस्तिका लिखी। उसकी कुछ प्रतियाँ आगरा में वितरण करके गुरू से आशीर्वाद लेने के लिए मथुरा चले गये। वहाँ से मेरठ होते हुए संबत् १९२३ वि० में कुम्भ के अवसर पर हरिद्वार पहुंचे।

उत्तर प्रदेश का यह सौभाग्य ही है कि उसके विद्यालय से निकले इस निर्भीक सेनापति का बुद्धि-विक्रम पहले-पहल यहीं के एक नगर हरिद्वार में प्रकट हुआ। हरिद्वार से तीन कोस की दूरी पर स्थित सप्तसरोवर नामक स्थान में स्वामी जी ने पर्णकुटियों का डेरा डालकर अपनी कुटी पर एक पताका गाड़दी, जिस पर 'पाखण्ड-खण्डन' शब्द लिखे हुए थे। उस समय १५-१६ संन्यासी और ब्राह्मण उनके साथ थे।

स्वामीजी ने प्रतिदिन उपदेश देना आरंभ किया, जिसमें उन्होंने मूर्तिपूजा, अवतारवाद, भागवत, तीर्थ, तिलक-छाप, कंठी चक्रांकण आदि का प्रवल खण्डन किया। उसकी चर्चा सारे मेले में फैल गयी। सैंकड़ों लोग इस अद्भुत संन्यासी को देखने आने लगे। कुटी पर मेला-सा लगने लगा।

इस प्रकार कई दिनों तक हरिद्वार-ऋषिकेश के मध्य अपनी उपदेश-गंगा बहा तथा कुछ काल तक त्यागी मौनी की दशा में गंगा तट पर विचरण कर स्वामीजी कर्णवास, फर्रुखाबाद, अनूपशहर होते हुए रामघाट पहुंचे और एक कुटिया में ठहरे। वहाँ स्वामीजीं ने पहले-पहल पं० टीकाराम नामक एक सुयोग्य ब्राह्मण को अपना शिष्य बनाया। ये कर्णवास के रहने वाले थे। और कुछ दिन पश्चात् स्वामीजी अपने इस शिष्य के साथ कर्णवास चले गये। यहाँ स्वामीजी चार मास टिके रहे। उनके स्थान पर प्रतिदिन दर्शकों और श्रोताओं की भीड़ लगी रहती थीं। यहाँ पण्डित अम्बादत्त

शास्त्री से शास्त्रार्थ हुआ। परिणाम स्वरूप पंडितजी परास्त हुए और उन्होंने एक सत्यप्रिय व्यक्ति की भाँति भरी सभा में मुक्तकंठ से स्वीकार किया कि स्वामीजी जो कुछ कहते हैं, वह सत्य है। मूर्तिपूजा अवैदिक व त्याज्य है। इस प्रकार स्वामीजी शास्त्रार्थ के इस प्रथम मोर्चे पर विजयी हुए। पं० अम्बादत्तजी पौराणिक धर्म के स्तम्भ समझे जाते थे, उनके पराजय से पौराणिक दल में निराशा छागई और स्वामीजी की ख्याति को चार चाँद लग गये। संतश: लोग उनकी ओर आकृष्ट होने लगे। क्षत्रिय तो वहुत बड़ी संख्या में उनके अनुगामी बने। और बीसियों व्यक्तियों ने यज्ञोपवीत धारण कर स्वामीजी की उपदिष्ट पद्धति के अनुसार नित्यकर्म करने आरम्भ कर दिये।

कर्णवास से स्वामीजी अहार और वहाँ से चासी गये। चासी में स्वामीजी ने शफीपुर के मायाराम जाट से कहा था कि जीवित पितरों का ही श्राद्ध किया करो। इसकी पद्धति बनाकर वे पंडित ज्वालाप्रसाद को दे गये थे। स्वामीजी को एक मनुष्य ने अपना हाथ दिखलाया। उसे देखकर स्वामी जी ने कहा कि इसमें चर्म, अस्थि और रुधिर है और कुछ नहीं। किसी ने जन्म-पत्र का प्रसंग उठाया तो वे बोले— 'जन्मपत्रं विमर्थम् कर्मपत्रं श्रेष्ठम्।, इसके पश्चात् मार्गशीर्ष सवंत् १९२४ में स्वामीजी रामघाट गंगा तट पर पुनः पहुंचे। वहां से एक घोर मूर्तिपूजक, जो अपनी २० सेर मूर्तियों के बोझ को घोड़े पर लादे चलता था, स्वामीजी को महादेव के मंदिर में ले गया। वहां कृष्णानन्द संन्यासी से उनका शास्त्रार्थ हुआ। इस शास्त्रार्थ और स्वामीजी के उपदेशों का उस मूर्तिपूजक पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि उसने अपनी २० सेर मूर्तियाँ गंगा में प्रवाहित कर दीं। उन दिनों स्वामीजी संध्या, गायत्री, वलिवैश्वदेव करने और मूर्तिपूजा तथा तीर्थादि त्यागने का उपदेश देते थे। यहाँ से स्वामीजी वेलौन गये और फिर कर्णवास पहुंचे। वहाँ के पौराणिकों को पंडित अम्बादत्त की पराजय की कालिमा धोने की बड़ी चिन्ता थी, वे अनूप शहर गये और पं० हीरावल्लभ शास्त्री को बुला कर लाए। पं० हीरावल्लभ बड़े ठाट से आये और अपने आराध्य देवताओं की मूर्तियों को भी सिंहासन पर सजाकर लाये। सिंहासन सामने रखकर वे यह प्रतिज्ञा करके बैठे कि या तो दयानन्द से इन मूर्तियों का भोग लगवाकर जाऊंगा या इन्हें गंगा में वहा दूंगा। न्याय और नियम पूर्वक छः दिन तक शास्त्रार्थ हुआ।

छठे दिन पंडितजी ने अपनी हार स्वीकार की और महाराज को हाथ जोड़ कर प्रणाम किया। साथ हीं देव-मूर्तियाँ भी गंगा जल में प्रवाहित कर दीं। सभा में कई सहस्र मनुष्य उपस्थित थे। बहुतों ने पंडितजी का अनुकरण किया। यहाँ एक नव्वे वर्षीय वृद्धा हंसा ठकुरानी को महाराज ने 'ओम्' और गायत्री का जप बताया और मूर्ति-पूजा छोड़ने का आदेश दिया। वृद्धा ने अपने जीवन के शेष दिनों तक स्वामीजी के आदेश का पालन किया। कर्णवास से स्वामीजी ने एक विद्यार्थी को दण्डी विरजानन्द के पास पढ़ने के लिये भेजा था।

कुछ दिनों पश्चात् अनेक स्थानों में भ्रमण करते हुए स्वामी जी सोरों पहुंचे। वहाँ संस्कृत के धुरंधर विद्वान् पं० अंगदराम शास्त्री थे जिनसे मूर्ति-पूजा पर स्वामीजी का वार्तालाप हुआ। पंडितजी शालग्राम के पूजक और भागवत के कथा-वाचक थे। यह सब छोड़ कर उन्होंने स्वामीजी का पक्ष ग्रहण कर लिया। अम्बागढ़ निवास के समय पं० अंगदरामजी महाभारत का पाठ किया करते थे। वे पढ़ते जाते थे और स्वामीजी से विचार करते जाते थे कि कौन सा श्लोक आर्ष है कौन- सा अनार्थ तथा कौन सा शुद्ध है और कौन सा अशुद्ध।

ज्येष्ठ संवत् १९२५ वि० में स्वामीजी फिर कर्णवास पधारे। ज्येष्ठ शुक्ला १० को यहां गंगास्नान का मेला लगता है। कर्णवास से थोड़ी दूर स्थित बरौली नामक ग्राम का एक बहुत बड़ा जमींदार भी मेले में आया हुआ था। वह अपने शस्त्रधारी अनुचरों के साथ सभास्थल में पहुंचा। पहले तो उसने स्वामीजी के साथ बड़ा असभ्यता का व्यवहार किया और फिर बातों ही बातों में गालियाँ देने लगा। महाराज पद्मासन लगाये सुनते और हंसते रहे। कहते हैं कि महाराज पर उसने तलवार से वार करना चाहा। तब महाराज ने गरज कर उसके हाथ से तलवार छीन ली और उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिये।

तत्पश्चात् अंबागढ़ व सरडोल होते हुए स्वामीजी शहबाजपुर पहुंचे तो वहाँ भी दो वैरागियों ने उन्हें मार डालने का प्रयत्न किया परन्तु असफल रहे। फिर स्वामीजी कादिरगंज, नरदौली होते हुए ककोड़ के मेले में पहुंचे। वहाँ एक पादरी से उनका वार्त्तालाप हुआ। बरेली के पंडित डमादत्त कई पंडितों के साथ स्वामीजी से मूर्तिपूजा पर शास्त्रार्थ करने आये और थोड़ी देर में ही निरुत्तर हो गये। उपर्युक्त अंगरेज पादरी के अतिरिक्त अन्य पादरी

और मौलवी भी स्वामीजी के साथ धर्म-विषय पर बात चीत करने आयें परन्तु सब निरुत्तर होकर चले गये। यही दशा पौराणिक पंडितों की भी हुई। इस प्रकार कुछ दिन धर्म-चर्चा करके महाराज फिर नरदोली आये और वहाँ एक संन्यासी से जीवब्रह्म की एकता पर शास्त्रार्थ किया।

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष संवत् १९२५ वि० में स्वामीजी नरदोली से कायमगंज पहुंचे और श्री हरिशंकर पांडे के शिवालय में ठहरे। वहाँ कई मौलवी पहुंचे और अपने धर्म तथा पैगम्बर के महत्व पर बात चीत की, परन्तु स्वामीजी के युक्ति युक्त उत्तर से सब निरुत्तर हो गये। मौलवी मुहम्मदअली से मनुष्योत्पति विषय पर बातचीत हुई मौलवी साहब स्वामीजी की बातों से परम प्रसन्न हुए और उनके कथन की पुष्टि करते रहे। एक दिन पादरी अनलन, हरप्रसाद व कतिपय अन्य ईसाई सज्जन आये और पूछने लगें कि हमारे पाप कैसे क्षमा हों! स्वामीजी ने कहा कि पाप क्षमा नहीं हो सकते।

कायमगंज से कंपिल और शकरुल्लापुर होते हुए पौष संवत् १९२५ को स्वामीजी फ़र्रुखाबाद पहुंचे और विश्रांत घाट पर ठहरे। स्वामीजी के आगमन से मूर्तिपूजक दल विकल-विह्वल हो उठा था। स्वामीजी से शास्त्रार्थ करने के लिये मेरठ के एक पंडित श्रीगोपाल को बुलाया, जो थोड़ी देर वाद-विवाद कर मौन हो गये। श्रीगोपाल के पराजय से पौराणिक दल अत्यंत खिन्न था। यही दशा कानपुर से आये प० हलधर ओझा की भी हुई जो शास्त्रार्थ के लिए बुलाये गये थें।

एक दिन स्वामीजी किसी से कुछ कहे बिना फर्रुखाबाद से चल दिये और शृंगीरामपुर, जलालाबाद होते तुए कन्नौज पहुंच गये। वहां के दो प्रसिद्ध पंडित हरिशंकर शास्त्री और गुलजारीलाल से शास्त्रार्थ किया तथा सात-आठ दिन ठहर कर कानपुर की ओर चल दिये। कानपुर में स्वामीजी बा० बरगाहीलाल वकील के यहाँ ठहरे। अधिकतर मूर्तिपूजा पर प्रश्नोंत्तर होते थे, जिससे मूर्तिपूजकों में खलबली मच गयी। स्वामीजी के उपदेश सुनकर कानपुर में कितने ही लोगों ने मूर्तिपूजा सदा के लिये त्याग दी।

स्वामीजी बाल-विवाह का घोर प्रतिवाद करते थे। विधवा-विवाह का समर्थन करते हुए कहते थे कि 'विधवा का मृत पति के भाई (देवर) से पुनर्विवाह हो जाना चाहिये।' एक दिन एक मौलवी ने आकर क़ुरान के विषय में बात चीत शुरुकी और कहा कि क़ुरान ख़ुदा का कलाम हे। स्वामीजी ने कहा

कि क़ुरान ईश्वर वाक्य नहीं हो सकता, क्योंकि उसमें आदि में ही यह कहा गया है 'आरम्भ करता हूं मैं अल्लाह के नाम से जो बख्शने वाला और दया करने वाला है। यदि कुरान का कर्त्ता अल्लाह होता तो वह यह क्यों कहता कि मैं अल्लाह के नाम से आरंभ करता हूं। कैसा युक्ति-युक्त उत्तर था। मौलवी साहब सुनकर चुप हो गये। कानपुर में लगभग तीन मास रह कर स्वामीजी गंगा-तट पर भ्रमण करते हुए आश्विन संवत् १९२६ वि०में रामनगर पधारे और एक वृक्ष के नीचे आसन लगाया। उन दिनों स्वामीजी एक लंगोट के अतिरिक्त और कुछ न रखते थे।

महाराज के रामनगर पहुंचने का समाचार बात की बात मे सारे राम नगर और काशी में फैल गया। लोग कुतूहलवश इस मूर्तिपूजा के घोर विरोधी परमहंस को देखने आने लगे। रामनगर नरेश महाराजा ईश्वरी प्रसाद नारायण सिंह साधु, संन्यासी, परमहंसों के बड़े भक्त थे। उनकी प्रबल इच्छा थी कि स्वामी जी किसी प्रकार मूर्तिपूजा-खण्डन छोड़ दें। इस इच्छा को कार्यरूप में परिणत करने के लिये उन्होंने साम, दाम और भेद-नीति से काम लेने का प्रयत्न किया पर असफल रहे। स्वामी जी ने मूर्तिपूजा के इस सबसे बड़े अभेद्य और अजेय गढ़ पर ज़बरदस्त आक्रमण कर डाला, जिससे काशी के पंडितों की निद्रा भंग हो गयी। समय-समय पर भेद नीति से काम लिया जाने लगा। पंडित अवाक् और निरुत्तर होकर चले जाते। पं० ज्योतिस्वरूप उदासी से स्वामीजी का नवीन वेदान्त पर चौदह दिन तक विचार होता रहा और अन्त में उन्होंने स्वामी जी की सब बातें स्वीकार करलीं। पंडितगण बड़े जोरों से शास्त्रार्थ की तैयारी करने लगे। कार्तिक शुक्ला १२ संवत् १९२६ ता० १६ नवम्बर सन् १८६९ ई०को शास्त्रार्थ हुआ। लगभग पचास सहस्र जनता से शास्त्रार्थ की भूमि खचाखच भर गयी। शान्ति-रक्षा के लिए पुलिस का समुचित प्रबंध था। काशी-नरेश ने अपने पंडितों को अधिक से अधिक सुविधाएँ प्रदान की थीं परन्तु स्वामी जी के मार्ग में रोड़े अटकाये। शास्त्रार्थ में भाग लेने वाले सताईस पंडितों ने स्वामीजी को चारों ओर से घेर लिया और शास्त्रार्थ आरम्भ कर दिया गया। दो पादरी भी उपस्थित थे। मूर्तिपूजा आदि विषयों पर बाद-विवाद हुआ और अन्त में निरुत्तर होकर पंडित लोग सभा से बुरी तरह कोलाहल मचाते हुए चले गये।

सत्य का सूर्य मिथ्या जनरव, धाँधली और हुल्लडबाज़ी की घनघोर घटा से कबतक छिपा रहता ! अन्त में एक दिन ऐसा भी आया जब काशी-नरेश, जो उस शास्त्रार्थ के सर्वेसर्वा थे, अपने पक्षपातपूर्ण व्यवहार पर पश्चात्ताप करने लगे। शास्त्रार्थ के कुछ काल पश्चात् स्वामीजी बम्बई से लौटकर पुनः काशी आए और गोसांई बिहारीलाल के बाग में ठहरे। इस समय काशी-नरेश ने स्वामीजी से राजमहल में पधारने की प्रार्थना की। दयालु दयानन्द का चित्त द्रवीभूत हो गया। काशीनरेश ने बड़े सम्मान के साथ उनका स्वागत किया। महाराज को स्वर्ण-सिंहासन पर आसीन कराके स्वयं रजतमय सिंहासन पर बैठे। और उचित सत्कार के बाद विनीत भाव से कहने लगे "महाराज मैं बहुत दिनों से मूर्तिपूजा करता आता हूँ। उसके प्रति मेरी भक्ति और श्रद्धा है, अतएव आपके द्वारा उसका प्रतिवाद होने पर मुझे बहुत कष्ट हुआ। शास्त्रार्थ के समय यदि आप मेरे किसी कार्य से क्षुब्ध हुए हों, तो कृपया क्षमा करें।"

काशी से चलकर स्वामी जी मिर्ज़ापुर होते हुए माघ शुक्ला संवत्-१९२६ वि० को प्रयाग पहुँचे और वासुकी के मंदिर मे ठहरे। उन दिनों वहाँ कुम्भ का मेला हो रहा था। एक दिन मिर्ज़ापुर निवासी पं० मोतीराम जो संस्कृत के अच्छे विद्वान् थे, उधर आ निकले। सुबह से शाम तक उनके साथ खूब धर्म-चर्चा हुई। महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर आदि ब्राह्म समाज के प्रधान नेता भी मेले में पधारे थे। महाराज का परिचय पाने पर वे उनसे मिलने आए, बहुत देर तक प्रेमालाप हुआ। अंत में वे महाराज को कलकत्ता आने के लिए कहकर चले गये। प्रयाग में उन दिनों कुछ लोग ईसाई होने को उद्यत थे, परन्तु स्वामीजी के संसर्ग से उनके संशय मिट गये और उन्होंने अपने धर्म में रहना ही श्रेयस्कर समझा।

प्रयाग से स्वामीजी मिर्ज़ापुर गये और रामरत्न जी के बाग में ठहरे। वहाँ कुछ पंडितों ने स्वामीजी के साथ शास्त्रार्थ किया। मिर्जापुर के पादरी मैथर (Mather) भी कभी-कभी स्वामीजी से मिलने आया करते थे। इन दिनों स्वामीजी की यह धारणा थी कि स्थान-स्थान पर वैदिक पाठशालाएँ स्थापित की जाएँ और जो विद्यार्थी उनमें शिक्षा प्राप्त कर निकलें, उनसे वैदिक धर्म प्रचार कराया जाय। यही विचार उन्होने मिर्ज़ापुर में भी प्रकट किया। उनके उपदेश और अनुरोध से संवत् १९२७ विक्रमी में चौ० गुरुचरण रईस

ने अपने व्यय से वैदिक पाठशाला स्थापित की और अपना एक गृह भी इस कार्य के लिये दे दिया। स्वामीजी ने मथुरा निवासी अपने सहपाठी पं० युगल किशोर को इस पाठशाला में अध्यापक नियुक्त करा दिया। दो अध्यापक और थें। विद्यार्थियों के भोजन और पुस्तकों का व्यय भी चौ०-गुरुचरण देते थे।

मिर्ज़ापुर से गंगा के किनारे भ्रमण करते हुए स्वामीजी काशी पहुँचे और वहाँ दुर्गाकुंड के निकट लाला माधौलाल रईस के बाग़ में ठहरे। विज्ञापन द्वारा पंडितों को स्वामीजी ने शास्त्रार्थ के लिये ललकारा-परन्तु कोई न आया। फ़िर स्वामीजी ने 'अद्वैत-मतखण्डन' नामक पुस्तक लिख कर प्रकाशित की। इस बार काशी में दो मास तक अवैदिक मतों और कुरीतियों का खण्डन करते हुए और सत्य वैदिक धर्म का मंडन करते हुए स्वामीजी गंगा के किनारे-किनारे सोरों होकर कासगंज पहुँचे। कुछ काल पश्चात् ही ज्येष्ठ मास में स्वामीजी ने यहाँ एक वैदिक पाठशाला स्थापित की और फ़िर भ्रमण करते हुए अनूप शहर पधारे। यह संवत् १९२७ की बात है, जबकि अनूप शहर मे रामलीला बड़ी धूमधाम से हो रही थी। स्वामीजी ने राम लीला का खंडन आरंभ कर दिया, जिसके कारण रामलीला में लोगों की अरुचि हो गई। स्वामीजो कहा करते थे कि अपने पूज्य पुरुषों का स्वांग बनाना और उसमें पुरुषों का स्त्री-वेश धारणा करना अनुचित है।

उन दिनों स्वामीजी जीवित पितरों के श्राद्ध का समर्थन करते थे। तीर्थों को नहीं मानते थे। गो-रक्षा के लिये भी बहुत चिन्तित थे और कहा करते थे कि विलायत जाकर महारानी विक्टोरिया और राज्य परिषद् के सदस्यों को समझाऊँगा कि वे गोवध बन्द करा दें। वेदों के आधुनिक भाष्य को अशुद्ध बताते थे और महीधर-भाष्य का विशेष रूप से खंडन करते थे। अँगरेजों की वर्तमान न्याय-वितरण-प्राणली (Administration of justice) पर बहुत दोषारोपण करते और कहते थे कि "प्रत्येक ग्राम में एक पंचायत होनी चाहिये। और कई ग्रामों के ऊपर एक न्याय-सभा होनी चाहिये और इसी सभा के द्वारा सब मुक़द्दमों का निर्णय हो तभी लोग मुक़द्दमेबाज़ों के जाल से छुटकारा पा सकते हैं।"

मुसलमान तहसीलदार सैयद मुहम्मद स्वामीजी का भक्त हो गया था और उनकी बहुत सेवा-सुश्रूषा करने लगा था। एक दिन उसने स्वामीजी से

कहा—"महाराज हमारे धर्म में तो मूर्तिपूजा (बुत-परस्ती) नहीं है।" स्वामीजी ने इसका प्रतिवाद करते हुए कहा कि ताज़िये बनाना भी एक प्रकार की मूर्तिपूजा है' जिसे उसने स्वीकार किया। एक ब्राह्मण ने स्वामीजी के मूर्तिपूजा-खण्डन से रुष्ट होकर उन्हें पान में विष दे दिया, जिसे उन्होंने न्यौलीकर्म करके शरीर से बाहर निकाल दिया। सैयद मुहम्मद को जब यह वृतांत ज्ञात हुआ तो उसने उस ब्राह्मण को किसी अभियोग में गिरफ्तार कर लिया और स्वामीजी को प्रसन्न करने की इच्छा से उसके सामने उसे पकड़ बुलाया। परन्तु स्वामी जी उस व्यक्ति को बन्धन में बँधा देखकर बोले—"मैं दुनिया को कैद कराने नहीं बल्कि उसे क़ैद से छुड़ाने आया हूँ। वह यदि अपनी दुष्टता को नहीं छोड़ता तो हम अपनी श्रेष्ठता को क्यों छोड़ें।" तहसीलदार ने अपील करा-कर उस ब्राह्मण को छुड़वा दिया।

यहाँ से स्वामी जी राम घाट गये और वहाँ से ठाकुर मुकुन्दसिंह की प्रार्थना पर छलेसर पहुँचे। पौराणिक दल पहले ही से उत्तेजित था, अतएव स्वामीजी के आने के दो दिन पश्चात् ही आस पास के पंडित शास्त्रार्थ करने आए परन्तु पराजित हो कर स्वामीजी के कथन की सत्यता स्वीकार करने को बाधित हुए। इसके अतिरिक्त कितने ही मौलवी और काज़ी भी आए इसस्लाम को श्रेष्ठतम प्रतिपादन करने में प्रवृत्त हुए, परन्तु उनका भी वही हाल हुआ जो होना चाहिये था। यहाँ प्रतिदिन ४००-५०० आदमी स्वामी जी के पास एकत्रित रहते थे। महाराज के पधारने के दो दिन पश्चात् ही यहाँ पाठशाला स्थापित की गई और तीन दिन के भीतर अनेक विद्यार्थी प्रविष्ट हो गये। छलेसर से चलकर महाराज गंगातटस्थ स्थानों में भ्रमण करते हुए रामघाट पहुँचे और वहाँ २१ दिन ठहर कर फिर भ्रमणार्थ चल दिये। भाद्रपद सवंत् १९२८ वि०को आपने फर्रुखाबाद के अपने अनुयायियों को पुनः दर्शन दिये और वहाँ वैदिक पाठशाला का निरीक्षण और विद्यार्थियों का परीक्षण किया।

चैत्रशुक्ला ९ संवत् १९२९वि० अर्थात् तारीख़ १६ अप्रैल सन् १८७२ई० को महाराज ने कलकत्ते के लिये प्रस्थान कर दिया। कुछ काल बंगाल, बिहार में भ्रमण करके धर्मपिपासु जनता की पिपासा शान्त करके ८अगस्त स० १८७३ ई० को मिर्ज़ापुर पहुँच गये। वहाँ पाठशाला की दुरवस्था देखकर स्वामीजी को उसे तोड़देना पड़ा और उसके बदले काशी में पाठशाला-स्थापन

का प्रयत्न किया। फलस्वरूप साधु जवाहरलाल के उद्योग से केदार घाट पर एक पाठशाला स्थापित हो गई।

मिर्ज़ापुर से प्रयाग होते हुए २० अक्टूबर सन् १८७३ ई० को स्वामी जी कानपुर पहुंचे और टूका घाट पर आसन जमाया। इस नगर में स्वामीजी के अनेक महत्वपूर्ण व्याख्यान हुए और जनता पर बड़ा प्रभाव पड़ा। इन व्याख्यानों में अंग्रेज भी उपस्थित होते थे।

कानपुर से महाराज फर्रुखाबाद चले गये। फिर लखनऊ गये और ला० गजाधर प्रसाद के बंगले पर ठहरे। यहाँ सहस्त्रों मनुष्यों की भीड़ में गंगाधर शास्त्री से मूर्तिपूजा पर शास्त्रार्थ हुआ और अनेक विषयों पर व्याख्यान हुए। गोरक्षा पर विशेष रूप से बल दिया। यहाँ से स्वामीजी राजा जय किशन दास, सी० एस० आई० की प्रार्थना पर अलीगढ़ पधारे और वहाँ अचल तालाब पर चाऊलाल की आम्र वाटिका में ठहरे तथा राजा जयकिशन दास के अतिथि रहे। २७ दिसम्बर सन् १८७३ ई० को आपका इसी वाटिका में भाषण हुआ। फिर कई दिनों तक लगातार भाषण होते रहे। एक दिन एक मनुष्य विदेशी वस्त्र पहन कर महाराज की सेवा में आया तो उन्होंने उसे स्वदेशी वस्त्र पहनने का उपदेश दिया। ठाकुर मुकंद सिंह की प्रार्थना पर महाराज ने सामगान भी किया था जिसे सुनकर श्रोतागण मुग्ध हो गये थे। यहाँ सर सैयद अहमद खाँ महाराज से कई बार मिलने आए। एक दिन सर सैयद ने पूछा कि महाराज, यह समझ में नहीं आता कि थोड़े से हवन से वायु का सुधार कैसे होता है? महाराज ने कहा जैसे थोड़े से बघार से सारी दाल सुवासित हो जाती है और दूर तक उसकी सुगंध फैल जाती है वैसे ही हवन में डाली हुई सामग्री छिन्न-भिन्न होकर वायु में फैलकर उसका सुधार कर देती है। इससे सैयद साहब का संशय दुर हो गया। राजा जयकिशन दास बड़े प्रेम और श्रद्धा से स्वामी जी का सत्कार करते रहे। नित्य प्रति स्वामी जी के व्याख्यानों में आते और फिर घंटों वार्तालाप करके अपने संदेहों की निवृत्ति करते। एक दिन उन्होंने स्वामीजी से अपने उपदेशों को लेख बद्ध करने का अनुरोध किया। उन्हें पुस्तकाकार में छपाने तथा तद्गत समस्त व्यय स्वयं वहन करने का भी वचन दिया। राजा साहब द्वारा यही उपदेश माला सन् १८७५ ई० में 'सत्यार्थ प्रकाश' के नाम से मुद्रित एवं प्रकाशित हुई।

अलीगढ़ में लगभग एक मास निवास करके स्वामी जी ने हाथरस के लिये प्रस्थान किया। वहाँ उनका दूसरी बार पदार्पण था। यहाँ पाँच-छह दिन निवास करके स्वामी जी मथुरा चले गये। और फिर मूर्तिपूजा के कट्टर समर्थक रंगाचार्य से शास्त्रार्थ करने की प्रबल इच्छा से प्रेरित होकर फाल्गुन शुक्ला ११ संवत् १९३०वि० अर्थात् २६ फरवरी सन् १८७४ई० को वृन्दावन पहुंचे। यहाँ स्वामी जी ने व्याख्यानों की झड़ी लगादी। रंगाचार्य से शास्त्रार्थ का विज्ञापन भी निकल चुका था, परन्तु श्री रंगाचार्य शास्त्रार्थ के लिये न आये। वृन्दावन से स्वामी जी मथुरा लौट गये और गोस्वामी पुरुषोत्तमदास के वल्देव बाग में ठहरे। मथुरा में स्वामी जी के व्याख्यान, उपदेश होते रहे, परन्तु शास्त्रार्थ के लिए किसी का साहस न हुआ। मथुरा में पाँच दिन रहकर स्वामी जी राजा साहब मुरसान की प्रार्थना पर मुरसान चले गये। यहाँ के राजा टीकम सिंह स्वामी जी का बड़ा सम्मान करते थे। एक बार पहले भी संवत १९१७ वि० में स्वामी जी मुरसान गये।

मथुरा से मई सन् १८७४ में प्रयाग होते हुए स्वामी जी काशी पहुंचे और गोसांई राम प्रसाद उदासी के बाग में ठहरे। इस समय स्वामी जी वस्त्र पहनने लगे थे और भाषा में बोलने का भी संकल्प किया था। राजा जयकिशन दास सी० एस० आई० स्वामी जी के उपदेशों को पुस्तकाकार में छपवाने का पहले से ही प्रयत्न करते आ रहे थे। इस बार उन्होंने काशी में अपना विचार कार्य रूप में परिणत करने की ठानली और पुस्तक लिखने के लिये एक महाराष्ट्र पंडित चन्द्रशेखर को नियत कर दिया। इस प्रकार १२ जून सन् १८७४ ई० से सत्यार्थ प्रकाश की रचना आरम्भ हो गई। स्वामी जी बोलते जाते और चन्द्रशेखर लिखते जाते। अन्त को सत्यार्थ प्रकाश का पहला संस्करण १८७५ ई० में राजा जयकिशन दास की सहायता से मुंशी हरबंश लाल के लाइट प्रेस में छप कर प्रकाशित हुआ।

लेखक की दुष्टता के कारण सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम संस्करण में कुछ ऐसी बातें छप गईं जो स्वामी जी के सिद्धान्त के नितान्त प्रतिकूल थीं। इसमें श्राद्ध-तर्पण का समर्थन किया गया था और श्राद्ध में मांस के पिंड देने लिखे थे। इस ओर स्वामी जी का ध्यान आकर्षित किया गया तो उन्हें बड़ा दुःख और आश्चर्य हुआ और उन्होंने तुरंत ही पुस्तक वापस लेली। महात्मा गांधी ने अपने शांतिमय असहयोग आन्दोलन के आरंभ में पहले-पहल नमक-कानून

तोड़ा था, परन्तु स्वामी जी ने सन् १८७५ में ही नमक तथा जंगलात के क़ानून की अनीति और अन्याय को अनुभव कर लिया था और सत्यार्थ प्रकाश में अपनी सम्मति प्रकट की थी कि इनसे ग़रीब लोगों को बहुत हानि पहुंचती है।

इन्हीं दिनों स्वामी जी का पादरी हूपर से भी वार्तालाप हुआ। सर सैयद अहमद खाँ उन दिनों काशी में सब-जज थे। उनके बंगले पर भी स्वामी जी का व्याख्यान हुआ था।

इस वार काशी में लगभग एक मास निवास करके १ जुलाई सन् १८७४ ई० को स्वामी जी प्रयाग पधारे और नगर के बाहर अलोपी बाग में ठहरे तथा शास्त्रार्थ आह्वाहन का विज्ञापन दिया। एक दिन स्वामी जी ने एक बंगाली सज्जन के घर पर व्याख्यान देते हुए धर्म के दश लक्षणों की व्याख्या की और कहा कि इनका किसी विशेष मत से सम्बन्ध नहीं है, ऐसे धर्म को मनुष्य का प्रबल से प्रबल प्रयत्न भी नाश नहीं कर सकता। उन्होने प्रचलित पर्दे की प्रथा पर खेद प्रकट करते हुए कहा कि इसके कारण महिलाएँ सार्वजनिक व्याख्यानों से लाभ उठाने से वंचित रह जाती हैं और अपनी अविद्या को दूर नहीं कर सकतीं। वहाँ लोगों को उपदेश देते हुए स्वामी जी कहा करते थे कि ऋषि-प्रणीत प्रणाली का अनुसरण करो, मुझे गुरु मानने से तुम्हारा क्या प्रयोजन। एक दिन एक वृद्ध महात्मा ने महाराज से कहा कि यदि आप परोपकार के झगड़े में न पड़ते तो इसी जन्म में आपकी मुक्ति हो जाती। महाराज ने उत्तर दिया, "मुझे अपनी मुक्ति की चिन्ता नहीं, मुझे तो उन लाखों मनुष्यों की मुक्ति की चिन्ता है जो दुखी, दीन और दरिद्र हैं।"

अक्टूबर सन् १८७४ में स्वामीजी प्रयाग से जबलपुर चले गये। वहाँ से बम्बई, गुजरात होकर अनेक रियासतों में भ्रमण और उपदेश करते हुए ज्येष्ठ कृष्ण १ संवत् १९३३ वि० अर्थात् ९ मई सन् १८७६ ई० को फ़र्रुखाबाद पहुंचे और लाला जगन्नाथ के विश्रांत घाट पर उतरे और निरंतर भाषण देते रहे। एक दिन एक अंग्रेज पादरी दो देशी ईसाइयों के साथ स्वामी जी से धर्म-विषय पर वार्तालाप करने आया और संतुष्ट होकर चला गया।

फर्रुखाबाद से चलकर स्वामी जी २७ मई सन् १८७६ ई० को काशी पहुंचे और उत्तम गिरि गोसाई के बाग में ठहरे। इस वार स्वामी जी का अधिक समय वेद भाष्य के चिन्तन और उसके मुद्रित कराने की व्यवस्था में व्यतीत होता था। यहाँ से स्वामी जी १५ अगस्त को जौनपुर और वहाँ से १८अगस्त

१९७६ ई० को अयोध्या पहुंच कर सरयू बाग में चौधरी गुरुचरण लाल के मंदिर में उतरे। यहाँ भाद्रपद शुक्ला प्रतिपदा संवत् १९३३ वि० तदनुसार २० अगस्त सन् १८७६ ई० को ऋग्वेदादि-भाष्य-भूमिका लिखना प्रारम्भ किया। पंडितों को शास्त्रार्थ-आह्वाहन के विज्ञापन बँटवाये। अयोध्या में एक मास और नौ दिन ठहर कर स्वामी जी लखनऊ चले गये। वहाँ भी अधिकतर ऋग्वेदादि-भाष्य-भूमिका के रचने में ही रहे। लखनऊ में स्वामी जी ने इंगलेंड जाकर वहाँ वैदिक धर्म प्रचार करने का विचार किया और एतदर्थ आपने श्री वनमाली नामक एक अंग्रेजी भाषा के विद्वान् का सहयोग प्राप्त किया था। लखनऊ से स्वामी जी शाहजहाँपुर गये और वहाँ पांच दिन ठहर कर बरेली चले गये।

६ नवम्बर सन् १८७६ ई० को बरेली पहुँच कर स्वामी जी लाला लक्ष्मी नारायण खजांची की कोठी बेगम बाग में ठहरे और वहीं व्याख्यान देना आरम्भ किया, जिससे पौराणिक दल में हलचल मच गई। फिर स्वामी जी ऋग्वेदादि भाष्य-भूमिका लिखने में दत्तचित्त हो गए। यहां पं० अंगदराम शास्त्री आदि से शास्त्रार्थ हुए।

बरेली से चलकर स्वामी जी मुरादाबाद पहुंचे और राजा जय किशन दास की कोठी में ठहरे। वहां पांच-छह व्याख्यान दिए। व्याख्यान-समाप्ति के बाद शंका-समाधान होते रहते थे। इस बार कई पुरुषों को स्वामी जी ने यज्ञोपवीत्त दिए और लोगों के पूछने पर कहा कि संन्यसी से यज्ञोपवीत लेना शास्त्रोक्त है। इस बार यहां की सबसे अधिक उल्लेखनीय घटना स्वामी जी और पादरी डब्लू पार्कर का शास्त्रार्थ प्रति दिन दो-तीन घन्टे, १५ दिन तक होना है।

दिसम्बर सन् १८७६ को स्वामी जी छलेसर (अलीगढ़) पधारे और वहां ठाकुर मुकुन्दसिंह के यहां ठहरे और प्रचार किया। छलेसर से १ जनवरी १८७७ को दिल्ली पहुंचे और १५ दिन पश्चात् १६ जनवरी को वहां से मेरठ आ गए।

४ फरवरी १८७७ को स्वामी जी मेरठ से सहारनपुर पधारे और पनचक्की के पास लाला कन्हैया लाल के शिवाले के पास एक मकान में ठहरे। यहां व्याख्यान और शास्त्रार्थ होते रहे।

११ मार्च को स्वामी जी चांदापुर जिला शाहजहाँपुर के प्रसिद्ध मेले में सम्मिलित होने चले गए। वहां भी खूब प्रचार किया और शास्त्रार्थ भी हुए।

२३ मार्च को स्वामी जी ने सहारनपुर लौट कर पंजाब के लिए प्रस्थान किया। पंजाब भ्रमण के पश्चात् पं० उमरावसिंह अध्यापक टामसन इंजीनियरिंग कालेज रुड़की और कतिपय रईसों तथा राज कर्मचारियों की प्रार्थना पर स्वामीजी रुड़की पधारे और विद्वत्ता पूर्ण भाषण दिए- जिसका ईसाई, मुसलमानों सब पर बड़ा प्रभाव पड़ा।

२० अगस्त सन् १८७८ को रुड़की में आर्य समाज स्थापित हुआ। २१ अगस्त को महाराज ने रुड़की से प्रस्थान कर २२ अगस्त को अलीगढ़ पहुंचे और वहां पं० आफताव राय के बाग में ठहरे। २३ अगस्त को सर सैयद अह्मद खां ने स्वामी जी तथा बम्बई के सज्जनों का जो स्वामी जी से मिलने आये थे स्वागत-सत्कार किया।

२६ अगस्त १८७८ को स्वामी जी अलीगढ़ से मेरठ पहुंचे और बा० दामोदरदास की कोठी में ठहरे। व्याख्यान और शास्त्रार्थ हुए और स्वामी जी के प्रभाव सें २९ दिसम्बर सन् १८७७ ई० को मेरठ में आर्य समाज स्थापित हो गया, जिसके ८१ सभासद हुए।

यहां से सहारनपुर, रुड़की होते हुए २० फरवरी सन् १८७९ को ज्वालापुर पहुंचे और मूला मिस्त्री के उद्यान गृह में आसन जमाया। लोग दर्शन और उपदेश -श्रवण के लिए आने लगे। एक मुसलमान रईस राव एवज़ खां उनसे कई बार मिले और अपने प्रश्नों का युक्ति संगत उत्तर पाकर बहुत सन्तुष्ट हुए। यहां से २७ फरवरी को स्वामी जी हरद्वार के कुम्भ पर पहुंचे और वहां मूला मिस्त्री के खेत में डेरा डालकर विज्ञापन-वितरण किये सहस्त्रों लोगों की नित्यंप्रति भीड़ लगने लगी। प्रातः काल सात बजे से रात के बारह बजे तक मेला-सा लगा रहता था।

हरद्वार में कुम्भ-प्रचार का कार्य समाप्त करके १४ अप्रैल १८७९ को महाराज देहरादून पधारे और पं० कृपाराम के बंगले में ठहरे। उन दिनों स्वामी जी अस्वस्थ थे। रोग का वेग कम होने पर डेरे पर ही व्याख्यानों का प्रबन्ध किया गया। २९ अप्रैल १८७९ को देहरादून में आर्ष समाज स्थापित हो गया। महाराज ने यहां जन्म के एक मुसलमान मुहम्मद उमर

को शुद्धि करके उसका नाम अलखधारी रक्खा। ३० अप्रैल को स्वामी जी सहारनपुर चले गए और वहां दो दिन ठहर कर कर्नल आल्काट और मैडम ब्लैवैटस्की के साथ मेरठ चले गए। ये लोग स्वामी जी से मिलने बम्बई से सहारनपुर पहुंच चुके थे। ६ मई तक कर्नल और मैडम स्वामी से अधिकतर योग-विषय पर बात-चीत करते रहे ओर ६ मई को यह लोग बम्बई चले गए।

२२ मई सन् १८७९ को स्वामी जी अलीगढ़ पहुंचे और वहां जाते ही रुग्ण हो गए। वहां से २८ मई को छलेसर गये। वहां उनकी सम्यक् चिकित्सा हुई और वे रोग मुक्त हो गये। तपश्चात् ३ जौलाई को मुरादाबाद चले गये, वहां पूर्ववत् राजा जय किशन दास की कोठी में ठहरे। २० जौलाई सन् १८७९ को मुरादाबाद में आर्य समाज की स्थापना की गई, जिसके प्रधान मुन्शी इन्द्रमणि निर्वाचित हुए।

३१ जौलाई को स्वामी जी मुरादाबाद से बदायूँ पहुंचे। वहां उनके आगमन से पूर्व ही मई मास में आर्य समाज स्थापित हो गया था। एक दिन शाहजहांपुर के एक अंग्रेज पादरी आये और अत्यन्त विनीत भाव से प्रश्नोत्तर करके चले गये।

१४ अगस्त को स्वामी जी बदायूँ से बरेली चले गये और पूर्ववत् लाला लक्ष्मी नारायण खंजांची की बेगम बाग नामक कोठी में ठहरे। कई दिन शिक्षा प्रद उपदेश होते रहे, जिसमें कलक्टर साहब तथा अन्य अंग्रेज व पादरी उपस्थिति रहते थे। इन दिनों बरेली में स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्द जी (पूर्व महात्मा मुंशीराम जी) के पिता बरेली में शहर कोतवाल थे। मुंशी-राम जी काशी में पढ़ते थे। वे अपने पिता के पास आये हुए थे। इनके पिता कट्टर मूर्तिपूजक थे और ये स्वयं घोर नास्तिक थे। संस्कृत भाषा में इनकी घोर अश्रद्धा थी। वेद का तो इन्होंने नाम भी न सुना था। पुत्र की अश्रद्धा और अनास्था की चिकित्सा कराने के अभिप्राय से कोतवाल साहब मुंशीराम को स्वामी जी के दोनों व्याख्यानों में लाए। विद्यार्थी मुंशीराम समझते थे कि कोरा संस्कृतज्ञ साधु बुद्धि-संगत बात क्या कहेगा। व्याख्यान में जा कर महाराज की भव्य और विशाल मूर्ति देखने मात्र से मुंशीराम की अश्रद्धा घटने और श्रद्धा बढ़ने लगी और पादरी स्काट आदि दो-तीन अंग्रेजों को देखकर तो और भी स्फूर्ति मिली। व्याख्यान आरम्भ

होने के दस मिनट बाद ही मुंशीराम चकित रह गए और फ़िर तो नित्य नियम से सत्संग में आने लगे। एक दिन मुंशीराम ने ईश्वर-विषय पर महाराज से प्रश्नोत्तर किए तो महाराज ने उन्हें पांच ही मिनट में निरुत्तर कर दिया। अन्ततः एक समय आया जब मुंशीराम दयानन्द के शिष्य बन गए और कहा कि यह महान् पुरुष सच्चा ऋषि था। इन्हीं मुन्शीराम ने स्वामी श्रद्धानन्द बनकर ईश्वर और धर्म के नाम पर बलिदान दिया। पादरी स्काट स्वामी जी के भक्त बन गए थे और उनके व्याख्यान तथा सत्संग में नित्य नियम से आया करते थे। इस लिए स्वामी जी उन्हें भक्त स्काट कहा करते थे।

४ सितम्बर सन् १८७९ को स्वामी जी शाहजहांपुर पहुंचे। इस समय वहां आर्य समाज स्थापित हो चुका था। वहां से लखनऊ कानपुर होकर स्वामी जी फर्रुखाबाद पहुंचे और वहां कई दिन तक व्याख्यान देते रहे। अबकी बार स्वामी जी के आगमन से पूर्व ही फर्रुखाबाद में आर्य समाज लाला मदनमोहन लाल के मकान पर स्थापित हो चुका था। तब ही फ़तेहगढ़ में स्वामी जी ने आर्य समाज के दस नियमों की अत्यन्त सुबोध व्याख्या की।

८ अक्तूबर को स्वामी जी कानपुर गए, परन्तु वहां वेद भाष्य-रचना के अतिरिक्त और कोई कार्य नहीं किया। १७ अक्तूबर को प्रयाग गए और वहां विविध विषयों पर अनेक व्याख्यान दिए। २३ अक्तूबर १८७९ को महाराज प्रयाग से मिर्ज़ापुर पधारे और सेठ राम रतन के बाग में ठहरे। मिर्ज़ापुर में तीन व्याख्यान हुए। ३० अक्तूबर १८७९ को स्वामी जी दानापुर (बिहार) गए और वहां से १९ नवम्बर को काशी पहुंचे और वहाँ महाराज विजयनगर के आनन्द बाग में ठहरे। वहां कर्नल आल्कॉट और मैडम ब्लैवैटस्की महाराज से मिलने आए। दामोदर नामक दुभाषिये के द्वारा परस्पर बात-चीत हुई। विज्ञापन देने पर जब कोई शास्त्रार्थ के लिए आगे न बढ़ा तो व्याख्यान का विज्ञापन दिया गया। १२ फ़रवरी सन् १८८० को लक्ष्मी कुण्ड पर वैदिक यंत्रालय की स्थापना हुई। अबकी बार वहाँ कुल बीस व्याख्यान हुए। अन्तिम व्याख्यान के दिन १५ अप्रैल सन् १८८० को काशी में आर्य समाज की स्थापना हुई। मिस्टर सिनेट सम्पादक 'पाइनियर' ने स्वामी जी से मिलने को शिमला से एक पत्र भेजा

था अतएव प्रयाग जा कर स्वामी जी उनसे मिले और फिर काशी लौट आए ।

काशी से बिदा होकर ५ मई सन् १८८० को स्वामीजी लखनऊ पधारे और मोती महल में ठहरे ।

२० मई को स्वामीजी फ़र्रुख़ाबाद चले गये और लाला कालीचरण रईस के बाग़ में ठहरे वहाँ आपके प्रभावशाली व्याख्यानों को सुनकर हिन्दू,मुसलमान, ईसाई आदि सब चकित होगये मि. स्कौर साहब, मजिस्ट्रेट जिला और मि. डानसिटन ज्वाइंट मजिस्ट्रेट भी व्याख्यान में उपस्थित थे ।

३० जून को यहाँ से चलकर स्वामीजी १ जौलाई को मैनपुरी पहुँचे । तीन व्याख्यान हुए । स्वामीजी के चले जाने पर ११ जौलाई को मैनपुरी में आर्य समाज स्थापित हो गया ।

८ जौलाई सन् १८८० को मेरठ आर्य समाज के निमंत्रण पर स्वामीजी मैनपुरी से मेरठ पधारे और लाला. रामशरणदास की में ठहरे । वहीं पर उपदेश देते रहे । स्वामीजी के मेरठ निवास के समय कर्नल आलकौट और मैडम ब्लैवैटस्की भी शिमला जाते हुए मेरठ में स्वामीजी से मिलने ठहर गये थे । स्वामीजी ने अपना पहला स्वीकार पत्र १५ अगस्त १८८० को मेरठ में लिखा था और १८ अगस्त को उसकी रजिस्ट्री हुई । इसके द्वारा जो परोपकारिणी सभा स्थापित की गई थी उसका प्रधान रायमूल राज एम. ए. को बनाया था । १५ सितम्बर को स्वामीजी मुज़फ़्फ़र नगर गये । वहाँ उनके दस व्याख्यान हुए और वहाँ से फिर वे मेरठ आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव में सम्मिलित होने आए । मेरठ में अपने भक्तों से वार्तालाप करते हुए स्वामीजी ने अपने जीवन की घटनाएँ सुनाईं थीं, उनमें से एक यह है कि उनके व्याख्यान को सुनकर एक स्थान पर एक आँग्ल कलक्टर ने कहा था कि यदि ये सब लोग आपके कथन के अनुसार चलने लगें तो हमें भारत छोड़ना पड़ेगा ।

७ अक्टूबर को स्वामीजी देहरादून पधारे । यहाँ उनका छायाचित्र भी लिखा गया । यहाँ २० नवम्बर तक धर्मपिपासुओं की पिपासा शांत करते हुए फिर मेरठ पधारे और वहाँ पाँच दिन रहकर आगरा चले गये । आगरे में २८ नवम्बर से व्याख्यान आरम्भ हुए और लगातार २५ व्याख्यान हुए । २५ दिसम्बर सन् १८८० रविवार को आगरा नगर में आर्यसमाज की स्थापना

हुई। आगरे में रोमन कैथौलिक ईसाइयों का एक बड़ा गिरजा है, जिसका नाम सैंट पीटर्स चर्च है। वह भारतवर्ष के गिरजाओं में दर्शनीय समझा जाता है और उसमें बड़ा पादरी भी रहता है। पादरी की प्रार्थना पर कतिपय सुप्रतिष्ठित सज्जनों के साथ १२ दिसम्बर को स्वामीजी उससे मिलने गये और कुछ धर्मालाप करके चले आये। २५ जनवरी सन् १८८१ से स्वामीजी के व्याख्यानों का दूसरा प्रवाह चला और २९ जनवरी तक चलता रहा। फिर एक व्याख्यान २७ फरवरी को और दूसरा ६ मार्च को हुआ। आगरे में 'गोकरुणा निधि' नामक पुस्तक भी स्वामीजी ने रची। इसके बाद एक दिन का व्याख्यान मुंशी गिरधर लाल के यहाँ गोरक्षा पर हुआ और व्याख्यान के अन्त में गो-कृष्यादि-रक्षिणी सभा की स्थापना हुई, जिसके मुंशी श्री गिरधरलाल वकील मंत्री निर्वाचित हुए। उसी समय उक्त सभा के लिये ११००) रु० का चन्दा भी एकत्र हुआ।

१० मार्च सन् १८८१ को आगरा से भरतपुर जाने के लिये स्वामी जीं रेल पर सवार हो गये। विदा के समय आर्य समाज आगरा ने स्वामीजी की सेवा में अभिनन्दन पत्र प्रस्तुत किया जो सहर्ष ग्रहण किया। यह वह दिन था, जब संयुक्त-प्रान्त ने धार्मिक जगत् के हृदय-सम्राट्, आर्य संस्कृति के परित्राता अपने इस जगद्गुरू को आगरा नगर से अंतिम बिदाई दी थी। उस समय कौन जानता था कि यह सचमुच अंतिम बिदाई होगी। लगभग दो वर्ष के बाद ३० अक्टूबर १८८३ का वह अभागा दिन भी आया जब श्रद्धालु भक्तों ने अजमेर नगर से स्वामीजी के निर्वाण पद प्राप्ति के दुःसंवाद को हृदय पर पत्थर रखकर सुना। भारतवर्ष ही क्या समस्त धार्मिक जगत् पर वज्रपात हो गया।

स्वामीजी का पार्थिव शरीर तो अवश्य तिरोहित हो गया, परन्तु उनकी आत्मा सूक्ष्म रूप में समस्त भारत में व्याप्त हो गई, जिसके परिणाम स्वरूप उनका आरम्भ किया हुआ कार्य और भी द्रुतगति से आगे बढ़ाया गया। यह कहते हुए अत्यन्त हर्ष होता है कि उत्तर प्रदेश को स्वामीजी का सबसे अधिक आभारी होने का गौरव प्राप्त है। स्वामीजी की निर्वाण पद प्राप्ति के लगभग तीन वर्ष के पश्चात् जिस आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश की मेरठ में स्थापना की गईउसकी पुण्य-प्रेरणा स्वामीजी कर गये थे। अतएव सभा के जन्मकाल से आगें का इतिहास लिखने के पूर्व इस अध्याय के लिखने की आवश्यकता हुई। इसके बिना यह इतिहास अधूरा ही रह जाता। विचा-

ध्ययन, शास्त्रार्थ, खण्डन-मण्डन का आरम्भ, वैदिक पाठशालाओं की स्थापना आदि बातों के साथ-साथ आर्य समाज की मुख्य धर्म-पुस्तक 'सत्यार्थप्रकाश' का प्रणयन तथा प्रकाशन इसी प्रदेश के काशी नगर में हुआ था। इसी प्रदेश के अयोध्या नगर में ऋग्वेदादि भाषा-भूमिका का लिखना आरम्भ हुआ और सबसे अधिक गौरव की बात तो यह है कि इसी प्रान्त की भाषा हिन्दी को स्वामीजी ने आर्यभाषा घोषित करके उसी में अपने ग्रन्थों का निर्माण किया तथा उसी में अपने धर्मोपदेश दिये। कतिपय आर्यसमाजों की स्थापना तो स्वयं स्वामी जी के कर-कमलों द्वारा हो चुकी थी, जिसके अनुकरण पर अन्य आर्य समाजों का जन्म हुआ। तात्पर्य यह कि अपने ७५ वर्ष के इस दीर्घकाल में उत्तरप्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा ने जो भी कार्य किये हैं, उन सबका निर्देश प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूप में स्वर्गीय स्वामीजी महाराज कर गये थे। अतएव आगे के अध्यायों में इन्ही प्रसंगों का संक्षिप्त वर्णन किया जाएगा।

३ आर्य प्रतिनिधिसभा का इतिहास

आर्यसमाज के नियम एवं प्रथम आर्यसमाज की स्थापना :—भारतवर्ष में आर्यसमाज की सर्व प्रथम स्थापना सन् १८७४ ई० के अन्तिम दिनों में काठियावाड़ के केन्द्र स्थान राजकोट में की गई। यह समाज स्थानीय प्रार्थना समाजियों के उत्साह पर स्थापित किया गया था। बाद में इसकी एक शाखा अहमदाबाद में भी की गई। किन्तु यह दोनों प्रारम्भिक समाजें प्रार्थना समाजियों से मतभेद हो जाने के कारण कुछ काल बाद भंग हो गईं। अभी तक समाज के नियम भी निर्धारित नहीं हुए थे। विधिवत् नियमादि निर्धारित कर प्रथम आर्यसमाज की स्थापना चैत्र शु० ५ सं० १९३२ वि० तदनुसार १० अप्रैल सन् १८७५ ई० को गिरगांवरोड में डा० माणिक जी की बागवाड़ी में सायं ५॥ बजे की गई। उस समय आर्यसमाज के २८ नियम निर्धारित किये गये थे। इन्हीं नियमों के आधार पर दूसरा आर्यसमाज कुछ दिन बाद पूना नगर में स्थापित किया गया। दो वर्ष उपरान्त महर्षि जी लाहोर पधारे और २४ जून १८७७ ई० को डाक्टर रहीमखां की कोठी में लाहौर आर्यसमाज की स्थापना की गई। बम्बई में जो २८ नियम निर्धारित किए गए थे, वह संख्या और विस्तार में अधिक थे और उनमें कितनी ही बातें ऐसी थीं जो उपनियमों में जानी चाहिये थीं, क्योंकि उनका सम्बन्ध आर्यसमाज के उद्देश्य और मन्तव्य से नहीं अपितु आर्यसमाज के संगठन और सदस्यों के परस्पर व्यवहार से था। अतः महाराज ने उनमें स्वयं संशोधन करना उचित एवं आवश्यक समझकर उन २८ नियमों के स्थान पर केवल १० नियम निर्धारित किए, जो उस समय से सर्वत्र मान्य हुए।

उत्तरप्रदेश में ऋषि द्वारा स्थापित आर्यसमाज :—लाहौर के उपरान्त पंजाब के अनेक नगरों में आर्यसमाज स्थापित करने के उपरान्त स्वामी जी महाराज ने उत्तरप्रदेश की सीमा में प्रवेश कर आरम्भ में २० अगस्त १८७८ को रूड़की में तथा २९ सितम्बर सन् १८७८ ई० को मेरठ नगर में अपने कर कमलों से आर्यसमाज स्थापित किये। वैसे इससे पूर्व १८७४ में नैनीताल नगर में स्वामी जी के उपदेशों से प्रभावित व्यक्तियों की एक संस्था सत्य धर्म सभा प्रचारिणी बन चुकी थी उस सभा का १८७५ में 'आर्यसमाज" के रूप में परवर्तन कर दिया गया।

इसके उपरान्त प्रान्त के निम्न स्थानों पर स्वामी जी महाराज ने आर्यसमाज स्थापित किये।

२९ अप्रैल सन् १८७९ ई०—देहरादून
२० जौलाई सन् १८७९ ई०—मुरादाबाद
१५ अप्रैल सन् १८८० ई०—काशी
९ मई सन् १८८० ई०—लखनऊ
१९ मई सन् १८८० ई०—फर्रुखाबाद
२६ दिसम्बर सन् १८८० ई०—आगरा

सहारनपुर का आर्यसमाज भी श्री स्वामी जी द्वारा स्थापित किया गया।

इनके अतिरिक्त प्रान्त के अन्य अनेक स्थानों पर स्वामी जी के जीवन काल में ही आर्यसमाजों की स्थापना हो गई थी। ऋषि निधन के उपरान्त प्रान्त के विभिन्न नगरों मे आर्य समाज स्थापना की होड़ लग गई और एक वर्ष के अन्दर एक सौ के लगभग आर्य समाज स्थापित हो गए।

मेरठ में सभा की स्थापना :—आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज के निधन (सन् १८८४ ई०) के तुरन्त उपरान्त ही आर्यसमाजों को संगठित करने की भावना आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ताओं के हृदय में अंकुरित हो उठी। सन् १८८५ ई० में श्री बा० लक्ष्मणस्वरूप जी ने, मेरठ नगर से प्रकाशित होनेवाले 'आर्यसमाचार' नामक पत्र में प्रान्तीय संगठन स्थापित करने पर बल दिया।

सर्व प्रथम उनके इस प्रस्ताव का पंजाब के आर्य बन्धुओं ने क्रियात्मकरूप से समर्थन किया और पंजाब आर्य प्रतिनिधिसभा की अविलम्ब स्थापना कर डाली। २९ दिसम्बर सन् १८८६ ई० को उत्तरप्रदेशीय आर्य प्रतिनिधिसभा की स्थापना भी हो गई। यह स्थापना प्रदेश के क्रान्तकारी नगर मेरठ

(मयराष्ट्र) में ही की गई, जहाँ आठ वर्ष पूर्व अर्थात् २९ सितम्बर १८७८ ई० को महर्षि दयानन्द ने अपने कर कमलों से आर्य-समाज स्थापित किया था।

श्री बा० लक्ष्मणस्वरूप जी इस प्रान्तीय सभा के प्रथम प्रधान एवं श्री बिहारीलाल जी मुज़फ्फरनगर निवासी इसके प्रथम मंत्री निर्वाचित हुये।

सभा का प्रारम्भिक युग सन् १८८७ से १९०० ई० पर्यन्त :—सभाकार्यालय- सभा का अपना मुख्य कार्यालय सभा मंत्री के ही स्थान पर प्रायः रहता था अन्य कार्यालय भी अधिकारियों के निवास स्थान में ही रहा करते थे। इस प्रकार यह सब कार्यालय गतिशील रहते रहे जब तक कि प्रान्त के केन्द्र स्थान लखनऊ में सभा कार्यालय को केन्द्रित करने की दृष्टि से एक विशाल कोठी सन् १९३८ में ३६००० रु० में क्रय न करली गई तथा १ अगस्त १९३९ ई० को सभा कार्यालय लखनऊ में केन्द्रित न कर दिया गया।

सभा का प्रेस :—सभा के कर्मठ नेता स्व० पंडित भगवानदीन जी मिश्र ने अपना निजी आर्य भास्कर प्रेस सन् १८९९ ई० में आर्य प्रतिनिधिसभा को दान कर दिया और वह मुरादा बाद में जहाँ उस समय सभा का कार्यालय था संचालित होने लगा। सन् १९०४ ई० में सभा के निश्चयानुसार यह प्रेस आगरा चला गया और सन् १९४० ई० तक वहाँ ही रहा। १६ मार्च सन् १९३५ ई० में माननीय पं० भगवानदीन जी मिश्र की स्मृति में इस प्रेस का नाम भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस कर दिया गया। सभा का कार्यालम लखनऊ में १ अगस्त सन् १९३९ ई० में केन्द्रित हो जाने पर यह प्रेस भी सन् १९४० ई० में लखनऊ ही चला आया।

सभा का पत्र :—सन् १८९८ ई० में श्री नारायण प्रसाद जी ने मुरादाबाद से 'मुहरिक' नामक पत्र सभा की ओर से निकाला। अगले वर्ष इस पत्र का नाम बदल कर आर्यामित्र कर दिया गया। और उर्दू के स्थान पर हिन्दी में प्रकाशित होने लगा। और सन् १९०४ ई० में प्रेंस के आगरा चले जाने पर आर्यमित्र का प्रकाशन भी आगरे से किया जाने लगा।

जब सभा का प्रेस लखनऊ पहुँचा तो आर्षमित्र को भी लखनऊ से प्रकाशित करने की व्यवस्था की गई। (आर्यमित्र के इतिहास की जानकारी के लिये देखें अध्याय १४)

प्रकाशन विभाग :—सभा ने अपने प्रारम्भिक जीवन काल से ही वैदिक साहित्य प्रकाशन को अपना ध्येय बनाया और उत्तमोत्तम पुस्तकें वह ट्रैक्ट छाप कर सर्व साधारण जनता के हाथों में पहुँचाए। इस विभाग का पूर्व नाम ट्रैक्ट विभाग था। प्रति वर्ष इसका एक अधिष्ठाता चुना जाता चला आया है। जिसकी देखरेख में यह प्रकाशन का कार्य होता रहा। सभा द्वारा प्रकाशित अनेक पुस्तकें व ट्रैक्ट समाप्त होने पर और दुबारा प्रकाशित न किये जाने के कारण अब अनुपलब्ध हैं। १६-३-३९ की अन्तरंग में इस विभाग का नाम स्वर्गीय पं० घासीराम जी एम० ए० की स्मृति में घासीराम प्रकाशन विभाग कर दिया गया। सम्प्रति इस विभाग में जो ग्रन्थ उपलब्ध हैं उनको परिशिष्ट (ग) में देखें।

जिला उपसभा योजना :—उत्तर प्रदेश एक बहुत विस्तृत प्रान्त है। केवल सभा के कार्यालय से सारे प्रान्त में प्रचार की व्यवस्था करना असुविधा जनक एवं अधिक व्यय साध्य थी। अतः प्रचार कार्य को विकेन्द्रित करने की भावना से ज़िला उपसभा बनाने की योजना की गई। ज़िलों के आर्यसमाजों को परस्पर मिलकर प्रचार कार्य को व्यवस्थित करने का १९०९ ई० में सभा द्वारा अनुरोध किया गया। इस योजना का समाजों ने स्वागत किया। जिन ज़िलों में न्यून से न्यून ९ आर्य समाज थे उनमें उपसभाएँ स्थापित होने लगी। इस समय तक प्रान्त के ३४ जिलों में उपसभाएँ स्थापित हो चुकी हैं जो अपने २ क्षेत्र में प्रचार कार्य में संलग्न हैं। इनके कार्य का विवरण अध्याय १८ में पढ़ें।

नियम संग्रह :—सभा की नियमावली में आवश्यक संशोधन एवं परिवर्धन करके सन् १९१४-१५ में उसको प्रकाशित किया गया तथा आगे चलकर सन् १९२८ ई० में पुनः आवश्यक संशोधन परिवर्धन किये गये। इसी प्रकार आगे भी आवश्यकता नुसार संशोधनादि होते रहे।

भूसम्पत्ति विभाग :—सभा को अनेक सम्पत्तियाँ दानियों द्वारा गुरुकुल व वेदप्रचार के निमित्त उपलब्ध होने लगीं। सन् १९१४-१५ में खुदागंज ग्राम ज़िला फरूखाबाद में एक विशेष सम्पत्ति उपलब्ध हुई। सभा ने इन सब सम्पत्तियों की व्यवस्था करने की दृष्टि से एक भू-सम्पत्ति विभाग की स्थापना की। जिसका कार्य एक अधिष्ठाता के संरक्षण में होता है।

सभा का पुस्तकालय—इस प्रारम्भिक युग में सभा ने अपना एक पुस्तकालय भी स्थापित किया। जिसमें वैदिक साहित्य के अतिरिक्त मत मतान्तरों के ग्रन्थों के संग्रह करने की व्यवस्था की गई। सभा कार्यालय के साथ साथ इस पुस्तकालय का घूमते रहना विशेष असुविधाजनक एवं हानि कारक था। अतः सन् १९११ ई० में सभा का गुरुकुल फर्रुखाबाद से वृन्दावन आ जाने पर पुस्तकालय को भी वहीं स्थायी रूप से भेज दिया। अब इस पुस्तकालय में १०००० से ऊपर उत्तमोत्तम ग्रन्थ संग्रहीत हैं। और सभा द्वारा नियुक्त पुस्तकाध्यक्ष इस पुस्तकालय का संचालन करता है। १६-३-१९३९ ई० में स्वर्गीय पं० तुलसी राम जी की स्मृति में उनके नाम से पुस्तकालय प्रसिद्ध हुआ।

उपदेश विभाग—जिस संस्था का ध्येय अपने विचारों को दूर देश व देशान्तर तक पहुंचाने का हो उसके लिये इस विभाग का मूल्य सर्वाधिक है। योग्य प्रचारकों (मिशनरियों) के बल पर ही सिद्धान्तों का प्रचार विशेष रूप से हुआ करता है। सभा ने इस तथ्य को हृयंगम कर अपने आरम्भिक काल में सर्व प्रथम इस विभाग की स्थापना की।

प्रान्त के अन्दर जिन महानुभावों ने सर्व प्रथम इस विभाग को सुशोभित किया और नाना कष्ट उठाकर वैदिक धर्म का प्रचार किया उनके नाम निम्न प्रकार हैं—१—श्री पं० नन्द किशोर देव शर्मा, २—श्री पं० बसन्तलाल शर्मा, ३—श्री पं० प्रयागदत्त जी अवस्थी आदि प्रान्त के प्रमुख आर्ष विद्वान एवं नेताओं ने इस विभाग का अधिष्ठातृत्व किया है, यथा—पं० भगबान दीन जी, कुंवर हुकुमसिंह जी, पं० तुलसीराम जी, डा० श्याम स्वरूप जी, महात्मा श्रीराम जी, ठा० मशालसिंह जी, पं० धर्मपाल विद्यालंकार, पं० रामदत्त जी शुक्ल आदि।

आर्य समाज के बड़े २ नेताओं एवं विद्वानों ने भी इस उपदेश विभाग में कार्य करके अपनी मिश्नरी स्प्रिट का परिचय दिया है यथा—

१. पं० शेरसिंह जी कश्यप महोपदेशक
२. ,, सुधाकर जी आयुर्वेदशिरोमणि
३. सम्पादकाचार्य पं० रुद्रदत्त जी शर्मा
४. पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री एम० पी०
५. ,, वाचस्पति जी शास्त्री विद्याभास्कर

६. „ शिवशर्मा जी शास्त्रार्थ महारथी
७. विद्याभास्कर पं० ओमप्रकाश जी शास्त्री
८. वि० भा० सच्चिदानन्द जी शास्त्री
९. वि० भा० पं० रुद्रदत्त जी शास्त्री
१०. पं० सत्यमित्र जी शास्त्री विद्यावारिधि वेदतीर्थ- पुराणाचार्य
११. ठा० नत्थासिंह जी
१२. साहित्याचार्य पं० ओंकार शास्त्री 'प्रणव'
१३. वि० भा० पं० गोपाल दत्त जी शास्त्री एम० ए०
१४. पं० रमेशदत्ता जी शास्त्री
१५. पं० देशबन्धु जी अधिकारी
१६. „ यशपाल जी शास्त्री
१७. वि० भा० पं० रामचन्द्र जी शास्त्री काव्य व्याकरण तीर्थ
१८. „ „ विश्वेश्वर जी शास्त्री
१९. पं० भारतमित्र जी शास्त्री
२०. ठा० प्रवीण सिंह
२१. ठा० गंगा सिंह

यह विभाग भी अधिष्ठाता के साथ घूमता रहा। सभा कार्यालय केन्द्रित हो जाने के उपरान्त उपदेश विभाग भी लखनऊ में सभा मन्त्री के साथ संयुक्त कर दिया गया। आरम्भ में इस विभाग में ४ या ५ उपदेशक केवल थे किन्तु वाद में वढ़ कर संख्या ५० तक पहुंच गई।

पूर्व युग १९०१ से १९२० तक—यह युग सभा के विशेष विकास एवं प्रचार का युग रहा है। अनेक क्षेत्रों में सभा ने प्रगति करनी आरम्भ कर दी और सभा की शक्ति भी उत्तरोत्तर बढ़ती गई।

अवैतनिक उपदेशक संघ की स्थापना—सन् १९०४ ई० में सभा ने प्रचार कार्य को तीव्र करने की दृष्टि से प्रान्त के उन सब महानुभावों की जो प्रचार कार्य में दक्ष थे किन्तु पूरा समय देकर सभा के उपदेशक विभाग में कार्य नहीं कर सकते थे, सेवायें उपर्युक्त संघ के लिए उपलब्ध कीं।

आरम्भ में केवल चार सज्जनों ने अपनी सेवायें इस संघ को अर्पित की थीं किन्तु शनैः २ यह संघ बढ़ कर अब २३६ प्रचारकों का एक महान् संघ बन गया है।

गुरुकुल स्थापना—सन १९०६ ई० में गुरुकुल सिकन्दराबाद ज़िला बुलन्दशहर सभा की सैरक्षता में आ गया। इस समय इसमें केवल ५० क्षात्र थे। सन् १९०८ ई० में इसे फर्रुखाबाद स्थानान्तरित कर दिया गया। फर्रुखाबाद में ३ वर्ष तक चलता रहा और सन् १९११ ई० को इसे वृन्दावन (मथुरा) ले आया गया और राजा महेन्द्रप्रताप सिह जी द्वारा प्रदत्त विशाल उद्यान में इस को प्रतिष्ठित कर दिया गया। कुछ ही काल उपरान्त महात्मा नारायण प्रसाद जी की सेवायें इस को उपलब्ध हो गईं और उनकी संरक्षता में यह उत्तरोत्तर प्रगति करता चला गया।

सन १९४० ई० में इसमें व्रहमचारियों की संख्या बढ़कर ३५० से ऊपर हो गई थी। अनेक वेद, आयुर्वेद, सिद्धान्तादि के विभाग प्रथक प्रथक स्थापित हो गए और इसने एक विश्व विद्यालय का रूप धारण कर लिया। (विशेष जानकारी के लिये अध्याय १६ में गुरुकुल का वर्णन पढ़ें)

सार्वदेशिक सभा की स्थापता—आर्यसमाज के सार्वदेशिक संगठन का प्रश्न अनेक वर्षों से आर्य जगत् में उठा हुआ था किन्तु इसको भूर्तरूप सन् १९०९ ई० में ही दिया गया।

सभा की और से निम्न महानुभावों को इस संगठनों में भाग लेने के लिए निमुक्त किया गया।

१—पं० भगवान दीन मिश्र २—म० नारायण प्रसाद जी मुरादाबाद, ३—पं० रामदुलारे लाल जी एडवोकेट फतेगढ़, ४—श्री श्यामसुन्दर लाल जी वकील मैंनपुरी तथा ५—श्री रामप्रसाद जी बी० ए०।

पटियाला केस—सन् १९०९ ई० में पटियाला दरबार की ओर से आर्य समाज के अनेक कार्यकर्त्ताओं पर राजद्रोही होने का अभियोग लगाया गया और विधिवत् उन पर न्यायालय में केस भी चलाया गया। सभा की ओर से इस कृत्य का तीव्र प्रतिरोध किया गया और प्रबल युक्ति तर्क और प्रमाणों से यह सिद्ध किया गया कि आर्यसमाज राजद्रोही संस्था नहीं है अपितु एक धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सुधारवादी संगठन है। सभा की ओर से इस अभियोग के बचाव पक्ष में आर्थिक सहायता भी विशेष रूप से प्रदान की गई।

लार्ड मेस्टन का गुरुकुल वृन्दावन में आगमन—आर्यसमाज के सम्बन्ध में अंग्रेज अधिकारियों के मस्तिष्क में अनेक प्रकार की आशंकायें उत्पन्न

हो गई थीं और वह आर्यसमाज को एक महान् क्रान्तिकारी संस्था समझने लगे थे। तथा गुरुकुलों को बमादि बनाने एवं क्रान्तकारियों को तैयार करने के केन्द्र मानने लगे थे। इस भ्रान्ति को दूर करने के लिए श्री बा० मदन मोहन जी सेठ एम० ए० ने विस्तार पूर्वक एक प्रामाणिक वक्तव्य प्रकाशित किया और केन्द्रीय तथा प्रान्तीय सरकारों को भेजा, और प्रदेश के गवर्नर लार्ड मेस्टन को गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन का निरीक्षण करने के लिये आमंत्रित किया। ८ अगस्त १९१३ ई० को गवर्नर महोदय गुरुकुल पधारे और उन्होंने देर तक भली प्रकार गुरुकुल का निरीक्षण किया और उनकी वह आशंका दूर हो गई। इन्हीं दिनों वह कांगड़ी गुरुकुल भी इसी उदेश्य से पधारे थे।

रक्षा विभाग की स्थापना—आर्यसमाजों के अधिकारों की रक्षा की दृष्टि से सभा ने एक रक्षा विभाग की स्थापना सन् १९११ ई० में की। आर्यसमाज को जब शास्त्रार्थ के मैदान में मत वादी लोग परास्त न कर सके तो उन्होंने आर्यसमाज पर नाना प्रकार के दोषारोपण करने और क्रान्ति-कारी आदि कह कर उसकी प्रगतियों को रोकने की घृणित चेष्टायें भी कीं। मुसलमानों के उभारने पर आर्यसमाज नैनीताल के अन्दर भजन कीर्तन आदि तक पर रमजान के बहाने रोक लगाई गई- जिसका समाज व सभा की ओर से कड़ा प्रतिरोध किया गया। और इस प्रकार के कार्यों को समय समय पर करते रहने के लिये अपने अन्दर सन् १९११ ई० में एक रक्षा विभाग की स्थापना की। इस विभाग के सर्व प्रथम अधिष्ठाता श्री बा० बल्देव प्रसाद जी बनाए गए। तब से यह विभाग बराबर सभा का अंग बन कर कार्य कर रहा है।

सभा की रजत जयन्ती—सन १९११ ई० के बृहदधिवेशन में सभा की रजत जयन्ती मनाने का निश्चय किया गया। तदनुसार २८ दिसम्बर सन् १९१२ ई० में गुरुकुल वृन्दावन के वार्षिकोत्सव के साथ बड़े समारोह से सभा की जयन्ती मनाई गई। आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् स्वा० विश्वेश्वरानन्द, स्वा० नित्यानन्द, स्वा० अच्युतानन्द, एवं पं० अखिलानन्द कविरत्न के विशेष प्रभावशाली भाषण हुए। पं० घासीराम जी एम० ए० व पं० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री, तर्क शिरोमणि एम० ए० को रजत पदक भी प्रदान किये गये।

विश्वविद्यालयों में प्रचार—वैदिक धर्म बुद्धिवाद से पूर्णतया ओतप्रोत् है इसमें मतान्धता वा अन्ध विश्वास को कोई स्थान नहीं। बुद्धिवादी वर्ग में वैदिक विचारों का सुगमता से घर कर जाना स्वाभाविक है। इसी दृष्टि से कालेजों और विश्व विद्यालयों में प्रचार की योजना समय समय पर सभा की ओर से बनती रही है। सन् १९१२ ई० में प्रयाग विश्व विद्यालय के दीक्षान्त समारोह के अवसर पर सभा की ओर से समस्त स्नातकों को फाउन्टेन हैड आफ रिलीजन अर्थात् धर्म का आदि स्रोत पुस्तक भेंट किया गया।

नायक जाति सुधार—कुमायूं की नायक जाति में कन्याओं से वेश्यावृत्ति कराने की अत्यन्त धृणित प्रथा विद्यमान थी। १९१३ ई० में प्रान्तीय सरकार ने इस प्रथा का अन्त करने में सभा से सहयोग चाहा। सभा ने हर्ष पूर्वक सब आवश्यक सहयोग देने का आश्वासन दिया। नायक जाति सुधार विभाग की स्थापना कर नायकों में आवश्यक प्रचार करने के लिए उपदेशक नियुक्त किए। और उनकी बालिकाओं की शिक्षा की व्यवस्था अनेक आर्य शिक्षाणलयों में की। वेश्यावृत्ति के विरुद्ध सरकार से आवश्यक कानून भी पास कराया। और वेश्यालयों से नायक बालिकाओं को निकलवा कर नायक बालिका आश्रम मेरठ में रख कर उनके रक्षण एवं शिक्षण की उचित व्यवस्था की गई। आगे चलकर जब वेश्यावृति समाप्त हो गई तो नायक जाति के बाल बालिकाओं की शिक्षा के लिये छात्रवृत्तियों की सभा ने सरकार से माँग की जो आज तक मिलती है और सभा प्रति वर्ष उनका उचित वितरण कर देती है।

मध्य-युगः—१९२१ से १९४०ई० तकः— मध्य युग के आरम्भ में सभा को स्थापित हुए ३३ वर्ष पूरे हो गये। आर्य समाजों की संख्या जो पहले १५० थी अब बढ़कर ५०० से ऊपर हो गई। गुरुकुल बृन्दावन जो छोटा सा पौधा था अब बढ़ कर उसने विशाल बृक्ष का रूप धारण कर लिया। उसके सुन्दर सुस्वादु फलों का दर्शन होने लगा। अनेक एक से एक योग्य स्नातक गुरुकुल माता की गोद से विदा होकर कार्यक्षैत्र में अवतीर्ण होने लगे।

आर्य मित्र जिसकी आरम्भ में केवल ४०० के लगभग प्रतियां छपती थीं अब वह २५०० से ऊपर पहुंच गई।

कोल्हापुर राजाराम कालेजः——इस कालेज की स्थापना महाराष्ट्र की प्रमुख रियासत कोल्हापुर में सन् १८६७ ई० में एक साधारण स्कूल के रूप में हुई थी। छत्रपति महाराज राजाराम साहू के निधन पर इस स्कूल का नाम राजाराम हाई स्कूल कर दिया गया। शनैः २ प्रगति करते २ सन् १८८३ ई० में इसने डिग्री कालेज का रूप धारण कर लिया। इस कालेज ने भारत के अनेक नर रत्नों को यथा जसटिस् गोविन्दराणाडे गोपालकृष्ण गोखले, वी० एस० आप्टे, श्री घावले जी आदि का निर्माण किया है।

सन् १९१८ई० में इसका प्रवन्ध असन्तोष जनक जानकर दरवार ने इसको तोड़ने का निश्चय किया। किन्तु जनता के अनुरोव पर इसको तोड़ने के निश्चय को रद्द कर दिया और आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश को १९२० ई० में इसकी व्यवस्था सौप दी।

सभा ने इसके संचालन के लिये उत्तरप्रदेश के तथा महाराष्ट्र के प्रमुख विव्दानों की एक समिति संगठित की। और डाक्टर बालकृष्ण शर्मा एम० ए० को इसका प्रधानाचार्य तथा श्री ठा० मलखानसिंह, श्री बाबू पीतमलाल जी श्री महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री को प्राध्यापक नियुक्त करके भेजा। ५वर्ष तक सभा ने बड़ी सुन्दरता से इस कालेज का प्रबन्ध किया। १९२५ ई० में दर-बार साहिब ने पुनः इस कालेज को अपने संरक्षण ही में ले लिया।हर्ष की बात है कि १९६२ में इस कालेज ने विश्व विद्यालय का रूप धारण कर लिया है।

जातिभेद निवारक संघः——जन्म मूलक जांत पांत को तोड़ने की दिशा में आर्यसमाज सतत् प्रयास करता रहा है। अब इस दिशा में सक्रीय पग आगे बढ़ाने की आवश्यकता को अनुभव कर २५-१२-१९२२ को सभा ने उपर्युक्त विभाग की स्थापना की और अनेक आर्य नवयुक नेताओ ने इस दिशा में दृढ़ता पूर्वक अपने पग बढ़ाये यथा पं० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री तर्कशिरोमणि एम० ए० पं० महेन्द्र प्रताप शास्त्री एम० ए० आदि।

गुरुकुल विरालसीः—स्वामी दर्शनान्दजी महाराज द्वारा स्थापित गुरुकुल विरालसी (मुजफ्फर नगर) सन् १९१८ ई० में सभा के आधीन हो गया। अब इसके लिये सभा प्रति वर्ष अपना एक प्रबन्धक नियुक्त करने लगी। जिसकी देख रेख में यह गुरुकुल चलता रहा। पाठ्यक्रम गूरुकुल बृन्दावन विश्व-विद्यालय के अनुसार ही कर दिया था किन्तु इसके कर्मठ कार्यकर्त्ता महात्मा मुमेरसिंह जी के निधन पर यह गुरुकुल डगमग होने लगा। इसको

प्रचलित शिक्षा प्रणाली के अनुसार विरालसी गुरुकुल माध्यमिक विद्यालय का रूप दे दिया गया।

दलितवर्ग की शिक्षाः—दलित वा अछूतवर्ग के बालक बालिकाओं की शिक्षा के निमित्त प्रथक रूप से अनेक स्थानों पर विद्यालय स्थापित करने की अवश्यकता को अनुभव कर निम्न स्थानों पर पाठशालाएं खोली गईः—

बरेली ३२ कल्याणी पाठशालाएं, प्रयाग, मैनपुरी, हरदोई, हापुड़, सरधना, मुरादाबाद, बिजनौर, गोरखपुर, चन्दौसी आदि।

वेद प्रचार एवं दयानन्द सप्ताहः—सम्पूर्ण आर्य जगत् में जो श्रावणी एवं शिवरात्रि के अवसर पर वेदप्रचार एवं दयानन्द-सप्ताह मनाने की प्रथा आज प्रचलित है इसका सूत्रपात सन् १९२३ ई० में सभा द्वारा ही किया गया था। दो वर्षों तक तो यह सप्ताह केवल उत्तरप्रदेश में ही मनता रहा तदुपरान्त सार्वदेशिक सभा ने इसको अपना लिया।

दयानन्द मंडलः—१९२४ ई० में सभा ने 'भारत सेवा संघ' अथवा 'लोक सेवा संघ' के अनुरूप अपने अन्तर्गत एक दयानन्द सेवा-संघ की स्थापना की आवश्यक नियमादि भी तैयार किये गये। और सन् १९२६ ई० में लेखक से इस संघ को चालू भी किया गया। किन्तु परिस्थिति वस लेखक एक वर्ष पूरा भी न रह पाया और तब से इस संघ का विधानमात्र ही अवशिष्ट है।

आर्य कोआपरेटिव बैंक लखनऊः—सन् १९२० ई० के लगभग लखनऊ में इसकी स्थापना की गई। लखनऊ, कानपुर, आगरा आदि जिलों के किसानों: मजदूरों छोटे छोटे संघ बनवाकर उद्योग धंधों के लिये ऋण देना आरम्भ किया। अनेक वर्षो तक यह बैंक अच्छा कार्य करता रहा किन्तु बाद में यह फेल हो गया। इस कार्य में श्री देवी' प्रसाद जौहरी का विशेष सहयोग रहा।

मथुरा जन्म शताब्दीः—सन् १९२५ ई० में मथुरा में महर्षि दयानन्द जी की जन्म शताब्दी बड़े समारोह के साथ मनाई गई। सभा ने इस पावन पर्व के मनाने में पूर्ण सहयोग प्रदान किया। शताब्दी की सफलता एवं उसके महत्वपूर्ण निश्चयों की जानकारी के लिये अध्याय ४ में पढ़ने की कृपा करें।

कानपुर शिक्षा सम्मेलनः—सन् १९२५ ई० में सभा की ओर से कानपुर नगर में दयानन्द एंग्लो वैदिक कालेज के मैदान में एक विराट् शिक्षा सम्मेलन

किया गया। आर्य जगत् के तथा बाहर के भी अनेक गण्यमान्य शिक्षा शास्त्री इस सम्मेलन में सम्मिलित हुए। शिक्षा को अपनी संस्कृति के अनुरूप ढालने और उसको अधिक से अधिक उपयोगी बनाने की दृष्टि से श्री डा० सीताराम जी कोल्हापुर, मुरा-रीशरण मांगलिक बी० ए० लन्दन, श्रीमती मिसेज एम० आर० हार्डिंग लन्दन, डा० केशवदेव शास्त्री देहली, पं० चन्द्रशेखर वाजपेयी एम० एस० सी० बनारस आदि ने निवन्ध पढ़े।

आर्यवीरों के बलिदान:— २३ दिसम्बर १९२६ ई० को देहली में पूज्य स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान हत्यारे अब्दुलरशीद द्वारा किया गया। इसके बाद उत्तरप्रदेश में बलिदानों का तांता लग गया।

वीर बद्रीशाह, वीर भैरोंसिंह, वीर बहादुरसिंह, वीर बनवारीलाल के बलिदान यवनों के हाथों हुए। पंजाब में स्वामी सत्यानन्द जी एवं श्री राज-पाल पर घातक आक्रमण किए गए। आर्य समाज ने बलिदानों का स्वागत किया और इस्लाम मत खंडन एवं शुद्धि कार्य को नियमता पूर्व आगे बढ़ाया गया।

बरेली कांड एवं आर्य समाज के प्रचार में रुकावटें:—१० जूलाई १९२७ ई० को बरेली आर्यसमाज मंदिर में पुलिस यज्ञवेदी पर जूते लेकर चढ़ गई और उसे अपवित्र कर दिया। आर्य जगत् में भारी रोष उत्पन्न हुआ। सार्व-देशिक सभा की ओर से पूज्य नारायण स्वामी तथा उत्तरप्रदेश सभा की ओर से लेखक बरेली गए। स्थिति की जांच की और आवश्यक विज्ञप्ति निकाल कर सर्वत्र इस दुर्घटना पर रोष एवं पुलिस के कार्य की भर्त्सना की गई। प्रान्त के अन्दर निम्न अनेक स्थानों पर आर्यसमाज के नगर कीर्तनों एवं प्रभात फेरियों पर सरकारी कर्मचारियो द्वारा १४४ दफा का खुलकर प्रयोग किया गया। आर्यसमाज की ओर से इस दफा के प्रयोग के औचित्य को स्थान २ पर चुनौती दी गई। और विरोध में समाजों के उत्सव बन्द रखे गये। प्रान्तीय गवर्नर को इस सब स्थिति का बोध कराने के निमित्त सभा ने शिष्ट मंडल से बात करने के लिये लिखा किन्तु उसने मिलने से मना कर दिया।

मेरठ सदर आर्यसमाज ने प्रभातफेरी पर लगी दफ़ा १४४ का खुला उलंघन किया। रात्रि को १० बजे डी० एस० पी० को प्रभात बेला [illegible] किये जाने की सूचना लेखक ने स्वयं जाकर दी।

प्रातः ११,११ सत्याग्रहियों की दो टोलियों ने प्रभात फेरियां निकाली। पुलिस एक टोली को पकड़ कर थाने ले गई। इस टोली के प्रमुख पं० धर्मेन्द्र-नाथ शास्त्री स्नातक गुरुकुल डोरली, श्री रघुवीरशरण 'मित्र' एवं लेखक की धर्मपत्नी रामकली देवी थीं। कुछ घंटों के उपरान्त सब को छोड़ दिया गया।

मुरादाबाद में आर्य रक्षा समिति ने सत्याग्रह की तैयारी की किन्तु सरकार द्वारा उसकी मांग स्वीकृत हो जाने पर आगे पग उठाना अनावश्यक हो गया।

स्थान जहाँ नगर कीर्तन व प्रभात फेरियां रोकी गईं :—इसलामनगर (बदायूँ), नैनीताल, जलाली, दर्शनपुरवा (कानपुद) दुगड्डा, गुरुकुल रुद्रपुर, चन्दौसी, मुरादाबाद, मेरठ सदर, कासगंज, मैकलगंज, बकेवर, दाता गंज, कटराप्रयाग, बीसलपुर, रानी की सराय, आजमगढ़, धीमरी, भूड़ बरेली, पचपेड़वा (गोंडा), पडरौना गोरखपुर, शिकोहाबाद, बुलन्दशहर, नसीराबाद उन्नाव, बांदा, खागा (फतेहपुर) ग़ाजियाबाद, लल्लापुर (काशी), शेर-कोट, रुहालकी, मीरानपुर कटरा, मुजफ़्फ़रा-बाद मेला ढाई घाट (शाहजहां-पुर) इत्यादि। यह प्रतिबन्ध भारत विभाजन के काल तक बराबर चलते ही रहे।

गढ़वाल में शिल्पकारों पर अत्याचार :—गढ़वाल में उच्च जात्याभिमानी राजपूतादि ने शिल्पकारों (डोमों) के जो आर्यसमाजी बन चुके थे, यज्ञो-पवीत तोड़ उनको नलों से पानी नहीं भरने दिया और उनकी बारातों मैं वर-वधु को ढोली पालकी में नहीं बैठने दिया। इस अन्याय का सभा की ओर से घोर विरोध किया गया। अनेक वैतनिक एवं अवैतनिक प्रचारकों एवं कार्यकर्ताओं ने वहाँ जा जाकर स्थिति को सुधारने का प्रयत्न किया। श्री पं० रेवानन्द ने वर्षों तक वहां डटकर प्रचार किया तथा शिल्पकारों के उत्साह को जीवित रखा। सभा की ओर से उन राजपूतों पर जो अत्याचार करने पर उतारू थे, न्यायालय में अभियोग चलाये गए। और परिस्थिति का डटकर सामना किया गया। (विशेषवर्णन उत्तराखण्ड परिचय में पढ़ें)

जेलों में प्रचार :—प्रान्त के विभिन्न कारागारों में बन्द बंदियों के नैतिक स्तर को ऊँचा करने की दृष्टि से सभा द्वारा प्रचार की योजना बनाई गई। सरकार से लिखा पढ़ी करके प्रचार करने की स्वीकृति उपलब्ध की गई।

कारागार के पुस्तकालयों में सत्यार्थप्रकाश आदि पुस्तकों के रखने की व्यवस्था की गई। अनेक व्यक्तियों ने समय समय पर जाकर जेलों में प्रचार कार्य को सुन्दरता के साथ सम्पादित किया।

बाल-विवाह निरोध :—बाल विवाह को क़ानूनीरूप में अवैध घोषित किया जा चुका था। किन्तु क़ानून की स्थान-स्थान पर अवहेलना की जाती थी। मैंनपुरी आदि में इस दिशा में आर्यसमाज ने पग बढ़ाया और बाल विवाह करने वालों पर न्यायालयों में अभियोग चलाए गये। और जाति को निर्बल बनाने वाले दुराग्रहियों को दंड दिलाया।

बिहार भू-कम्प :—सन् १९३५ ई० में बिहार भूकम्प के अवसर पर सभा ने प्रशंसनीय कार्य किया है। जिसका विस्तृत विवरण पाठक अन्यत्र पढ़ेंगे।

क्वेटा भू-कम्प :—क्वेटा भू-कम्प के अवसर पर सभा ने एक फंड स्थापित किया। आर्य समाजों से धन संचय कर रिलीफ कार्य में लगाया।

आर्यनगर सेटिलमेन्ट :—जरायम पेशा जातियों के उद्धार की दृष्टि से सभा के यशस्वी नेता पं० रासबिहारी-तिवारी ने जो उस समय विधान सभा उत्तरप्रदेश के सदस्य थे, आन्दोलन शुरू किया, सरकार के साथ लिखा पढ़ी की और प्रान्त के अन्दर जो ६ बस्तियाँ ईसाई मिशनों को सरकार ने देरखी थीं, उन पर भारी आपत्ति उठाई। सभा ने यह भी निश्चय किया कि लखनऊ के निकट करबल ग्राम में एक आदंश बस्ती बसाई जाय। सरकार से इस सम्बन्ध में आवश्यक लिखा पढ़ी की गई और अन्ततोगत्वा सरकार ने एक बस्ती खोलने की सभा को स्वीकृति दे दी और सन् १९२९ ई० में यह बस्ती स्थापित करदी गई। सरकार ने ४३५०) रू० वार्षिक व्यय तथा ४५०००) रु० के लगभग प्रारम्भिक व्यय का अनुदान सभा को दिया। बस्ती का संचालन श्री तिवारी जी बड़ी लगन से करते रहे। बस्ती में जरायम पेशा जनों की संख्या निरन्तर बढ़ती चली गई और उनका पर्याप्त सुधार हुआ। हाथ की दस्त कारियां उनको सिखाई गई और स्वावलम्बी बनाने की व्यवस्था की गई। नैतिक उत्थान की दृष्टि से अनेक प्रयत्न किये गये। स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरान्त सरकार ने यह सब बस्तियां सीधे अपने नियंत्रण में लेलीं।

स्वर्ण जयन्ती :—सन् १९३६ ई० में लेखक के प्रस्ताव पर सभा ने दिसम्बर १९३७ ई० में मेरठ में सभा की स्वर्ग-जयन्ती मनाने का निश्चय किया।

श्री प्रोफेसर महेन्द्र प्रताप शास्त्री देहरादून स्वर्णज्यन्ती समारोह के मंत्री बनाये गये। उन्होंने जयन्ती की रूपरेखा तैयार कर नोट छपाकर धन संग्रह की व्यवस्था की और मेरठ में स्वागत समिति का पथ-प्रदर्शन किया। तथा समारोह को सफल बनाया। मेरठ में स्वागत समिति का निर्माण हुआ श्री पं० गंगा-प्रसाद जी एम० ए० रिटायर्ड जज टिहरी स्वागताध्यक्ष एवं श्री कालीचरण जी स्वागत मंत्री नियुक्त हुये।

२४ से २९ दिसम्बर सन् १९३७ ई० में स्वर्ण जयन्ती महोत्सव बड़े समारोह के साथ मनाया गया। प्रान्त के कोने कोने से आर्य जनता अपने इस पर्व पर पधारी थी। नवचंडी के बड़े मैदान में इसके लिये विशाल पंडाल बनाया गया। जनता के निवास के लिये घासीराम-नगर बसाया गया। स्वर्ण जयन्तीं समारोह में ही गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन के नव-स्नतकों का दीक्षान्त कार्यक्रम भी सम्पन्न हुआ।

महोत्सव पर निम्न विद्वानों के प्रमुख भाषण हुए :—

सर्व श्री १—महात्मा नारायण स्वामी, २—श्रीमती शन्नोदेवी पंजाब, ३-पं० धुरेन्द्र शास्त्री, ४—बा० पूर्णचन्द्र एडवोकेट, ५—पं० रामचन्द्र देहलवी, ६—पं० देवेन्द्रनाथ शास्त्री ७—पं० द्विजेन्द्रनाथ आयुर्वेद शिरोमणि, ८—पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, ९—पं० अयोध्याप्रसाद रिसर्च-स्कालर, कलकत्ता, १०-प्रि० ज्ञानचन्द्र जी एम० ए० पंजाब, ११—पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय, एम० ए० १२-प्रो० बालकृष्ण एम० ए० कोल्हापुर, १३-प्रो० ताराचन्द्र गाजरा एम० ए० सिंघ १४-प्रि० दीवानचन्द एम० ए०, पं० बुद्धदेव विद्यालंकार, १६-स्वामी केवलानन्द १७-स्वा० वेदानन्द तीर्थ, १८-स्वामी ब्रतानन्द चित्तौड़, १९ स्वामी सर्वदानन्द २० तथा-आचार्य प्रियव्रत जी।

इस महोत्सव के अवसर पर अनेक सम्मेलन भी किये गये। जिनमें वेद सम्मेलन, आर्य सम्मेलन, राष्ट्र भाषा सम्मेलन, महिला सम्मेलन मुख्य थे।

नगर कीर्तन :—मेरठ में सम्मेलन के प्रथम दिन एक विराट् नगर कीर्तन निकाला गया। नगर कीर्तन में प्रान्त की जनता अपने२ ध्वज एवं नाम-पटल लिये वैदिक गीत गाते हुए एवं दयानन्द की जय का घोष करते हुए चल रही थी। आर्य जनता एवं मेरठ की सर्व साधारण जनता का इस शोभा यात्रा के प्रति उत्साह अकथनीय था।

भीलों में प्रचार—सन् १९३७ ई० में सभा की ओर से मध्य-भारत एवं राजस्थान की भील जातियों में प्रचार की व्यवस्था की गई। कई उपदेशक एवं भजनीकों ने वहां जाकर मासों तक अनथक परिश्रम कर प्रचार किया और ईसाइयों के जाल को छिन्न भिन्न कर दिया, जो उन्होंने इन भोले भाइयों को फंसाने के लिए बिछाया हुआ था।

वेद संस्थान—सरायतरीन ज़िला मुरादाबाद निवासी सेठ शिवचन्द जी साहु ने आर्य प्रतिनिधि सभा को १५०००) की रीशि वेद भाष्य प्रकाशित करने के लिए प्रदान की थी। अतः इस दिशा में आवश्यक कार्य करने के निमित एक समिति बनाई गई और यजुर्वेद के सरल भाष्य को स्वामी दयानन्द के भाष्य के प्रकाश में तैयार करने की रूपरेखा बनाई गई। सम्पादक मंडल का निर्वाचन किया गया। यजुर्वेद भाष्य को दो खण्डों में प्रकाशित किया गया।

सभा-भवन—सभा के कार्यालय को केन्द्रित करने का विचार अनेक वर्षों से सभा के कार्य-कर्त्ताओं के मस्तिष्क में चक्कर लगा रहा था। सन् १९३८ में लखनऊ के रायसाहब श्री पं०रामचन्द्र शर्मा रि०इंजीनियर के उद्योग से एक कोठी हिल्टन रोड (मीराबाई मार्ग) पर ३६०००) में क्रय करली गई। जिसकी विधिवत् रजिस्ट्री ११-२-३९ को सभा के नाम हो गई। इस कोठी के क्रय के करने के निमित राय साहब ने लगभग १५०००) रुपये अपने पास से उधार भी दिया। २५-६-३९ की अन्तरंग ने निश्चय किया कि सभा के समस्त कार्यालय सभा भवन में केन्द्रित किये जाए। इस निश्चय के अनुसार १-८ १९३९ को सभा के समस्त कार्यालय स्थान्तरित हो कर आ गए तथा १९४० ई० में भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस भी यहां पहुंच गया।

सन् १९४०-४१ में श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय एम० ए० ने अपने सभा प्रधान काल में प्रान्त का व्यापक दोरा करके कार्यालय के ऊपर जो राय साहब का ऋण था, उसके लिये धन संग्रह किया और कार्यालय को ऋण मुक्त कर दिया।

शम्भूनाथ रामेश्वरी देवी भुवाली पुस्तकालय—सीतापुर निवासी श्री सेठ शम्भूनाथ जी का भुवाली जिला नैनीताल में एक पक्का भवन था, जो सीतापुर हाउस के नाम से वहां पुकारा जाता था। उसे सेठ जी ने सभा की संरक्षता में दे दिया। इसका एक ट्रस्ट भी बना दिया गया। इस पुस्तकालय

का नियन्त्रण सभा द्वारा प्रति वर्ष नियुक्त अध्यक्ष द्वारा किया जाता है। सम्प्रति इस पुस्तकालय में लगभग २००० हजार सुन्दर पुस्तकों का संग्रह है, जिससे भुवाली की जनता विशेष लाभ उठाती है। उमेशचन्द्र स्नातक एम० ए० हल्द्वानी पुस्तकालय के अध्यक्ष हैं। श्री बांकेलाल जी नैनीताल भी कई वर्षों तक अध्यक्ष रहे। श्री पं० देवनाथ जी भारद्वाज पुस्तकालय के प्रवन्धक हैं।

हैदराबाद सत्याग्रह—प्रान्त के मान्य नेता स्वामी ध्रुवानन्द जी (पं० धुरेन्द्र शास्त्री) सत्याग्रह के चतुर्थ सर्वाधिकारी नियुक्त किए गए। शास्त्री जी ने भारी संख्या में सत्याग्रहियों का एक जत्था लेकर हैदराबाद में प्रवेश कर सत्याग्रह किया। प्रान्त के श्री कुँवर सुखलाल जी आर्य मुसाफिर, पं० देवेन्द्रनाथ शास्त्री, चौ० शूरवीरसिंह, श्री यदुवीर सिंह आदि प्रमुख व्यक्तियों ने भी सत्याग्रहियों के दलों के साथ वहां पहुंच कर सत्याग्रह किया। इस का विस्तृत वर्णन पाठक अन्यत्र पढ़ेंगे।

उत्तरयुग १९४१ से १९६२ ई० तक—

न्याय सभा की स्थापना—आर्य समाजों के अन्दर के विवादों को सरकारी न्यायालय में न ले जाकर अपने संगठन के अन्तर्गत ही सुलझाने की दृष्टि से इस सभा की स्थापना की गई। प्रति वर्ष इसमें प्रान्त के प्रमुख क़ानून के जानने वाले सज्जनों की नियुक्ति सभा द्वारा की जाने लगी और इसकी व्यवस्था सभा द्वारा नियुक्त रजिस्ट्रार द्वारा होने लगी। इस न्याय सभा को श्री उमाशंकर जी फतेहपुर, श्री मोतीलाल जी मेरठ, श्री आनन्द स्वरूपजी मेरठ, श्री रतनलाल जी मेरठ, श्री मथुराप्रसाद जी आगरा, श्री गोनेश्वर मेहरा बरेली, श्री बा० जगनन्दनलाल प्रयाग, श्री रघुबरदयालु जी मितल मेरठ, श्री बोधराज जी साहिनी झांसी, श्री नन्दलाल जी बुलन्दशहर, श्री पूर्णचन्द्र जी आगरा, श्री पीतमलाल जी अलीगढ़, श्री शिव नारायण जी खीरी, श्री चन्द्र नारायण जी बरेली, आदि महानुभावों का सहयोग समय समय पर मिलता रहा।

सभा भवन का विस्तार—सभा भवन में जो विस्तृत भूमि पड़ी हुई थी, उसमें बास गृह बनाने की योजना बनाई गई। सन् १९४२ में ४ वासगृह बनाए गए। और इसी प्रकार आगे चलकर सन् १९५७ में ७ और वासगृहों का

निर्माण किया गया। पूर्व बासगृह श्री माधोप्रसाद जी। सिमरियां तथा श्री चित्रवान प्रस्थी चठिया आदि के दान से वनाए गए।

गढ़वाल की समस्या—गढ़वाल की समस्या जटिल होती चली गई और यहां की स्थिति को वश में करने की दृष्टि से एक के स्थान पर तीन प्रचारक नियुक्त कर दिए गए। पौढ़ी व दुगड्डे में आर्य सम्मेलन आयोजित किए गए। मेलों में जम कर प्रचार किया गया। स्थान स्थान पर आर्य समाजों की स्थापना की गई। १९४१ ई० की जन संख्या के अवसर पर शिल्पकारों को आर्य लिखाने के लिए प्रान्तीय सरकार से अनुरोध किया गया, जो मान लिया गया।

प्रान्तीय सिख मिश्नरी कांफ्रेन्स—उत्तर प्रदेश की सहस्रों की संख्या में ग्रामीण जनता को कड़े धारण कराकर सिख बनाया गया। और दलित वर्गोंको सामूहिक रूप से सिख पन्थ में दीक्षित करने तथा जनसंख्या में उनको सिख लिखाने का व्यापक आन्दोलन सिखपन्थ की ओर से किया गया। २ जून १९४१ को अलीगढ़ में सिख कांफ्रेंस का आयोजन किया गया और उस अवसर पर ३०००० हिन्दुओं को सिख बनाने की तैयारियां की गई।

सिखों के इस साम्प्रदायिक आन्दोलन का आर्य समाज की ओर से डटकर सामना किया गया। ग्राम २ में प्रचार कार्य को तीव्र किया गया। स्थान २ पर आर्य वीर दल की शाखा स्थापित कर और लाठी आदि की इनको शिक्षा देकर वीर भावनाओं को जाग्रत सार्वदेशिक सभा की ओर से किया गया।

गढ़मुक्तेश्वर में सिखों से मुकाबला—गढ़मुतेश्वर में एक विराट् आर्य सम्मेलन का सभा की ओर से आयोजन किया गया। सिखों का प्रचार कैम्प और सभा का कैम्प बराबर ही थे। आधी रात गए तक निरन्तर प्रचार का कार्य धूमधाम से चलता रहा। पूर्णिमा के दिन प्रातः काल जिन हिन्दुओं को सिखों ने अमृत छकाया था, मध्यान्ह में उनकी सिक्खी उतारी गई। इस सिक्खी के उतारने में पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय गायत्री मन्त्र पढ़कर गंगा जल छिड़कते और चारों ओर से कच्छे, कड़े उतार कर फेंके जाने लगे। सिखों ने उत्पात मचाना चाहा किन्तु आर्यसमाज की शक्ति के सामने उनको मुंह की खानी पड़ी।

इस सम्मेलन में स्वामी स्वतन्त्रतानन्दादि अनेक आर्य नेता पधारे थे।

सिखों को पुनः वैदिक धर्म में वापस लाने के कार्य में अलीगढ़ जिले के प्रसिद्ध आर्य समाजी कार्यकर्त्ता श्री हुकुमसिंह जी का ४ जुलाई १९४१ को बलिदान हुआ।

लूहारु कांड—२९ मार्च १९४१ को आर्यसमाज लुहारु (पंजाब) के नगर कीर्तन पर मुसलमानों ने आक्रमण किया। स्वामी स्वतन्त्रतानन्द कार्य कर्त्ता प्रधान सार्वदेशिक सभा व भक्त फूलसिंह जी को आहत किया गया। स्टेट ने उल्टे आर्य पुरुषों पर अभियोग चलाए। यहाँ का प्रश्न सार्वदेशिक रूप धारण कर गया। देश भर में लुहारू कांड प्रतिवाद दिवस मनाया गया। सभा की ओर से इस दिवस को उत्साह के साथ मनाया गया तथा धन जन से सहायता करने का निश्चय किया गया। स्टेट ने आगे चलकर मुकददमें वापिस कर लिए और आर्य समाज के अधिकारों की रक्षा का आश्वासन दिया।

आर्यसमाज फतेहपुर की प्रभात फेरी के अवसर पर १६-२-४४ को मुसलमानों ने आक्रमण किया। उल्टे ९ आर्यसमाज के सदस्यों तथा श्री बा० उमाशंकर जी पर सरकार की तरफ से अभियोग चलाया गया। न्यायालय में यह अभियोग चला और सब निर्दोष घोषित किए गए।

सभा के नियमों में पुनः संशोधन—११ व १२ अप्रेल १९४१ को सभा के असाधारण अधिवेशन में सभा के नियमों में पुनः आवश्यक संशोधन एवम् परिवर्तन किए गए। और इसी प्रकार आगे भी संशोधन किए गए।

बंगाल दुर्भिक्ष में सहायता कार्य—देश में इस दैवी आपत्ति के आने पर सभा ने प्रान्त से धन संग्रह करके भेजा और बंगाल के अनाथ बालकों को अपने अनाथालयों में रखने की व्यवस्था की।

मेवाड़ बाढ़ पीड़ितों की सहायता :—मेवाड़ में तूफान व बाढ़ से भयानक स्थिति उत्पन्न हो गई। सभा ने यथा शक्ति धनादि से सहायता पहुंचाई।

गढ़वाल प्रचारः—गढ़वाल में आर्यसमाज के प्रचार कार्य को और तीव्र किया गया। गढ़वाल में स्थानीय प्रचार समिति संगठित की गई। श्री बल्देव सिंह आर्य जो आज दिन प्रान्त के डिप्टी मिनिस्टर हैं, को वहाँ की प्रचार समिति

का मंत्री बनाया गया। उन्होंने गढ़वाल निवासी दो उपदेशक और रखकर प्रचार को बढ़ाया।

आर्यवीर दल :— सन् १९४० ई० में प्रान्त में आर्यवीर दल को संगठित करने पर विशेष बल दिया गया। जिले २ में वीर दल की शाखाएं खुल गई। प्रान्त में लगभग १५००० आर्यवीरों की इन दलों में भर्ती की गई। और उनके शिक्षण के निमित्त शिविर चालू किये गए।

मण्डला (मध्य भारत) में ईसाई मिश्नरियों से टक्कर :— मण्डला क्षेत्र में ईसाई मिश्नरियों ने आतंक जमा रखा था। भोली जनता को धड़ा धड़ अपने जाल में फँसाती जा रही थी। सभा का ध्यान उधर गया। सभा ने अपने चार उपदेशक व प्रचारक इस क्षेत्र में कार्य करने के लिये भेजे। गांव २ प्रचार किया गया और सामूहिक ईसाईकरण को रोका गया।

जिला सम्मेलनों का आयोजन :— प्रचार कार्य को तीव्र करने तथा जिले वार आर्यसमाज की शक्ति को संगठित करने के लिये जिला आर्य सम्मेलन करने का आयोजन किया गया तथा मुज़फ्फरनगर, मुरादाबाद, मैनपुरी, शाहजहांपुर, जौनपुर, बुलन्दशहर, बरेली, झांसी, पीलीभीत, बिजनौर, आगरा, बांदा, फतेहपुर, आजमगढ़, सीतापुर, प्रयाग आदि जिलों के अन्दर सम्मेलनों की सफल योजना की गई। इसी प्रकार अन्य जिलों में भी यह योजना की गई।

रेडियो की हिन्दुस्तानी भाषा का विरोध :— सन् १९४३ में सभा ने रेडियो द्वारा प्रयुक्त उस हिन्दुस्तानी भाषा के प्रयोग पर घोर रोष और असन्तोष प्रकट किया जिसमें हिन्दी भाषा की सर्वथा उपेक्षा करके अर्बी, फारसी मिश्रित विशुद्ध उर्दू का प्रचलन किया जारहा था।

बिरादरी वाद का विरोध :— दिनांक २-७-१९४४ की सभा की अन्तरंग ने यह निश्चय किया कि कोई भी आर्यसभासद किसी भी जन्मजात सभा का सभासद नहीं रह सकता। यदि इस निर्णय के विरुद्ध आचरण किया गया तो उसको आर्यसभासद पद से पृथक समझा जावे। इसी निश्चय को अन्तरंग सभा ने अपनी सन् १९६२ की एक बैठक में पुनः दुहराया।

आज़ाद हिन्द फौज का पक्ष :— सभा ने अपनी २६-१२-४५ की अन्तरंग में निम्न प्रस्ताव सर्व सम्मति से पास करके भारत सरकार के पास भेजा और देश पर मर मिटनेवाले इन दीवानों का खुलकर पक्ष लिया। प्रस्ताव :—

"आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की अन्तरंग सभा सरकार से यह अनुरोध करती है कि सन् १९४२ में व उसके पश्चात् ब्रह्मा, मलाया और अन्यत्र बनी इंडियन नेशनल फौजों के सदस्यों को, जिन परिस्थितियों में यह सेनाएं बनी थीं उन्हें ध्यान में रखते हुए, युद्ध बन्दी समझें तथा इन सेना के सदस्यों के विरुद्ध ५-११-४५ को देहली में जो अभियोग आरम्भ हो गया है उससे उन्हें मुक्त कर देवे। यत: अब युद्ध समाप्त हो चुका है और इन सेनाओं के सदस्य पहिले ही पर्याप्त कष्ट उठा चुके है अत: यह सभा अनुभव करती है कि वे सब अब तत्काल मुक्त कर दिये जाने चाहियें।"

नोआखाली काँड और सेवा कार्य :—भारत विभाजन से पूर्व प्रथम कलकत्ता में और दो मास के उपरान्त नोआख़ाली (पूर्वी बंगाल) में मुसलमानों की ओर से हिन्दुओं को लूटना और उनका रक्तपात करना आरम्भ कर दिया गया। महात्मा गांधी ने वहां पहुंच कर भरसक प्रयत्न शान्ति स्थापित करने का किया। इसी अवसर पर सभा ने भी अपने मान्य प्रधान पं० धुरेन्द्र शास्त्री तथा अन्य कतिपय प्रमुख व्यक्तियों को वहां भेजा। जिन्होंने विभिन्न स्थानों का दौरा किया और सहायता कार्य को व्यवस्थित एवं संगठित किया। सभा ने जनता से धन की अपील की और आर्थिक सहायता भेजी। केन्द्रीय समिति द्वारा स्वयं सेवकों की मना आने के कारण उनको वहां नहीं भेजा गया।

अलीगढ़ कांड की भर्त्सना :—सन् १९३६ में अलीगढ़ नगर में मुस्लिम गुन्डों तथा विश्व विद्यालय के छात्रों द्वारा जो उत्पात मचाए गये थे और भीषण अग्नि-कांड रचा गया था उसकी कड़ी भर्त्सना सभा ने अपनी १८-४-४६ की अन्तरंग में की और सरकार से अनुरोध किया कि वह आवश्यक अनुसंधान कर अपराधियों को उचित दंड की व्यवस्था करै और इस प्रकार के क्रूरतम दुष्कृत्यों को प्रान्त में असम्भव करदे।

सत्यार्थप्रकाश रक्षा आन्दोलन और सत्याग्रह :—सिन्ध की मुस्लिम लीगी सरकार द्वारा सत्यार्थप्रकाश के कुछ अंश पर पाबंदी लगाए जाने से आर्य जगत् में भारी क्षोभ उत्पन्न हो उठा, १४ जनवरी १९४८ ई० मकरसंक्रान्ति के दिन पूज्य महात्मा नारायण स्वामी, पं० धुरेन्द्र शास्त्री, महात्मा आनन्द स्वामी, चांदकरण शारदा, पं० प्रकाशवीर शास्त्री तथा

पं० लक्ष्मीदत्त दीक्षित ने करांची पहुंच कर जिलाधीश को सत्याग्रह की सूचना दी और यज्ञ व ईश्वर प्रार्थना के उपरान्त नगर के विभिन्न स्थानों पर सत्यार्थप्रकाश की कथा सुनाई तथा सत्यार्थप्रकाश प्रतिवन्धित अंश सहित सर्व साधारण में बेचे गए। सत्यार्थप्रकाश की अन्तिम प्रति २५१) में बिकी।

पुलिस ने इस पर कोई आपत्ति नहीं की और सरकार की ओर से कोई पग नहीं उठाया गया अत: यह घोषणा करके कि सरकार ने अपने व्यवहार से निषेध-आज्ञा की इतिश्री करदी है इस लिये सत्यार्थप्रकाश पर यथार्थ में कोई आपत्ति नहीं है, आर्य नेता वापस चले आए।

कर्णवास में ऋषि की कुटिया—बुलन्दशहर जिले में गंगा तट पर कर्णवास के नाम से एक सुन्दर रमणीक स्थान है जहां ऋषि अपनी उत्तर प्रदेश की प्रचार यात्राओं में प्राय: साधना किया करते थे वहाँ उन्होंने एक पक्की यज्ञशाला बनवाई थी। इस यज्ञशाला की भूमि को सभा ने हस्तगत करने का और वहाँ ऋषि का स्मारक बनाने का निश्चय कर आवश्यक प्रयत्न करना आरम्भ कर दिया। यह स्थान डिबाई निवासी पं० रविदत्त जी का है किन्तु ठाकुरों ने जबरदस्ती वहां के वृक्ष काट डाले और चन्दौसी के सेठ विश्वम्भरनाथ जी ने उस भूमि को जहां ऋषि तपस्या व योग साधन किया करते थे खुदबा डाला। प्रतीत होता है कि सेठ जी ने यह भूमि ठाकुरों को 'कुछ ले देकर अपने नाम कराली थी।

दिसम्बर सन् १९४७ ई० को सभामंत्री श्री उमाशंकर जी वहां पहुंचे और उस भूमि पर यज्ञ करके ओउम् ध्वजा फहराई। ६ व ७ दिसम्बर को सभामंत्री एवं श्री शिवलाल जी आदि का एक शिष्ट मंडल जिलाधीश से मिला। सेठ विश्वम्भरनाथ जी ने कतिपय स्थानीय आर्यसमाजी कार्यकर्त्ताओं पर न्यायालय में वाद-पत्र प्रस्तुत कर दिया किन्तु आगे चलकर वह खारिज हो गया। अब इस स्थान पर विधिवत् आर्यसमाज का अधिकार हो गया है और वहां अब पूर्व निर्णय को कार्यरूप में परिणत करने की व्यवस्था की जा रही है।

महत्वपूर्ण प्रान्तीय आर्य सम्मेलन :—२७ दिसम्बर १९४७ ई० को गुरुकुल वृन्दावन में सेठ मदनमोहन जी की अध्यक्षता में एक महान् प्रान्तीय आर्य सम्मेलन किया गया, जिसमें निम्न निर्णय किए गए:—

१. आर्यसमाज की वेदी स्वीकृत सिद्धान्तों के प्रतिकूल व्याख्यानों के लिये प्रयुक्त न हो।
२. फाल्गुन कृष्णा १३ को आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि के जन्मदिन के उपलक्ष में सरकार सार्वजनिक अवकाश निर्धारित करे।
३. पाकिस्तान में हुई आर्यसमाज की अपार क्षति की पूर्ति कराई जाए।
४. रेडियो पर आर्यसमाज कार्यक्रम को स्थान दिया जाय।
५. शासन के विधान का आधार वैदिक आर्य नीति, आर्य संस्कृति एवं आर्यपरम्पराएं हों।
६. देश का नाम हिन्द न होकर भारतवर्ष रक्खा जाए।
७. राष्ट्र की भाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी निर्णीत की जाए।
८. राजनियम द्वारा देश भर में पूर्णतया गो-बध बन्द किया जाय।
९. शुद्धि आन्दोलन को शुद्ध सांस्कृतिक एवं राष्ट्रीय कृत्य समझा जाय।
१०. कर्णवास में ऋषि की स्मृति में एक स्तूप का निर्माण कराया जाय।
११. शरणार्थियों की सहायता की उचित व्यवस्था की जाय।
१२. "बन्दे मातरम्" को भारत का राष्ट्रगीत अंगीकार किया जाय।

सभा भवन में वृहद् यज्ञशाला :—सन् १९४८ ई० में सभा भवन की वर्तमान यज्ञशाला श्री मिश्रीलाल जी रईस टाँडा (फैजाबाद) के प्रदत्त धन से बनानी आरम्भ की गई इसमें सर्व व्यय १२०००) रु० से अधिक हुआ। विभिन्न दानियों ने इस पुण्यकार्य में सहयोग दिया किन्तु फिर भी सभा को ६०००) रु० अपने कोष से व्यय करना पड़ा।

सभा का इतिहास—स्वर्णजयन्ती के अवसर पर सभा का इतिहास प्रकाशित करने का निश्चय किया गया। डाक्टर हरिशंकर शर्मा जी से इस इतिहास को सम्पादित करने का अनुरोध किया गया। प्रशंसित पंडित जी ने अनवरत ६ मास तक परिश्रम कर इतिहास लिखकर तैयार किया और उस समय के प्रधान सभा को छपवाने के लिए दिया, किन्तु प्रधान सभा उसको छपवा न सके और वह सब सामग्री न जाने कहाँ नष्ट हो गई। अब

हीरक जयन्ती के अवसर पर पुन: इतिहास प्रकाशित करने का निश्चय किया गया है। इतिहास लिखा जा रहा है।

हिन्दु कोडविल :—सार्वदेशिक आर्य महा सम्मेलन कलकत्ता १, २ जनवरी १९४९ ई० ने हिन्दु कोड विल के कतिपय धाराओं को उपयुक्त मानते हुए भी उसको भारतीय मर्यादाओं एवं परम्पराओं के अधिकांश में विरुद्ध होने के कारण अमान्य घोषित किया।

कलकत्ते के निर्णय की पुष्टि सार्वदेशिक सभा एवं आर्य प्रतिनिधिसभा की अन्तरंगों द्वारा १३-२-४९ तथा ७-४-५० को क्रमश: की गई।

आर्यमित्र प्रकाशन लिमिटेड :—सन् १९५० ई० में आर्यमित्र को अधिक सुन्दर, रोचक, प्रभावशाली बनाने की दृष्टि से आवश्यक धन जुटाने एवं आर्यमित्र प्रकाशन लि० स्थापित करने का निश्चय किया गया। हिस्से निर्धारित किए गये। सभा के प्रेस तथा गुडविल के १३२० हिस्से के मूल्य ३३०००) निर्धारित हुए। आर्यजनता में हिस्से २५) प्रति की दर से वेचे गये। आर्यमित्र का अधिकार इस प्रकाशन को दे दिया गया। आगरे से पं० हरिशंकर जी के सम्पादकत्व में आर्यमित्र प्रकाशित किया जाने लगा। सन् १९५१ के अन्तिम मासों में मितव्ययिता को दृष्टि में रखते हुए आर्यमित्र का प्रकाशन पुन: लखनऊ से ही किया जाने लगा। श्री पं० धर्मपाल विद्यालंकार ने अवैतनिक रूपेण उसका सम्पादन किया। सन् १९५३ में यह प्रकाशन लिक्विडेशन में चला गया। श्री बा० कालीचरण जी इसके आदरी अवसानक नियुक्त किये गये। प्रकाशन का यत्किंचित धन इधर उधर लगा हुआ था, उसको प्रयत्न कर अवसानक ने एकत्रित किया और सन् १९६० ई० में पत्तिदारों को १/४ धन वापस कर दिया।

सह शिक्षा विरोध:— सन् १९५० ई० में सभा ने, स्वतंत्रता के साथ २ शिक्षणालयों में बढ़ती हुई उच्छृंखलता को देखते हुए और सह-शिक्षा को उसमें एक कारण अनुभव करते हुए और इस सम्बन्ध में ऋषि के स्पष्ट आदेश को देखते हुए यह घोषणा की कि शिक्षणालयों में सह-शिक्षा की बढ़ती हुई प्रवृत्ति को दृढ़ता के साथ रोका जाय और आर्य समाज अपने शिक्षणालयों में तो कभी भूलकर भी सह शिक्षा को स्थान न दे।

आसाम भू-कम्प पीड़ितों की सहायता:— सन् १९५० ई० में आसाम में भूकम्प के आने पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने सहायता कार्य अपने हाथ में लिया। सभा ने प्रान्त से धन संग्रह कर सहायतार्थ भेजा।

आर्य शिक्षा समिति:— अन्तरंग सभा १६-४-५४ई० में आर्य शिक्षा समिति के नियम निर्धारित किए गए और तत्पश्चात् प्रान्त के समस्त आर्य शिक्षाणालयों को सूत्रित करने की व्यवस्था की गई। प्रति वर्ष इस कार्य के सम्पादनार्थ एक अधिष्ठाता शिक्षा विभाग नियुक्त किया जाने लगा। शनैः शनैः प्रान्त के अधिकतर आर्य शिक्षणालय इस संगठन के अन्दर आ गये हैं, जो शेष हैं उनको लाने का प्रबन्ध किया जा रहा हैं। श्री आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री एम० ए० कितने ही वर्षों तक इसके अधिष्ठाता रहे और अब कई वर्षों से श्री रामबहादुर जी पूरनपुर इस विभाग के अधिष्ठाता हैं।

दैनिक आर्य-मित्र:— आर्य जगत् में आर्य समाज के एक दैनिक समाचार पत्र की आवश्यकता अनेक वर्षों से अनुभव की जा रही थी आर्यमित्र प्रकाशन लि० भी इसी दृष्टि से स्थापित किया गया था किन्तु कुछ काल चलने के पश्चात् उसका अवसान हो गया।

दिनांक २०-२-५५ की सभा की अन्तरंग में आर्यमित्र को दैनिक करने के सम्बन्ध में पर्याप्त बाद-विवाद के उपरान्त आर्यमित्र दैनिक निकालने तथा साथ ही साप्ताहिक भी प्रकाशित करते रहने का निश्चय हुआ। दिनांक २८-३-५५ से दैनिक का प्रकाशन आरम्भ हो गया। श्री भारतेन्द्रनाथ जी ने इसका सम्पादन किया। आर्य समाजों ने एतदर्थ पर्याप्त धन भी जुटाया, किन्तु लगभग ११ मास चलने के उपरान्त २०-२-५६ को आर्यमित्र पर्याप्त घाटा होने के कारण बन्द कर दिया गया।

प्रान्तीय आर्यवीर दल:— सार्वदेशिक सभा द्वारा देश भर में आर्यवीर दल को संगठित करने का निर्णय किए जाने के उपरान्त तथा उसका विधान निश्चित् हो जाने पर उत्तरप्रदेश में भी आर्यवीर दल विधिवत् संगठित किया गया। प्रदेश के १०० से अधिक स्थानों पर इसकी शाखाएं स्थापित हो गई। और शिक्षण की व्यवस्था की जाने लगी। अनेक स्थानों पर शिक्षण शिविर संगठित किए गये तथा जनता में वीर भावनाओं को जाग्रत करने की दिशा में विशेष कार्य किया गया। श्री बा० उमाशंकर जी, श्री ईश्वरदयालु जी आदि ने इस क्षेत्र में विशेष कार्य किया।

पूर्वीय जिलों का विशाल आर्य सम्मेलन:— प्रचार कार्य को विशेष प्रगति देने की दृष्टि से प्रतिवर्ष प्रान्त के विभिन्न जिलों में जिला आर्य सम्मेलन होते रहे तथा दिनॉक ५-१२-४९ को मऊनाथ भंजन (आजमगढ़) में पूर्वीय जिलों का एक विशेष सम्मेलन अयोजित किया गया । इस सम्मेलन में वाराणसी, जौनपुर, मिर्जापुर, गाज़ीपुर, बलिया, गोरखपुर, देवरिया तथा आजमगढ़ जिलों के आर्यसमाजों के प्रधान एवं मंत्री एकत्रित हुए । सम्मेलन में आर्यसमाज की संख्या एवं सारवृद्धि पर बल दिया गया । आर्य साहित्य के विक्रय को प्रगति देने का भी निर्णय लिया गया ।

ईसाई निरोध:— भारत सरकार की मत-निर्पेक्ष नीति का अनुचित लाभ उठाते हुए प्रान्त के अन्दर स्थान स्थान पर ईसाई मिशनों ने और विशेष कर कैथालिक मिशन ने सामूहिक रूप से पिछड़ी हुई जातियों को ईसाई बनाने का उपक्रम आरम्भ किया । आर्यसमाज के लिये उनका यह कार्य सर्वथा असह्य हो उठा । स्थान २ पर ईसाई मिशन के विरुद्ध आन्दोलन आरम्भ हो गया । मेरठ जिले के अन्दर बाघू, बेकराबाद, सर्धना में विशाल प्रदर्शन किये गये । ईसाइयत एवं ईसाई पादरियों के काले कारनामों का घोर विरोध किया गया । सहस्त्रों की संख्या में टैक्ट प्रकाशित कर जनता में वितरित किये । सामूहिक रूप से ईसाइयत के बाड़े में प्रविप्ट किये गए बन्धुओं को शुद्ध कर हिन्दू धर्म में प्रविष्ट करने का प्रयत्न किया गया प्रान्त में अकेले मेरठ जिले में ३००० से ऊपर इस प्रकार से ईसाई बनाए गये बन्धुओं को हिन्दू धर्म में वापिस लाया गया ।

सभा की ओर से इस कार्य को व्यवस्थित रूप से चलाने के निमित्त एक विभाग स्थापित किया गया । इस विभाग में पं० बिहारीलाल शास्त्री काव्य-तीर्थ ने विशेष रूप से काम किया है और कर रहे हैं ।

नैतिक उत्थान विभाग:—अपना देश स्वतंत्र हो गया और अपने देश में अपना राज्य भी स्थापित हो गया, किन्तु शिक्षा के क्षेत्र में मौलिक एवं क्रान्तिकारी परिवर्तन न किए जाने तथा स्वातंत्र्य समर के सैनिकों का त्याग तप का मार्ग त्याग कर राजमद मस्त हो जाने के कारण उच्छ्रंखलता एवं चरित्र हीनता की वृद्धि होने लगी । सभा ने इस भयावह स्थिति का सामना करने के लिए तथा सर्व साधारण जनता का नैतिक स्तर ऊंचा करने की दृष्टि से नैतिक-उत्थान आन्दोलन चालू किया । श्री बा० पूर्णचन्द जी ऐडवोकेट आगरा ने इस

दिशा में भरसक प्रयत्न किया। स्थान २ पर जाकर इस विषय पर भाषण दिये।समाचार पत्रों में लेख प्रकाशित किये तथा अवश्यक साहित्य का निर्माणकिया ।

आर्य उपदेशक सम्मेलन बरेली:— गुरुकुल वृन्दावन के उत्सव पर अनेक बार उपदेशक सम्मेलन किये जाते रहे, किन्तु बरेली में जो सम्मेलन सितम्बर ५६ मे किया गया, उसमें ५ दिन तक उपदेशकों को १ समाज-सुधार, २ नव समाज निर्माण, ३-अस्पृश्यता-निवारण,. ४-साम्प्रदायिकता निवारण, ५-ग्राम प्रचार ६-वैदिक राजधर्म आदि विषयों पर ८ बौद्धिक उपदेशक विभाग के अधिष्ठाता पं० शिवदयालु जी ने दिये। सभा प्रधान श्री पूर्णचन्द जी का भी एक विशेष भाषण चरित्र निर्माण बिषय पर हुवा। उपदेशकों में प्रचार की भावना को तीव्र करने के सम्बन्ध में विशेष बल दिया गया। तथा उनकी कठि-नाइयों को सुनकर उनके निवारण करने की दिशा में भी आगे पग उठाने का प्रयत्न किया गया।

गुरू विरजानन्द धाम:— गुरु विरजानन्द धाम की भूमि श्री कर्णसिंह जी छोंकर आदि महानुभावों के उद्योग से सभा को हस्तगत हो चुकी थी। वहां के मलवे को साफ कराकर फर्श लगबाया गया। चार दीवारी बनवाई गई और टिनशैड डाला गया तथा २७ दिसम्बर १९५६ ई० को इस भूमि में एक बृहद् यज्ञ किया गया। इस अवसर पर पं० शिवदयालु जी मंत्री स्मारक समिति ने तथा मथुरा के अनेक सनातनधर्मी पंडितों ने गुरु विरजानन्द एवं महर्षि दयानन्द के प्रति अपनी श्रद्धांजलियां समर्पित कीं। आर्यसमाज मथुरा ने धाम के संस्कार में प्रशंसनीय कार्य किया।

आर्यमित्र हीरक जयन्ती एवं विद्वद् अभिनन्दन:—सभा ने १९५८ ई० में आर्यमित्र की हीरक जयन्ती तथा अभिनन्दनोत्सब मनाने का निश्चय किया। आगे चलकर दीक्षा शताब्दी के साथ साथ २३ से ३० दिसम्बर १९५९ ई० को यह जयन्ती वड़े समारोह से मनाई गई। जिसका विस्तृत विवरण पाठक अन्यत्र पढ़ेगे।

सभा-भवन की प्रगतियां:— सभा भवन को स्थापित हुए १६ वर्ष व्यतीत हो चुके और इस वीच में सभा भवन में २००००) की लागत के ४ वास-गृहों का निर्माण किवा गया। सन् १९५७ ई० में ७ और वास-गृहों का निर्माण हुवा। सभा भवन की मरम्मत एवं चार दीवारी ठीक की गई।

वाटिका के लिए दयूववैल-कोठरा व पक्की नालियाँ बनवाई गईं तथा विशेष रूप से सफाई का अयोजन किया गया। इसके लिये एक सफाई सप्ताह भी सभा भवन में मनाया गया और उसकी समाप्ति पर बृक्षारोपण पर्व मनाया गया। जिसमें प्रान्त के मंत्री माननीय श्री चन्द्रभानु जी गुप्त, आचार्य जुगुल-किशोर जी, पं० विचित्रनारायण शर्मा, श्री कैलाशप्रकाश जी ने अपने अपने कर कमलों से वृक्ष आरोपित किये। प्रान्त के मान्य आर्यनेता कुवर रणंजयसिंह, पं० नरदेव शास्त्री काव्यतीर्थ, ठाकुर मलखानसिंह, पं० महेन्द्रप्रताप शास्त्री एम० ए० आदि महानुभावों ने भी बृक्षारोपण किया।

प्रान्त के मुख्य मंत्री श्री चन्दभानु गुप्त ने सभा भवन के बालउद्यान के लिये ८००) देकर खेल का सामान लगवाया।

सभा-भवन में होली-पर्व :—सन् १९५७ ई० में नगर के समस्त आर्य नर नारियों ने सम्मिलित रूप में होलिकोत्सव मनाया। वृहद् यज्ञ के उपरान्त संगीत एवं भाषणों का आयोजन किया गया। यह पर्व अब प्रति वर्ष सभा-भवन में बड़े समारोह के साथ मनाया जाता है।

सभा-भवन में निर्वाण-पर्व :—दीपावली के शुभावसर पर सभा भवन में श्री आचार्य जुगुलकिशोर जी मंत्री उत्तर प्रदेश की अध्यक्षता में यह पर्व मनाया गया। स्व० स्वामी त्यागानन्द जी महाराज का ऋषि जीवन पर एक विशेष प्रभावशाली प्रवचन हुआ। सभामंत्री पं० शिवदयालु जी लिखित महर्षि दिव्य संदेश पढ़ा गया और जनता में वितरित किया गया।

आर्य कार्यकर्त्ता शिविर :—सन् १९५७ ई० में वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर तथा ३० मई से ६ जून १९५७ ई० तक नारायण आश्रम रामगढ़ में दो आर्य कार्यकर्त्ता-शिविरों का आयोजन किया गया। शिविरों में प्रान्त के विभिन्न स्थानों के आर्य नर नारियों ने भाग लिया और विधिवत् बौद्धिक ग्रहण किये। बौद्धिक देनेवालों में श्री आचार्य वीरेन्द्रशास्त्री, श्री पं० धर्मपाल विद्या-लंकार, स्वा० सत्यदेव परिव्राजक, प्रो० हरिराम एम० ए० पं० शिवदयालु जी, श्री पं० विशुद्धा नन्द जी शास्त्री, श्री पं० बाबूलाल जी दीक्षित एम० ए०, माता लक्ष्मीदेवी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

महर्षि दयानन्द दीक्षा शताब्दी, आर्यमित्र हीरकजयन्ती एवं विद्वदभिनन्दन समारोह मथुरा:—यह महान् समारोह दिनांक २४ से २७ दिसम्बर १९५९ ई० को मथुरा में बड़े समारोह के साथ मनाया गया। आर्य नरेश श्री सुदर्शनदेव

जी शाहपुराधीश ने इस समारोह की अध्यक्षता की तथा शिलान्यास राष्ट्रपति महामहिम डा० राजेन्द्रप्रसाद जी के कर कमलों द्वारा किया गया। (इसका विस्तृत विवरण पाठक अध्याय ४ में पढ़ें)

कन्या विद्यालयों के सांस्कृतिक आयोजनों का विरोध :— कन्या विद्यालयों में सांस्कृतिक कार्यक्रम के नाम से स्थान स्थान पर कन्याओं के नृत्य का आयोजन किया जाने लगा। इस घृणित प्रथा का प्रभाव आर्य शिक्षणालयों पर भी पड़ना स्वाभाविक था। अतः सभा की अन्तरंग दिनांक २०-२-६० ई० ने प्रस्ताव द्वारा प्रान्त के समस्त आर्य शिक्षणालयों को आदेश दिया गया कि वह इस प्रकार के साँस्कृतिक आयोजनों से अपने को सर्वथा प्रथक रखें तथा प्रान्तीय सरकार से अनुरोध किया गया कि वह अपनी सांस्कृतिक योजना को बन्द करे।

गोमती की बाढ़ और सभा-भवन को भारी क्षति :— अक्टूबर सन् १९६० ई० में गोमती नदी में यकायक भयंकर बाढ़ आगई और बांध के टूट जाने से लखनऊ के निचले भागों में ३ से ६ फिट तक जल चढ़ आया। सभा-भवन में भी ४ फुट पानी चढ़ गया। सभा के कार्यालय का बहुत सा सामान नष्ट हो गया। बड़ी-कठिनता से केवल सभा के रेकार्ड को सुरक्षित रखा जा सका तथा सभा भवन स्थान २ से टूट फूट गया। प्रेस की मशीने सब पानी में डूब गई। सभा के कर्मचारियों को यज्ञशाला में बाढ़ पीड़ित बन कर कई दिन तक रहना पड़ा। जैसे तैसे कई दिन बाद पानी उत्तरा। सभाभवन की कई सहस्र रुपया व्यय कर मरम्मत करादी गई।

नवीन सभा-भवन निर्माण योजना :— वर्तमान सभा भवन पर्याप्त पुराना है इसकी अवधि समाप्त होने को है अतः नवीन सभाभवन निर्माण करने की योजना कई वर्ष से अधिकारियों के मस्तिष्क में चल रही है। इस बाढ ने इस योजना को शीघ्र ही कार्यरूप में परिणत करने की ओर सभा का ध्यान आकृष्ट किया। नूतन सभा भवन का चित्र तैयार किया गया और अब शीघ्र ही निर्माण कार्य आरम्भ करने की व्यवस्था की जा रही है।

विरजानन्द वैदिक अनुसंधान भवन :— दीक्षा शताब्दी महोत्सव पर दंडी विरजानन्द जी की स्मृति में एक वैदिक अनुसंधान भवन निर्माण करने का निर्णय लिया गया था तथा इस भवन का शिलान्यास भी भारत के

राष्ट्रपति महामहिम डा० राजेन्द्रप्रसाद जी के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुवा था। अभी तक कुछ वैधानिक कारणों से इस निर्णय को मूर्तरूप नहीं दिया जा सका। किन्तु अब उसका विधान जो आर्यप्रतिनिधिसभा के उद्देश्यों तथा भावनाओं के अनुकूल है तैयार हो गया है। और रजिस्ट्री कराने के निमित श्री प्रतापसिंह शूरजी बल्लभ-भाई बम्बई को सौप दियां गया है। विश्वास है कि न्यास की रजिस्ट्री होते ही निर्माण कार्य आरम्भ हो जावेगा।

अन्तिम निवेदन :—सभा के ७५ वर्षों का यह अत्यन्त संक्षिप्त इतिहास आर्य जनता के समक्ष प्रस्तुत है सभा के आरम्भ में प्रान्त में आर्यसमाजों की संख्या १५० थी, जो अब बढ़ कर ११९६ हो गई है। आरम्भ में कोई जिला उप सभा न थी किन्तु अब ३४ उप सभाएँ प्रान्त में कार्य कर रही हैं, अवैतनिक उपदेशक आरम्भ में केवल ४ थे उनकी संख्मा अब २३६ हो गई है। कार्य का विस्तार इस अवधि में पर्याप्त हुआ और अनेक मौलिक कार्य प्रान्त में किए गये किन्तु उत्साह, लगन एवं कर्त्तब्य निष्ठा की भावना बढ़ने की अपेक्षा घटती प्रतीत हो रही है जिसे दूर करना इस युग की पुकार है।

४ सार्वदेशिक सभा संगठना एवं प्रान्त के विराट् आर्य समारोह

महर्षि दयानन्द के निधन के दो वर्ष के उपरान्त आर्यसमाजों को संगठित करने का विचार आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं के मस्तिष्क में जाग्रत हो उठा। सर्व प्रथम लाहौर आर्यसमाज के मुख्य-पत्र (आर्यपत्रिका) ने इस विचार को आर्य जगत् के सन्मुख उपस्थित किया। इस सम्बन्ध में एक विशेष अग्रलेख इस पत्रिका में प्रकाशित हुआ, तदुपरान्त मेरठ से प्रकाशित होने वाले 'आर्यसमाचार' में श्री लक्ष्मणस्वरूप जी का इसी सम्बन्ध में एक विशेष लेख छपा, जिसमें आपने प्रथम प्रादेशिक संगठन पर बल दिया। सन् १८८६ ई० में ही पंजाब में और इसी वर्ष अर्थात् २७ दि० सन् १८८६ ई० को उत्तर प्रदेश में प्रान्तीय सभा की स्थापना होगई।सार्वदेशिक संगठन के सम्बन्ध में अनेक वर्ष विचार विनिमय एवं पत्र-व्यवहार में ही लग गए। २५ सितम्बर सन् १९०८ ई० को आगरे में एक अनियमित किन्तु महत्वपूर्ण सभा इस उद्देश्य से बुलाई गई जिसमें अनेक प्रान्तों के कार्यकर्त्ता सम्मिलित हुए और सार्वदेशिक सभा बनाने का अंतिम निर्णय लिया गया। ३१ अगस्त १९०९ ई० को देहली में विधिवत् सार्वदेशिक सभा की स्थापना की गई।

इस सभा के निर्माण एवं विकास में उत्तर प्रदेश के कर्मठ नेता महात्मा नारायण प्रसाद जी (श्री नारायण स्वामी जी) का विशेष प्रयत्न रहा।

उत्तर प्रदेश को यह गौरव प्राप्त है कि जहां उसके अन्दर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, अखिल भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, भारतवर्षीय राजार्यसभा का निर्माण किया गया वहां इसी प्रान्त में महर्षि दयानन्द जी

की जन्म शताब्दी मथुरा नगरी में मनाई गई। बरेली और मेरठ में सार्वदेशिक आर्य महा सम्मेलन किये गये। लखनऊ में अखिल भारतीय राजार्यसभा का सम्मेलन हुआ तथा इसी प्रान्त में महर्षि की दीक्षा शताब्दी भी बड़े समारोह के साथ मनाई गई। इन सब का वर्णन पाठक क्रमश: नीचे पढ़ेंगे।

ऋषि जन्मशताब्दी मथुरा :—आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म १८२४ ई० को काठियावाड़ मौर्वी राज्य के नगर टंकारा में सहस्र औदीच्य ब्राह्मणकुल में हुआ था। अत: १९२४ ई० में जन्म शताब्दी महोत्सव मनांना सर्वथा उचित ही था। माता के गर्भ से जन्म टंकारा में हुआ किन्तु आचार्य के विद्यारूपी गर्भ से वास्तविक जन्म तो मथुरा नगरी में ही हुआ था, अत : मथुरा में इस पर्व का मनाना युक्तियुक्त ही था।

युगपुरुष दयानन्द ने अपने अल्प जीवन में धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं नैतिक क्रान्तियां भारतवर्ष में की हैं वह भारत के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखी जानेवाली वस्तुएं हैं। अभी बहुत साधारण सा प्रयत्न इस दिशा में हुआ है। जैसे २ समय व्यतीत होता जावेगा, इतिहास का दयानन्द-अध्याय अधिकाधिक सुन्दर शब्दों में आंकित किया जावेगा यह निश्चय है। पं० गुरूदत्त विद्यार्थी कहा करते थे कि दयानन्द के महत्व को यथार्थ में समझने का उपक्रम उनके निधन के १०० वर्ष उपरान्त आरम्भ होगा।

जैसे २ अपने आचार्य की जन्मतिथि की शती निकट आती जाती थी, आर्य जनता के हृदय में शताब्दी पर्व मनाने की आकांक्षा प्रबल होती जारही थी। अन्ततोगत्वा वह शुभ अवसर आ ही गया कि सार्वदेशिक सभा ने आचार्य के गुरूधाम मथुरा में शताब्दी मनाने का निश्चय कर डाला। शताब्दी समिति का निर्माण हुआ। समिति के प्रधान स्वामी श्रद्धानन्द जी तथा कार्यकर्त्ता प्रधान महात्मा नारायण स्वामी जी नियुक्त किये गये। मथुरा नगरी में डैम्पियर नगर तथा उसके आस पास की समस्त भूमि लेकर आर्य नगर बसाया गया जो १४ कक्षों में विभक्त था। महात्मा जी के सहयोगियों में उल्लेखनीय नाम श्री महात्मा हंसराज जी ला० ज्ञानचन्द ठेकेदार दिल्ली, बा० शालिगराम आगरा, बा० श्रीराम आगरा, स्वामी सच्चिदानन्द, बा० गजाधरप्रसाद आडीटर और सेठ मदनमोहन जी के है।

शताब्दी महोत्सव की निम्न विशेषताएं महत्वपूर्ण हैं।

१. स्त्रियों को निर्भय होकर विचरने की पूर्ण स्वतंत्रता और उनके सन्मान का सर्वत्र ध्यान रखा जाना।

२. केवल आर्य स्वयं सेवकों द्वारा लाखों नर नारियों के महा मेले का सुचारू प्रबन्ध किया जाना।

३. नगर में हर प्रकार के मादक-द्रव्य का नितान्त अभाव होना।

४. भोजन में छूत-छात का सर्वथा अभाव बरता जाना।

५. किसी भी यात्री की किसी भी प्रकार की हानि का न होना।

शताब्दी महोत्सव के महत्वपूर्ण निर्णय :—

१. धर्मार्यसभा, विद्यार्थ सभा, एवं राजार्य सभाओं को संगठित करना।

२. अछूतों को आर्यसमाज में प्रविष्द करते समय गायत्री मन्त्र ब्दारा यज्ञोपवीत धारण कराना।

३. सर्व मतावलम्बियों की प्रवेश पद्धति में समता का होना।

४. ४० वर्ष तक की आयु के विधुर एवं विथवा के विवाह को मान्यता देना।

५. आर्य ध्वज के स्वरूप का निम्न निर्णय :—

ध्वज का वर्ण गेरूआ (लाल) होगा तथा सूर्य के आकार के मध्य "ओ३म्" यह चिन्ह अंकित होगा।

सार्वदेशिक आर्य महा सम्मेलन बरेली :—यह सम्मेलन ७, ८, ९ फरवरी १९३१ ई० को बरेली नगर में महात्मा नारायण स्वामी जी के संभापतित्व में समारोह पूर्वक मनाया गया। यह व्दितीय आर्य महा सम्मेलन था। इससे पूर्व प्रथम महा सम्मेलन दिल्ली में श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी की अध्यक्षता में मनाया जा चुका था।

बरेली सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष श्री डा० श्यामस्वरूप सत्यव्रत निर्वाचित किये गये सम्मेलन में आर्य जनता की उपस्थिति सामान्य थी।

सम्मेलन में अनेक उपयोगी प्रस्ताव स्वीकृत किये गये जिनमें जात-पात के बन्धनों को तोड़ कर विवाह करने पर बल दिया गया, मुस्लमानी रियासतों में हिन्दुओं के धार्मिक अधिकारों के कुचले जाने की कड़ी भर्त्सना की गई।

ग्रामों में आर्यसमाज के संदेश को पहुंचाने पर विशेष बल दिया गया तथा आर्यवीर दलों को संगठित करने की ओर आर्य जनता का ध्यान आकर्षित किया गया।

सार्वदेशिक आर्य महा सम्मेलन मेरठ :—नव चंडिका मेले के विशाल मैदान में २७ अक्टूबर से १ नवम्बर १९५१ ई० तक यह सम्मेलन बड़े समारोह के साथ मनाया गया। सम्मेलन के प्रथम दिन मेरठ नगर में अभूतपूर्व दो मील लम्बी आर्यों की शोभायात्रा निकली। जिसमें सहस्त्रों की संख्या में आर्य ध्वज एवं प्रत्येक आर्यसमाज एवं आर्य संस्था अपना अपना नाम-पटल लिये क्रम बद्ध चल रही थी। दयानन्द के जय घोष से सारा आकाश गूंज रहा था। सारे नगर की जनता का सागर शोभा यात्रा को देखने के लिये उमड़ पड़ा था।

सम्मेलन की स्वागताध्यक्षा श्रीमती शकुन्तलादेवी गोयल शहर मेरठ एवं स्वागत मंत्री श्री बा० कालीचरण जी (स्वामी अखिलानन्द) थे। सम्मेलन के अवसर पर आर्य सम्मेलन के अतिरिक्त अन्य अनेक सम्मेलन भी किये गये। इनमें वेद-सम्मेलन मुख्य था। वेदों के प्रकांड विव्दान् तपोमूर्ति श्री ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु काशी इस सम्मेलन के अध्यक्ष थे।

इस शुभ अवसर पर एक चक्षु-यज्ञ का भी विशेष आयोजन किया गया जिसमें १५० के लगभग नर नारियों के नेत्र बिना किसी प्रकार का व्यय उनसे कराये बनाये गए। इस यज्ञ की संयोजिका श्रीमती शकुन्तलादेवी गोयल सदर मेरठ थीं।

सम्मेलन में महिलाओं का प्रशंसनीय सहयोग था। १२०००) से अधिक रुपया एकत्रित कर उन्होंने स्वागत समिति को दिया था।

सम्मेलन में विशाल यज्ञ-मंडप श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी दंडी की देख रेख में बनाया गया। श्री पं० धुरेन्द्र शास्त्री (स्वामी ध्रुवानन्द जी) सम्मेलन की देख रेख एवं आवश्यक परामर्श आदि के निमित्त सम्मेलन से कितने ही दिवस पूर्व मेरठ पधार गये थे।

सम्मेलन में आर्यसमाज को राजनीति में सामूहिक रूप से भाग लेने के विषय में भारी विचार विनमय हुआ जनता में इस सम्बन्ध में विशेष उत्साह था। अन्त में राजार्य सभा को संगठित करने सम्बन्धी पूर्व प्रस्ताव को ही पुन: दोहराया गया।

सम्मेलन में निम्न महानुभावों का विशेष सहयोग रहा :—

श्री बा० श्यामलाल जी, श्री बा० मुत्सद्दीलाल जी एम० ए०, श्री मनोहरलाल जी सर्राफ, श्री रघुनन्दनस्वरूप जी गोयल, श्री रतनलाल जी वकील आदि । ।

अखिल भारतीय राजार्यं सम्मेलन लखनऊ :—आर्यसमाज के अन्तर्गत राजार्यसभा बनाने का प्रस्ताव सर्व प्रथम मथुरा जन्म शताब्दी के अवसर पर पारित किया गया था । श्री आचार्य रामदेव जी को उसका संयोजक नियुक्त किया गया, किन्तु कतिपय कारणों से वर्षों तक आचार्य जी इस दिशा में कोई पग न बढ़ा पाए । उन्होंने इस भार को आचार्य देवशर्मां (स्वामी अभयदेव जी) पर छोड़ दिया । वह भी वर्षों तक कोई कार्य न कर सके । और इस प्रकार बरेली का महा सम्मेलन आ गया और वहां पुन: इस सम्बन्ध में आवश्यक प्रस्ताव दोहराया गया । आचार्य जी ने राजार्य सम्बन्धी फाइल इस इतिहास के लेखक के सुपुर्द करदी । लेखक ने शोलापुर आर्य महासम्मेलन के अवसर पर सम्मेलन में उपस्थित आर्य नेताओं की एक सभा बुलाई और उसमें अविलम्ब राजार्य सभा संगठित करने की दिशा में विचार विनमय हुआ ।

तदनुसार ४-५ मार्च १९३९ ई० को बम्बई नगर में श्री बा० उमाशंकर जी वकील फतेहपुर की अध्यक्षता में प्रथम अखिल भारतवर्षीय राजार्य सम्मेलन किया गया । और सन् १९४० ई० में अक्टूबर मास में लखनऊ के अमीनाबाद पार्क में व्दितीय अखिल भारतीय राजार्य सम्मेलन श्री महात्मा खुशहालचन्द आनन्द (श्री आनन्द स्वामी) जी की अध्यक्षता में समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ ।

सम्मेलन के प्रथम दिन नगर में एक भव्य शोभायात्रा का आयोजन किया गया । इस सम्मेलन में भारत के विभिन्न प्रान्तों से लगभग २०० प्रतिनिधियों ने भाग लिया तथा जनता की उपस्थिति तो सम्मेलन में २०००० के लगभग रहती थी ।

श्री स्वामी सत्यदेव परिव्राजक, श्री पं० विजयशंकर जी बम्बई, श्री पं० आनन्दप्रिय जी बड़ौदा, श्री पं० सत्याचरण शास्त्री एम० ए० गोरखपुर आदि के अत्यन्त ओजस्वी भाषण हुए । अनेक महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित किये

गये, जिनमें पाकिस्तान बनाने की योजना का घोर विरोध किया गया तथा कांग्रेस की मुस्लिम तुष्टिकरण नीति की भर्त्सना की गई।

सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष : श्रीयुत बाबू उमाशंकर जी फतेहपुर स्वागत मंत्री श्री गया प्रसाद वकील प्रचारमंत्री श्री देशबन्धु अधिकारी तथा निम्न सज्जनों का सहयोग भी प्रशंसनीय था :—

श्री, पं० विष्णु स्वरूप जी श्री पं० विश्वश्रवा: जी, श्री पं० विश्वनाथ जी त्यागी आदि।

दीक्षा शताब्दी समारोह मथुरा :—सम्वत् १९२० वि० में स्वामी दयानन्द जी महाराज नें गुरू विरजानन्द दंडी के आश्रम में चार वर्ष रह कर वैदिक व्याकरण, दर्शन वेदादि की शिक्षा ग्रहण की और आजीवन वैदिक धर्म का प्रचार करने का व्रत धारण किया था। उसकी पावन स्मृति में यह दीक्षा शताब्दी समारोह बड़े भारी पैमाने पर २४ से २७ दिसम्बर (१९५९) को मथुरा नगरी में मनाया गया। भारत के राष्ट्रपति सौजन्यता, नम्रता एवं सात्विकता के अवतार बा० राजेन्द्र प्रसाद जी ने अपने कर कमलों से विरजानन्द स्मारक का गुरुधाम में शिला न्यास किया।

इसी शुभ अवसर पर आर्यमित्र की हीरक जयन्ती एवं मान्यवर पं० गंगाप्रसाद जी एम० ए० प्रयाग एवं पं० गंगा प्रसाद जी रिटायर्ड जज टिहरी मेरठवालों को अभिनन्दन-पत्र भेंट करने का आयोजन भी किया गया।

इस समारोह में आशा से बहुत अधिक ऋषि प्रेमी आर्य जनता भारत के कोने २ से पधारी थी। लगभग २ लाख संख्या में जनता तो निश्चिय ही रेल, बस, व मोटरों से पधारी थी।

प्रथम दिवस मथुरा में आर्यों की विशाल शोभा-यात्रा निकली, जो मथुरा के इतिहास में अभूतपूर्व थी।

सभा की ओर से इस कार्य को सम्पन्न करने दृष्ठि से कई मास पूर्व एक समारोह समिति का निर्माण किया गया। जिसके प्रधान पं० हरिशंकर शर्मा कविरत्न तथा मंत्री श्री उमेशचन्द्र स्नातक एम०ए० नियुक्त किये गये। समिति में सभा के सर्व अन्तरंग सदस्यों तथ उत्तरप्रदेश के अनेक पुराने प्रसिद्ध आर्य कार्यकर्त्ताओं को सम्मिलित किया गया। समारोह को सार्वदेशिक स्तर पर स्तर पर मनाने की दृष्टि से प्रत्येक प्रान्तीय आर्यप्रतिनिधिसभा, सार्वदेशिक

सभा, प्रादेशिक सभा एवं परोपकारिणी सभा के प्रधान मन्त्रियों को भी इसमें सम्मिलित किया गया।

इस समिति का कार्यालय कई मास पूर्व ही मथुरा में स्थापित कर कार्यारम्भ कर दिया गया। समारोह मन्त्री एवं सभा कोषाध्यक्ष श्री विश्वेश्वर नाथ वर्मा जी कार्यालय स्थापित होते ही मथुरा पहुंच गये।

श्री पं० नरेन्द्र जी हैदराबाद को इस महोत्सव का स्वागताध्यक्ष तथा श्री रमेशचन्द्र एडवोकेट मथुरा को स्वागत मन्त्री नियुक्त किया गया।

सभा मन्त्री श्री पं० प्रेमचन्द्र शर्मा एम० एल० सी० ने भी अपना अधिकाधिक समय लगा कर कार्य सम्पादन में पूर्ण सहयोग प्रदान किया। तूफानी दौरे कर ६०००) के लगभग धन एकत्रित किया।

सभा प्रधान पं० हरिशंकर शर्मा, उप प्रधान श्री शकुन्तला गोयल, श्री पं० प्रकाशवीर शास्त्री एम० पी, श्री पं० नरदेव स्नातक एम० पी० तथा श्री उमेशचन्द्र स्नातक कलकत्ते डेपूटेशन बनाकर गए। मार्ग में स्थान २ पर इनको थैलियां भेंट की गई तथा कलकत्ते से ७५००)रु० संग्रहीत किया गया। कलकत्ते के श्री पोद्दार जी ने धन संग्रह में सराहनीय सहयोग प्रदान किया। मध्य भारत में डा० महावीरसिंह जी, बम्बई में श्री बेणीभाई, हैदराबाद में श्री नरेन्द्र जी आदि, राजस्थान में श्री भगवतीप्रसाद जी आदि, पंजाब में आचार्य रामदेव, पं० जगदेव सिद्धान्ती, पं० शिवकुमार शास्त्री, देहली में ला० रामगोपाल जी, श्री नारायण दास कपूर, मध्यप्रदेश में श्री घनश्यामसिंह गुप्त स्वामी दिव्यानन्द आदि तथा विहार में श्री वासुदेव जी, श्री० पं० रामानन्द शास्त्री आदि ने शताब्दी को सफल बनाने हेतु विशेष आन्दोलन आदि किया। मथुरा में श्री गोपीराम पथिक, श्री माता प्रसाद जी, ठा० शेरसिंह जी, श्री ओमप्रकाश जी, श्री गोपाल सहाय जी, श्रीमती सुशीला मलिक आदि ने नगर एवं जिले में शताब्दी की धूम मचा दी और धन संग्रह में पर्याप्त सहयोग किया।

आर्यमित्र हीरक जयन्ती—आर्यमित्र का हीरक जयन्ती विशेषांक निकाला गया तथा प्रसिद्ध पत्रकार श्री पं० बनारसीदास चतुर्वेदी एम० पी० की अध्यक्ष में यह समारोह किया गया।

विद्वदभिनन्दन ग्रन्थ—प्रान्त के प्रमुख वयोवृद्ध आर्य विद्वान पं० गंगा प्रसाद उपाध्याय एम० ए० एवं पं. गंगाप्रसाद जी अवकाश प्राप्त न्यायधीश

को उनकी आर्य साहित्य निर्माण सम्बन्धी सेवाओं के उपलक्ष्य में अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट किया गया।

श्री गुरू विरजानन्द धाम वैदिक अनुसंधान शिलान्यास—भारत के महामहिम राष्ट्रपति श्री डा० राजेन्द्र प्रसाद जी ने अपने कर कमलों से वेद मन्त्रों की पावन ध्वनि के साथ शिला-न्यास किया।

शताब्दी समारोह की अध्यक्षता—शाहपुरा के आर्य नरेश श्री सुदर्शनदेव जी ने इस शताब्दी समारोह की अध्यक्षता बडी भावुकता के साथ की। आपने अपने अध्यक्षीय भाषण में आर्यसमाज की राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक सेवाओं की विशेष सराहना की।

दीक्षा महा-यज्ञ—दीक्षा शताब्दी के उपलक्ष्य में समारोह के यज्ञ का नाम दीक्षा महायज्ञ रक्खा गया था। श्री आचार्य बृहस्पति जी वेदशिरोमणि एम० ए० कुलपति गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन महायज्ञ के संयोजक थे। एक आकर्षक विशाल यज्ञशाला में ९ बेदियां बनाई गई थीं। एक मध्य में चार अन्दर के घेरे में और चार बाहर के घेरे में वेदियों पर बैठने की व्यबस्था ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, बानप्रस्थ, संन्यास आश्रम के अनुसार की गई थी। यजमानों ने लगभग ५ हजार रुपया यज्ञ के लिए भेंट किया। इस महायज्ञ के लिये यज्ञाग्नि शाहपुरा से मंगाई गई थी। शाहपुराधीश के राजप्रसाद में महर्षि दयानन्द जी ने जिस यज्ञाग्नि की स्थापना की थी वह परम्परा से चली आ रही है। उसी पवित्राग्नि को शाहपुरा के आर्य बन्धु अपने साथ स्थान २ पर यज्ञ करते हुए मथुरा लाए थे। उसी से इस महायज्ञ का आरम्भ किया गया। आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वानों, गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन, आर्ष गुरुकुल एटा, दयानन्द वेद विद्यालय इसुफसराय देहली, कन्या गुरुकुल हाथरस आदि के ब्रह्मचारियों एवं बह्मचारणियों ने विशेष भाग लिया। श्री ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु, श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी दंडी, श्री आचार्य ज्योति स्वरूप जी, श्री पं० राजेन्द्रनाथ, श्री वीरसेन जी वेदाश्रमी, श्री पं० वाचस्पति जी शास्त्री, श्री डा० हरिदत्त जी शास्त्री आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

इस सब समारोह को सफल बनाने में श्री पं०हरिशंकर शर्मा कविरत्न सभा प्रधान श्री पं० प्रकाश वीर जी शास्त्री सदस्य लोक सभा, श्री पं० उमेश चन्द्र स्नातक एम० ए० श्री पं० प्रेमचन्द्र शर्मा एम०एल० सी०, श्री शकुन्तला गोयल, श्री रमेशचन्द्र बकील मथुरा आदि का परिश्रम सराहनीय था।

५ राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक आन्दोलन

ऋषि दयानन्द जहां देश में धार्मिक, सांस्कृतिक एवं समाजिक क्रान्तियों के सूत्रधार थे, वहां वह राजनैतिक क्रान्ति के भी एक महान् अग्रदूत थे। विदेशी राज्य की अपेक्षा स्वदेशी राज्य हर दृष्टि से उत्तम है अथवा अपने देश में अपना राज्य इस राजधर्म के मूलमंत्र के भारत के प्रथम उद्गाता महर्षि दयानन्द ही थे। आर्य चक्रवर्ती साम्राज्य के संस्थापन की प्रेरणा उन्होंने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश, आर्याभिविनय तथा वेदभाष्य में स्थान स्थान पर दी है। स्वदेशी वस्त्राभूषण, रहन-सहन, खानपान, रीति, रस्म एवं राष्ट्र-भाषा हिन्दी के वह प्रबल समर्थक थे।

महर्षि की शिक्षा से अनुप्राणित हो स्वातन्त्रय वीर सावरकर, भाई परमानन्द, लाला हरदयाल, सरदार भगतसिंह आदि महा पुरुषों ने क्रान्ति पथ का अनुसरण किया तथा सैकड़ों नवयुवकों ने अपने सड़ों को हथेलियों पर रखकर वृटिश साम्राज्य-शाही को भारत से उखाड़ने के हेतु अपने प्राणों की बलि चढ़ा दी।

कांग्रेस:—देश को जैसे ही महात्मा गांधी का नेतृत्व उपलब्ध हुआ, राष्ट्रीय महासभा (इंडियन नेशनल कांग्रेस) की उदारदली नीति (लिबरल पालिसी) में घोर क्रान्ति उत्पन्न हो उठी। भारत केसरी लाला लाजपतराय, अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जैसे आर्यसमाज के कर्मठ नेताओं का महात्मा जी को पूर्ण सहयोग उपलब्ध हो गया। और गांधी जी के नेतृत्व में कांग्रेस अब एक स्वातन्त्र्य सेना (लिबरेशन आर्मी) के रूप में संगठित की जाने लगी। राउलैट

एक्ट जैसे कानून का देश में भरसक एवं व्यापक तीव्र प्रतिरोध किया गया। साइमन कमीशन का घोर बहिष्कार हुआ, जिसमें भारत केसरी लाला लाज़-पतराय का बलिदान हुआ।

सन् १९१९-२१ में महात्मा गांधी जी के नेतृत्व में भारत में स्वाधीनता के प्रथम अहिंसात्मक संग्राम की तैय्यारी जाने लगी। सारे देश में कांग्रेस को नए रूप में संगठित किया गया। आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता भारी संख्या में काग्रेस में सम्मिलित हुए उत्तर भारत में तो यह स्थिति थी कि जिस नगर, कस्वे, व ग्राम में आर्यसमाज अथवा आर्यसमाजी थे वहां ही काग्रेस की सुदढ़ शाखाएं स्थापित हो पायीं।

सन् १९२१, १९३०-३२, १९४० व १९४२ में अनेक स्वाधीनता संग्राम देश में लड़े गए। इन संग्रामों में आर्य समाजियों का सर्वाधिक हाथ था। इन स्वाधीनता समरों में लाखों की संख्या में नर नारियों एवं युवक युवतियों ने गोली डंडों की मार एवं कारागार की यातनाएं सहन की। कौन सा ऐसा जिला था जिसमें सैकड़ों वस हस्त्रों की संख्या में आर्य स्त्री पुरूषों ने कारागार में पदा-र्पण नहीं किया।

यदि समूचे उत्तर प्रदेश में दो लाख नर नारियों ने बृटिश नौकर-शाही की जेलों को सुशोभित किया तो इसमें आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं की संख्या ५०००० तो निर्विवाद ही थी। सन् १९४२ ई० के 'करो या मारो' की प्रतिज्ञा के साथ स्वाधीनता रण में कूदनेबाले सहस्त्रों आर्यों के घर उजाड़े गए और सैकड़ों आर्य बृटिश बायनेटों एवं हंटरों के शिकार बने।

सन् १९३६ ई० में जब प्रान्तीय स्वायत्त शासन (डोमीनियन स्टेटस) के आधीन देश में पहले पहल मंत्री मंडल वने तो धारा सभा में चुने जानेवाले सदस्यों में आर्य समाजियों की संख्या सर्वाधिक थी।

सन् १९३९ ई० में हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के अवसर पर जब कांग्रेस के नेताओं की ओर से उसको दबाने का प्रयास किया गया तो सहस्त्रों कांग्रेस में कार्य करनेवाले आर्यों की ओर से इस नीति का प्रबल विरोध किया गया। महात्मा गांधी और पं० जवाहरलाल नेहरू जी को खुली चुनौती दी गई, और कांग्रेस संगठन से प्रथक होने के निमित्त विरोध में कांग्रेस के केन्द्रीय एवं प्रान्तीय कार्यालयों में आर्यों के त्याग-पत्रों के ढेर लग गए।

त्याग-पत्र प्रदान का सूत्र-पात्र इस इतिहास के लेखक से ही हुआ था जो उस समय जिला कांग्रेस मेरठ के उच्च पद पर आसीन था। परिणाम यह हुआ कि उस समय के कांग्रेस के महामंत्री श्री आचार्य कृपलानी जी को यह स्पष्ट घोषणा करनी पड़ी कि काँग्रेसी आर्यसमाजी-कार्यकर्त्ता हैदराबाद सत्याग्रह आन्दोलन में कांग्रेस के अन्दर अपने पदों पर रहते हुए भाग ले सकते हैं। हैदराबाद सत्याग्रह के अवसर पर अकेले उत्तर प्रदेश विधान सभा के ५० से अधिक सदस्यों ने सत्याग्रह में खुलकर कूदने का आश्वासन दिया था।

आर्य सामाजिकों ने देश की स्वाधीनता के निमित सर्वाधिक त्याग एवं बलिदान किया किन्तु आर्यसमाज ने उसके बदले में कभी किसी मान, प्रतिष्ठा व अधिकार की याचना वा आकांक्षा तक नहीं की। आर्य सामाजिकों ने जो कुछ त्याग व वलिदान किया अपना धर्म व कर्त्तव्य समझकर ऋषि दयानन्द की प्रेरणा से किया।

राजार्य सभा:— ऋषि दयानन्द सिद्धान्तों वा आदर्शों में कभी समझौता करनेवाले न थे, स्पष्ट वादिता एवं खरी अलोचना करना उनका स्वभाव था। इसका प्रभाव आर्यो पर पड़ना स्वाभाविक था। अत: आगे चलकर कांग्रेस नेताओं की मुस्लिम तुष्टि करण नीति से वह क्षुब्ध हो उठे। शोलापुर आर्य महा-सम्मेलन के अवसर पर इतिहास के लेखक ने जो उस समय सम्मेलन का मुख्य दलपति था, सम्मेलन पर पधारने वाले आर्य नेताओं की एक सभा बुलाई। सभा में राजार्य सभा बनाकर राजनीति में कार्य करने का निश्चय किया गया। वैसे तो राजार्य सभा बनाने का प्रस्ताव १९२५ में ही मथुरा जन्म शतबदी पर पारित हो चुका था किन्तु उसको कार्यान्वित अभी तक नहीं किया जा सका था।

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के उपरान्त ४-५ मार्च १९३९ ई० को बम्बई नगर में उत्तरप्रदेश के मान्य आर्य नेता श्री बा० उमाशंकर जी वकील फतेहपुर की अध्यक्षता में प्रथम अखिल भारतीय राजार्य सम्मेलन किया गया।

सन् १९४० ई० में द्वितीय महा सम्मेलन लखनऊ नगर में महात्मा खुशहालचन्द आनंद (श्री आनन्द स्वामी) जी की अध्यक्षता में किया गया। लेखक इस सभा का प्रधान मंत्री चुना गया तत्पश्चात् देश में स्थान २ पर राजार्य सभा का संगठन स्थापित होना आरम्भ हो गया। सन् १९४१ ई० में उत्तर प्रदेशीय सम्मेलन भी लेखक के सभापतित्व में हुआ और दूसरा प्रान्तीय

सम्मेलन बरेली में पं० सत्याचरण जी शास्त्री एम० ए० की अध्यक्षता में किया गया। अभी राजार्य सभा का कार्य आरम्भ ही हुआ था कि सन् १९४२ई० का देश की स्वाधीनता का अंतिम एवं भीषण समर सामने आ उपस्थित हुआ। देश प्रेम के दीवाने आर्य सामाजिकों का उस समर में कूदना स्वाभाविक था, अतः वह सब उसमें कूद पड़े और राजार्य सभा का संगठन छिन्न भिन्न हो गया।

सन् १९४५-४६ ई० में सार्वदेशिक सभा ने इस संगठन को अपने आधीन बनाना चाहा और आगे चलकर विधिवत् राजार्यसभा की संगठना भी की, किन्तु अब इस संगठन के निर्माण में पर्याप्त विलम्ब हो चुका था, देश में अनेक राजनैतिक दलों का निर्माण किया जा चुका था। आर्यसमाज के राजनैतिक मस्तिष्क इन दलों में विभक्त हो चुके थे। जब उनका कांग्रेस तथा अन्य दलों से निकल कर आर्यसमाज के अन्तर्गत एक राजनैतिक मंच पर एकत्रित होना प्रायः असम्भव बन गया। यही मुख्य कारण है कि सार्व देशिक सभा के अन्तर्गत राजार्य सभा तो है किन्तु वह केवल परिस्थिति वश अब नाम मात्र ही अवशिष्ट रह गई।

हैदराबाद आर्य सत्याग्रहः—१९३९ ई० में शोलापुर आर्य महा सम्मेलन के उपरान्त महात्मा नारायण स्वामी जी के नेतृत्व में हैदराबाद आर्य सत्याग्रह का श्री गणेश हुआ। शोलापुर आर्य महा सम्मेलन से पूर्व ही सर्वादेशिक सभा ने अपनी ९-१०-१९३८ की अन्तरंग सभा में हैदराबाद सम्बन्धी समस्याओं को हल करने का पूर्ण कार्यभार पूज्य महात्मा जी पर सौंप दिया था।

हैदराबाद की भयानक विषाक्त स्थिति से अर्थात् वहां के शासन द्वारा हिन्दुओं के धार्मिक अधिकारों को कुचले जाने और आर्यो द्वारा शासन की इस नीति का प्रतिवाद करने के परिणाम स्वरूप भारी संख्या में उनको जेलों में ठूंस दिये जाने और अनेकों का शासन द्वारा बध कर दिये जाने से महात्मा जी सम्यक् प्रकार से परिचित थे। उनके सामने हैदराबाद की यह भयानक स्थितिं नग्नरूप में विद्यमान थी, महात्मा जी ने दक्षिण में पहुंच कर शोलापुर में आर्य सम्मेलन करने का निर्णय किया और सम्मेलन से पूर्व ही सत्याग्रह की विस्तृत योजना तैयार कर ली।

सम्मेलन के तुरन्त उपरान्त प्रान्तवार सत्याग्रह के सर्वाधिकारी नियुक्त किये गये। सर्व प्रथम सर्वाधिकारी स्वयं महात्मा जी बने। महात्मा जी के साथ

सत्याग्रहियों में वृन्दावन, ज्वालापुर, कांगड़ी, डौरली आदि अनेक गुरुकुलों के ब्रह्मचारियों के जत्थे थे, जो वेदमंत्रों की ध्वनि गुंजारते हुए चल रहे थे। निजामशाही की सीमा में प्रविष्ट हो उन्होंने सत्याग्रह किया।

सत्याग्रह के सर्वाधिकारी निम्न प्रकार निर्धारित किये गये थे:—१-महात्मा नारायण स्वामी २- महाशय कृष्ण जी (पंजाब) ३- श्रीचांदकरण शारदा (राजस्थान), ४- पं० धुरेन्द्र शास्त्री (स्वामी ध्रुवानन्दजी) उत्तर प्रदेश, ५- श्री खुशहालचन्द खुरसन्द्र (आनन्द स्वामी) पंजाब, ६- श्री वेदव्रत (स्वामी-अमेदानन्द जी) विहार, ७- पं० ज्ञानेन्द्र जी गुजरात, ८- पं० विनायकराव विद्यालंकार, हैदराबाद।

उत्तरप्रदेश से सत्याग्राही जत्थे तो आरम्भ से ही भारी संख्या में जाने लगे थे। जिले २ में सत्याग्राही जत्थे पैदल प्रचार यात्रा पर निकल खड़े हुए और आदेश मिलते ही भाग्यनगर (हैदराबाद) की ओर प्रस्थान करने लगे। श्री पं० धुरेन्द्र शास्त्री (स्वामी ध्रुवानन्द जी) जब सत्याग्रह के सर्वाधिकारी बनकर सत्याग्रह समर में जूझने के लिये निकले, तो सारे उत्तरप्रदेश में उनका भारी स्वागत हुआ। जहां २ वह जाते स्टेशनों पर जनता का समुद्र उमड़ पड़ता। नगरों में विशाल शोभा यात्राएं निकाली जाती और सत्याग्रह निमित्त थैलियाँ भेंट की जाती।

इस सत्याग्रह में उत्तरप्रदेश से लगभग २१०० सत्याग्रहियों ने निजाम की जेलों की यात्रा की सत्याग्रह में २८ वीरों का बलिदान हुआ, जिनमें उत्तर-प्रदेश के निम्न ८ बन्धु थे:—

१- स्व० परमानन्द जी हरिद्वार (सहारनपुर), २- स्व० छोटेलाल जी अलालपुर मैनपुरी, ३- स्व० मलखानसिंह जी रुड़की (सहारनपुर), ४- स्व० स्वामी कल्याणानन्द जी मुजफ्फरनगर, ५- स्व० ताराचन्द जी लूम्ब (मेरठ) ६- स्व० ब्रह्मचारी दयानन्द जी हरदोई, ७- स्व० बदनसिंह जी मुजफ्फ़राबाद (सहारनपुर) तथा ब्र० रामनाथ जी (गुरूकुल कांगड़ी)

यदि सत्याग्रह शीघ्र बन्द न हो जाता और निजामशाही अभी घुटने न टेकती तो उत्तरप्रदेश इतने सत्याग्रही देने पर तुल गया था कि अकेला प्रान्त निजाम की समस्त जेलों को अपने सत्याग्रहियों से पाट देता।

हिन्दी रक्षा आन्दोलन:—हिन्दी भाषा एवं देव नागरी लिपि का आर्य-समाज के साथ उसके जन्मकाल से घनिष्ठ सम्बन्ध है। आचार्य प्रवर के आदे-

शानुसार प्रत्येक आर्य को इन दोनों का ज्ञान होना अनिवार्य है। किन्तु दुर्भाग्यवश स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त और भारत संविधान में हिन्दी को राष्ट्र भाषा मान लेने के उपरान्त भी पंजाब प्रान्त में हिन्दी के विरुद्ध कुचक्र रचा जाने लगा। भारत विभाजन के उपरान्त पंजाब में उर्दू को कोई स्थान नहीं रह गया। उसके स्थान पर हिन्दी या पंजाबी में से किसको प्रतिष्ठित किया जाय यह संघर्ष का आधार बन गया और संघर्ष चालू हो गया। गुरुओं के शिष्यों ने अपने गुरुओं की भाषा हिन्दी की अवहेलना कर पक्षपात एवं हृदय दौर्बल्य के कारण पंजाबी का पक्ष ग्रहण कर लिया इधर सरकार की भाषा सम्बन्धी अनिश्चित् नीति न चाहते हुए भी इस संघर्ष को उग्र रूप देने में साधक बन गई। आर्य जाति के बालकों पर देवनागिरी के स्थान पर गुरु मुख लिपि लादी जाने लगी, जो लिपि अभी तक केवल गुरुओं के ग्रन्थों तक ही सीमित थी और उनके शिष्य भी प्रायः जिसको नहीं जानते थे वह लिपि अवैज्ञानिक एवं दुरूह होने के कारण आर्य हिन्दुओं के सामने भारी संकट के रूप में उपस्थित हो गई।

आर्यसमाज की ओर से इस सम्बन्ध में पर्याप्त आन्दोलन किया गया और जब कोई चारा न रहा तो सार्वदेशिक सभा ने सक्रिय आन्दोलन चालू करने के लिये श्री बा० घनश्यामसिंह जी गुप्त के नेतृत्व में भाषा स्वातन्त्र्य समिति का निर्माण किया।

स्वातन्त्र्य समिति का मंत्रित्व श्री पं० रघुवीर सिंह जी शास्त्री ने बड़ी निपुणता से किया। लेखक उत्तरप्रदेश की ओर से इस समिति में सम्मिलित किया गया।

सर्व प्रथम समिति ने सरकार को अपना आवश्यक आवेदन-पत्र प्रस्तुत किया और जब उसकी कुछ भी सुनवाई नहीं हुई तो सत्याग्रह का बिगुल बजा दिया गया। इस आन्दोलन को देश में प्रगति देने में जहां स्व० महाशय कृष्ण जी के दैनिक समाचार पत्र वीर अर्जुन व प्रताप तथा उत्तरप्रदेश का आर्यमित्र विशेष साधन बने, वहां कार्यकर्त्ताओं में श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री सदस्य लोकसभा, श्री पं० नरेन्द्र जी हैदरावाद, श्री लाला रामगोपाल जी देहली, श्री पं० ओमप्रकाश जी पुरुषार्थी, श्री पं० जयदेव जी सिद्धान्ती, स्वामी रामेश्वरानन्द जी एम० पी०, श्री पं० शेरसिंह जी सदस्य विधान

परिषद् पंजाव, श्री वीरेन्द्र जी देहली आदि ने आन्लदोन को चार चांद लगा दिये।

देश के कोने २ में घूम २ कर पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री ने तो अपने ओजस्वी भाषणों द्वारा जनता में सत्याग्रह की ज्वाला को ही धधका दिया।

भारत के कोंने २ से सत्याग्रहियों के दल के दल 'चंडीगढ़ चलो' की ध्वनि करते हुए पंजाब की वीर भूमि की ओर अग्रसर होने लगे। उत्तरप्रदेश से इस आन्दोलन में ५००० से अधिक आर्य नर नारियों ने सक्रिय भाग लिया और पंजाव की जेलों को सुशोभित किया।

प्रान्त का प्रत्येक आर्यसमाज सामूहिक रूप से तन तन धन से इस आन्दोलन को सफल बनाने में जुट गया था। उत्तरप्रदेश से १०१ सत्याग्रहियों का एक वड़ा जत्था श्री रामजी प्रसाद गुप्त उपमंत्री सभा के नेतृत्व में गया और इसी प्रकार अनेकों बड़े और छोटे जत्थे आर्यसमाज के प्रमुख व्यक्तियों यथा पं० विष्णुस्वरूप जी, श्री ईश्वरीप्रसाद प्रेम पं० सत्यपाल जी शास्त्री, पं० शेरसिंह जी कश्यप, चौ० शूरवीरसिंह, स्वामी शिवानन्द जी, पं० सच्चिदानन्द जी शास्त्री, चौ० शेर सिंह जी पं० सत्यपाल जी वैद्य आदि के नेतृत्व में सत्याग्रह में सम्मिलित हुए। इस आन्दोलन से भारत सरकार को एक बार पुनः आर्यसमाज की जन शक्ति का सम्यक् परिचय हो गया।

चंडीगढ़ मे एवं पंजाब की जेलों में सत्याग्रहियों के साथ जो अमानुषिक अत्याचार किए गए उनका प्रथक वर्णन न करके श्री पं० अलगूराय शास्त्र सदस्य लोक सभा के प्रति-वेदन को जो आपने श्री पं० जवाहरलाल नेहरू की सेवा में भेजा था, केवल यहाँ अंकित किया जाता है। इससे उस समय की स्थिति का अनुमान आसानी से किया जा सकेगा।

प्रतिवेदनः

पूज्य पंडित जी,

वन्दे।

मैं आपको यह लिखकर कष्ट दे रहा हूँ कि २४-८-१९५७ ई० को फिरोजपुर केन्दीय कारावास में जो दुर्घटना हुई उसके रोमाँचकारी समाचार मेरे पास सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधिसभा से पहुँचे। मैंने घटना स्थल पर

जाने की स्वीकृति उन्हें दे दी। तदनुसार मैं २७-८-५७ ई० को वहां गया और कल प्रातः लौटा हूँ। इस यात्रा में फिरोजपुर के वातावरण को देखा और उसका प्रभाव जो मेरे मन पर है आपकी सेवा में वह रखना चाहता हूँ :—

(१) हिन्दी सत्याग्रहियों को सिख रीजन की जेलों में एकत्रित रखना बुद्धिमत्ता नहीं हैं। जेल के कैदियों में जो अधिकांश सिख हैं इन हिन्दी वालों के लिये भारी घृणा है इससे कहीं भी किसी समय भी संघर्ष की आग भड़क सकती है। दोष इन अपराधियों का होगा, बदनाम सरकार होगी और कांग्रेस संगठन।

(२) फिरोजपुर में जिस निर्दयता, निष्ठुरता, निर्ममता से हिन्दी सत्याग्रहियों को जेल के क़ैदियों की लांठियों से पिटवा कर उनकी हड्डियाँ तुड़वायी गई हैं, उसे देख कर आप तो अवश्य ही विचलित हो उठेंगें। विश्वास कीजिये मेने कल्पना भी न की थी कि यह दृश्य देखूंगा। बूढे लोग, बच्चे और कुछ हट्टे कट्टे भी जो सब ३१२ हैं इस प्रकार मारे गये हैं कि यदि उस प्रकार भैंसा गाड़ी हांकने वाला कूड़ा ले जाने वाला भंगी शहर में अपने भैंसे को पीटता दिखाई पड़े तो उसका चालान पुलिस क्रुएल्टी टू एनीमल एक्ट में किए बिना नहीं रह सकती। पंडित जी मेरी आँखों में से आंसू ही बहते रहे जब तक में उन सत्याग्रही बन्दियों में घूमता रहा।

(३) सुपरिन्टेन्डेन्ट ने बताया कि कोई भी तनाव किसी प्रकार की घटना से पूर्व उन्हें ज्ञात न था। ५७४ सत्याग्रहियों में से ३१२ को इस प्रकार पीटकर उनकी हड्डियों को तोड़ देना १०-१५ मिनट के समय में एक आश्चर्य ही लगता हैं। जेल के पुराने अपराधियों की सहायता से यह सब हुआ।

उस दिन डिप्टी कमिश्नर छुट्टी पर थे। उस दिन जेल सुपरिन्टेन्डेन्ट छुट्टी पर थे। घटना घट जाने के बाद एलार्म के परिणाम स्वरूप सब बाद में आये और जो कुछ हो गया था, उसकी रोमांचकारिता पर बहुत खिन्न हुए।

(४) जेल में एक अपराध के लिए जो लोग बंद हैं उन्हें इस प्रकार पीटा जाय, यह बर्बरता का एक भीषण नंगा नृत्य है इस आँदोलन में साम्प्रदायिक रंग आ जाने के कारण तथा वैसे भी भाषा के प्रश्न को लेकर एक विवाद

खड़ा कर देने वालों के सम्बन्ध में आपके मन में जो खेद और क्षोभ है, उसे सब जानते हैं।

आपके शब्दों का आदर इस सत्याग्रह के संचालकों ने नहीं किया, यह भी सबको विदित है और इस कारण इन लोगों पर कुछ ज्यादती की जाय तो उससे कुछ हानि सम्भव नहीं हैं। यह भावना भी कुछ सरकारी क्षेत्रों में कार्य करती है। साम्प्रदायिकता के नाम पर अहिन्दू खूब लाभ उठाते हैं। हिन्दू की वाणी बन्द है। वह खुले तो आपकी फटकार पाने का भय रहता है।

(५) आज पंजाब में हिन्दुओं की दुर्गति हो रही है। भारी अल्प-संख्यकों की दया पर बहुसंख्यकों को छोड़ दिया गया है। सिख-हिन्दू तनाव बढ़ता जा रहा है। उस तनावका परिणाम है फिरोजपुर केन्द्रीय कारावास में हिन्दू सत्यागहियों का इस प्रकार दुश्चरित्र दण्डित अपराधी सिखों के द्वारा पिटवाया जाना। सिख सत्याग्रही भी पीटे गये, इसलिए कि वह हिन्दी वालों का साथ दे रहे हैं। "पढ़ों हिन्दी, पढ़ो हिन्दी" कह कर सत्याग्रहियों को पीटा गया।

(६) आपकी सर्वोच्च सत्ता में बन्दी निरीह पिटें इससे आपका यश और तप क्षीण होता है—तब समस्त राष्ट्र की आध्यात्मिक शक्ति घटती है। पंडित जी ! जेल देखिये—अवश्य जाइये—स्वयं जाइये, कांग्रेस तथा कांग्रेसी सरकारों की मर्यादा और यश की रक्षा कीजिये, पीटे गये सत्याग्रहियों की क्षतिपूर्ति का आदेश कीजिए। आपका जाना उनके आंसू पोंछ देगा। बड़ा अत्याचार हुआ है। बड़ा अनाचार। विश्वास करें, कुछ जेल अधिकारियों कौ मुअत्तल कर देने तथा जूडीशियल इन्क्वायरी बैठा देने से लोगों को बड़ी राहत मिली हैं, परन्तु आपको स्वयं इस नृशंसता को देख लेना चाहिए। न जा सके तो पंत जी को भेजिये, गुरुमुखसिह मुसाफिर को स्वयं जाना चाहिए।

(७) संक्षेप में मेरी सम्मति यह है :—

(१) फिरोजपुर सत्याग्रही कैम्प जेल हिन्दी क्षेत्र में हटाया जाय, (२) कोई हिन्दी सत्याग्रही सिख रीजन के जेल में न रखा जाय, (३) २४-८-५७ को फिरोज़पुर केन्द्रीय कारावास के कैम्प जेल में पीटे गये हिन्दी सत्याग्रहियों की क्षति-पूर्ति की जाय। (४) आप स्वयं उक्त जेल का निरी-

क्षणकरें। (५) आक्रमणकारी एवं आक्रमण कराने वाले लोगों को कठोर दण्ड दिया जाय।

यदि आप चाहेंगे तो आपकी सेवा में उपस्थित हो कर जुबानी भी जो कुछ पूछेंगे बताऊँगा—परन्तु आपका बहुमूल्य समय मुलाकात में लेना तभी ठीक समझता हूँ जब आप बुलाकर पूछना चाहें, नहीं तो लिख कर अपने विचार आपकी सेवा में भेज देना ही मुझे उपयुक्त प्रतीत होता है।

धृष्टता के लिए क्षमा चाहता हूँ।

आपका सर्वथा विश्वसनीय
अलगूराय शास्त्री

पुनश्चः स्वामी परमानन्द को जेल से हटा दिया जाय।
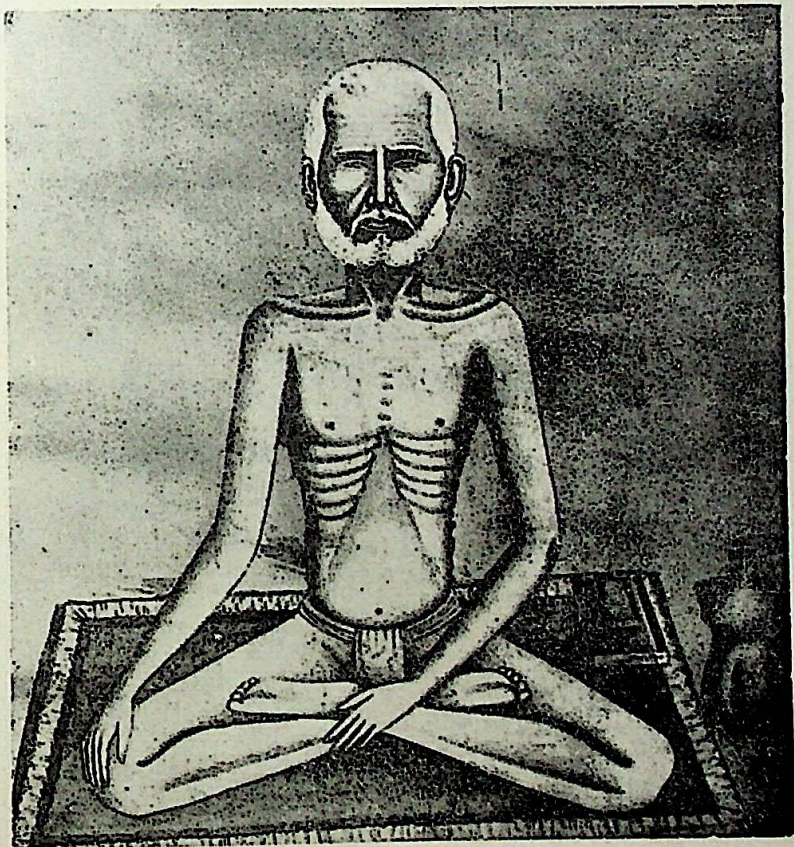
श्री स्वामी विरजानन्द दण्डी जी महाराज ।

६ धार्मिक क्रांति

आर्य समाज के स्थापना काल से आज तक भारतीय धर्म एवं संस्कृति के क्षेत्र में जो महती क्रांति हुई है उसका दिग्दर्शन कराना इस अध्याय के लिखने का मुख्य प्रयोजन है।

वेद—महर्षि से पूर्व वेद केवल कुछ चुने हुए पुस्तकालयों अथवा वेदपाठी ब्राह्मणों के कन्ठ तक ही सीमित थे। उव्वट, सायण, महीधरादि मध्यकालीन आचार्यों ने वेदों का अनर्थ किया हुआ था। अर्थात् नैरुक्तिक प्रक्रिया को त्याग कर मनमाने तर्क, विज्ञान शून्य याज्ञिक एवं ऐतिहासिक अर्थवाद का प्रचार किया हुआ था। जिसके कारण सत्य की खोज करनेवाले मस्तिष्कों में वेदों के प्रति घोर अनास्था उत्पन्न होती जा रही थी और ईसाई पादरियों और मुसलमान मौलवियों को अपनी मतों की श्रेष्ठता प्रतिपादित करने में कोई विशेष कठिनाई प्रतीत नहीं हो रही थी। ऋषि ने प्राचीन वैदिक व्याकरण अष्टाध्यायी, महाभाष्य, एवं निरुक्त व ब्राह्मण ग्रन्थों के आधार पर नैरुक्तिक अर्थ करने पर बल दिया। तथा वेदों के युक्ति, तर्क एवं विज्ञान सम्मत होने की घोषणा की और ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका लिखकर संसार के सामने प्रस्तुत की। वेद के लगभग १०००० मंत्रों का इस शैली से भाष्य करके आगे आने वाली सन्तान के लिये वेद निर्वचन का मार्ग उन्मुक्त कर दिया।

ऋषि प्रदर्शित मार्ग पर चलकर पं० तुलसीराम स्वामी, पं० आर्यमुनि पं० क्षेमकरधदास त्रिवेदी पं० युधिष्ठिर मीमांसक, पं० वैद्यनाथ शास्त्री

वेदानुसन्धानकर्त्ता आदि अनेक विद्वानों ने वेदों के नैरुक्तिक भाष्य रच कर संसार के सामने प्रस्तुत किए या कर रहे हैं। अनेक आर्य विद्वानों ने यथा पं० गुरुदत्त विद्यार्थी एम० ए०, पं० श्रीपाद दामोदर सातवलेकर, स्वामी वेदानन्द तीर्थ, पं० घासीराम एम०ए० स्वामी अभयदेव, स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक्, पं० चमूपति एम. ए. आचार्य प्रियव्रत विद्यावाचस्पति आदि ने अनेक वेद स्वाध्याय ग्रन्थों का निर्माण किया। जिस के प्रभाव से आज वेद संहिताएँ, वेद-भाष्य अथवा वैदिक स्वाध्याय ग्रन्थ सर्वसाधारण के घरों में यत्र-तत्र सर्वत्र पहुंच चुके हैं। वेदों के प्रति जो अनास्था बढ़ रही है वह अब समाप्त हो चुकी है। और वेदों के प्रति निरन्तर श्रद्धा व आस्था का बिस्तार हो रहा है।

योगीराज अरविन्द घोष ने भी वेद-रहस्य लिखकर इस दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किया है।

उपनिषद्—स्वामी जी से पूर्व देश में जो १५० के लगभग उपनिषदें विद्यमान थीं, उन सबको ही आर्ष माना जाता था। गम्भीर अध्ययन के उपरान्त ऋषि ने यह घोषणा की कि ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुन्डक, माण्डूक्य, ऐतरेय, तैत्तिरीय, छान्दोग्य, बृहदारण्यक एवं श्वेताश्वतर को छोड़ कर शेष सब उपनिषदें अनार्ष हैं और मतवादी स्वार्थी जनों ने इनकी रचना की है।

महर्षि के अनेक अनुचरों ने यथा पं. गुरुदत्त विद्यार्थी एम. ए., पं. तुलसीराम स्वामी, स्वामी दर्शनानन्द, पं. राजाराम शास्त्री, पं. भीमसेन शर्मा, पं. शिवशंकर काव्यतीर्थ पं. आर्यमुनि, पं. देवेन्द्रनाथ शास्त्री, प्रो. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार, महात्मा नारायण स्वामी, पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय एम. ए. आदि ने उपनिषदों पर भाष्य एवं उनका हिन्दी व अंग्रेजी में अनुवाद किया है। इन उपनिषदों पर जो शंकर के वेदान्तवाद की छाप पड़ी हुई थी उसका युक्ति युक्त निराकरण किया गया और उपनिषदों के वैदिक त्रैतवाद को संसार के सामने लाया गया। अब भारत का पण्डित समाज इन आर्ष उपनिषदों के अतिरिक्त अन्य उपनिषदों के स्वाध्याय में समय लगाना उसको व्यर्थ खोना मानने लगा है।

दर्शन—षड्-दर्शन के सम्बन्ध में यह धारणा रही है कि यह सब एक दूसरे से भिन्न विषय के प्रति-पादक हैं और इनमें कोई पारस्परिक सामञ्जस्य नहीं है तथा यह अद्वैतवाद के प्रचारक हैं। ऋषि दयानन्द ने यह घोषणा की कि छहों दर्शनों का प्रतिपाद्य विषय एक ही है और इनमें पूर्ण पारस्परिक

सामञ्जस्य है तथा यह निश्चय त्रेतवाद के प्रति-पादक हैं। ऋषि के अनुगामी अनेक विद्वानों ने यथा स्वामी दर्शनानन्द, पं. तुलसीराम, पं. आर्यमुनि, पं. राजाराम शास्त्री, स्वामी वेदानन्द तीर्थ, स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक पं. उदयवीर शास्त्री, पं देवेन्द्रनाथ शास्त्री आदि ने इन पर वैदिक भाष्य किये और ऋषि के दृष्किोण का विद्वत्तापूर्ण शैंली से प्रतिपादन किया।

ब्राह्मण—स्वामी जी से पूर्व जितने ब्रह्मण ग्रन्थ उपलब्ध थे उन सब को ही आर्ष माना जाता था। स्वामी जी ने यह घोषणा की कि शतपथ, गोपथ, ऐतरेय एवं साम ब्राह्मणों को, उनके प्रक्षिप्त भाग को छोड़कर, केवल आर्ष माना जा सकता है अन्य को नहीं। स्वामी जी के उपरान्त इन ब्राह्मण ग्रन्थों का मन्थन आरम्भ हुआ। पं. क्षेमकरण दास जी ने गोपथ का भाष्य किया और शतपथ का भाष्य पं. बुद्धदेव विद्यालंकार कर रहे हैं।

स्मृति—स्वामी जीं के समय देश में जो तीन दर्जन के लगभग स्मृति ग्रन्थ उपलव्ध थे और नाना ऋषियों के नाम से प्रचलित थे उन सब को आर्ष माना जाता था। स्वामी दयानन्द ने गम्भीर मन्थन के उपरान्त यह घोषणा की कि इन में मनु को, उसके प्रक्षिप्त भाग को छोड़कर, ही केवल आर्ष माना जा सकता है। मनु स्मृति में जो तान्त्रिक एवं वाममार्गियों ने वेदाभिमानी जनता को पथ-भ्रष्ट करने की भावना से स्थल २ पर मृतक श्राद्ध, मांस-भक्षण, सुरापान, पिंडदान, पर स्त्री गमन आदि अनर्गल पाशविक भावनाओं का समावेश किया हुआ है जो सर्वथा त्याज्य हैं। ऋषि के अनुगामी अनेक विद्वानों ने यथा पं. तुलसीराम स्वामी, पं. राजाराम शास्त्री, पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय एम. ए. ने प्रक्षिप्त भाग का युक्तियुक्त निराकरण कर शुद्ध वैदिक भाग को जनता के समक्ष रखा। आज उस प्रक्षिप्त भाग को मानना विद्वत्समाज में हास्यास्पद माना जाने लगा है। अन्य अनेक स्मतियों का पठन पाठन समाप्त हो चुका है अब तो वह केवल पुस्तकालयों की शोभा बढ़ाने मात्र प्रयोजन सिद्ध करती हैं।

इतिहास—इतिहास के दो प्रामाणिक ग्रन्थ बाल्मीकि रामायण एवं महाभारत हैं। इन ग्रन्थों के अन्दर भी इतनी अधिक मिलावट की गयी हैं कि इनका कलेवर पहले से बढ़कर चतुर्गुण हो गया है। ऋषि दयानन्द ने इन क्षेपकों को प्रथक करने की ओर भी संकेत किया है। आर्य विद्वानों की ओर से इनका शंसोधित संस्करण निकालसे का उपक्रम किया जा रहा है।

१८ पुराण एवं १८ उपपुराणों को व्यास कृत मानने की भारी भ्रान्ति जनता में घर किये हुये थी। ऋषि ने यह घोषणा की कि यह सब के सब पुराण अनार्ष हैं इनमें से एक भी ऋषि प्रणीत नहीं। यह तो स्वार्थी जनों की रचनाएं हैं। वास्तव में तो इनको पुराण संज्ञा भी नहीं दी जा सकती। पुराण तो केवल रामायण और महाभारत ही हैं। इन पुराणों में इतस्ततः कुछ अच्छी बातें हैं जिनका समावेश किन्हीं गूढ़ अभिप्रायों से स्वार्थी लेखकों ने किया है। अतः विष मिले अन्न की भांति यह सब त्याज्य है। स्वामी जी की इस घोषणा का विद्वत्-समाज ने समादर किया और इन पुराणों को अब धार्मिक ग्रन्थों की कोटि से निकाल कर साहित्यिक ग्रन्थों में ला रखा है। पौराणिक पंडितगण भी इन पुराणों के अब अलंकारिक अर्थ प्रस्तुत कर इन के विभत्स कथानकों पर पर्दा डालने का प्रयास करने लगे हैं।

भारत के इतिहास को वृटिश शासनकाल में सर्वथा अशुद्ध एवं भ्रान्तरूप में प्रस्तुत किया गया ईसाई लेखकों ने घोर पक्षपात् से काम लेकर भारत के इतिहास को अत्यन्त दूषित एवं विषाक्त बना डाला है। ऋषि दयानन्द ने अंग्रेजों द्वारा प्रचलित की गई अनेक भ्रात धारणाओं का अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में निराकरण किया है। महर्षि के अनुचरों ने यथा आचार्य रामदेव, पं० रघुनन्दन शर्मा, पं० भगवतदत्त बी० ए० रिसर्चस्कोलर, पं० रघुवीरशरण दुबलिश, पं० हरविलास शारदा, पं०चमूपति एम० ए० पं० चन्द्रगुप्त विद्यालंकार आदि ने भारतीय इतिहास को सही रूप में प्रस्तुत करने की दृष्टि से अनेक ग्रन्थों का निर्माण किया और अब इतिहास के शंसोधन की महती आवश्यकता को अनुभव कर भारत सरकार आर्य विद्वानों के सहयोग से इस दिशा में पग बढ़ाने लगी है।

सूत्र:—सूत्र ग्रन्थ जिनमें यज्ञ, याग पर्व, इष्टि, संस्कारों का विधि विधान किया हुआ है वह भी स्वार्थी जनों से अछूते न रहे। स्थल २ पर इनमें भी मिलावट की गई है। आज इनके शंसोधन का भी प्रयत्न किया जारहा है। वैदिक कर्मकांड को पूर्णतया वेद मंत्रों पर आधारित करने की दिशा में आर्य विद्वान् प्रयत्नशील हैं। संक्षेप में कहने का तात्पर्य यह है कि इस ७५ वर्ष के सीमित काल में आर्यसमाज ने ऋषि के आदेशानुसार अपने धार्मिक एवं सांस्कृति साहित्य के सम्बन्ध में जो कार्य किया है वह असाधारण है। और इस कार्य के द्वारा जो धर्म के क्षेत्र में क्रान्ति सर्वत्र

दृष्टि गोचर हो रही है उसका श्रेय निश्चय आर्यसमाज को ही है। इस स्थल पर इस बात का उल्लेख करना भी असंगत न होगा कि महर्षि ने जो खंडन-मंडन, शंका-समाधान एवं शास्त्रार्थ की प्रथा चलाई थी आर्यसमाज ने उसको अपने पूर्व एवं मध्य युगों में सर्वाधिक बल दिया। कोई आर्यसमाज ऐसा होगा जिसने २ व ३ शास्त्रार्थ कम से कम न कराए हों। मुस्लमानों, ईसाइयों, पौराणिकों एवं जैनियों से सहस्रों शास्त्रार्थ इस युग में किये गये। आर्यसमाज के अनेक शास्त्रार्थ महारथी यथा पं० मुरारीलाल शर्मा, स्वामी दर्शनानन्द, पं० लेखराम आर्य-मुसाफिर, पं० राम चन्द्र देहलवी पं० भोज दत्त आर्य मुसाफिर, पं० शिवशर्मा जी, पं० कालीचरण मौलवी फाजिल, ठा० अमरसिंह, पं० धर्मभिक्षु, पं० शान्तिस्वरूप कुरैशी, पं० रुद्रदत्त जी, पं० बिहारीलाल शास्त्री, काव्यतीर्थ पं० बुद्धदेव विद्यालंकार पं० शेरसिंह कश्यप आदि ने न जाने कितने २ शास्त्रार्थ अपने जीवन में किये होंगे। इन शास्त्रार्थों का यह परिणाम सर्वथा स्पष्ट है कि जहां एक और वैदिक धर्म की श्रेष्ठता की धाक सर्व साधारण जनता के मस्तिष्क पर बैठी, वहां इन विभिन्न मत वादियों को अपनी बुद्धि, तर्क, विज्ञान शून्य मान्यताओं के स्वरूप को सर्वथा बदलना पड़ गया और अलंकारिक रूप में उनका बुद्धि संगत अर्थ करने के लिये वह विवश होगये। तथा मतान्धता एवं अन्ध विश्वासों को तो उन्हें छोड़ते ही बना है।

७ शुद्धि आन्दोलन

मुगलों की दासता के युग में भारतवर्ष के अन्दर लाखों व करोड़ों हिन्दुओं को लोभ, लालच एवं भय के द्वारा धर्म से पतित किया गया। उत्तर-प्रदेश में लाखों की संख्या में जाट, गूजर, राजपूत, चौहान त्यागी आदि मुसलमान बनाए गये। जिले के जिले इन आर्य धर्म से पतित बन्धुओं से भरे पड़े हैं। मुग़लिया शासन की समाप्ति पर आर्यसमाज के प्रबल प्रचार से प्रभावित होकर यह बन्धु अपने पूर्वजों के धर्म में वापिस आने के लिये तैयार हुये, किन्तु मिथ्याभिमान एवं धर्म सम्बन्धी भ्रान्त धारणाओं के कारण हिन्दू इनको वापिस लेने को प्राय: तैयार न हुए। किन्तु आर्यसमाज ने निराशाबाद को परे फैंक कर चारों और शास्त्रार्थों की झड़ी लगादी और इन शास्त्रार्थों के द्वारा इस्लाम मत की हीनता और आर्य धर्म की श्रेष्ठता की भावनाएं जनता में उत्पन्न की, और अपने पूर्वजों की वीर गाथाएं भजनों एवं व्याख्यानों द्वारा सुना सुनाकर हिन्दुओं में स्वाभिमान जाग्रत किया और शुद्धि के मार्ग में जो धार्मिक आपत्तियां उठाई जाती थीं, उनका उन्मूलन किया। साथ ही हिन्दुओं के मिथ्याभिमान का भी सतत कड़ा खंडन कर हिन्दू धर्म का द्वार प्रत्येक विधर्मी मानव के लिये उन्मुक्त कर दिया। आर्यसमाज ने स्थान २ पर व्यक्तिगत सहस्रों मुस्लमानो को शुद्धकर वैदिक धर्म में दीक्षित किया और निरन्तर कर रहा है।

आर्यसमाज के कर्मठ तपस्वी नेता स्व० स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज एवं स्व० महात्मा हंसराज जी ने सामूहिक शुद्धि की दृष्टि से १३ फ़रवरी

१९२३ ई० को आगरे में अखिल भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा संगठित की। प्रान्त के अनेक कर्मठ कार्यकर्त्ता यथा ठा०माधवसिंह बा० नाथमल, बा० श्रीराम बा० शालिगराम, शास्त्रार्थ महारथी पं० मुरारीलाल शर्मा, पं० कालीचरण पं० भोजदत्त कुंवर सुखलाल ठा० तेजसिंह आदि ने इस पुण्य कार्य में तन मन धन से पूर्ण सहयोग दिया। अनेक प्रकार की बाधाओं एवं विपत्तियों का सामना करते हुए सामूहिक शुद्धि का शंखनाद निनादित कर दिया गया।

मथुरा, आगरा, एटा, इटावा, मैंनपुरी, भरतपुर आदि क्षेत्रों में लाखों की संख्या में मूले जाटों एवं मलकाने राजपूतों की सामूहिक शुद्धियां की गई। इस शुद्धि आन्दोलन से उत्तर भारत का मुस्लमान क्षुब्ध हो उठा और पूज्य तपस्वी नेता स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का सन् १९२६ ई० में देहली में बध कर दिया गया। उधर मुल्लाओं ने गांव गांव घूमकर इस्लाम की कट्टरता का भारी प्रचार किया और राजनैतिक नेताओं ने इस परम धार्मिक एवं शुद्ध राष्ट्रीय आन्दोलन को साम्प्रदायिक कह कर बदनाम करना आरम्भ कर दिया जिसके प्रभाव स्वरूप मुस्लमानों की सामूहिक शुद्धि का आन्दोलन शिथिल पड़ गया।

यह शुद्धि आन्दोलन नितान्त धार्मिक एवं राष्ट्रीय है इस तथ्य का प्रचार आर्यसमाज को बराबर आगे भी करना होगा जिससे एक दिन वह निश्चय आवेगा कि बिछुड़े भाई अवश्य गले मिलेंगे।

अंग्रेजी शासन काल में हिन्दुओं को ईसाई बनाने के भयंकर षढ़यंत्र निरंतर चलते रहे। विदेशी ईसाई मिशनों को शासन की ओर से हर प्रकार की सुविधाएं एवं सहायता दी जाती रहीं। उत्तरप्रदेश के अनेक जिलों में ईसाई मिशनों ने अपने बड़े २ गढ़ निर्माण किए। ग्रामीण क्षेत्रों में सहस्रों की संख्या में ईसाई पादरियों के जाल बिछा दिये गये और करोड़ों रुपया प्रतिवर्ष उन पर व्यय किया जाने लगा।

सन् १८५७ ई० की राज्य क्रान्ति के उपरान्त तो सरकार ने योजना-बद्धरूप में उन क्षेत्रों की जनता को जहां क्रान्ति की चिनगारी विशेषरुप से चमकी थी ईसाई बनाने का उपक्रम आरम्भ किया। मेरठ जिला जो सबसे अधिक क्रान्तिकारी माना जाता था उसके अन्दर तथा पास के बुलन्दशहर, मुज़फ्फरनगर, बिजनौर, अलीगढ़ आदि जिलों में मिशनरियों को विवेषरूप से कार्य करने के लिये जुटाया गया। अकेले मेरठ जिला में ३० से अधिक

ग्रामों में गिरजा रघ बनाकर प्रचार के केन्द्र स्थापित किये गये और लगभग ३०० पादरियों को नियुक्त किया गया, कि वह ग्राम की ग़रीब व पददलित जनता को सामूहिक रूप से ईसाइयत में प्रविष्ट करें।

सन् १९४७ ई० में स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त शासन का सहयोग इन मिशनरियों और मिशनों को मिलना प्रायः बन्द हो गया और जनता पर से गोरे पादरियों का आतंक भी उठने लगा। जिलों के अन्दर आर्यसमाज का व्यापक संगठन खड़ा किया गया और ग्राम २ ईसाइयतका कड़ा खंडन किया गया।

सन् १९५५ ई० में मेरठ में "विदेशी ईसाई मिश्नरी अराष्ट्रीय प्रचार निरोध समिति" का निर्माण किया गया। इतिहास के लेखक के संचालकत्व में इस समिति ने अपना कार्य आरम्भ क़िया। ज़िले के अन्दर लगभग ३००० चमार और भंगियों को जो ईसाई बन चुके थे हिन्दू धर्म में वापिस लाया गया। इस शुभ कार्य में स्वामी वेदानन्द जी का सहयोग विशेष सराहनीय रहा। बेकराबाद (ग़ाजियाबाद), सर्धना व बाघू आदि में मिशनों के विरुद्ध बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन किये गये। इन प्रदर्शनों में श्री बाल दिवाकर हंस देहली, श्री ओम्प्रकाश पुरुषार्थी देहली, श्री रामगोपाल जी शालवाले देहली, श्री प्रो० रतनसिंह एम० ए० ग़ाजियाबाद, श्री विश्वम्भरसहाय विनोद मेरठ, श्री डा० भगवतदत्त जी मेरठ, श्री पं० ज्योतिप्रसाद जी टटीरी, श्री पृथ्वीसिंह बेधड़क आदि का विशेष सहयोग रहा। बेकराबाद के प्रदर्शन से तो उत्तर प्रदेश ही का क्या भारत भर का मिशन हिल गया। बाघू के प्रदर्शन से उस समय की केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्रिणी श्री अमृतकौर का सिंहासन भी डोल उठा।

अखिल भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा देहली मेरठ, मुज़फ्फरनगर, बुलन्दशहर आदि जिलों में आज दिन भी निरन्तर सामूहिक शुद्धि का कार्य कर रही है और प्रति वर्ष सहस्रों की संख्या में ईसाइयों की शुद्धियां की जा रही हैं। इस क्षेत्र में मिश्नरी अब आक्रामक न रह कर स्थान पर अवशिष्ट ईसाइयों को अपने जाल में सुरक्षित रखने की दृष्टि से लाखों रुपया प्रतिवर्ष दूध, घी के डिब्बे, चीनी, अन्न, वस्त्र व नकदी वितरित करने पर लगे हुए हैं।

आर्यसमाज को इस शुद्धि के क्षेत्र में अभी महान् कार्य करना है। मुग़लों और अंग्रेजों की दासता के इन चिन्हों को मिटाना है। यह शुद्धि आन्दोलन परम पवित्र, धार्मिक एवं राष्ट्रीय है इस तत्व का जन जन के मानस पर अपने प्रचार के द्वारा प्रभाव अंकित करना है।

८ अछूतोद्धार-आन्दोलन

आर्यसमाज की स्थापना से पूर्व उत्तर प्रदेश छूत-छात का भारी गढ़ रहा है। हिन्दुओं में अपने ही अनेक वर्गों के साथ खान पान करना तो दूर उनको छूना तक पाप समझा जाता था। अछूत से पल्ला भिड़ जाने मात्र पर भी स्नान करने में ही शुचिता मानी जाती थी। अपने को अछूतों से उच्च मानने वाले हिन्दुओं के वर्ग उनके बालक, बालिकाओं को अपने बच्चों के साथ पाठशालाओं में पढ़ने तक नहीं देते थे। उनको अपने मंदिरों में प्रविष्ट होने अथवा धर्मशालाओं में ठहरने नहीं देते थे यहां तक कि सार्वजनिक कूपों से जल तक भी नहीं भरने देते थे।

आर्यसमाज के अनथक एवं प्रचंड प्रचार से इन कलुषित भावनाओं के दुर्ग धूल-धूसरित होने लगे और छूत छात की भावनाएं लुप्त होने लगीं।

आर्यसमाज की ओर से स्थान २ पर अछूत वर्गों के बच्चों के लिये पाठशालाएं खोली जाने लगीं और तथाकथित उच्च वर्णस्थ जनों के बालकों के साथ अछूतों के बालकों की पठन पाठन व्यवस्था इन शिक्षा संस्थाओं में की जाने लगी।

किसी समय बरेली के कर्मठ आर्य नेता स्व० डॉक्टर श्यामस्वरूप सत्यव्रत ने अकेले अपने प्रयत्न से बरेली नगर में ३२ कल्याणी पाठशालाएं इनके लिये खोली हुई थीं।

गुरुकुलों में अन्य वर्गों के बालकों के साथ इनके बालकों के लिये रहने सहने पढ़ने एवं भोजन करने की व्यवस्था की गई और अछूतों के अनेक

बालक बालिकाओं को संस्कृत की उच्च शिक्षा दी जाने लगी। साथ ही इनके लिये वेद के पठन पाठन की भी व्यवस्था की गई।

स्थान २ पर इनको आर्यसमाज में प्रविष्ट किया जाने लगा। आर्यसमाज का सदस्य बनाया गया यहां तक कि अनेक स्थानों पर इनको आर्यसमाज का उच्च अधिकारी तक निर्वाचित किया गया।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के अछूतोद्धार विभाग की ओर से इस छूत छात को क्रियात्मकरूप से मिटाने की दृष्टि से स्थान २ पर सार्वजनिक सहभोजों का विशेष आयोजन भी किया गया।

ज़िला अलीगढ़ के औरंगाबाद ग्राम के कर्मठ प्रभावशाली कार्यकर्त्ता ठाकुर खानसिंह जी ने आर्यसमाज में इनके सामूहिक प्रवेश का आन्दोलन चालू किया। बरौठा ग्राम में विशाल यज्ञ रचकर इनको आर्यसमाज में दीक्षित किया गया। सन् १९२८ ई० में ज़िला बिजनौर के तपस्वी कर्मठ नेता लाला ठाकुरदास जी ने बुआपुर ग्राम में एक ऐतिहासिक यज्ञ रचा और अनेक ग्रामों के लगभग ५०० चमारों के परिवारों को आर्यसमाज में दीक्षित किया गया और अनेक नवयुवकों को यज्ञोपवीत धारण कराये गये।

इतिहास के लेखक ने जो उन दिनों सभा का उपमंत्री एवं उपदेश विभाग शुद्धि अछूतोद्धार विभाग का अधिष्ठाता था; स्वयं उस यज्ञ में उपस्थित होकर श्री पं० बिहारी लाल शास्त्री काव्यतीर्थ के साथ दीक्षा दिलाने में भाग लिया। दीक्षा के उपरान्त लगभग १००० आर्य जनता ने सहभोज में भाग लिया। जिले के समस्त आर्यसमाजों के कार्यकर्त्ता इस यज्ञ एवं सहभोज में प्रसन्न बदन भाग ले रहे थे। भंगी चमारों के हाथ से दाल भात की प्रसादी सबने ग्रहण की।

ग्राम के सार्वजनिक कूपों पर जब लाला जी के नेतृत्व में चमार जल भरने गये, तो वहां के राजपूतों ने लाला जी का लट्ठों से स्वागत किया किन्तु शीघ्र ही उनका नैतिक साहस द्रवित हो गया और वह भाग खड़े हुए। उस समय केवल बुआपुर के सार्वजनिक कूप ही इन अछूतों के लिये नहीं खुले अपितु जिले के सैकड़ों ग्रामों में यह सफल आन्दोलन बात की बात में फैल गया।

महात्मा मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) जी एवं लाला लाजपतराय जी की प्रेरणा से महात्मा गांधी ने इस दिशा में अपने जीवन के अंतिम

क्षण तक भगीरथ प्रयत्न किया। जब महात्मा गांधी ने इन अछूतों को हिन्दुओं से प्रथक किये जाने वाले सरकारी षड्यंत्र का प्राणपण से विरोध किया तो आर्य समाज के बच्चे २ ने छूत-छात मिटाने के लिये शपथ पूर्वक अपना पग और तेजी से आगे बढ़ाया। उत्तराखंड के गढ़वाल प्रदेश में सन् १९२९ ई० में वहां के राजपूतों ने अछूत माने जाने वाले शिल्पकारों के विवाह के समय गोलापालकी में वरवधु के सवार होने के सामाजिक अधिकार को कुचलने में विटों ने उग्ररूप धारण किया। स्थान २ पर शिल्पकारों की बरातें लूटी गई। कार्यकर्त्ताओं को रस्सियों में बाध कर घसीटा गया और नाना प्रकार की उनको यातनाएं दी गई।

आर्य प्रतिनिधि सभा ने शिल्पकारों की हर दृष्टि से भारी मदद की। स्वर्गीय पं० गोबिन्द बल्लभ पंत ने भी इस कार्य में सभा की पर्याप्त सहायता की। और उच्च वर्णाभिमानी जनों का मद चूर किया गया।

स्वतंत्र भारत की सरकार ने छूत छात का उन्मूलन करने के लिये आवश्यक कानून भी बनाए। किन्तु शताब्दियों और सहस्राब्दियों से हिन्दुओं के मस्तिष्क में बैठी हुई भ्रान्त धारणाओं को कानून मिटा नहीं सकता। इस पुण्य कार्य को पावन वेदों के प्रकाश में आर्यसमाज को ही करना होगा। जन्म मूलक जात्याभिमान एवं जन्म के कारण ऊंच और नीच समझने की भावना पर कुठाराघात आर्यसमाज को ही करना होगा। धार्मिक एवं सामाजिक साम्य भावनाओं का विस्तार आर्यसमाज ने ही करना है।

९ समाज सुधार आन्दोलन

आर्य समाज अपने जन्म काल से प्रान्त में प्रचलित सामाजिक कुरीतियों एवं प्रथाओं का खण्डन अपने मंच से निरन्तर करता आ रहा है। बाल-विवाह बहु-विवाह एवं वृद्ध-विवाहों के विरुद्ध आवश्यकता पड़ने पर प्रदर्शन करने एवं संकटों को सहर्ष आमंत्रित करने में भी आर्यसमाजों ने कभी संकोच नहीं किया है। स्थान स्थान पर आर्यसमाजों ने रूढ़ीवादी हिन्दुओं के विरोध एवं बहिष्कार का सहर्ष सामना किया है। आपद्धर्म के रूप में विधवा-विवाह को प्रचलित करने में आर्य समाज ने दृढ़ता से अपना पग आगे बढ़ाया है।

जांत-पांत के प्रचलित बन्धनों को, जो सर्वथा वैदिक वर्ण व्यवस्था के विरुद्ध हैं और जाति को निर्बल बनाए हुये हैं, तोड़ने में आर्यसमाज ने क्रियात्मकरूप से अपना पग आगे बढाया है। आर्यसमाज के अनेक उत्साही नवयुवकों ने इन बन्धनों को तोड़ कर गुण कर्मानुसार विवाह सम्बन्ध स्थापित किये है। और विरादरी वालों के विरोध एवं बहिष्कार को हंसते २ सहन किया है। आर्यसमाज के अनेकों कर्मठ कार्यकर्ताओं ने अपनी सन्तान का विवाह जात पांत के बन्धन तोड़ कर करने में कभी संकोच नहीं किया और विवाह सम्बन्धी अपव्यय को दूर करने में भी अनेक उदाहरण प्रस्तुत कियें हैं।

आर्य समाज ने दहेज की राक्षसी प्रथा का भी अपने मंच से कड़ा खंडन कर सर्व साधारण का ध्यान इस आवश्यक कार्य की ओर आकृष्ट किया है।

आर्य प्रतिनिधि सभा का जात-पाँत तोड़क मण्डल (जाति-भेद निवारक संघ) इस दिशा में सदा जागरूक रहकर कार्य कर रहा है।

विधवा रक्षा—विधवाओं की दशा सुधारने में आर्यसमाज ने भरसक प्रयत्न किया है। अनेक स्थानों पर विधवा-आश्रम, वनिता-आश्रम आदि स्थापित कर विधवाओं को त्राण दिया है। विधर्मियों के चंगुल से विधवाओं को छुड़ाने में आर्य समाज ने अनेक बार ख़तरों को मोल लिया है। विधवाओं के अभिभावकों का पता लगा कर उनके पास तक उनको पहुंचाने में यह आर्य समाज तथा आश्रम निरन्तर प्रयत्नशील रहते हैं। विधवाओं की आन्तरिक इच्छा होने पर उनका योग्य वरों के साथ पुनर्विवाह करने का कार्य भी जागरूक रहकर आर्यसमाज करता आया है। इस समय प्रान्त में आगरा, काशी, देहरादून, प्रयाग, लखनऊ, बरेली, शाहजहांपुर, आदि नगरों में आर्य समाज के विधवा वा वनिता आश्रम स्थापित हैं। जिनका संक्षिप्त परिचय जिला-क्रम से आर्यसमाज के प्रगति-अध्याय में दिया गया है।

अनाथ रक्षा—अनाथों की रक्षा हेतु भी आर्यसमाज ने अपना हाथ आगे बढ़ाया है। यवनों तथा ईसाई मिशनरियों द्वारा जाति के सहस्रों लाल प्रति वर्ष उड़ाये जाकर विधर्मी बनाए जाते थे। आर्यसमाज को यह सहन न हुवा और उसने इस दिशा में अपने मंच से प्रबल आन्दोलन कर हिन्दू जाति का ध्यान आकृष्ट किया। प्रान्त में जहां अब अनेकों अनाथालय उदार हिन्दुओं द्वारा संचालित किए जाने लगे, वहां आर्य समाज ने अनेकों अनाथालय स्वयं भी स्थापित किए। सर्वप्रथम इन अनाथालयों की स्थापना का श्रेय तो आर्यसमाज को ही है। इन अनाथालयों को आदर्श सुरक्षागृहों का रूप देने की ओर आज दिन आर्यसमाज का प्रयत्न चल रहा है। सम्प्रति प्रदेश में निम्न स्थानों पर ये अनाथरक्षा गृह चल रहे हैं—

आगरा, बरेली, लखनऊ, मुरादाबाद, बांदा, आज़मगढ़, अलमोड़ा, सीतापुर, मिर्जापुर, देहरादून, तथा कोटद्वार आदि।

नायक जाति सुधार—उत्तरप्रदेश के पार्वत्य प्रदेश कुमायूं में नायक जाति के अन्दर अपनी कन्याओं से वेश्यावृत्ति कराने की घृणित प्रथा प्रचलित थी, जिसके विरुद्ध आर्यसमाज ने भारी आन्दोलन किया। सरकार से इस प्रथा के विरुद्ध आवश्यक कानून बनवाया और वेश्यालयों से नायक जाति की बालिकाओं का उद्धार किया। कानून बनाने में श्री पं० गोबिन्द बल्लभ पंत मुख्यमंत्री उत्तरप्रदेश

का सहयोग सराहनीय था। ऐसी कन्याओं के निवास एवं शिक्षणादि के लिये प्रतिनिधि सभा ने मेरठ में नायक-बालिका आश्रम स्थापित किया, जिसका संचालन स्वर्गीया माता हीरादेवी जी बड़ी दक्षता के साथ करती रहीं। श्री बा० गजाधर प्रसाद जी ने भी इस दिशा में विशेष कार्य किया है। अब इस प्रथा का सर्वथा अन्त हो गया है।

विमोचित जाति उद्धार :—अंग्रेजी सरकार ने भारत की अनेक जातियों को जरायमपेशा घोषित कर दिया था। उत्तर प्रदेश में भी ऐसी कुछ जातियाँ हैं जिनको जरायम पेशा प्रतिपादित किया गया। अंग्रेजी सरकार ने इन जातियों का सुधार ईसाई मिशन की सहायता से करना आरम्भ किया। उत्तर प्रदेश में सरकार ने ६ बस्तियां (सैटेलमेन्ट्स) विभिन्न स्थानों पर स्थापित किये। इन वर्गों को ईसाई बनाने का उपक्रम अन्दर २ चल रहता था अतः आर्य समाज एवं प्रान्त की आर्य प्रतिनिधि सभा का ध्यान इस ओर जाना स्वाभाविक था। लखनऊ नगर के निकट करवल ग्राम में सभा की ओर से एक बस्ती इस निमित्त सरकार के सहयोग से बसाई गई। इस बस्ती का संचालन लखनऊ के वीर-शिरोमणी प्रसिद्ध आर्यनेता श्री पं० रासविहारीजी तिवारी ने बड़ी दक्षता एवं संलग्नता के साथ किया, जिसका वर्णन सभा के इतिहास में पाठक अन्यत्र भी पढ़ेंगे।

स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त इस प्रकार की सब बस्तियों को प्रान्तीय सरकार ने सीधे अपनी संरक्षता में ले लिया तथा क़ानून में संशोधन करके जन्म-जात जरामपेशा जाति की मान्यता को समाप्त कर दिया है। जन्म से किसी भी मानव को पापी मान लेना घोर पाप का भागी होना है। मानव अपने गुण कर्मों के आधार पर भला व बुरा बनता है। अतः सरकार का यह पग निश्चय आर्यसमाज के इस सिद्धान्त की विजय है।

मादक द्रव्य निषेध :—नशा मानव को पशु बना देता है। आर्यसमाज ने सब प्रकार के इन नशों के विरुद्ध अपने मंच से निरन्तर प्रचार किया है। अछूत कही जाने वाली अनेक जातियों ने आर्यसमाज के प्रचार से प्रभावित हो कर नशों का परित्याग कर दिया है। विवाह एवं शव-यात्रा के समय जो मदिरापान की प्रथा थी उसको प्रायः समाप्त कर दिया है। आर्य समाज के प्रबल प्रचार का प्रभाव सरकार पर पड़ा है किन्तु सरकार आर्थिक लोभ के

कारण शराब आदि को सर्वथा बन्द करने केलिये अभी तक तैयार नहीं हो रहीं है। इस दिशा में आर्यसमाज को जागरूक रहकर आगे भी विशेष कार्य करना है। सभा के मादकद्रव्य-निषेध विभाग को भी इस दिशा में विशेष प्रयत्नशील होने की आवश्यकता है।

द्यूत निराकरण :—देश में द्यूत (जुए) की प्रथा बहुत समय से प्रचलित है। दीपमालिका के पर्व पर तो धार्मिक दृष्टिकोण से जुआ खेलने की भावना भी यहाँ विद्यमान थी। आर्यसमाज ने अपने मंच से जुए की हानियों का जनता के सामने निरन्तर बखान किया है। और जुए के रोकने पर पर्याप्त बल दिया है। अनेकों ट्रैक्ट लिखकर समय समय पर जनता तक पहुँचाए है। जुए के सम्बन्ध में प्रचलित धार्मिक दृष्टि कोण बदल अवश्य रहा है किन्तु यह जुआ अभी तक जनता के सर पर सवार है। इस जुए को उतार फैंकने के लिये आर्यसमाज को अभी पर्याप्त कार्य करना होगा।

१० सेवाकार्य तथा बिहार-भूकम्प

आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता अकाल, महामारी, भूकम्प आदि दैवी विपत्तिओं के उपस्थित होने पर साहस पूर्वक जनता की सेवा करने के निमित्त आगे बढ़े हैं। देश में बिहार क्वेटा आदि स्थानों पर जब जब भयानक भूचाल आए, कांगड़ा, बंगाल आदि में अकाल पड़े तथा महामारी के रोमांचकारी दृश्य उपस्थित हुए तो आर्यसमाज के सेवकों को जनता की सेवा में जुटे पाया है।

बिहार-भूकम्प :—१५ जनवरी सन् १९३४ ई० का दिन भारतवर्ष के इतिहास में चिर स्मरणीय रहेगा। यह वही दिन था जब कि मध्यान्ह २॥ बजे पृथ्वी के एक ही धक्के ने उत्तरी बिहार में रोमांचकारी दृश्य उपस्थित कर दिया था। पृथ्वी जरा सी डगमगाई और उत्तरी बिहार की शस्य श्यामला धरती रेगिस्तान बन गई। असंख्य नर नारी और बच्चे देखते ही देखते पृथ्वी के परतों में दब कर न जाने कहां विलीन हो गए। मुज़फ्फरपुर, मुंगेर, सीतामढ़ी, दरभंगा, मधुबनी, मौतीहारी के सुन्दर नगर बात की बात में नष्ट हो गये।

आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के प्रधान डा० बाबूराम जी एम० ए० तथा मंत्री श्री बा० उमाशंकर जी वकील फतेहपुर ने बिहार भूकम्प पीड़ितों की सहायतार्थ एक मार्मिक अपील निकाली। जनता ने भी दिल खोलकर दान दिया। आर्य नेता श्री लाला दीवानचन्द्र जी एम० ए० उपकुलपति आगरा विश्व विद्यालय व दयानन्द कालेज कानपुर के प्रधानाचार्य तथा बा० उमाशंकर जी प्रधान मंत्रीसभा, भूकम्प पीड़ितों की स्थिति का निरीक्षण करने के

लिये तुरन्त घटना स्थलों पर पहुँचे। वहाँ से लौटते ही उत्तर प्रदेश से स्वयं सेवकों का पहिला दल श्री देशबन्धु अधिकारी जी की अध्यक्षता में रवाना किया। तत्पश्चात् श्री हृदय राम जी वकील फतेहपुर पं० शिवदयालु जी मेरठ मंत्री सभा, बा० विष्णुचन्द जी वकील फतेहपुर तथा श्री पं० धुरेन्द्र शास्त्री २५ अन्य स्वयं सेवकों के साथ सेवाकार्य के निमित्त विभिन्न स्थानों में पहुँच गये। वहाँ पहुँच कर अन्य आर्य प्रतिनिधि सभाओं के सहयोग से अखिल भारतवर्षीय आर्यसमाज रिलीफ सोसायटी स्थापित की गई। जिसके प्रधान पं० वेदव्रत जी वानप्रस्थी (स्वामी अभेदानन्द जी) चुने गये। इस समिति में उत्तर प्रदेश से डा० बाबूराम एम० ए०, बा० उमाशंकर वकील, प्रि० दीवानचन्द जी पं० शिवदयालु जी, बा० हृदयराम जी, तथा श्री विष्णु-चन्द जी चुने गये। मुजफ्फरपुर, रामपुरी हरी, मधुबनी, मघवापुर, बाबूबरही, लौकहा, स्थानों में सेवा केन्द्र खोल दिये गये और अन्न वस्त्रादि से भूकम्प पीड़ित जनता की सेवा की गई। उत्तर प्रदेश के ३२ कार्यकर्त्ताओं ने लगभग एक मास वहाँ रह कर पूर्ण मनोयोग से सेवा कार्य किया।

इसी प्रकार क्वेटा-भूकम्प आदि के अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा ने धन संग्रह करके भेजा। आर्यसमाज इस प्रकार के सेवा कार्य को करने में सदा जागरूक रह कर आवश्यकता पड़ने पर तुरन्त संलग्न हो जाता है।

औषधि दान :—सेवा कार्य का एक अन्य रूप गरीब, निर्धन रोग-पीड़ित जनता को औषधि प्रदान करना भी है। इस दिशा में भी आर्य समाज निरन्तर प्रयत्न शील रहा है। आर्यसमाज की शिक्षा संस्थाओं तथा आश्रमों यथा गुरुकुल वृन्दावन, ज्वालापुर, कांगड़ी, वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर आदि के साथ तथा गणेशगंज-लखनऊ, मेरठ सदर, अमरोहा, नईमण्डी मुजफ्फर नगर आदि अनेकों आर्य समाजों के साथ औषधालय लगे हुए हैं। जहां निर्धन जनता को विना मूल्य औषधि प्रदान की जाती है।

महामारी के उपस्थित होने पर आर्यसमाज के नवयुवकों ने ग्राम २ घूम कर और अपने जीवन को संकट में डालकर संक्रामक रोगों से ग्रस्त निर्धन जनता की सेवा सुश्रूषा की है। और यह सब कार्य अपना कर्त्तव्य समझकर किया गया है। न कि ईसाई मिशनों की भांति जिनके इस सेवा कार्य के पीछे रोगियों को धर्म-भ्रष्ट करने का कुचक्र चलता रहता है।

११ गौरक्षा आन्दोलन

गौ आर्य संस्कृति की प्रतिष्ठा है। विना गोरस आर्यों का कोई यज्ञ याग वस्तुतः सफल नहीं होता। जिस घर में गौ नहीं, वह घर तो वेद की दृष्टि में श्मशान के तुल्य है। कृषि प्रधान देश भारत की तो गौ रीढ़ की हड्डी के समान है। यदि गौ वंश का ह्रास हो जाता है तो कृषि की उन्नति असम्भव हो जावेगी और अधिक अन्न उपजाओ का नारा एक धोखा मात्र रह जावेगा घी, दूध के अभाव में शुद्ध, सात्विक भावनाओं का उदय होना भी असम्भव बन जावेगा।

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने गौ के महत्व को हृदयंगम कर सर्व प्रथम "गौ करुणा निधि" पुस्तक लिखी और अनेक दृष्टि-कोणों से गौ के महत्व की स्थापना की। अनेक स्थलों पर गौ की रक्षा के निमित प्रभावशाली उपदेश दिए। गौ वंश के ह्रास को देखकर ऋषि विह्वल हो उठा था। उसने गौ वध बन्द करने के उद्देश्य से लाखों करोड़ों हस्ताक्षर करा कर आवेदन पत्र तैयार करने की योजना बनाई और स्वयं विलायत जा कर महारानी को प्रस्तुत करने की तैयारी की। किन्तु परिस्थिति कुछ ऐसी बन गई कि ऋषि का अभीष्ट पूरा न हो पाया। इस उद्देश्य की पूर्ति के निमित्त ऋषि ने 'गौ-कृष्यादि-रक्षिणी-सभा' भी स्थापित की। ऋषि से प्रभावित हो महात्मा गांधी ने इस पुनीत भावना को अपने कार्यक्रमों में बल दिया और यहां तक कहा कि स्वराज्य की अपेक्षा मैं गौरक्षा को अधिक मूल्यवान समझता हूँ"।

देश स्वतंत्र हो गया और गोमांस भक्षी गोरी सरकार भी विदा हो गई किन्तु गो वंश की रक्षा अभी तक नहीं की गई। कुछ कानून अवश्य बनाएं गए किन्तु उनका उद्देश्य केवल हिन्दुओं की गोरक्षा सम्बंधी प्रवल भावनाओं को शान्त रखना मात्र है। स्थान २ पर चोरी छुपके और कहीं तो खुल्लम खुल्ला गौवों का वध किया जा रहा है। कहीं किसी ने विशेष आन्दोलन किया तो कुछ गो हत्यारों की पकड़ धकड़ कर आंसू पोछ दिए जाते हैं।

हाट, वाजार व पैठों में पीत-दुग्धा जग्धतृणा गौ और बैल कसाइयों के हाथ बेचे जाते हैं और वह उनकी छुरी के नीचे उतरते हैं। शासन की ओर से इन पैठों पर कोई प्रतिबन्ध इस सम्बंध में नहीं है।

हरियाना और मेरठ कमिश्नरी से सहस्रों घने दुध की गोएं दूध के बहाने कलकत्ते आदि बड़े नगरों को प्रति वर्ष भेजी जाती हैं। और दूध के सूखने पर उनको खांडे की धार के हवाले कर दिया जाता है। सरकार यह सब कुछ जानती हैं किन्तु जान बूझ कर इसकी उपेक्षा करती रहती है। दयानन्द और गांधी के देश की वर्तमान सरकार टिन के डिब्बों में गोमांस बंद कर करोड़ों रुपयों का विदेशों में भिजवाती है। गो के चर्म एवं तांत का व्यापार करती है। करोड़ों रुपया उससे कमाई करना और उस धन को देश के काम में लाना निश्चय जनता का भयानक नैतिक पतन करना हैं।

बम्बई आदि नगरों में बिजली के यन्त्रों से भारी संख्या में प्रति दिन गोवध करने के निमित्त सरकार कारखाने खोल रही है और गांधी आदि पूर्वजों के नाम पर बट्टा लगा रही है।

आर्यसमाज के मंच से गोरक्षा के सम्बंध में समय समय पर प्रचार किया गया। किन्तु उसका अभी तक कोई विशेष प्रभाव न जनता पर पडा और न सरकार पर ही।

आर्यसमाज को इस दिशा में अभी सजग होकर विशेष कार्य करना होगा। कृषकों में यह भावना भरनी होगी कि वह अपने घर और घरों में गौवें को विशेष रूप से रखना अपना धर्म समझें और वृद्धा गो तथा बूढ़े बेल की रक्षा करना अपना कर्त्तव्य समझें। इन पैठों व हाटों में कसाइयों के हाथों बेची जाने वाली गो की बिक्री को रोकें। नगरों में

सम्पन्न व्यक्तियों से अनुरोध करें कि वह मोटर कारें रखने और कुत्तों को पालने की अपेक्षा गौवों के पालन को अपना प्राथमिक कर्त्तव्य समझें।

नेताओं, विधायकों, उच्च सरकारी कर्मचारियों से अनुरोध किया जाय कि वह अपने अपने यहां गौ रखना अपना राष्ट्रीय एवं साँस्कृतिक कर्त्तव्य समझें। तथा गौ रक्षा के सम्बन्ध में देश में प्रवल सामूहिक आन्दोलन उस समय तक चलाते रहना चाहिए जब तक हमारी सरकार का ध्यान इस पुनीत कार्य की ओर पूरा २ आकृष्ट न हो जाय और वह गौवध को सर्वथा बंद करने के लिये पूर्णतया क्रियात्मक रूप से कटिबद्ध न हो जाय।

१२ नवयुवकों में जाग्रति

किसी संगठन को दीर्घ जीवी बनाने के लिये यह आवश्यक है कि जाति की युवा शक्ति को जाग्रत किया जाय और संगठना में नित्य नूतन रक्त का क्रमशः समावेश किया जाय। आर्यसमाज के दूरदर्शी नेताओं ने इस तत्व को भली प्रकार समझा था। स्थान स्थान पर शिक्षणालयों में आर्य कुमार सभाओं की स्थापना की गई और छात्रों में वैदिक विचार और आचार के प्रति आस्था उत्पन्न की जाने लगी।

आर्य कुमार सभाः— सन् १९०९ ई० में इन आर्य कुमार सभाओं को संगठित करने की ओर पग बढाया गया और धार्मिक परीक्षाओं की व्यवस्था की गई। श्री प्रो० सुधाकर एम० ए० श्री बलभद्र जी एवं प्रो० सिद्धेश्वर जी एम० ए० इस कार्य के करने में अग्रसर हुए। प्रो० मुंशीराम जी एम० ए० कानपुर, प्रिन्मिपल सूर्यदेव जी एम० ए० अजमेर ने धार्मिक परीक्षाओं की योजना में विशेष परिश्रम किया।

भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् की स्थापना की गई। और भारतवर्ष में जहां जहां आर्य कुमार सभाएं बन चुकी थीं, उनको इस परिश्रद् से संबंधित किया गया। प्रतिवर्ष परिषद् का अधिवेशन देश के विभिन्न नगरों में किया जाने लगा। आर्यसमाज के बड़े२ गण्य मान्य नेता इस परिषद् की अध्यक्षता करते रहे।

उत्तरप्रदेश के यशस्वी आर्य नेता महात्मा नारायण स्वामी जी, पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय एम० ए०, पं० विष्णुभास्कर केलकर एम० ए०, पं०

गंगाप्रसाद जी रिटायर्ड चीफ जज टिहरी एवं स्वामी ध्रुवानन्द जी सरस्वती ने इस परिषद् की अध्यक्षता की है।

उत्तरप्रदेश में लगभग ५० स्थानों पर इस समय आर्य कुमार सभाएं स्थापित हैं। इन का अपना प्रान्तीय संगठन भी है जिसका प्रति वर्ष अधिवेशन प्रान्त के भिन्न२ नगरों में होता है। प्रान्त के अनेक आर्य शिक्षणालयों में धार्मिक परीक्षा की व्यबस्था चल रही हैं। इस दिशा में आर्यसमाज को सदा सजग रहना चाहिए और नवयुवकों के संगठन को उदारता पूर्वक सहयोग प्रदान करते रहना चाहिये।

आर्यवीर-दलः—नवयुवकों में जनसेवा की भावना को प्रबुद्ध करने की दृष्टि से आर्यवीर दल के नाम से स्वयं सेवकों की सँगठित करने का भी उपक्रम सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा की ओर से किया गया। आर्यवीर दल का सार्वदेशिक संगठन स्थापित किया गया। श्री ओंप्रकाश जी पुरुषार्थी ने इस दिशा में मौलिक कार्य किया है।

उत्तरप्रदेश में अनेक स्थानों पर आर्यवीर दल की शाखाएं स्थापित हुई। जो बड़े उत्साह से जन सेवा के कार्य में संगग्न रहीं। समय समय पर शिक्षण शिविर भी चालू किए गये और भारी संख्या में नव युवकों को आर्य सिद्धान्तों का बोध कराने के साथ-साथ क्रियात्मक, रूप में शारीरिक व्यायाम का पाठ पढ़ाया गया तथा जन सेवा की पुनीत भावना उनमें जाग्रत की गई। प्रान्तीय आर्यवीर दल के संचालन में श्री बा० उमाशंकर जी फतेहपुर, श्री ईश्वरदयालु जी आर्य बिजनौर आदि ने सराहनीय कार्य किया है।

खाकसार आन्दोलन के अवसर पर पूज्य महात्मा गांधी जी की प्रेरणा एवं बा० घनश्याम सिंह गुप्त के आदेश पर इतिहास के लेखक को सार्वदेशिक आर्यवीर दल का संचालक बनकर विशेषरूप मे इसी उत्तर प्रदेश में आर्य दल शिक्षण शिविर चलाकर एवं प्रान्त के कोने कोने में सुदृढ़ आर्यवीर दल संगठित कर खाकसारों का सामना करने के लिये पूरी तैयारी करने का अवसर प्राप्त हुआ। उस समय उत्तरप्रदेश में १५००० के लगभग आर्यवीर दल के सैनिक संगठित किये गये थे और लाहौर में यदि सर सिकन्दर हयातखां इन खाकसारों की कमर न तोड़ देता तो इसी आर्यवीर दल को इस शुभ कार्य को करने का शुभ अवसर उपलब्ध होता। प्रान्त के अन्दर ग़ाजियाबाद आदि

कतिपय स्थानों पर आर्यवीर दल प्रशंसनीय कार्य कर रहा है। शिक्षण शिविरों की योजना कर नवयुवकों को तैयार करने के कार्य में जुटा हुआ है।

आर्यवीर दल की अपनी मौलिक उपादेयता है और आर्यवीर दल के अतिरक्ति अन्य स्वयं सेवक संगठनाएं उसकी पूर्ति कर नही सकतीं। अतः आर्य समाज को इस पुण्य कार्य को प्रगति देने में कभी शिथिलता नहीं प्रदर्शित करनी चाहिये।

प्रान्तीय आर्यवीर-दल

इउ स्थल पर उत्तरप्रदेशीय आर्यवीर दल का संक्षिप्त परिचय देना भी अनुचित न होगा। प्रान्तीय आर्यवीर दल की स्थापना अपने प्रान्त में सन् १९२० ई० को की गई। कार्य गति से आगे बढ़ने लगा। सन् १९३०-३१ई० के स्वराज्य आन्दोलन में आर्य नवयुवक भारी संख्या में संलग्न हो गये और आर्यवीर दल की गति स्वभावतः मन्द पड़ गई। सन् १९४२ ई० के आरम्भ में श्री पं० रुद्रमित्र शास्त्री ने प्रांतीय आर्यवीर दल की बागडोर संभाली। प्रान्त में दोरा करके स्थान स्थान पर शाखाएं खोली गई।

श्री ईश्वरदयालु जी सभा की ओर से दल के अधिष्ठाता नियुक्त हुए। श्री रामसिंह आर्य, श्री महादेवप्रसाद एवं श्री रघुवरदयालु आर्य दल के शिक्षक नियुक्त किए गए। सन् १९४२ई० का स्वाधीनता समर आते ही आर्थ नवयुवकों ने अपनी शक्ति उसमें पुनः जुटादी। भारत विभाजन के अवसर पर सहारनपुर, विजनौर, मेरठ, मुज़फ्फर नगर, वुलन्दशहर, मुरादा बाद, कानपुर, देहरादून आदि जिलों में आर्य वीरों ने पंजाब से आने वाले पुरुषार्थी बन्धुओं की महत्वपूर्ण सेवा की।

महात्मा गांधी जी की हत्या के कारण राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ पर सरकार की कोप दृष्टि पड़ी और उसका फल आर्यवीर दल को भी कुछ काल के लिये भुगतना पड़ा। सरकार ने शीघ्र ही आर्यवीर दल पर से अपनी पावन्दी हटाली और श्री पं० विश्वबन्धु जी शास्त्री, के संरक्षण में आर्यवीरदल पुनः प्रगतिशील बन गया। श्री लक्ष्मणकुमार शास्त्री, श्री सुखदेव शास्त्री एवं श्री देवीप्रसाद आर्य श्री राम सिंह एम०ए० ने क्रमशः आर्यवीर दल के कार्य को संगटित करने में महत्वपूर्ण योगदान किया।

आर्यवीर दल को बलशाली बनाने वालों में श्री शन्नोलाल शर्मा मुरादाबाद, श्री अवधविहारीलाल खन्ना काशी, श्री रामरंजन पाण्डेय कानपुर, श्री विश्वनाथ आर्य- वीर मेरठ, श्री रघुनाथसिंह आर्य सीतापुर, श्री वीरेन्द्र जी अमरोहा, श्री विद्यानन्द जी मिर्जापुर, श्री वेदप्रकाश आर्य हरदोई, श्री भैरोदत्त जी रिसर्च स्कालर लखनऊ, श्री नैपाल सिंह, श्री देवदत शास्त्री, तथा श्री संतोषकुमार जी के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। वर्तमान संचालक श्री वेदप्रकाश आर्य एम०ए० लखनऊ हैं।

१३ स्त्री शिक्षा एवं मातृ शक्ति उब्दोधन

शिक्षा :—ऋषि दयानन्द के आगमन से पूर्व रूढ़िवादिता के पुजारियों द्वारा घर घर "स्त्री-शूद्रौ नाधीयाताम्" की रट लगाई जारही थी स्त्रियों को शूद्रों के समान वेद मंत्र सुनने का भी अधिकार न था। फिर वेद की पढ़ाने की तो बात ही क्या ?

कन्याओं को किसी भी प्रकार की शिक्षा देना पाप समझा जाता था। जाति के आधे अंग को निपट मूढ़ रखने में ही उस समय के रूढ़िवादी अपना कल्याण समझते थे।

बृटिश शासन काल में ईसाई मिशनों ने स्थान २ पर कन्या पाठशालाएँ खोलकर बालिकाओं को शिक्षा देना आरम्भ कर दिया था और आर्य धर्म एवं संस्कृति से उनको प्रथक रखने का कुचक्र रचा जाने लगा था।

ऐसे विकट समय में युग-प्रवर्तक-ऋषि दयानन्द का इस देश में आगमन हुआ। ऋषि ने नारी जाति के अधिकारों की घोषणा की और स्पष्ट बतलाया कि इनको वेद शास्त्रादि की शिक्षा प्राप्त करने का पूर्ण अधिकार है।

ऋषि निर्वाण के उपरान्त आर्यसमाज ने कन्या शिक्षणालय स्थापित करने आरम्भ कर दिये और देश के कोने २ में कन्याओं की उच्च शिक्षा तक की पूर्ण व्यवस्था की जाने लगी। जहाँ आर्यसमाज द्वारा अनेक कन्या गुरुकुलों की स्थापना हुई वहां 'आधुनिक प्रणाली से चलने वाले अनेकों उच्चतर माध्यमिक, उच्च माध्यमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों तथा प्रारम्भिक कन्या पाठशालाओं का भी चारों ओर जाल पुर गया।

उत्तर प्रदेश में सम्प्रति आर्य समाज के तीन कन्या गुरुकुल महाविद्यालय चल रहे हैं। जिनका वर्णन पाठक अन्यत्र पढ़ेंगे। इसी प्रकार सभा से सम्बन्धित प्रान्त में १७ उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, १८ उच्च माध्यमिक तथा १९ माध्यमिक कन्या पाठशालाएँ इनसे प्रथक चल रही हैं। इनके अतिरिक्त प्रान्त में और भी अनेक आर्य कन्या पाठशालाएँ है जिनका सम्बन्ध अभी तक आर्य प्रतिनिधि सभा के शिक्षा विभाग से नहीं जुड़ पाया है।

उब्दोधन :—आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने पौराणिक काल की धार्मिक एवं सामाजिक रूढ़ियों तथा मान्यताओं में जकड़ी हुई नारी जाति का उद्धार किया। जिनको जन्म से ही सदोषा समझाजाता था और जिनके साथ पशुवत् व्यवहार किया जाना शास्त्र सम्मत माना जाता था तथा यज्ञोपवीत, पंच-यज्ञ, वेदपाठ आदि से जिन को सर्वथा बंचित किया हुआ था ऋषि दयानन्द ने वेद शास्त्रों के ही प्रकाश में उनको शिवा, कल्याणी, गृह-लक्ष्मी एवं अदोषा प्रतिपादित किया तथा पंच-यज्ञ-षोडश संस्कार, एवं वेद पढ़ने पढ़ाने का पूर्ण अधिकार दिलाया।

भारतीय संस्कृति की दृष्टि में नारियाँ निश्चय ही समानाधिकारिणी हैं उत्तमांगी हैं, महा पुरुषों की जननी होने से सतत पूजनीया हैं। ऋषि दयानन्द ने स्वसंस्कृति के मर्म को हृदयंगम कर इस क्षेत्र में भी महान् क्रान्तिकारी कार्य किया है। देश की स्वाधीनता तथा नाना प्रकार के सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रों में भी ऋषि की अनुकम्पा से देवियों ने आगे बढ़कर प्रशंसनीय कार्य किया।

आर्यसमाज ने जहाँ स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में अगुवा बन कर कार्य किया वहाँ नारियों को संगठित करने की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण कार्य किया है।

आर्य प्रतिनिधिसभा ने अपने आरम्भ,काल से ही महिला-प्रचार-मंडल की स्थापना की हुई है। इस मंडल द्वारा प्रान्त के विभिन्न भागों में स्त्री आर्यसमाज स्थापित किये गये जिनका सीधा सम्बन्ध आर्यप्रतिनिधि सभा से है और इन स्त्री समाजों को वह सब अधिकार प्राप्त हैं जो पुरुषों के आर्यसमाजों को उपलब्ध हैं।

सभा के अधिवेशनों में पर्याप्त संख्या में देवियाँ प्रतिनिधि बन कर सम्मिलित होतीं और प्रान्तीय स्तर पर कार्य करती हैं।

प्रांत में जिन देवियों ने महिला जगत् में विशेष कार्य किया है वा कर रही हैं उनकी तालिका निम्न प्रकार हैं :—

१. माता लक्ष्मीदेवी जी संचालिका कन्या गुरुकुल हाथरस २. माता हीरा-देवी जी संचालिका नायक बालिका आश्रम मेरठ ३. माता कलावती देवी जी प्रयाग ४ श्री प्रेमसुलभा यती वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर, ५. श्रीमती शकुंतला गो-यल पूर्व उपप्रधाना आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश एवं उप मंत्रिणी सार्वदेशिक सभा, मेरठ, ६. कुमारी सत्यभामा जी स्त्री सुधार विद्यालय बरेली। ७. माता प्रियम्बदादेवी जी पूर्व उप-प्रधाना आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश हरदोई। ८. श्रीमती अक्षयकुमारी जी शास्त्री, प्रभाकर आचार्या एवं मुख्याधिष्ठात्री कन्या गुरुकुल हाथरस। ९. श्रीमती प्रभावती जी स्नातिका गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी १०. श्रीमती स्नातिका सौभाग्य कुमारी जी कन्या गुरुकुल हाथरस। ११. श्रीमती चंद्रावती लखनपाल हरिद्वार, १२. श्रीमती गार्गीदेवी जी मेरठ, १३. श्रीमती शकुन्तला देवी जी सदर मेरठ, १४. श्रीमती सावित्री देवी जी लाल कुर्ती मेरठ, १५. श्रीमती कृष्णादेवी जी झांसी, १६. श्रीमती क्षेमलता देवी जी अलीगढ़ १७. श्रीमती शोभावती जी हल्द्वानी (नैनीताल) १८. श्रीमती पुष्पादेवी जी वाराणसी, १९. श्रीमती विद्यावती जी कानपुर। २०. श्रीमती स्वर्णलता देवी जी देहरादून। २१. श्रीमती सुखदादेवी जी देहरा-दून २२. श्रीमती सावित्री देवी जी मुजफ्फरनगर २३. श्रीमती डाक्टर प्रकाश वती जी महोपदेशिका, लखनऊ २४. श्रीमती माता जगधात्री देवी जी एटा। २५. श्रीमती राजरानी जी मुजफ्फरनगर, २६. श्रीमती हरदेवी जी हाथरस। २७. श्रीमती दुर्गादेवी जी अलीगढ़, २८. माता सुखदा देवी जी हल्द्वानी, २९. श्रीमती शीलादेवी जी हल्द्वानी (नैनीताल) ३०. श्रीमती यशोदा देवी जी सहारनपुर ३१. श्रीमती श्यामादेवी जी, ३२. श्रीमती अक्षयादेवी जी ३३. श्रीमती राजकली देवी जी आदि।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश को अपनी स्थापना के पश्चात् एक ऐसे पत्र की आवश्यकता प्रतीत हुई जो उसकी सूचनाओं और विज्ञप्तियों को प्रकाशित करता रहे और आर्य सिद्धान्त का प्रचार करता हुआ वैदिक धर्म बिरोधी लेखों तथा पुस्तकों के उत्तर भी देता रहे। इस प्रकार का पत्र १८९८ ई० में 'मुहर्रिक' नाम से उर्दू में सभा कार्यालय की ओर से प्रकाशित किया गया। उस समय सभा का कार्यालय मुरादाबाद में था। सभा के प्रधान मंत्री श्री नारायण प्रसाद जी (महात्मा नारायण स्वामी जी) उस समय मुरादाबाद में ही रहते थे। वे ही मुहर्रिक के जन्म दाता और आदि संपादक रहे। सन् १८९९ ई० में सभा का यह मुखपत्र हिन्दी में कर दिया गया और उसका नाम 'आर्यमित्र' रखा गया। सन् १९०४ ई० में सभा के आदेशानुसार श्री भगवानदीन जी मिश्र द्वारा प्रदत्त आर्य भास्कर प्रेस मुरादाबाद से आगरा स्थानान्तरित हो गया और फिर वहीं से सन् १९४० ई० तक आर्य मित्र प्रकाशित होता रहा। आरंभ में श्री मुंशी प्राणसुख जी और बाबू भोलानाथ जी मित्र के अवैतनिक प्रबन्धक रूप में अच्छी सेवा करते रहे। जब पत्र आगरा आया तब ग्राहक संख्या ३३५ थी। सभा का कार्य अधिक बढ़ जाने पर पत्र के संपादक का कार्य श्री पं० बदरीदत्त जी जोशी ने सम्हाल लिया। कुछ समय के पश्चात् सम्पादकों की नामावली इस प्रकार परिवर्तित होती रही :—

१—श्री पं० सूर्य प्रसाद जी शर्मा, २ श्री कुँवर हुकुम सिंह जी "अवैतनिक" ३—श्री पं० रुद्रदत्त जी सम्पादकाचार्य (तीनवार) ४—श्री पं० नन्दकुमार देव जी शर्मा, ५—श्री ठाकुर सूर्य कुमार सिंह जी, ६—श्री पं० भवदत्त जी शास्त्री, ७-श्री पं० बाबूराम जी शर्मा, ८—श्री पं० शिवशङ्कर जी काव्यतीर्थ। उपर्युक्त सभी महानुभावों की सेवाएँ मित्र के लिये गौरव का कारण रही हैं। विशेष कर पं० रुद्रदत्त जी के सम्पादन कार्य से मित्र का स्थान हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ पत्रों में गिना जाने लगा। उनके पश्चात् मित्र के सम्पादक हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक श्री पं० लक्ष्मीधर जी बाजपेयी "श्री सर्वानन्द जी" ने सन् १९१५ इ० तक पत्र की ख्याति को बनाये रखने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

सभा के प्रचार मिशन और आर्थिक प्रश्नों के कारण मित्र सदैव संकट से ही गुजरता रहा। प्रभु ने मित्र की रक्षा और उन्नति के लिये ऐसे समय में एक सबल सहायक मित्र को प्रदान किया। श्री पं० घासीराम जी व श्री सेठ मदन मोहन जी के विशेष आग्रह पर श्री पं० हरिशङ्कर जी शर्मा ने प्रथम वार आर्य मित्र का सम्पादक पद स्वीकार किया और सन् १९१९ तक इस पद पर रहे।

सन् १९१९ ई० में गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन के प्रथम स्नातक श्री पं० धर्मेन्द्र नाथजी तर्कशिरोमणि सम्पादक बने। उन्होंने मित्र की उन्नति में पर्याप्त योगदान दिया। उनके शिक्षा विभाग में चले जाने पर मित्र के सम्पादन के लिये योग्य व्यक्ति की खोज आरम्भ हुई, सभा के अधिकारियों की दृष्टि फिर श्री पं० हरिशङ्कर जी की ओर हुई। इस समय वे श्री शिवप्रसाद जी बनारस निवासी के साथ अपनी विश्व यात्रा की पूर्ण तैयारी कर चुके थे। जब शंकर परिवार को मित्र के संकट की सूचना श्री पं० घासी राम जी व श्री सेठ मदन मोहन जी ने दी तब धर्म प्राण श्रद्धास्पद श्री पं० नाथूराम शंकर शर्मा ने सभा के संकट को धार्मिक संकट समझ कर श्री शर्मा जी को विश्वयात्रा से रोककर मित्र की सेवा करने को भेज दिया। सन् १९२३ के युग में विश्व यात्रा का मोह छोड़कर हिन्दी व आर्यसमाज की सेवा का व्रत लेकर शर्मा जी मित्र के सम्पादक बन पुनः आगरा पहुंच गये और निरन्तर १२ वर्ष तक मित्र की सेवा में संलग्न रहे। आपके सम्पादकत्व में सन् २५ में जन्म शताब्दी के अवसर पर मित्र कुछ दिन के लिये दैनिक रूप में भी

निकला। मित्र को हिन्दी में उच्च स्थान दिलाने तथा सामाजिक, धार्मिक एवं राजनैतिक तथा साहित्यिक सभी क्षेत्रों में मित्र की महत्ता स्थापित करने में शर्मा जी की लेखनी ने जादू का सा कमाल दिखाया। उपन्यास सम्राट् श्री प्रेमचन्द्र जी व नागरी प्रचारिणी सभा आदि ने आपके सम्पादकत्व में प्रकाशित आर्यमित्र को हिन्दी का श्रेष्ठतम पत्र घोषित किया।

इस काल में आर्य विद्वानों और नेताओं के अतिरिक्त सर्व श्री राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त, अयोध्या सिंह जी उपाध्याय, प्रेमचन्द्र, कविवर सनेही, बालकृष्ण शर्मा नवीन, गणेश शंकर विद्यार्थी, रत्नाकर, अम्बिका प्रसाद बाजपेयी, पीर मुहम्मद मूनिस, अध्यापक जहूरबख्श, चकबस्त, वासुदेव शरण अग्रवाल, आदि के लेख तथा रचनाएँ भी मित्र में छपती रहीं, इस युग में मित्र की विशेषांक परम्परा ने विशेष ख्याति प्राप्त की। ऋष्यंक बोधरात्रि अंक, जन्म शताब्दी अंक स्मरणीय साहित्य के रूप में प्रसिद्ध हैं। बाद में भी वेदांक ईसाई मत समीक्षांक, शिक्षांक आदि निकलते रहे हैं।

तत्कालीन अधिष्ठाता का आर्य मित्र से मतभेद होने के कारण सन् १९३४ में शर्मा जी ने सम्पादक पद से त्याग पत्र दे दिया। यह घड़ी मित्र के जीवन की सबसे अधिक अशुभ घड़ी थी। सभा को उनकी सेवाओं से वंचित होना पड़ा परन्तु मित्र के प्रति उनका स्नेह और आशीर्वाद सदैव बना रहा और आज भी बना हुआ है। सुप्रसिद्ध साहित्यकार सम्पादकाचार्य श्री पण्डित बनारसी दास जी चतुर्वेदी एम. पी. एवं डाक्टर सत्येन्द्र जी एम. ए हिन्दी विद्यापीठ, आगरा विश्व विद्यालय, आगरा आदि समय समय पर सम्पादन में महत्वपूर्ण योग देते रहे। श्री पण्डित रामस्वरूप जी शास्त्री काव्यतीर्थ, श्री जगनलाल जी गुप्त. श्री पं० मङ्गलदेव जी शर्मा, श्री रामचन्द्र जी श्रीवास्तव एम. ए. आदि सज्जन भी सहायक संपादक रूप में मित्र की उन्नति में योग देते रहे। श्री हरि शङ्कर जी के त्यागपत्र ने मित्र को संकट में डाल दिया। उस समय श्री मधुसूदन जी, चतुर्वेदी एम. ए. वर्तमान संपादक कल्पना हैदराबाद, श्री प्रोफेसर बाबूराम जी गुप्त एम. ए. 'आगरा कालेज' तथा पं० ब्राह्मानन्द जी आयुर्वेदाचार्य आदि ने संपादक पद पर कार्य किया।

सभा ने इस बीच आर्य भास्कर प्रेस और मित्र को आर्य साहित्य लिमीटेड को ठेके पर दे दिया और मण्डल के अधिकारियों की

प्रार्थना पर श्री पं० हरिशंकर जी शर्मा ने पुनः इसका सम्पादन किया। परन्तु थोड़े समय पश्चात् उनकी सेवाओं से मित्र को वंचित होना पड़ा। ऐसे समय में मण्डल ने मित्र के लिये श्री जयदेव शर्मा वेदालंकर "वेदभास्कर" की सेवायें प्राप्त की और वे सम्पादन करते रहे। उनके समय में वेद संबन्धी शास्त्रीय लेखों की विशेष चर्चा रही।

सन् ४१ में प्रेस और मित्र सभा कार्यालय के साथ नारायण स्वामी भवन. ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ में चला गया। वहाँ श्री ऋषिदेव जी विद्यालंकार, श्री पं० आर्येन्द्र जी वेदशिरोमणि एम. ए, श्री प्रो० भगवान् प्रसाद जी एम. ए., श्री पं२ नरेन्द्र नाथ जी शास्त्री आ० शिरोमणि एम. ए., श्री कार्येन्द्र जी शास्त्री आदि ने सम्पादक रहकर मित्र की उन्नति में योग दिया। सन् ४६ की जनवरी में मित्र का सम्पादन भार श्री पं० उमेश चन्द्र स्नातक एम. ए. ने सम्हाला।

श्री सेठ मदन मोहन जी व श्री प्रिन्सीपल महेन्द्र प्रताप जी शास्त्री एम. ए. के विशेष आग्रह पर शर्मा जी ने मित्र का अवैतनिक सम्पादक बनना स्वीकार कर लिया ओर मित्र का सम्पादकीव विभाग आगरा पहुंच गया। पं० उमेशचन्द्र जी श्री पं० बाबूराम जी एम. ए. "भू० पू० सम्पादक" और श्री पं० प्रबोधचन्द्र जी शास्त्री श्री पं० हरिशंकर शर्मा जी को सम्पादन में विशेष सहयोग देते रहे।

इस बीच आर्य मित्र को बलशाली और स्थायी बनाने के लिये एक आर्य मित्र प्रकाशन लिमीटेड का निर्माण आरम्भ हुआ और मित्र का सम्पादन लखनऊ से ही होने की व्यवस्था की गयी। श्री पं० धर्मपाल जी विद्यालंकार ने अवैतनिक सम्पादक के रुप में कार्य को सम्हाला और मित्र को उन्नत बनाने तथा कम्पनी को स्थापित करने में सहयोग दिया। श्री पं० रामदत्त जी शुक्ल ने भी सम्पादकीय सह योग देकर मित्र को प्रगति दी।

इस समय सन् '५० तक कम्पनी की स्थापना हो चुकी थी, और सभा ने अपने प्रेस की सम्पत्ति व मित्र की गुडविल को कम्पनी के स्थायित्व के लिये सम्वन्ध कर दिया था। सभा कम्पनी की भागीदार बन गयी थी। और मित्र मम्पनी की ओर से प्रकाशित होने लगा। मुख्य समस्या सम्पादन की थी। एक बार फिर सभा और कम्पनी के आग्रह पर श्री पं० हरिशंकर

जी शर्मा ने मित्र का सम्पादक पद स्वीकार कर लिया। इस समय स्व० श्री पं० यज्ञ दत्त शर्मा और उमेश चन्द्र जी को पुनः मित्र की सेवा का अवसर प्राप्त हुआ। पर कम्पनी की गाड़ी बीच में ही अटक गयी और सन् ५३ में उसका काम शिथिल पड़ गवा। श्री शर्मा जी ने कार्य से मुक्त होने की प्रार्थना कम्पनी से की। कम्पनी ने सखेद मित्र का सम्पादकीय विभाग लखनऊ बुलो लिया और वहाँ श्री पं० गोपाल दत्त जी शास्त्री, विद्याभास्कर सम्पादक पद पर कार्य करते रहे।

कम्पनी ने प्रेस और मित्र को सभा को ही वापिस कर दिया! इस समय मित्र को एक गहरा आघात पहुंचा पर आर्य बन्धुओं के उत्साह और सहयोग ने मित्र के इतिहास में एक नवीन मोड़ उत्पन्न कर दिया। इस समय श्री भारतेन्द्रनाथ जी आर्यमित्र के सम्पादक नियुक्त हुए तथा सभा की ओर से श्री बाबू कालीचरण जी आर्य तत्कालीन अधिष्ठाता आर्य मित्र व मन्त्री सभा के प्रयत्नों से मित्र को दैनिक करने का आन्दोलन आरम्भ हुआ। सभा के निश्चयानुसार साप्ताहिक के साथ साथ दैनिक मित्र भी निकला। आर्यजगत् में घूम मच गयी और मित्र की माँग और प्रतिष्ठा बढ़ी। दस मास तक दैनिक मित्र एक परीक्षण की स्थिति में रहा। खेद है कि यह परीक्षण आर्थिक दृष्टि से बहुत महँगा पड़ा और दैनिक का प्रकाशन बन्द करना पड़ा।

इस परीक्षण ने मित्र को गहरे आर्थिक सङ्कट में डाल दिया जिससे अभीतक मित्र मुक्त नहीं हो सका है। फिर भी इस सङ्कट काल में श्री पं० शिवदयालु जी सभा मन्त्री ने बड़ी योग्यता पूर्वक सम्पादक का कार्य सम्हाला और मित्र के मिशन को आगे बढ़ाया।

सन् ५८ में मई मास में श्रद्धेय श्री पं० हरिशंकर जी शर्मा के सभा-प्रधान निर्वाचित होने पर उनके आदेशानुसार तीसरी बार मित्र की सेवा का कार्य श्री उमेश चन्द्र जी स्नातक ने सम्हाला।

समय समय पर मित्र के प्रबन्धकर्त्ता 'अधिष्ठाता' अनेक महानुभाव रहे जिनके प्रति मित्र परिवार सदैव आभारी रहेगा उनमें से कुछ इस प्रकार है श्री बाबू शालिग्राम जी, श्री बाबू नाथमल जी, श्रीधर्मेन्द्र नाथ जी शास्त्री, श्री बाबू पूर्णचन्द्र जी प्रधान सार्वदेशिक सभा, श्री बाबू शोभाराम जी, श्री

डा० मिट्ठन लाल जी, श्री बाबू श्रीराम जी श्री मथुरा प्रसादजी श्री कर्णसिंह छौंकर, श्री शिवहरे, श्री रतनलाल जी, श्री पं० रासबिहारी जी तिवारी, श्री पं० भृगुदत्तजी तिवारी, श्री पं० रामदत्त जी शुक्ल, एम. ए., श्री बाबू कालीचरण जी आर्य, श्री बाबू मोहन लाल जी आर्य श्री रामजी प्रसाद जी गुप्त, श्री ठा० फूलन सिंह जी, श्री पं० प्रेमचन्द्र जी शर्मा एम. एल. सी. वर्तमान अधिष्ठाता व मन्त्री सभा जिनके विशेष प्रयत्न से मित्र हीरक जयन्ती महोत्सव मनाने में समर्थ हुआ है। आगरा के लाला जगनलाल जी की सेवामें प्रबंध में बड़ी सहायक रहीं, श्री नारायण गोस्वामी जी के मित्र के साथ चालीस वर्ष से सम्बंध चले आ रहे हैं और वह आज भी मित्र की सम्पूर्ण व्यवस्था को सम्हाले हुए हैं।

आर्य मित्र आर्य प्रतिनिधि सभा का ही नहीं आर्य समाज मात्र का सच्चा सेवक है। सैकड़ों उपदेशकों तथा प्रचारकों द्वारा भी जो कार्य सम्भव नहीं उसे मित्र प्रति सप्ताह करता रहता है। आर्य सिद्धांतों के मण्डन और वेद बिरोधी विचारों के खण्डन पर इसका सदैव लक्ष्य रहा है। आर्य समाज संबंधी अनेक आंदोलनों के सफल बनाने में आर्य मित्र सदैव अग्रणी रहा है। भारतीय संस्कृति के समुद्धार समर्थन और संवर्द्धन में आर्य मित्र अपना गौरवपूर्ण स्थान रखता है।

१५ आर्य आश्रम

उत्तर प्रदेश में आर्य संन्यासियों एवं बानप्रस्थियों के निवास तथा साधना के निमित्त अनेक आश्रम संस्थापित हैं। इनमें से जिनके परिचय उपलब्ध हो सके हैं उनका संक्षिप्त परिचय यहाँ अंकित किया जाता है।

१—आर्य बिरक्त (वानप्रस्थ संन्यास) आश्रम-ज्वालापुरः—आर्य समाज के महान् तपस्वी विद्वान् कर्मठ नेता श्रद्धेय महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज ने भागीरथी के रम्य तट पर सं० १९८५ वि० में इस आश्रम की स्थापना की थी। यह आश्रम शनैः-शनैः बढ़कर अब एक अखिल भारतीय महत्व की संस्था बन गई है।

आश्रम के निमित्त २१ बीघा १० विस्वा (पक्की) भूमि क्रय करके उसकी रजिस्ट्री आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के नाम कर दी गई थी। बाद में और भी भूमि उपलब्ध की गई, जो बढ़कर ४५ बीघा पक्का हो गई।

आरम्भ से लेकर सं० २००३ वि० तक पूज्य महात्मा नारायण स्वामी जी इस आश्रम के संचालक रहे। उनके निधन पर स्वामी वेदानन्द जी तीर्थ इसका संचालन करते रहे। और उनका देहावसान होने पर सीधे आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश इसका संचालन करती आ रही है। सभा की ओर से प्रति वर्ष इसका एक अध्यक्ष नियुक्त किया जाता है जो आश्रम की सर्वगति विधियों पर दृष्टि रखता है।

आश्रम में पुरुषों, महिलाओं तथा दम्पतियों के निवास के लिये प्रथक-प्रथक कक्ष निर्धारित हैं।

आश्रम के अपने विशाल सत्संग-भवन, यज्ञशाला, औषधालय, पुस्तकालय हैं। तथा २०० से ऊपर पक्की कुटियाएँ अब तक बन चुकी हैं। इस आश्रम के निर्माण में श्री पं० वेदमित्र जी जिज्ञासु ने सर्वाधिक दान देकर यज्ञशाला व सत्संग भवनादि का निर्माण कराया।

आश्रम में एक भव्य दयानन्द स्तूप निर्मित किया गया है। तथा वैदिक साहित्य प्रकाशन संस्थान की भी स्थापना की गई है। जिसका संचालक इस इनिहास का लेखक ही है।

आश्रम में प्रति दिन दोनों समय यज्ञ, मौन एवं सत्संग की व्यवस्था रहती है। लगभग सौ संन्यासी एवं वानप्रस्थी तो यहाँ हर ऋतु में रहते ही हैं। ग्रीष्म ऋतु में यह संख्या बढ़कर २५० तक पहुंच जाती है।

२. नारायण आश्रम रामगढ़ (नैनीताल)—इस आश्रम की स्थापना भी पूज्य महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज ने ही अपने संन्यास आश्रम की तैयारी के समय में की थी। रामगढ़ के इस रम्य पार्वत्य प्रदेश में रहकर महात्मा जी ने विशेष यौगिक साधनाएँ की थीं। तथा यहीं बैठकर उन्होंने अनेकों उत्तम उत्तम ग्रन्थों का निर्माण किया था।

इस आश्रम में अनेकों कुटियाँ हैं। श्री पं० गंगा प्रसाद जी रिटायर्ड चीफ जज ने भी यहाँ एक बड़ी कुटिया बनवाई थी। और पर्याप्त समय तक स्वामी जी के पास आप रहे भी हैं।

आश्रम में स्वामी जी महाराज का एक उच्चकोटि का वैदिक पुस्तकालय है जिसमें लगभग २००० ग्रन्थों का संग्रह किया गया था। आश्रम का अपना एक सुन्दर फलों का उद्यान भी है। श्री स्वामी जीवन मुनि जी महात्मा जी के अनन्य भक्तों में से हैं जिन्होंने उनके समय में और उनके निधन के उपरांत गतवर्ष तक इस आश्रम की पूर्ण मनोयोग से सेवा कीं है। अत्यन्त बृद्ध और रुग्ण रहने के कारण अब जीवनमुनि जी वानप्रस्थाश्रम में निवास करने लगे हैं।

आश्रम के प्रबन्ध के लिये प्रति वर्ष आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश की ओर से एक अध्यक्ष की नियुक्ति की जाती है। और उस ही की देख रेख में आश्रम का सब कार्य चलता है। सम्प्रति इसके अध्यक्ष श्री विद्यारत्न जी वकील हलद्वानी हैं। अब आश्रम तक पक्की सड़क बन गई है और बस वहां तक पहुंचने लगी है।

३. हरदुआ गंज साधु आश्रम-अलीगढ़ :—यह आश्रम आर्य जगत् के अत्यन्त वीतराग, त्यागमूर्ति महान् सन्त स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज की अमर कृति है। पूज्य स्वामी जी ने इस आश्रम की स्थापना सन् १९१० ई० में कालिन्दी नदी के तट पर हरदुआगंज के निकट की थी, जो हरदुआगंज स्व० कवि सम्राट् पं० नाथूराम शंकर जी की पुण्य जन्मभूमि है।

नवयुवक साधु संन्यासियों को आर्यसमाज की दीक्षा देना और उनको यहाँ रखकर शिक्षित करना इस आश्रम का विशेष लंक्ष्य रहा है। अनेक साधु संन्यासियों को यहां शिक्षा देकर स्वामी जी ने उनको आर्यसमाज के प्रचार क्षेत्र में उतारा है।

आश्रम के संस्कृत महाविद्यालय में नवयुवकों की शिक्षा का भी यहाँ प्रबन्ध रहा है। श्री स्वामी ध्रुवानन्द सरस्वती, स्वामी ब्रह्मानन्द दंडी, पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, पं० शिवकुमार शास्त्री, पं० विश्वबन्धु शास्त्री, एम० ए० संचालक सर्वदानन्द आश्रम होश्यारपुर, पं० राम सहाय जी शान्त, पं० सुरेन्द्र शर्मा गौड़, श्री ओंकार प्रणव शास्त्री, श्री नरोत्तम शास्त्री, श्री महावीर आचार्य, श्री सत्येन्द्र नाथ शास्त्री, श्री रामवीर शर्मा एम० ए० आचार्य, श्री विश्वबन्धु भरतपुर आदि जैसे प्रकांड विद्वान् इसी आश्रम की देन हैं।

आश्रम में सम्प्रति एक सुन्दर संस्कृत शिक्षणालय चल रहा है। जिसमें शास्त्री तक के शिक्षण की व्यवस्था है। छात्रों का जीवन तप एवं संयम से संयुक्त रहता है। नाम को यह संस्कृत विद्यालय है किन्तु यथार्थ में तो यह एक आदर्श गुरुकुल ही है।

४. वैदिक आश्रम अलीगढ़ :—इस आश्रम की स्थापना अब से लगभग ६० वर्ष पूर्व की गई थी। यह आश्रम आर्य विद्वानों को तैयार करने की दृष्टि से अपना एक विशेष महत्व रखता है। यह आश्रम ठाकुर महावीर सिंह जी प्रधान आर्यप्रतिनिधि सभा मध्य भारत, ठाकुर नन्दलाल जी रिटायर्ड जज बुलन्दशहर, श्री पं० गंगा प्रसाद जी उपाध्याय एम० ए० प्रयाग, ठा० बलबीर सिंह रिटायर्ड चीफ इंजीनियर बुलन्द शहर आदि व्यक्तियों के उत्थान में साधन बना है। अपने शिक्षणकाल में यह महानुभाव यहाँ वर्षों तक निवास करते रहे हैं। इनके काल में यह आश्रम क्रान्तिकारी आन्दोलन का केन्द्र माना जाता था।

आश्रम आर्यप्रतिनिधिसभा उत्तर प्रदेश की संरक्षता में चल रहा है। श्री राम प्रसाद जी जो जिले अलीगढ़ के कर्मठ अनुभवी कार्यकर्ता हैं, इस आश्रम के अध्यक्ष हैं। आश्रम को अब दयानन्द सेवा आश्रम के रूप में विकसित करने का आयोजन किया जा रहा है।

५. मोहन आश्रम हरिद्वार :—यह आश्रम श्री लाला बल्देव सिंह जी देहरादून की दान की हुई भूमि में अनेक वर्षों से चल रहा है। आश्रम गंगा के किनारे अत्यन्त रमणीक स्थान पर स्थापित है। यह स्थान गंगा की सप्त धारा के नाम से प्रसिद्ध हैं। आश्रम में अनेक सुन्दर पक्के भवन बने हुए हैं। यहाँ भी पंजाब व उत्तर प्रदेश आदि के अनेकों विरक्त महानुभाव एवं देवियाँ निवास करती हैं।

आश्रम का प्रबन्ध एक ट्रस्ट के आधीन है। श्री महात्मा आनन्द स्वामी जी महाराज इस ट्रस्ट के प्रधान हैं, तथा श्रीमती सत्यवती सेठानी देहरादून स्व० सेठ रामकिशोर जी की धर्मपत्नी इसकी उपप्रधाना हैं। आश्रम के प्रबन्धक श्री स्वामी सच्चिदानन्द जी महाराज (पं० रेवानन्द) हैं जो गढ़वाल के रहने वाले हैं, और जिन्होंने आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का अनेक वर्षों तक उपदेशक रहकर उत्तराखंड में वैदिक धर्म की ज्योति जगाई है। सन् १९१५ मैं कुम्भ के अवसर पर महात्मा हंसराज जी ने अपने कर कमलों से आश्रम में पाखंड खंडनी पताका स्थापित की।

६. शिवाश्रम-हरिद्वार :—यह आश्रम अभी चार वर्ष हुये आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता एवं ओजस्वी वक्ता श्री स्वामी शिवानन्द जी ने हरिद्वार में जस्सा राम रोड पर स्थापित किया है।

आश्रम का भवन लगभग तैयार हो चुका है। इसको स्वामी जी ने अपने विशेष उद्योग से ३००००) से अधिक रुपया जनता से संचित कर बनाया है।

आश्रम में नित्य यज्ञ, सत्संग की व्यवस्था की जा रही है। ग्रीष्म ऋतु में आश्रम का एक विशेष उत्सव भी होता है।

१६ शिक्षा का क्रान्तिकारी कार्यक्रम

शिक्षा के क्षेत्र में महर्षि दयानन्द जी महाराज तीन बातों के प्रबल विरोधी थे :—प्रथम अनार्ष ग्रन्थों का पठन-पाठन, दूसरे विदेशी प्रणाली एवं भाव-भेष-भाषा तीसरे सह-शिक्षा।

स्वामी जी ने अपने जीवनकाल में मिर्जापुर, काशी, फर्रुखाबाद, कर्णवास आदि स्थानों में संस्कृत पाठशालाओं की स्थापना की किन्तु आर्ष ग्रन्थों को पढ़ाने वाले योग्य अध्यापकों के अभाव के कारण ऋषि ने कुछ काल बाद इन विद्यालयों को तोड़ दिया। लक्ष्य की साधने में स्वामी जी महाराज सदा सतर्क रहने वाले व्यक्ति थे उनको संस्थाओं का मोह लेश-मात्र भी नहीं सताता था।

स्वामी जी के निधन के उपरान्त आर्य पुरुषों ने शिक्षा के क्षेत्र में क्रान्तिकारी कार्य किया। स्वामी जी के परम शिष्य स्वामी दर्शनानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, स्वामी त्यागानन्द, स्वामी ब्रह्मानन्द जी दण्डी ने उत्तर प्रदेश में अनेक गुरुकुलों की स्थापना की जो पाश्चात्य प्रणाली, विदेशी भाषा-माध्यम आदि से सर्वथा दूर हैं और दासता की भावनाओं के स्थान पर पूर्ण स्वतंत्रता की उज्ज्वल भावनाओं का छात्रों में संचार करनेवाले तथा स्व-संस्कृति, स्वधर्म एवं स्वाभिमान को जाग्रत करने वाले हैं।

गुरुकुल सिकन्दराबाद

महान् दार्शनिक विद्वान् स्वामी दर्शनानन्द जी ने सर्व प्रथम गुरुकुल की स्थापना सिकन्दराबाद ज़िला बुलन्दशहर में सन् १९०४ ई० में की। इस गुरुकुल की स्थापना में श्री पं० मुरारीलाल शर्मा, पं० गंगासहाय

देवटा निवासी, पं० गंगासहाय महेवा निवासी, चौ० नत्थूसिंह जी नयागांव बसन्तपुर निवासी आदि का स्वामी जी के साथ विशेष सहयोग रहा। श्री पं० नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ, श्री पं० श्यामलाल जी गुरुकुल के प्रारम्भिक काल के अध्यापक थे। सन् १९०६ ई० में यह गुरुकुल आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के आधीन हो गया। सन् १९०८ ई० में सभा ने इसको फर्रुखाबाद स्थानान्तरित कर दिया और तीन वर्षों के उपरान्त यह वृन्दावन (मथुरा) के राजा महेन्द्रप्रताप सिंह जी के विशाल उथान में ले आया गया।

इधर स्थानीय कार्यकर्त्ताओं को संस्था का अभाव बहुत खला और उन्होंने सिकन्दराबाद गुरुकुल में नवीन छात्र प्रविष्ट कर पुनः उसको चालू कर दिया। जिसकी २४ नवम्बर १९१० ई० को स्वतन्त्र रजिस्ट्री करा दी गई। यह गुरुकुल आज दिन तक निरन्तर चल रहा है। सम्प्रति ६५ छात्र नियम पूर्वक आश्रम में रहकर विद्या अध्ययन कर रहे हैं। अब इसको प्रादेशिक सरकार ने आदर्श संस्कृत विद्यालयों की सूची में स्थान दे दिया है।

इस गुरुकुल के विकास में अनेक व्यक्तियों का हाथ रहा है। जिनमें श्री पं० मुरारीलाल शर्मा, पं० देवेन्द्रनाथ शास्त्री, पं० दिलीपदत्त उपाध्याय पं० गंगासहाय देवटा, ठा० महावीरसिंह बकील, कुंवर सुखलाल आर्य मुसाफिर- पं० महेन्द्र शास्त्री देहली व महाशय हरवंश सिंह जी आदि के नाम प्रमुख हैं।

इस गुरुकुल के कतिपय प्रमुख स्नातकों के नाम निम्न प्रकार हैं :—

१. पं० मंगलदेव जी शास्त्री, २. डा० हरिदत्त शास्त्रीएकादश तीर्थ आगरा ३. पं० शुकराज जी नैपाल शहीद ४. पं० देवेन्द्रनाथ शास्त्री, ५. आचार्य विभुदेव जी बम्बई ६. बसन्तकुमार कलाकार मद्रास ७. पं० बासुदेव शास्त्री मारीशस ८. पं० दिलीपदत्त जी उपाध्याय ९. पं० यज्ञदत्त शर्मा अजमेर १०. पं० लेखराम शास्त्री डौरली (मेरठ)।

वर्तमान प्रधानाचार्य—श्री पं० खजानदत्त शर्मा एम० ए० नव्य व्याकरणाचार्य, वेदान्ताचार्य मुख्याधिष्ठाता—श्री हरवंश सिंह जी, प्रधान—ठाकुर महावीरसिंह जी बकील बुलन्दशहर पं०मंत्री –चौ० रघुवीर सिंह देवटा।

गुरुकुल विश्वविद्यालय, वृन्दावन

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का यह अपना गुरुकुल है। सर्व प्रथम इसकी स्थापना स्वामी दर्शनानन्द जी द्वारा सिकन्दराबाद में सन् १९०४ ई० में की गई। सन् १९०८ ई० को इसे महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा फर्रुखाबाद में स्थापित संस्कृत विद्यालय की भूमि में ले जाया गया और सन् १९११ ई० में राजा महेन्द्रप्रतापसिंह जी के विशाल उद्यान वृन्दावन में यमुना नदी के तीर लाकर प्रतिष्ठित कर दिया गया। कई वर्ष तक स्व० पं० तुलसीराम जी सामवेद भाष्यकार मेरठ एवं स्व० पं० भगवानदीन जी मिश्र हरदोई इसके संचालक रहे। बाद में महात्मा नारायण प्रसाद जी को इसका मुख्याधिष्ठाता बनाया गया। महात्मा जी ने लगभग ८ वर्ष तक अनवरत इस गुरुकुल को विकसित करने में लगाए। उन्हीं के काल में गुरुकुल के स्नातकों का १९१८ ई० का प्रथम दीक्षान्त समारोह सम्पन्न हुआ। महात्मा जी के काल में यहां ब्रह्मचारियों की संख्या १५० से ऊपर पहुंच गई थी।

सन् १९२० ई० में महात्मा जी विरक्त होकर साधना निमित्त रामगढ़ चले गये और इसके संचालन का कार्य पं० गंगाप्रसाद जी एम० ए० रिटायर्ड चीफ जज, पं० घासीराम जी एम० ए०, डा० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री एम० ए०, पं० शिवनारायण शुक्ल एडवोकेट, आचार्य बृहस्पति जी शास्त्री वेदशिरोमणि, कुंवर हुकुमसिंह जी, महा० श्रीराम जी आचार्य वा मुख्याधिष्ठाता के रूप में क्रमशः कार्य करते रहे। तत्पश्चात् श्री कर्णसिंह छोंकर इसके मुख्याधिष्ठाता बने और इधर लगभग १० वर्ष से श्री पं० नरदेव जीं स्नातक पूर्व एम० पी० मुख्याधिष्ठाता का कार्य कर रहे हैं। गुरुकुल के पास विस्तृत क्षेत्र, सुन्दर उद्यान, विशाल भवन, एवं उच्चकोटि का पुस्तकालय हैं।

गुरुकुल के शैक्षणिक विकास में स्व० आचार्य विश्वेश्वर जी सिद्धान्त शिरोमणि एम० ए० का विशेष हाथ रहा है। गुरुकुल की शिरोमणि उपाधि को आगरा, दिल्ली, आन्ध्र, गोरखपुर एवं उस्मानियाँ विश्व विद्यालयों ने बी० ए० के समकक्ष की मान्यता प्रदान कर दी है। भारत सरकार ने संस्कृत विभाग में विशेष अनुसंधान करने के लिए जिन संस्कृत विद्यालयों के स्नातकों को मान्यता दी है उनमें इस गुरुकुल के स्नातक भी हैं।

सरकार से गुरुकुल को अनुदान भी दिया जाने लगा है। इन कार्यों में गुरुकुल के वर्तमान मुख्याधिष्ठाता स्नातक नरदेव जी का प्रयत्न सराहनीय है।

गुरुकुल में सम्प्रति तीन निम्न विभाग हैं—१—वेद २—आयुर्वेद ३—सिद्धान्त व सामान्य विभाग; जिसमें अर्थ, राजनीति, तर्क एवं शिक्षा-शास्त्रों की तुलनात्मक उच्च शिक्षा की व्यवस्था है।

गुरुकुल में उत्तर प्रदेश से बाहर के अनेक ब्रह्मचारियों ने शिक्षा ग्रहण की है। एक बार आवागढ़ नरेश ने तो अपने राज्य से २०० छात्र प्रविष्ट कराए थे।

भारत से बाहर फिजी, दक्षिणी अफरीका, बृटिश गायना के १५, ३, २ ब्रह्मचारियों ने क्रमशः यहां अध्ययन किया है।

इस गुरुकुल का संचालन आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश द्वारा नियुक्त आर्य विद्या सभा करती है। सभा का प्रधान–पदेन इसका कुलपति रहता है। सम्प्रति गुरुकुल के अधिकारी निम्न प्रकार हैं—

१. कुलपति—पं. प्रकाशवीर शास्त्री सदस्य लोकसभा, सभा-प्रधान।
२. उप कुलपति—डा. हरिशंकर शर्मा कविरत्न, आगरा।
३. आचार्य—श्री पं० बृहस्पति शास्त्री एम० ए० वेद-शिरोमणि।
४. मुख्याधिष्ठाता—श्री नरदेव जी स्नातक पूर्व सदस्य लोकसभा।
५. सहा० „ —श्री रामेश्वरदयालु शास्त्री, सिद्धान्त शिरोमणि एम० ए०।

गुरुकुल ने इस समय तक लगभग १५० स्नातकों का निर्माण कर उन को कार्य क्षेत्र में भेजा है। उनमें से कुछ प्रतिष्ठित स्नातकों के नाम यह हैं—

१. पं० द्विजेन्द्रनाथ शास्त्री सिद्धान्त शिरोमणि मेरठ। आपको भारत सरकार ने संस्कृत साहित्य-विमर्श नामक ग्रन्थ पर २०००) पारितोषिक प्रदान किया है। २. आचार्य बृहस्पति शास्त्री, वेद शिरोमणि एम० ए०—आपने सभा द्वारा प्रकाशित यजुर्वेद भाष्य का सम्पादन किया है। ३. डा० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री तर्क शिरोमणि, एम० ए०—अध्यक्ष संस्कृत विभाग संस्कृत विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र, पंजाब। ४. आचार्य विश्वेश्वर जी सिद्धान्त शिरोमणि एम० ए०। ५. डा० विजयेन्द्र जी सिद्धान्त शिरोमणि, एम० ए०, पी० एच० डी०, हिन्दी प्राध्यापक दिल्ली विश्वविद्यालय। ६. डा० विष्णु देव जी शिरोमणि एम० ए०, पी० एच० डी०, बनस्थली विद्यापीठ, जयपुर। ७. श्री उमेशचन्द्र जी स्नातक एम० ए० हलद्वानी सम्पादक आर्यमित्र। ८. श्री नरदेव स्नातक पूर्व सदस्य

लोकसभा । ९. श्री सत्यपाल वेद शिरोमणि एम० ए० हिन्दी प्राध्यापक, दिल्ली । १०. श्री ब्रह्मदत्त आयुर्वेद शिरोमणि, एम० ए० दिल्ली । ११. डा० रमेशचन्द्र शास्त्री एम० ए० प्राध्यापक बी० एन० एस० डी० कालेज, कानपुर । १२. पं० भूदेव शास्त्री एम० ए० एल० टी०, आगरा विश्वविद्यालय हिन्दी प्राध्यापक । १३. श्री कमला प्रसाद आयुर्वेद शिरोमणि, फिजी ।

गुरुकुल के अनेक स्नातक यथा पं० विद्याधर आयुर्वेद शिरोमणि एटा, आयुर्वेद शास्त्र में विशेष दक्षता सम्पादन कर सफल चिकित्सक के रूप में जनता एवं आयुर्वेद की सेवा में संलग्न हैं ।

गुरुकुल के एक अध्यापक श्री गोपेश नारायण पथिक फिजी में सपत्नीक जाकर वहाँ गुरुकुलादि आर्य शिक्षा संस्थाओं का संचालन कर रहे हैं ।

गुरुकुल विश्वविद्यालय, कांगड़ी, हरिद्वार

महर्षि दयानन्द के परम भक्त महात्मा मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानंद) जी एक क्रांतिकारी पुरुष थे । आप भारत के शिक्षा क्षेत्र में आमूलचूल परिवर्तन करने के प्रक्षपाती थे । आपने इस परिवर्तन को लाने के लिए अपना जीवन ही समर्पित कर दिया ।

४ मार्च १९०२ ई० को श्री अमन सिंह नजीबाबाद द्वारा प्रदत्त कांगड़ी ग्राम की भूमि में गुरुकुल की स्थापना की गई जो आगे गुरुकुल कांगड़ी के नाम से विख्यात हुआ । श्री पं० गंगादत्त जी ने गुरुकुल के प्रथम आचार्य के पद को विभूषित किया और महात्मा जी उसके मुख्याधिष्ठाता बने । महात्मा जी के सहयोगियों में पं० काशीनाथ शास्त्री, पं० भीमसेन शर्मा, पं० विष्णुमित्र पं० पद्मसिंह शर्मा, पं० दौलतराम शास्त्री आदि के नाम उल्लेखनीय हैं । सन् १९०७ ई० में महाविद्यालय विभाग स्थापित हो गया । महाविद्यालय के प्रारम्भिक आचार्य प्रो० रामदेव जी नियुक्त हुए तथा पं० शिवशंकर काव्यतीर्थ पं० बालकृष्ण एम० ए० व श्री० घनश्याम सिंह प्राध्यापक नियुक्त हुए ।

सन् १९०७ ई० में पं० गुरुदत्त विद्यार्थी एम० ए० द्वारा संस्थापित वैदिक मैगजीन का पुनरुद्धार किया गया । आचार्य रामदेव जी ने सम्पादन कार्य सँभाला और सन् १९३२ ई० तक आप उसका उच्च-स्तर पर सम्पादन करते रहे ।

१९२२ ई० में गुरुकुल के प्रथम दो स्नातक ब्र० हरिश्चन्द्र और ब्र० इन्द्र जी दीक्षित किये गये । यह दोनों स्नातक महात्मा जी के ही सुपुत्र थे । पं०

इन्द्र विद्यावाचस्पति जी जो बाद में प्रसिद्ध लेखक, वक्ता एवं राजनैतिक कार्य-कर्ता बने, सार्वदेशिक सभा के प्रधान बने तथा इस गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता बने। पं० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार पं० चूमपति एम० ए० तथा पं० देवशर्मा विद्यालंकार (स्वामी अभयदेव) जी क्रमशः आचार्य पद पर कार्य करते रहे।

सन् १९४२ ई० में पं० इन्द्र जी को मुख्यअधिष्ठाता नियुक्त किया गया। सन् १९५३ ई० में श्री पं० धर्मपाल विद्यालंकार को सहायक मुख्याधिष्ठाता बनाया गया। सन् १९४३ से इस समय तक पं० प्रियव्रत जी गुरुकुल के आचार्य हैं तथा पं० इन्द्र जी के निधन से कुछ समय पूर्व पं० सत्यव्रत जी को इसका उपकुलपति नियुक्त किया गया।

गुरुकुल की ख्याति देश में निरन्तर बढती चली गई। देश के बड़े-बड़े गण्य-मान्य नेताओं ने समय-समय पर गुरुकुल में पधारकर उसकी ख्याति को चारचाँद लगा दिये। स्वाधीनता आन्दोलनों में तथा हैदराबाद सत्याग्रह में गुरुकुल का प्रशंसनीय सहयोग रहा है।

गुरुकुल की उपाधियाँ केवल भारत के विश्वविद्यालयों में ही मान्य नहीं ठहराई गई अपितु फ्रांस, जर्मनी, आष्ट्रिया, इटली आदि देशों के विश्वविद्यालयों ने भी उनको मान्यता प्रदान की।

गुरुकुल के अनेक स्नातकों ने विदेशों में जाकर जर्मनी आदि विश्व-विद्यालयों की उच्चतम उपाधियाँ उपलब्ध की हैं यथा—श्री प्राणनाथ विद्यालंकार, श्री ईश्वरदत्त विद्यालंकार, श्री विनायक राव विद्यालंकार, श्री सत्यकेतु विद्यालंकार, श्री धीरेन्द्र विद्यालंकार आदि।

सन् १९५० ई० में गुरुकुल की स्वर्ण जयन्ती मनाई गई। भारत के प्रथम राष्ट्रपति महामहिम डा० राजेन्द्रप्रसाद जी ने गुरुकुल में पदार्पण कर दीक्षान्त भाषण दिया तथा सरकार की ओर से गुरुकुल के लिए एक लाख रुपया वार्षिक अनुदान की घोषणा की।

गुरुकुल के कुछ अन्य प्रतिष्ठित स्नातकों के नाम जिन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में अच्छी ख्याति प्राप्त की है निम्न प्रकार है :—

पं० सत्यदेव विद्यालंकार, पं०, रामगोपाल विद्यालंकार, पं० भीमसेन विद्यालंकार, पं० चन्द्रगुप्त विद्यालंकार, पं० अवनीन्द्रकुमार, पं० सत्यकाम विद्यालंकार, पं० वेदव्रत विद्यालंकार।

भारत की केन्द्रीय सरकार ने गुरुकुल को विश्व विद्यालय की मान्यता प्रदान करदी है और अब यह प्राचीन शिक्षा पद्धति का प्रतीक गुरुकुल कांगड़ी एक महान् विश्वविद्यालय (यूनीवर्सिटी) के रूप में विकसित हो रहा है। गुरुकुल के अन्तर्गत अनेक आयुर्वेद, विज्ञान, वेद, कृषि आदि के महाविद्यालय कार्य कर रहे हैं। जिनमें लगभग १०००० छात्र शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। गुरुकुल का पुस्तकालय, पुरातत्व संग्रहालय तथा रसायनशाला दर्शनीय है। गुरुकुल से अब तक ७०० के लगभग स्नातक निकले हैं जिनमें १३४ स्नातक वेद विषय के हैं।

गुरुकुल महा विद्यालय ज्वालापुर

अक्षय तृतीया (वैशाख सुदी ३) सम्वत् १९६४ वि० तदनुसार १५ मई सन् १९०७ ई० को स्व० सीताराम प्रदत्त भूमि में इस गुरुकुल की स्थापना शास्त्रार्थ महारथी महान् दार्शनिक विद्वान् श्री स्वामी दर्शनानन्द जी के कर कमलों द्वारा हुई। गुरुकुल की संचालिका महाविद्यालय महासभा नाम की एक समिति है जिसके ६७ आजीवन, ४ प्रतिष्ठित तथा ३१५ (सम्प्रति) साधारण सदस्य हैं।

यह संस्था प्रौढ संस्कृत पांण्डित्य का एक महान् केन्द्र है। संस्कृत के बड़े २ उद्भट विद्वान् आरम्भ से आज दिन पर्यन्त इसमें अध्यापन करते आए हैं। सन् १९०८ ई० से १९२५ ई० पर्यन्त स्वामी भास्करानन्द सरस्वती (पं० भीमसेन शर्मा) का इस गुरुकुल के साथ मुख्याध्यापक के रूप में अविच्छिन्न सम्बन्ध रहा। महाविद्यालय के दूसरे महान् स्तम्भ श्री पं० नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ रहे, जिनका गत् वर्ष लगभग ९० वर्ष की आयु में देहावसान हुआ। शास्त्री जी दीर्घकाल पर्यन्त इस गुरुकुल के आचार्य एवं कुलपति रहे। सन् १९०८ ई० से जीवन की अन्तिम घटिका पर्यन्त माननीय शास्त्री जी का इस गुरुकुल से अटूट सम्बन्ध रहा है।

महा विद्यालत के अन्य स्तम्भों में श्री आचार्य दिलीपदत्त उपाध्याय, आचार्य गंगादत्त शास्त्री (स्वामी शुद्धबोध तीर्थ), पं० पद्मसिंह शर्मा साहित्याचार्य जी थे।

गुरुकुल के ब्रह्मचारियों की संख्या लगभग ३०० है। आज की विपरीत परिस्थिति में इस संस्था का चलाना अनवरत परिश्रम, एवं उद्योग पर ही ही अवलम्बित है। अपने ५५ वर्ष के इतिहास में इस संस्था ने १६२

स्नातकों का निर्माण किया है । जो भारत के विभिन्न प्रदेशों में धर्म, संस्कृति, साहित्य, शिक्षण, आयुर्वेद एवं राजनीति के क्षेत्रों में कार्य कर रहे हैं । कतिपय प्रमुख स्नातकों के नाम निम्न प्रकार हैं—

१—पं. विश्वनाथ शास्त्री व्याकरणशास्त्र के महान् मर्मज्ञ । २—पं. उदय वीर शास्त्री न्याय-सांख्यतीर्थ, कौटिल्य अर्थ शास्त्र के भाषा अनुवादक, सांख्यदर्शन के इतिहासकार एवं भाष्यकार, सत्यार्थप्रकाश के टीकाकार । ३—पं. हरिशंकर शर्मा विद्या भास्कर शास्त्री, काव्यतीर्थ । ४—पं. हरिदत्त शास्त्री एम. ए. एकादशतीर्थ । ५—पं. सत्यव्रत व्याकरण शास्त्री । ६—वि. नि. पं. व्यासदेव शास्त्री एम. ए. एल. एल. बी. । ७—वि. रत्न पं. नारायणराव शास्त्री बी. ए. महाराष्ट्र ८—वि. रत्न पं. विष्णु शास्त्री साहित्याचार्य एम.ए. ९—पं० प्रकाशवीर शास्त्री एम० पी० १०—वि. भा. पं. ओमप्रकाश शास्त्री शास्त्रार्थ महारथी ११—पं० क्षेमचंद्र सुमन हिन्दी के सिद्ध हस्त लेखक । १२—पं० सूर्यकान्त शास्त्री व्याकरणतीर्थ, एम०ए० डी० फिल् डी० लिट् । १३ पं० रामावतार शास्त्री वेद तीर्थ, मीमांसाचार्य १४—पं० महेन्द्र पटेल गुजरात १५—श्रुतिकान्त शास्त्री वेदतीर्थ एम० ए० साहित्याचार्य । १६—रुद्रदत्त शास्त्री महोपदेशक आ० प्र० सभा, उत्तर प्रदेश ।

महा विद्यालय की विद्याभास्कर उपाधि को आगरा विश्व विद्यालय ने बी० ए० के समकक्ष की मान्यता प्रदान कर दी है । सन् १९६० ई० में महाविद्यालय का स्वर्ण जयन्ती समारोह धूम धाम से मनाया गया । देश के अनेक गणमान्य नेता विद्वान् एवं संयासी पधारें । भारत के प्रधान मंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू ने दीक्षान्त भाषण दिया ।

महा विद्यालय के अध्यापकों तथा ब्रह्मचारियों ने हैदराबाद सत्याग्रह में विशेष भाग लिया । निम्न तीन जत्थों ने हैदराबाद में प्रवेश कर सत्याग्रह किया और निजाम की जेलों की शोभा बढ़ाई ।

१—श्री स्वामी विवेकानन्द जत्था १९ फरवरी १७ सत्याग्रही । २—पं० भूदेव शास्त्री जत्था २२ मार्च १९ सत्याग्रही । ३—स्वामी आनन्द तीर्थ जत्था १५ जून १३ सत्याग्रही ।

गुरुकुल महा विद्यालय अयोध्या

यह गुरुकुल भारत की प्राचीन राजधानी अयोध्या में पुण्य सलिला सयू के तट पर स्थापित है । इसकी स्थापना तपोमूर्ति ओजस्वी वक्ता स्वामी

त्यागानन्द सरस्वती के कर कमलों द्वारा श्रावणी पूर्णिमा सं० १९८२ वि० तदनुसार सन् १९२६ ई० में की गई।

स्वामी जी महाराज आरम्भ से लेकर अपने जीवन की अंतिम घटिका तक इसका सुन्दरता के साथ संचालन करते रहे। १७ मार्च १९६० ई० को स्वामी जी का निधन हो गया। गुरुकुल की एक प्रबन्धक समिति है जिसका निर्माण साधारण सभा द्वारा किया जाता है। गुरुकुल की अपनी स्वतंत्र पाठ-विधि है जिसमें आर्ष साहित्य के अध्ययन पर यिशेष बल दिया गया है। सम्प्रति गुरुकुल में १२५ ब्रह्मचारी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। यहाँ के ब्रह्मचारियों की वेश-भूषा भी अत्यन्त सरल एवं सात्विक है। गुरुकुल ने आज दिन तक १०० से ऊपर स्नातकों का निर्माण किया है। देश के स्वाधीनता संग्रामों में तथा हैदराबाद सत्याग्रह में यहाँ के अध्यापकों एवं ब्रह्मचारियो ने अन्य नुरुकुलों की भाँति विशेष भाग लिया है।

आर्ष गुरुकुल एटा

इस गुरुकुल की स्थापना २६-४-१९४८ ई० को आर्य जगत् के प्रसिद्ध दार्शनिक विद्वान् स्वामी ब्रह्मानन्द जी दंडी ने अपने कर कमलों से की। स्थापना से पूर्व वेदों के प्रकाण्ड पण्डित ब्रह्मदत्त जिज्ञासु वाराणसी के अधिष्ठातृत्व में ६४ कुण्डों वाला एक विशेष यज्ञ किया गया। गुरुकुल का उद्देश्य महर्षि दयानन्द सरस्वती निर्दिष्ट आर्ष पाठ-विधि को क्रियात्मक रूप देना है। गुरुकुल में इस समय ४० ब्रह्मचारी अध्ययन कर रहे हैं। छात्रों में वक्तृत्व कला एवं कर्मकांड की योग्यता निर्माण करने की ओर भी विशेष ध्यान रहता है। श्रौत्र एवं स्मार्त यज्ञों में प्रयुक्त होनेवाले सहस्त्रों यज्ञ पात्रों का यहाँ संचय है। पं० सोहनलाल जी मिश्र ने गुरुकुल को ३९ बीघा भूमि प्रदान की है। गुरुकुल संचालक श्री मोहनलाल जी वानप्रस्थी कलकत्ता के निधन पर श्री नन्दलाल जी मनचन्दा देहली इसका संचालन कर रहे हैं। पं० मूलचन्द्र वैद्य देहली इसके संरक्षक एवं माननीय जिज्ञासु जी इसके कुलपति हैं। तथा पं० ज्योति स्वरूप जी इसके सुयोग्य आचार्य हैं।

गुरुकुल विरालसी

यह गुरुकुल सन् १९३९ ई० में श्री स्वामी दर्शनानंद जी की प्रेरणा से स्थापित किया गया। विरालसी के दानी ठाकुर मूलराज सिंह जीने अपने

कुटुम्ब की १०० बीघा कच्ची भूमि गुरुकुल को प्रदान की। पं० गोविन्द सहाय जी वैयाकरण इसके प्रथम आचार्य नियुक्त किये गये। १७ वर्ष तक यह संस्था साधारण रूप में चलती रही। सन् १९२९ ई० में ठा० समय सिंह ने अपनी राजनैतिक जेल यात्रा समाप्त कर इस गुरुकुल का कार्यभार संभाला। महात्मा जी के अन्य प्रमुख सहयोगी श्री पं० राम प्रसाद जी चरथावल, मा० सालिगराम जी त्यागी, बा० बनारसी दास जी, सेठ कबूल सिंह, पं० सुगनचन्द वैद्य थे। दूधली निवासी श्री सरदार सिंह जी वानप्रस्थी नाना प्रकार से इस संस्था की सेवा सन् १९१२ ई० से आज दिन तक करते आ रहे हैं। श्री सरदार सिंह जी कांग्रेस के कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं। अनेक बार सत्याग्रह के आन्दोलनों में कारागार की यातनाएँ भी सहन की हैं। महात्मा सुमेर सिंह जी के यकायक खुर्जा में निधन हो जाने के कारण कार्य में शिथिलता आ गई, किन्तु थाना भवन निवासी ला० सुन्दरलाल व चरथावल के ला० कबूल सिंह जी यथा शक्ति इसको चलाते ही रहे। सन् १९४७ में देश विभाजन के समय गुरुकुल झेलम के ब्रह्मचारी और अध्यापक विरालसी गुरुकुल में आ गये। सन् १९४९ में गुरुकुल की विधिवत् रजिस्ट्री कराई गई। किन्तु इस रजिस्ट्री से स्थानीय कार्यकर्ताओं में असन्तोष उत्पन्न हो गया, जिससे गुरुकुल नाम मात्र ही रह गया। गुरुकुल में डकैती भी डाली गई। इधर गुरुकुल की पाठप्रणाली के प्रति स्वतन्त्रता के उपरांत जनता में अरुचि उत्पन्न हो चली। सन् १९५२ ई० में सभा की आज्ञा से यहाँ स्कूल खोल दिया गया जो इस समय उच्च माध्यमिक विद्यालय के रूप में कार्य कर रहा है। १०० छात्र हैं। श्री पं० शेरसिंह कश्यप इसके प्रधान तथा बा० सीताराम जी मंत्री हैं।

आर्य महा विद्यालय किरठल

किरठल महाविद्यालय की स्थापना सन् १९२० ई० में ग्राम किरठल तहसील बागपत जिला मेरठ में श्री पं० जगदेव जी शास्त्री सिद्धान्ती एवं श्री पं० रघुवीर सिंह जी शास्त्री वेद वाचस्पति के उद्योग से की गई। संस्था के पास पर्याप्त कृषि भूमि हैं। शाक, फलादि की उत्पत्ति भी पर्याप्त मात्रा में होती है। सम्प्रति विद्यालय में २२० छात्र संस्कृत का अध्ययन कर रहे हैं। तथा यहाँ १० सुयोग्य अध्यापक कार्य में संलग्न हैं। सिद्धान्ती जी इसके कुलपति एवं शास्त्री जी इसके मंत्री हैं जो उत्तमा पूर्वक

संस्था का संचालन कर रहे हैं। इसके मुख्याधिष्ठाता श्री शिवपूजन सिंह जी शास्त्री हैं। महाविद्यालय का परीक्षा परिणाम सराहनीय रहता है। सन् १९५६ ई० में सरकार ने इसको आदर्श योजना में सम्मिलित कर लिया है। संस्था प्रगतिशील है और आशा है कि शीघ्र ही इस प्रदेश में संस्कृत शिक्षण का यह महान् केन्द्र बन जावेगा।

दयानन्द महाविद्यालय गुरुकुल डौरली (मेरठ)

इस संस्था की स्थापना श्रावण पूर्णिमा सं० १९८१ अर्थात् सन् १९२५ ई० में स्व० प्रो० शंकरलाल जी एम० ए० एल० एल० बी० के कर कमलों द्वारा की गई। श्री पं० अलगूराय शास्त्री वन मंत्री उत्तर प्रदेश इसके प्रथम आचार्य बने। शास्त्री जी काशी विद्यापीठ से स्नातक बनकर पल्हेड़ा ग्राम में जहाँ पं० शिवदयालु जी उस समय कृषि कराते थे, पधारे। जंगल में गुरुकुल खोलने की योजना बनी। श्री पं० हरगोविन्द भार्गव जी भी इस योजना में सम्मिलित हुए। श्री पं०शिवदयालु जी गुरुकुल के मंत्री नियुक्त हुए और निरन्तर २७ वर्ष तक मंत्री व अधिष्ठाता का कार्य करते रहे। श्री चौ० चरणसिंह जी, चौ० मुख्तार सिंह, श्री डा० अयोध्या प्रसाद जी आदि ने इसके प्रधान पद को सुशोभित किया है।

डौरली ग्राम के राजपूतों ने २० बीघा भूमि गुरुकुल को दान की। जिसमें भवन निर्माण किए गए। तथा पं० शिवदयालु जी ने अपनी बहुत सी भूमि गुरुकुल को दान दी। एक वर्ष उपरांत श्री पं० अलगूराय जी शास्त्री के स्व० लाला लाजपत राय के लोक-सेवा-संघ में चले जाने पर पं० लेखराम शास्त्री स्नातक गुरुकुल सिकन्दराबाद इसके आचार्य बने जो २० वर्ष निरन्तर कार्य करते रहे और सन् १९४६ ई० बसन्त पंचमी को आपका जेल की यातनाओं के कारण स्वर्गवास हो गया।

गुरुकुल ने भारत की स्वाधीनता के सन् १९३०-३१ व ४२ के आन्दोलनों में विशेष भाग लिया। सन् ४२ में तो इसके सब प्रमुख कार्यकर्ता स्नातक व ब्रह्मचारी जेल गये। गुरुकुल को उस समय की सरकार ने क्रान्तकारियों का केन्द्र कहकर अवैध घोषित कर दिया। अनेक क्रान्तिकारी यहाँ समय-समय पर आकर ठहरा भी करते और विश्राम पाते थे इसी कारण सरकार इससे क्षुब्ध हो उठी थी।

सन् १९४७ ई० में स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत संस्कृत के प्रति वातावरण बदल गया। स्थान-स्थान पर जूनियर हाई स्कूल खुलने लगे। अतः आगे चलकर इसको उच्चतर माध्यमिक विद्यालय का रूप दे दिया गया। इस समय इस संस्था में ६०० के ऊपर छात्र शिक्षा पाते हैं।

गुरुकुल ने २६ स्नातकों का निर्माण किया, जो विभिन्न शिक्षाणालयों आदि में कार्य कर रहे हैं। श्री पं० देवेन्द्रनाथ शास्त्री विद्यावारिधि, श्री पं० श्रीनिवास शास्त्री एम० ए० एल० टी० वि० वा०, श्री पं० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री वि० वा० साहित्य-रत्न, श्री पं० शिवराज शास्त्री, एम० ए० पं० हरिदत्त शास्त्री, पं० अविनाशचन्द्र शास्त्री, पं० राजेश्वर शास्त्री, पं० महावीर शास्त्री पं० आर्य मुनि जी, पं० वेदपाल जी० बी०ए०वि० वा० आदि इसके कुछ प्रमुख स्नातक हैं। इस गुरुकुख के अनेक छात्र व अध्यापक महात्मा नारायण स्वामी जी के साथ हैदराबाद सत्याग्रह में भी सम्मिलित हुए।

कन्या गुरुकुल महा विद्यालय देहरादून

यह गुरुकुल सर्व प्रथम देहली में स्थापित किया गया। सन् १९१८ ई० में गुरुकुल के प्रबन्धकों ने सार्वदेशिक सभा को यह गुरुकुल सौंपदिया। सार्वदेशिक सभा ने इसके लिये एक उपसमिति बनाई। जिसके संयोजक मेरठ निवासी श्री पं० घासीराम जी एम० एम० थे। बाद में सन् १९२६ ई० को यह गुरु-कुल पंजाब आर्य प्रतिनिधिसभा के आधीन कर दिया गया, और दिनांक १-५-२७ को यह देहरादून पहुँच गया। जिस समय यह देहरादून पहुँचा एक छोटा सा विरबा था जो स्व० कुमारी विद्यावती सेठ आचार्या तथा स्व० रामदेव जी मुख्याधिष्ठाता के अनथक परिश्रम एवं प्रयत्नों से एक विशाल वृक्ष के रूप में विकसित हुआ, और इसको अखिल भारतीय रूप मिला। सन् १९३२ ई०मेंसर्व प्रथम तीन स्नातिकाओं को विद्यालंकृता की उपाधि से विभू-षितकिया गया। अब तक यहां से ३०० कन्याएं विद्यालंकार एवं विद्यालंकृता की उपाधि प्राप्त कर चुकी हैं। कुमारी विद्यावती सेठ के निधन पर श्रीमती चन्द्रावती लखनपाल ७ वर्ष तक इसकी आचार्या रहीं और अब श्रीमती दमयन्ती देवी कपूर एम० ए० इसकी आचार्या हैं। तथा पं० यशपाल सिद्धान्ता-लंकार इसके मुख्याधिष्ठाता हैं।

इस गुरुकुल की विद्यालंकार उपाधि को आगरा, देहली, राजस्थान, वाराणासी आदि विश्व विद्यालयों ने बी० ए० के समकक्ष मान लिया है। गुरुकुल का अपना एक सुन्दर एवं भव्य चिकित्सालय भी है जिसमें २० शैयाओं की व्यवस्था है। गुरुकुल का संचालन आर्यप्रतिनिधिसभा पंजाब करती हैं।

कन्या गुरुकुल हाथरस

कन्या गुरुकुल हाथरस—श्री बा० जगदम्बा प्रसाद जी की धर्मपत्नी श्री माता लक्ष्मी देवी की प्रबल इच्छा थी कि वह एक कन्या गुरुकुल स्थापित करें। थी लक्ष्मी देवी के ताऊ श्री रोशनलाल वेरिस्टर ने इस सम्बन्ध में महात्मा हंसराज जी से चर्चा की और महात्मा जी ने लक्ष्मीदेवी जी के उत्साह की बड़ी सराहना की और हरिद्वार में भूमि की व्यवस्था भी कर दी। इधर यह विचार चल ही रहा था कि उधर न्होंटी (अलीगढ़) निवासी प्रसिद्ध व्याख्याता श्री पं० इन्द्र वर्मा जी माता जी को मिले और उन्होंने कहा कि हाथरस निवासी पं० मुरलीधर जी की इच्छानुमार उनके धन से पूज्य स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज ने सन् १९१२ ई० में अर्थात् अबसे १९ वर्ष पूर्व एक कन्या गुरुकुल हाथरस में खोला था किन्तु बाद में वह किन्हीं कारणोंवश टूट गया है। अतः उसका ही पुनरुद्धार आप क्यों नहीं करतीं।

माता लक्ष्मी देवी जी को उनकी बात जँच गई और २८ जुलाई १९३१ ई० को पूज्य महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज के कर कमलों द्वारा इस कन्या गुरुकुल का उद्घाटन हाथरस अलीगढ़ मार्ग पर स्थित विशाल परकोटे में किया गया।

१७ वर्षों में अर्थात् सन् १९३१ से १९४८ के बीच इस गुरुकुल की पर्याप्त उन्नति हुई। २४२ कन्याएं भारत के विभिन्न प्रान्तों से आकर यहाँ शिक्षा ग्रहण करने लगीं। माता जी के निधनो परान्त श्रीमती अक्षय कुमारी शास्त्री, प्रभाकर इस गुरुकुल की आचार्या एवं मुख्याधिष्ठात्री के रूप में काय कर रही हैं।

कन्या गुरुकुल हरिद्वार

इस गुरुकुल की स्थापना २५ मई ९९३२ ई० में आर्यसमाज के कर्मठ प्रचारक श्री ठा० संसारसिंह जी ने हरिद्वार में की। तीन वर्ष तक अनथक परिश्रम कर ठाकुर साहब ने संस्था को खड़ा किया

और ७ जनवरी १९३६ ई० को इसकी रजिस्ट्री कर दी और कन्या गुरुकुल के अपने सब अधिकार एक सभा बना कर उसको सौंप दिए। इस संस्था में प्रथम पांच वर्ष तक संस्कृत, हिन्दी धर्म शिक्षा पर विशेष बल दिया जाता है। तदुपरान्त छात्राएं सार्वदेशिक सभा की सिद्धान्तरत्न, भास्कर आदि, साहित्य सम्मेलन की विशारद व साहित्यरत्नादि तथा महिला विद्यापीठ की प्रवेशिका, विद्याविनोदिनी आदि परीक्षाओं के लिए तैयारी करती हैं। आयुर्वेद की उच्च शिक्षा ब्रह्मचारिणियों को देकर आयुर्वेदालङ्कृता निर्माण करना भी यहां का विशेष लक्ष्य है। कविराज योगेन्द्रपाल शास्त्री आयुर्वेदाचार्य धन्वन्तरि इस गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता हैं।

गुरुकुल सिरसागंज (मैंनपुरी ;—इस गुरुकुल की स्थापना सन् १९५३ ई० में श्री दृगपाल सिंह जी वानप्रस्थी ने की थी। गुरुकुल के पास ३० एकड़ उपजाऊ भूमि है गुरुकुल की सम्पत्ति आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के आधीन है। वानप्रस्थी जी ही इसके मुख्य संचालक हैं तथा इनके सहयोगी सेठ वृजमोहनलाल सिरसागंज हैं। स्वामी ओमानन्द जी अधिष्ठाता का कार्य उत्तमता से कर रहे हैं। आपने हिन्दी सत्याग्रह आन्दोलन में भी सक्रिय भाग लिया है और तीन मास आप कारागार में रहे हैं।

गुरुकुल घासीपुरा—अब से लगभग ४० वर्ष पूर्व स्वामी कल्याणदेव जी महाराज ने इसकी स्थापना की। प्रारम्भ में यह एक संस्कृत पाठशाला के रूप में स्थापित हुआ। तदन्तर इसने गुरुकुल रूप धारण कर लिया। अब यह गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय की शाखा के रूप में विकसित हो रहा है। ६५ ब्रह्मचारी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। गुरुकुल का स्थान रमणीक है। भवन पर्याप्त हैं। इसके संचालन में श्री परशुराम जी ने अधिष्ठाता के रूप में प्रशंसनीय कार्य किया है। इसके वर्तमान आचार्य श्री पं० अनूपसिंह जी, प्रधान चौधरी सुमेरसिंह जी तथा मंत्री श्री अतरसिंह जी हैं।

गुरुकुल सूर्य कुण्ड बदायूं—इस गुरुकुल की स्थापना सन् १९०३ ई० में आर्य जगत् के प्रसिद्ध दार्शनिक एवं तार्किक विद्वान् स्वामी दर्शनानन्द जी ने की थी।

गुरुकुल का स्थान सुन्दर एवं रमणीक है। ८० के लगभग ब्रह्मचारी इसमें सम्प्रति शिक्षा ग्रहण कर रहे है। श्री पं० ब्रजनन्दन जी शास्त्री इस के आचार्य हैं। पं० विशुद्धानन्द शास्त्री, पं० शिवकुमार शास्त्री आदि इस

ही के स्नातक है। डा० मंगलदेव शास्त्री एम० ए० की प्राथमिक शिक्षा भी इसी गुरुकुल में हुई थी। इन गुरुकुलों के अतिरिक्त प्रान्त में और भी कई गुरुकुल है जिनका वृत्तान्त अनुपलब्ध है।

कालेज व स्कूल

शिक्षा के क्षेत्र में आर्यसमाज गुरुकुलों तक ही सीमित नहीं रहा, अपितु उसने समय की प्रगति के साथ प्रचलित प्रणाली के भी प्रान्त में सैकड़ों छोटे बड़े शिक्षणालय स्थापित किए। यह ठीक है कि इन शिक्षणालयों द्वारा वैदिक धर्म तथा संस्कृत विद्या का विशेष विस्तार नहीं होता किन्तु आर्य समाज के प्रभाव क्षेत्र में रहने के कारण अन्य शिक्षणालयों की अपेक्षा आर्यसमाज द्वारा संस्थापित इन शिक्षाणालयों में धर्म शिक्षा, नैतिक शिक्षण एवं चरित्र निर्माण पर विशेष बल दिया जाता है और इनको यथाशक्ति उपयोगी बनाने का प्रयत्न भी किया जाता है।

इस प्रकार के प्रान्त में सम्प्रति निम्न डिग्री कालेज चल रहे है। दयानन्द आर्य वैदिक कालेज, कानपुर, लखनऊ, देहरादून, मुजफ्फरनगर, उरई, काशी तथा सुल्तानपुर रणवीर डिग्री कालेज।

इन कालेजों के अतिरिक्त प्रान्त में ३४ उच्चतर माध्यमिक विद्यालय (इन्टर कालेज) २८ उच्च माध्यमिक विद्यालय (हाई स्कूल) तथा ३५ माध्यमिक विद्यालय (जूनियर हाई स्कूल) सभा के नियंत्रण में कार्य कर रहे हैं।

सभा के तथा आर्यसमाजों की अंतरंग सभाओं के नियंत्रण के बाहर चलनेवाले इन्टर कालेजों, हाई स्कुलों और जूनियर हाई स्कूलों की संख्या भी पर्याप्त है।

प्रान्त में लगभग १५०००० छात्र छात्राओं की शिक्षा आर्यसमाज द्वारा संस्थापित इन शिक्षाणलयों द्वारा चल रही है। इन सब शिक्षणालयों का परिचय जो अब तक उपलब्ध हुआ है, आर्यसमाजों के साथ जिला क्रम से आगे दिया जावेगा।

☆

प्रान्त के प्रसिद्ध आर्य विद्वान्, नेता, शास्त्रार्थ महारथी, व्याख्याता, प्रचारक, कवि, साहियत्कि एवं कमंठ कार्यकर्ताओं का संक्षिप्त परिचय

स्वर्गीय महात्मा नारायण स्वामी जी
(श्री नारायण प्रसाद)

आपका जन्म वसन्त पंचमी सं० १९२२ वि० को अलीगढ़ जिले में हुआ था। आपका शिक्षण उर्दू, फारसी में हुआ। हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी की विशेष योग्यता आपने निज प्रयत्न से उपलब्ध की। श्री हरसहाय जी के विशेष प्रयत्न से आप शैव से आर्यसमाजी बने। सन् १८९१ से १९१९ ई० पर्यन्त आप आर्यप्रतिनिधिसभा उत्तर प्रदेश के विभिन्न पदों पर रह कर कार्य करते रहे। साथ ही गुरुकुल वृन्दावन के निर्माण एवं उत्थान में मुख्याधिष्ठाता रह कर आपने सराहनीय कार्य किया।
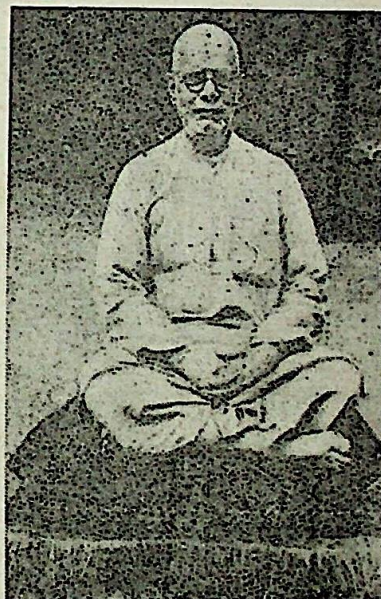
सन् १९२० ई० में आप एकान्तवास की दृष्टि से उपयुक्त स्थान की खोज में गुरुकुल से बिदा हो कर प्रस्थान गिया अन्त में आपने रामगढ़ (पार्वत्य प्रदेश) को ही अपने लिये उपयुक्त समझा। रामगढ़ में आश्रम स्थापित कर दिया और वहाँ रह कर योगाभ्यास एवं आर्ष ग्रन्थों के अनुशीलन में अपना समय लगाया। आपके प्रभाव से इस प्रदेश में वैदिक ज्योति का भी पर्याप्त प्रकाश हुआ। १० मई १९२२ ई० को आपने-स्वामी दर्शनान्द जी से संन्यास की दीक्षा ग्रहण की। सन् १९२३ ई० में आप, महात्मा श्रद्धा-

नन्द जी की विशेष प्रेरणा से देहली में होनेवाली ऋषि जन्म शताब्दी की वाली बैठक में सम्मिलित हुए। इस बैठक में आप पर शताब्दी का कार्य भार सौंप दियाँ गया। आपने अनथक कार्य करके शताब्दी को आर्यसमाज के इतिहास में एक अद्वितीय आर्य समारोह का रूप दिया। तब ही से आप सार्वदेशिक सभा के प्रधान पद को सुशोभित करते रहे। आप ने अपने जीवन में १९ वर्ष सार्वदेशिक सभा की प्रधानता की। सन् १९१० से १८ ई० तक आप सार्वदेशिक के मंत्री भी रहे हैं। श्रद्धानन्द वलिदान के उपरान्त आपको सार्वदेशिक सभा के अनुरोध पर देहली वलिदान भवन में आकर अपना डेरा जमाना पड़ा। बीच बीच में आप रामगढ़ आश्रम भी कुछ काल के लिये जाते रहे।

सन् १९२८ ई० में आपने गंगा के तट पर ज्वालापुर में आर्य विरक्त (वानप्रस्थ-संन्यास) आश्रम की स्थापना की और अब आप प्रायः इस आश्रम में ही रहने लगे।

सनृ १९३२ ई० में आपने बरेली आर्य महा सम्मेलन की अध्यक्षता की। सन् १९३३ ई० में आपने दयानन्द निर्वाण अर्थ शताब्दी अजमेर के कार्यकर्ता प्रधान के रूप में १॥ मास तक अजमेर में रह कर रात्रि-दिन अनथक कार्य किया। निर्वाण अर्थ शताब्दी को जो महती सफलता उपलब्ध हुई, उसका विशेष श्रेय आपको ही है।

सन् १९३९ ई० में हैदरावाद में आर्य हिन्दुओं के धार्मिक अधिकारों की रक्षा के निमित्त जो भीषण सत्याग्रह संग्राम छिड़ा था, उसकी तैयारी एवं संचालन का समस्त भार आप पर ही था। आपने शौलापूर में १॥ मास रह कर आर्य महा सम्मेलन को संगठित किया। तत्पश्चात् सत्याग्रह के सर्वप्रथम सर्वाधिकारी वन कर हैदराबाद की जेल यात्रा की।

इसी वर्ष आपने रामगढ़ में नारायण स्वामी विद्यालय की स्थापना की, भी जो अब एक उच्च माध्यमिक विद्यालय के रूप में चल रहा है। रामगढ़ व वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर में रह कर आपने अनेक ग्रन्थ लिखे हैं :—यथा

१—वैदिक सिद्धान्त, २—मृत्यु और परलोक, ३—अमृत वर्षा, ४—आत्मदर्शन, ५,—कर्त्तव्य-दर्पण ६—वैदिकसाम्यवाद ७—उपनिषदों का भाष्य आदि।

नायक जाति की घृणित वेश्यावृत्ति के बिरुद्ध आपने भरसक आन्दोलन किया और इस कुप्रथा को नष्ट कराकर ही छोड़ा।

श्री पं. तुलसी राम स्वामी मेरठ

सामवेद भाष्यकर पं० तुलसीराम जी स्वामी, मेरठ

आप वैदिक वाङ्मय के अद्वितीय विद्वान् तथा आर्वसमाज के कर्मठ नेता थे। आपने सामवेद पर सुन्दर वैदिक भाष्य की रचना की है। मनु-स्मृति का शंसोधन कर उसका सुन्दर अनुवाद किया। अनेक दर्शन व उपनिषदों के भाष्य किए। आपने अपने जीवन काल में ५० के लगभग अनुपम ग्रन्थों का निर्माण कर आर्य जाति की महती सेवा की।

आर्यप्रतिनिधिसभा के निर्माण एवं विकास में भी आपका विशेष हाथ रहा है। सन् १९०९ से १९१३ ई० तक आप सभा के प्रधान रहे हैं। गुरुकुल वृन्दावन में भी आपने विशेष कार्य किया है।

आपके ही प्रधानत्व में सभा का गुरुकुल फर्रुखावाद से उठाकर वृन्दावन में लाया गया। गुरुकुल को वृन्दावन में जमाने में आपने विशेष प्रयत्न किया है। गुरुकुल विरालसी एवं अनेक आर्यसमाजों की स्थापना में भी आपका हाथ रहा है।

श्री पं० घासीराम जी एम०ए०

श्री पं० घासीराम जी एम० ए० मेरठ
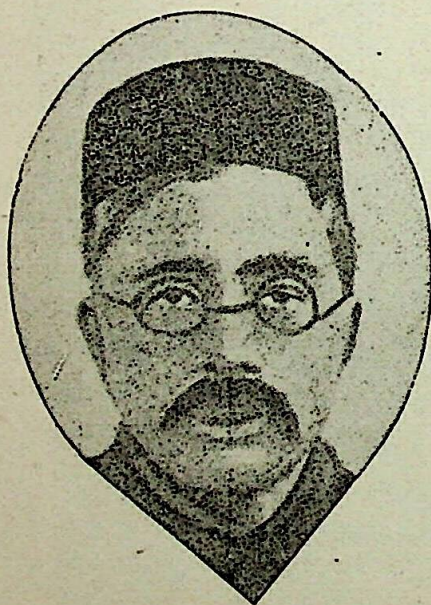
आप आर्यसमाज के महान् नेता गम्भीर वक्ता एवं विख्यात लेखक थे। आप संस्कृत, हिन्दी, बंगला, उर्दू, फारसी अंग्रेजी आदि भाषाओं के पंडित थे। अत्यन्त सरल स्वभाव एवं विनोद प्रिय व्यक्ति थे।

आर्य प्रतिनिधि सभा से आपका सर्व प्रथम सम्बन्ध १९११ ई० में हुआ। आप अनेक वर्षों आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान, गुरुकुल महाविद्यालय वृन्दावन के आचार्य एवं मुख्याष्ठिाता रहे। सार्वदेशिक सभा की संगठना में भी आपका विशेष हाथ रहा है।

श्री देवेन्द्र जी मुखोपाध्याय द्वारा बंगला भाषा में रचित महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के जीवन चरित्र को अनुदित कर आपने आर्यजगत् की अनुपम

सेवा की है। ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका का आंगल भाषा में अनुवाद कर के विदेशों में दयानन्द के संदेश को पहुंचाने का सुन्दर कार्य किया है।

आपका मेरठ के सब ही धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक क्षेत्रों में में सहयोग रहा है। आपकी स्वाध्याय सुमन आदि अनेकों रचनायें हैं। सन् १९१७ ई० में आप कुछ काल तक सार्वदेशिक सभा के प्रधान भी रहे हैं।

श्री स्वा० सर्वदानन्द जी

आप आर्यसमाज के महान् तपस्वी, त्यागमूर्ति, विद्वान लेखक एवं आदर्श प्रचारक थे। आपकी भाषण शैली अत्यन्त सरल किन्तु हृदय को स्पर्श करने वाली थी। आपके प्रवचनों को सुनने के लिए हिन्दू मात्र लालायित रहता था। आपने देश के कोने कोने में घूम कर वैदिक धर्म का पावन संदेश दीर्घकाल तक पहुंचाया है।
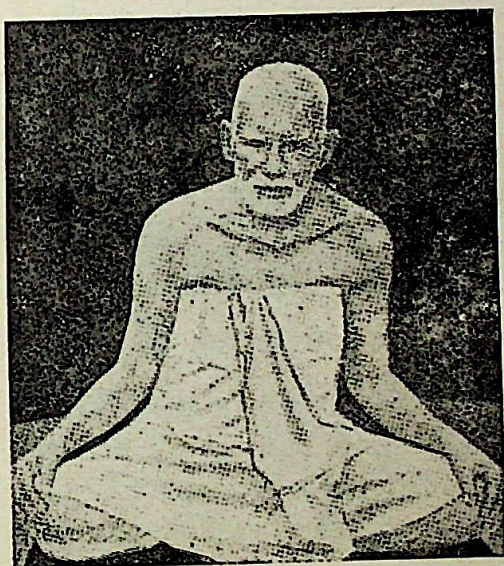
स्वामी सर्वदानन्द जी साधु आश्रम–हरदुआगंज, अलीगढ़

हिन्दू साधु सन्यासियों को आर्य समाज का प्रचारक बनाने की आप की तीव्र अभिलाषा थी। इसी दृष्टि से आपने कालिन्दी के तट पर हरदुआगंज के निकट साधु आश्रम की स्थापना की। और अनेकों साधुओं को आर्य धर्म का प्रेमी प्रचारक बनाया।

आपकी अमर कृतियों में सन्मार्ग-दर्शन, एवं कल्याण का मार्ग नामक पुस्तकें विशेष महत्वपूर्ण हैं।

श्री स्वा० श्रद्धानन्द जी:—आपके स्व० पिता नानकचन्द जी उत्तर प्रदेश में पुलिस विभाग में कर्मचारी थे। स्वामी जी के बाल्यकाल के दस वर्ष अपने पिता जी के साथ बदायूं, लखनऊ आदि में बीते।
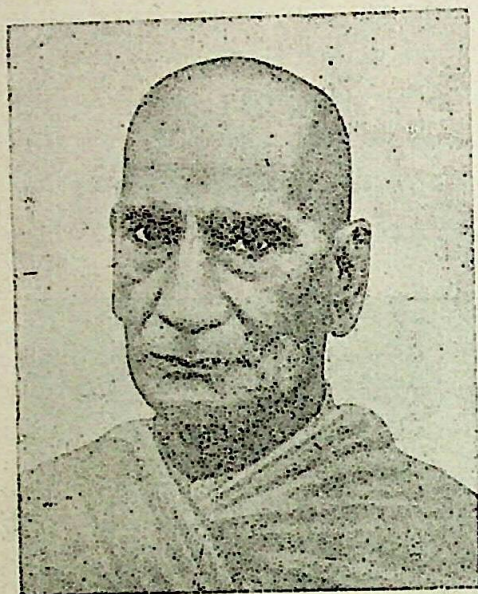
स्वामी श्रद्धानन्द जी (महात्मा मुन्शीराम)

दस वर्ष की आयु में आप अपने मामा के यहां वाराणसी में शिक्षा प्राप्त के निमित्त स्थायी रूप से चले गए।आप के पिता जब बरेली में कोतवाल थे तब स्वामी दयानन्द जी महाराज का वहां पदार्पण हुआ। श्री नानकचन्द जी अपने पुत्र मुन्शीराम को जो उस समय बरेली में आए हुए थे व्याख्यानों में ले जाने लगे। व्याख्यानों का मुन्शीराम के जीवन पर क्रान्तिकारी प्रभाव पड़ा। मुन्शीराम जी ने वकालत पास कर लाहौर में प्रैकटिस आरम्भ की और वहां उन्होंने आर्यसमाज में विधिवत प्रवेश किया। सत्यार्थ प्रकाश का गम्भीर अध्ययन किया।। सद्धर्म प्रचारक पत्र निकाला और समाजों में भाषण देना आरम्भ किया। शनैः २ आप पंजाब सभा के गणमान्य नेताओं की श्रेणी में पहुंच गये तत्पश्चात् वकालत छोड़ कर आपने गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की और अपने दोनों लड़कों को सर्व प्रथम उसमें प्रविष्ट किया। और इस प्रकार आपका कार्य क्षेत्र उत्तर प्रदेश विशेष रूप से बन गया।

आप उग्र राष्ट्रवादी थे। सन् १९१९ ई० में अमृतसर कांग्रेस के आप स्वागताध्यक्ष बने। सन् १९२१ ई० में आपने देहली में सत्याग्रही जत्थे का नेतृत्व किया। चांदनीचौक मे गोरा फौज ने आपको रोका तो आपने सींना तान कर गोरों की गोली चलाने के लिये आव्हान किया। प्रसिद्ध आर्यसमाजी होते हुये भी देहली की मसजिद में आपको सर्वोच्च आसन पर आसीन होकर भाषण करने के लिए मुसलमानों की ओर से अनुरोध किया गया।

सन् १९२३ई० में आपने आगरे में भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा की स्थापना की और लाखों मूले जाट एवं मलकाने राजपूतों को हिन्दू धर्म में प्रविष्ट कराया।

सन् १९२६ ई० को जब आप रुग्ण थे, घातक अब्दुल रशीद ने आप पर पिस्तौल से वार किया और शहीद हुये।

कवि सम्राट् पं० नाथूराम शर्मा शंकर हरदुआगंज अलीगढ़
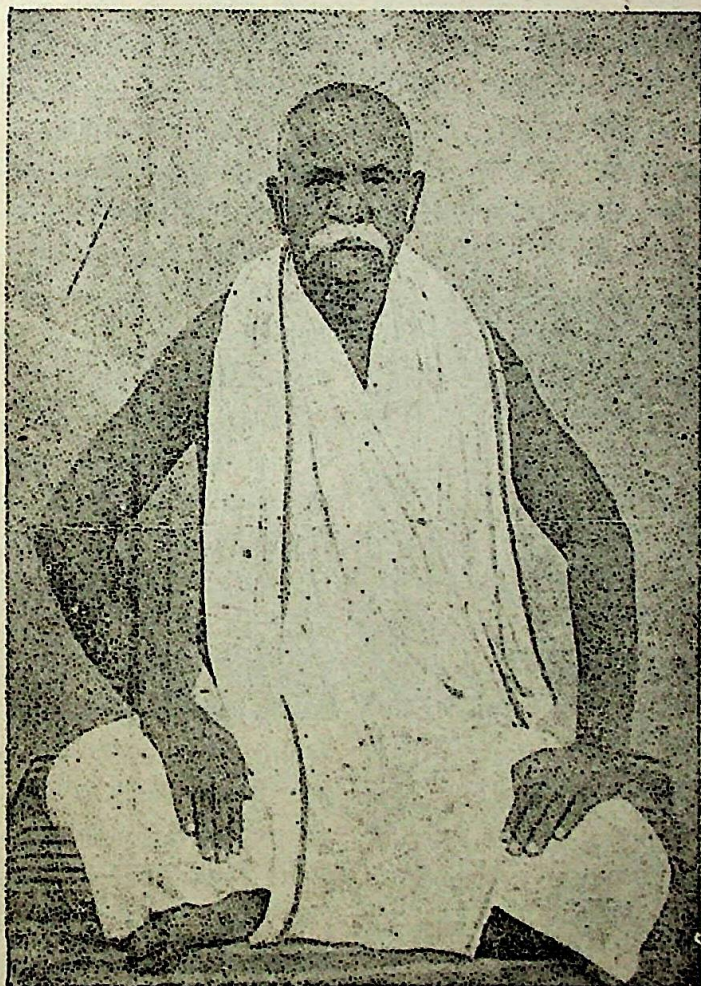
कवि सम्राट् पं० नाथूराम शर्मा

पंडित जी का जन्म चैत्र सुदी ५ सं० १९१६ वि० में हुआ था आप उन व्यक्तियों में से थे जिन्होंने अपने इस जीवन में महर्षि के दर्शन करने एवं प्रवचन सुनने का सौभाग्य प्राप्त किया है। आप ऋषि के अनन्य भक्त थे और आपकी लेखनी ऋषि गुण करने में कभी नहीं थकती थी। महर्षि दयानन्द जन्म शताब्दी मथुरा के अवसर पर हुए विराट् कवि सम्मेलन के आप ही सभापति थे। देहली के अखिल भारतीय-हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अवसर पर जो विराट् कवि सम्मेलन हुआ था उसके सभापति भी आप ही थे।

आपकी गणना आशुतोष कवियों में की जाती है और आपको भारतेन्दु काल का हिन्दी जगत् का कवि सम्राट् माना जाता है। आपने केवल अपना जीवन ही आर्य समाज के लिये समर्पित नहीं किया अपितु अपने पुत्र श्री पं० हरिशंकर जी शर्मा कविरत्न को भी आर्य समाज के लिये निछावर कर दिया। आपकी अनेक रचनाएँ हैं। जो हिन्दी जगत् में विशेष आदर से पढ़ी जाती हैं, यथा अनुराग रत्न, शंकर-सरोज आदि।
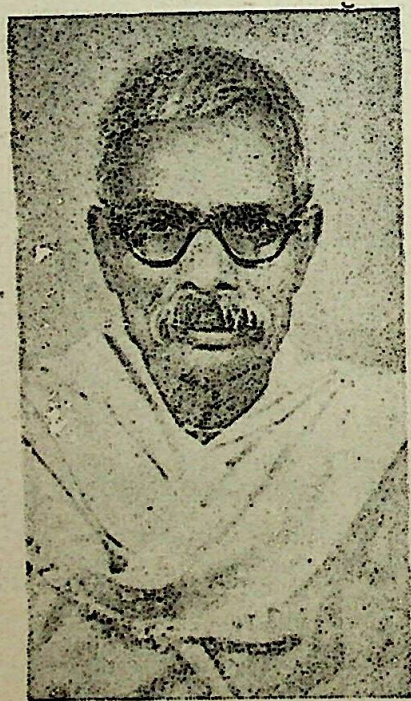
पं० नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ, ज्वालापुर

स्वर्गीय पंडित जी का जन्म मराठवाड़ी हैदराबाद राज में हुआ था और १४ वर्ष की आयु पर्यन्त आपकी शिक्षा महाराष्ट्र में ही हुई। तदुपरान्त आप दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कालेज लाहौर चले गये। सन् १९०७ ई० में कलकत्ते में पं० सत्यव्रत सामाश्रमी के पास अध्ययन करते हुए आपने वेदतीर्थ परीक्षा उत्तीर्ण की। कुछ काल गुरुकुल कांगड़ी में अध्यापन कार्य कर आप फर्रुखावाद गुरुकुल में आचार्य बनकर चले गये। फिर कुछ समय बाद गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में आ गये। और वहाँ ही मुख्याधिष्ठाता, कुलपति आदि पदों

पर जीवन के अन्त समय तक कार्य करते रहे ।

महाविद्यालय के वर्तमान उन्नत स्वरूप का सर्वाधिक श्रेय आप ही को प्राप्त है । आप कांग्रेस के भी कर्मठ कार्यकर्त्ता थे । सन् १९३० ई० से ४२ तक के स्वातन्त्र्य आन्दोलनों में आपने विशेष भाग लिया और ५ बार जेल यात्रा की ।

सन् १९४९-५० में आप कांग्रेस पार्टी द्वारा उत्तरप्रदेशीय विधान सभा के सदस्य बनाए गये । किन्तु विधान सभा में रहते हुए आपने स्वाभिमान एवं विचार स्वातन्त्र्य को कभी नहीं हाथ से जाने दिया ।

जहाँ आप एक प्रवीण वक्ता थे वहाँ साथ ही एक सफल लेखक भी थे । आपकी अनेक ऋग्वेदालोचन, गीताविमर्श आदि रचनाएँ हैं ।

श्री पं० क्षेमकरणदास त्रिवेदी
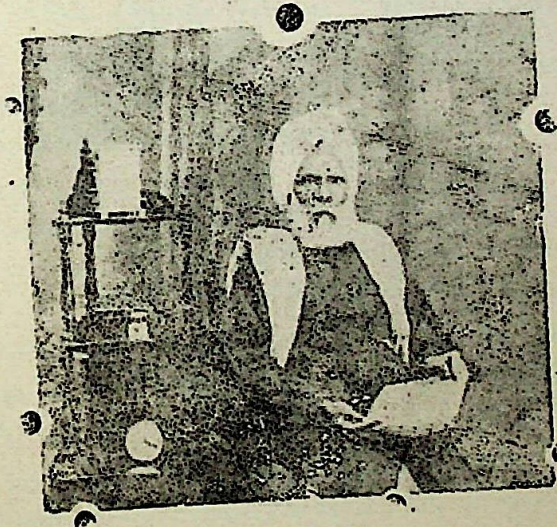
पं० क्षेमकरणदास त्रिवेदी, प्रयाग

आप आर्य जगत् के उच्चकोटि के विद्वान्, वैदिक वाङमय के मर्मज्ञ थे । आपने अथर्ववेद पर सुन्दर प्रामाणिक भाष्य किया है । गोपथ-ब्राह्मण पर भी भाष्य आपने ही किया है । आपने अन्य अनेक पुस्तकें भी लिखी हैं । आप आर्य समाज चौक प्रयाग के अनेक वर्ष प्रधान रहे आपका सारा जीवन वैदिक साहित्य निर्माण एवं उसके प्रकाशन करने में व्यतीत हुआ ।

आपका जन्म श्रावण शुक्ला १४ सं० १९४१ वि० में बुलन्दशहर में हुआ। शिक्षाकाल में आप अत्यन्त कुशाग्र बुद्धि विद्यार्थी थे। बी० ए० में आपने रिपन स्कालर शिप उपलब्ध किया। सन् १९०९ ई० में आपने एम० ए० तथा सन् १९०९ में वकालत पास कर बुलन्दशहर में प्रैक्टिस करने लगे। गये। छात्रावस्था में ही आपकी अभिरुचि आर्य समाज के प्रति हो गई थी। सन् १९०९ ई० में आपको बुलन्दशहर आर्य समाज का मन्त्री बनाया गया। और सन् १९११ ई० में आप सभा के मन्त्री बना दिये गये।

श्री मदनमोहन सेठ
एम० ए० बुलन्दशहर

आचार्य रामदेव जी की प्रेरणा पर आपने जब आर्य समाज पर राष्ट्रद्रोही होने का सरकार की ओर से आरोप लगाया गया, वैदिक मैगजीन में "आर्य समाज राजनीतिक संस्था नहीं है" शीर्षक एक खुला-पत्र लिखा। प्रान्त के गवर्नर लार्ड मौरले के पास यह पत्र भेजा गया। पत्र में आपने सरकारी आरोपों का युक्ति पूर्वक खंडन किया था।

कुछ काल बाद आप मुन्सिफ वना दिये गये। इस सरकारी पद पर रहते हुए भी आप आर्य समाज का कार्य पूरे उत्साह से निर्भयता पूर्वक करते रहे। हिन्दी के आप प्रबल समर्थक थे। न्यायालय में अपने फैसले सर्वप्रथम हिन्दी में लिखने का श्रेय आपको ही है। आपने ८ वर्षों तक सभा के प्रधानपद को भी सुशोभित किया।

मथुरा में ऋषि की जन्म शताब्दी मनाने का विचार सर्व प्रथम आपके ही मस्तिष्क में उत्पन्न हुआ। आपने सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान पद को भी दो वर्ष तक सुशोभित किया। आप अत्यन्त हंसमुख, नम्र और कर्त्तव्य-निष्ठ व्यक्ति थे। अचानक १० मार्च १९५६ को हृदयगति के रुक जाने से आपका लखनऊ में निधन हो गया।

श्री पं० मुरारी लाल शर्मा:-आप आर्य जगत् के प्रसिद्ध शास्त्रार्थ महारथी थे। जीवन में सैंकड़ों शास्त्रार्थ-पौराणिकों, ईसाइयों, मुस्लमानादि से आपने किये हैं। और आपके
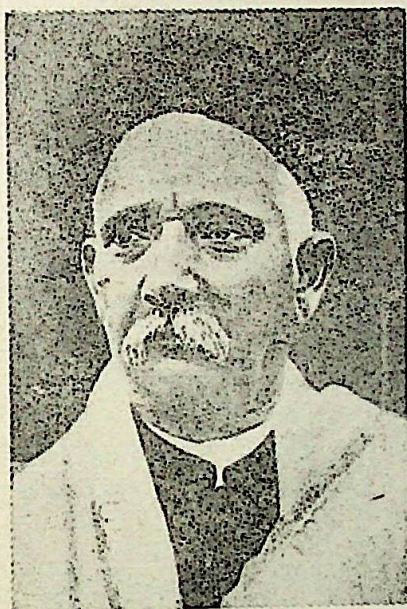
शास्त्रार्थ महारथी पं० मुरारीलाल शर्मा, गुरुकुल सिकन्दराबाद (बुलन्दशहर)

प्रभाव से आर्य समाज को सर्वथा विजयश्री का ही दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। आप अत्यन्त प्रभावशाली वक्ता थे। आपके व्याख्यानों का प्रभाव सर्वसाधारण जनता पर जादू का असर करता था। गुरुकुल सिकन्दराबाद के तो आप प्राण ही थे। सिकन्दराबाद गुरुकुल फर्रुखावाद चले जाने पर उसका आपने पुनरुद्धार किया। आपने अनेकों स्थानों पर आर्य समाज की स्थापना की और जीवन पर्यन्त वैदिक मिशनरी के रूप में कार्य किया। आगरा, मथुरा, भरतपुर, के मूले जाट और मलकाने राजपूतों की शुद्धि में आपका विशेष हाथ था। इस शुद्धि आन्दोलन में स्वामी श्रद्धानन्द जी के आप दाएँ हाथ थे।

माता लक्ष्मी देवीः—आप उत्तर प्रदेश महिला जगत् की प्रमुख कार्यकर्त्ता रहीं। आपका पारिवारिक स्थान बरेली था। बचपन में आप अपने ताऊ बैरिस्टर रोशनलाल जी के पास रहीं जो लन्दन में आर्य समाज की संस्थापना कर आये थे। उनके आर्य विचारों का आप पर विशेष प्रभाव पड़ा।

बरेली में श्री डा० श्यामस्वरूप सत्यव्रत जी के परिवार से सम्पर्क स्थापित होने पर आपने बरेली में ही स्त्री शिक्षा का कार्य आरम्भ कर दिया।

आप जाति भेद के विरुद्ध थीं आपने अपनी एक मात्र पुत्री अक्षयकुमारी का विवाह जाति बन्धन तोड़कर श्री प्रो० महेन्द्र प्रताप जी शास्त्री एम० ए० के साथ किया।

२८-७-३१ को हाथरस में आपने कन्या गुरुकुल की स्थापना की। श्री महात्मा नारायण स्वामी जी ने गुरुकुल को आशीर्वाद दिया और कुलपति

माता लक्ष्मी देवी जी,
कन्या गुरुकुल हाथरस

बने। गुरुकुल के निर्माण और विकास में आपने समस्त जीवन अर्पण कर दिया। आपका समस्त जीवन तप त्याग एवं संयम से भरपूर रहा।

उत्तर प्रदेश तथा भारत भर में महिला जागरण में आपने विशेष कार्य किया। राष्ट्रीय आन्दोलन में भी सहायता पहुंचाई। हैदराबाद के सत्याग्रह में आपने विशेष सहयोग दिया। हिन्दी आन्दोलन में सहायता की, आपने आन्दोलन करके कल्याणी देवी पुत्री श्री महेश प्रसाद जी को वेदाध्ययन की आज्ञा बनारस विश्वविद्यालय से दिलायी।

आप आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान्, लेखक, विचारक, एवं नेता थे। सन् १९४१ से ४५ ई० तक आप आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के मन्त्री रहे।

वैदिक संस्थान के प्रमुख कार्यकर्त्ताओं में से थे। सभा के अनेक विभागों में आप उत्तरदायित्वपूर्ण पदों पर रहे हैं। आपने अनेक पुस्तकें सम्पादित की हैं।

पं० रामदत्त जी शुक्ल
एम०ए० वकील, लखनऊ
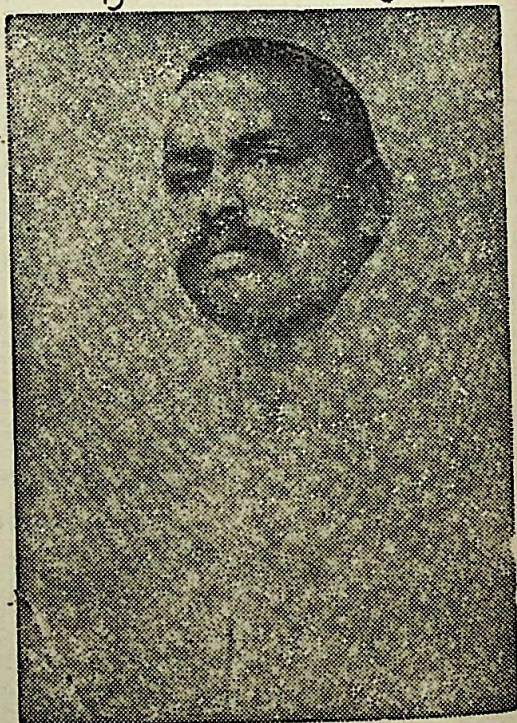
जिनमें वैदिक-निघण्टु, पिप्पलाद-संहिता, आत्म शारीरिकोपनिषद् प्रमुख हैं। आप आर्य जगत् के महान् प्रचारक स्व० पं० नन्दकिशोर देव शर्मा के सुपुत्र थे।

आपका जन्म बस्ती जिले का है। शिक्षण भी यहाँ ही हुआ। बाद में आपका कार्य क्षेत्र बिहार बन गया। आप आर्य समाज के कर्मठ नेता एवं

स्वामी अभेदानन्द (श्री वेदव्रत वानप्रस्थी) पटना

प्रचारक थे। भारत के स्वाधीनता संग्रामों में आपने आगे बढ़कर कार्य किया। स्व० डा० राजेन्द्र प्रसाद जी के आप परम स्नेही सहयोगी एवं कृपापात्र थे। बिहार में आपने आर्य समाज का दीर्घकाल तक अनथक प्रचार किया। बिहार सभा के आप मुख्य कार्यकर्त्ता थे। सन् १९५७-५८ में जब देश में हिन्दी रक्षा आन्दोलन चल रहा था आप सार्वदेशिक सभा के प्रधान रहे। बाद में आपने वैदिक धर्म प्रचारार्थ मारीशस, अफ्रीका की यात्रा की और वहाँ ही अकस्मात् आपका निधन हो गया।

ठा० खमानसिंह जी, औरंगाबाद (अलीगढ़)
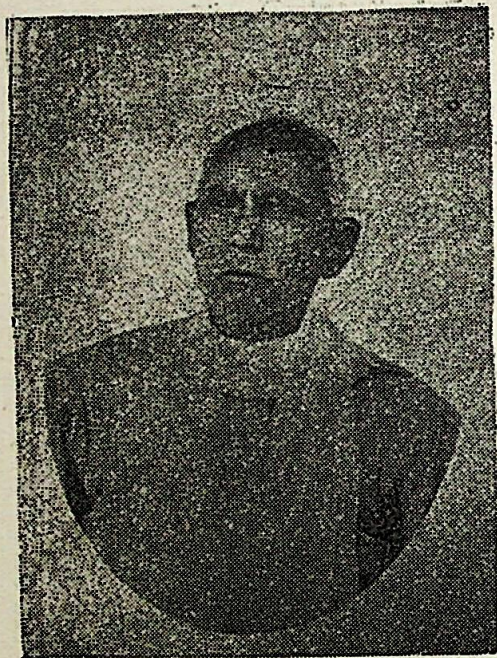
आर्य समाज के पुराने आदर्श कर्मयोगी थे। आर्य समाज के प्रारम्भिक युग में नाना प्रकार के कष्ट उठाकर आपने वैदिक धर्म का प्रचार किया है। शुद्धि एवं दलितोद्धार कार्यों में विशेष रुचि रखते थे। अब से ३५ वर्ष पूर्व बरौठा ग्राम में वृहद्-यज्ञ कराके सैकड़ों चमारों को यज्ञोपवीत धारण कराना और सहभोज रचना और बिरादरी के कोलाहल की तनिक चिन्ता न करना आपकी लगन एवं साहस का द्योतक है। श्री डा० महावीर सिंह रि० सिं० सर्जन प्रधान मध्य भारत आर्यप्रतिनिधि सभा ग्वालियर आपके ही सुपुत्र हैं।

श्री ठा० मलखान सिंह बी० एस० सी० अलीगढ़

आप आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता थे। जिले में अनेक आर्य समाजों की स्थापना की। कोल्हापुर राजाराम कालेज में सभा की ओर से आप प्राध्यापक नियुक्त करके भेजे गये थे। आपने स्वतन्त्रता आन्दोलन में विशेष भाग लिया। अनेक बार वृटिश सरकार की जेलों की शोभा बढ़ाई। आप विधान सभा के सदस्य चुने गये और प्रान्त में मिनिस्टर भी रहे।

शास्त्रार्थ महारथी शिवस्वामी (पं० शिवशर्मा जी) सम्भल, मुरादाबाद

आप आर्य समाज के प्रसिद्ध वक्ता, विद्वान्, लेखक एवं शास्त्रार्थ पटु व्यक्ति थे। आपका सारा जीवन वैदिक धर्म के प्रचार में ही व्यतीत हुआ। वर्षों तक आपने सभा के उपदेशक विभाग को सुशोभित किया। आपने अनेक

पुस्तकें भी खंडन-मंडन की लिखी हैं। आपकी लिखी धर्म-शिक्षा आर्य विद्यालयों में विशेष रूप से प्रचलित हैं। विरोधियों ने आप पर अभियोग भी चलाया। किन्तु आपने उसकीं कोई चिन्ता नही की। और प्रचार कार्य में सतत रत रहे। इस संसार से विदा होने के कुछ वर्ष पूर्व आपने चतुर्थ आश्रम में प्रवेश किया।

पं० जियालाल अजमेर

आप जिला बुलन्द शहर के निवासी आर्य जगत् के कर्मठ कार्यकर्त्ता एवं राजस्थान के आर्य नेता थे। आपका जन्म, शिक्षा आदि बुलन्दशहर में हुई किन्तु विशेष कार्य क्षेत्र अजमेर रहा। अजमेर दयानन्द कालेज के निर्माण में आपका विशेष हाथ था। राजस्थान में घूम २ कर आपने आर्यसमाज का प्रचार किया। हैदराबाद सत्याग्रह में आप सत्याग्रहियों की एक स्पेशल लेकर पहुंचे थे।

सम्पादकाचार्य पं० पद्म सिंह शर्मा, बिजनौर

आपकी जन्म भूमि नायक नगला जिला बिजनौर है। आपने पं० भीमसेन शर्मा आगरा की संस्कृत पाठशाला में रहकर अष्टाध्यायी पढ़ी फिर काशी, मुरादाबाद, लाहौर, जालन्धर, ताजपुर (बिजनौर) में विशेष विद्याभ्यास किया। संस्कृत हिन्दी के अतिरिक्त उर्दू, फारसी का भी आपका अच्छा ज्ञान था।

सन् १९०४ ई० से आपने गुरुकुल कांगड़ी में शिक्षण कार्य किया और स्वामी श्रद्धानन्द जी के 'सत्यवादी' हिन्दी साप्ताहिक का पं० रुद्रदत्त जी सम्पादकाचार्य के साथ मिलकर सूचारु रूप से सम्पादन किया।

सन् १९०८ ई० में अजमेर जाकर परोपकारिणी सभा में ग्रन्थों का सम्पादन किया। भारतोदय नामक पत्र के आप ही सम्पादक रहे है। अनेक

वर्षों तक महाविद्यालय ज्वालापुर में कार्य करने के उपरान्त सन् १९१५ ई० में काशी जाकर ज्ञान मण्डल से प्रकाशित होनेवाली पुस्तकों का सम्पादन किया। सन् १९२१ ई० में मुरादाबाद में हुए प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन के आप ही अध्यक्ष थे।

सन् १९२४ ई० में 'बिहारी सतसई' पर आपको मंगला प्रसाद पारतोषिक प्रदान किया गया। आप प्रवीण लेखक एवं कवि थे। पद्मरागा एवं कादम्बरी आदि आपकी रचनाएँ हैं।

अमर शहीद ला० बद्री शाह जरवल (बहराइच):—

अमर शहीद लाला बद्री शाह
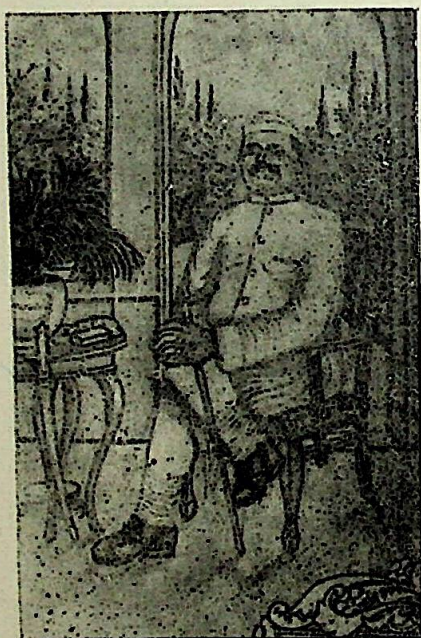
आपने उच्चकोटि के आर्य उपदेशकों को बुलाकर मुस्लिम आतंक त्रस्त बहराइच जिले के विभिन्न क्षेत्रों में प्रचार कराया। सन् १९२० ई० में हिन्दू संघ बना कर प्रचार कार्य को और अधिक बल दिया। सैयद सालार के मेले में डटकर प्रचार किया। स्वामी श्रद्धानन्द जी एवं नारायणस्वामी जी की छत्र-छाया में शुद्धि एवं शास्त्रार्थों का आयोजन कर विरोधियों की चूलें हिलादीं।

२० जून सन् १९२७ ई० को जब आप डिस्ट्रिक्ट बोर्ड की मीटिंग से वापस आ रहे थे आपको मुस्लमान गुण्डों ने कत्ल कर दिया। वीर हुतात्मा के मृत्यु संस्कार के समय अमेठी, कालाकांकर, बैसबाड़ा आदि के सब राजे पहुंचे हुए थे।

स्वामी रामानन्द जी
(श्री रामप्रसाद जी मुख्तार)
नैनीताल :—

आप आर्य समाज के महान् कर्मठकार्यकर्त्ता थे। आपके ही विशेष परिश्रम से नैनीताल में आर्यसमाज के नवीन भव्य मंदिर का निर्माण सम्भव हुआ। आपने कुमाऊँ के क्षेत्र में आर्य-समाज के प्रचार कार्य को विशेष बल दिया है।
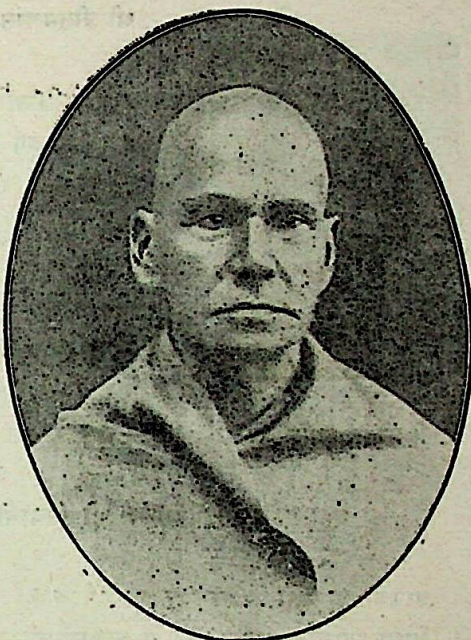
स्वामी रामानन्द जी

नैष्ठिक ब्रह्मचारी स्वामी नित्यानन्द सरस्वती

आपका जन्म ग्राम जालोर (राजस्थान) का है। आपके पिता श्री पुरुषोत्तम श्रीमाली थे। सन् १८९१ ई० में पं० कृपाराम जी (स्वामी दर्शनानन्द जी) मिर्जापुर पधारे और बालक नित्यानन्द के लिये ५) मासिक की व्यवस्था कर श्री मक्खन राय त्रिपाठी के साथ काशी पढ़ने भेजा। यही ब्रह्मचारी काशी में पढ़कर उच्चकोटि का वैदिक विद्वान् परम ओजस्वी-वक्ता स्वामी नित्यानन्द सरस्वती बना, जिसके चरणों में राजे महाराजे नतमस्तक होते थे। आपने जीवन पर्यन्त वैदिक धर्म के पावन संदेश को भारत के कोने-कोने में गुञ्जारित किया। देश के दौर्भाग्य-वश आपने अधिक आयु नहीं पाई। आपकी पावन स्मृति में काशी में नित्यानन्द वेदविद्यालय की स्थापना की गई।

श्री प्रीतमलाल जी एम० ए०, ऐडवोकेट अलीगढ़ :—
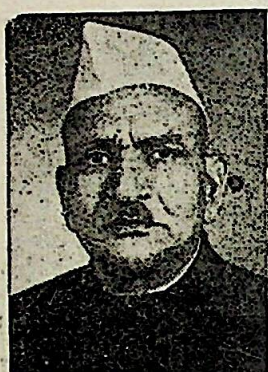
श्री प्रीतम लाल जी

आप आर्यसमाज के प्रसिद्ध कर्मठ कार्यकर्त्ता रहे हैं। ५ वर्ष तक आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के आप मंत्री तथा बाद में प्रधान भी रहे। वैदिक आश्रम अलीगढ़ के आप अधिष्ठाता रहे। कन्या गुरूकुल हाथरस के संचालन में भी आपका सहयोग रहा। कोल्हापुर राजाराम कालेज में आप प्राध्यापक रहे। अलीगढ़ की आर्यसामाजिक प्रगतियों में आपका विशेष हाथ रहा है।

ब्रह्मचारी आनन्द प्रकाश जी (स्वामी आनन्दतीर्थ)

आपका जन्म डींग भरतपुर का है। आपने मथुरा में पं० बनवारीलाल जी (शिष्य स्वामी दयानन्द जी) से अष्टाध्यायी पढ़ी। तत्पश्चात् सन् १९१५ ई० में आप महाविद्यालुय ज्वालापुर में आ गये। और जीवन पर्यन्त अपने ओजस्वी भाषणों द्वारा उत्तर भारत में वैदिक धर्म का प्रचार करते रहे।

स्व० स्वामी आत्मानन्द जी, कानपुर

आप महर्षि दयानन्द के प्रमुख शिष्यों में थे। स्वामी जी महाराज के साथ अनेक वर्षों तक आप रहे हैं और उनके हृदय की क्रान्तिकारी भावनाओं का आपको अच्छी प्रकार से ज्ञान था। एक बार ऋषि दयानन्द ने इन पर अपनी यह हार्दिक इच्छा व्यक्त की थी, कि यदि वह चारों वेदों का भाष्य करके एक वार समस्त भारतवर्ष का दौरा कर जाएं तो उनका व्रत पूर्ण हो जाय। ऋषि ने यह भी कहा था कि उनको इस व्रत के पूर्ण होने की सम्भावना प्रतीत नहीं होती। स्वामी आत्मानन्द जी प्रभावशाली वक्ता थे। आपने भारतवर्ष के बाहर लंका आदि में भी प्रचार किया था। कानपुर में स्वामी का देहावसान हुए पर्याप्त समय व्यतीत हो चुका है।

श्री म० श्रीराम जी आगरा :—

आगरे के मूर्धन्य कार्यकर्त्ताओं में आपकी गणना है। आर्यसमाज आगरा के बनाने में आपका बड़ा सहयोग रहा है। अनेकों वर्षों तक आप गुरुकुल विश्व
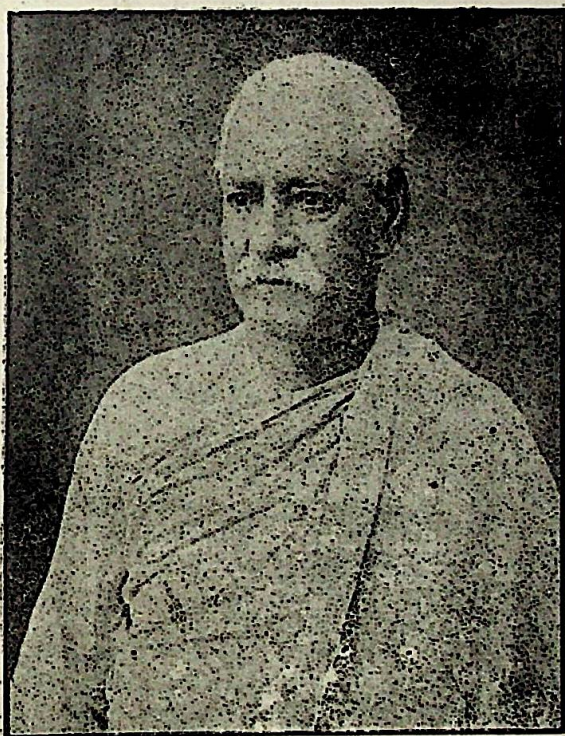
श्री म० राम जी

विद्यालय वृन्दावन के मुख्याधिष्ठाता रहे, शुद्धि सभा के क्षेत्र के भी आप महारथी थे। सभा के पत्र तथा प्रेस विभाग के भी आप अधिष्ठाता रहे हैं।

श्री बा० नाथमल जी आगरा :—

आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता थे। सरकारी दफ्तर से आते ही आप आर्य समाज की सेवा में जुट जाते थे। आर्यमित्र और आर्यभास्कर प्रेस के

आप अनेकों वर्षों तक अधिष्ठाता रहे दयानन्द ऐंग्लो वैदिक हाई स्कूल के आप जन्म दाता थे। शुद्धिसभा आगरा के प्रधान रहे और शुद्धि कार्य में स्वामी श्रद्धानन्द के परम सहयोगी थे।

स्वामी त्यागानन्द जी सरस्वती, गुरुकुल अयोध्या फैजाबाद

आपका जन्म देवरिया जिले में कार्तिक शुक्ला ११ सं० १९४० वि० को हुआ। अत्यन्त कुशाग्र बुद्धि होने के कारण शीघ्र ही विद्या पारंगत को आपने कार्य क्षेत्र में पदार्पण किया। आप निर्भीक कर्मठ सन्यासी एवं ओजस्वी वक्ता थे। संस्कृत में धारा प्रवाह बोलने के अभ्यासी थे। त्याग, अनुशासन, सदाचार आपके जीवन के आभूषण थे। आपने मर्यादा पुरुषोत्तम राम की जन्मभूमि अयोध्या में सूर्य के तीर गुरुकुल महाविद्यालय की स्थापना की और जीवन पर्यन्त उसकी सेवा करते रहे।

१७ मार्च सन् १९६० ई० को आपने अपनी जीवन लीला समाप्त की।

श्री शिवशंकर सहाय जी, लखनऊ

आर्य समाज लखनऊ के कर्मठ कार्यकर्त्ता रहे हैं। नगर आर्य समाज के तो आप प्राण थे। सन् १९२१ ई० के आन्दोलन में आपने सरकारी नौकरी त्यागकर सप्याग्रह आन्दोलन में भाग लिया। अनेक बार कारागार की शोभा बढ़ाई।

पं० बाबूलाल नागर मुरसान, अलीगढ़

मुरसान में महर्षि के उपदेशों से प्रभावित होकर आप दृढ़ आर्य समाजी बने। जीवन पर्यन्त अनवरत परिश्रम, महान् अध्यवसाय एवं निस्वार्थ भाव से आपने वैदिक धर्म का प्रचार किया। आप एक प्रसिद्ध पौराणिक कर्मकाण्डी विद्वान् थे। अपनी पुष्कल वृत्ति को त्यागकर आर्य समाज में आना आपके त्याग का ज्वलन्त उदाहरण है।

ठाकुर माधव सिंह जी आगरा

आर्य समाज के पुराने कर्मठ तपस्वी कार्यकर्त्ता थे। भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के आप प्रधान मन्त्री थे। मलकानों एवं मूले जाटों की शुद्धि में स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज एवं महात्मा हंसराज जी को आपका विशेष सहयोग

था। मथुरा में जो विराट् शुद्धि सम्मेलन हुआ था उसमें आपका विशेष हाथ था। गुरुकुल वृन्दावन एवं सभा के अन्य कार्यों के लिये आप बड़े उत्साह के साथ धन संग्रह करके सहयोग देते रहे। साइमन कमीशन के विरोध में आप। विशेष प्रदर्शन किया। आगरा क्षेत्र की आर्य सामाजिक एवं सार्वजनिक जाग्रति के आप प्राण थे।

बा० गौरीशंकरप्रसाद वकील, वाराणसी

आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता एवं वाराणसी की शैक्षणिक सांस्कृतिक प्रगतियों में आपका विशेष भाग रहा है। नित्यानन्द वेद-विद्यालय एवं डी० ए० वी० कालेज के आप संचालक रहे हैं तथा आपने सभा के उप प्रधान पद पर रह कर भी कार्य किया।

बाबूगौरी शंकर प्रसाद वकील

स्वामी आत्मानन्द सरस्वती (आचार्य मुक्तिराम) वैदिक साधना आश्रम, यमुनानगर

आपका जन्म ग्राम अनछाड़ जिला मेरठ में हुआ। मेरठ ही में आपका शिक्षण आरम्भ हुआ। बाद में काशी जाकर आपने महाभाष्य एवं दर्शनों का अध्ययन किया। स्वामी दर्शनानन्द जी की प्रेरणा से आप गुरुकुल पोटोहार (रावलपिंडी) के आचार्य बनकर पंजाब चले गये और वहां ही

आपके जीवन का भावी कार्य क्षेत्र बन गया। आप अत्यन्त सौम्य,सरल स्वभाव, सहृदय व्यक्ति थे। भारत विभाजन के उपरान्त रावलपिण्डी पाकिस्तान में चला गया और गुरुकुल समाप्त हो गया। आपने वहाँ से आकर यमुना नगर (अम्बाला) से साधना आश्रम बनाया। लाहौर से पंजाब का उपदेशक विद्यालय भी यहां ही आ गया और आपकी संरक्षता में चलने लगा। आपने पंजाब सभा के प्रधान पद को भी एक वर्ष सुशोभित किया।

स्वामी सत्यदेव परिव्राजक, ज्वालापुर

आप आर्य जगत् के प्रसिद्ध संन्यासी, लेखक, परिव्राजक एवं राजनैतिक क्षेत्र के महारथी थे। आपने अपने जीवन में अनेक वार देश-देशान्तरों की यात्रा की।

भारत स्वाधीनता संग्राम में आपने विशेष भाग लिया। सामाजिक क्रान्ति के भी आप प्रबल समर्थक थे। राष्ट्र-भाषा हिन्दी के महान् प्रचारक थे। अनेक वर्षों तक दक्षिण भारत में आपने हिन्दी भाषा का प्रचार किया है। विचार स्वातन्त्र्य के आप महान् पुजारी थे। आपने लगभग समस्त सम्पत्ति काशी नागरी प्रचारणी सभा को भेंट कर दी। अखिल भारतीय राजार्य सम्मेलन लखनऊ में पधार कर भारत की राजनीतिं में नया मोड़ देने का आपने जनता को दिव्य संदेश दिया था।

अपने जीवन में आपने ३० से ऊपर हिन्दी के ग्रन्थ लिखे हैं।

स्वामी शुद्धबोधतीर्थ (आचार्य गंगादत्त जी) बेलौन बुलन्दशहर

आपका जन्म बुलन्दशहर के पौराणिक गढ़ वेलौन में जहाँ कभी ऋषि दयानन्द के चरण पड़े थे, हुआ था। आपकी शिक्षा का क्षेत्र खुरजा रहा है। बाद में विशेष योग्यता सम्पादनार्थ आप काशी चले गये। वहाँ आपने दर्शन एवं महा-भाष्य का विशेष अध्ययन किया।

आर्य समाज का रंग आप पर पूरा-पूरा चढ़ चुका था। जगन्नाथपुरी की श्री शंकराचार्य की गद्दी के प्रलोभन को ठुकराने में आपने क्षण भर भी विलम्ब न किया।

सन् १९५३ ई० में आपने संन्यास की दीक्षा ली और अपने ४० वर्ष वैदिक आश्रम जालन्धर, गुरुकुल गुजरांवाला, गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी

और अन्त में दीर्घ काल पर्यन्त गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर में अध्यापन कार्य किया। आप अत्यन्त सरल सात्विक एवं बड़े दक्ष पंडित थे। आप सम्मान को सदा विष तुल्य समझते थे और स्वामी सर्वदानन्द जी की भांति दलबन्दी से सर्वथा प्रथक रहते थे।

शास्त्रार्थ महारथी पं० गणपति शर्मा:—

आपका जन्म राजस्थान का था। किन्तु कार्य क्षेत्र प्राय: उत्तरप्रदेश ही रहा है। आप संस्कृत के प्रकांड पंडित, ओजस्वी वक्ता एवं प्रगल्भ तार्किक थे। "वृक्षों में जीव है वा नहीं" विषय पर आपका स्वामी दर्शनानन्द जी के साथ ऐतिहासिक शास्त्रार्थ हुआ। काश्मीर के हिन्दू पंडितों के साथ जब मुसलमान मौलवियों और ईसाई पादरियों का शास्त्रार्थ हुआ और हिन्दू पक्ष निर्बल पड़ने लगा तब आपको खड़ा किया गया और आपने हिन्दू धर्म की विशिष्ठता की छाप जनता पर लगाई। और महाराजा काश्मीर को पंडित जी द्वारा मानसिक शान्ति उपलब्ध हुई।
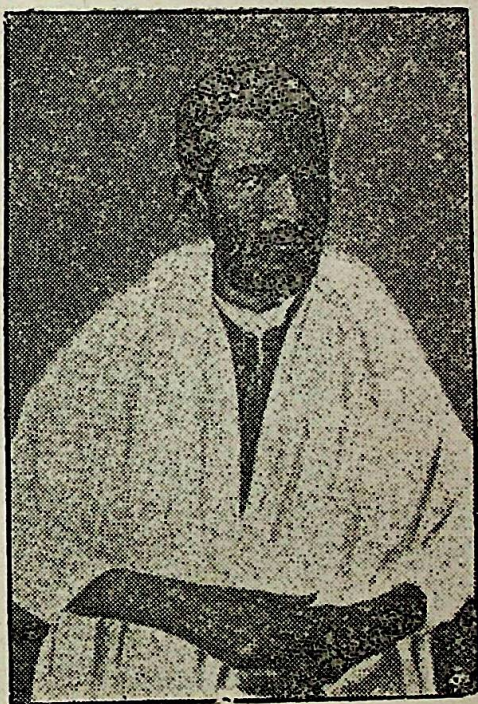
शास्त्रार्थ महारथी पं० गणपति शर्मा

बा० गजाधरप्रसाद आडीटर, प्रयाग

सभा के पुराने कर्मठ महारथी थे। दीर्घकाल पर्यन्त आप सभा के निरीक्षक रहे हैं। नायक जाति सुधार में आपने बड़ी लगन से कार्य किया। आर्यसमाज चौक प्रयाग में आपने अपने व्यय से एक भव्य यज्ञशाला बनवाई।

बा० श्यामसुन्दरलाल वकील, मैंनपुरीः—

आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता थे। मैंनपुरी के प्रतिष्ठित नेता थे। सार्वदेशिक सभा के निर्माण के समय आपने अन्य ४ सज्जनों के साथ उत्तर प्रदेश
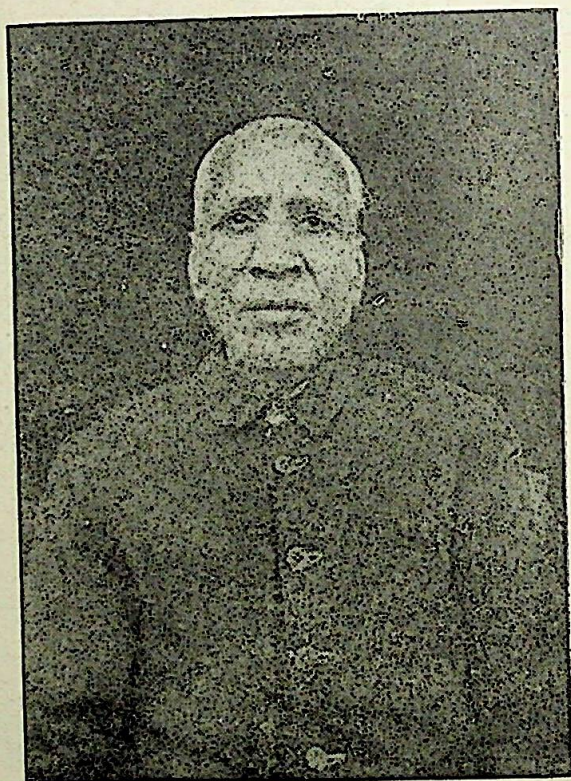
बा० श्यामसुन्दर लाल, वकील

का प्रतिनिधित्व किया था। सभा के कार्यों में आपका सदा सहयोग रहा है। सभा के आप उप प्रधान रहे।

स्वामी आनन्दभिक्षु सरस्वती, गुरुकुल वृन्दावन

आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता एवं नेता थे। मूल निवासी आप राजस्थान के थे। रेलवे से सेवा निवृत्त होकर आप गुरुकुल वृन्दावन में महात्मा

नारायण स्वामी जी के साथ सहायक अधिष्ठाता के रूप में कार्य करने लगे। सन् १९२९ ई० से ३३ तक आप सार्वदेशिक सभा के मन्त्री भी रहे।

श्री पं० शंकरदत्त शर्मा, मुरादाबाद

आप पं० मुरारीलाल शर्मा की कृपा से आर्य समाजी बने और आप में समाज के प्रचार की लगन लगी। अपने जिले में अनेक आर्य समाजों की स्थापना की। स्वामी श्रद्धानन्द जी के साथ कुम्भ के अवसर पर सेवा समिति में गौरवपूर्ण कार्य किया। स्वतन्त्रता आन्दोलन में आपने विशेष भाग लिया और कारागार की शोभा बढ़ाई। स्टेशन रोड आर्य समाज मन्दिर के निर्माण में आपका विशेष हाथ था।

स्वामी अनुभवानन्द शान्त

आप आर्य जगत् के विद्वान् एवं गम्भीर वक्ता थे। अमरोहा (मुरादाबाद) शान्त आश्रम आपका केन्द्र था। अनेक सुन्दर पुस्तकें भी वैदिक सिद्धान्तों पर आपने लिखकर प्रकाशित की थीं।

पं० महेश प्रसाद मौलवी फाज़िल, काशी

आप पं० क्षेमकरण दास त्रिवेदी प्रयाग के सम्बन्धी थे। आगरा मुसाफिर विद्यालय में आपने विशेष अध्ययन किया और पंजाब से मौलवी फाज़िल की परीक्षा उत्तीर्ण की। तत्पश्चात् काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के आप फार्सी अरबी के प्राध्यापक नियुक्त हुए। वहां आपने छात्रों में वैदिक सिद्धान्तों का भी विशेष प्रचार किया। आपकी पुत्री को काशी विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के पण्डितों ने जब वेद विषय पढ़ाने से मना किया तो आर्य समाज में विशेष आन्दोलन उठा। और महामना मालवीय जी ने कन्या के पक्ष में अपनी व्यवस्था प्रदान की।

स्व० स्वामी केवलानन्द सरस्वती, बिजनौर

आप आर्यसमाज के सौम्य सरल स्वभाव के संन्यासी थे। अच्छे वक्ता थे। आपने दारानगरगंज बिजनौर में भागीरथी के तट पर एक वैदिक आश्रम की संस्थापना की और साथ ही एक संस्कृत पाठशाला का संचालन किया।

आपका यह आश्रम भारत के उस ऐतिहासिक स्थान पर विद्यमान है, जहां कभी भारत के राजधर्म के महान् आचार्य विदुर जी का निवास स्थान था।

ठाकुर नत्थासिंह जीः-

आप आर्य जगत् के प्रख्यात भजनोपदेशक थे। सभा के उपदेश विभाग को आप की सेवाओं का सदा गर्व रहा है। नगरों और ग्रामीण क्षेत्रों में आपके भजनों की धाक रहती थी। शुद्धि आन्दोलन में भी आपका प्रशंसनीय सहयोग रहा है।
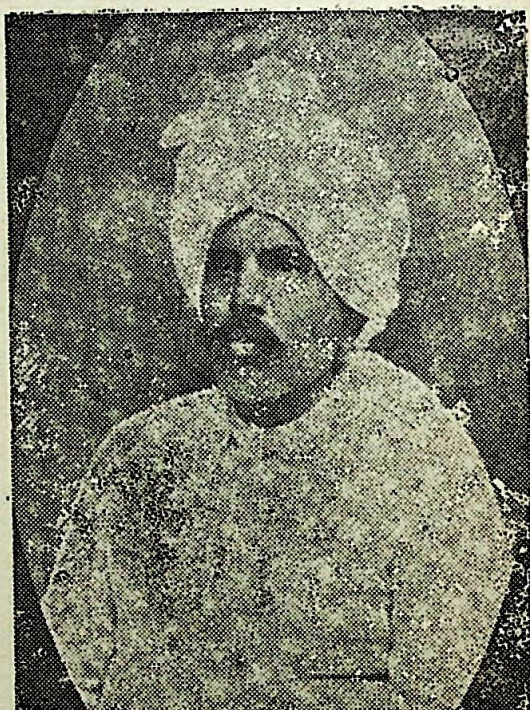
ठा० नत्था सिंह जी

डॉ० श्याम स्वरूप सत्यव्रत एल० एम० एस०, बरेली

आप आर्यसमाज के कर्मठ-कार्यकर्त्ता, नेता, प्रचारक, वक्ता एवं लेखक थे। आपका रहन सहन अत्यन्त सरल एवं स्वभाव मृदु था। बरेली नगर के आप सर्वमान्य नेता थे। आर्यसमाज के अतिरिक्त नगर की सामाजिक शैक्षणिक आदि सब प्रगतियों में भी आपका हाथ था। बरेली में आपने अछूतोद्धार का विशेष कार्य किया। ३२ कल्याणी पाठशालायें चलाकर दलित

(अछूत) जाति के बच्चों की शिक्षा की व्यवस्था की । सरस्वती विद्यालय तथा स्त्री सुधार विद्यालय के निर्माण में आपका विशेष हाथ था ।

आपने आर्योला में एक आर्ष गुरुकुल की स्थापना भी की थी और अपना पर्याप्त धन उस पर लगाया । अपनी आय का अधिकतर धन आर्यसमाज के कार्यों में ही व्यय करते थे । आप सुन्दर वक्ता थे और आप ने अनेकों छोटी २ पुस्तकें भी लिखी हैं । आर्य महा सम्मेलन बरेली के स्वागताध्यक्ष थे ।

श्री ज्योति स्वरूप जी इटावा

आप आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता एवं विचारक थे । जिला इटावा की आर्य समाजों की प्रगतियों में आपका विशेष भाग रहा है । सभा के कार्यों में भी आपका विशेष सहयोग रहा है ।

चौ० जयदेवसिंह जी वकील, मेरठ

आप आर्यसमाज के बड़े उत्साही एवं ओजस्वी कार्यकर्त्ता थे । आप सन् १९५५ में सभा के मन्त्री रहे । सभा की प्रगतियों में आपका विशेष सहयोग रहा है । मेरठ आर्य महा सम्मेलन के कार्यों में भी आपने विशेष भाग लिया ।

श्री कर्णकवि जी, चण्डौली अलीगढ़

आप आर्य समाज के प्रसिद्ध प्रतिभाशाली कवि थे । पं० नाथूराम शंकर के आप शिष्य थे । आपकी सारी रचनायें वैदिक सिद्धान्तों की पोषक एवं ऋषि गुणगान से ओतप्रोत रहती थीं ।

कुंवर हुकुमसिंह जी—आंगई जिला मथुरा

आर्यसमाज के कर्मठ प्रभावशाली नेता थे । सभा के निर्माण में आपका विशेष हाथ रहा । सन् १९०१, १९१७, १९१९-२१ ई० तक पांच वर्ष आप आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पद को सुशोभित करते रहे । इसके उपरान्त दो वर्ष तक सार्वदेशिक के मंत्री पद को भी आपने विभूषित किया ।

आरम्भिक युग में १९०३ ई० में आपने आर्यमित्र का भी सम्पादन किया। आप सभा के उपदेश विभाग एवं गुरुकुल वृन्दावन के अधिष्ठाता भी रहे। गुरुकुल वृन्दावन के लिये राजा महेन्द्रप्रताप जी से भूमि प्राप्त करने में आपका विशेष सहयोग रहा। कन्या गुरुकुल हाथरस के भी आप कई वर्ष प्रधान रहे।

ठा० श्रवणसिंह, अलीगढ़

डा० श्रवणसिंह जी

आप चण्डौली ज़िला अलीगढ़ के निवासी थे। आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता एवं प्रभावशाली भजनोपदेशक थे। आपने लगभग ४० वर्ष तक निरन्तर सभा की प्रचारक के रूप में प्रशंसनीय सेवा की है। अब आपके पुत्र श्री महेशचन्द्र जी सभा में कार्य कर रहे हैं।

श्री रघुबीरशरण दुबलिश बी० ए०, मेरठ

आर्यसमाज के कर्मठ विद्वान् कार्यकर्त्ता थे। भास्कर प्रेस के आरम्भिक युग में प्रबन्धक रहे हैं। प्रान्त में आर्य समाज का प्रथम पत्र 'आर्य समाचार आपके ही सम्पादकत्व में निकलता था। आप हिन्दी, अंग्रेजी एवं बंगला भाषा के अच्छे ज्ञाता थे। आपने दासता के युग में अंग्रेजों के लिखे भारत के भ्रान्त इतिहास की कड़ी समालोचना कर 'आर्य-गौरव' नामक इतिहास पुस्तक का निर्माण किया था। जिसमें आर्य जाति के यशस्वी वीर

पुरुषों की सही गाथायें चित्रित हैं। यह पुस्तक अनेक बंगला पुस्तकों के आधार पर आपने प्रणती की थी। आप सन् १९१० में आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री भी रहे हैं।

पं० राम दुलारे लाल जी, फतेहगढ़

पं० रामदुलारे लाल जी

उत्तर प्रदेश के प्रारम्भिक युग के कर्मठ कार्यकर्त्ताओं एवं नेताओं में आपकी गणना है। सार्वदेशिक सभा बनाने का जब प्रश्न उपस्थित हुआ तो उत्तर प्रदेश से जिन ४ व्यक्तियों को सार्वदेशिक सभा को संगठित करने के लिये नियुक्त किया गया था उनमें एक नाम आपका भी था। आप सन् १९०८ ई० में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान भी रहे हैं मरने से पूर्व आपने अपनी सब सम्पत्ति सभा के नाम कर दी थी।
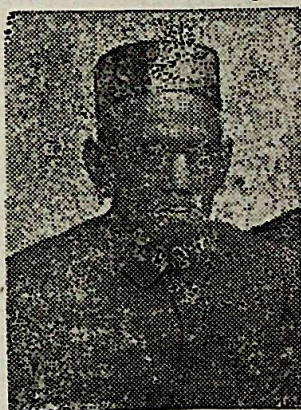
आर्य युवक महावीरसिंह, कानपुर

दयानन्द आर्य वैदिक कालेज कानपुर के एक आदर्श होनहार छात्र थे। कानपुर आर्यकुमार सभा के आप कर्मठ कार्यकर्त्ता थे। डा० मुन्शीराम एम० ए० की क्रान्तिकारी भावनाओं का आप पर विशेष प्रभाव पड़ा। आपने क्रातिकारी आन्दोलन में आगे बढ़कर हिस्सा लिया। आर्यकुमार सभा के अन्य आर्य नवयुवक श्री सुरेन्द्रनाथ पाण्डेय, श्री ब्रह्मदत्त मिश्र, श्री तुलसीराम शर्मा, श्री शिव शर्मा, श्री जयदेव कपूर, श्री जयदेव गुप्त, एवं श्री उदयप्रकाश इस कार्य में आपके विशेष सहयोगी बने। आपको भारत सरकार ने बन्दी बनाकर अण्डमान जेल भेज दिया। स्वाभिमान की रक्षा हेतु आपने आमरण अनशन कर इस जीवन को समाप्त कर दिया।

लाला ठाकुरदास जी हल्दोर (बिजनौर)
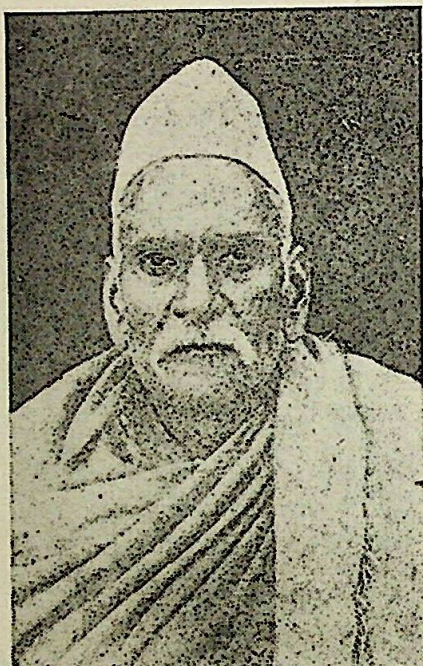
लाला ठाकुर दास जी

बिजनौर जिले के यशस्वी नेता एवं कर्मठ कार्यकर्त्ता थे। आपका जीवन तप त्याग से परिपूरित था। जिला उप सभा के आप अनेक वर्षों तक प्रधान रहे। जिला बोर्ड के भी आप अध्यक्ष रहे तथा सभा के कार्यों में आपका विशेष सहयोग रहता था। जिले में पैदल घूमकर धर्म प्रचार करने वालों में आपका विशेष स्थान है।

बुआपुर दीक्षा-यज्ञ के यजमान आप ही थे, जहां ५०० चमार परिवारों को आर्यसमाज की दीक्षा दी गई। यज्ञोपवीत धारण कराए गये तथा सार्वजनिक कूप खुलवाए गए। कूप पर चमारों को ग्राम के राजपूतों ने रोकना चाहा, लाला जी आगे बढ़े उनका लाठियों से सत्कार किया किन्तु वीर ठाकुरदास पीछे हटना तो जानते ही न थे। लाठियों के आघात से उनके धराशायी होते ही राजपूतों के पांव उखड़ गये। एक बुआपुर क्या जिले के सैकडों ग्रामों में कुएं चमारों के लिए खोल दिए गये। जिले के स्वतन्त्रता आन्दोलन में भी स्वर्गीय लाला जी ने प्रशंसमीय कार्य किया।

बाबू मोतीलाल एडवोकेट, मेरठ

आप मेरठ जिले के प्रमुख आर्यसमाज के कार्यकर्ता एवं प्रभावशाली वक्ता थे। आप सन् १९३८ में सभा के उप प्रधान रहे हैं। आपने भारत के अनेक स्थानों पर वैदिक मिशन का प्रचार किया है। आर्यसमाज मेरठ

सदर के विशाल मंदिर के निर्माण में आपको सर्वाधिक श्रेय है। आपने वर्मा आदि विदेशों में भी प्रचार किया।

श्री सीताराम एडवोकेट, लखीमपुर

आर्य समाज के पुराने कर्मठ नेता थे। लखीमपुर जिले की सब धार्मिक सामाजिक प्रगतियों के सूत्रधार थे। सन् १९२२ व २३ में आप सभा के प्रधान रहे। सभा की प्रगतियों में आपका निरन्तर सहयोग आगे भी उपलब्ध होता रहा।

बा० ज्वाला प्रसाद जी वकील, कानपुर

आप कानपुर के यशस्वी कर्मठ कार्यकर्त्ता एवं नेता थे। डी० ए० वी० कालेज के निर्माण में आपने विशेष शक्ति लगाई थी। वर्षों तक आप कालेज के मन्त्री पद को सुशोभित करते रहे हैं। सभा के कार्यों में आप निरन्तर सहयोग देते रहे हैं।

सेठ राम गोपाल जी, मऊनाथ भञ्जन (आजमगढ़)

आप मऊनाथ भंजन आर्य समाज के प्राण एवं वीर कर्मठ कार्यकर्त्ता थे। डी० ए० वी० स्कूल के निर्माता थे। मऊनाथ भंजन जैसे यवन प्रधान नगर में आर्य समाज का कार्य करना खतरे से खाली न था। आपने नाना प्रकार के भयों की चिन्ता न करते हुये आर्य समाज की नींव पाताल में पहुंचाई थी। आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यों में आपका विशेष सहयोग रहा। आपने सभा को विशेष दान भी दिया।

शास्त्रार्थमहारथी श्री पं० देवेन्द्र नाथ जी शास्त्री

आप गुरुकुल सिकन्दरावाद जिला बुलन्दशहर के प्राण. तार्किक शिरोमणि श्री पं० मुरारीलाल जी शर्मा के बड़े पुत्र थे। आप आर्यसमाज के ख्याति प्राप्त विद्वान् थे। आपने जीवन में सैकड़ों शास्त्रार्थ किये और शास्त्रार्थ करते हुए ही आर्यसमाज नरही-लखनऊ के वार्षिकोत्सव पर हृदय की गति रुकने के कारण आपका देहावसान हो गया। आपने दस उपनिषदों पर टीका लिखी थी जो आर्य साहित्य मंडल अजमेर से प्रकाशित हुई।

पं० भृगुदत्त जी तिवारी, एम० ए० एल०, एल० टी० लखनऊ

प० भृगुदत्त तिवारी

आपने अपने यशस्वी पिता श्री रासविहारी तिवारी जी के निधन पर डी० ए० वी० कालेज लखनऊ एवं आर्य समाज गणेशगंज की बागडोर संभाली। आर्यमित्र के अधिष्ठाता भी रहे। सभा के आप उपमंत्री भी रहे हैं। लखनऊ के बालिका विद्यालय तथा दयानन्द बाल विद्या मन्दिर आपके पुरुषार्थ से स्थापित हुए। अभी कार्य क्षेत्र में उतरे ही थे, कि अचानक आपका स्वर्गवास हो गया।

श्री ज्वाला प्रसाद वानप्रस्थी बरेली

आप कर्मठ कार्यकर्त्ता नैष्ठिक अग्निहोत्री एवं प्रचारक थे। सरकारी सेवा से निवृत्त होकर आपने वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश किया और आर्य समाज के प्रचार कार्य में अपनी शक्ति लगा दी। लगभग ८ वर्ष तक आप सभा के उपमंत्री पद पर पूरी संलग्नता के साथ कार्य करते रहे। सारे प्रान्त का आपने दौरा किया। आर्य समाजों का निरीक्षण किया। समाजों के कार्यालयों को तथा साप्ताहिक सत्संगों को व्यवस्थित किया। आर्य सत्संगों में एकरूपता उत्पन्न करने का भी आपने सफल प्रयास किया। आर्य-सत्संग-पद्धति का प्रकाशन कराकर उसको आर्य समाजों में चालू कराया।

पं० राम प्रसाद जी चरथावल, मुजफ्फरनगर

आर्य समाज के आदर्श तपस्वी प्रचारक थे। आपका जीवन अत्यन्त सरल सात्विक एवं तपःपूत थी। सरकारी नौकरी करते हुए भी आप रात-दिन आर्य समाज के प्रचार की धुन में रहने वाले व्यक्ति थे। बुन्देल खण्ड में आपने आर्य समाज का विशेष कार्य किया। मुस्करा (हमीरपुर) आर्य समाज के आप जन्मदाता थे। आचार्य देवशर्मा जी आपके ही सुपुत्र हैं।

बा० बृजनाथ मित्तल वकील, मेरठ

आर्य समाज के प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता थे। मेरठ के गण्यमान्व व्यक्ति थे। सभा के तीन वर्ष तक निरन्तर मन्त्री रहे।

पं० भोजदत्त जी आर्य मुसाफिर, आगरा

आप आर्य समाज के विद्वान् लेखक, वक्ता, एवं कर्मठ कार्यकर्त्ता थे। आगरा के आर्य मुसाफिर विद्यालयं के आप ही जन्मदाता थे। इस विद्यालय से आपने पं० बिहारीलाल शास्त्री काव्यतीर्थ, कुँवर सुखलाल आर्य मुसाफिर पं० इन्द्र वर्मा, मौलवी महेश प्रसाद आदि वड़े २ प्रसिद्ध प्रचारकों का निर्माण किया हिन्दी के साहित्यकार स्व० श्री राहुल सांस्कृतायन ने भी इस विद्यालय में अध्ययन किया है।

विद्याभाष्कर पं० रामावतार शास्त्री रतनगढ़, बिजनौर

आपने कलकत्ते से मीमांसातीर्थ एवं काशी के मीमांसाचार्य की उपाधियाँ उपलब्ध कीं। संस्कृत की अनेक पुस्तकों का आपने हिन्दी में अनुवाद किया है। गीता की आपकी टीका पर सरकार की ओर से पारितोषिक भी आपको मिला था।

आचार्य काशीनाथ जी बलिया

आप सौम्य सरल मुदु स्वभाव के चरित्रवान् व्यक्ति थे। आपका रहन-सहन अत्यन्त सात्विक था। आप अद्भुत प्रतिभा सम्पन्न वैदिक वाङ्मय के पंडित थे। गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के आप अनेक वर्षों तक आचार्य रहे हैं। प्राचीन वैदिक संस्कृत के प्रवल समर्थकों में आपकी गणना है।

श्री पं० रघुनन्दन शर्मा

आप आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान् एवं लेखक थे 'वैदिक सम्पत्ति' नामक आर्य संस्कृति का प्रामाणिक इतिहास लिखकर आपने आर्य जगत् की अमूल्य सेवा की है।

श्री जगनन्दन लाल एडवोकेट (प्रयाग)

श्री जगनन्दन लाल जी

सभा के प्रमुख अनुभवी कार्यकर्त्ताओं में से एक थें। दीर्घकाल तक आप सभा के प्रधान रहे। न्याय-सभा के कार्यों में भी आपका विशेष सहयोग रहता था। आर्य समाज की प्रायः सर्व प्रगतियों में आपका हाथ था। आप अत्यन्त ही हास्य-प्रिय विनोदानन्दी जीव थे। सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग के आप सदस्य थे। आर्य समाज के नीति निर्धारण कार्य में आप विशेष सहयोग देते रहे तथा आर्य समाज के सभी आन्दोलनों में आप सक्रिय सोत्साह भाग लेते रहे।

स्वामी निर्भयःनन्द जी (श्री बनारसीदास जी) लखनऊ

आर्य समाज के प्रवल प्रचारक थे। ईसाई, मुसलमानों में शास्त्रार्थ से प्रायः भिड़ा करते थे। श्री मद्दयानन्द अनाथालय लखनऊ आपने ही स्थापित किया था। नगर आर्य समाज लखनऊ के भी आप ही संस्थापक थे।

श्री चन्द्रकवि जी मुजफ्फर नगर

आप मुजफ्फरनगर जिले के उग्र राष्ट्रवादी एवं दृढ़ आर्य समाजी कवि थे। स्वाधीनता आन्दोलनों में आपने सराहनीय कार्य किया है। अनेक बार जेलों को सुशोभित किया। आपकी गणना प्रतिभाशाली वीर रस के कवियों में की जाती है।

महात्मा भगवानदीन मिश्र, हरदोई:

आप आर्यसमाज के प्रौढ़ विद्वान् तपस्वी, कर्मठ कार्यकर्ता थे। सभा के आप सन् १८९० से ९६ तक मंत्री रहे और १८९८ से १९०० तक तथा १९०२ से १९०७ तक प्रधान रहे। सभा के लिये आपने अपना आर्य भास्कर प्रेस प्रदान कर सभा को एक प्रकार से जीवन प्रदान किया। अनेक वर्षों तक
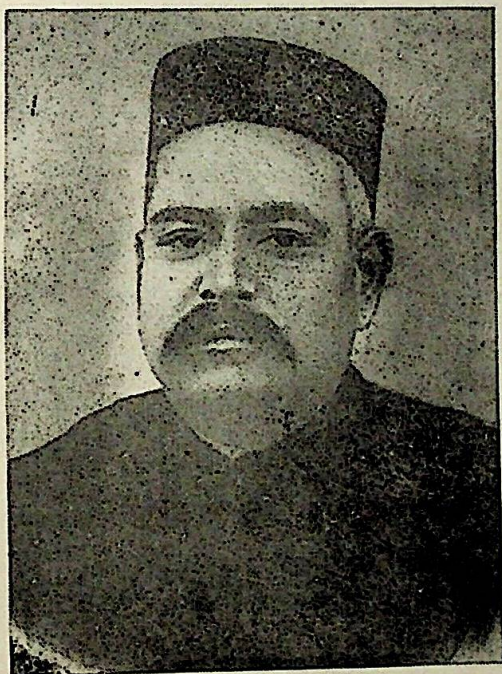
महात्मा भगवानदीन मिश्रा

आप गुरुकुल वृन्दावन के अधिष्ठाता रहे। आप दीर्घकाल तक लखीमपुर-खीरी में शाहपुर राज के व्यवस्थापक रहे और लखीमपुर में आर्यसमाज की स्थापना एवं उसके मंदिर निर्माण में आपका सर्वाधिक हाथ रहा मंदिर निर्माण में आपने अपने सर पर ईंट और गारा तक ढोया। आपकी पुण्य स्मृति में भगवानदीन आर्य कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय लखीमपुर में स्थापित किया गया।

प्रथम सभा-प्रधान महान् शिक्षा-शास्त्री प्रिन्सिपल लक्ष्मणस्वरूप जी, देहरादून

प्रयाग विश्व विद्यालय के प्रथम तीन एम० ए० उत्तीर्ण करने वालों में से आप एक थे। परीक्षा उत्तीर्ण करते ही सरकार ने आपको डिप्टी कलेक्टर बनाया। किन्तु सरकारी नौकरी आप जैसे स्पष्ठ वक्ता एवं सत्यवादी पुरुष के लिये अनुकूल न थी। अतः आपने त्याग-पत्र दे दिया और शिक्षा कार्य में लग गये। अमृतसर खालसा कालेज के आप वाइस प्रिन्सिपल रहे। तत्पश्चात् खुर्जे में वहाँ के वन्धुओं के विशेष आग्रह पर आपने दो शिक्षा संस्थाएं एन० आर० ई० डिग्री कालेज एवं जे०ए० एस० उच्च-तर माध्यमिक विद्यालय की स्थापना की। तत्पश्चात् आप दयानन्द कालेज देहरादून के प्रिन्सिपल वना दिये गये। यह सब आदर्श शिक्षा संस्थाएं आपके अनथक परिश्रम का ही फल हैं।
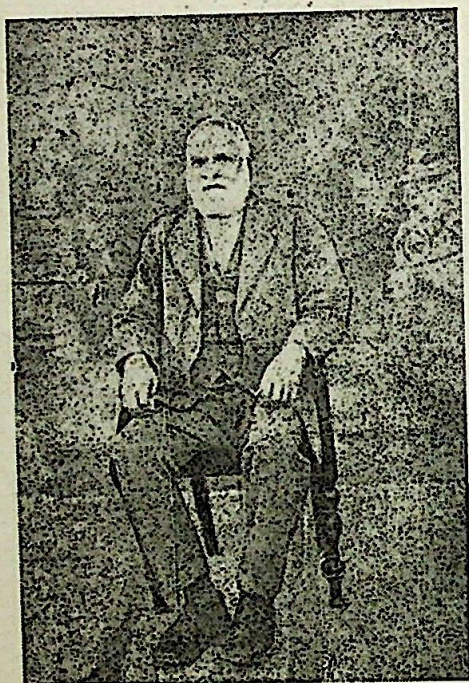
श्री लक्ष्मण स्वरूप जी

आर्य प्रतिनिधिसभा उत्तर प्रदेश के प्रथम प्रधान पद को आपने १८८६ ई० में सुशोभित किया। १९ मई १९३६ ई० में आपका देहरादून में निधन हो गया। आपका जीवन तप संयम एवं सादगी से परीपूर्ण था। ३५ वर्ष की आयु में विधुर होने पर आपने स्वजनों के आग्रह करने पर भी पुनर्विवाह नहीं किया।

स्व० पं० शंकरदेव शर्मा काव्यतीर्थ, बिजनौर

आप संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान् थे। आपकी महाभाष्य में अच्छी गति थी। गुरुकुल वृन्दावन के आप दीर्घकाल तक व्याकरण के अध्यापक रहे हैं। गुरुकुल के मुख्याध्यापक और सह० मुख्याधिष्ठाता रूप में आपकी सेवाएं सदा स्मरणीय रहेंगी। आप उग्र समाज सुधारक थे। नासिक के सेठ जगजीवनराय खेमचन्द्र की पुत्री से जाति-बन्धन तोड़कर आपने विवाह किया था। आप अनेक ग्रन्थों के प्रणेता थे। सत्यार्थ प्रकास का संस्कृत-अनुवाद आपने ही निपुणतापूर्वक किया था। अष्टाध्यायी पर आपने वृत्ति भी लिखी, अनेक ग्रन्थों का सम्पादन किया।

सम्पादकाचार्य श्री पं० रुद्रदत्त शर्मा

आप आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता हिन्दी संस्कृत के अच्छे विद्वान् थे। अनेक वर्षों तक आपने आर्यमित्र का सम्पादन किया। अनेक अन्य हिन्दी के पत्रों का भी आप सम्पादन करते रहे हैं। हिन्दी साहित्य के इतिहास में आपका स्मरणीय स्थान रहेगा। पातंजल योग दर्शन भोजवृत्ति का आपने भाषा अनुवाद किया। स्वर्ग में सब्जेक्ट कमेटी, पाखंड मत खंडन आदि आपकी प्रसिद्ध रचनाएं हैं।

शास्त्रार्थ महारथी पं० धर्मभिक्षु जी लखनऊ

आप आर्य जगत् के एक प्रसिद्ध विद्वान् शास्त्रार्थपटु प्रतिभाशाली, ओजस्वी वक्ता थे। आपने स्वयं के प्रयत्नों से योग्यता सम्पादित की थी। ६ वर्षों तक आष पंजाब सभा के उपदेशक रहे। आपने अपने जीयन में ईसाई, मुस्लमानों से सैकड़ों शास्त्रार्थ किये। स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान के उपरान्त लखनऊ में आपने उपदेशक विद्यालय की स्थापना की। इस विद्यालय के तीन प्रमुख शिष्य आज भी आर्यसमाज के प्रचार क्षेत्र में आपके चरण चिन्हों पर चल रहे हैं। श्री विष्णुस्वरूप बिद्यार्थी, पं० विद्याभिक्षु जी एम० ए०, मौलवी फाजिल व पं० श्यामसुन्दर शास्त्री (बस्ती) अनेक वर्षों तक भिक्षु जी ने लखनऊ से आर्यमुसाफिर साप्ताहिक का योग्यता के साथ सम्पादन भी किया।

श्री रघुनन्दन प्रसाद जी लखनऊ

सिटी आर्य समाज लखनऊ के संस्थापक एवं यू० पी० आर्य को० वैंक के अवैतनिक मैनेजर एवं मंत्री रहे सन् १९२१ई० में आपने इन्सपैक्टर जनरल
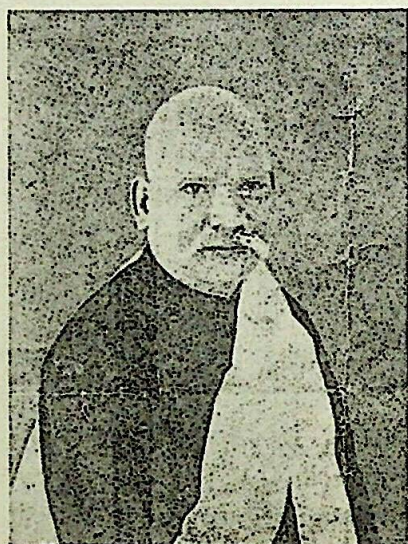
श्री रघुनन्दन प्रसाद जी

आफ प्रिजन्स के हेड असिसटैन्ट पद से कार्य मुक्त हो अपना सारा समय निधन (२१-८-१९३१) पर्यन्त सभा के कार्यों में लगाया। सन् १९२३, ई०में आर्य आ० प्र० सभा उ० प्र० के मंत्री भी रहे हैं।

पं० दिलीपदत्त जी शर्मा :—उपाध्याय गुरुकुल ज्वालापुर

आप बड़े मिलनसार निरभिमानी आर्य विद्वान् थे। काव्य रचना में आपकी विशेष रुचि रहती थी। आपने महर्षि दयानन्द की प्रशस्ति में "मुनिचरितामृतम्" नामक सुन्दर काव्य लिखा था। आपका प्रताप-चम्पू काव्य राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत है। गुरुकूल की आपने दीर्घकाल अवैतनिक सेवा की है तथा आप उसके मुख्याधिष्ठाता भी रहे हैं। आपका अन्तिम जीवन यौगिक साधना एवं प्रभु-भक्ति में व्यतीत हुआ।

स्वामी भास्करानन्द (आचार्य भीमसेन शर्मा) ज्वालापुर :—

आप संस्कृत वाङ्मय के प्रकांड पंडित थे। सन् १९०८ से १९२५ ई० तक गुरुकुल महा विद्यालय ज्वालापुर के आचार्य रहे। इस बीच कुछ काल तक आप महा विद्यालय के मंत्री भी रहे।

सन् १९२५ ई० में आपने संन्यास धारण किया। आप हिन्दी के अच्छे लेखक एवं वैदिक धर्म के प्रचारक थे।

आपने संस्कार विधि पर भाष्य किया, योग-दर्शन भोजवृत्ति का हिन्दी अनुवाद किया तथा द्वैतप्रकाश आदि ग्रन्थ लिखे हैं।

स्व० पं० भवानीप्रसाद जी, हल्दौर (बिजनौर) :—

आप आर्य साहित्य के अच्छे मर्मज्ञ एवं संस्कृत के पंडित थे। ज़िले के कर्मठ नेता एवं आर्यसमाज के प्रतिभाशाली प्रवक्ता थे। आपने पर्व-पद्धति की रचना करके आर्य जगत् का महान् उपकार किया है। दयानन्द जन्म शताब्दी मथुरा के अवसर पर आपने यह ग्रन्थ प्रकाशित किया था।

स्व० रामप्रसाद बिस्मिल, शाहजहांपुर

आपके जीवन का विकास आर्य-कुमार सभा की प्रगतियों से आरम्भ हुआ। आपके विचार उग्र राजनैतिक थे। आगे चलकर आप क्रान्तिकारी आन्दोलनों में भाग लेने लगे। अनेक वर्षों तक आर्य भास्कर प्रेस आगरा में कार्य करते रहे। काकोरी षडयंत्र केस के आप प्रमुख व्यक्ति थे। सरकार ने आपको फैसले में फांसी का दंड दिया। गोरखपुर ज़िला जेल में आपको फांसी दी गई। फांसी घर में जाने से पूर्व आपने वेद मंत्रों का पाठ किया और फांसी के तख्ते पर खड़े होकर पहिले गायत्री मंत्र का जाप किया और फिर फ़न्दा डालकर अमर पद प्राप्त किया।

फांसी से पूर्व आपकी यह अन्तिम इच्छा थी कि मेरे शव को आर्यसमाज को दे दिया जाय और मेरा दाह संस्कार वैदिक रीति से किया जाय। गोरखपुर आर्यसमाज ने उनके शव की अभूतपूर्व शोभा-यात्रा निकाली और वैदिकरीति से संस्कार किया। आपकी अमर कृतियां निम्न हैं :—मन की लहर, २-बोलेशेविकों की करतूत, ३-आत्मकथा।

राजा महेन्द्रप्रतापसिंह जी मुरसान, अलीगढ़

राजा महेन्द्रप्रताप राष्ट्र के लिये सर्वस्व त्याग करने वाले व्यक्तियों में से थे। आर्य समाज के शिक्षा एवं समाज सुधार सम्बन्धी विचारों से आप विशेष प्रभावित हुए। आपने वृन्दावन में स्थित अपनी एक उद्यान-भूमि १५ अगस्त १९११ में गुरुकुल स्थापनार्थ सभा को दान में दी। सभा ने इस दान को स्वीकार कर फर्रुखाबाद से गुरुकुल को वृन्दावन में स्थानान्तरित कर दिया। तब से गुरूकुल उसी भूमि में स्थित है। राजा साहब ने इंजीनियरिंग की शिक्षा के लिये अपना महल दान कर 'प्रेम महा विद्यालय' संस्था की स्थापना की, अन्य भूमि भी उसके लिये दान दी। विदेशी शासन के विरोधी और उग्रकान्तिकारी होने के कारण आपको ३५ वर्ष विदेशों में ही रहना पड़ा। स्वतंत्रता के पश्चात् आप भारत लौटे और अनेक वर्षों तक संसद सदस्य रहे। बिदेशों में कैसर और जापान के शासकों को भारत की स्वतंत्रता में सहयोग देने के लिये प्रेरित करते रहे।

स्व० श्री पं० रामचन्द्र जी शर्मा इंजीनियर लखनऊ

आर्य समाज के प्रसिद्ध कर्मठ कार्यकर्ता रहे। सभा का वर्तमान भवन आपके ही विशेष पुरुषार्थ से उपलब्ध हुआ। आर्य समाज लखनऊ के प्रधान तथा आर्य प्रतिनिधि सभा के उप प्रधान रहे।

पं० रामचन्द्र शर्मा

श्री ठाकुर मशालसिंह, हरदोई:–

आप आर्य समाज के निर्भीक कार्य कर्ता थे। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के आप सन् १९२८ से १९६१ तक प्रधान रहे। आपका सभा के साथ

श्री ठाकुर मशालसिंह

सम्पर्क सन् १९०९ से रहा है। आर्यसमाज के नगरकीर्तनों एवं प्रभात फेरियों मेंपुलिस द्वारा आपत्ति करने और दफा १४४ लगाने का कड़ा विरोध किया और प्रानतीय सरकार से डट कर मोर्चा लिया।

श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी सरस्वती

पूर्व नाम पं० धुरेन्द्र शास्त्री है। मथुरा आपकी जन्म भूमि है। हरदुआगंज साधु आश्रम एवं काशी में विशेष शिक्षा पाई। आप संस्कृत के प्रौढ़ विव्दान्, वैदिक सिद्धान्त मर्मज्ञ, गभीर वक्ता एवं मान्य नेता हैं।
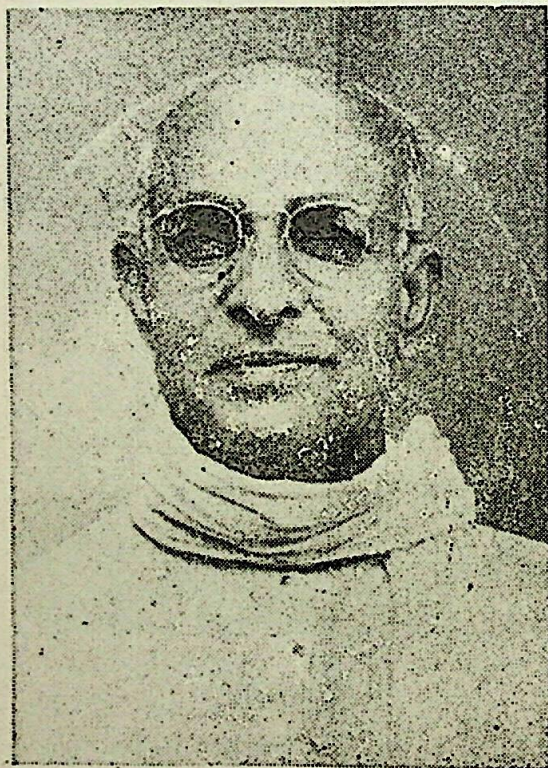
श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी सरस्वती

सन् ४६ से ४९ तक निरन्तर पांर वर्ष सभा के प्रधान तथा वर्षों तक सार्वदेशिक सभा के भी प्रधान रहे और आज भी आप ही प्रधान हैं। ७-११-५४ को स्वामी दर्शनानन्द जी के आश्रम हरदुआगंज में स्वामी आत्मानन्द जी से संन्यास ग्रहण किया। धर्म प्रचारार्थ दक्षिण अफ्रीका की अनेक वर्ष यात्रा की।

नवम आर्य महा सम्मेलन दिल्ली के आप अध्यक्ष रहे। हैदराबाद आर्य सत्याग्रह के आप चतुर्थ सर्वाधिकारी रहे। प्रान्त में आपका सर्वत्र विशेष सन्मान किया गया। कई सौ सत्याग्रहियों के साथ हैदराबाद में सत्याग्रह कर निजाम की जेलों के कष्ट सहे। सिन्ध सत्यार्थप्रकाश सत्याग्रह में भी आपने विशेष भाग लिया तथा गढ़वाल की डोलापालकी समस्या सुलझाने में आपका विशेष भाग रहा है।

श्री पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय एम० ए० प्रयाग
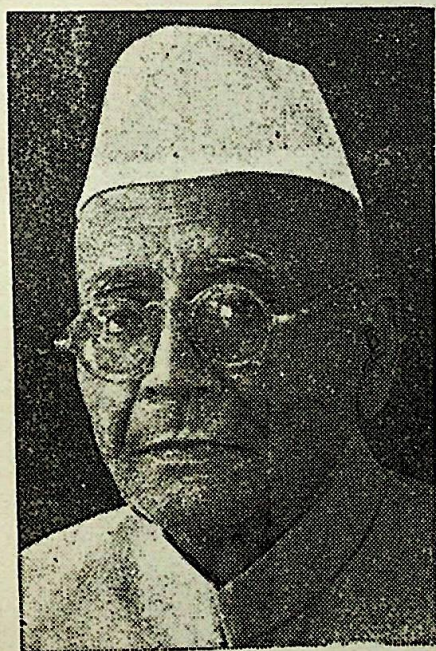
पं० गंगा प्रसाद उपध्याय

आर्य जगत् के कर्मठ तपस्वी नेता वक्ता, प्रचारक एवं लेखक हैं। वैदिक आश्रम अलीगढ़ में रहते हुए आपका विशेष शिक्षण हुआ। दयानन्द उच्चतर माध्यमिक विद्यालय प्रयाग के आप ३० वर्ष निरन्तर मुख्याध्यापक रहे। विद्यार्थी जीवन से ही वैदिक धर्म प्रचार की आप को धुन है।

सन् १९४० से ४३ तक आप सभा के प्रधान रहे। सभा भवन को लखनऊ में केन्द्रित करने में आपका विशेष हाथ है। अपने प्रधान काल में आपने प्रान्त का व्यापक दौरा किया। सभा भवन के निमित्त विशेष धन संचय किया। सन् ४७ से ५१ तक सार्वदेशिक सभा के मंत्री रहे। भारत तथा वर्मा व वैंकाक (थाईलेन्ड) में आपने प्रचार यात्रा की। ऋषि के परम भक्त, रूढ़ि वादिता के परम विरोधी हैं। राजनीति-मरीचिका से आर्यसमाज को बचाने में आप सतत

प्रयत्नशील रहते हैं। आर्यसमाज चौक प्रयाग के आप प्राण हैं। आपने १०० से ऊपर ट्रैक्ट प्रचारार्थ लिखकर प्रकाशित कराये हैं। आपकी कतिपय रचनाएं निम्न हैं :—

आस्तिकवाद-जिस पर आपको मंगलप्रसाद पारितोषिक मिला। जीवन-पथ, सर्व दर्शन-संग्रह, वैदिक-संस्कृति, जीवन-चक्र, वैदिक-स्मृति आदि।

श्री पं० गंगाप्रसाद जी एम० ए० रि० चीफजज, मेरठ

श्री पं० गंगा प्रसाद जी

सं० १९२८ वि० का आपका जन्म है। जन्म स्थान मेरठ में शिक्षा समाप्त कर आगरा पढ़ने गये, वहां आर्यसमाज से आपका सम्पर्क हुआ। पढ़ाई

समाप्त कर मेरठ कालेज में प्राध्यापक नियुक्त हो गये। डिपुटी कलेक्टर बन प्रान्त के विभिन्न स्थानों में कार्य करते हुये रुड़की पहुंचे। १८-९-१९१८ को कटारपुर में हिन्दू-मुस्लिम झगड़ा हुआ और सरकार ने इस सम्बन्ध में आप पर दोषारोपण किये। दोषों से मुक्त हो नौकरी त्याग गुरुकुल वृन्दावन के मुख्याधिष्ठाता बन कार्य करने लगे। कुछ काल बाद टिहरी राज्य के चीफजज नियुक्त हुये। टिहरी में आर्य सभाज का विशेष कार्य किया। सन् ३७ में सभाकी स्वर्ण जयन्ती मेरठ के स्वागताध्यक्ष रहे। सन् ४३ से ४५ तक सार्वदेशिकसभा के प्रधान रहे। आप वैदिक साहित्य के प्रकांड पण्डित एवं लेखक हैं। आपकी कुछ रचनाएँ निम्न हैं :—

१. ज्योतिश्चन्द्रिका
२. सूर्य सप्ताश्व वर्णन
३. जातिभेद
४. पंच कोष व सूक्ष्म-जगत्
५. धर्म का आदि स्रोत
६. ईश व कठ का आंगल अनुवाद

श्री पं० ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु वाराणसी

वैदिक वाङ्-मय के प्रकांड पण्डित हैं। अत्यन्त सरल, मृदु, साधु-स्वभाव, तपस्वी-जीवन वाले व्यक्ति हैं। आर्ष- पाठविधि के आप प्रबल समर्थक हैं। आपने अपने जीवन में अनेक नवयुवकों को अष्टाध्यायी एवं महा भाष्य का पण्डित बनाया है।

आपने ऋषि दयानन्द के यजुर्वेद भाष्य पर विद्वत्तापूर्ण टिप्पणियां की हैं। वेदवाणी हिन्दी मासिक के आप सम्पादक हैं। मेरठ आदि आर्य महा सम्मेलनों पर आपने वेद-सम्मेलन की अध्यक्षता की है। काशी में आपके पाण्डित्य की धाक है। आपको भारत सरकार ने विशेश उपाधि से विभूषित किया है।

शास्त्रार्थ महारथी ठा० अमरसिंह अरनियां (बुलन्दशहर)

आप आर्य समाज के ओजस्वी वक्ता, लेखक, प्रचारक एवं शास्त्रार्थ प्रवीण आर्य विद्वान् हैं। आपका जीवन एक मिशनरी का जीवन हैं। इस जीवन में आपने विभिन्न मतावलम्बियों से सैकड़ों शास्त्रार्थ किये हैं। आर्य उपदेशक तैयार करने के लिये आपने अरनियां जिला बुलन्दशहर में एक उपदेशक विद्यालय भी स्थापित किया था। आर्य मित्रादि समाचार पत्रों में आपके प्रतिभाशाली लेख निकलते रहते हैं।

शास्त्रार्थ महारथी पं० रामचन्द्र जी देहलवी, हापुड़ (मेरठ)

आप आर्यसमाज के महान् कर्मठ एवं तपस्वी नेता, वक्ता, लेखक, एवं शास्त्रार्थ महारथी हैं। आपकी आयु इस समय ८५ वर्ष के लगभग है। आपने
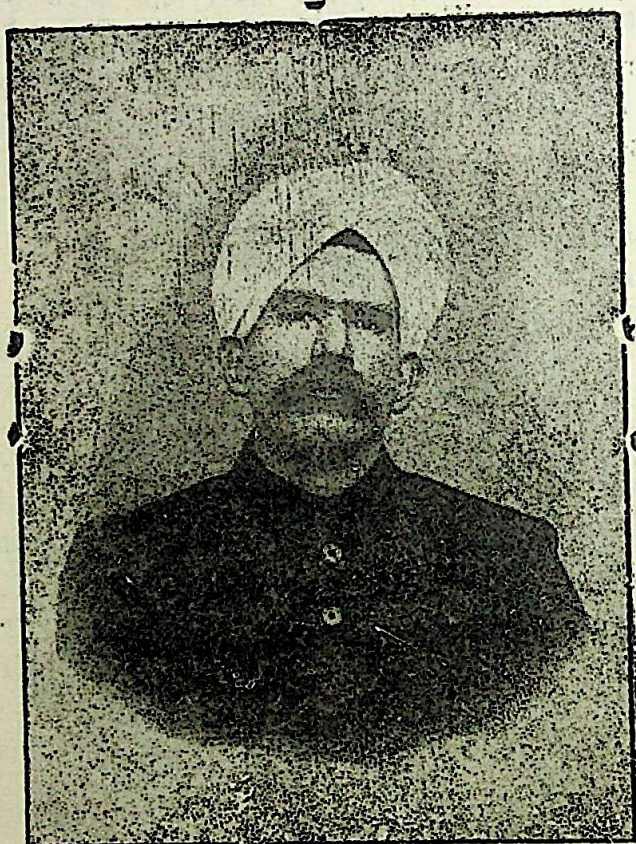
पं० रामचन्द्र जी देहलवी

अपने जीवन के ५० से अधिक वर्ष भारत के एक कोने से दूसरे कोने तक घूम-घूम कर वैदिक धर्म के प्रचार एवं मत मतान्तरों के पण्डितों से शास्त्रार्थ करने में व्यतीत किये हैं। आपके प्रचार कार्य का श्रीगणेश देहली में फव्वारे की सायंकालीन मीटिंगों से हुआ है। कुरान के आप विशेष मर्मज्ञ हैं। वैदिक सिद्धान्तों के तो आप सुलझे हुये पण्डित ही ठहरे। शास्त्रार्थों में आपने अनेकों

बड़े-बड़े मौलवियों वा पादरियों को परास्त किया है। आपकी जिव्हा पर सरस्वती विराजती हैं। आर्य महा सम्मेलन देहली के आप अध्यक्ष रहे हैं। आप चतुर लेखक भी हैं। अब आप अत्यन्त निर्बल हो गये हैं और इस समय हापुड़ (मेरठ) में निवास करते हैं।

श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री एम०पी०, चन्दौसी, मुरादाबाद

आप गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के सुयोग्य स्नातक हैं। आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के महोपदेशक के रुप में आपने प्रचार क्षेत्र में पदार्पण किया। आपकी भाषण शैली अत्यन्त आकर्षक एवं प्रभावपूर्ण है। आप आर्य जगत् के मान्य नवयुवक नेता हैं। आज दिन आप की गणना भारत के प्रमुख प्रभावशाली वक्ताओ में है। लोकसभा में आपके सुझाव विशेष सुलझे हुए एवं युक्तिपूर्ण होते है। हिन्दी रक्षा आन्दोलन को चार चांद लगानेवाले व्यक्ति आप ही हैं। समूचे भारत में भ्रमण कर आपने अपने ओजस्वी भाषणों द्वारा जनता में अद्‌भुत चेतना उत्पन्न करदी थी।
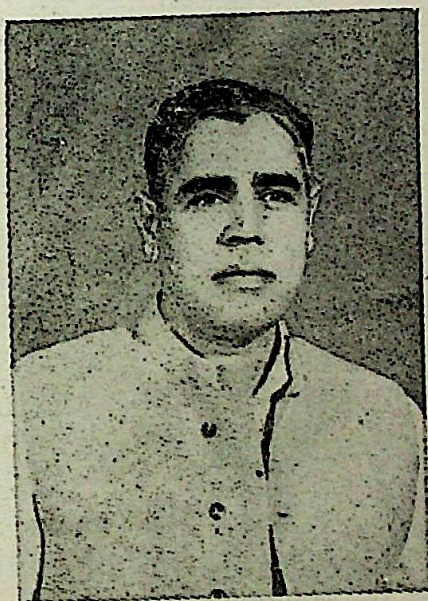
स्री प्रकाशवीर जी शास्त्री

सरकार द्वारा महर्षि का चित्र लोक सदन में लगवाने एवं दीपावली पर उनका टिकट निकलवाने में आपका विशेष हाथ था। आपलोक सभा में गये और स्वतंत्ररुप में विना किसी दल की शरण लिये गये है।

आप आर्य प्रतिनिधिसभा उत्तरप्रदेश के कई वर्ष से प्रधान हैं। दयानन्द दीक्षा शताब्दी मथुरा को सफल बनाने में आपका विशेष हाथ रहा है।

श्री, बा० उमाशंकर जी वकील, फतेहपुर

आप आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता, कुशल एवं वीर नेता हैं। आप निस्पृह एवं स्पष्ट वक्ता हैं। सन् १९३२ से ३४ तक निरन्तर ३ वर्ष तक
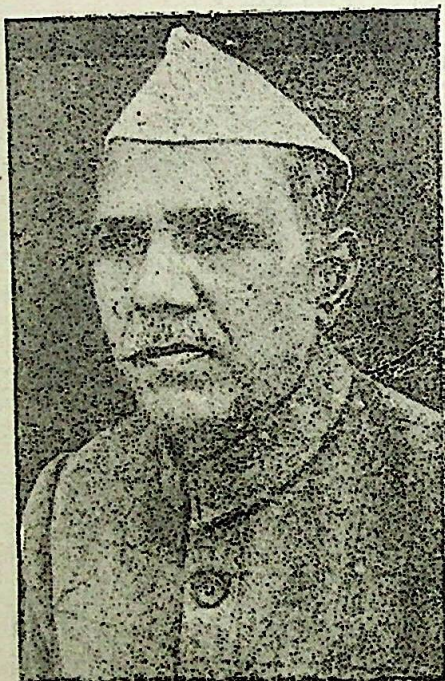
बा० उमाशंकर जी

आप सभा के मंत्री रहे। बिहार भूकम्प के समय आपने प्रान्त की ओर से धन एवं स्वयं सेवकों द्वारा वहां की पीड़ित जनता की विशेष सहायता की। आप सभा के उपप्रधान भी रहे हैं। आप उग्र राजनैतिक विचारों के व्यक्ति हैं। राजार्य सभा के जन्म दाताओं में से हैं।

प्रथम अखिल भारतीय राजार्य सम्मेलन बम्बई के आप ही प्रधान थे। हिन्दी रक्षा आन्दोलन में प्रान्त की ओर से आपका विशेष सहयोग रहा है। फतेहपुर जिले की समस्त आर्यसामाजिक प्रगतियों के आप प्राण हैं। आर्यसमाज की विभिन्न सामाजिक एवं राजनैतिक प्रगतियों में भी आपका विशेष हाथ रहता है।

डा० हरिशंकर शर्मा कविरत्न, आगरा

आप वर्तमान युग के हिन्दी जगत् के मूर्धन्य कवि हैं। आप अत्यन्त विनोद प्रिय सरस वक्ता एवं लेखक हैं। आपका सारा जीवन त्याग पूर्ण रहा है। अपने
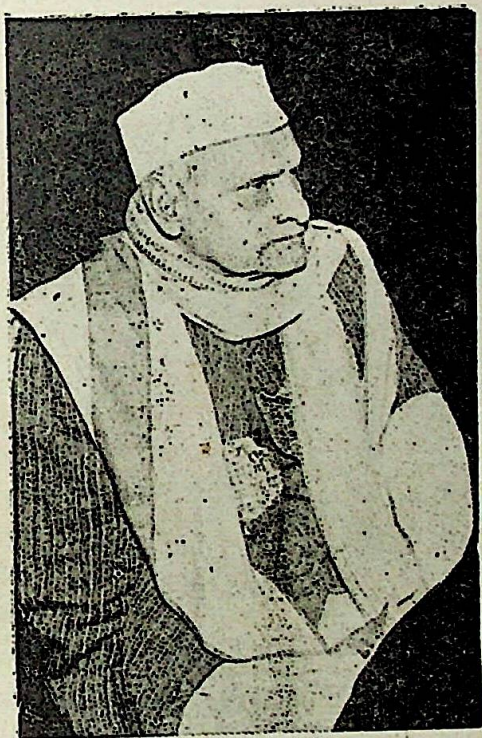
डा० हरिशंकर शर्मा

जीवन में आपने आर्यसमाज की अनथक सेवा की है। आर्यमित्र के आप प्राण ही रहे हैं। आर्यमित्र को चमकाने में और उसे हिन्दी जगत् का सर्व श्रेष्ठ साप्ताहिक-पत्र बनाने में आपका ही हाथ रहा है। अनेक बार और दीर्घ काल पर्यन्त आपने आर्यमित्र का सम्पादन भार अपने कन्धों पर वहन किया है। सन् १९५८ व ५९ में आप आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान रहे। मथुरा दीक्षा शताब्दी की समारोह समिति के अध्यक्ष भी आप ही थे। आप अनेक कवि

सम्मेलनों के अध्यक्ष रहे हैं। सम्प्रति आप गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन के उप कुलपति है। जहां आप उच्चकोटि के कवि हैं। वहां सिद्धहस्त लेखक भी हैं। आपने अपने जीवन में ८० के लगभग पुस्तकें लिखी हैं। आपकी अनेक पुस्तकों को सरकार ने विद्यालयों एवं विश्व विद्यालयों में स्वीकार किया हुआ है। अपनी अनेक रचनाओं पर आपने पुरस्कार भी प्राप्त किये हैं। आगरा विश्व विद्यालय ने आपको आनरेरी डी० लिट० की उपाधि प्रदान की है। आपकी रचनाओं में कुछ निम्न प्रकार हैं :—

रामराज्य, महर्षि-महिमा, पद्यप्रभा, आदि।

श्री पं० अलगूराय शास्त्री वन-मंत्री, उत्तरप्रदेश
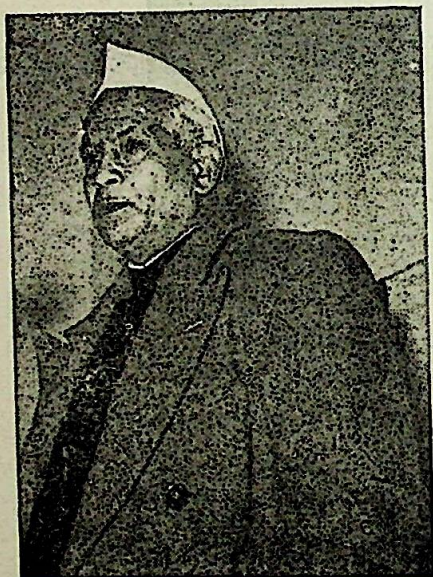
मं० अलगूराय शास्त्री

जन्म भूमि अमिला (आजमगढ़) है। विशेष कार्य क्षेत्र मेरठ रहा। काशी विद्यापीठ के आप स्नातक हैं एवं गुरुकुल डौरली मेरठ के संथापकों में हैं। लोकसेवा संघ के आजीवन सदस्य रहे और कुमार आश्रम मेरठ का विशेष संचालन किया। आप प्रभावशाली वक्ता, प्रौढ़ विद्वान् एवं लेखक हैं।

ऋग्वेद रहस्य के आप ही रचयिता हैं। राजनीतिमेंआपकी विशेष गति है। अनेक वार वृटिश कारागारों की शोभा बढ़ाई। सन् ४२ में भारत से बाहर जाते हुए सीमा प्रान्त में पकड़े गये खतरनाक क्रान्तकारी एवं संगठनकर्ता बनाकर आहको गृह-सचिव बैरेन ने कारागार में रखा। बैरेन ने प्रान्त के केवल चार व्यक्तियों को यह उपाधि दी थी अन्य तीन व्यक्ति श्री पं० जवाहरलाल नेहरू, श्री पं० शिवदयालु जी, एवं पं० स्व .विश्वम्भर-

दयालु त्रिपाठी एम० पी० उन्नाव रहे। आप सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान भी रहे हैं। लोकसभा के सदस्य के नाते आर्यसमाज के अनुरोध पर आपने फीरोजपुर जेल में हिन्दी सत्याग्रहियों पर जो अमानुषिक अत्याचार हुआ था। उसकी जांच की ओर साहसपूर्ण ऐतिहासिक प्रतिवेदन प्रधान मंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू जी को भेजा। प्रतिवेदन पाठक अन्यत्र पढ़ेंगे।

स्वामी ब्रह्ममुनि जी परिव्राजक (पं० प्रियव्रत आर्ष)

आर्य जगत् के प्रसिद्ध दार्शनिक एवं वैदिक विद्वान हैं। प्रतिभाशाली लेखक एवं गम्भीर वक्ता । आपके वैदिक प्रवचन अत्यन्त पाण्डित्य पूर्ण होते हैं। आपका जीवन अत्यन्त सरल, सादा एवं तपोमय है। आपने अपने जीवन में वेद एवं दर्शन सम्बन्धी अनेक उच्च कोटि के ग्रन्थ लिखे हैं। उनमें से अनेक सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित हुए हैं। सांख्य दर्शन पर अभी अभी आपने एक उत्तम संस्कृत भाष्य प्रकाशित कराया है। विमानशास्त्र नामक प्राचीन ग्रन्थ का सम्पादन भी आपने किया है। ऋषि के प्रति आपकी विशेष आस्था है।

श्री पं० भारतभूषण त्यागी एम०ए० ग्वालियर

आप का जन्म एवं शिक्षा बुलन्दशहर जिले में हुई। किन्तु कार्य क्षेत्र ग्वालियर मध्य भारत बन गया। आप एक अच्छे साहित्यिक, कवि एवं प्रभावशाली वक्ता हैं। दयानन्द कालेज ग्वालियर के आप प्रधानाचार्य हैं। मध्य भारत आर्य प्रतिनिधि सभा के आप मुख्य मंत्री हैं। मध्य भारत में आर्य समाज के कार्य को प्रगति देने में आपका विशेष हाथ रहता है। सरल स्वभाव एवं विनोद प्रिय व्यक्तियों में आपकी गणना है।

श्री पं० शिवनारायण जी शुक्ल एडवोकेट, लखीमपुर

आर्यजगत् के पुराने महारथी कर्मठ कार्यकर्ता हैं। लखीमपुर की सर्व सामाजिक एवं शैक्षणिक प्रगतियों के नेता हैं। आर्यसमाज लखीमपुर के निर्माण में आपका विशेष हाथ रहा है। सन २१ से २५ तक आप गुरुकुल वृन्दावन के मुख्याधिष्ठाता रहे और उसको उन्नत करने में आपने प्रशंसनीय कार्य किया।

सभा की न्यायोपसभा के सदस्य रह कर आपने अनेक उलझनों को सुलझाया है। भगवानदीन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय एवं आर्य समाज लखीमपुर के आप प्रधान हैं।

श्री गणेश दास जी प्रधान आर्य समाज मुरादाबाद
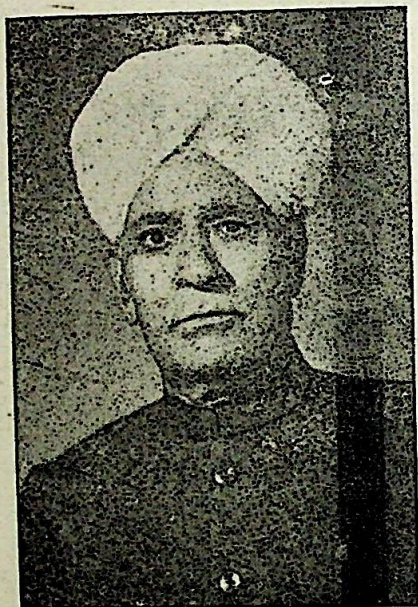
श्री गणेश दास जी

आप मुरादाबाद के प्रतिष्ठित आर्य समाज के कार्यकर्ता हैं। गंज समाज के प्रधान हैं और जिला उ० प्र० स० के भी प्रधान हैं। आप फ्लोर मिल के मालिक हैं।

श्री पं० चन्द्रदत्त तिवारी एम० ए०, लखनऊ

आप स्व० पं० रासविहारी तिवारी के छोटे पुत्र हैं। सभा के कई वर्ष उप-मंत्री रहे हैं। लखनऊ दयानन्द कालेज, बालिका विद्यालय, आर्य विद्यामन्दिर के आप मन्त्री हैं। आर्य समाज गणेशगंज लखनऊ के मंत्री भी रहे हैं। लखनऊ आर्य समाज की सर्व प्रगतियों में आपका हाथ रहता है। सभा की हीरक जयन्ती के आप ही स्वागत-मंत्री हैं। लखनऊ में गोमती की बाढ़ के समय आपने आर्य समाज की ओर से सहायता शिविर स्थापित कर प्रशंसनीय कार्य किया है।

श्री सेठ ध्यानसिंह जी, बिजनौर

आर्य समाज के कर्मठ कार्य कर्ता। जिला बिजनौर के प्रसिद्ध आर्य नेताओं में हैं। बिजनौर के वेद भवन के निर्माण में आप का विशेष हाथ है।

श्री सेठ घ्यान सिंह जी

श्री डा० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री तर्क शिरोमणि एम० ए०, मेरठ

गुरुगुक विश्व विद्यालय वृन्दावन के आप सुयोग्य स्नातक हैं। संस्कृत वांङ्मय के आप प्रकांड पण्डित हैं। प्रभावशाली वक्ता एवं लेखक हैं। आपने आर्य मित्र के सम्पादन का कार्य भी उत्तमता से किया है। और आप अपने गुरुकुल के आचार्य भी रहे हैं।

आप मेरठ के संस्कृत विभाग के अध्यक्ष रहे हैं। आपको आगरा विश्व विद्यालय ने डाक्टर आफ लिटरेचर की उपाधि से विभूषित किया। आपने अनेक पुस्तकें लिखी हैं। यथा पथ-प्रदीप, मुक्त-धारा, सदाचार- सन्ध्या, दिव्य-दर्शन आदि। आप आजकल कुरुक्षेत्र संस्कृत विश्व विद्यालय के संस्कृत विभाग के अध्यक्ष हैं। आप प्रबल समाज सुधारक हैं। आपने जाति बन्धन तोड़कर अपना विवाह किया और मेरठ में जात पांत तोड़क मंडल की स्थापना की थी। सभा के भी आप विभिन्न पदों पर अनेक वर्ष तक कार्य करते रहे हैं।

डा० महावीरसिंह रि० सि० सर्जन, ग्वालियरः—

आप स्व० ठा० खमानसिंह जी औरंगाबाद (अलीगढ़) के सुपुत्र में। शिक्षा-काल में आपने वैदिक आश्रम अलीगढ़ में भी कई वर्ष निवास किया।
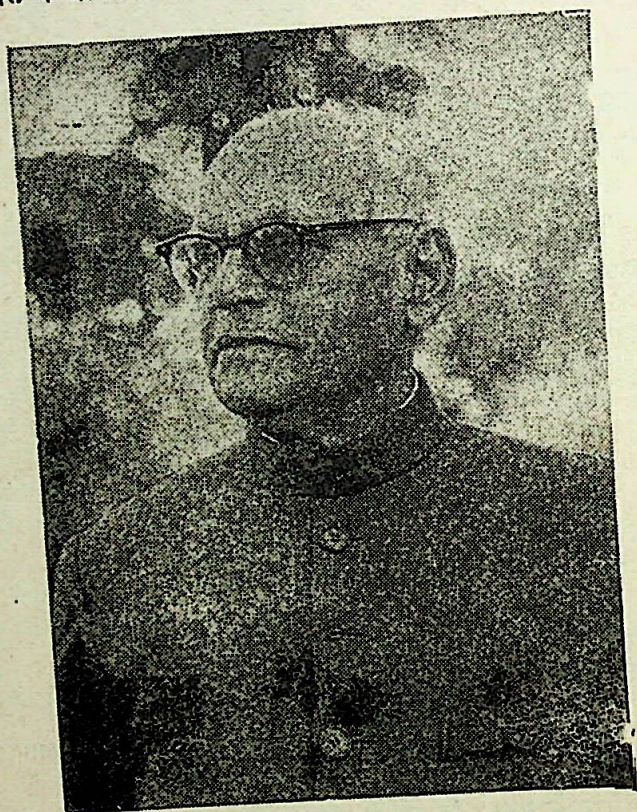
डा० महावीर सिंह जी

आपका कार्य क्षेत्र विशेषरूप से मध्यभारत रहा है। आप मध्यभारत आर्य-प्रतिनिधिसभा के प्रधान हैं। तथा सार्वदेशिक सभा के उप-प्रधान भी रहे हैं। हिन्दी रक्षा आन्दोलन में आपका विशेष सराहनीय भाग रहा है। मध्यभारत में आर्यसमाज की प्रगति में आपका विशेष हाथ है।

श्री पं० वासुदेवशरण अग्रवाल एम० ए० काशी

वैदिक साहित्य के प्रौढ़ विद्वान् विचारक, अत्यन्त सौम्य, सरल, सात्विक स्वभाव वाले व्यक्ति हैं। आप प्रतिभा सम्पन्न लेखक भी हैं। हिन्दी जगत्

के बड़ें से बड़े पत्र आपका लेख उपलब्ध करने में प्रयत्नशील रहते हैं। उरु-ज्योति नामक आध्यात्मिक पुस्तक आपकी ही रचना है। आप प्राच्य वस्तु-भंडार (म्यूजियम) मथुरा के अध्यक्ष रहे हैं। सम्प्रति काशी-विश्व विद्यालय में भारतीय विद्या विभाग के अध्यक्ष रहे हैं। आपके प्रवचनों में गंभीर वैदिक अनुसंधान की झलक रहती है।

श्री चौ० चरणसिंह जी एम० ए० एल एल० बी० वकील, कृषिमंत्री-उत्तर-प्रदेश, लखनऊ:—

आप अनेक वर्षों तक आर्यसमाज ग़ाजियाबाद के प्रधान रहे हैं। सन् १९४७ ई० में आपने अखिल भारतीय आर्य कुमार सम्मेलन की शिकोहाबाद
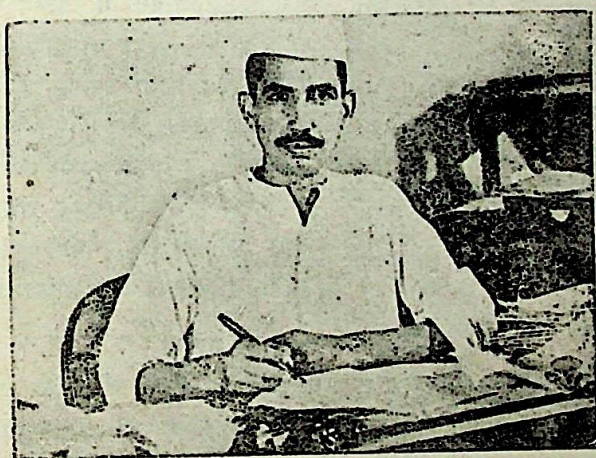
श्री चौधरी चरण सिंह जी

(मैनपुरी) में अध्यक्षता की है। मेरठ जिले के स्वतंत्रता आन्दोलनों में आपका विशेष हाथ रहा है। अनेक बार आपने वृटिश नौकरशाही की जेलों की यात्रा की है। आप प्रौढ़ वक्ता एवं लेखक हैं। कृषि शास्त्र के आप पण्डित हैं। ज़मीदारी उन्मूलन एवं शिष्टाचार पर आपकी मौलिक रचनाएं हैं। मेरठ अखिल भारतीय हिन्दी सहित्य सम्मेलन के आप स्वागताध्यक्ष रहे हैं। तथा गुरुकुल डौरली की अनेकों वर्षों तक आपने प्रधानता की है।

आप प्रान्त में न्याय पुलिस एवं गृह विभागों के मंत्री रह चुके हैं और सम्प्रति कृषि विभाग के मंत्री हैं।

पं० बिहारीलाल जी शास्त्री

श्री पं० बिहारीलाल जी शास्त्री. काव्यतीर्थ, बरेली:—
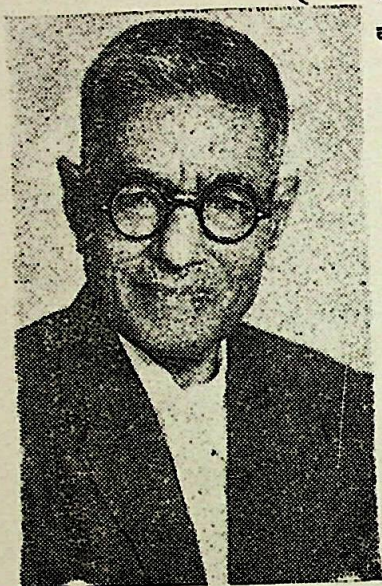
आप का जन्म स्थान पागवाड़ा जिला मुरादाबाद है। आप आर्यसमाज के पुराने कर्मठ कार्यकर्ता एवं प्रभावशाली वक्ता हैं। शास्त्रार्थ महारथी एवं मान्य नेता हैं। आपका सारा जीवन ऋषि-मिशन के प्रचार में ही व्यतीत हुआ है। अपने जीवन में आपने विभिन्न मतवादियों से अनेक शास्त्रार्थ किये हैं। शुद्धि, दलितोद्धार एवं ईसाई निरोध में आपने, विजनौर, बदायूं बरेली, मुरादा-वाद जिलों में विशेष कार्य किया है। गत वर्ष आप आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के उप प्रधान भी रहे हैं, ईसाई निरोध समिति के आप अधिष्ठाता हैं।

बा० शालिगराम जी आगरा

आप आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं। आपके जीवन का दीर्घकाल आर्य समाज की सेवा में व्यतीत हुआ है। आज दिन भी वृद्धावस्था में आप आर्य समाज की तन मन से सेवा कर रहे हैं।

अनेकों वर्ष तक आप आर्यमित्र एवं आर्य भास्कर प्रेस के अधिष्ठाता रहे आगरा शुद्धि सभा के आप प्रधान रहे हैं तथा शुद्धि आन्दोलन में आपका विशेष भाग रहा है। आप कुशल प्रबन्धक है। ऋषि जन्म शताब्दी मथुरा तथा निर्वाण अर्थ शताब्दी अजमेर के आप ही प्रवन्धक रहे हैं। गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन के महोत्सवों पर स्वयं सेवकों का प्रबन्ध सदा आपके ही हाथ में रहता है।

पं० बनारसीदास चतुर्वेदी, फिरोज़ाबाद (आगरा)

हिन्दी जगत् के उच्चकोटि के महान साहित्यकार हैं। आप जैसे व्यक्ति के सम्पादकत्व में प्रकाशित होने का आर्यमित्र को सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

मारीशश, फीजी आदि द्वीपों में आपने प्रवासी भारतीयों की विशेष सहायता की है। दीक्षा शताब्दी मथुरा के दिसम्बर १९५९ में आर्य-मित्र हीरक जयन्ती सम्मेलन के आप अध्यक्ष बनाये गये थे।

राजा रणंजयसिंह जी अमेठीं (सुलतानपुर)

आर्य समाज के कर्मठ नेता एवं उत्साही कार्यकर्ता हैं। ऋषि दयानन्द के परम भक्त एवं वैदिक सिद्धान्तों पर निछावर होने वाले व्यक्ति हैं। आप सरल, सौम्य एवं मृदु स्वभाव के व्यक्ति हैं। सन् १९५७ ई० में आप सभा के प्रधान रह चुके हैं। अमेठी की शैक्षणिक एवं सामाजिक प्रगति में आपका विशेष हाथ रहता है। रणवीरसिंह उच्च माध्यमिक विद्यालय के आप निर्माता हैं एवं उत्तर-प्रदेश की धारा सभा के मान्य सदस्य हैं।

राजा रणंजय सिंह जी

श्री पं० ओमप्रकाश जी पुरुषार्थी तौली ज़िला बुलन्दशहर

आर्य समाज के कर्मठ युवक नेता ओजस्वी वक्ता, लेखक एवं संगठन पटु व्यक्ति हैं। अखिल भारतीय आर्यवीरदल के आप सेनापति हैं। आर्य-वीर दल को संगठित करने में आपने अनेकों वर्ष तक अनथक परिश्रम किया है। हिन्दी रक्षा आन्दोलन के आप प्रमुख कार्यकर्त्ताओं में रहे हैं।

विहार, मध्य-भारत आदि प्रान्तों में ईसाई मिशनरियों के भयंकर चक्र-व्यूहों का आपने बड़ी कुशलता से भेदन किया है। आपने विदेशी पादरियों की गति विधियों की समालोचना बड़ी योग्यता से की है।

श्री बाबू पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट आगरा—
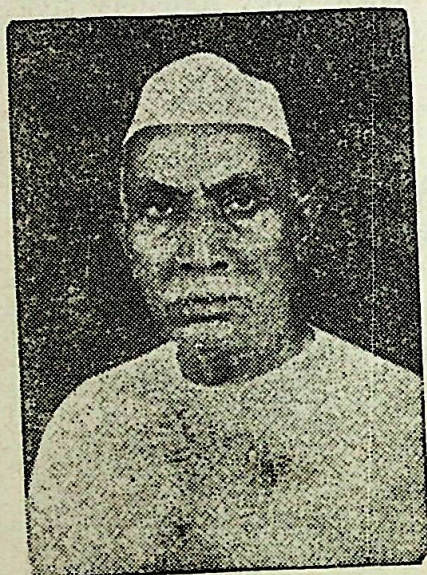
बा० पूर्णचन्द्र जी

आप आर्य समाज के प्रसिद्ध नेता। व्याख्याता एवं लेखक है। आप का सारा जीवन आर्य समाज की सेवा में बीता है। अनेक वर्षों तक आप आर्य प्रतिनिधिसभा उत्तर प्रदेश के तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पद को सुशोभित करतेरहे हैं। उत्तर प्रदेश के अवैतनिक उपदेशक संघ के आप जन्म दाता हैं। नैतिक उत्थान, चरित्र-निर्माण, अपराध, निरोध सदाचार आदि पर आपने अनेक ग्रन्थ लिखे हैं।

स्वामी अभय देव (आचार्य देवशर्मा जी) चरथावल, मुजफ्फर नगर

गुरुकुल विश्व विद्यालय कांगड़ी क आप यशस्वी स्नातक हैं। वेदों के आप अच्छे ज्ञाता हैं। आप बाल ब्रह्मचारी हैं। अत्यन्त सरल, सात्विक आपका जीवन है। यौगिक साधनाओं में आपकी विशेष प्रगति है। देश के स्वाधीनता संग्रामों में भी आपने विशेष कार्य किया है। अनेक बार कारागार की यात्रा की है। गांधी जी के सेवा-संघ के आप प्रमुख कार्यकर्त्ता रहे हैं। अनेक वर्षों तक आपने गुरुकुल कांगड़ी के आचार्य पद पर रह कर कार्य किया है।

आपकी योगीराज अरविन्द के प्रति विशेष आस्था है। अरविन्द के वेदों पर लिखें अंग्रेजी ग्रन्थ का आपने हिन्दी में अनुवाद किया है। अरविन्द के लक्ष्य की पूर्ति के उद्देश्य से चरथावल में आप अरविन्द आश्रम बनाकर कार्य कर रहें हैं। आप प्रवीण लेखक हैं। वैदिक-विनय, ब्राह्मण की गौ, तरंगित-हृदय आदि आपकी रचनाएँ हैं।

श्री नरेन्द्र जी हैदराबाद

आपकी पितृ-भूमि उत्तर-प्रदेश के फ़र्रुखाबाद जिले में है। किन्तु आप का कार्य क्षेत्र हैंदराबाद बन गया है। इस प्रदेश में आपने आर्यसमाज का महान् कार्य किया है। हैदराबाद सत्याग्रह के संचालन मे आप का विशेष हाथ रहा है। हैदराबाद महा सम्मेलन के आप अग्र गण्य कार्यकर्त्ता रहे हैं।

श्री नरेन्द्र जी

हिन्दी रक्षा आन्दोलन के आप व्यवस्थापक थे। देहली केन्द्र में बैठ कर सत्याग्रह के संचालन का कार्य सुचारु रूप से आप ने किया है।

दयानन्द दीक्षा शताब्दी मथुरा के आप स्वागताध्यक्ष थे। उसे सफल बनाने में आपका विशेष हाथ रहा है। हैदराबाद के राजनैनिक जीवन से भी आपका धनिष्ट सम्बन्ध है। अनेक वर्ष तक विधान सभा के सदस्य रह चुके हैं। आप दक्षिण हैदराबाद आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रमुख निर्माताओं में से है और इस समय आप उसके मंत्री हैं। आप एक अत्यन्त सरल एवं मृदु स्वभाव के प्रवीण कार्यकर्त्ता है।
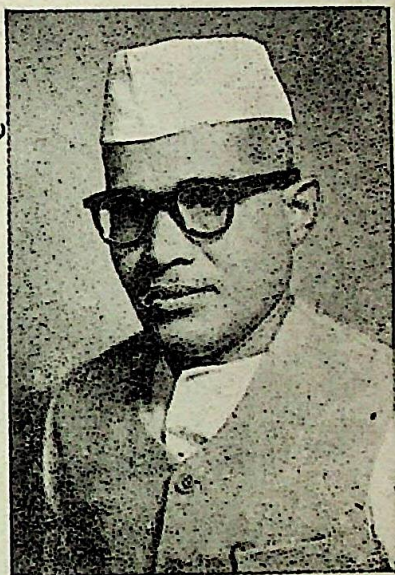
श्री बाबूलाल एम० एस० सी० पूर्व सं० शि० वि० मध्यभारत

जन्म स्थान सौरखा जिला बुलन्दशहर। देहरादून डी० ए० बी कालेज में प्राध्यापक रहे। ग्वालियर कालेज के प्रधानाचार्य रहे तथा मध्य भारत के शिक्षा विभाग के इन्स्पेक्टर जनरल रहे। अत्यन्त सौम्य स्वभाव तपस्वी जीवन वाले व्यक्ति हैं या भारत आ० प्र० सभा के प्रधान रहे हैं।

श्री पं० प्रेमचन्द जी शर्मा एम०एल०सी० हाथरस (अलीगढ़)

आप अलीगढ़ जिले के प्रगतिशील नवयुवक नेता है। सौम्य, सरल एवं कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं। दो वर्ष सभा के उप मंत्री, तीन वर्ष मंत्री रहे और सम्प्रति मुख्य उप प्रधान हैं। हाथरस आर्य समाज के भी प्रधान हैं। जिला उप सभा के आप अनेकों वर्ष तक मंत्री रहे हैं। और सम्प्रति उसके मुख्य
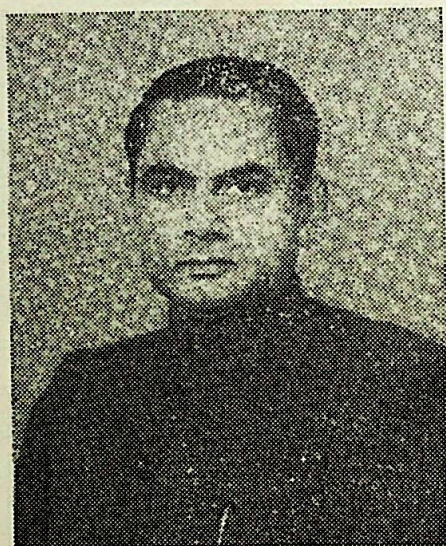
श्री पं० प्रेमचंद्र जी शर्मा

उप प्रधान हैं। सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग के सदस्य हैं। महर्षि दयानन्द दीक्षा शताब्दी मथुरा के समय आप ही सभा के मंत्री थे और आपने शताब्दी समारोह को सफल बनाने का विशेष उद्योग किया। प्रान्त में दौरे कर जाग्रति की और धन संग्रह किया। हाथरस की राजनीतिक गतिविधियों तथा अन्य सब सांस्कृतिक एवं समाजिक प्रगतियों में आप का हाथ रहता है। कन्या गुरुकुल हाथरस के आप तीन वर्ष तक मंत्री रहे हैं। १९५२ से आज तक आप उत्तर-प्रदेश विधान सभा के मान्य सदस्य हैं।

श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक, दयानन्द भवन दिल्ली

आप महमूदपुर (बिजनौर) निवासी हैं। ३८ वर्षों से निरन्तर सर्वादेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का कार्य कर रहे हैं। सभा के कार्यालयाध्यक्ष हैं। सभा

के कार्यालय को व्यवस्थित करने का आप को विशेष श्रेय है। आप सार्व देशिक पत्र के सह-सम्पादक भी है। अच्छे लेखक हैं। आपकी कुछ रचनाएँ निम्न हैं—

१. नैतिक जीवन (बिहार सरकार द्वारा स्वीकृत २. आर्य सन्तति निग्रह ३. वैदिक संस्कृति ४. आदर्श गुरु-शिष्य ५. देश भक्त बच्चे ६. आर्य जीवन तथा गृहस्थ धर्म।

श्री चन्द्रभानु गुप्त मुख्य मंत्री उत्तर-प्रदेश

आप जन्म जात आर्यसमाजी हैं। आपका जन्म अतरौली जिला अलीगढ़ में हुआ। वहाँ से आप अपने पिता जी के साथ लखीमपुर खीरी चले गये।

श्री चन्द्रभानु जी गुप्त

लखीमपुर में आर्य कुमार सभा के मंत्री रहे। आपने उच्च शिक्षा लखनऊ में प्राप्त की, यहाँ आप गणेशगंज आर्यकुमार सभा के कर्मठ कार्यकर्ता रहे। सन् १९१६ ई० के प्रान्तीय आर्य कुमार सम्मेलन को सफल बनाने में आपका विशेष हाथ था। शिक्षा समाप्त कर आपने लखीमपुर में जाकर वकालत प्रारम्भ की।

आपने स्वाधीनता संग्राम में भाग लिया और बृटिश सरकार की जेलों की यात्रा की। सन् १९५७ में सभा भवन में वृक्षारोपण पर्व पर आपने बड़ी भावुकता के साथ अशोक वृक्ष का आरोपण किया तथा सभा भवन के वाल-विहार के लिए ८००) व्यायाम उपकरणार्थ अनुदान दिया।

श्री मदनमोहन जी वर्मा, एम० ए० फैज़ाबाद

श्री मदन मोहन जी वर्मा

आप फैज़ावाद नगर के प्रतिष्ठित आर्य सामाजिक नेता हैं। फैज़ावाद की प्रत्येक सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक एवं राष्ट्रीय प्रगतियों में आपका हाथ है। आप अनेकों वर्ष तक आर्य समाज फैज़ावाद के प्रधान रहे। फैजावाद के राजकरण उच्च माध्यमिक विद्यालय के आप संस्थापक हैं। गुरुकुल अयोध्या को भी आपका विशेष सहयोग रहता है। आप उत्तर-प्रदेश विधान सभा के अध्यक्ष एवं हीरक जयन्ती समिति के स्वागता ध्यक्ष हैं।

श्री विद्याधर जी, कानपुर

आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं। कानपुर की समस्त आर्य सामाजिक प्रगतियों के प्राण हैं। दयानन्द ऐंग्लों वैदिक डिग्री कालेज के निर्माण एवं उत्थान में आपका विशेष परिश्रम रहा है। दीर्घकाल से आप उसके व्यवस्थापक हैं।

हिन्दी रक्षा आन्दोलन में आपका सराहनीय सहयोग रहा हैं। आप आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के उप-प्रधान हैं।

श्रीमती शकुन्तला देवी गोयल मेरठ

श्री मती शकुन्तला गोयल

आर्य महिला जगत् की विशेष कार्यकर्त्री हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर-प्रदेश की आप कितने ही वर्षों तक उप प्रधाना रही हैं। आर्य महा सम्मेलन मेरठ की आप ही स्वागताध्यक्षा थीं। मेरठ की राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक प्रगति यों में आप का विशेष हाथ रहता है। सार्वदेशिक सभा की आप उपमन्त्रिणी भी रही हैं।

पंडित रामचन्द्र आर्य मुसाफ़िर, अजमेर

आप विजनौर जिले के रहने वाले हैं। हिन्दी संस्कृत, उर्दू, फ़ारसी, अरबी, गुजराती, मराठी भाषाओं के आप विद्वान हैं। आपकी आयुर्वेद में भी अच्छी गति है। अछूतोद्धार एवं शुद्धि क्षेत्र के आप विशेष कार्यकर्ता हैं। आपका कार्य क्षेत्र उत्तर प्रदेश, राजस्थान, मध्यभारत, गुजरात एवं पंजाब रहा है। सम्प्रति आपका प्रमुख कार्य क्षेत्र अजमेर हैं। आप प्रभावशाली वक्ता, लेखक एवं कवि हैं।

श्री लाला गणेशदास जी, मुरादाबाद

आपका जन्म रावलपिंडी में हुआ और शिक्षा डी० ए० वी० कालेज लाहौर में हुई। मण्डी बहाउद्दीन में आपने कार्य आरम्भ किया। आर्य समाज के प्रचार में आपने उस क्षेत्र में प्रमुख कार्य किया। आप वहां की समाज के प्रधान थे, आपने डी० ए० वी० मिडिल स्कूल एवं आर्य गर्ल्स स्कूल पिन्डो सैदपुर में स्थापित किये। भारत विभाजन के पश्चात् फ्लोर मिल के मालिक रूप में प्रसिद्ध हुए। मुरादाबाद नगर व जिले की आर्य सामाजिक गति

विधियों के आप केन्द्र हैं। मुरादाबाद गंज आर्य समाज और आर्य उप प्रतिनिधि सभा मुरादाबाद के आप प्रधान हैं। आपके प्रभाव से मुरादाबाद क्षेत्र में आर्य समाज की पर्याप्त यशवृद्धि हुई है।

श्री लाला मिश्रीलाल जी रईस, टांडा (फैज़ाबाद)
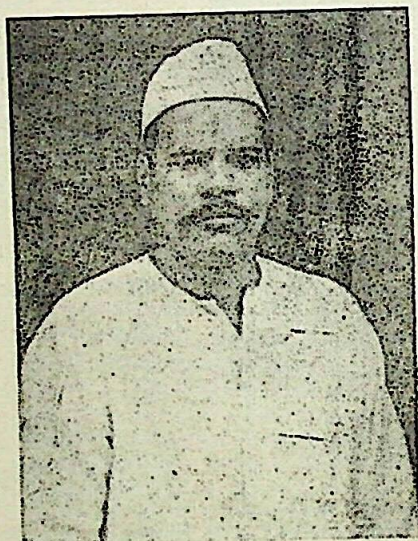
श्री मिश्री लाल जी

आप आर्य समाज के प्रतिष्ठित कर्मठ कार्यकर्ता हैं। विशेष दानी भी हैं। आर्य समाज टांडा के उत्थान में आपका विशेष हाथ है। सभा भवन में पुष्कल धन राशि देकर आपने विशाल यज्ञशाला निर्माण में सहयोग दिया।

श्री श्रीदेव जी वानप्रस्थी, ज्वालापुर

आर्य समाज के पुराने कर्मठ कार्यकर्ता हैं। सम्प्रति ज्वालापुर वानप्रस्था-श्रम में कार्य कर रहे हैं। वहां संस्कृत शिक्षा की आपने व्यवस्था की है। आश्रम के आप मंत्री भी रहें हैं। लखनऊ में आपने आर्य कोआपरेटिव बेंक का संचालन किया था। आर्य समाज नरही एवं सरस्वती विद्यालय के आप संस्थापकों में हैं। आप सभा के सहायक-मंत्री, आर्यमित्र एवं भगवानदीन आर्य भास्कर प्रेस के सहायक-अधिष्ठाता तथा सन् १९४७ से ५२ तक शिक्षा-विभाग के अधिष्ठाता रह चुके हैं।

श्री कृष्णलाल 'कुसुमाकर', फिरोजाबाद

श्री कृष्णलाल कुसुमाकर जी

गुरुकुल महा विद्यालय ज्वाला पुरके स्नातक हैं। आपने वहाँ से आयुर्वेद भास्कर की उपाधि प्राप्त की तथा सिद्धान्त शास्त्री, साहित्यालंकार आदि उपाधियाँ भी उपलब्ध की हैं। आपने आर्य समाज एवं स्वराज्य आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया है ।आप प्रान्तीय एवं सार्वदेशिक सभाओं के सदस्य रहे हैं तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन में भी कार्य किया है। सन १९५७ में आप हिन्दी रक्षा आन्दोलन में स्थानीय आर्य समाज सत्याग्रही जत्था लेकर गये थे और सत्याग्रह किया तथा अम्बाला जेल को सुशोभित किया आप हिन्दी के अच्छे लेखक एवं कवि हैं।
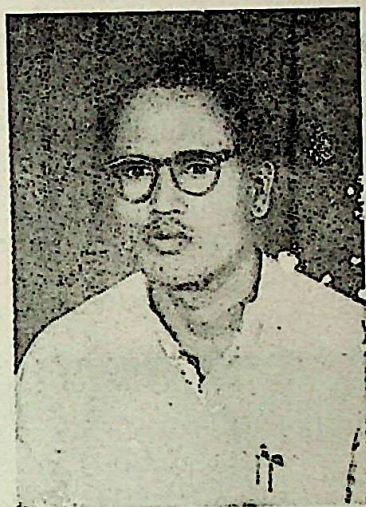
श्री चन्द्र नारायण जी एम० ए० वकील, बरेली

आप आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं। बरेली की समस्त शैक्षणिक, सामाजिक एवं साहित्यिक प्रगतियों में आपका विशेष हाथ रहता है। आप हिन्दी उर्दू के अच्छे कवि एवं लेखक हैं।

अनेक वर्षों तक सभा के उपमंत्री रहे। अनाथालय बरेली के आप अनेक वर्षों तक मंत्री रहे। आर्य समाज विहारीपुर के प्रधान रहे । बरेली प्रान्तीय राजार्य सम्मेलन व उपदेशक सम्मेलन आदि के आप स्वागताध्यक्ष रहे हैं। गुरुधाम नामक नाटक आपकी सुन्दर रचना है। आपने इस नाटक का सफल प्रदर्शन भी बरेली व लखनऊ में किया है।

श्री जयानन्द भारती, गढ़वाल

तीस वर्ष की आयु में सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने से आपके जीवन में क्रान्ति आई और आप आर्य समाज के प्रबल प्रचारक बन गये। सन् १९१४ में आप फौज में भरती होकर भारत से बाहर लड़ाई पर चले गये। किन्तु

सैनिकों में आर्य समाज का प्रचार निरन्तर करते रहे। सन् १९२१ में सेना से निवृत हो आप पुनः प्रचार कार्य में जुट गये। आपने गढ़वाल में अनेकों आर्य समाजों की स्थापना की और उच्च जात्याभिमानियों की भर्त्सना एवं लाठी डंडों की मार सही। आप गढ़वाल की पिछड़ी जातियों के अधिकारों के लिये निरन्तर सरकार से लड़ते रहे। १९२९ से आपने कांग्रेस में सक्रिय भाग लिया। आप राष्ट्रीय आन्दोलन में ६ बार जेल गये। डोला-पालकी आन्दोलन के आप सूत्रधार हैं।

श्री करण सिंह जी छोंकर, मथुरा
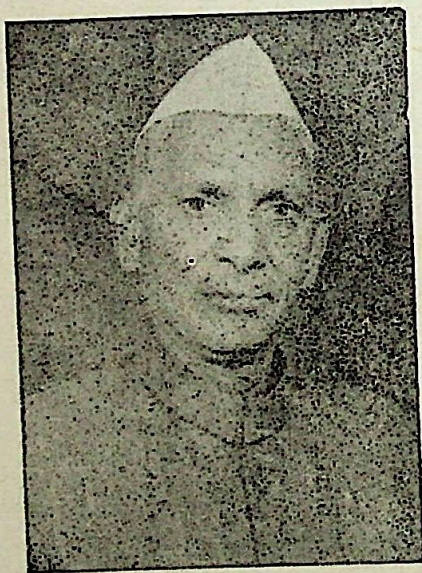
श्री करण सिंहजी छोंकर

मथुरा जिले के कर्मठ आर्य नेता हैं। आपने अपना अधिकतर जीवन आर्य समाज की सेवा में व्यतीत किया है। शोलापुर आर्य महा सम्मेलन में आपने पं० शिव-दयालु जी के साथ स्वयं सेवक शिविर में कार्य किया है।

गुरुकुल विश्व विद्यालय वृंदावन के आप अनेक वर्ष तक मुख्याधिष्ठाता रहे हैं। विरजानन्द कुटी की भूमि को आर्य समाज के निमित्त प्राप्त करने में आपका प्रयत्न सराहनीय है। मथुरा शताब्दी समारोह के व्यवस्थापकों में भी आप रहे हैं।

आचार्य बीरेन्द्र जी शास्त्री एम० ए० रायबरेली

आप आर्य जगत् के प्रतिष्ठित विद्वानों में से हैं। आर्य प्रतिनिधि-सभा उत्तर प्रदेश के आप अनेकों वर्ष तक शिक्षा विभाग के अधिष्ठाता रहे हैं।

सार्व देशिक आ० प्र० सभा की विद्या-सभा के आप मन्त्री हैं। धर्मशिक्षा सम्बन्धी पुस्तकें भी लिखी हैं।

श्री विश्वम्भर सहाय प्रेमी, मेरठ

मेरठ के प्रमुख सार्वजनिक कार्यकर्ता, अनुभवी पत्रकार एवं सिद्ध-हस्त लेखक हैं। हिन्दी साहित्य सम्मेलन मेरठ के आप स्वागत मंत्री रहे हैं। सभा के कार्यों में भी आप का सहयोग रहा है। दीक्षा शताब्दी के अवसर पर आप प्रचार मंत्री और राष्ट्र-भाषा सम्मेलन के संयोजक रहे हैं। स्वाधीनता संग्राम में भी आपका भाग रहा है। बृटिश नौकर शाही की जेल को आपने सुशोभित किया है। आप आदर्श पत्रकार एवं लेखक हैं।

सम्पादकाचार्य माता सेवक पाठक, सिरसा (प्रयाग)

आप आर्यसमाज के पुराने सौम्य संयमी कार्यकर्त्ता हैं। राजनीति से सम्वन्ध १९०५ ई० से ही हो गया था।

पं० सुन्दरलाल जी के कर्मयोगी हिन्दी साप्ताहिक में कार्य करना आरम्भ किया। १९०७ में वंगभंग के समय जब लाला लाजपतराय जी को देश निकाले का दंड दिया गया और उस पर जो आन्दोलन खड़ा हुआ आपने उसमें भाग लिया। आपके सम्पादकीय जीवन का आरम्भ देहरादून से प्रकाशित राजा महेन्द्र प्रताप जी के "निर्वल सेवक" हिन्दी साप्ताहिक से हुआ। बाद में कलकत्ते के हिन्दी दैनिक "विश्वमित्र" में चले गये। विश्व-मित्र का सम्पादन करते आपको ३४ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। 'रमतायोगी' स्तम्भ आपकी ही लेखनी से प्रायः निसृत होता है।

विश्वमित्र की ख्याति में इस स्तम्भ का ही विशेष हाथ है। आपने इस स्तम्भ में नरमदली लोगों की सदा कड़ी खबर ली है। और जनता में स्फूर्ति निर्माण का महत्वपूर्ण कार्य किया है।

विद्यामार्तण्ड स्वामी समर्पणानन्द (पं० बुद्धदेवविद्यालंकार) प्रभाताश्रम, मेरठ

आप आर्य जगत के प्रकाण्ड विद्वान, ओजस्वी-वक्ता, लेखक एवं नेता हैं। आप शास्त्रार्थ महारथी भी हैं। गुरुगुल विश्वविद्यालय कांगड़ी के आप स्नातक हैं। विशेष पाण्डित्य के कारण गुरुगुल ने आपको विद्यामार्तण्ड की उपाधि से विभूषित किया है। आपने देश के कोने २ में घूम कर वैदिक धर्म का प्रचार किया है। और गत वर्ष संन्यास लेकर आप प्रचारकार्य में ही पूर्ववत् संलग्न हैं। आप आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के एक वर्ष प्रधान भी रहे हैं। आपने अनेकों पुस्तकें लिखी हैं। यथा कायाकल्प, नेहरू-नीति आदि।

भारतीय लोक संघ के आप जन्म दाता रहे हैं। सम्प्रति आप शत-पथ ब्राह्मण का भाष्य कर रहे हैं।

श्री सत्यपाल जी शास्त्री वेद-वाचस्पति, विद्यावाचस्पति, सिद्धान्तरत्न कालन्द मेरठ
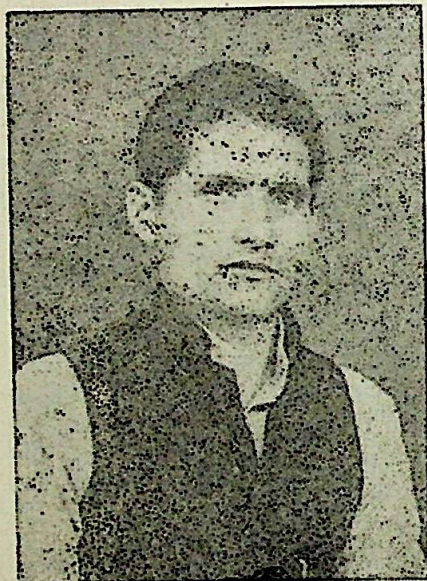
श्री सत्यपाल जी

आप गुरुकुल डौरली के पुरातन छात्र हैं। आर्य प्रतिनिधि-सभा के महोपदेशक रहे। उत्साही कार्यकर्त्ता एवं प्रभावशाली वक्ता हैं। कर्मकांड प्रवीण हैं। हिन्दी-सत्याग्रह में मेरठ जिले से ५१ सत्याग्रहियों का जत्था लेकर गये। सत्याग्रह कर पंजाब की जेलों की शोभा बढ़ाई। इस समय आर्यसमाज नयाबांस देहली में पुरोहित का कार्य कर रहे हैं।

श्री हरिप्रसाद जी वानप्रस्थी, गाजियाबाद :—

कर्मठ प्रचारक हैं। निरभीकिता पूर्वक ४५ वर्ष से आर्यसमाज का प्रचार कर रहे हैं। सन् २८ में सरहिन्द में १४४ धारा तोड़कर प्रचार करने पर पकड़े गये। म० कृष्ण जी के जत्थे में आप हैदराबाद सत्याग्रह में सम्मिलित हुए। हिन्दी सत्याग्रह में अम्बाला जेल की यात्रा की। शुद्धि क्षेत्र के आप महारथी हैं। मीरपुर की शुद्धि के अवसर पर पता पाते ही रुग्णा पत्नी को छोड़कर उधर चल दिये। पीछे पत्नी का स्वर्गवास भी हो गया।

श्री चोखे लाल सत्यपाल, शाहजहांपुर

आर्य समाज के कर्मठ कार्य-कर्त्ता हैं। आपके ही उद्योग से जिला सभा की स्थापना हुई। आप अनेक वार सभा के अन्तरंग सदस्य रहे हैं। मादकद्रव्य निषेध विभाग के अधिष्ठाता रहे। मथुरा शताब्दी में आपका विशेष सहयोग रहा। 'गांधी' साप्ताहिक हिन्दी पत्र के आप जन्म दाता हैं।
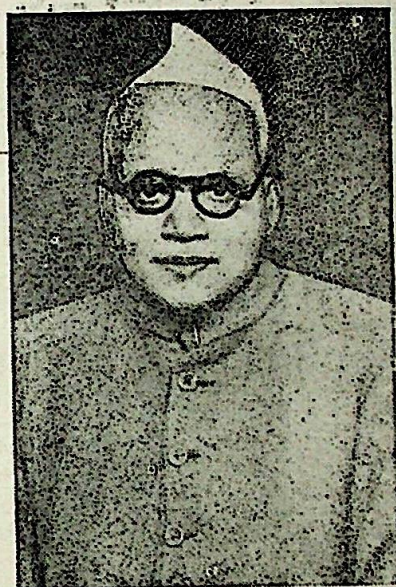
श्री चोखे लाल सत्यपाल जी

श्री तेजनारायण जी एडवोकेट, लखनऊ

आप आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता प्रभावशाली वक्ता हैं। आर्यसमाज गणेशगंज तथा जिला उपसभा के आप प्रधान हैं। सभा की हीरक जयन्ती के कार्यवाहक स्वागताध्यक्ष भी आप ही हैं।

श्री ला० हरशरणदास जी रईस, गाजियाबाद

आर्यसमाज के पुराने प्रतिष्ठित कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं। हिन्दुत्व की भावनाओं के प्रबल समर्थक हैं। गाजियाबाद के आर्यसमाज में आपने अग्रगण्य नेता के रूप में कार्य किया है। आप सार्वदेशिक सभा के आजीवन सदस्य है।

विद्याभास्कर पं० वाचस्पति शास्त्री, आगरा
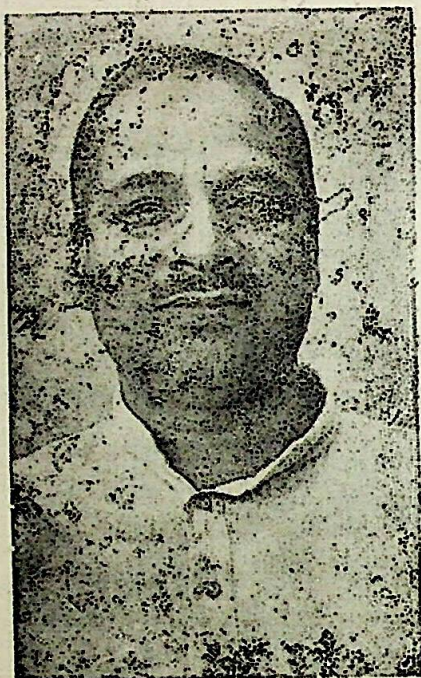
पं० वाचस्पति शास्त्री

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के सुयोग्य स्नातक हैं। प्रसिद्ध प्रभावशाली वक्ता हैं। अनेक वर्ष तक सभा के महोपदेशक पद को आपने सुशोभित किया है। हिन्दी रक्षा आन्दोलन में आपका विशेष सहयोग रहा है।

श्रीयुत रामचन्द्र जी मित्तल बी० ए०, मेरठ

विशेष सरल स्वभाव वाले आर्यसमाज के पुराने कर्मठ कार्य कर्त्ता हैं। सभा के नायक जाति सुधार विभाग के अधिष्ठाता रहे हैं। मेरठ में नायक बालिका आश्रम के संचालन में आपका विशेष हाथ रहा है।

श्री पं० अमरनाथ जी वैद्यशास्त्री, वनस्पतिभवन, देहरादून

आर्यसमाज के पुराने कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं। वैदिक राजनीति में विशेष चिन्तन करने वाले व्यक्ति हैं। हैदराबाद सत्याग्रह एवं हिन्दी रक्षा आन्दोलन में आपने विशेष भाग लिया है।

विद्याभास्कर पं० सच्चिदानन्द जी शास्त्री, एम० ए०, हरदोई

अनेक वर्षों तक आप आर्य प्रतिनिधिसभा उत्तर प्रदेश के महोपदेशक रहे। हिन्दी रक्षा आन्दोलन में आपने भाग लिया और पंजाब में कारागार की यातनाएं सहन कीं अछूतोद्धार, आन्दोलन में भी आपका विशेष भाग रहा है। आप सभा के अन्तरंग सदस्य हैं।
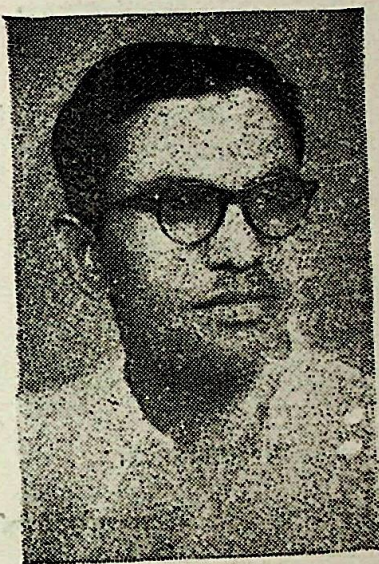
पं० सच्चिदानन्द जी

श्री स्वामी शिवानन्द जी सरस्वती, व्याख्यानमार्तण्ड, हरिद्वार

आप आर्यसमाज के पुराने कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं। प्रभावशाली प्रचारक एवं वक्ता हैं। हिन्दी रक्षा आन्दोलन में आपने पंजाब की जेलों को भी सुशोभित किया। अपने पुरुषार्थ से आपने हरिद्वार जस्सारामरोड पर एक सुन्दर आश्रम का निर्माण किया है, जो किसी समय हरिद्वार में आर्यसमाज के प्रचार का एक सुन्दर केन्द्र सिद्ध हो सकता है।

श्री पं० भूदेव जी सिद्धान्त शिरोमणि एम० ए० आगरा

गुरुकुल वृन्दावन के सुयोग्य स्नातक हैं और आजकल आप आगरा विश्व विद्यालय के अन्तर्गत दक्षिण भारतीयों के निमित्त चलने वाले हिन्दी महाविद्यालय में प्राध्यापक हैं।

विद्यावारिधि पं० सत्यमित्र जी शास्त्री वेदतीर्थ, बड़हलगंज, गोरखपुर

पं० सत्यमित्र जी

गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या के प्रतिष्ठित स्नातक हैं। सभा के अनेक वर्षों से महोपदेशक हैं। संस्कृत एवं वैदिक साहित्य के अच्छे पण्डित है। प्रभाव शाली वक्ता है। मृदु, सरल स्वभाव के कर्मठ प्रचारक हैं।

श्री डा० नरेन्द्रशास्त्री एम० ए०, लखनऊ

आप गुरुकुल वृन्दावन के सुयोग्य स्नातक हैं। प्रतिभाशाली वक्ता हैं। और प्रवीण कवि भी हैं • वैदिक सिद्धान्तों का आपको विशेष ज्ञान हैं। सम्प्रति दयानन्द कालेज लखनऊ के आप उप प्रधानाचार्य हैं।

श्री पं० द्विजेन्द्रनथ जी शास्त्री आयुर्वेद शिरोमणि मेरठ

आप गुरुकुल वृन्दावन के प्रतिष्ठित स्नातक हैं। संस्कृत साहित्य के धुरन्धर विद्वान् हैं। वैदिक संस्थान के अन्दर रहकर आपने यजुर्वेद का सरल भाष्य करने में हाथ बटाया है। आपके अत्यन्त खोजपूर्ण ग्रन्थ संस्कृत-साहित्य विमर्श पर सरकार ने १२००) का पारितोषिक प्रदान किया है।

वैद्यराज पं० हरिशंकर शास्त्री, काव्यतीर्थ मेरठ

आयुर्वेद के प्रौढ़ विद्वान् गुरुकुल ज्वालापुर के प्रसिद्ध स्नातक हैं। जन्म आपका ग्राम अफजलगढ जिला बिजनौर का है। आप महा विद्यालय के कई वर्ष तक मंत्री रहे और सम्प्रति उसके प्रधान हैं। मेरठ में आप सर्व श्रेष्ठ प्रामाणिक वैद्य माने जाते हैं।

श्री डा० शिवदत्त जी कानपुर

डा० शिव दत्त जी

आप पुराने अनुभवी कर्मठ कार्यकर्ता हैं। आर्यसमाज सीसामऊ के प्राण स्वरूप हैं। आपके प्रयत्न से आर्य समाज ने विशेष प्रगति की है। समाज के विशाल भवन के निर्माण में आपका प्रयत्न सराहनीय है। आप सभा के अन्तरंग सदस्य है एवं वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर के अध्यक्ष रहे हैं।

विद्याभूषण पं० रुद्रदत्त शास्त्री, देहरादून

अत्यन्त सरल सौम्य स्वभाव के प्रभावशाली विद्वान् एवं वक्ता है। दीर्घकाल तक आप सभा के महोपदेशक रहे है। गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के प्रतिष्ठित स्नातक हैं।

विद्याभूषण पं० ओम्प्रकाश जी शास्त्री खतौली, मुजफ़्फ़रनगर

गुरुकुल ज्वालापुर के आप प्रतिष्ठित स्नातक हैं।- प्रभावशाली लेखक एवं शास्त्रार्थपटु विद्वान् हैं। सभा के अनेक वर्षों से आप महोपदेशक हैं। शास्त्रार्थ महारथी श्री पं० रामचन्द्र जी देहलवी के आप शिष्य हैं। इसलाम ब ईसाइयत का आपने विशेष मनन किया है। और इन मतों के विद्वानों के साथ अनेक वार शास्त्रार्थ किये हैं। आपकी कई रचनाएं भी हैं।

श्री अनन्त विहारी जी निगम वकील, लखनऊ

लखनऊ आर्यसमाज की प्रगतियों में आपका विशेष हाथ रहता है। आप नगर आर्यसमाज के प्रधान हैं। सभा के कानूनी सलाहकार हैं।

श्री प्रो० रतन सिंह एम० ए० ग़ाजियाबाद, मेरठ
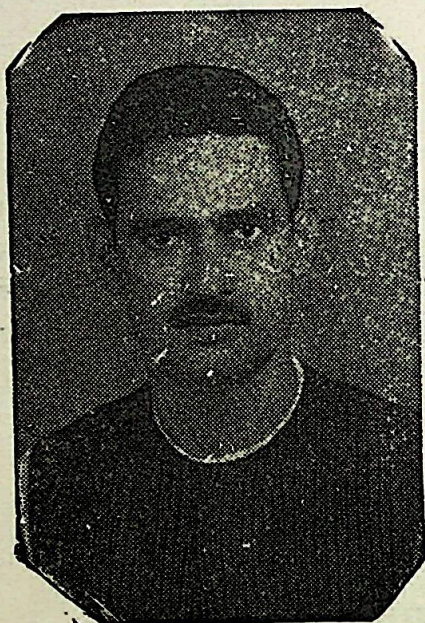
आर्यसमाज के अच्छे विचारक, लेखक एवं प्रभावशाली वक्ता हैं। कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं। सार्वदेशिकसभा के आप उपमंत्री रहे है।

प्रो० रतन सिंह जी

श्री सूर्य कान्त शास्त्री विद्याभूषण बी० ए०, मीरपुर (अलीगढ़)

आप गुरुकुल सिकन्दराबाद के पुराने छात्र हैं। गुरुकुल से आपने विद्याभूषण उपाधि उपलब्ध की। आपका समय शिक्षण कार्यों में ही अधिकतर बीता है। आपने गीता पर भाष्य किया तथा विद्यार्थियों के लिये अनेक पाठ्यपुस्तकें लिखी हैं। शुद्धि कार्यों में आपका विशेष सहयोग रहा है। सम्प्रति आर्य अनाथालय दरियागंज देहली के आप अधिष्ठाता हैं।

श्री पं० शमानन्द जी सिद्धान्त शास्त्री, खानपुर, इटावा

आपकी विशेष शिक्षा पं० भीमसेन शर्मा इटावा की संस्कृत पाठशाला में हुई। आप फ़ारसी के विशेष ज्ञाता हैं। आपने अनेक वर्षों तक सभा में उपदेशकी की है। आपने गुरुकुल वृन्दावन तथा आगरा, बरेली अजमेर के अनाथालयों की ओर से भी प्रचार कार्य किया है।

आपने रामायण शिक्षावली, कुमार-कर्तव्य आदि पुस्तिकाएँ भी लिखी हैं। ७० वर्ष की आयु हो जाने पर साहित्य वैद्य विशारद आदि परीक्षाएँ पास की हैं।

श्री पं० धर्मपाल जी विद्यालंकार, गुरुकुल विश्व विद्यालय-कांगड़ी

आपका जन्म सं० १९५५ वि० को बदायूँ में हुआ था। आप गुरुकुल विश्व विद्यालय कांगड़ी के सुयोग्य स्नातक हैं। आर्यसमाज के गम्भीर विचारक एवं लेखक हैं। आपने ९ई वर्ष तक आर्यमित्र का अवैतनिक रूप से सम्पादन किया। और आप सन् १९५० व ५१ ई० में सभा के मंत्री भी रहे हैं सन् १९२१ से २६ तक आप स्वामी श्रद्धानन्द जी के निजू मंत्री रहे हैं। और स्वामी जी के घातक अब्दुलरशीद को पिस्तौल सहित घर पटकनेवाले वीर आप ही हैं।

पं० धर्मपाल जी

आप अनेक वर्षों तक वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर के अध्यक्ष तथा गुरुकुल वृन्दावन के उप कुलपति रहे हैं। हरिद्वार में आर्यसमाज मंदिर निर्माण का कार्य आप ही कर रहे है। सम्प्रति आप गुरुकुल कांगड़ी के सहायक मुख्याधिष्ठाता हैं।

तर्क रत्न श्री लक्ष्मीनारायण जी 'सुन्दर", शास्त्री साहित्यरत्न, गोंडा

आप ओजस्वी वक्ता, शास्त्रार्थ प्रवीण नवयुवक हैं। कहानीकार, कवि एवं समालोचक हैं। आपने महाक्रान्ति का अग्रदूत आर्यसमाज, विरहगीत आदि अनेक रचनाएं की हैं। 'दयानन्द चरित्र मानस' लिखने की लालसा लिये यह युवक ऋषि के संदेश का अपने भाषणों एवं लेखों द्वारा प्रचार कर रहा है।

श्री पं० सूर्यदेव सिद्धान्तालंकार, एम ए० अजमेर

आपका जन्म १ मई १९०१ में ग्राम वरना जिला एटा में हुआ था। विद्यार्थी जीवन में आप प्रत्येक कक्षा में प्रथम आये हैं और आपने अनेक

पं० सूर्यदेव सिद्धान्तालङ्कार

पुरस्कार एवं पदक उपलब्ध किये हैं। आप चार विषयों में एम ए० हैं। स्वावलम्बी रह कर आपने यह सब शिक्षा पाई है। आप सरल स्वभाव के आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं। सन् १९२५ से ३५ तक आप कानपुर दयानन्द ऐंग्लो कालेज में प्राध्यापक रहे, और आर्यसमाज एवं आर्य कुमार सभा का विशेष कार्य करते रहे। आप आर्य कुमार परिषद् के भी विशीष्ट कार्यकर्त्ता हैं।

सन् १९३५ से आपका कार्य क्षेत्र अजमेर हो गया। आप वहाँ डी० ए० वी० हाई स्कूल के प्रधानाचार्य हैं। १० वर्ष तक परिषद् की धार्मिक परीक्षाओं का आपने बड़ी संलग्नता से संचालन किया है। आपके कार्य काल में लगभग ८००० छात्र छात्राओं ने परिषद् की धार्मिक परीक्षाएं पास की हैं। आप राजस्थान आर्य कुमार परिषद् के प्रधान हैं। प्रभाव शाली वक्ता, लेखक एवं कवि हैं। आपने अब तक लगभग ६० छोटी बड़ी पुस्तकें लिखी हैं।

कविरत्न पं० प्रकाशचन्द्र अजमेरी

आपकी पितृ-भूमि अलीगढ़ है। जन्म आप का अजमेर में सं० १९५९ ई० में हुआ। जलियावाला कांड के अवसर पर आप सरकारी नौकरी छोड़-

पं० प्रकाशचन्द्र जी

कर राष्ट्रीय कार्यों में संलग्न हो गये। सन् १९३२ ई० के स्वातन्त्र्य समर में आपने बृटिश सरकार की जेल की यात्रा की।

पं० नाथूराम शंकर जी के अनुराग-रत्न एवं शंकर-सरोज को पढ़ कर आप की प्रवृत्ति कविता करने की ओर हुई। इस समय आप की गणना आर्य समाज के उच्चकोटि के कवियों में है। आपने प्रकाश-गीता दो भाग, प्रकाश तरंगणी, प्रकाश गीताअलि, प्रकाश तरंग आदि अनेक रचनाएं की हैं।

आप आर्य जगत् के प्रभावशाली गायक भी हैं। पक्षाघात से अनेक वर्षों से पीड़ित होते हुए प्रचार कार्य में रत हैं -

श्री मोहनलाल जी आर्य, आगरा

आप आगरा नगर आर्यसमाज के प्राण हैं। आप एक कर्मठ कार्यकर्त्ता रहे हैं। आर्यसमाज के उप-मंत्री, मंत्री, प्रधान और आर्य प्रतिनिधिसभा के
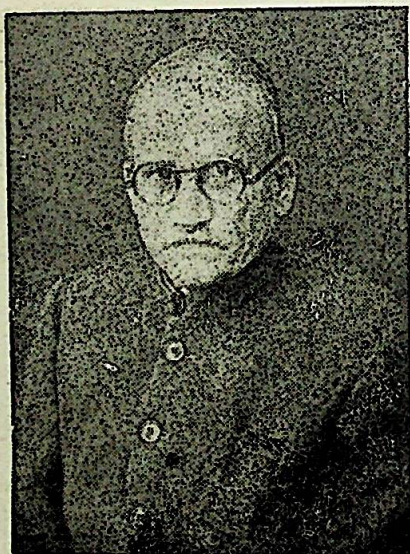
श्री मोहनलाल जी आर्य

अन्तरंग सदस्य रहे हैं। आपने अनेक आर्यसमाजें स्थापित की हैं। और अनेकों को नवजीवन प्रदान किया है। आपके उद्योग से ही नगर आर्यसमाज आगरा का विशाल भवन, यज्ञशाला आदि बने हैं। और आपके ही उद्योग से आर्य कन्या पाठशाला सेकसरिया आर्य कन्या इन्टर कालेज के रूप में जनता की प्रशंसनीय सेवा कर रहा हैं। मथुरा दयानन्द दीक्षा शताब्दी निमित्त लगभग

७०००) आगरा से एकत्रित करके दिया। आपने आर्यमित्र के भी लगभग ७५ नवीन ग्राहक बनाकर दिये।

आचार्य बृहस्पति शास्त्री एम०ए० वेदशिरोमणि, गुरुकुल वृन्दावन

आप आर्य जगत् में वेदों के माने हुए विद्वान्, व्याख्याता और शिक्षाशास्त्री हैं। आपका जन्म ग्राम खरड़ जिला मुज़फ्फरनगर है। आप पैतृक आर्य समाजी हैं। सन् १९१९ ई० में आपने गुरुकुल वृन्दावन से वेद शिरोमणि की उपाधि उपलब्ध की। पंजाब से शास्त्री एवं आगरा विश्व विद्यालय से संस्कृत और हिन्दी में डबल एम० ए० किया।

आचार्य बृहस्पति शास्त्री

सन् १९२७ ई० से १९३८ ई० तक आप गुरुकुल वृन्दावन के आचार्य एवं मुख्याधिष्ठाता रहे। आपके कार्यकाल में ही आवागढ़ से २०० छात्र वहां के नरेश ने भेजे थे। आपने सभा के वेद-संस्थान की ओर से यजुर्वेद भाष्य का संपादन करने में सहयोग किया। सम्प्रति आप गुरुकुल वृन्दावन के आचार्य हैं ओजस्वी वक्ता हैं। सभा के उपप्रधान पद को आपने विभूषित किया है।

श्री ब्रह्मदेव प्रसाद श्रीवास्तव वकील केथल (आजमगढ़)

आप हिन्दी, उर्दू, फार्सी, अंग्रेजी, बंगला पंजाबी आदि भाषाओं के ज्ञाता हैं। आपने हिन्दी में देवाद्गार एवं उर्दू में जजबाते-अश्क नामक पुस्तकें रची हैं। एकांकी नाटक तथा गल्पों के भी आप लेखक हैं।

आर्य समाज बासगांव के आप अनेक वर्ष तक मंत्री रहे। गोरखपुर में जिला राजार्य सभा की स्थापना करने का श्रेय आप को ही था। जिला उप-सभा में भी आपने अनेक पदों पर रह कर कार्य किया है। शुद्धि कार्य में आप विशेष भाग लेते हैं। ईसाई मिशनों से भी आपने बराबर टक्कर ली है। आप स्वामी त्यागानन्द जी के शिष्य हैं।

श्री मुंशीराम जी एम० ए०, कानपुर ।

दयानन्द ऐंग्लों वैदिक कालेज कानपुर के आप दीर्घकाल तक अध्यापक रहे हैं। आर्य कुमार परिषद् के १९२३ ई० में आप ही मंत्री थे। कानपुर आर्य कुमार सभा के तो आप प्राण हैं। आपकी प्रेरणा से कालेज के सैकड़ों छात्र आर्यकुमार परिषद् की धार्मिक परीक्षाओं में वैठे हैं। सन् १९२६ ई० में परीक्षाओं का संचालन भी आपने कानपुर से किया है। शुद्धि सभा आगरा के आप प्रमुख कार्यकर्त्ता रहे हैं।

श्री मुंशीराम जी

आप उग्र राजनैतिक भावनाओं के व्यक्ति हैं। आपकी प्रेरणा से अनेकों नवयुवकों ने क्रान्तिकारी संस्थाओं में भाग लिया है। आप प्रतिभाशाली लेखक, कवि एवं ओजस्वी वक्ता हैं। आपने अनेकों उत्तमोत्तम पुस्तकें निर्माण की हैं। भक्ति का विकास आपकी विशेष रचना है। जिस पर आपको आगरा विश्व विद्यालय से डी० लिट् की उपाधि मिली है। कालेज के कार्य से मुक्त होने पर आपको विश्व विद्यालय अनुदान आयोग द्वारा राष्ट्रीय प्राध्यापक बना दिया गया है और अब वेदों के तुलानात्मक अध्ययन में संलग्न हैं।

श्री पं० तोताराम जी शर्मा एम० एस० सी० हाथरस अलीगढ़

आर्य समाज के पुराने तपस्वी कर्मठ कार्यकर्ता एवं प्रभावशाली वक्ता हैं। आपको आर्य समाज के विचारों का छात्रों में प्रचार करने की विशेष धुन रहती है। जिले के अन्दर आपने वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार का विशेष कार्य किया है।

श्री पं० मंगलदेव शास्त्री एम० ए० काशी

जन्म जात आर्यसमाजी हैं। जन्म भूमि बदायूं है। उच्चकोटि के विद्वान् विचारक, दार्शनिक एवं सिद्धहस्त लेखक हैं। गुरुकुल सिकन्दराबाद तथा बदायूं में आपकी प्रारम्भिक शिक्षा हुई। ओरियंटल कालेज लाहौर से शास्त्र

व एम० ए० पास किया और काशी में ६ ओं दर्शनों का विशेष अध्ययन किया।

सन् १९१९ से १९२२ तक आक्सफोर्ड विश्व विद्यालय में रहकर तुलनात्मक भाषा विज्ञान का अध्ययन कर ऋग्वेद प्रातिशाख्य पर निबन्ध लिख डी० फिल० उपाधि प्राप्त की। तीन वर्ष तक काशी विद्यापीठ में संस्कृत एवं दर्शन के प्राध्यापक रहे। १९३२ से ४८ तक निरन्तर संस्कृत कालेज वाराणसी के प्रस्तोता एवं प्रधानाचार्य पदों पर रहे। इन पदों पर रहते हुए आपने संस्कृत परीक्षाओं में विशेष सुधार किया एवं पाठ्यक्रम को प्रगतिशील बनाया। आप प्रदेशीय संस्कृत पाठशाला सुधार समिति के सभापति रहे।

वाराणसी संस्कृत विश्व विद्यालय की स्थापना में आप का विशेष हाथ था और आप ही उसके स्थापित होने पर उपकुलपति बनाये गये। आप परोपकारिणी सभा के मान्य सदस्य हैं। आपने अब तक २२ उच्चकोटि के ग्रन्थों का निर्माण किया है यथा ऋग्वेद प्राति-शाख्य तीन भाग टीका व आंगल अनुवाद सहित। आरण्यक एवं ब्राह्मण ग्रन्थों पर आपने पर्यालोचन लिखे हैं। जीवन ज्योतिः, भारतीय संस्कृति का विकास आदि आपकी रचनाएं हैं।

श्री विद्यारत्न बी० ए० एल० एल० बी,० हल्द्वानी

आपका जन्म पंजाब में और शिक्षा लाहौर डी० ए० बी कालेज में हुई। आपका कार्य क्षेत्र उत्तर प्रदेश हल्द्वानी (नैनीताल) है। कुमायूं क्षेत्र की आर्य सामाजिक गतिविधियों के आप केन्द्र है। पंजाब हिन्दी रक्षा आन्दोलन, महर्षि दयानन्द दीक्षा शताब्दी मथुरा में आपका विशेष योगदान रहा है।

द्रोण सागर, काशीपुर में महर्षि दयानन्द की तपस्या भूमि में दयानन्द विद्या मन्दिर एवं यज्ञशाला स्थापना के लिए विशेष यत्न कर रहे हैं। हल्द्वानी ललित आर्य महिला उच्चतर माध्यमिक विद्यालय एवं आर्य समाज हल्द्वानी के प्रधान हैं। नारायण स्वामी आश्रम रामगढ़ के अधिष्ठाता और आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के उप-प्रधान हैं।

श्री बल्देवसिंह जी आर्य, गढ़वाल

श्री बल्देव सिंह जी आर्य

आप उत्तराखंड के आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं। इस प्रदेश में घूम२ कर आपने आर्यसमाज की विशेष सेवाएं की हैं। स्वाधीनता संग्रामों में आपने आगे बढ़कर भाग लिया है। बृटिश कारागारों की शोभा बढ़ाने का भी आप को सौभाग्य उपलब्ध हुआ। नायक जाति सुधार विभाग के आप अधिष्ठाता रहे हैं। सम्प्रति आप उत्तरप्रदेश में सरकार के एक उप-मंत्री हैं।

श्री विश्वम्भर नाथ तिवारी कानपुर

आर्य समाज सीसामऊ के जन्मदाताओं में है। अनेक वर्ष सभा के निरीक्षक रहे तथा दो वर्ष से प्रान्त के मुख्य निरीक्षक हैं। सभा के सहायक कोषाध्यक्ष एवं स० पुस्तकाध्यक्ष पदों पर भी रहे। आर्य समाज सीसामऊ के अनेक बार मन्त्री एवं एक बार प्रधान भी रहे हैं।

पं० सुरेन्द्र शर्मा गौड़

आप संस्कृत के उच्च कोटि के विद्वान् हैं। धारा प्रवाह संस्कृत में भाषण करने का आपको अभ्यास है। आपके परिवार में भी संस्कृत भाषा का ही प्रयोग होता है। आप अच्छे वक्ता है और साधु आश्रम हरदुआगंज की आप भव्य देन हैं।

श्री विश्वेश्वरनाथ वर्मा, लखनऊ

उत्तर प्रदेश सरकार के रि० अण्डर सेक्रेटरी हैं। सरल सात्विक एवं स्वाध्यायशील कर्मठ कार्य कर्त्ता हैं। प्रायः धर्म ग्रन्थों को अपने व्यय से जनता में वितरित करते रहते हैं। आर्य समाज चन्द्रनगर के प्रधान हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा के आप तीन वर्ष तक कोषाध्यक्ष रहे। दीक्षा शताब्दी

मथुरा आप के कार्य काल में सम्पन्न हुई जिसमें आपने दो मास मथुरा में रह कर पूर्ण तन्मयता से कार्य किया।

श्री शिवकुमार जी शास्त्री, अलीगढ़

आप आर्यसमाज के प्रकांड विद्वान्, प्रभावशाली वक्ता, कुशल प्रचारक एवं प्रवीण संगठन कर्त्ता हैं। आप स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज के अलीगढ़ साधुआश्रम की आर्यजगत् को एक सुन्दर देन हैं। अत्यन्त सौम्य, सरल स्वभाव कर्मयोगी व्यक्ति हैं।
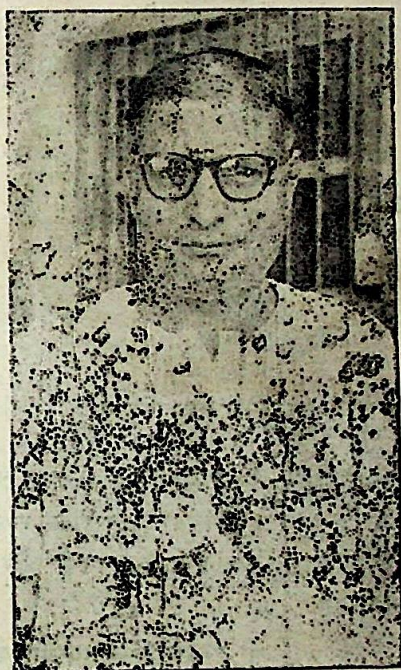
श्री शिव कुमार जी शास्त्री

पं० ब्रह्मा भूषण जी आयुर्वेद शिरोमणि आयुर्वेदाचार्य, एटा

गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन के पुराने स्नातक हैं एवं स्नातक मण्डलके प्रधानहैं। स्वाराज्य आन्दोलन में आपने विद्यार्थी जीवन में भाग लिया। आप आर्य समाज के कर्मठ कार्य कर्त्ता व सफल चिकित्सक हैं। आयुर्वेद सम्मेलन में एवं कन्या गुरुकुल हाथरस की प्रगतियों में भी आपका सहयोग रहता है।

श्री उमेशचन्द्र स्नातक एम० ए० हल्द्वानी (नैनीताल)

गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन के सुयोग्य स्नातक हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश के आप अनेक वर्षों से उप-मंत्री हैं और आर्यमित्र का भी अनेक वर्षों से सम्पादन कर रहे हैं नारायण आश्रम रामगढ़ के आप अध्यक्ष रहे हैं। सभा के शम्भूनाथ रामेश्वरी देवी पुस्तकालय भुवाली एवं नायकजाति सुधार विभाग के भी आप अधिष्ठाता हैं। आप सार्वदेशिक विद्यार्य सभा एवं धर्मार्यसभा के सदस्य हैं। कन्या गुरुकुल हाथरस के संचालन में आप का विशेष सहयोग रहता है। दयानन्द दीक्षा शताब्दी मथुरा के आप समारोह मंत्री थे और उसको सफल बनाने में प्रशंसनीय कार्य किया है।
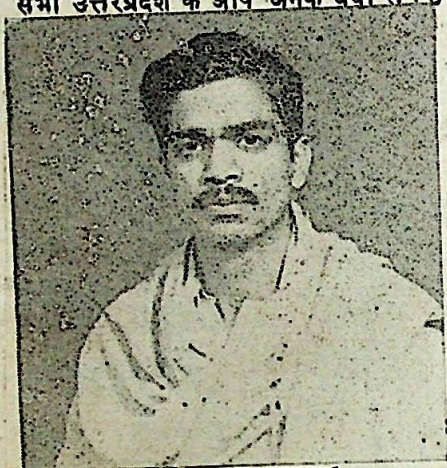
श्री उमेश चन्द्र स्नातक

गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन स्नातक मंडल के मंत्री रहे, गु० वि० वि० वृन्दावन की विद्या सभा के उपमंत्री और क० गु० महाविद्यालय हाथरस के मंत्री हैं।

श्री हरप्रकाश वानप्रस्थी वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर

आप आर्य समाज की मूक रूप में अनथक सेवा करने वाले व्यक्ति हैं। वान प्रस्थाश्रम ज्वालापुर के अनेक वर्षो से प्रधान हैं। आश्रम के भवन निर्माणादि कार्यों में निरन्तर व्यस्त रहते हैं। हिन्दी रक्षा आन्दोलन में आपने आश्रम से सत्याग्रही जत्थे भेजे तथा एक जत्था स्वयं लेकर चण्डीगढ़ प्रस्थान किया। आपने चन्डीगढ़ में कई मास तक स्वयं सेवकों के भोजन निवास आदि की व्यवस्था भी की।

डा० प्रकाशवती जी, लखनऊ

आर्य जगत् की विदुषी एवं प्रचार क्षेत्र में संलग्नतापूर्वक दीर्घ काल कार्य करने वाली देवी हैं। आपके आध्यामिक विषयों पर भी प्रभाव

शाली प्रवचन होते हैं। उत्तर प्रदेश एवं बिहार प्रान्त आपके प्रचार के क्षेत्र हैं। आपने कितनी ही स्त्री समाज प्रान्त में तथा प्रान्त के बाहर स्थापित की हैं।

श्री नरदेव स्नातक आ० शिरोमणि, (मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल वि० वि० वृन्दावन)

आप गुरुकुल विश्व विद्यालय के सुयोग्य स्नातक हैं। विगत दस वर्ष से गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता पद को आप ही अलंकृत कर रहे हैं।

भारतीय लोकसभा के आप सन् ५० से ६० तक सदस्य रहे। अखिल भारतवर्षीय आर्य कुमार परिषद् के आप वर्षों प्रधान रहे।

हैदराबाद सत्याग्रह में आप गुरुकुल के जत्थे का नायक बनकर गये। गुरुकुल की स्वर्णजयन्ती आपने समारोह पूर्वक सफल बनायी। कन्या गुरुकुल महाविद्यालय हाथरस के आप कई वर्ष तक मंत्री रहे।
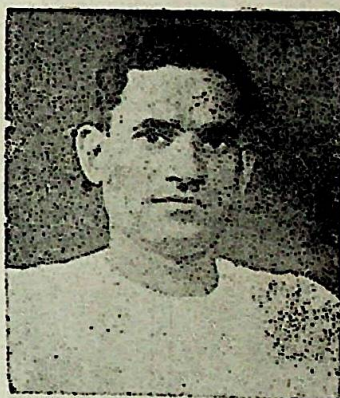
श्री नरदेव स्नातक

श्री ईश्वरी प्रसाद प्रेम

आर्य समाज के तपस्वी कर्मठ कार्यकर्ता हैं। आर्य समाज चौक मथुरा के अग्रगण्य नेता हैं। सभा के पुस्तकाध्यक्ष रहे हैं तथा हिन्दी रक्षा-सत्याग्रह में १०१ सत्याग्रहियों का जत्था लेकर आपने पंजाब में सत्याग्रह किया और कारागार की शोभा बढ़ाई। आप प्रतिभाशाली लेखक है। 'तपोभूमि' मथुरा का सम्पादन आप ही करते हैं। वैदिक साहित्य प्रकाशन में आपका प्रयत्न सराहनीय है।

कुंवर सुखलाल आर्य मुसाफिर- बुलन्दशहर

आप श्री भोजदत्त जी के आर्य मुसाफिर विद्यालय के स्नातक हैं। आर्य समाज के देश-विख्यात प्रभावशाली व्याख्याता हैं। निरन्तर ४० वर्ष से

देश के कोने कोने में घूमकर आप वैदिक मिशन का प्रचार कर रहे हैं। आपके भजन एवं व्याख्यानों को सुनने के लिए जनता उमड़ी चली आती है। आप के प्रचार ने सैंकड़ों व्यक्तियों को आर्य समाजी बनाया है। शुद्धि, दलितोद्धार समाज सुधार आन्दोलनों में आपका विशेष हाथ रहा है।

आचार्य विश्वश्रवाः, साहित्याचार्य बरेली
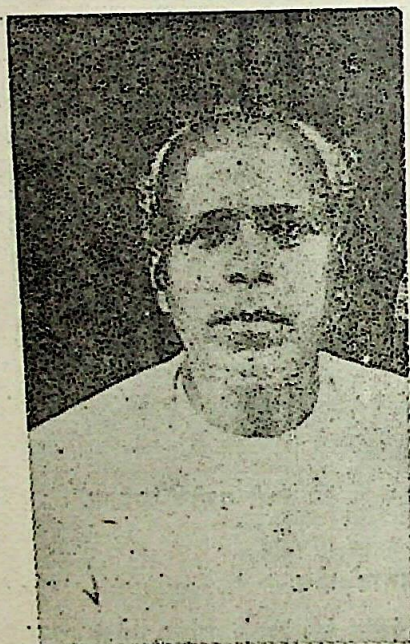
आचार्य विश्वश्रवाः

आपका जन्म मीरगंज बरेली का है। आपने हरिद्वार, लाहौर, वाराणसी आदि में शिक्षा पाई। आप कई वर्ष तक डी० ए० वी कालेज लाहौर में प्राध्यापक रहे तथा अनुसंधान कार्य किया। आपने विश्वेश्वरानन्द रिसर्च इंस्टीटियूट में भी अनुसंधान कार्य किया। तीन वर्ष गुरुकुल वृन्दावन के आप प्रस्तोता रहे। सभा में कई वर्ष शिक्षा विभाग के अधिष्ठाता रहे। सार्वदेशिक धर्मार्य सभा के आप ६ वर्ष से मंत्री हैं।

आप अच्छे वक्ता एवं लेखक हैं। आपने संध्या पद्धति-मीमांसा, यज्ञपद्धतिमीमांसा,वेद और निरुक्त, आदि अनेक पुस्तकें लिखी हैं।

वि० मा० पं० गोपाल दत्त जी शास्त्री एम० ए०, लखनऊ

देवरामपुर (गढ़वाल) आपका जन्म स्थान है। गुरुकुल ज्वालापुर के आप स्नातक हैं। आपने वाराणसी से शास्त्री तथा लखनऊ, आगरा, विश्वविद्यालयों से संस्कृत हिन्दी एवं भौतिक विज्ञान के एम० ए० पास किये हैं।

आर्य-मित्र के आप सम्पादक रहे हैं। सम्प्रति सभा के आप उपमन्त्री और रामजस कालेज दिल्ली में हिन्दी के प्राध्यापक नियुक्त हो गये हैं।

श्री वि० भू० ओंकारमिश्र शास्त्री "प्रणव" एम० ए०, सि० वाचस्पति, साहित्याचार्य, फिरोज़ाबाद

आप गुरुकुल सूर्यकुंड बदायूं के स्नातक हैं। गुरुकुल की आपकी उपाधि विद्याभूषण है। आप सांख्य के आचार्य और योग के शास्त्री हैं। आप आर्यजगत् के प्रमुख कवि एवं वक्ता हैं। आर्यमित्र में आपकी कविताएँ प्राय: प्रकाशित होती रहती हैं।
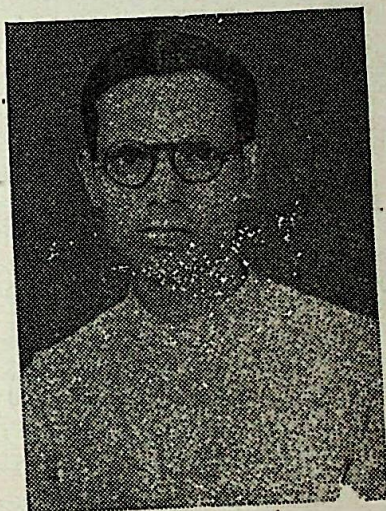
श्री वि० भू० ओंकार मिश्र शास्त्री 'प्रणव'

शास्त्रार्थ महारथी पं० कालीचरण शर्मा, साहित्य रत्न, मौलवी फाज़िल, आगरा

आपकी जन्म भूमि बदायूं जिले में हैं। किन्तु सम्प्रति राजस्थान में अपना कार्य क्षेत्र बनाया हुआ है। आप आर्य समाज के प्रभावशाली वक्ता लेखक एवं प्रचारक हैं। आपका सारा जीवन वैदिक मिशन प्रचार में व्यतीत हुआ है। आपने शुद्धि क्षेत्र में महान् कार्य किया है। सहस्रों ईसाई मुसलमानों की शुद्धियां की हैं। जीवन में आपने शास्त्रार्थ भी सैंकड़ों ही किये हैं। मलकानों की शुद्धि में भी आपका विशेष हाथ था।

आपने आगरे से आर्य मुसाफिर उर्दू साप्ताहिक का बड़ी योग्यता के साथ सम्पादन किया है। आपने अनेक पुस्तकें एवं ट्रैक्ट मतमतान्तरों के खण्डन में लिखे हैं।

बा० कालोचरण जो मेरठ श्री स्वामी अखिलानन्द सरस्वती
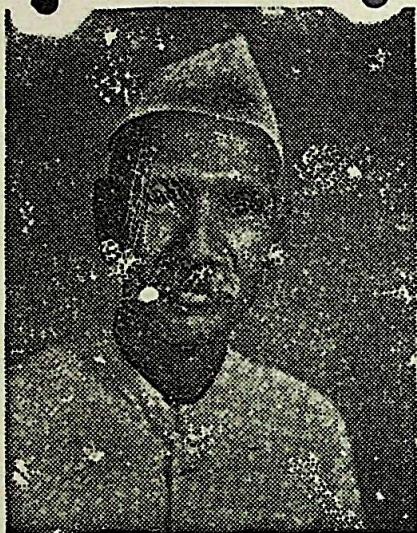
श्री स्वामी अखिलानन्द सरस्वती

आप आर्यसमाज के कर्मठ-कार्यकर्त्ता हैं। उर्दू भाषा के आप विशेष विद्वान् हैं। वैदिक सिद्धान्तों के अच्छे ज्ञाता हैं। अनेकों वर्ष तक आप आर्य प्रतिनिधिसभा उत्तरप्रदेश के मंत्री रहे हैं। आर्यमित्र दैनिक आप के ही कार्यकाल में निकला है। सभा की स्वर्ण जयन्ती एवं मेरठ आर्य महा सम्मेलन के आप स्वागतमंत्री रहे हैं। आज दिन आप सार्वदेशिक सभा के मंत्री हैं। १९६२ में पञ्जाब वलिदान जयन्ती के अवसर पर आपने अम्बाला में संन्यास आश्रम की दीक्षा ली है।

पं० सत्याचरण जी शास्त्री, एम० ए०, गोरखपुर

आप उच्च कोटि के साहित्यिक वक्ता एवं लेखक है। हिन्दी, संस्कृत एवं आंगल भाषा के आप प्रौढ़ विद्वान् है। आपने सार्वदेशिक सभा की ओर से विदेशों में वैदिक धर्म का भी प्रचार किया है। बरेली प्रान्तीय राजार्य सम्मेलन १९४९ ई० के आप अध्यक्ष थे और लखनऊ अखिल भारतीय राजार्य सम्मेलन के आप प्रमुख बक्ताओं में थे। आजकल आप लोक सभा के सदस्य हैं एवं अनुसन्धान कार्य में व्यस्त हैं।

डा० बाबू राम सक्सेना, एम० ए०, प्रयाग

हिन्दी, संस्कृत एवं अंग्रेजी के आप प्रौढ़ विद्वान् हैं। आर्य समाज के मूक किन्तु ठोस कार्यकर्त्ता हैं। आप प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के सन् १९३३ ई० में प्रधान रहे हैं। प्रयाग विश्वविद्यालय के आप संस्कृत विभाग के अध्यक्ष रहे हैं। अब वहां से कार्य मुक्त होकर आप भारत सरकार के कोष-निर्माण, विभाग में कार्य कर रहे हैं।

श्री नेत्रपालसिंह जी, अलीगढ़

आप आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं। राष्ट्रीय आन्दोलनों में आपने विशेष कार्य किया। अनेक बार जेल गये। आर्यप्रतिनिधि-सभा के आप मंत्री भी रहे हैं।
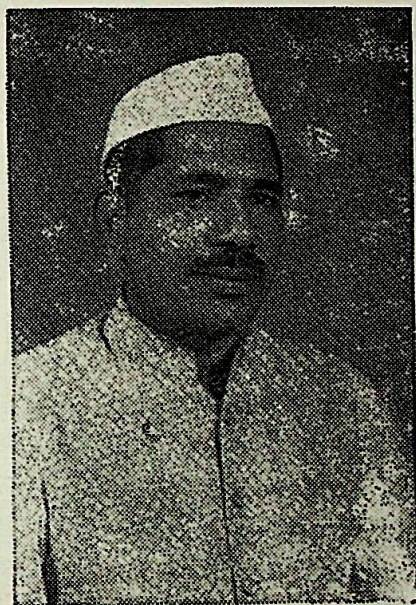
श्री नेत्रपाल सिंह जी

पंडित उदय वीर शास्त्री विद्याभास्कर, ग़ाजियाबाद, मेरठ

आप गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के प्रतिष्ठित स्नातक हैं। संस्कृत साहित्य एवं दर्शन के प्रकाण्ड पन्डित हैं। सांख्य शास्त्र में तो आपकी अद्भुत गति है आपने सांख्य पर सुन्दर भाष्य किया है। एवं उसका एक खोजपूर्ण इतिहास भी लिखा है। सांख्य शास्त्र के इतिहास पर आपको अनेक पारितोषिक भेट किये गये हैं। आपने सत्यार्थ प्रकाश पर गवेषणा पूर्ण टिप्पणियाँ लिखी हैं। आप अत्यन्त सरल स्वभाव के व्यक्ति हैं। आज दिन ग़ाजियाबाद में रहकर रिसर्च का काम कर रहे हैं।

पं० धर्मदेव शास्त्री दर्शनकेसरी (देहरादून)

आप आर्य जगत् के प्रतिष्ठित विद्वानों में से हैं। महान् लेखक एवं विचारक हैं। राजनीति के क्षेत्र के भी आप पुराने खिलाड़ी हैं। अनेकों बार स्वातन्त्र्य समर में कूदे हैं।

आपने अपना जीवन भारत की पिछड़ी हुई जातियों के उद्धार के निमित्त समर्पित किया हुआ है। आजकल आप भारत आदि-जाति-सेवा संघ के महा मंत्री हैं। इसी हेतु से आपने कालसी में भी अशोक आश्रम की स्थापना की थी और अनेक वर्षों तक पार्वत्य प्रदेश की पिछड़ी हुई जातियों की वहां सेवा की है।

श्री पं० सुरेशचन्द्र वेदालंकार, एम० ए० गोरखपुर
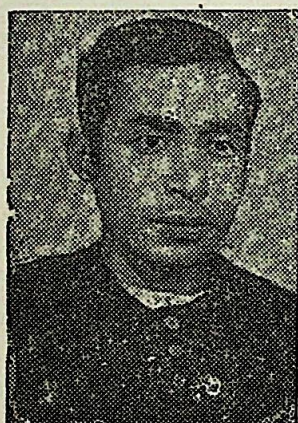
आर्यसमाज के विद्वान्, प्रभावशाली वक्ता एवं लेखक हैं। आर्यमित्र, आर्योदय वेदप्रकाश, आर्यजगत्, आर्यावर्तआदि पत्रों में आपके पाण्डित्यपूर्ण लेख प्रायः प्रकाशित होते हैं। विहार, उत्तरप्रदेश में प्रचार कार्य में भी आपका हाथ रहता है।

श्री पं० सुरेशचन्द्र जी

डा० कालिका प्रसाद भटनागर, एम० ए०, कानपुर

आप आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं। सन् १९२३ ई० में आप डी० ए० वी कालेज कानपुर में प्राध्यापक पद पर नियुक्त हुए। आर्य कुमार सभाओं को प्रगति देने में आपका विशेष हाथ रहा है। कुमार परिषद् की धार्मिक परीक्षाओं के संचालन में आप डा० मुंशीराम एम० ए० एवं पं० सूर्यदेव शर्मा एम० ए० अजमेर के विशेष सहयोगी रहे हैं। लाला दीवान चन्द जी के कानपुर दयानन्द कालेज के प्रधानाचार्य पद से कार्य मुक्त होने पर आपने अनेकों वर्ष कालेज में प्रधानाचार्य पद पर रहकर कार्य किया है। आप आर्यकुमार परिषद् के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। सम्प्रति आप आगरा विश्वविद्यालय के उपकुलपति हैं।

श्री बा० रामचंन्द्र जी, रि० डि० पो० मास्टर बदायूं

श्री बा० रामचंद्र जी

आप बदायूं के कर्मठ पुराने कार्यकर्त्ता हैं। नगर और जिले में आर्य समाज के प्रचार को आगे बढ़ाने में प्रयत्नशील रहते हैं। आप कई वर्ष सभा के कोषाध्यक्ष भी रहे हैं और अब गुरुकुल वृन्दावन के निरीक्षक हैं।
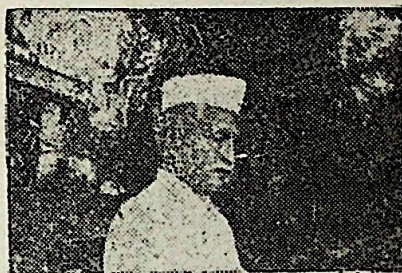
महान् शिक्षा-शास्त्री प्रिंसपल दीवान चन्द जी, एम० ए०, कानपुर

आपका जन्म पंजाब में हुआ किन्तु कार्य क्षेत्र विशेषकर उत्तर प्रदेश ही रहा है। सन् १९१९ ई० में ही आप कानपुर दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कालेज के प्रधानाचार्य बनकर आ गये थे। आपकी कार्यनिष्ठा विद्वत्ता एवं त्याग, तप, संयम पूर्ण जीवन का छात्रों पर विशेष प्रभाव पड़ा। आपसे आकर्षित होकर राजस्थान, मध्य-भारत, बिहार के सैकड़ों छात्र इस कालेज में प्रविष्ट होकर और आपके संरक्षण में रहकर शिक्षा प्राप्त करते रहे।

आप अनेक वर्षों तक आगरा विश्व विद्यालय के प्रथम उपकुलपति भी रहे हैं। इससे निवृत्त होकर इस वृद्ध अवस्था में भी आप निरन्तर वैदिक धर्म प्रचार के कार्य में संलग्न रहते हैं। आप जहाँ प्रभाव शाली वक्ता हैं वहाँ एक प्रतिभाशाली लेखक भी हैं। पश्चिमी-तर्क, जीवन-ज्योति, वेदोपदेश आदि रचनाएं आपकी ही हैं।

श्री होतीलाल जी इंजिनियर, गोरखपुर

विनम्र, साधु स्वभाव, आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं। गोरखपुर की धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं शैक्षणिक गति विधियों में विशेष भाग लेने वाले हैं। जिले में आर्य समाज के संगठन को पूरी शक्ति लगा कर दृढ़ करने वाले हैं। प्राय: सभा की अन्तरंग के सदस्य रहते हैं।

श्री रतनलाल जी ऐडवोकेट, मेरठ

आप आर्य समाज के विद्वान् लेखक हैं। आपकी वक्तृत्व शक्ति भी अच्छी है। सभा के कार्यों में आपका विशेष सहयोग रहता है। न्याय सभा

के आप अनेक वर्षों तक सदस्य रहे हैं। मेरठ सदर आर्य डिबेटिंगक्लब के आप जन्म दाता हैं।

श्री भगवत् दयालु जी मुख्तार, भर्थना (इटावा)

श्री भगवत् दयालु जी

आर्यसमाज भर्थना के संस्थापक सभा के अन्तरंग सदस्य एवं जिले के निरीक्षक हैं। आप परिश्रमी कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं।

बा० जगन्नाथ शरण जी वकील बिजनौर

आर्य समाज के पुराने महारथी व निरन्तर लगन से ऋषि के मिशन को काम करने वाले हैं। आपने बिजनौर से 'ऋषि' नामक साप्ताहिक पत्र भी कितने ही वर्षों तक सम्पादित किया। जिले के आप सर्वमान्य नेता हैं। सभा के कार्यों में आपने बहुत भाग लिया है - वर्षों अन्तरंग सदस्य रहे हैं। अछूतोद्धार एवं समाज सुधार के कार्यों में सदा अगुआ रहे हैं।

पं० बाबूराम दीक्षित एम० ए० डिबाई, बुलन्दशहर

आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान् कर्मकाण्ड-प्रवीण कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं। सभा की अन्तरंग के वर्षों सदस्य रहे हैं - रामगढ़ कार्यकर्त्ता शिविर में आपने गम्भीर खोजपूर्ण प्रवचनों द्वारा आर्य कार्यकर्त्ताओं को विशेष उपकृत किया है। आप सम्प्रति अतरौली उच्च माध्यमिक विद्यालय में अध्यापक हैं।

श्री ईश्वरदयालु जी आर्य बिजनौर

श्री ईश्वर दयालु जी

आप आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं। आपने बिजनौर एवं गढ़वाल प्रदेश में उपसभा के मंत्री रह कर विशेष कार्य किया है। आर्यवीरदल उत्तरप्रदेश के आप अधिष्ठाता रहे हैं। आप सभा के उपमंत्री रहे और आज दिन सभा के मंत्री पद पर सुशोभित हैं।
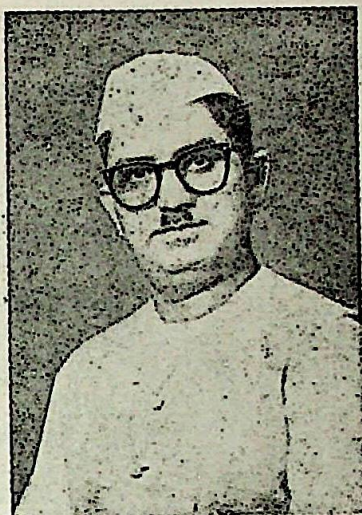
पं० राजेन्द्र जी अतरौली (अलीगढ़)

आर्य सिद्धान्तों के ज्ञाता एवं मान्य लेखक हैं। पुनर्जन्मादि पर आपने पुस्तकें लिखी हैं। गीता पर आपकी मान्य समालोचनात्मक पुस्तक विशेष मनन करने योग्य है।

पं० देवदत्त शर्मा उपाध्याय, वाराणसी

आप संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वानों में हैं। संस्कृत विश्व विद्यालय वाराणसी के दर्शन महोपाध्याय हैं। आर्य समाज की स्थानीय एवं प्रान्तीय गतिविधियों में आप विशेष भाग लेते रहे हैं। आप सभा के अन्तरंग सदस्य हैं।

ठाकुर फूलन सिह, शिकोहाबाद, मैन पुरी

आप समाज के प्रसिद्ध कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं। शिकोहाबाद आर्य समाज के विकास में आपका विशेष हाथ रहा है। सभा के कार्यों में दीर्घकाल से आपका निरन्तर सम्बन्ध एवं सहयोग रहा है। सन् १९५८ में आप सभा के एक वर्ष तक मंत्री भी रहे हैं। अन्तरंग सभा में तो आप प्रायः रहते ही हैं।

श्री पं० दयाराम जी, शिकोहाबाद
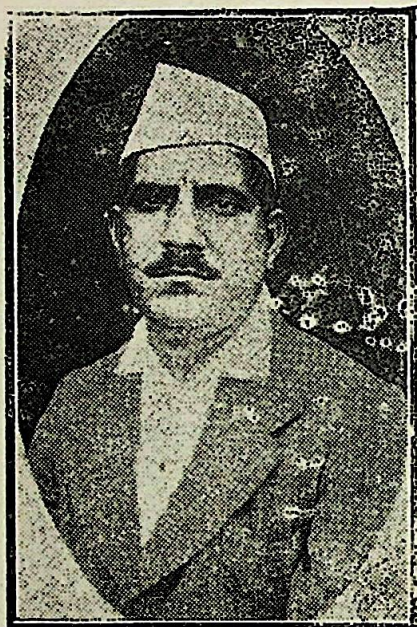
आर्यसमाज के वयोवृद्ध, कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं। आर्यसमाज का कार्य निरन्तर शान्त भाव से करते रहते हैं। सभा के अन्तरंग सदस्य भी कई वर्ष तक रहे हैं।

पं० दया राम जी

आचार्य शिवपूजन सिंह, कुशवाहा, बी० ए०, कानपुर

आर्य समाज के प्रतिभाशाली लेखक हैं। आपने कितनी ही पुस्तकें आर्य समाज से संबंधित प्रकाशित की हैं। पौराणिक मत खंडन के सम्बन्ध में आपने 'नीर-क्षीर-विवेक 'नामक एक सुन्दर पुस्तक अभी प्रकाशित की है।

शान्ति प्रकाश प्रेम, प्रभाकर कोट-द्वार, गढ़वाल

आप पार्वत्य प्रदेश गढ़वाल के उत्साही कार्यकर्त्ता हैं। अपने क्षेत्र से सभा के अन्तरंग सदस्य रहे हैं। गढ़वाल में आर्य समाज का आप बड़ी संलग्नता से कार्य करने वाले हैं। आपने श्री जयानन्द भारतीय का पद्य में जीवन चरित्र लिखा है।

श्री डा० लक्ष्मी नारायण गुप्तः—एम० ए० नरही, लखनऊ

डा० लक्ष्मीनारायण गुप्त

आप स्व० पं० गणेशप्रसाद जी के सुपुत्र हैं। "हिन्दी साहित्य की आर्यसमाज को देन" थीसिस पर आपको लखनऊ विश्व विद्यालय से डाक्टरेट की उपाधि मिली है। आप जुबली कालेज लखनऊ में प्राध्यापक हैं। नरही आर्य समाज के उप-प्रधान हैं।

श्री विष्णु स्वरूप विद्यार्थी, लखनऊ

आप स्व० पं० धर्मभिक्षु शास्त्रार्थ महारथी के शिष्य हैं। आर्य समाज के पुरुषार्थी कार्यकर्त्ता एवं प्रभावशाली वक्ता और शास्त्रार्थ महारथी हैं। स्वतन्त्रता संग्रामों में आपका प्रशंसनीय भाग रहा है। दो बार बृटिश नौकरशाही के कारागार की यात्रा की है। हैदराबाद सत्याग्रह में भी आपने विशेष कार्य किया। उत्तर प्रदेश के सात जिलों में सत्याग्रही जत्थों का निर्माण करना और उनका संचालन करना आपका काम था। ३५० सत्याग्रहियों की विशाल सेना लेकर आपने हैदराबाद पर धावा बोला था।

श्री डा० सत्यप्रकाश एम० ए० प्रयाग

आप प्रयाग विश्वविद्यालय के प्राध्यापक हैं। आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता तथा गम्भीर विचारवान् लेखक हैं। आपने अंग्रेजी में A critical study of Dayanand Philosophy आदि उल्लेखनीय पुस्तकें लिखी हैं।

आप योग्य पिता (श्री पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय) के योग्य पुत्र हैं।

श्री हरप्रसाद जी आर्य, धमोरा (रामपुर)
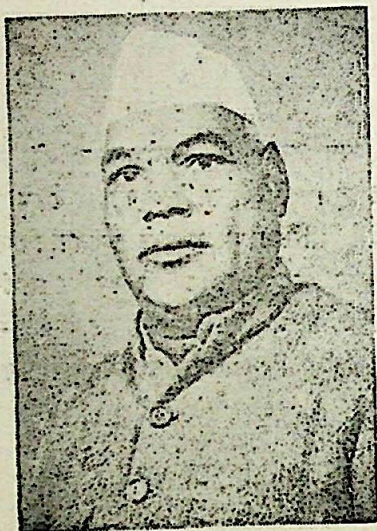
श्री हरप्रसाद जी

ज़िले के प्रमुख कर्मठ कार्यकर्ता हैं। सभा के तीन वर्ष से आप कोषाध्यक्ष हैं। हिन्दी रक्षा आन्दोलन में आपने विशेष सहयोग प्रदान किया।

श्री इन्द्रवर्मा एम० ए०, रामनगर (नैनीताल) :—

आर्यसमाज के नवयुवक कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं। सभा के अन्तरंग सदस्य एवं शिक्षा-विभाग के सहायक अधिष्ठाता हैं। आप आर्यसमाज रामनगर के मंत्री भी हैं।

श्री इन्द्र वर्मा जी

कर्नल सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार उप कुलपति गुरुकुल विश्व विद्यालय कांगड़ी

आर्य समाज के प्रसिद्ध शिक्षा-शास्त्री, वक्ता एवं लेखक हैं। गुरुकुल कांगड़ी के आप प्रतिष्ठित स्नातक एवं वर्तमान उप कुलपति हैं। हिन्दी साहित्य की आपने महती सेवा की है। आपकी एक रचना पर हिन्दी
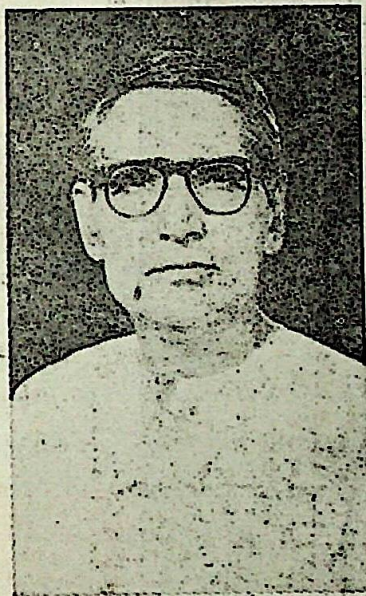
कर्नल सत्यव्रत जी

साहित्य सम्मेलन ने आपको मंगलाप्रसाद पारितोषिक प्रदान किया है। राजनीति क्षेत्र में भी आपने विशेष भाग लिया है। आपकी पत्नी श्रीमती चन्द्रावती लखनपाल ने स्वराज्य आन्दोलन में कारागार की यातनाएं सहीं। १० वर्ष तक लोक सभा के आप सदस्य भी रहे हैं।

श्री चौ० तेजसिंह जी, सहारनपुर

आप आर्य समाज के कर्मठ कार्य कर्त्ता एवं जिले के आर्य नेता हैं। जिले में घूम घूम कर आर्य समाजों को संगठित करके उनको जीवित जाग्रत करने का कार्य बड़ी लगन से आप करते रहते हैं।

जिला उपसभा के आप प्रधान हैं। सभा के आप अनेक वर्षों से उप-मन्त्री हैं। सरकारी कर्मचारी होते हुये भी आपने निरन्तर निर्भीकता से आर्य समाज का कार्य किया है।

श्री रामबहादुर जी मुख्तार, पूरनपुर (पीलीभीत)
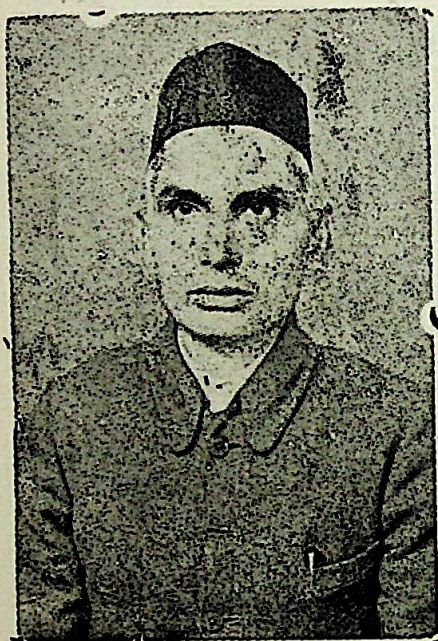
श्री रामबहादुर जी

आर्यसमाज के प्रसिद्ध कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं। पूरनपुर की समस्त सामाजिक, धार्मिक एवं शैक्षणिक प्रगतियों के सूत्रधार हैं। आर्यप्रतिनिधि सभा के शिक्षाविभाग के आप कई वर्षों से अधिष्ठाता हैं।

महाशय शिवलाल जी बुलन्दशहर

आर्य समाज के वीर कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं। स्वतन्त्रता संग्रामों में आगे बढ़कर भाग लिया है। जेलों की शोभा बढ़ाई है। ज़िले में अनथक घूम घूम कर आर्य समाज का काम करने वाले हैं। वेलौन का विराट् जिला आर्य सम्मेलन आपके प्रयत्न का फल था। महर्षि के कर्णवास स्मारक बनाने के लिये आप प्रयत्नशील । सभा के अन्तरंग सदस्य प्रायः रहते हैं।

श्री पं० रामप्रसाद जी आर्य मैंडू, (अलीगढ़)

आप आर्यसमाज के पुराने महारथी हैं। आपने अपने ज़िले में आर्यसमाज का विशेषरूप से प्रचार किया है। ज़िले के अनेक आर्यसमाज आपके द्वारा
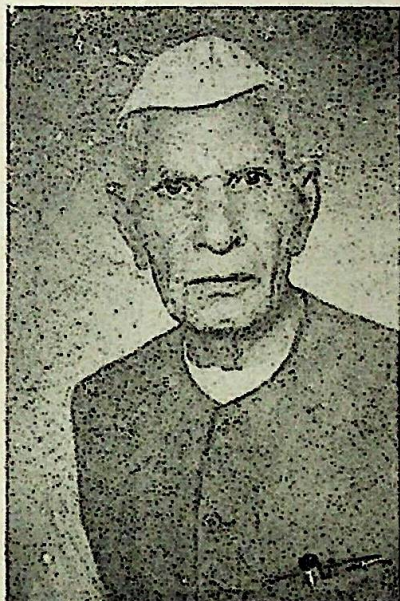
पं० रास प्रसाद जी

ही स्थापित हुए हैं। आप सभा के उपप्रधान एवं अधिष्ठाता उपदेश विभाग रहे हैं। इस समय सार्वदेशिक सभा के अन्तरंग सदस्य हैं। कन्या गुरुकुल हाथरस के अनेक वर्ष तक प्रधान रहे। इस संस्था के उत्थान में आप का विशेष सहयोग रहा है।

गुरुकुल वृन्दावन के लिये धन संग्रह कर आप विशेष सहयोग देते रहे हैं। वैदिक आश्रम अलीगढ़, जिलोपसभा अलीगढ़, साधु आश्रम हरदुआ-गंज आदि के संचालन में आपका विशेष भाग रहा है। सभा के कार्यों में आप सदैव उत्साह पूर्वक भाग देते रहे हैं। अनेक समाजों के विवादों को आपने सुलझाने में सहायता दी। दीक्षा शताब्दी मथुरा के लिये धन संग्रह तथा अन्य प्रकार से विशेष सहयोग दिया।

श्री पं० शेरसिंह कश्यप, आर्यमहोपदेशक, मुजफ़्फ़रनगर

आप आर्यसमाज के पुराने कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं। सभा के आप अनेक वर्ष महोपदेशक रहे हैं। शास्त्रार्थ करने में भी आप दक्ष हैं। सभा के आप प्रायः
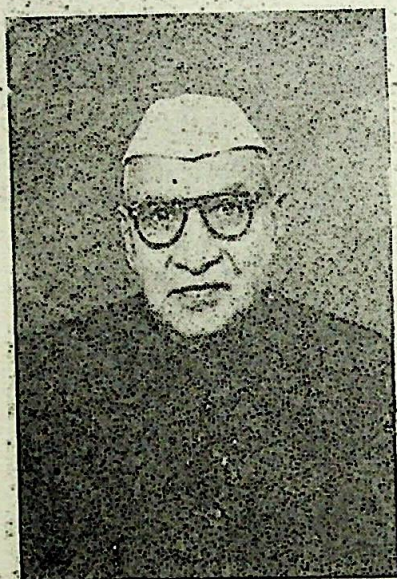
पं० शेरसिंह कश्यप

अन्तरंग सदस्य रहते हैं जिला आर्य उप प्रतिनिधिसभा के आप प्रधान भी रहे हैं। गुरुकुल विरालसी हायर सेकेन्ड्री स्कूल तथा गुरुकुल घासीपुरा के आप अधिष्ठाता एवं प्रधान हैं।

आर्य प्रचारक श्री ब्रह्मानन्द जी राउरकेला, उड़ीसा

आप जिला आगरा के वासी हैं उड़ीसा में ईसाइयों की शुद्धि का कार्य कर रहे हैं। वन्य जातियों में आर्य धर्म के प्रचारक का कार्य संलग्नता के साथ करने वाले व्यक्ति हैं। पानपोष आश्रम आपकी गतिविधियों का केन्द्र है। आपने इस वर्ष उस क्षेत्र में एक गुरुकुल भी स्थापित कर दिया है। वन्य जातियों में रचनात्मक सेवा कर आपने अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया है।

श्री मती अक्षय कुमारी जी शास्त्री, आचार्या एवं मुख्याधिष्ठात्री, कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, हाथरस

आप आर्य महिला जगत् की सुविख्यात विदुषी कार्यकर्त्री है। आप उत्तम वक्ता और लेखिका हैं। आप स्व० माता लक्ष्मी देवी जी की सुपुत्री हैं।

श्रीमती अक्षय कुमारी जी

माता जी के निधन के पश्चात् से कन्या गुरुकुल हाथरस का भार आपने अपने कन्धों पर सम्हाला हुआ है। प्रान्तीय एवं अखिल भारतीय समाज कल्याण तथा अन्य सामाजिक कार्यों में विशेष भाग लेती हैं।

लखनऊ में महिलाश्रम और वैदिक कन्या इन्टर कालेज की मैनेजर रहीं, लखनऊ समाज कल्याण की संयोजिका रहीं। बढ़ौत क्षेत्र में भी आपने सामाजिक जागृति उत्पन्न करने में विशेष योग दिया।

श्री पंडित अनन्त राम शर्मा

आर्य समाज़ किरतियापुर के कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं। ज़िले में वैदिक धर्म प्रचार करना ही आपका एक मात्र १२ मास का नियम है। आप हरदोई ज़िले के सभा की ओर से १४ वर्षों के निरन्तर निरीक्षक रह रहे हैं।

विद्याभास्कर पं० हरिदत्त जी शास्त्री, वेदान्ताचार्य, वेद व्याकरण काव्य न्याय सांख्यतीर्थ, कानपुर

आप संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान् हैं। इस समय तक आपने कलकत्ते की सर्वाधिक अर्थात् ११ विषयों में तीर्थ परीक्षा उत्तीर्ण की हुई हैं। आप गुरु-

पं० हरिदत्त जी शास्त्री
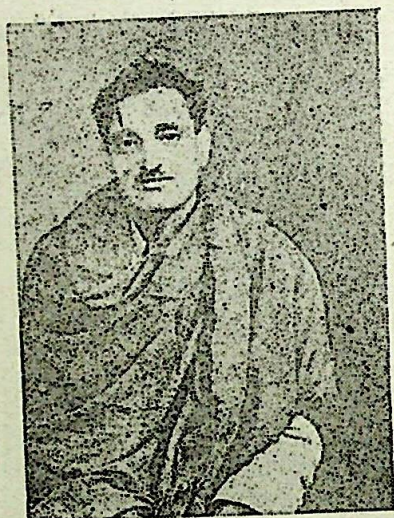
कुल महाविद्यालय ज्वालापुर के प्रतिष्ठित स्नातक एवं हैं आचार्य व मुख्याधिष्ठाता पद को भी वहां सुशोभित किया है। सम्प्रति आप दयानन्द कालेज, कानपुर में संस्कृत विभाग के अध्यक्ष हैं।

श्री भगवानसहाय जी, अजमेर

आपका जन्म जिला वस्ती का है। शिक्षा गोरखपुर, काशी, ज्वालापुर में हुई। किन्तु कार्य क्षेत्र ५० वर्ष से राजस्थान है। श्री सुदर्शनदेव जी शाहपुरा नरेश के आप शिक्षक रहे हैं। राजस्थान सभा के आप १८ वर्ष तक उपमंत्री व मंत्री रहेहैं। सार्वदेशिकसभा के अन्तरंग सदस्य भी रहे हैं। आप वैदिक यंत्रलय अजमेर के मैनेजर एवं परोपकारिणीसभा के वस्तु भंडार के अध्यक्ष हैं। अजमेर की शिक्षा संस्थाओं के संचालन में भी आपका पूरा २ सहयोग रहता है।

श्री माधवप्रसाद आर्य सिमरिया (हरदोई)

आप एक आदर्श दानी पुरुष हैं। आपनें अपनी सर्व अचल और चल सम्पत्ति सभा को दान करदी। आपनें ७५०० रुपये नकद सभा को देकर
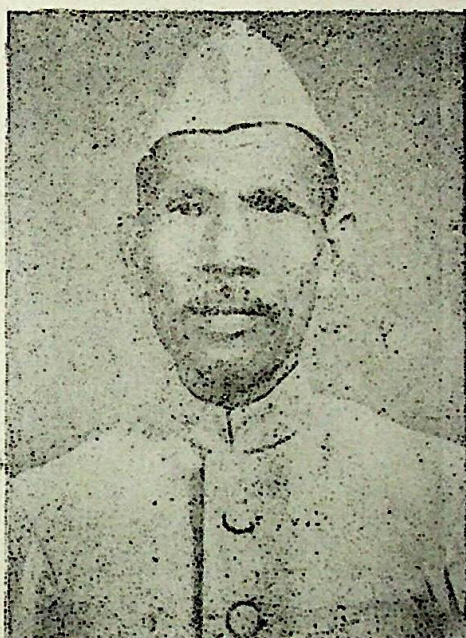
श्री माधोव प्रसाद जी

दो वास गृह सभा-भवन में बनवाए तथा अपना मकान भी आर्य समाज सिमरिया के मन्दिर हेतु दान कर दिया। आपने गो-रक्षा आन्दोलन में भी स्वा० ध्रुवानन्द जी को ५०१ रुपये भेंट किया था।

श्री रामस्वरूप जी शास्त्री हरदुआगंज

आप महा विद्यालय ज्वालापुर के पुराने स्नातक हैं। श्री पं० नाथूराम शंकर शर्मा शंकर की कविताओं के विशेषज्ञ हैं। आर्यमित्र के सहायक सम्पादक रहे हैं। आप हिन्दी के अच्छे लेखक हैं

श्री बाबूलाल गुप्त, मुरादाबाद

जन्म-जात आर्य समाजी हैं। जन्म स्थान अतरौली ज़िला बुलन्दशहर है। सन् १९२६ ई० में रुड़की से ओवर सीयर परीक्षा पास कर जल विभाग
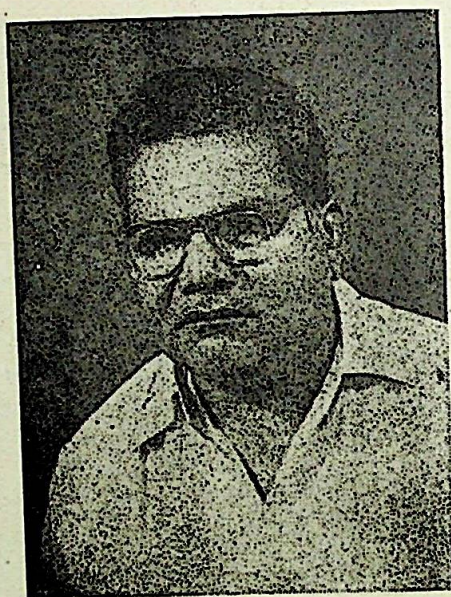
श्री बाबूलाल गुप्त जी

में नियुक्त हुए। सन् १९२८ से ४६ तक नैपाल राज्य में ओवरसीयर तत्पश्चात् इंजीनियर के रूप में कार्य करते रहे। वीरगंज (नैपाल) में आर्य समाज की स्थापना आपने ही की थी। आज कल आप ज़िला आर्य उपसभा के प्रचार विभाग के अधिष्ठाता हैं और आपने इस इतिहास के लिये ५०१ रुपये प्रदान किया है।

श्री योगेन्द्रपाल जी शास्त्री आयुर्वेदाचार्य, मुख्यधिष्ठाता कन्या गुरुकुल हरिद्वार

आप श्री ठा० संसार सिंह जी के सुयोग्य पुत्र हैं। कन्या गुरुकुल का संचालन सुचारु रूप से कर रहे हैं तथा सुविख्यात चिकित्सक हैं।

श्री स्वामी ब्रह्मानन्द दंडी, एटा

महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त आर्ष पाठविधि के प्रबल समर्थक एवं प्रचारक हैं। आप उच्चकोटि के दार्शनिक विद्वान् कर्मकाण्ड मर्मज्ञ एवं प्रतिभाशाली निर्भीक वक्ता हैं।
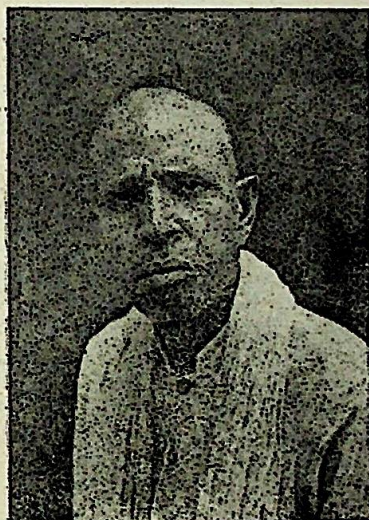
श्री स्वामी ब्रह्मानन्द जी

गुरूकुल एटा आपका जीता जागता स्मारक है। आपका जन्म ग्राम शाहपुर (एटा) है। आप जन्म मूलक वर्णव्यवस्था के प्रबल विरोधी हैं। स्वामी सर्वदानन्द महाराज के आप शिष्य हैं और उनके साधुआश्रम के होनहार छात्र हैं। आपने अपने जिले में अनेक संस्कृत विद्यालयों की स्थापना की है। भारत के स्वाधीनता समर में भी आप सक्रिय सहयोग देते रहे हैं।

श्री डा० श्रीकृष्ण जी लखनऊ

आर्यसमाज नरही के सदस्य हैं। आर्यप्रतिनिधिसभा उत्तरप्रदेश के निरीक्षक भी हैं। आपकी धर्म पत्नी श्री मती डा० प्रकाशवती जी आर्यसमाज की सुविख्यात महोपदेशिका है।

श्री प्रो० महेन्द्रप्रताप जी शास्त्री एम० ए०, बड़ौत (मेरठ)

स्व० ठा० माधवसिंह जी के पुत्र हैं। शिक्षा आपकी गुरुकुल वृन्दावन, आगरा व लाहौर में हुई। आप आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता, ओजस्वी
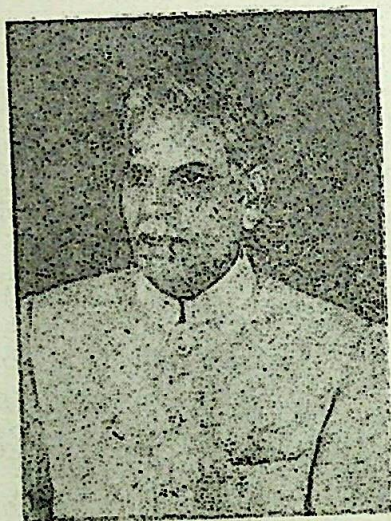
प्रो० महेन्द्र प्रताप जी

वक्ता एवं लेखक हैं। १५ वर्ष तक डी० ए० वी० कालेज लखनऊ के आप प्रधानाचार्य रहे। सम्प्रति जाट वैदिक डिग्री कालेज बड़ौत (मेरठ) के आप प्रधानाचार्य हैं।

शाहपुराधीश के युवराज के शिक्षक के रूप में आपने इंगलैंड की यात्रा भी की हैं। सन् १९४१ से ४३ तक आप सभा के मंत्री रहे और कई बार उपप्रधान भी रहे हैं।

मौलवी महेशप्रसाद की सुपुत्री कल्याणीदेवी को काशी विश्व विद्यालय में वेदाध्ययन की आज्ञा दिलाने में आपने विशेष प्रयत्न किया। गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन व गुरुकुल हाथरस के आप प्रमुख अधिकारी रहे। ...ारायण स्वामी अभिनन्दनग्रन्थ, गंगाप्रसाद अभिनन्दन ग्रन्थ, आर्यसमाज ... आदि पुस्तकों का सम्पादन किया है।

ब्र० सत्य प्रिय जी शास्त्री हरदोई
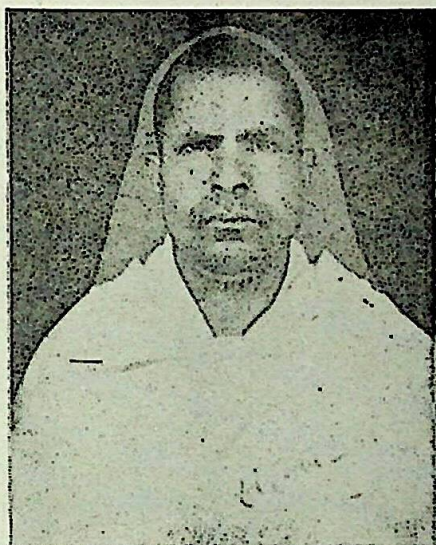
ब्र० सत्यप्रिय जी शास्त्री

आर्य-समाज के प्रभावशाली वक्ता एवं व्याख्याता है। वैदिक-कर्म-काण्ड में आपकी विशेष प्रगति है। वैदिक-साधना-आश्रम यमुनानगर में आपने पर्याप्ति काल तक कार्य किया आजकल प्रचार-कार्य में ही आप निरत रहते हैं।

श्री शिव प्रसाद जी

आप अर्यसमाज नरही के मंत्री और सभा के निरीक्षक हैं। आप सभा के कार्यों में सदैव दिलचस्पी लेते रहे हैं। सभा के अवैतनिक उपदेशक संघ के भी मान्य सदस्य हैं।

श्री स्वामी अमृतानन्द जी रामगढ़ (नैनीताल)

आप आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध विद्वान् और व्यख्याता हैं। गुरुकुल कागड़ी में भी आप संस्कृत के प्राध्यापक रहे हैं।

श्री चित्रवानप्रस्थी चठिया (हरदोई)
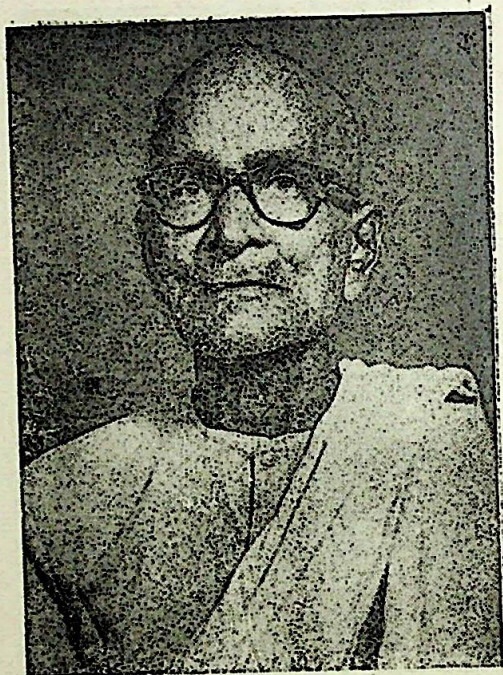
श्री चित्रवानपरस्थि

आर्य समाज चठिया के प्राण हैं। आपका विशेष त्यागपूर्ण जीवन है। २१००) रु० उ० प्र० सभा को भवन निर्माण में दिया।

आपने चठिया में एक कन्या विद्यालय भी स्थापित किया है।

श्री मूलचन्द्र जी शास्त्री एम० ए० मेरठ

आप आर्यसमाज के पुराने कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं। जिला बोर्ड मेरठ के अध्यक्ष हैं। गुरुकुल वृन्दावन में भी आपने श्री पं० वासीराम जी के समय में काम किया है। आप उत्तरप्रदेश की धारा सभा के सदस्य हैं।

आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री वेदानुसंधानकर्ता, नासिक

वैदिक वाङ्मय के प्रकाण्ड पण्डित, ओजस्वी वक्ता एवं सिद्धहस्त लेखक हैं। जन्म स्थान जौनपुर है। विहार, गुजरात, महाराष्ट्र में विभिन्न संस्थाओं में आपने प्रधानाचार्य के रूप में कार्य किया। अनेक अनुसंधान संस्थानों के आप सदस्य व अध्यक्ष आदि रहें हैं। आपने भारत के अतिरिक्त अफ्रीका में भी
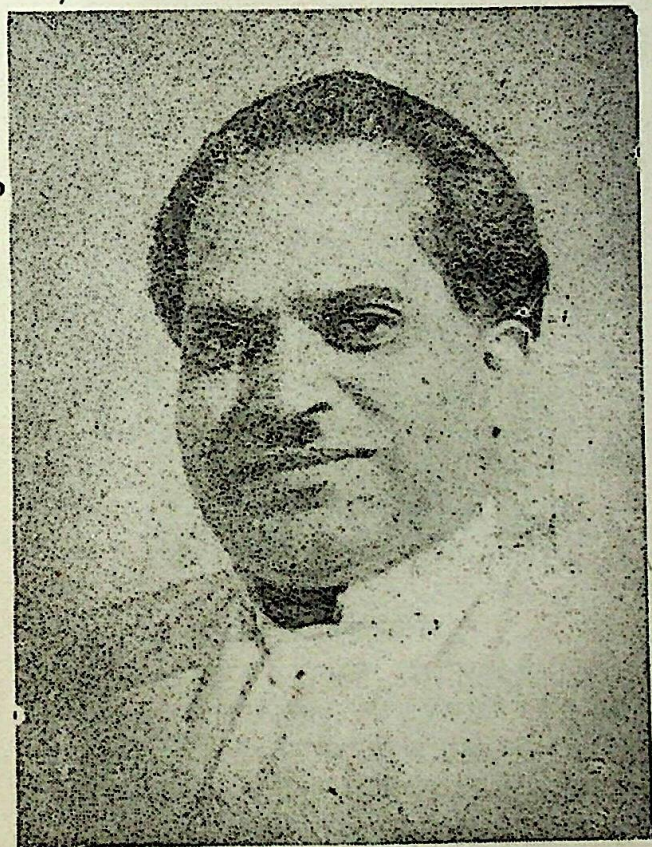
आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री

धर्म प्रचार का कार्य किया है। हिन्दी, संस्कृत व अंग्रेजी भाषाओं में धारा-वाही ओजस्वी भाषण देने की आपमें अद्भुत क्षमता है। आपकी अने

रचनाएँ हैं यथा:— वैदिक-ज्योति, वैदिक- इतिहास विमर्श, दयानन्द सिद्धान्त-प्रकाश आदि। आपने साम-वेद पर भाष्य भी किया है जो अभी प्रकाशित नहीं हो पाया है।

श्री विद्यारत्न जी बी० ए० एल० एल० बी, हल्द्वानी
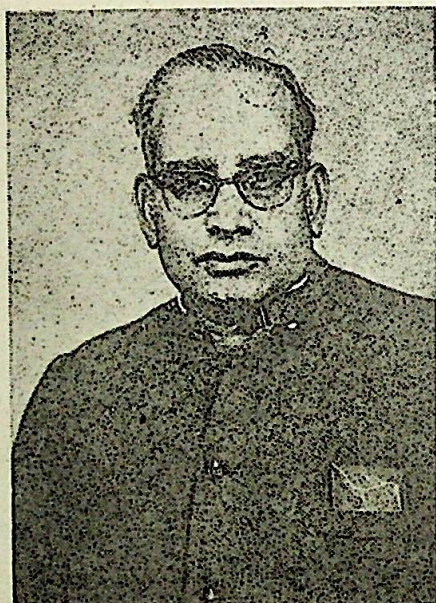
परिचय पृष्ठ २१३

श्री कृष्ण बल्देव जी मान्हा, लखनऊ:—

आर्य समाज के कर्मठ कार्य कर्ता हैं। सभा के सहायक कोषाध्यक्ष पद पर रहते हुए कोष के कार्य संचालन में प्रसंशनीय सहयोग दिया। आ० स० श्रंगार नगर लखनऊ के कई वर्ष प्रधान रहे हैं।

श्री रघुनन्दन स्वरूप गोयल वकील मेरठ

आप आर्य समाज के कर्मठ कार्य कर्ता हैं। आर्य समाज सदर, आर्यकन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मेरठ सदर, जिला सभा मेरठ के प्रधान रहे हैं। आप आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमंत्री भी रहे हैं।

अध्याय १७ का अवशिष्ट

[ब्लाक विलम्ब से तैयार होने के कारण यह एक फार्म रोकना पड़ा]

निम्न महानुभावों के परिचय छप चुके हैं :—
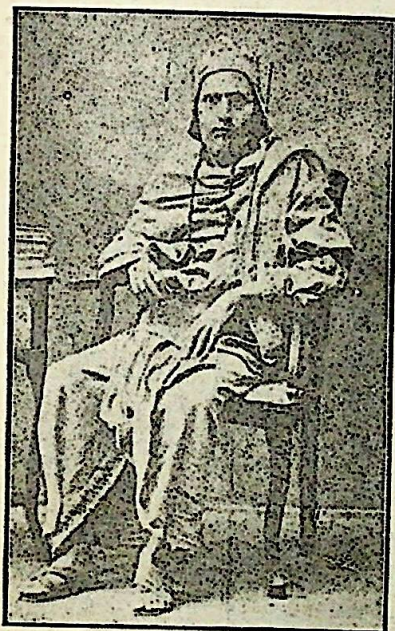
स्वामी भास्करानन्द (आचार्य भीमसेन जी)
(परिचय पृष्ठ १७१)

पं० बाबूलाल नागर
मुरसान (अलीगढ़)
(परिचय पृष्ठ १५२)

ठा० माधव सिंह जी आगरा
(परिचय पृष्ठ १५२)

पं० रासविहारी तिवारी लखनऊ

आप आर्यसमाज के यशस्वी कर्मठ एवं वीर नेता थे। लखनऊ आर्य-समाज की समस्त प्रगतियों में आप अग्रगण्य रहे हैं। सन् १९१८ ई० में आपने डी०ए०वी० कालेज लखनऊ की स्थापना की और उसके विकास में आप का सर्वाधिक हाथ रहा है।
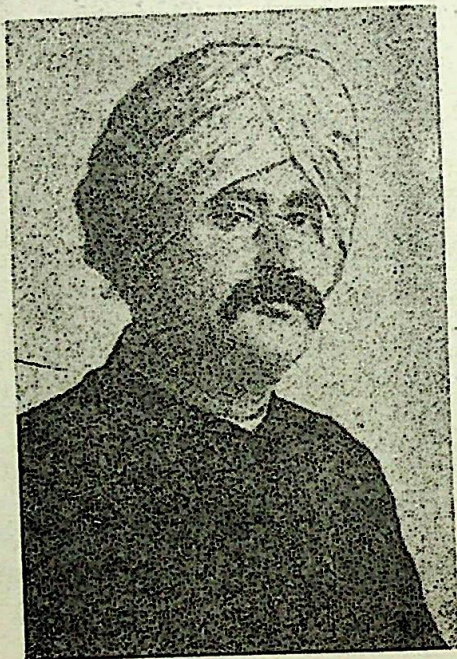
पं० रासबिहारी तिवारी जी

दीर्घकाल तक आपने उसके मन्त्री पद को सुशोभित किया है। आपने आर्य समाज की ओर से गरीबों की सहायतार्थ चिकित्सालय भी खुलवाया।

सभा के आप कई वर्ष तक मन्त्री रहे। विमोचित जाति (जरायम पेशा जाति) के उत्थान में आपका विशेष हाथ रहा है। करवल में जो सभा की जरायम पेशा जाति की बस्ती (आर्य नगर सेटिलमेंट) थी, उसकी स्थापना एवं संचालन में आपका प्रमुख हाथ था। लखनऊ में साइमन कमीशन के तीव्र वहिष्कार का आपने संगठन किया और पुलिस के डन्डे खाए।

सन् ३० में पुलिस के अत्याचारों के विरोध में आपने प्रान्तीय कौंसिल से त्याग-पत्र दे दिया था। लखनऊ की हिन्दू जनता के धार्मिक अधिकारों की रक्षा में आपका ऐतिहासिक एवं स्मरणीय योग दान रहा है।

श्री गदाधर सिंह जी कानपुर

आर्य समाज कानपुर (मैस्टन रोड) के पुराने प्रतिष्ठित कार्यकर्त्ता थे। आ० प्र० सभा उत्तर प्रदेश के सन १९२० में आप प्रधानमंत्री रहे हैं।

पं० शान्ति स्वरूप जी हरदोई

आपका पहिला नाम मौलाना मुहम्मद अली-कुरेशी था। आप निष्ठावान् आर्य समाजी थे। प्रभावशाली वक्ता एवं शास्त्रार्थं महारथी थे। स्वराज्य आन्दोलन में आपने विशेष कार्य किया और जेलों की शोभा बढ़ाई है। स्वराज्य प्राप्ति के उपरान्त आप विधान सभा के सदस्य निर्वाचित हुए, किन्तु वैदिक मिशन का कार्य जीवन की अन्तिम घड़ी तक करते रहे।

महात्मा सुमेर सिंह जी

गुरुकुल विरालसी के निर्माण एवं उत्थान में आपने जीवन पर्यन्त महान् परिश्रम किया। स्वराज्य आन्दोलन में कारागार की यातना सही। हैदराबाद सत्याग्रह में आप एक जत्था लेकर गये। आर्य समाज का संलग्नता पूर्वक प्रचार किया। आपकी गणना प्रभावशाली वक्ताओं में की जाती रही है।

चौ० मुख़्त्यार सिंह जी मेरठ

आप आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता थे। सभा के कार्यों में पं० घासी राम जी के विशेष सहयोगी रहे। आप कृषि-शास्त्र के विशेषज्ञ थे। अनेक वर्षों तक आपने विदेशों की यात्रा कर वहाँ के कृषि सम्बन्धी कार्यों का अध्ययन किया। गुरुकुल डौरली के आप अनेक वर्षों तक प्रधान रहे। विज्ञान कला-भवन दौराला के आप संस्थापक एवं संचालक रहे। आप प्रवीण लेखक थे। आपने कृषि आदि पर अनेक पुस्तकें लिखी हैं। आपकी कुछ रचनाएँ निम्न प्रकार हैं :—

१. जापान, जर्मनी, अमरीका की आर्थिक उन्नतियाँ, २. नमक का इतिहास, ३. सत्य ज्ञान की खोज, ४. अलसी जल और जुताई, ५. पौदा, खाद्य तथा भूमि।

महान् प्रचारक ठा० तेजसिंह बुलन्दशहर

आप आर्यसमाज के ओजस्वी प्रचारक थे। सन् १८७० ई० में आपका जन्म बुलन्दशहर जिले में हुआ। १८ वर्ष की अवस्था में आपने सत्यार्थ-प्रकाश के ६ समुल्लास कण्ठस्थ कर लिए थे। ऋषि दयानन्द के प्रति आप की महती आस्था का यह ज्वलन्त प्रमाण था। आर्यसमाज के उत्सवों में आपके नाम से जनता दूर २ से खिंची चली आती थी। जीवन की अन्तिम घड़ी तक आप प्रचार कार्य में ही संलग्न रहे।
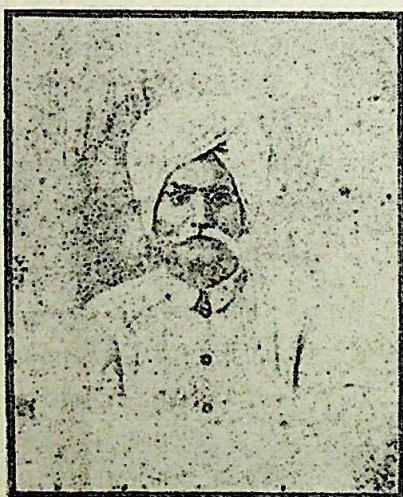
ठा० तेजसिंह जी

पं० मुरारीलाल शर्मा एवं स्वामी श्रद्धानन्द जी के साथ आपने मूले जाटों एवं मलकाने राजपूतों की शुद्धि में अनथक कार्य किया। अनेकों वार लाठियाँ खाईं और पत्थरों की मार सही। आप के प्रचार के प्रभाव से अनेकों ग्रामों में मूर्तियाँ उठाकर फेंक दी गईं। आपने अनेक उत्तमोत्तम प्रभावशाली भजनों की रचना की है। सिंहगढ़-विजय और वीर तानाशाह का इतिहास आपकी प्रसिद्ध रचनायें हैं।

मा० विश्वम्भर दयालु बी० ए० बी० टी०, मुजफ्फरनगर

आप आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता थे। सन् १९२४ ई० आपने सभा के प्रधान पद को सुशोभित किया था। आप अपने जिले के कांग्रेस के

प्रमुख कार्यकर्त्ता एवं नेता थे। स्वाधीनता के अनेक संग्रामों में आपने आगे बढ़कर कार्य किया है तथा वृटिश सरकार की जेलों को सुशोभित किया है। समाज सुधार एवं अस्पृस्यता निवारण के क्षेत्रों के आप अग्रणी रहे।

राजा जयकृष्णदास सी आई० ई० मुरादाबाद

महर्षि के परम भक्तों में थे। आपके ही विशेष अनुरोध पर महर्षि ने अपने विचारों को पुस्तक रूप में सूत्रित करने का निश्चय किया

राजा जयकृष्णदास जी

और सत्यार्थप्रकाश के रूप में वह विचार सूत्रित किए गए। प्रथम सत्यार्थप्रकाश का प्रकाशन भी राजा जयकृष्णदास जी ने अपने व्यय से कराया।

पं० बसन्तलाल शर्मा, कानपुर

आर्य समाज के प्रारम्भिक युग के पुरुषार्थी वैदिक धर्म प्रचारक थे। आपने सभा के स्थापनाकाल से जीवन पर्यन्त प्रचार का कार्य बड़ी तन्मयता से किया।

स्वामी दर्शनानन्द (पं० कृपाराम जी)

आप शास्त्रार्थ महारथी प्रसिद्ध दार्शनिक विद्वान् प्रख्यात लेखक एवं आर्य समाज के महान् प्रचारक थे। गुरुकुल शिक्षा प्राणाली के महान् समर्थक एवं अनेकों गुरुकुलों के जन्मदाता थे। आपके ही कर कमलों से उत्तर प्रदेश में गुरुकुल सिकन्दराबाद, गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर, गुरुकुल बिरालसी, गुरुकुल सूर्यकुण्ड बदायूं की स्थापना हुई। आपने पंजाब में भी दो गुरुकुल पोटोहार एव० झेलम में खोले।

आपके पिता स्व० पं० रामप्रताप जी काशी में रहा करते थे वहीं आपको संस्कृत पठन-पाठन की विशेष लगन लगी। आप आर्यसमाज के अद्वितीय महान् प्रचारक बने। आपने स्वामी सर्वदानन्द जी की भांति भारत में सर्वाधिक प्रचार यात्रा की है। आपने अपने जीवन में अनेक मत पन्थों के विद्वानों से सैंकड़ों ही शास्त्रार्थ किये।

आपने छहों दर्शनों पर उच्चकोटि का अनुवाद किया है। प्रचार की दृष्टि से आपने सैकड़ों ही ट्रैक्ट इस जीवन में लिखकर प्रकाशित किये। आपके ट्रैक्टों को पढ़कर सहस्रों ब्यक्ति आर्यसमाजी बने हैं। गीता व मनु-स्मृति पर आपके भाष्य आर्य जगत् में विशेष मान्यता प्राप्त है। आपका उपनिषद् प्रकाश भी एक विशेष ग्रन्थ हैं। आपके ट्रैक्ट दर्शनानन्द ग्रन्थ संग्रह के नाम से उपलब्ध हैं।

स्वामी वेदानन्द तीर्थ, ज्वालापुर

आर्य सिद्धान्तों के मर्मज्ञ, वेदों के विद्वान्, प्रभावशाली वक्ता एवं लेखक थे। महात्मा नारायण स्वामी जी के उपरान्त निरन्तर ५ वर्ष तक आप वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर के संचालक रहे। सत्यार्थ प्रकाश को बहुमूल्य टिप्पणियों सहित वृहदाकार में प्रकाशित करना आपकी अद्भुत प्रतिभा का द्योतक है। आपने जीवन में अनेकों ग्रन्थ लिखे हैं। यथा १. स्वाध्याय संग्रह, २. ब्रह्मचर्य६. स्वाध्याय-सुमन, ४. वेदापदेश, ५. ऋषि बोध-कथा, ३. जीवन की भूलें।

प्रथम सभा मन्त्री स्व० विहारीलाल जी मुजफ्फर नगर

आप मेरठ नार्मल स्कूल के प्रधान अध्यापक रहे हैं और सभा की स्थापना पर आप ही उसके १८८७ ई० में प्रथम मंत्री निर्वाचत हुए।
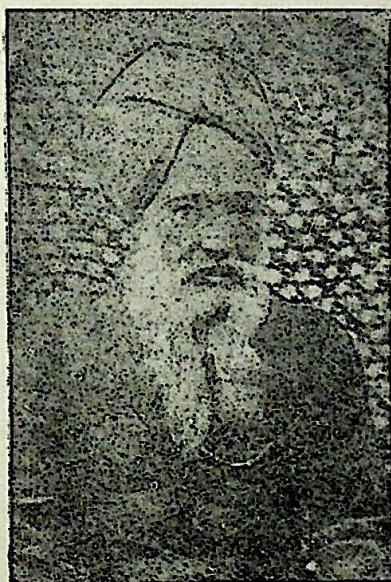
स्व० बिहारीलाल जी

आपने महर्षि के मेरठ के उपदेशों से प्रभावित होकर आर्यसमाज में प्रवेश किया और अपनी जन्मभूमि मुजफ्फरनगर में आर्यसमाज की स्थापना कराई। आपने एक 'अजीब-ख्वाब' नामक उर्दू में पुस्तक भी लिखी थी। सन् १९१९ ई० में आपका परलोक गमन हुआ।

श्री मथुराप्रसाद शिवहरे, फतेहपुर

आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता थे। आपने अजमेर में जा कर वैदिक साहित्य प्रकाशन का कार्य बड़ी लगन से आरम्भ किया। वहां निजू प्रेस स्थापित किया पं० जयदेव विद्यालंकार से चारों वेदों का सुन्दर सरल हिन्दी

अनुवाद कराकर प्रकाशित किया। वैदिक साहित्य के प्रकाशन में आप का प्रयत्न विशेष सराहनीय है।

स्व० पं० लेखराम शास्त्री डौरली, (मेरठ)

आप गुरुकुल सिकन्दराबाद के प्रतिष्ठित स्नातक थे। स्नातक परीक्षा पास करते ही आप मेरठ जिले के प्रमुख गुरुकुल डौरली में आचार्य पद पर नियुक्त हो गए और निरन्तर २० वर्ष तक आपने गुरुकुल के निर्माण एवं विकास में प्रशंसनीय परिश्रम किया। स्वराज्य आन्दोलन में आपने सक्रिय भाग लिया। कारागार में क्षयी रोग से ग्रसित हो गए और बाहर आकर कुछ काल बाद युवावस्था में ही आपका स्वर्गवास हो गया।

ठा० गंगासिंह अलीगढ़

आर्यसमाज के प्रबल प्रचारक थे। अनाथालय आगरा तथा सभा की आपने दीर्घकाल तक सेवा की है। आपकी गणना उच्चकोटि के भजनीकों में रही है।

पं० शिवचरणलाल सारस्वत आर्य पुरोहित, कालपी

आप आर्यसमाज कालपी (बुन्देलखण्ड) के कर्मठ कार्यकर्त्ता थे। अनेक वर्षों तक इस समाज के मन्त्री रहे हैं। अनेक वर्षों तक निरन्तर आपने आर्य प्रतिनिधि सभा में कालपी का प्रतिनिधित्व किया है। सभा के अंतरंग सदस्य एवं निरीक्षक भी आप रहे हैं। प्रेम-प्रभाव, गो-महत्वादि आपने अनेक ट्रैक्ट भी लिखे हैं।

पं० इन्द्रमणि जी बी० ए० वकील, मेरठ

आर्यसमाज के पुराने कर्मठ कार्यकर्त्ताओं में आपका विशेष स्थान है। स्वराज्य आन्दोलनों में आपने सदा आगे बढ़कर कार्य किया है। अछूतोद्धार आन्दोलन को प्रगति देने में आपका विशेष हाथ रहा है। आर्य प्रतिनिधि सभा के आप सन् १९२४ ई० में मन्त्री रहे।

पं० नन्दकिशोरदेव शर्मा, शाहजहाँपुर

आर्य समाज के पुराने तपस्वी महान् प्रचारक थे। उत्तर प्रदेश में सभा की स्थापना होने पर सर्व प्रथम प्रचार का कार्य आपने ही आरम्भ किया था। उपदेशक विभाग के आदिम महोपदेशक आप ही थे। आपने निरन्तर ५० वर्ष तक प्रान्त के कोने-कोने में वैदिक धर्म का प्रचार बड़ी संलग्नता के साथ किया है। पं० रामदत्त जी शुक्ल एम० ए० एडवोकेट आपके ही सुपुत्र थे।

आचार्य विश्वेश्वर सिद्धान्तशिरोमणि एम० ए० गुरुकुल वृन्दावन

गुरुकुल विश्व विद्यालय वृन्दावन के प्रतिष्ठित स्नातक एवं संस्कृत साहित्य के प्रकांड पंडित थे। अत्यन्त सौम्य एवं मृदु स्वभाव के व्यक्ति थे। अनेक वर्षों तक गुरुकुल के दर्शन के उपाध्याय रहे। सन् ३९ से ६२ तक गुरुकुल के आचार्य पद को विभूषित करते रहे। गुरुकुल श्रीधर अनुसंधान विभाग और दर्शन पीठ के भी आप अध्यक्ष रहे। प्रपंच-परिचय, दर्शनशास्त्र पर आपका मौलिक ग्रन्थ है। महात्मा ईसा आपकी खोज पूर्ण रचना है। भारतीय दर्शनों और संस्कृत साहित्य के अनेक शास्त्रीय ग्रन्थों का आपने हिन्दी अनुवाद किया। दिल्ली विश्व विद्यालय ने आपके ग्रन्थ प्रकाशित किए है। आपके १० ग्रन्थों पर उत्तर प्रदेश एवं विन्ध्य प्रदेश की सरकारों की ओर से दस हजार मे अधिक रुपये पारितोषिक दिए गए। गुरुकुल की शिरोमणि उपाधि को भारतीय विश्व विद्यालयों से स्वीकार कराने में आपने सफल प्रयास किये। गुरुकुल के वर्तमान विकास की समस्त योजनाओं का श्रेय आपको ही प्राप्त है। खेद है कि यह अमूल्य आर्य रत्न २९ जुलाई १९६२ को हमारे बीच से उठ गया।

महाशय केदारनाथ आर्य, फैजाबाद

आप आर्य समाज के कर्मठ एवं परमोत्साही वीर कार्यकर्त्ता थे। आपका जीवन तपस्वी एवं कर्मकाण्डी था हिन्दुओं की रक्षा हेतु आपने अनेक बार अपने जीवन को संकट में डाला। भारतीय स्वातन्त्र समर के आप उद्भट योद्धा थे। जीवन में ९ बार बृटिश कारागार की यात्रा की। अनाथ एवं विधवाओं की रक्षा में सतत प्रयत्नशील रहे। एक बालक की रक्षा करते हुए सन् १९५८ ई० में आपका बलिदान हुआ।

स्व० रायबहादुर आनन्द स्वरूप जी, कानपुर

आर्य समाज कानपुर के पुराने कर्मठ कार्यकर्त्ता एवं संचालकों में रहे हैं। आप कानपुर के प्रितिष्ठित व्यक्तिों में से थे तथा कानपुर की अनेक शैक्षणिक सामाजिक एवं सांस्कृतिक प्रवृत्तियों में आपका हाथ रहा है। आप अनेक वर्षों तक आर्य समाज मेस्टनरोड कानपुर के प्रधान रहे। डी० ए० वी० कालेज कानपुर के जन्म दाताओं में आप अग्र गण्य थे, अनेक वर्षों तक कालेज के प्रधान पद को सुशोभित किया।

देवस्वामी जी (म० देवकली प्रसाद) फैज़ाबाद

आपका जन्म ग्राम अछोरा जिला फैजाबाद में हुआ। आप पहले घोर नास्तिक थे किन्तु सन् १९०६ ई० में आर्य समाज के सम्पर्क में आए और पक्के ईश्वर भक्त वन गये और जीवन पर्यन्त वैदिक धर्म के प्रचारक रहे। सरकारी नौकरी करते हुये जहाँ भी आपका तबादला हुआ, आपने वहाँ ही आर्य समाज की स्थापना की। बहराइच, नानपारा भिनगादि आर्य समाजों के संस्थापक आप ही थे। अनेक समाजों का आपने जीर्णोद्धार किया। आप विशेष स्वाध्यायशील व्यक्ति थे। सन् १९३४ ई० में वानप्रस्थ धारण किया।
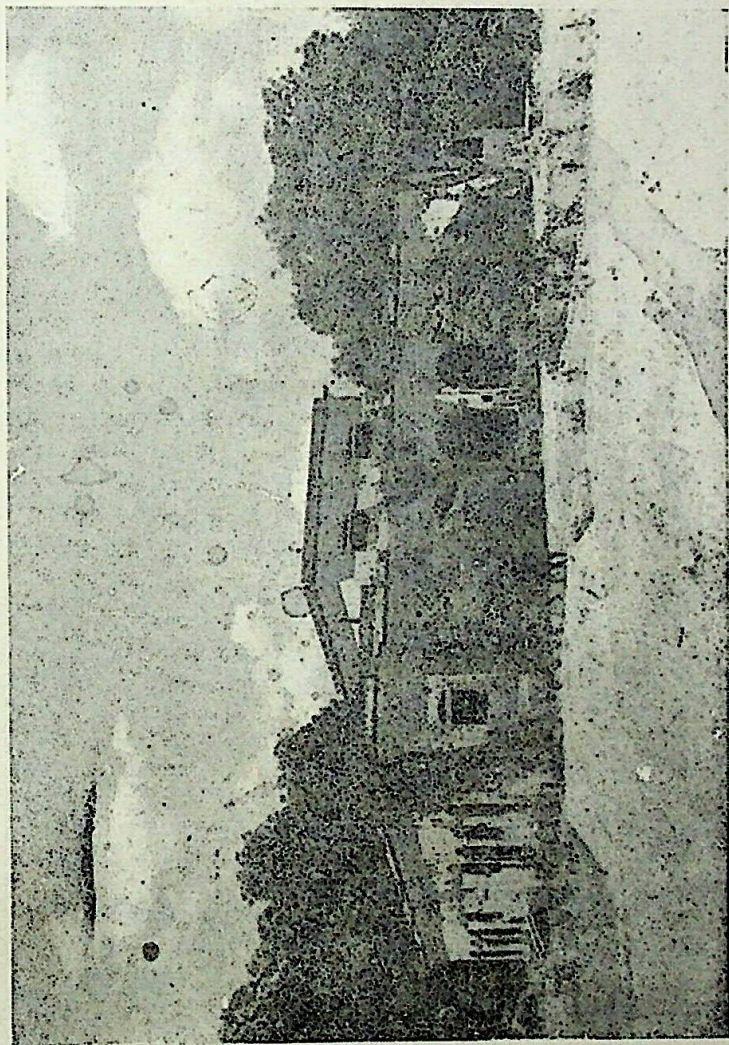
वर्तमान भवन आर्य प्रतिनिधि-सभा, उत्तर-प्रदेश, ५ मीराबाई मार्ग, लखनऊ।
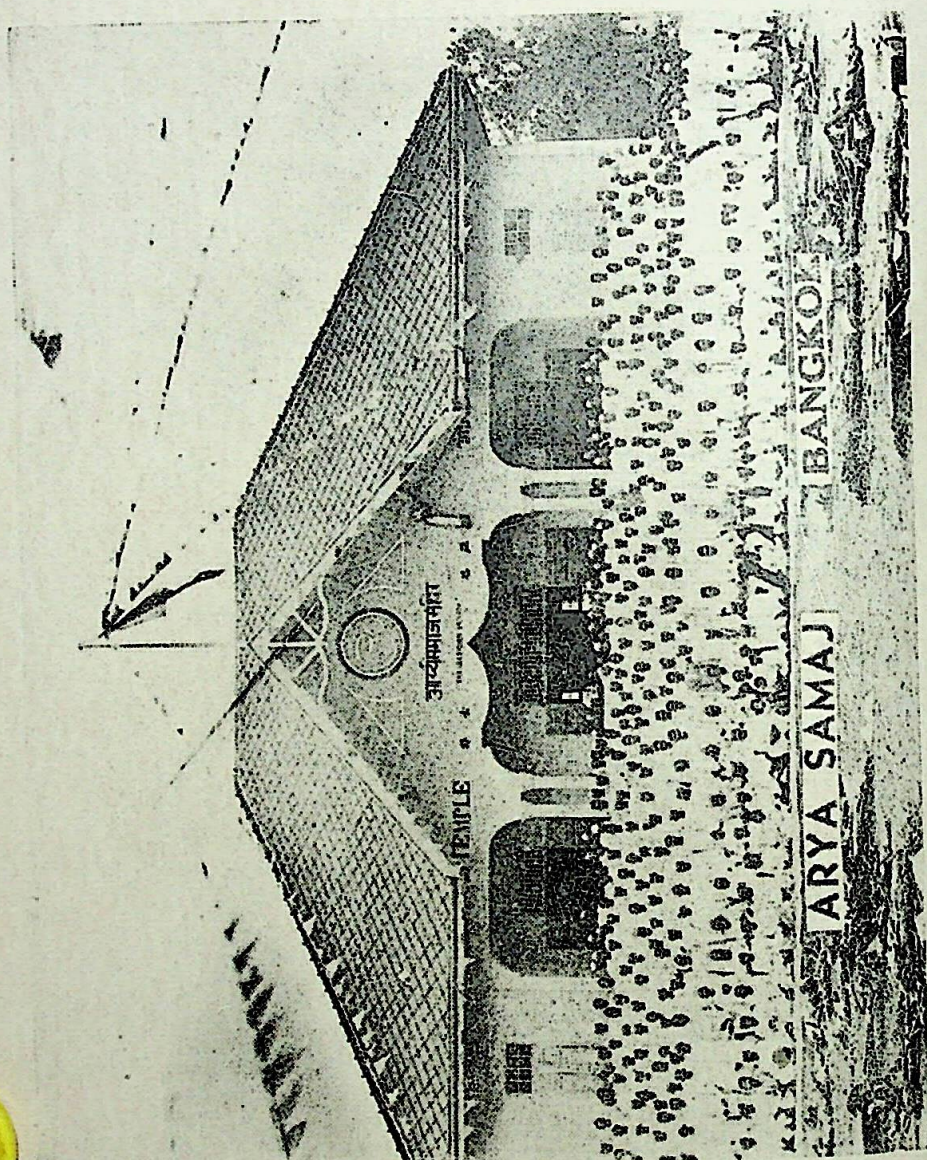
आर्य समाज भवन बैंकोक (थाइ लैंड) व उसके सदस्य।

द्वितीय भाग

आर्य समाज विस्तार एवं कार्य परिचय

उत्तर प्रदेश में सभा सम्बन्धित आर्य समाजों की संख्या इस समय ११९६ है। लगभग ३०० समाज ऐसे हैं जिनका सम्बन्ध अभी सभा के साथ नहीं हुआ है। सम्बन्धित आर्य समाजों में ५०० के लगभग के वृत्तान्त केवल उपलब्ध हुये हैं। जिलेवार उनका संक्षिप्त परिचय यहां दिया जाता है।

उत्तराखण्ड

गढ़वाल, टिहरी, उत्तरकाशी, चमोली, पिथौरागढ़

स्वराज्य से पूर्व टिहरी एक पहाड़ी राज्य था जो विलय होने के उपरान्त उत्तर प्रदेश का एक जिला बना दिया गया तथा गढ़वाल के अन्दर ही उत्तर काशी, चमोली एवं पिथौरागढ़ तीन नये जिले सुरक्षा की दृष्टि से और बनाये गये हैं।

उत्तराखण्ड को यह गौरव प्राप्त है कि १९वीं शती का महा मानव युग पुरुष दयानन्द निरन्तर दो वर्षों तक यहां योगियों की खोज करता रहा और उसने सारा उत्तराखण्ड छान डाला। अनेक योगी और साधु मिले और उनसे योग आदि की अनेक क्रियाएं सीखीं, किन्तु जिस प्रकार के आर्ष योगी गुरु की उसे खोज थी वह उपलब्ध न हुआ।

उत्तराखण्ड को अंग्रेजी सरकार ने बहुत उपेक्षित कर रक्खा था। एक प्रकार

से ईसाई मिशनरियों के लिये अपनी इच्छापूर्ति के निमित्त इसे छोड़ रक्खा था। स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरान्त अपनी सरकार का इधर ध्यान आकर्षित हुआ है। सड़क, विद्युत, शिक्षा, उद्योग-धन्धों की अब व्यवस्था की जा रही है।

उत्तराखण्ड में सर्व प्रथम आर्य समाज, जहां तक पता चला है, टिहरी में स्थापित हुआ। इसके पश्चात् अनेक स्थानों पर आर्य समाज स्थापित किये जाने लगे। शिल्पकारों ने, जो रूढ़िवादिता की चक्की में पिस रहे थे, आर्य समाज का सहारा पाकर कुछ ऊपर को उभार लिया किन्तु उच्च जात्याभिमानी वर्ग का पारा चढ़ गया। नाना प्रकार से शिल्पकारों के जाग्रत होते हुये स्वाभिमान को कुचला गया। डोला-पालकी की ऐतिहासिक समस्या ने भयंकर रूप धारण कर लिया। उधर आर्य-समाज के कर्मठ कार्यकर्ता पं० रेवानन्द (स्वामी सच्चिदानन्द) पं० तोताराम जुगराण, पं० रघुबरदयालुजी, तथा श्री पं० जयानन्द भारती ने गांव-गांव घूमकर प्रचार किया एवं आर्य समाज के संगठन को विस्तार दिया। ज़िला बिजनौर एवं प्रान्त के अनेक कार्यकर्ताओं ने पूरा-पूरा सहयोग दिया इस प्रदेश में १०६ आर्य समाज स्थापित हो गये तथा कई आर्य शिक्षा संस्थाओं की भी यहां स्थापना हुई।

सन् १८८९-९० ई० के भीषण अकाल के उपरान्त महात्मा हंसराजजी की प्रेरणा से आर्य प्रादेशिक सभा ने गढ़वाल में १७ डी० ए० वी० पाठशालायें यहां खोलीं तथा पं० अर्जुनदेव जी भारती को इनका संचालक बनाकर भेजा। दुगड्डा में कार्य का केन्द्र स्थापित किया गया। पंडित जी ने इस केन्द्र के निकट सन् १९९१-९२ में १० आर्य समाजों की स्थापना की।

सन् १९२० में आर्य समाज नजीबाबाद के कर्मठ कार्यकर्ता श्री धर्मेन्द्रनाथ आर्य, बा० बनारसीलाल आर्य, श्री शिवचरणदास आर्य आदि ने दुगड्डा, गोदी, साजाका सैंण, बोरगांव, उमथगांव, कूरीखाल, बिन्दलगांव के दलित बन्धुओं को आर्य समाज में प्रविष्ट कराया। रूढ़िवादी जगत् में तहलका मच गया।

पं० रेवानन्द आर्य महोपदेशक ने आकर यहां डेरा जमाया। इधर बिजनौर गढ़वाल उपप्रतिनिधि सभा संगठित की गई और उच्च जातियों के लोग भी आर्य समाज में प्रविष्ट होने लगे। गढ़वाल के प्रमुख आर्य कार्यकर्ता जिन्होंने नाना कष्ट उठाकर आर्य समाज का काम किया और उसको सारे उत्तराखण्ड में संगठित किया निम्न रहे हैं :—

श्री रघुवरदयालुजी पारवरी, गढ़केशरी श्री ठा० केशरसिंहजी, ठा० अमर सिंहजी, ठा० जोतसिंहजी, ठा० उमेदसिंहजी, डाक्टर सदानन्द काला, ठा०

बख्तावरसिंह, ठा० पंचमसिंहजी, ठा० मनवरसिंह, ठा० गुमानसिंह, डा० टीकाराम, पं० रविदत्त, ठा० उदयसिंह, पं० कृपाराम, श्री घनश्यामजी नैथानी, पं० धनीराम जोशी, पं० श्रीराम नैथानी, ठा० माधो सिंह, तथा श्री टेकचन्द जी।

सन् १९२९ में चौन्दकोट एकेश्वर के मेले से आर्य समाज पर पौराणिकों के आक्रमण का श्रीगणेश हुआ। स्थान-स्थान पर डोला-पालकी समस्या उठ खड़ी हुई। आर्यों की स्थान-स्थान पर बारातें रोकी गईं और पिटाई की गई। सभा की ओर से पीटने वालों पर अभियोग दायर किये गये। सहस्रों रुपया व्यय कर आततायियों को दण्डित कराया गया।

चैलूसैण में ईसाई मिशन के मुकाबले पर डी० ए० वी० स्कूल स्थापित किया गया और प्रभाव स्वरूप वहां से २९ वर्षों का मिशन स्कूल उखड़ गया।

१९२९ ई० में जब बैंसोखी गांव की आर्यों की बारात रोकी गई तो १२ फरवरी १९२९ ई० को श्री धर्मेन्द्रनाथजी आर्य नजीबाबाद के सभापतित्व में २७ गांवों की पंचायत हुई और सत्याग्रह का निश्चय किया गया। सब डिविजनल मजिस्ट्रेट ने सत्याग्रह की बात सुनते ही बारात अपनी देखरेख में गोपी गांव सकुशल पहुंचा दी। इसी प्रकार अनेक स्थानों पर विटों द्वारा बारातें रोकी गईं और पुलिस की सहायता से निकलवाई गईं। विटों पर दावे किये गये।

सन् १९३९ ई० में उपसभा बिजनौर ने गढ़वाल में प्रचार की गति और तीव्र कर दी। हैदराबाद सत्याग्रह में गढ़वाली आर्य बन्धुओं का एक जत्था पं० तोताराम जुगराण के नेतृत्व में भेजा गया। सत्याग्रह की समाप्ति पर यहाँ के कार्यक्षेत्र में नये रक्त का विशेष सञ्चार हुआ अनेक कर्मठ नवयुवक कार्यक्षेत्र में उतर पड़े जिनमें कुछ नाम निम्न प्रकार हैं :—

१. पं० तोताराम जुगराण २. पं० बच्चनराम गैंहरोला ३. श्री महेश्वरदत्त गैरोल ४. श्री छवाणूंसिंह नेगी ५. पं० शीशराम रुद्रीदत्त पांथरी ६. बा० रामप्रसाद आर्य ७. श्री बाजसिंह आर्य पुरोहित ८. श्री गगासिंह कुन्डौली ९. ठा० गोपालसिंह पाली १०. श्री बुद्धिराम आर्य ११. श्री शान्ति प्रकाश प्रेम।

शोलापुर आर्य महा सम्मेलन में गढ़वाल के आर्य शिल्पकारों पर होने वाले अत्याचारों के विरोध में प्रस्ताव पारित किया गया। सन् ४०-४१ में बारातों पर विटों के निरन्तर आक्रमण होते रहे।

सभा के कार्यालय का ध्यान विशेष रूप से आकर्षित करने के लिये एक जत्था लखनऊ पहुंचा। सभा प्रधान श्री मदनमोहन सेठ ने प्रदेश की गवर्नमेण्ट को

गढ़वाल की भयंकर स्थिति का परिचय कराया। गवर्नर सर मालकम हेली लैन्स-डाऊन पधारे और समस्या आपस में सुलझाने का परामर्श दिया; किन्तु पौराणिकों का व्यवहार नहीं बदला। १९४२ ई० में पुनः बारातों पर खूनी आक्रमण किये गये। श्री महेन्द्रप्रताप शास्त्री, एम० ए० सभामन्त्री ने डोला-पालकी समस्या को सुलझाने के लिये विशेष प्रयत्न किया। गढ़वाल की बिगड़ती हुई परिस्थिति को सम्हालने के लिये सार्वदेशिक सभा ने उपदेशक भेजे। सभा ने १९४३ ई० में सारे प्रान्त का ध्यान गढ़वाल दिवस मनाकर आकर्षित किया। दुगड्डा में प्रान्त भर के आर्य समाजों के प्रधान मन्त्रियों का सम्मेलन बुलाया गया। पं० गंगा प्रसाद उपाध्याय एम० ए०, मन्त्री सार्वदेशिक सभा, बा० पूर्णचन्द्र वकील प्रधान सार्वदेशिक सभा एवं पं० हृदयनाथ कून्जरू लैन्सडाउन पधारे और समस्या हल करने का प्रयत्न किया किन्तु परिस्थिति सुधरने में न आई। अनेक आर्य उपदेशकों पर भीषण हमले किये गये। पं वेदव्रत आर्योपदेशक को गले में रस्सा डालकर पशुओं की तरह खींचा गया। पत्थरों की बौछारें की गईं। ६ अगस्त १९४५ ई० को पं० वेदव्रत एवं ब्र० बालकराम ने डी० ए० वी० इन्टर कालेज दुबड्डा में भूख हड़ताल आरम्भ करदी जो एक मास तक चली। आर्य नेताओं के आश्वासन पर हड़ताल समाप्त हुई। समस्याओं के सुलझाने के हेतु ६-७-८ अप्रैल १९४६ ई० को दुगड्डा में एक वृहदार्य सम्मेलन किया गया। सम्मेलन में कविराज हरनामदास, बाबा गुरुमुखसिंह आर्य, श्री ईश्वरदयालु जी आदि अनेक नेता पधारे। बाबा गुरुमुख सिंह ने गढ़वाल की सहायतार्थ एक लाख रुपये देने की घोषणा की तथा डी० ए० वी० स्कूल का भार अपने हाथ में लिया जो इस समय उच्च माध्यमिक विद्यालय बना हुआ है।

पं० वेदव्रत आर्योपदेशक एवं ब्रह्मचारी बालकराम ने इन अध्याचारों की आवाज महात्मा गान्धी एवं पं० जवाहरलाल नेहरू तक अनेकबार पहुंचाई। अन्त में १९४७ ई० में अस्पृश्यता निवारण कानून बनाकर इस समस्या का सदा के लिये अन्त कर दिया गया।

गढ़वाल में इस समय आर्य समाज के दो उच्च माध्यमिक विद्यालय लड़कों के लिये पौड़ी व दुगड्डा में हैं तथा एक आर्यकन्या माध्यमिक विद्यालय कोटद्वार में चल रहा है।

कतिपय आर्यसमाजों का परिचय जो उपलब्ध हुआ निम्न प्रकार है।

१. आर्य समाज कंचोली—स्थापना तिथि २२-२-१९४६ ई०। संस्थापक—श्री सत्यपालजी, श्री दर्शनलालजी पीथा, श्री सर्वेश्वर प्रसादजी पीथा।

इस समाज ने पिछड़े वर्ग के सज्जनों को सहर्ष अपने अन्दर प्रविष्ट किया। तथा निकट के ३७ ग्रामों में समय-समय पर प्रचार करके दलितों की दशा सुधारने का विशेष प्रयत्न किया।

२. आर्य समाज तलाई—स्थापना तिथि ३-८-१९४७ ई०। संस्थापक —श्री जयानन्द भारती।

३. आर्य समाज बमनखोला—स्थापना तिथि ११-१२-१९४७ ई०।

४. आर्य समाज कड़ठू—स्थापना तिथि २२-१-१९५६ ई०। संस्थापक—श्री खुशहालसिंह

५. आर्य समाज सावली पंचपुरी—स्थापना तिथि २५-५-१९४१ ई०।

समाज का अपना छै हजार रुपयों की लागत का मन्दिर है। अस्पृश्यता निवारणादि कार्यों में विशेष भाग लिया। भारतीजी के कार्यों का यह केन्द्र है। समाज के आधीन एक भारतीय कन्या विद्यालय एवं पुस्तकालय चल रहे हैं।

वर्तमान प्रधान श्री कल्याणसिंह आर्य, मन्त्री श्री शान्ति प्रकाश प्रेम।

६. आर्य समाज चाँदकोट—स्थापना तिथि १९२४ ई०।

एकेश्वर मेले में प्रचार का विशेष आयोजन किया जहां रूढ़िवादियों ने कार्यकर्ताओं पर भयानक आक्रमण किया। समाज के उत्साही, त्यागी एवं निर्भीक कार्यकर्ता स्व० श्री केशर सिंह थे जिन्होंने स्वतन्त्रता आन्दोलन में विशेष भाग लिया और कुली प्रथा का खुला विरोध किया।

आपको तीन वर्ष कारागार की यातना सहन करनी पड़ी। आप चान्दकोट केशरी के नाम से विख्यात हुये।

७. आर्य समाज सतपूली—स्थापना तिथि २३ दिसम्बर १९६१।

संस्थापक—श्री ईश्वरदयालुजी सभा मन्त्री।

८. आर्य समाज लक्ष्मणझूला—इस आर्यसमाज को स्थापित हुये लगभग बीस वर्ष हो गये और अब से १५ वर्ष पूर्व इसकी सभा में रजिस्ट्री भी हो गई थी किन्तु कार्य शिथिल है।

कूर्मांचल

नैनीताल-अलमोड़ा

उत्तर प्रदेश का दूसरा पार्वत्य प्रदेश कूर्मांचल है। इस प्रदेश में दो जिले हैं—नैनीताल और अलमोड़ा। नैनीताल अपने प्राकृतिक सौंदर्य के कारण सारे देश

में विख्यात है। मीलों लम्बा चौड़ा नैना का तालअपनी निराली छटा यहां छलका रहा है।

जिला नैनीताल एवं अल्मोड़ा में सभा से सम्बन्धित क्रमशः १२ एवं २ आर्य-समाज हैं।

नैनीताल

इस क्षेत्र में सर्वप्रथम एवं उत्तर प्रदेश में भी सर्वप्रथम आर्य समाज नैनीताल नगर में सन १८७५ ई० में स्थापित हुआ था। बम्बई में आर्यसमाज की स्थापना हो जाने के उपरान्त यहाँ १८७४ ई० में ऋषि दयानन्द के विचारों का प्रचार करने के लिये बनाई गई सत्यधर्म प्रचारिणी सभा को १८७५ में ही आर्य समाज के रूप में परिवर्तित कर दिया गया।

आरम्भ में समाज के अधिवेशन सदस्यों के गृहों पर होते रहे बाद में दानवीर स्व० नारायणदत्त छिमवाल जी ने तल्लीताल में एक छोटा सा स्थान मन्दिर निर्माणार्थ प्रदान कर दिया और सन् १९०१ में श्री रामप्रसादजी मुख्तार (स्व० स्वामी रामानन्दजी) के विशेष प्रयत्न से इसी भूमि पर मन्दिर का निर्माण हो गया।

सन् १९१२ ई० में नैनीताल की पहली पुत्री पाठशाला आर्यसमाज द्वारा ही स्थापित की गई। पाठशाला के संरक्षक स्व० पं० गोविन्दवल्लभ पन्तजी थे।

नैनीताल का ज्ञानोदय पुस्तकालय भी आर्य समाज द्वारा ही स्थापित किया गया जो नैनीताल नगर का सबसे पहला पुस्तकालय है।

सन् १९४५ ई० में स्व० महात्मा नारायण स्वामीजी एवं ला० ज्ञानचन्द्र ठेकेदार की प्रेरणा से नैनीताल में एक भव्य आर्यमन्दिर की योजना होने लगी और १९४७ ई० में मल्लीताल में एक सुन्दर स्थान में आर्यमन्दिर का निर्माण आरम्भ हो गया। इसकी आधारशिला प्रदेश के मुख्य मन्त्री श्री पं० गोविन्दबल्लभ पन्तजी के कर कमलों द्वारा रक्खी गई और भवन का उद्घाटन उत्तर प्रदेश के दूसरे मुख्य मन्त्री श्री बा० सम्पूर्णानन्दजी ने किया। मन्दिर की लागत एक लक्ष रुपया है। मन्दिर निर्माण में लाला शिवनारायणजी आगरा निवासी का आर्थिक सहयोग सर्वाधिक है जिन्होंने इसके निर्माणार्थ बीस हजार रुपयों का प्रशंसनीय दान दिया। भवन निर्माण के लिये करांची (सिन्ध) के मुसलमानों ने भी दान दिया है।

आर्य समाज नैनीताल ने हैदराबाद सत्याग्रह एवं हिन्दी रक्षा आन्दोलन में विशेष भाग लिया, प्रचुर धन दिया, सत्याग्रही जत्थे भेजे। अकाल भूकम्प आदि

दैवी विपत्तियाँ जब-जब देश पर पड़ीं नैनीताल पूरी-पूरी आर्थिक सहायता करता रहा है। हैदराबाद सत्याग्रह और पंजाब हिन्दी रक्षा आन्दोलन में भी यहाँ से आर्थिक सहायता और जत्थे भेजे गये। इस भव्य आर्य समाज मन्दिर में सन् १९६२ ई० में सभा का बृहदाधिवेशन भी किया गया।

नैनीताल के कर्मयोगी नेता

१. स्वामी रामानन्दजी—(श्री रामप्रसादजी मुख्तार) पुरुषार्थी अनथक कार्य करनेवाले व्यक्ति थे। आपके परिश्रम से ही तल्लीताल में मन्दिर की स्थापना हुई।

२. लाला सोहनलाल—आपको नैनीताल का चलता-फिरता आर्य समाज कहा जाता था निरन्तर प्रचार करने की आपको धुन थी अपने परिवार और व्यवसाय की चिन्ता न कर सर्वस्व आर्य समाज के लिये अर्पित कर दिया। जब नैनीताल आर्य समाज के उत्सव पर प्रतिबन्ध लगाया गया तो आपने तथा पं० कालीचरणजी ने प्रतिबन्ध को तोड़कर उत्सव किया। आपने ही मल्लीताल में मन्दिर निर्माणार्थ स्व० सेठ गोविन्दलाल शाह से भूमि प्राप्त की। आर्य समाज नैनीताल के वर्तमान प्रमुख कार्यकर्ता श्री बाँकेलालजी आपके ही सुपुत्र हैं और उसी लगन से आर्यसमाज के कार्यों में निरन्तर संलग्न रहते हैं। नवीन आर्य समाज मन्दिर भवन बनवाने में अपने तन मन धन से विशेष योग दिया और योजना को सरकार रूप दिया। उनका अधिकांश समय समाज सेवा में ही व्यतीत होता है। श्री शंकरलालजी (प्रियालाल ऐन्ड सन्स आगरा) की निस्वार्थ सेवायें भी इस समाज को प्राप्त रही हैं। समाज के लिये आप सदैव सब प्रकार का सहयोग देते रहते हैं। श्री शिवशंकर वानप्रस्थी इस समाज के प्रशन्सनीय कार्यकर्ता हैं और वृद्धावस्था में भी समाज सेवा में रत हैं। श्री देवीलालजी शर्मा समाज के पुराने कर्मठ कार्यकर्ता हैं।

आर्यसमाज हल्द्वानी—स्थापना तिथि १८९८ ई०।

मन्दिर निर्माण १९०१ ई०।

हल्द्वानी में आर्यसमाज स्थापना के मूलप्रेरक स्व० लाला बिहारीलालजी थे जिन्होंने मुरादाबाद में महर्षि के दर्शन किये और प्रवचन सुने थे। स्वामी रामानन्द ने हरिद्वार कुम्भ पर जाकर महर्षि के दर्शन किये, प्रवचन सुने और इससे उनके जीवन में भारी क्रांति आ गई। इन्हीं रामानन्दजी ने हिन्दुओं, मुसलमानों एवं ईसाइयों के विरोध के बावजूद आर्यसमाज के लिये वर्तमान भूमि उपलब्ध की थी। एक विशाल भव्य आर्यमन्दिर का हल्द्वानी में निर्माण हुआ। मन्दिर की लागत लगभग एक लाख रुपया होगी। हैदराबाद सत्याग्रह के समय जत्थे भेजे,

और हिन्दी रक्षा आन्दोलन में सहयोग प्रदान किया। यहाँ के ८१ व्यक्तियों ने सत्याग्रह में भाग लिया। आन्दोलन में धन भी प्रचुर मात्रा में दिया। श्री बाबू बद्रीप्रसादजी ने समाज के विकास में प्रर्याप्त सहयोग दिया। श्री म० गोविन्दराम जी समाज के वयोवृद्ध कार्यकर्ता हैं। श्री पं० जगन्नाथजी ने इस समाज की विशेष उत्साह और परिश्रम के साथ सेवा की है। श्री श्यामलालजी गुप्त समाज के पुराने कार्यकर्ता हैं। श्री पं० शंकरलालजी शर्मा समाज के उत्साही कार्तकर्ता हैं वर्षों समाज के प्रधान रह चुके हैं। राष्ट्रीय आंन्दोलनों में श्री पं० गोविन्दवल्लभ पन्तजी के साथ आपने विशेष कार्य किया और इस क्षेत्र के राष्ट्रीय जागरण को आर्य समाज ने नेतृत्व प्रदान किया।

समाज की ओर से दयानन्द पुस्तकालय, ग्रीष्मकालीन जलशाला, सार्वजनिक अन्त्येष्टिशाला आदि की सुन्दर व्यवस्था है।

सुन्दर आकर्षक यज्ञशाला में प्रातः सायं नियमित रूप से सन्ध्या हवन कार्यक्रम सम्पन्न होता है। १९६१ से ललित आर्य महिला उच्चतर माध्यमिक विद्यालय आर्यसमाज की ओर से संचालित है।

महर्षि दयानन्द दीक्षा शताब्दी मथुरा समारोह की सफलता में इस समाज का विशेष योगदान रहा। आर्यप्रतिनिधि सभा की अन्तरङ्गत और शताब्दी समारोह समिति की बैठकें अक्टूबर ५८ ई० में इसी समाज में हुईं। सभा प्रधान श्री पं० हरिशंकर शर्माजी को ५०० रुपया शताब्दी समारोह के लिये दिये गये। शताब्दी में यहाँ से बहुत से व्यक्तियों ने भाग लिया। इस समाज के मन्त्री श्री उमेशचन्द्र स्नातक ही दीक्षा शताब्दी समारोह के मन्त्री थे। श्री बाबू विद्यारत्नजी बी० ए० एल० एल० बी० इस समाज के प्राण हैं। उनके संरक्षण में यह समाज कुमायूँ क्षेत्र की आर्य सामाजिक गतिविधियों का केन्द्र बन गया है। उनकी अध्यक्षता में हिन्दी रक्षा आन्दोलन के अवसर पर विशेष सम्मेलन किया गया। इक्कीस सौ रुपये सार्वदेशिक सभा को सहायतार्थ भेजे गये। इस समय वे आर्यप्रतिनिधि सभा के उपप्रधान हैं।

३. **महिला आर्य समाज हल्द्वानी**—श्री माता वेदवती जी फगवाड़ी (पंजाब) की अध्यक्षता में इस समाज की स्थापना २६ जनवरी ५८ ई० को हुई। समाज की प्रमुख कार्यकर्त्री देवियाँ:—श्री सावित्री, श्री सरला, श्री माता सुखदादेवी, श्रीमती शीलादेवी धर्मपत्नी श्री विद्यारत्नजी, श्री यशोदादेवी, श्री कु० इन्दरा

पाठक, श्री मंजिता कुमारीजी आदि हैं। श्रीमती शोभावती मित्तल का इस समाज को निरंतर पथप्रदर्शन मिलता रहता है।

४. आर्य समाज काशीपुर—इस समाज की स्थापना का अंकुर-सर्वप्रथम स्व० वृन्दावनजी मुख्याध्यापक काशीपुर नगरमिडिल स्कूल के हृदय में मुरादाबाद में महर्षि का उपदेश सुनकर उगा। सन् १८८५ ई० में समाज की स्थापना पं० लालमणिजी के स्थान पर की गई। पण्डितजी ने अपना भवन आर्य समाज मन्दिर के रूप में दान कर दिया जिसका मूल्य इस समय तीस हजार रुपया से अधिक है। ६-५-१९१३ ई० को यह समाज सभा से सम्बन्धित हुआ। शुद्धि के क्षेत्र में समाज ने प्रशंसनीय कार्य किया।

काशीपुर में आर्य समाज ने कन्याओं की शिक्षा के लिये एक विद्यालय स्थापित किया और कुछ वर्ष पश्चात् वह विद्यालय सरकार को सौंप दिया गया।

सन् १९४५ ई० में प० लालमणिजी के इच्छापत्र के अनुसार एक और कन्या पाठशाला खोली गई जो इस समय उच्च माध्यमिक विद्यालय के रूप में चल रही है, जिसमें ५०० कन्यायें शिक्षा पाती हैं।

सम्वत् १९१२ वि० में महर्षि दयानन्दजी ने काशीपुर द्रोणसागर पर चार मास वर्षा के व्यतीत किये थे। २९ अक्तूबर १९५४ ई० को आर्य समाज ने वहाँ के लिये दयानन्द बाल मन्दिर की योजना आरम्भ की है।

श्री डा० तनेजा, चिकित्सक, रेलवे इस समाज के प्रमुख कार्यकर्ता हैं।

५. महिला आर्य समाज काशीपुर—पाँच वर्ष हुये काशीपुर स्त्री समाज का पुनर्गठन पूज्या प्रेमदेवीजी के उद्योग से किया गया।

६. आर्य समाज रामगढ़—नैनीताल जिले का रामगढ़ फलोद्यान है। अतः इस उद्यान में आर्यसमाज रूपी कल्पतरु का आरोपण नैसर्गिक था।

सन् १९२० ई० को महात्मा नारायण स्वामीजी का यहाँ शुभागमन हुआ। तल्लारामगढ़ की सुरम्य घाटी में स्वामीजी ने अपनी साधना कुटी बनाने का संकल्प प्रकट किया। कुटिया बनी और स्वामी दर्शनानन्दजी से आपने सन्यास की दीक्षा ली। यहीं स्वामीजी ने साधना, स्वाध्याय एवं लेखन कार्य किया। श्री दीवानसिंह, श्री उदयसिह, श्री हरिसिंहजी, आदि अनेक सज्जन स्वामीजी के सम्पर्क में आये और शनैः शनैः आर्य समाजी बन गये। सन् १९२६ ई० में स्वामीजी महाराज द्वारा यहां के समाज की स्थापना हुई। श्री दीवानसिंहजी मन्त्री बनाये गये जो इस समय समाज के प्रधान हैं और उन्होंने बड़ी लगन से कार्य किया।

७. श्री नारायण स्वामी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय (रामगढ़)—सन् १९३९ ई० में हैदराबाद सत्याग्रह के विजयी सेनानी रामगढ़ पधारे। भुवाला, जो यहाँ से ९ मील है, में स्वागत का आयोजन किया गया और सारे रास्ते जनता उन पर अनवरत पुष्प वर्षा करती हुई रामगढ़ तक आई। स्वामीजी के स्वागत में विराट सभा हुई और स्वामीजी के नाम से एक शिक्षणालय बनाने का निर्णय लिया गया। स्कूल स्थापित हुआ और जनता के आग्रह से स्कूल का उपर्युक्त नाम पड़ा।

सन् १९४५ ई० में आश्रम की रजतजयन्ती मनाई गई। जयन्ती समारोह अद्वितीय था। सन् १९४७ ई० को स्वामीजी का बरेली में देहावसान हो गया। विद्यालय का भार बिड़ला शिक्षा ट्रस्ट को सौंप दिया गया। आर्य समाज की गति मन्द पड़ गई है, उसमें नवीन रक्त के सञ्चार की आवश्यकता है।

८. आर्य समाज जसपुर—यह समाज पुराना है। लगभग ७५ वर्ष से स्थापित है। समाज का निजी भवन है जिसका मूल्य लगभग १५००० रुपया है। मन्दिर का निर्माण स्व० विश्वम्भरसहाय तथा श्री मुत्सद्दीलालजी की विशेष आर्थिक सहायता से हुआ। यहां के प्रमुख कार्यकर्ता श्री रामस्वरूप मनहर, श्री अयोध्या प्रसादजी, श्री नन्दकिशोरीजी, श्री वसुदेव जी जिज्ञासु हैं। हैदराबाद सत्याग्रह में भी समाज ने धन भेजा और श्री सदानन्दजी तथा श्री फतहचन्द्रजी ने सत्याग्रह में भाग लेकर जेलयात्रा की।

९. आर्य समाज ताड़ीखेत—स्थापना तिथि २६-१२-१९५४ ई०।

स्थापना का श्रेय श्री बाँकेलालजी कन्सल, नैनीताल को है। समाज द्वारा निकट के ग्रामों में प्रचार होता है। हिन्दी सत्याग्रह आन्दोलन में भी इस समाज ने भाग लिया। यहाँ से ६ सत्याग्रहियों का जत्था भेजा गया जिसमें समाज के प्रधान श्री धनीरामजी, उपप्रधान श्री जोगरामजी आदि सम्मिलित थे।

ज़िला देहरादून

जिला की प्रमुख आर्य समाज देहरादून की स्थापना २९ अप्रैल सन् १८७९ ई० को महर्षि स्वामी दयानन्दजी महाराज के निज करकमलों द्वारा हुई थी।

देहरादून के श्री कृपाराम नामक सज्जन ने ऋषि को जब यह बतलाया कि देहरादून के एक सम्पन्न घराने के दो नवयुवक बलदेवसिंह और प्रतापसिंह ईसाई बनने वाले हैं और उनके हृदय से हिन्दू धर्म के प्रति उत्पन्न की गई घृणा को दूर

करने में अब तक सब असफल रहे हैं तो स्वामीजी महाराज ने देहरादून जाने का कार्यक्रम बना डाला और जिस समय वह दोनों नवयुवक गिरजाघर बपतिस्मा लेने जा रहे थे कि स्वामी जी महाराज वहां जा पहुँचे। नवयुवकों से कुछ ही क्षण ऋषि बात कर पाये थे कि दोनों चरणों में गिर पड़े और अपनी भूल की क्षमा माँगी।

स्वामीजी के प्रभाव से वहाँ आर्य समाज स्थापित हो गया अनेक गण्यमान्य सज्जन आर्य समाज में सम्मिलित हो गये। यहाँ तक कि दादूपन्थी महन्त स्वामी महानन्द जी भी ऋषि के अनुयायी बन गये और उन्होंने अपनी कुटिया आर्य समाज मन्दिर के लिये समर्पित कर दी। इसी कुटिया के स्थान पर बाद में विशाल आर्य-मन्दिर का निर्माण हुआ जो महानन्द आश्रम के नाम से विख्यात हुआ।

देहरादून में पहली शुद्धि—यहाँ स्वामीजी महाराज ने सर्वप्रथम मुहम्मद उमर नामक मुसल्मान को शुद्धकर आर्य धर्म की दीक्षा दी और उसका नाम अलखधारी रक्खा जिसने जीवन प्रयत्न आर्य जीवन ही व्यतीत किया।

मुख्य कार्यकर्ता—इस समाज के पुराने एवं वर्तमान मुख्य कार्यकर्ता निम्न प्रकार हैं:—

१. पं० कृपारामजी २. श्री केशवरामजी ३. श्री ज्योतिः स्वरूप वकील ४. श्री आर्यकिशोरजी ५. श्री गौरीशंकरजी ६. श्री रामप्रसादजी ७. श्री मेहर दास महन्त ८. प्रि० लक्ष्मणप्रसादजी ९. श्री अमरनाथ वैद्य शास्त्री १०. श्री महेन्द्रप्रताप शास्त्री एम० ए० ११. श्री नारायणदास मुनि १२. श्री चौधरी हुलास वर्माजी १३. श्री चन्द्रमणिजी विद्यालंकार १४. श्री पं० नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ १५. श्री आचार्य वृहस्पतिजी १६. श्री विश्वनाथजी विद्यामार्तण्ड १७. पं० सत्यव्रतजी सिद्धान्तालंकार १८. श्री अलखधारी आदि।

इस समाज का नगर की राजनैतिक शैक्षणिक, साहित्यिक, सामाजिक आदि सभी क्षेत्रों मे प्रमुख स्थान रहा है। समाज के सदस्यों की संख्या ३४० है तथा आर्यसभासद ११६ हैं।

वर्तमान प्रधान श्री जयरामसिंहजी!

मन्त्री श्री धर्मेन्द्रसिंहजी एम० का०, एल० एल० बी०।

आर्य समाज द्वारा संचालित संस्थायें—१. आर्य पुस्तकालय तथा वाचनालय २. आर्य अतिथि शाला ३. श्री श्रद्धानन्द बाल वनिता आश्रम जिसमें ६० के लगभग अनाथ बालक तथा स्त्रियाँ आश्रय पा रही हैं। इस आश्रम की स्थापना श्री स्वामी श्रद्धानन्दजी की प्रेरणा से की गई। आधार शिला महात्मा गान्धी ने रक्खी

तथा इसका उद्घाटन राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन के करकमलों से हुआ। ४. रामप्यारी आर्य कन्या पाठशाला माध्यमिक विद्यालय।

नगर के अन्य प्रमुख आर्य शिक्षणालय—डी० ए० वी० कालेज ट्रस्ट ऐण्ड मैनेजमेन्ट सोसाइटी उत्तर प्रदेश की संरक्षता में जिसकी प्रबन्ध समिति में इस समाज का भी प्रतिनिधित्व है निम्नलिखित संस्थायें देहरादून में सुन्दरतापूर्वक कार्य कर रही हैं।

१. दयानन्द ऐंग्लो वैदिक कालेज देहरादून।
२. डी० ए० वी० इण्टर कालेज देहरादून।
३. दयानन्द बृजेन्द्र स्वरूप कालेज देहरादून।
४. दयानन्द महिला ट्रैनिंग कालेज देहरादून।
५. डी० ए० वी० इण्टर कालेज प्रेमनगर देहरादून।

जिला उपसभा—इस जिले में उपसभा के अतिरिक्त १२ आर्य समाज हैं जिनमें मुख्य मसूरी चुहुड़पुर, राजपुर, डोईवाला, शमशेरगढ़, डोमरी और प्रेमनगर हैं।

उपसभा इन समाजों को उन्नत करने एवं नवीन समाजों को स्थापित करने में प्रयत्नशील है।

आर्य समाज शेरगढ़—स्थापना—सन् १९५६ ई०

संस्थापक श्री मनोहरलालजी एम०ए०, प्रभाकर। श्री जगतसिंहजी श्री चिन्तामणिजी, श्री दयाराम जी आदि उत्साही नवयुवकों ने इस समाज की स्थापना की है।

श्री बालकरामजी आर्य बाल ब्रह्मचारी हैं और श्री हरदयालसिंहजी का सहयोग इस समाज के उत्थान में सराहनीय है। आर्य समाज मन्दिर के लिये भूमि दान में मिल गई है और मन्दिर निर्माण कार्य आरम्भ हो गया है। इसके प्रधान श्री जगतसिंहजी एवं मन्त्री श्री मनोहर लाल एम० ए० हैं।

जिला सहारनपुर

१. आर्य समाज सहारनपुर—सहारनपुर जिले को यह गौरव प्राप्त है कि भारतवर्ष का प्रसिद्ध तीर्थ स्थान हरिद्वार जहां आर्य समाज के प्रमुख-प्रमुख शिक्षा केन्द्र एवं साधना केन्द्र विद्यमान हैं, इसी जिले में हैं।

युग पुरुष महर्षि दयानन्द ने अपने कर कमलों से उत्तर प्रदेश में जो ९ आर्यसमाज स्थापित किये हैं उनमें से दो इसी जिले के अन्दर रुड़की एवं सहारनपुर में विद्यमान हैं। उत्तर प्रदेश के इने गिने आर्य समाज के गढ़ों में सहारनपुर जिले की गणना है। इस जिले में सभा से सम्बन्धित ६२ आर्य समाज हैं। जिले में

३० आर्य समाज ऐसे और हैं जिनका अभी तक सभा से सम्बन्ध स्थापित नहीं हो सका है।

आर्य जगत् के महान् शिक्षा केन्द्र गुरुकुल विश्वविद्यालय (युनिवर्सिटी) कांगड़ी, गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर, आर्य कन्या गुरुकुल, कनखल तथा साधना केन्द्र आर्य विरक्त (वानप्रस्थ सन्यास आश्रम) ज्वालापुर, मोहन आश्रम हरिद्वार, श्री शिव आश्रम हरिद्वार इस जिले के महत्व को बढ़ाने वाले हैं।

जिले के आर्य समाजों को संगठित करने, उन्नत करने एवं नवीन आर्य समाजों की स्थापना करने की दृष्टि से प्रान्त में सर्वप्रथम जिला उपसभा भी इसी सहारनपुर में स्थापित हुई थी। यह जिला इस्लाम एवं ईसाइयत के प्रचार का विशेष केन्द्र है अतः उपसभा की शक्ति इनके वेग को रोकने में अधिकतर लगी है।

जिले के स्वर्गीय प्रमुख कार्यकर्ता श्री चौधरी जगमल सिंह दावनी, श्री भोजराकु सिंह, कुटमलपुर, पं० धर्मदत्त डिगौली, ठा० फूलसिंह जी, श्री फिरोजीलाल श्री ज्वालादत्त सहारनपुर रहे हैं, तथा वर्तमान कार्यकर्ताओं में श्री स्वामी विवेकानन्दजी, श्री कबूलसिंहजी वानप्रस्थी, श्री रतिरामजी मुख्त्यार, श्री कृष्णलालजी वकील, श्री विश्वम्भरदत्त शर्मा सम्पादक, विकास। श्री तेजसिंहजी, श्री वैद्यचन्द्रमणिजी, माता सुखदेवीजी, ठा० हरिश्चन्द्रजी आदि हैं।

जिला सभा के प्रधान श्री तेजसिंह जी तथा मन्त्री वैद्यचन्द्रमणि जी हैं।

जिला सभा की ओर से श्री पं० गेन्दारामजी लगभग ४० वर्ष से प्रचार कार्य कर रहे हैं। इनके अतिरिक्त श्री अभयरामजी, श्री मामचन्द्रजी, श्री राजारामजी पं० रामकौशिक जी आदि भी जिले में प्रचार कार्य कर रहे हैं।

गत दस वर्षों से निरन्तर श्री तेजसिंहजी तथा पं० चन्द्रमणिजी वैद्य जिले के प्रधान एवं मन्त्री रूप में बड़ी संलग्नता से कार्य कर रहे हैं।

सिन्ध सत्यार्थप्रकाश रक्षा आन्दोलन में इस जिले ने तन मन धन से सहायता की। हैदराबाद सत्याग्रह में जिले से ४५० सत्याग्रही भेजे गये। सत्याग्रहियों की संख्या की दृष्टि से यह जिला देश भर में द्वितीय रहा है। जिले से इस सत्याग्रह में सत्याग्रहियों के मार्गव्ययादि के अतिरिक्त २१५०० रु० की सहायता भी भेजी गई है। सत्याग्रह में बलिदान होने वाले २९ हुतात्माओं में ४ इसी जिले के थे यथा:—१. श्री परमानन्दजी हरिद्वार २. श्री मलखानसिंहजी रुड़की ३. श्री बदन सिंहजी मुजफ्फराबाद ४. श्री रामनाथजी गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार।

हिन्दी रक्षा आन्दोलन में तो सहारनपुर सत्याग्रहियों का सार्वदेशिक शिविर रहा है। लगभग २५० सत्याग्रही इस आन्दोलन में भी जिले ने दिये हैं तथा ३०००० रु० से अधिक शिविर संचालन एवं भेटों में दिया गया है। दीक्षा शताब्दी पर जिले ने लगभग २००० रु० दिया है। इस जिले में कन्याओं की शिक्षा के लिये तीन उच्च माध्यमिक विद्यालय निम्न समाजों के अन्तर्गत चल रहे हैं। १. आर्य समाज खालापार २. आर्य समाज रुड़की ३. आर्य समाज गगोह।

सिविल लाइन्स सहारनपुर से एक आर्य कन्या माध्यमिक विद्यालय व बहादराबाद में आर्य हायर सेकेन्डरी स्कूल चल रहे हैं।

सहारनपुर जिले का प्रमुख पुरातन आर्य समाज आ० स० है। यह ही समाज जिले की सर्व प्रगतियों का केन्द्र है। इसके वर्तमान प्रधान श्री राजदेव जी दूबे तथा मन्त्री श्री छोटेलाल जी हैं।

इस आर्य ससाज की आधारशिला महर्षि दयानन्द के कर कमलों द्वारा रक्खी गई है। इसका अपना एक विशाल भवन है। समाज के अन्तर्गत जो आर्य कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय चल रहा है उसके प्रबन्धक श्री वागीश्वर शास्त्री हैं। इस विद्यालय में छात्राओं की संख्या दो सहस्र से ऊपर है।

आर्य समाज हरिद्वार—आर्यों के इतिहास में इस हरिद्वार को वही महत्व प्राप्त है जो बौद्धों के इतिहास में सारनाथ का है। महात्मा बुद्ध ने सर्वप्रथम धर्मचक्र प्रवर्तन सारनाथ में किया तो महर्षि दयानन्द ने सं० १९२३ वि० में कुम्भ के अवसर पर हरिद्वार पधारकर और मेले में सप्तसरोवर के निकट पाखण्ड खण्डिनी पताका उत्तोलित करके अवैदिक मत का खण्डन एवं वैदिक मत मंडन का कार्य आरम्भ किया।

हरिद्वार में एक सुदृढ़ आर्य समाज एवं विशाल आर्य मन्दिर का न होना आर्य जगत् को निरन्तर खटकता रहा है। वैसे तो सन् १९०१ ई० में ही यहां कनखल में आर्यसमाज स्थापित हो गया था और नियमपूर्वक साप्ताहिक अधिवेशन होने आरम्भ हो गये थे किन्तु कुछ काल बाद कार्य शिथिल हो गया।

सन् १९१२ ई० में पुनः निर्वाचन कर समाज का काम चालू किया गया। श्री डा० पूर्णप्रसाद जी प्रधान एवं श्री वेणीप्रसादजी जिज्ञासु मन्त्री निर्वाचित हुये किन्तु कटारपुर काण्ड में इस समाज के प्रधान डा० पूर्णप्रसादजी तथा उनके अन्य तीन साथियों को फांसी की सजा दी गई। इसके उपरान्त दीर्घकाल

तक समाज का कार्य बन्द रहा। सन् १९३५ में पुनः कार्य चालू हो गया। दिसम्बर १९५५ ई० में श्री त्रिलोकचन्दजी के मकान पर हरिद्वार में आर्य समाज स्थापित करने का निश्चय हुआ और कनखल समाज को इसमें मिलाकर चुनाव किया गया। साधारण रूप में ७ वर्ष तक कार्य चलते रहने के उपरान्त सन् १९६२ में समाज के प्रधान स्वामी शिवानन्दजी तथा मन्त्री वेणीप्रसाद जिज्ञासु चुने गये। रामलीला के मैदान में समाज का वार्षिकोत्सव किया गया। आर्य समाज मन्दिर के लिये गंगा किनारे की भूमि क्रय कर ली गई है और शीघ्र आर्यों के इस सारनाथ में विशाल आर्य मन्दिर का निर्माण होगा।

३. आर्य समाज रुड़की—रुड़की में दयानन्दजी ने २० अगस्त १८७८ ई० को अपने कर कमलों से समाज की स्थापना की। रुड़की निवासी एवं मास्टर शंकरलालजी एवं पं० उमरावसिंहजी को ऋषि के सम्पर्क में आने का सौभाग्य प्राप्त है।

शनैः शनैः रुड़की में आर्य समाज का कार्य अनेक क्षेत्रों में विस्तृत हो गया। एक विशाल मन्दिर बनवाया गया जिसका आनुमानिक मूल्य एक लक्ष रुपया है। आर्य कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय भी इस आर्य समाज की संस्था है। इस विद्यालय का भवन एक लाख के मूल्य से प्रथक बनवाया गया है। समाज के मुख्य कार्यकर्ताओं में मा० शंकरलालजी पं० उमरावसिंहजी ला० दुर्गाप्रसादजी रामचन्द्रजी व श्री ज्ञानचन्द्रजी के नाम उल्लेखनीय हैं।

वर्तमान प्रधान—श्री ईश्वरदयालुजी एम० ए० एल० टी० प्रधानाचार्य
कन्हैयालाल डी० ए० वी० कालेज हैं।

वर्तमान मन्त्री—श्री चन्द्रकिरण आयुर्वेदालंकार हैं।

४. आर्य समाज देवबन्द—स्थापना तिथि—सन १९०० ई०

संस्थापक—श्री कृष्णसेवकलाल मुन्सिफ।

इस आर्यसमाज का जीवन एक संघर्ष का जीवन रहा है। अनेक उतार चढ़ाव आते रहे हैं। स्व० हरपतरायजी ने अपनी सब सम्पत्ति धर्मप्रचार एवं शिक्षा के निमित्त प्रदान की थी, किन्तु उसका प्रमुख अंश समाज के हाथ से निकल गया। सन् १९३० ई० में श्री पं० गोवर्धन दास एवं डा० सियाराम के उद्योग से देवी कुन्ड के मेले में प्रचार की विशेष योजना की गई। मुस्लिम बाहुल्य होने से अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ा। तीन शास्त्रार्थ—महारथियों पं० रामचन्द्र देहलवी, पं० कालीचरण मौलवी फाजिल, एवं पं० शान्तिस्वरूप (मौलाना

मुहम्मदअली कुरैशी) ने डटकर शास्त्रार्थ किये। दारूल उलूम के अध्यापक मौलवी इदरत हुसैन की शुद्धि की गई। इसी प्रकार अन्य अनेक शुद्धियां की गईं। दलितोद्धार का कार्य भी पर्याप्त किया गया। दो पाठशालायें कन्याओं एवं दलितवर्ग के बालक बालिकाओं के लिये खोली गईं जो संप्रति नगरपालिका के संरक्षण में चल रही हैं। हैदराबाद सत्याग्रह में तन-मन-धन से सहायता की गई। समाज के प्रमुख कार्यकर्ताओं में श्री मा० जनार्दनसहायजी श्री पं० देवदत्त शर्मा, डा० सियारामजी श्री विश्वम्भरदेवजी (वर्तमान मन्त्री) के नाम उल्लेखनीय है।

५. आर्य समाज खलासी लाइन्स सहारनपुर—स्थापना तिथि सन् १९५३ ई०।

प्रमुख कार्यकर्ता श्री गगारामजी, हकीम जयसिंहजी, श्री छेदालालजी, श्री करमसिंहजी, श्री हरीप्रसादजी, बरकतरामजी, मूलराजजी, श्री जयसिंहजी, श्री राजारामजी आदि।

वसन्तपञ्चमी सम्वत् २०१० वि० में समाज का शिलान्यास श्री शारदानन्दजी महाराज रोहालगी किशनपुर जि० सहारनपुर के कर कमलों द्वारा किया गया। इस समय तक भवन निर्माण में २०००० रु० के लगभग व्यय हो चुका है। पारिवारिक सत्संगों के अतिरिक्त साप्ताहिक एवं दैनिक सत्संगों की सुन्दर व्यवस्था है।

सन् १९६२ ई० में यहां स्त्री-समाज की भी स्थापना हो गई है। हैदराबाद सत्याग्रह एवं हिन्दी रक्षा आन्दोलन में तन एवं धन से सहायता की गई। समाज के पुरोहित श्री राजारामजी ने चन्डीगढ़ जाकर सत्याग्रह किया।

६. आर्य समाज जनक नगर—समाज की स्थापना जून १९५३ में की गई।

प्रधान—श्री निहालचन्द्रजी।

मन्त्री—श्री राजेन्द्रप्रसादजी।

सन् १९५७ से प्रारम्भिक कन्या पाठशाला चालू की गई। हिन्दी रक्षा आन्दोलन में यथाशक्ति सहयोग दिया। धन के अतिरिक्त ५ सज्जन सत्याग्रह में भी गये।

७. आर्य समाज नगली खटौली—स्थापना तिथि—४ जून, १९०४ ई०।

संस्थापक—चौ० झण्डूदत्त एवं मास्टर कुन्दनसिंहजी।

इस समाज ने अनेक मुसलमानों को शुद्ध किया। विधवा-विवाह कराये तथा शास्त्रार्थ कराये।

८. आर्य समाज रोहालकी किशनपुर—स्थापना—तिथि १-४-१९२४ ई०

संस्थापक—चौ० लेखासिंह चौहान ।

आर्य समाज मन्दिर के लिये भूमि दान में मिल गई है । चार दीवारी बनकर तैयार हो गई है । हैदराबाद सत्याग्रह में समाज के कई सदस्यों ने भाग लिया । हिन्दी रक्षा आन्दोलन में भी भाग लिया । वार्षिकोत्सव प्रतिवर्ष होता है । वर्तमान प्रधान श्री गिरवरसिंहजी एवं मन्त्री श्री कृपारामजी हैं ।

९. आर्य समाज गंगोह—स्थापना तिथि १२ फरवरी सन् १८८५ ई०

संस्थापक—अमर हुतात्मा पं० लेखरामजी आर्यपथिक ।

यह आर्य समाज प्रान्त के प्रारम्भिक युग में ही स्थापित हो गया था । समाज ने दलितोद्धार, शुद्धि, विधवा-विवाह, शास्त्रार्थ आदि में पर्याप्त भाग लिया है । सन् १९३५ ई० में समाज का स्वर्ण जयन्ती महोत्सव मनाया गया । समाज के सदस्यों ने देश के स्वाधीनता आन्दोलनों में विशेष कार्य किया है । हैदराबाद सत्याग्रह में यहाँ से जत्था भेजा गया । सन् १९१४ ई० से समाज के आधीन एक कन्या पाठशाला चल रही है जिसने अब उच्च माध्यमिक विद्यालय का रूप धारण कर लिया है । सम्प्रति समाज की सम्पत्ति लगभग एक लक्ष रुपया है ।

वर्तमान अधिकारी—श्री मीरीलालजी प्रधान, श्री देवीदत्तजी आर्य मन्त्री एवं श्री विश्वेश्वरदयालुजी कोषाध्यक्ष हैं ।

१०. आर्य समाज औरंगाबाद पो० गढ़ीमीरपुर—स्थापना तिथि २३ मार्च १९४७ ई० ।

संस्थापकवर्ग—श्री रोडूसिंह, श्री बलवन्त सिंह, श्री मुकुटसिंह एवं श्री वेणी प्रसाद जिज्ञासु ।

वार्षिकोत्सव उत्साहपूर्वक प्रतिवर्ष किया जाता है । सदस्यसंख्या ५० है । उत्सव पर यज्ञोपवीत धारण कराये जाते हैं विशेष कार्यकर्ताओं में मास्टर उदयसिंहजी, श्री महेन्द्रसिंहजी, श्री मोहब्बतसिंहजी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं ।

११. आर्य समाज मुजफ्फराबाद—समाज की स्थापना सन् १९२८ ई० में की गई ।

संस्थापक वर्ग में श्री पं० जयन्तीप्रसादजी का नाम उल्लेखनीय है । प्रमुख कार्यकर्ताओं में श्री ठा० रणसिंहजी श्री मुत्सद्दीलालजी, ठा० भवानीसिंहजी, म० दौलतरामजी, म० तेलूरामजी, मुन्शी मुकन्दलालजी, चौ० मल्हारसिंहजी, लाला बल्देवप्रसाद, बा० अनूपसिंहजी, ठा० नैनसिंहजी, सेठ दुलीचन्द आदि हैं ।

समाज द्वारा निकट के लगभग २० ग्रामों में प्रचार कार्य किया जाता है। सन् १९३० ई० में पं० धर्मभिक्षु शास्त्रार्थ महारथी का बाबा खलीलदास चतुर्वेदी से शास्त्रार्थ हुआ। ठा० नवलसिंहजी आर्य भजनोपदेशक जो स्वामी दयानन्दजी से विशेष प्रभावित हुये थे निरन्तर इस क्षेत्र में प्रचार का कार्य करते रहे हैं। इन्होंने उत्तर भारत में दूर दूर तक प्रचार कार्य किया है। अनेक भजन पुस्तकें भी प्रकाशित की थीं।

यह समाज प्रचार कार्य में विशेष अग्रगण्य है। निकट के ग्रामों में कई आर्य-समाजों की स्थापना भी इसने की है।

आर्यवीरदल की भी यहाँ स्थापना की गई जो कई वर्ष तक कार्य करता रहा। शुद्धि-पुनर्विवाह के क्षेत्र में भी समाज का प्रशन्सनीय भाग रहा है। संस्कारों का भी विशेष क्रियात्मक प्रचार किया गया है। हैदराबाद सत्याग्रह में यहाँ से २९ सत्याग्रहियों का एक बड़ा जत्था भेजा गया था। हैदराबाद के शहीदों में यहाँ के दिवंगत नवयुवक बदनसिंह का नाम आर्य समाज के इतिहास में सदा स्मरणीय रहेगा।

हिन्दी रक्षा आन्दोलन में भी यहाँ के बन्धुओं ने विशेष धनादि से सहयोग दिया। ठा० रणसिंहजी ने सत्याग्रही जत्थों में भाग लेकर दो बार सत्याग्रह किया। समाज की ओर से बालकों की शिक्षा के लिये एक हाई स्कूल स्थापित किया हुआ है।

१२. आर्य स्त्रीसमाज रुड़की—स्थापना तिथि—सन् १९२४ ई०।

संस्थापिका—श्री मती शन्नोदेवीजी

वर्तमान अधिकारिणी—प्रधाना श्रीमती माता सुखदेवीजी तथा मन्त्रिणी श्रीमती विद्यावतीजी पुत्रवधू स्व० ला० मथुरादास आर्य हैं। इस समाज ने सभा की हीरक जयन्ती के निमित्त १००० रु० प्रदान किया है।

१३. आर्य समाज फेराहेड़ी—स्थापना तिथि—१.६.१९२० ई०।

निम्न सज्जनों के विशेष उद्योग से यह समाज स्थापित हुआ है—श्री पृथ्वी सिंहजी, श्री अभयरामजी, श्री बलदेवसिंहजी, श्री मगंतसिंहजी, श्री गेन्दारामजी, श्री धनसिंहजी, श्री अचपलसिंह, श्री बेनीरामजी, श्री हुकुमसिंहजी, श्री परमानन्दजी तथा श्री पतरामसिंहजी आदि।

२१-१०-१९२३ में श्री दुलीचन्द्र छज्जूसिंहजी ने जमीन दान दी और समाज

ने २५०० रु० की लागत का मन्दिर निर्माण कराया। मुसलमानों की शुद्धियाँ कीं। सैकड़ों संस्कार कराये और एक बाग लगाया है।

१४. आर्य समाज बहादराबाद—स्थापना तिथि ११-१०-१९१८ ई०।

संस्थापक श्री पं० रामलाल शर्मा एवं प्रेरक श्री ला० भागीरथलाल रुड़की। इस समाज द्वारा निकट के औरंगाबाद, रूहालकी, अलिपुर आदि ग्रामों में आर्य-समाजों की स्थापना की गई। वार्षिकोत्सव प्रतिवर्ष बसन्त पर होता है। ईसाई मुसलमानों से अनेक शास्त्रार्थ कराये।

२३ नवम्बर १९३० ई० को प्रातःकाल ओ० जी० कैप्टिन गफ ने ५०० सैनिकों से समाज मन्दिर पर आक्रमण किया। ओम् ध्वज उतारा तथा वेदशास्त्रों को फूँक दिया। पं० रामलाल शर्मा पुरोहित को रस्सी से बाँधकर बेतों से मार लगाई। आँखों में चूना भरकर नहर में डुबकी दिलवाई और उनको अधमराकर फौज वहाँ से चली गई। सभा प्रधान ठाकुर मशालसिंहजी एवं मन्त्री पं० रास बिहारी तिवारी ने इस दिशा में यथोचित पग उठाया। सार्वदेशिक सभा की ओर से देश में बहादराबाद दिवस मनाया गया और गोरी फौज के इस व्यवहार की भर्त्सना की गई। अन्त में अंग्रेज सरकार को झुकना पड़ा। ३१ अगस्त १९३१ को नैनीताल में गवर्नर एवं सार्वदेशिक सभा व प्रान्तीय सभा के बीच समझौता हुआ। पूज्य नारायण स्वामीजी प्रधान सार्वदेशिक सभा को सरकार द्वारा खादी का ओम्-ध्वज प्रादन किया गया और कैप्टिन गफ ने स्वामीजी तथा पं० रामलालजी से लिखित क्षमा याचना की तथा २०० रु० हर्जाना दिया। अक्तूबर १९३१ में स्वामीजी की अध्यक्षता में बहादराबाद में विराट् उत्सव किया गया और ध्वज फहराया गया। यहाँ एक आर्य विद्यालय भी चल रहा है तथा आर्यकुमार सभा भी स्थापित है।

१५. आर्य समाज सुन्दरपुर—स्थापना तिथि २९ अगस्त १९४८ ई०।

आर्य मन्दिर के लिये भूमि प्राप्त हो चुकी है।

वर्तमान अधिकारी–लाला मुरलीलालजी प्रधान।

श्री श्रीचन्द्र गौड़, मन्त्री।

१६. आर्यसमाज नकुड़—स्थापना तिथि जौलाई १९२९ ई०

स्थापना में विशेष सहयोग श्री सूरजभान जैन वकील का था। समाज ने अपना सुन्दर मन्दिर लगभग १०००० रु० की लागत का निर्माण कर लिया है। नकुड़ निवासी श्रीमती सोना देवी ने अपनी सम्पत्ति समाज को प्रदान की और

समाज की ओर से उनकी मृत्यु पर्यन्त सेवा शुश्रूषा की गई। इस समाज के प्रयत्न से तहसील के अनेक स्थानों पर आर्य-समाज स्थापित किये गये। मुसलमानों द्वारा अपहृत अनेक देवियों को उनके पंजे से निकालकर उनके अभिभावकों के पास पहुँचाया गया। कुछ मुसलमानों की शुद्धियाँ भी की गईं।

वर्तमान अधिकारी—श्री शादीरामजी प्रधान, श्री मंगतरामजी मन्त्री हैं।

१७. आर्य समाज भगवानपुर—स्थापना तिथि सन् १९११ ई०।

स्थापना का श्रेय श्री ला० कुसम्भरदास एवं महाशय मूलचन्द धीमान को हैं। श्री मूलचन्दजी ने अपना निज का मकान प्रथम वार्षिकोत्सव के अवसर पर समाज को दान दिया। शुद्धि, अनाथ-रक्षा आदि के कार्यों में भी समाज भाग लेता आया है। लगभग ७००० रु० की लागत का इसका मन्दिर है। समाज के उत्साही कार्यकर्ता श्री पं० प्यारेलाल वैद्य निःस्वार्थभाव से जनता की सेवा में संलग्न रहते हैं। इन्होंने अपने सोने के सब आभूषण बेचकर आर्य समाज मन्दिर को पूरा करने में लगा दिया है।

वर्तमान अधिकारी—श्री ज्योतिः प्रसाद प्रधान।

पं० चन्द्रदेव वैद्यकोषाध्यक्ष

विशिष्ट कार्यकर्ता श्री रामदयालु जी अग्निहोत्री एवं श्री हरप्रसादजी।

१८. आर्य समाज मियांनगी—स्थापना सन् १९३० ई० में हुई।

मुख्य कार्यकर्ता श्रीरतिराम, श्रीरामस्वरूप, श्रीलज्जाराम तथा श्रीलालसिंहजी।

१९. आर्यसमाज मिर्जापुर—स्थापना सन् १९१८ ई०

दलितोद्धार मांसभक्षण निषेध आदि में विशेष कार्य किया।

आर्य समाज के प्रयत्न से यहाँ एक कन्या पाठशाला तथा एक इन्टर कालेज चल रहे हैं। यहाँ से श्री अभयदेव धीमान, छोटासिंह, श्री जयसिंह ने हिन्दी सत्याग्रह में भाग लिया। विशिष्ट कार्यकर्ता श्री रघुवीरसिंह, तिलकरामजी रहे हैं।

२०. आर्य समाज माण्डे बान्स—स्थापना तिथि ८ मई १९२९ ई०।

मन्दिर के लिये भूमि श्री चोहलसिंह से दान में प्राप्त हो चुकी है।

समाज के मन्त्री श्री वैद्य बनवारीलाल हैं।

२१. आर्य समाज औरंगाबाद पो० शेरपुर—स्थापना तिथि १२ अक्टूबर सन् १९२७ ई०।

संस्थापक श्री मुकन्दलालजी।

विशेष सहायक मा० बुलीराम व श्री रामानन्दजी।

समाज के लिये मा० मुकन्दलाल ने अपना मकान लागत ५०० रु० दान कर दिया है।

हैदराबाद सत्याग्रह में यहाँ के आर्यवीर श्री भरतसिंहजी महात्मा सुमेरसिंहजी के जत्थे में गये। हिन्दी सत्याग्रह में श्री फूलसिंहजी अपनी कन्या बालादेवी व पुत्र जगदीश प्रसाद को साथ लेकर गये और पंजाब की जेल को सुशोभित किया। यवनों के साथ अनेक शास्त्रार्थों का आयोजन किया गया।

२२. **आर्य समाज निज़ामपुर**—स्थापना तिथि—२२ मार्च १९४६ ई०।

संस्थापक—श्री वेणीप्रसाद जिज्ञासु हरिद्वार, श्री कबूलसिंह वानप्रस्थी नसीरपुर।

शुद्धि अछूतोद्धार का कार्य किया। एक प्राथमिक कन्या पाठशाला समाज चला रहा है। समाज का अपना एक पुस्तकालय भी है।

वर्तमान अधिकारी—श्री धीरसिंह प्रधान, श्री सेवाराम मन्त्री।

समाज के चार सदस्यों ने हिन्दी सत्याग्रह में भाग लिया उनके नाम हैं—श्री कबूलसिंहजी, श्री कबूलसिंह वानप्रस्थी, श्री भरतसिंहजी तथा श्री यादरामजी।

२३. **आर्य समाज खुब्बनपुर**—यह समाज ४ अप्रैल १९४४ ई० को स्थापित हुआ। हिन्दी रक्षा आन्दोलन में समाज के कई सदस्यों ने भाग लिया। साप्ताहिक सत्संग और वार्षिकोत्सव होते रहते हैं। श्री पं० हरिश्चन्द्रजी शास्त्री के सहयोग से समाज को बड़ा बल मिलता है।

२४. **आर्य समाज मलसवागाज**—यह आर्य समाज श्री ठाकुर हरिश्चन्द्रजी के उद्योग से दि० २-५-१९४४ ई० को स्थापित किया गया। संस्थापक ब्र० सुखदेवजी, वा० रतिरामजी व हरिश्चन्द्रजी। समाज प्रगतिशील है।

२५. **आर्य समाज पान्थशाला जौरासी**—जौरासी ग्राम में माता सुखदेवीजी अपने पति श्री ठा० ताराचन्दजी की स्मृति में ३००० रु० की लागत से एक आर्य अतिथि भवन निर्माण करवा रही हैं। भवन के साथ ६० बीघा कृषि-भूमि भी है।

२६. **आर्य समाज अम्बहटा**—इस समाज की स्थापना ६ मई १९०२ को हुई। पं० गणपति रायजी रईस ने दो हजार रुपये दान देकर आर्य समाज भवन निर्माण कार्य प्रारम्भ कराया। ला० मंगलसेनजी ने कूप निर्माण कराया। अन्य अनेक दानियों ने भी दान दिया जिससे समाज मन्दिर का निर्माण हुआ। इस समय समाज मन्दिर की लागत २५००० रु० के लगभग है। स्वर्गीय पं० मूलराजजी अपना एक मकान, धन तथा पुस्तक भण्डार आर्य समाज को दान दे गये। उनके इस मकान में आर्य कन्या पाठशाला कई वर्षों तक चलती रही। स्वर्गीय ला०

देवीचन्दजी ने समाज मन्दिर के दो कमरे बनवाये। समाज का मुख्य द्वार ला० हरपतरायजो ने अपनो धर्मपत्नो की याद में निर्मित कराया। श्री देवेन्द्रकुमारजी ने कन्या पाठशाला भवन के लिये एक सहस्त्र रुपया दान दिया। समाज का ओर से कई शास्त्रार्थ हुये।

जिला मुजफ्फरनगर

इस जिला को भी यह सौभाग्य प्राप्त है कि युग प्रवर्तक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी ने अपने पावन प्रवचनों द्वारा इसके दो स्थान मुजफ्फरनगर एवं मीरापुर को पवित्र किया। देश की स्वाधीनता संग्राम में इस जिले के आर्य पुरुषों ने प्रशंसनीय वलिदान दिया है।

इस जिला में सभा से सम्बन्धित आर्य समाजों की संख्या ४३ है। जिला के अन्दर आर्य सिद्धान्तों का प्रचार एवं नवीन आर्य समाजों की स्थापना करने की दृष्टि से जिला उपसभा भी लगभग ५० वर्षों से स्थापित है। इस सभा ने जिला प्रचार का कार्य बड़ी संलग्नता से किया है। इसके पुराने प्रचारकों में पं० हरिदत्त शर्मा उपदेशक एवं पण्डित शेरसिंह कश्यप के नाम उल्लेखनीय हैं। जिला में निम्न सज्जनों ने इस दिशा में प्रशंसनीय कार्य किया है:—

स्व० राव बहादुर चौधरी मामराजसिंहजी शामली, लाला सुन्दरलालजी थाना भवन, लाला प्यारेलाल कैराना, सेठ कुन्दनलाल बुढ़ाना, मा० मंगतसिंहजी मु० नगर तथा स्व० पं० खूबचन्दजी कुड़ाना। इनके प्रयास से जिला में अनेक आर्य समाजों की स्थापना हुई। इस समय जिला में विशेष रूप से प्रचार कार्य में संलग्न रहने वालों में श्री वीरेन्द्रवीर धनुर्धर, सम्हालकी शामलो का नाम उल्लेखनीय है। पं० शेरसिंह कश्यप सम्प्रति जिला उपसभा के अध्यक्ष हैं।

आर्य समाज शहर—इसकी स्थापना सन् १८८५ ई० में हुई। प्रारम्भिक कार्यकर्ताओं में माननीय मास्टर विहारीलालजी (प्रथम मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तरप्रदेश) का नाम विशेप रूप से उल्लेखनीय है। मास्टरजी मेरठ नगर में महर्षि के प्रवचन सुनकर आर्य समाजी बने और महर्षि से प्रेरणा लेकर आपने अपनी जन्मभूमि में इस आर्य समाज की स्थापना की। आर्य मन्दिर का निर्माण सन १९०५ ई० में ६ बीघा पक्की भूमि, क्रय करके किया गया। भूमि क्रय करने में चौ० चतुरसिंहजी का नाम उल्लेखनीय है तथा मन्दिर निर्माण में ला० खैरातीलाल, चौ० दिलीप सिंह, श्री गुरुदत्तामल स्टेशन मास्टर के नाम उल्लेखनीय हैं।

इस समाज ने शुद्धि अछूतोद्धार एवं सामाजिक सुधार सम्बन्धी सब कार्यों में प्रमुख भाग लिया है। पं० शेरसिंह, पं० बूटाराम आदि ने स्वाधीनता आन्दोलनों में प्रशंसनीय कार्य किया और कारागार की यातनायें सहन की हैं। हैदराबाद सत्याग्रह में समाज से कितने ही सत्याग्रही गये जिनमें पं० काशीरामजी का नाम विशेष उल्लेखनीय है। हिन्दी रक्षा आन्दोलन में पं० शेरसिहजी ३२ सत्याग्रहियों का जत्था लेकर गये थे। जत्थे में श्री सावित्री देवी तथा श्री सीताराम के नाम विशेप उल्लेखनीय हैं।

आर्य समाज का अपना विशाल भवन है। इसके साथ ही लगा हुआ अपना डी० ए० वी० कालेज है जिसका अपना प्रथक भवन लाखों रुपयों की लागत से निर्मित हुआ है। यह कालेज आरम्भ में एक साधारण सी पाठशाला के रूप में स्थापित किया गया था जो बढ़ते-बढ़ते अब डी० ए० वी० डिग्री कालेज के रूप में विकसित हो गया है। इस कालेज का सचालन आर्य विद्यासभा के द्वारा होता है जिसमें आर्यसमाज का प्रतिनिधित्व रहता है। कालेज में विद्यार्थियों की संख्या २००० से ऊपर है। श्री शीतलप्रसादजी एम० ए० इसके वर्तमान प्रधानाचार्य हैं।

समाज के अन्तर्गत एक आर्य कन्या विद्यालय भी सन् १९०५ ई० से स्थापित है। जो अब कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के रूप में परिणित हो गया है। इसमें सम्प्रति ८७५ छात्रायें शिक्षा ग्रहण कर रही हैं। श्रीमती राजकली देवी इसकी पूर्व प्रधानाचार्या रही हैं जिनके अनथक परिश्रम से इस शिक्षणालय का विशेष विकास हुआ। श्री किशोरीलालजी का भी इस विकास के करने में नाम उल्लेखनीय है। इसके वर्तमान प्रधान पं० शेरसिहजी हैं तथा प्रबन्धक श्री मुरारीलालजी धीमान हैं। इस विद्यालय का संचालन शहर समाज की अन्तरंग सभा स्वयं करती है। समाज के साथ एक स्त्री आर्य समाज भी लगभग १० वर्षों से कार्य कर रहा है। इस समाज ने महिलाओं में जाग्रति उत्पन्न करने की दिशा में प्रशन्सनीय काम किया है।

आर्य समाज नईमन्डी—समाज की स्थापना सन् १९२८ में की गई। संस्थापकों में विशेष श्रेय : श्री म० अमीरसिहजी, श्री ला० बस्तीरामजी, ला० रामचन्द खत्री, सेठ कुन्दनलाल एवं स्व० ला० हृदयरामजी को है जिन्होंने विशाल भवन बनाने में पुष्कल धन लगाया। ९-१०-२९ में यह समाज सभा में प्रविष्ट हुआ। समाज में १२ वर्ष से नित्य यज्ञ सत्संग करने का कार्यक्रम चलता है। होली पर

विशाल पैमाने पर पाञ्चजन्य यज्ञ किया जाता है ।

समाज के अपने पुस्तकालय, वाचनालय हैं । समय समय पर जनता में ट्रैक्ट वितरण एवं निर्धनों को विना मूल्य औषधि वितरण भी किया जाता है । समाज के अन्तर्गत एक उच्चतर माध्यमिक वैदिक पुत्री पाठशाला है जिसमें ७५० कन्यायें शिक्षा पा रही हैं । इसका संचालन आर्य विद्यासभा द्वारा होता है । इस शिक्षालय के निर्माण में स्व० पं० बूटारामजी का प्रयत्न विशेष प्रसन्शनीय हैं । हैदराबाद सत्याग्रह में समाज ने प्रसन्शनीय भाग लिया । सहस्रों रुपया मण्डी से एकत्रित करके भेजा । कई सत्याग्रही जत्थे भी भेजे मुजफ्फरनगर से स्वामी कल्याणानन्दजी सत्याग्रही ने निज़ाम की गुलवर्गा जेल में अपने प्राण त्यागे और अमर पद प्राप्त किया । समाज के सदस्य लाला बनारसी दास आदि ने जेल की यातनायें सहीं । हिन्दी सत्याग्रह में भी विशेष सहयोग धन जन से किया । समाज के प्रमुख प्रशंसनीय कार्यकर्ता:—

१. स्व० पं० बूटारामजी अनथक सेवाव्रती, प्लेग, हैजा, इन्फल्यूएन्जा आदि महामारियों में सेवा की । मण्डी आर्यभवन, वैदिक पुत्री पाठशाला, आर्य धर्मशाला एवं खैराती शफाखाना आपके उद्योग के फल हैं । ८३ वर्ष की आयु में वानप्रस्थी बने और ९० वर्ष की आयु में वानप्रस्थाश्रम में शरीर त्यागा ।

२. ला० बस्तीरामजी, दानी पुरुष थे पुष्कल धन मन्दिर निर्माण एवं समाज के कार्यों में लगाया ।

३. महाशय मीरीमलजी नियम से अग्निहोत्र करना आपके जीवन का व्रत था । निर्भीक कर्यकर्ता थे । आपकी पत्नी ने स्वराज्य आन्दोलन में कार्य कर जेल यातना सहीं ।

४. मुन्शी अमीरसिंह जी, आपने समाज की संस्थाओं में ५०००० रु० से ऊपर दान दिया ।

५. लाला काशीरामजी विशेष धार्मिक जीवन वाले ईश्वर भक्त थे, सुवक्ता थे ।

६. ला० कल्लूमलजी पक्के आर्य एवं कर्मठ कार्यकर्ता हैं ।

७. इसी प्रकार श्री चेतरामजी चौ० घासीरामजी, ला० विश्वम्भरसहायजी, ला० सलेकचन्द पं० शेरसिंह कश्यप व पं० भगवतीप्रसादजी के भी नाम उल्लेखनीय हैं ।

आर्य स्त्री समाज नई मण्डी मुजफ्फरनगर—स्थापना तिथि—फरवरी १९३० ई० ।

नई मण्डी आर्य समाज के विशाल भवन में ही इसका साप्ताहिक अधिवेशन रविवार को मध्यान्ह में होता है। समाज की प्रमुख कार्यकर्त्री देवियाँ निम्न प्रकार हैं।

१. श्रीमती राजरानी देवी एम० ए०।

२. श्रीमती भगवती देवी जो कुछ समय तक कन्या गुरुकुल सासनी हाथरस की मुख्याधिष्ठात्री रही हैं।

३. श्रीमती दयावती जी प्रधाना।

४. सुशीलादेवी मन्त्रिणी।

५. शब्द प्यारी उप प्रधाना।

६. सावित्री गुप्त, उप मन्त्रिणी।

७. सरस्वती देवी कोषाध्यक्ष।

८. सूर्यकुमारीजी पुस्तकाध्यक्ष।

९. चारू शीलाजी धर्म पत्नी श्री शीतल प्रसाद एम० ए० प्रधानाचार्य।

१०. कृष्णादेवीजी धर्मपत्नी श्री द्वारिकाप्रसाद वकील आदि।

आर्य समाज खतौली—स्थापना ३ सितम्बर सन १९१२ ई०।

समाज ने अपने प्रारम्भिक युग में पौराणिक हिन्दुओं के भयंकर विरोध का सामना किया। अन्धविश्वास, अस्पृश्यता, विरादरीबाद, संप्रदायवाद को नष्ट करने का भरसक प्रयत्न किया। महाशय मामराज सिंह, ला० सालिगराम, ला० हीरालाल, मु० निहालसिंह, बा० दीवानचन्द पोस्टमास्टर, लाला धूमसिंह आदि के विशेष परिश्रम से १९२९ ई० में मन्दिर का निर्माण हुआ।

३०-४-१९६१ ई० में नवीन भवन का शिलान्यास माननीय अनन्तशयनम् आयंगर भूतपूर्व अध्यक्ष लोकसभा के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। इस मन्दिर की मूल में सौभाग्यवती वेदवती धर्मपत्नी लाला मुकन्दलालजी मेरठवाले का वह ५००० रू० के मूल्य की भूमि का दान है जिस पर मन्दिर का निर्माण हो रहा है।

श्री महाशय मामराजजी इस समाज के अत्यन्त उत्साही ऋषि के अनन्य भक्त कमंठ कार्यकर्ता रहे हैं। आपके उद्योग से एक बृहद् पुस्तकालय का निर्माण हुआ जिसमें भारी संख्या में आर्य ग्रन्थों का संग्रह है। महाशयजी ने ऋषि के हस्त-लिखित सैकड़ों पत्रों का संग्रह देश में घूमघूम कर किया जो पं० भगवद्दत्तजी

बी० ए० रिसर्चस्कालर द्वारा प्रकाशित "ऋषि दयानन्द के पत्र" नामक ग्रन्थ में उद्धृत हैं।

जव शास्त्रार्थ का युग था तो इस समाज ने अनेक शास्त्रार्थ विभिन्न मतावलम्बियों के साथ कराये इनमें १९३३ ई० का जैनियों के साथ किया गया शास्त्रार्थ विशेष था जिसमें आर्यसमाज की ओर से पं० रामचन्द्रजी देहलवी पं० देवेन्द्रनाथ शास्त्री एवं स्वामी कर्मानन्दजी थे।

गढ़वाल के अकाल एवं वंगाल दुर्भिक्ष के अवसर पर समाज ने धन संग्रह कर भेजा। हैदरावाद हत्याग्रह में समाज ने ५६५ रूपया-संग्रह कर शोलापुर सत्याग्रह समिति को भेजा। समाज के सदस्य श्री शंकरलालजी ने सत्याग्रह में भाग लिया। हिन्दी रक्षा आन्दोलन में समाज के सदस्य श्री महाशय धर्मपाल जी तथा आर्य-कुमार सभा के सदस्य श्री सत्यपालजी ने सत्याग्रह में भाग लिया। अमर शहीद श्री सुमेरसिंह जी जिनका फीरोजपुर जेल में बलिदान हुआ वर्षों सेवा करने का इस समाज को सौभाग्य प्राप्त है।

शुद्धि मिशन—४-३-१९४३ ई० को आर्य समाज ने शुद्धि मिशन की स्थापना की। श्री० पं० ओमप्रकाशजी शास्त्री विद्याभास्कर के नेतृत्व में ईसाई विरोध एवं अस्पृश्यता निवारण का सैंकड़ों ग्रामों में विशेष प्रचार हुआ और खतौली मिशन के इरादों पर पानी फेर दिया।

पीपल हेड़ा, दविट्टा, करीमपुर और अनतपुरा आदि ग्रामों में हजारों ईसाइयों को शुद्ध किया गया।

आर्य समाज जानसठ—स्थापना सन् १८६९ ई० में हुई।

श्री शिवदयालु सिंह, श्री वद्री प्रसादजी, श्री रामशरणजी तथा श्रीबाबूरामजी के विशेष प्रयत्न से यह आर्य समाज स्थापित हुआ। ७००० रु० की लागत से मन्दिर बनवाया गया जिसमें श्री शिवदयालसिंहजी, श्री शम्भूलालजी तथा श्री बद्रीप्रसाद जी ने मिलकर आधा धन प्रदान किया। यह मुस्लिम बाहुल्य कस्बा है लगभग ४५ वर्ष तक कार्य साधारण रहा। सन् १९४६ ई० में यहां विशाल पैमाने पर श्री मा० मंगतसिंहजी के नेतृत्व में जिला आर्य सम्मेलन किया गया और उसके बाद समाज का कार्य पूरे उत्साह से चलने लगा। डी० ए० वी० स्कूल की स्थापना की तथा सम्मेलन का अवशिष्ट धन इस स्कूल की उन्नति में लगा दिया गया।

इस समाज के विशेष कार्यकर्ता श्री महेशचन्द्रजी मुख्त्यार, श्री महेशचन्द्रजी अरजीनवीस, श्री खुशीरामजी आर्य, श्री विश्वम्भरसहायजी धीमान, श्रीराजारामजी

श्रीरघुनाथसहायजी, श्री त्रिलोकी नाथजी, श्रीरामचन्द्रसहायजी, श्री पूर्णचन्द्र शास्त्री आदि है। श्री राजारामजी ने हिन्दी रक्षा सत्याग्रह में भाग लिया और कपूरथला कारागार को सुशोभित किया।

आर्य समाज दूधली—इस समाज की स्थापना सन् १९०१ ई० की गई थी। संस्थापकों में श्री पं० मूलचन्द्रजी, ठा० जयसिंहजी के नाम स्मरणीय हैं

आर्य समाज सन्दिर के निमित्त श्रीशम्भूदयालजी पं० श्री वैजनाथ सहाय जी ने अपने घर व दूकान समाज को दान में दे दिये। वैजनाथ सहायजी ने अपने दिये हुये घर में एक कुंआ वनवाने का संकल्प किया किन्तु सन् १९१८ ई० में जर्मन की लड़ाई में मारे जाने के कारण वह अपना संकल्प पूरा न कर सके । जिसकी पूर्ति यहां के कर्मठ कार्यकर्ता श्री सरदारसिंहजी वानप्रस्थी ने की। कन्याओं की शिक्षा के लिये एक आर्य कन्या पाटशाला खोली गई जो सन् १९६० तक इसी मकान में चलती रही।

सन् १९२४ ई० में मथुरा शताब्दी से प्रेरणा लेकर ठा० बसन्तराज ठा० जहानसिंहजी तथा वानप्रस्थीजी ने आर्य समाज मन्दिर निर्माण करने का संकल्प किया। १९८४ वि० में जहानसिंहजी द्वारा मन्दिर का शिलान्यास हुआ। ठा० सरदार सिंह ने इस क्षेत्र के राजपूतों के ग्रामों में विशेष प्रयत्न करके कन्या हनन के पाप से उनको मुक्त किया। शराब का ठेका ग्राम से समाप्त कराया तथा मांस सेवन बन्द करवा दिया।

ठा० मुत्सद्दीसिंह, ठा० संग्रामसिंह आदिका मन्दिर निर्माण में प्रयत्न सराहनीय है।

हैदराबाद सत्याग्रह में इस समाज से १२ सत्याग्रहियों का एक जत्था भेजा गया जिसमें श्री ठा० निरन्जनसिंहजी, ठा० नानकसिंह, ठा० महावीरसिंह, आदि सम्मिलत थे।

ठा० सरदारसिंह वानप्रस्थी इस समाज के प्राण हैं। आपने स्वतन्त्रता संग्राम में भी विशेष भाग लिया है। कारागार की यातनायें सहन की हैं। आप वर्षों तक गुरुकुल विरालसी के मुख्याधिष्ठाता रहे हैं । इस समय ७३ वर्ष की आयु में भी निरन्तर देश व धर्म की सेवा में रत रहने वाले व्यक्ति हैं।

आर्य समाज शुगर मिल खतौली—इस समाज की स्थापना सन् १९५६ ई० में की गई। आर्य समाज मन्दिर के लिये भूमि क्रय करली गई और रामनवमी संवत् २०१८ वि० को स्वामी मुनीश्वरानन्द जी द्वारा मन्दिर का शिलान्यास कराया गया।

मन्दिर निर्माण पर १६०० रु० व्यय हो चुका है। श्री सेवकराम यात्री के पुराने शिष्यों ने मन्दिर निर्माण में ८००० रु० इकट्ठा करके दिया है। वर्तमान अधिकारी प्रधान श्री फकीरचन्द्र जी मन्त्री श्री सेवकरामजी।

आर्य समाज चरथावल–यह समाज सन् १९०४ई० में स्थापित किया गया समाज के प्रारम्भिक युग के यशस्वी कार्यकर्ता श्री चौ० दलीपसिंह, चौ० जयदयालसिंह, चौ० जमइयतसिंह, पं० भोजदत्त, ला० दुर्गाप्रसाद, ला० बनारसीदास आदि रहे हैं। चौ० जीवनसिंह चौ० मंगलसेन व श्री जानकीदास जी ने भूमि प्रदान की है। पं० रामप्रकाश जी एवं पं० शालिगराम जी त्यागी ने आर्य समाज के कार्य को यहां विशेष प्रगति दी। सन् १९२१ में यहाँ कार्य शिथिल हो गया। सन् १९४७ ई० में कुछ शरणार्थी यहां मन्दिर में आकर बस गये और सन् १९५४ में वह यहां से अन्यत्र चले गये। फिर भी समाज के कार्य में कोई प्रगति न हुई। सम्प्रति आर्य समाज के मन्दिर का उपयोग राजकीय प्रौढ़ महिला शिक्षणालय के लिये किया जा रहा है।

समाज के मन्त्री श्री सुखवीरसिंह वर्मा हैं।

आर्य समाज थाना भवन—स्थापना सन् १९०९ ई० में हुई।

प्रारम्भिक युग के कार्यकर्ताओं में श्री नत्थूलाल जी, ला० जगन्नाथजी, श्री सुन्दर लाल जी, पं० भोजदत्त जी, ला० गोर्धनदासजी एवं मोल्हड़मलजी के नाम उल्लेखनीय हैं।

सन् १९११ ई० में पौराणिकों के साथ आर्य समाज का शस्त्रार्थ हुआ। पं० अखिलानन्द शर्मा ने आर्यसमाज की ओर से भाग लिया।

सन् १९१३ ई० में दूसरा शास्त्रार्थ भी पौराणिकों से हुआ और तीसरा शास्त्रार्थ सन् ११३० ई० में हुआ। इस शास्त्रार्थ में पं० अखिलानन्द जी पौराणिकों का पक्षग्रहण किये हुए थे। तीनों शास्त्रार्थों का जनता पर विशेष अनुकूल प्रभाव पड़ा। शुद्धि एवं विधवा विवाह के कार्यों में भी आर्य समाज का पग सदा आगे बढ़ा है। आर्य समाज सम्बन्धी आन्दोलनों में भी यहां से आर्थिक सहायता दी गई। हिन्दी-आन्दोलन में श्री पं० प्रकाशवीर शास्त्री एम० पी० को ५०१ रु० थैली भेंट की गई।

समाज ने ईसाई निरोध एवं दलितोद्धार के क्षेत्र में कार्य किया। सन् १९६० ई० में आर्य कन्या पाठशाला की स्थापना की गई जिसमें सम्प्रति १०० के लगभग कन्यायें अध्ययन कर रही हैं। सुरक्षा कोष में भी समाज की ओर से ६०३ रु०

एकत्रित कर भेजा गया। आर्य समाज का अपना एक अच्छा पुस्तकालय भी है। और ट्रैक्टों के वेचने की व्यवस्था भी की हुई है। वर्तमान अधिकारी प्रधान श्री दातारामजी, मन्त्री श्री विजयकुमार जी।

आर्य समाज पुरवालियान—स्थापना तिथि २७-६-१९५७ ई०।

२ वर्षों तक शिव मन्दिर में ही साप्ताहिक सत्संग का कार्यक्रम चलता रहा। वाद में आर्य समाज का अपना मन्दिर १८०० रु० की लागत से बनाया गया। मन्दिर गांव से बाहर रमणीक स्थान में है। समाज के कार्यकर्ता उत्साही नवयुवक हैं यहां ७ सदस्य नित्य नियम से यज्ञ करने वाले हैं। सुधार सम्बन्धी सब कार्यों में अग्रसर रहते हैं।

वर्तमान अधिकारी प्रधान श्री सुन्दरलाल जी, मन्त्री श्री बलीराम जी।

आर्य समाज सिसौली—स्थापना सन् १९२५ ई० में हुई।

इस आर्य समाज की स्थापना का श्रेय भारत केसरी लाला लाजपतराय जी को है। सन १९२३ ई० में उन्होंने यहां पदार्पण किया था और आर्य समाज स्थापित करने की प्रेरणा दी थी। समाज का अपना भवन भी बन गया है। यहां के कर्मठ कार्यकर्ता श्री ओमप्रकाश जी ने हिन्दी रक्षा आन्दोलन में भाग लिया और पंजाब की जेल को सुशोभित किया। यहां से सत्याग्रह समिति को १५१ रु० सहायता भी भेजी गई। श्री ओमप्रकाश जी यहां के मन्त्री हैं।

आर्य समाज कुर्माली—समाज की स्थापना श्री चौ० खुशीराम जी द्वारा सन् १९०२ ई० में की गई। चौधरी साहिब ही समाज के प्रधान तथा श्री लाला कुन्दन लाल मन्त्री बने। ज्येष्ठ के दशहरे, दीवाली तथा होली पर प्रति वर्ष सामूहिक यज्ञ किये जाते रहे। सन् १९१३ में समाज के प्रधान श्री चौ० खुशीराम जी चुने गये, जिन्होंने श्मशान में पक्की नरमेघ शाला बनवाई। चौधरी साहब व पं० देवीसहाय व ला० कुन्दनलाल ने मेलों में प्रचारार्थ एक मण्डली तैयार की। शामली आदि के मेले में प्रचार किया गया। सन् १९१४ ई० में कुर्माली में एक बड़ा उत्सव किया, १०००० जनता उपस्थित रही। इसी प्रकार सन् १८ व सन् २८ में इससे भी बड़े जल्से रचे गये। स्वाधीनता संग्राम में भी आर्य समाज के कार्यकर्ता आगे बढ़े और कारागार की शोभा बढ़ाई।

मेरठ

मेरठ जिले को यह सौभाग्य प्राप्त है कि ५००० वर्ष पूर्व भारत की राजधानी हस्तिनापुर इसी के अन्दर विद्यमान है।

इसी जिले के केन्द्र स्थान मेरठ की छावनी से सन् १८५७ ई० में प्रथम भारतीय स्वातन्त्र्य समर का शखंनाद निनादित हुआ था। स्वाधीनता के विगत संग्रामों में मेरठ जिला उत्तर प्रदेश में सबसे आगे रहा है। जिले के अन्दर २००० से ऊपर सत्याग्रहियों को कारागार कीं यातनायें सहन करनी पड़ी हैं। इन २ हजार में आधे से अधिक आर्य समाजी थे। प्रायः सब ही प्रकार की धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक राजनीतिक प्रगतियों में मेरठ कभी किसी से पीछे नहीं रहा है। जहां तक आर्य समाज के कार्य का सम्बन्ध है मेरठ, प्रान्त के इने गिने प्रमुख जिलों में से एक है।

इस जिले में सभा से सम्बन्धित आर्य समाजों की संख्या ७१ है। लगभग ५० आर्यसमाज ऐसे और हैं जिनका सम्बन्ध अभी तक सभा के साथ नहीं जुड़ पाया है।

जिला आर्य उप सभा की स्थापना बहुत काल से है। अब से ३५ वर्ष पूर्व वेदप्रचार मन्डल के नाम से इसकी स्थापना की गई थी बाद में सन् १९३५ ई० से इसका नाम बदल कर आर्य उप सभा कर दिया गया है। इस उपसभा की ओर से जिले में कभी-कभी तो ६ वैतनिक प्रचारकों ने कार्य किया है, किन्तु सम्प्रति दो प्रचारक मन्डलियां श्री पं० निरन्जन प्रसाद एवं पं० हरस्वरूप शर्मा की कार्य कर रही हैं। अवैतनिक रूप से जिला सभा के आदेश पर निम्न महानुभाव आर्य समाजों के उत्सवादि पर प्रचारार्थ जाते रहते हैं:—श्री डा० भगवत दत्त जी, श्री मुत्सद्दीलाल एम० ए०, श्री रघुनन्दवस्वरूप गोयल वकील, श्रीमती शकुन्तला देवी गोयल, पं० शिवदयालु जी, श्री विश्वनाथ आर्यवीर, श्री घूम सिंह जी, श्री शकुन्तला जी, श्री प्रियव्रत शास्त्री, श्री ब्रह्मस्वरूप एडवोकेट, श्री प्रो० रतन सिंहजी एम० ए०, श्री कालीचरण आर्य, श्री इन्द्रराज जी आदि।

इस जिले में सर्धना ईसाइयों कां मुख्य केन्द्र तथा भारत के ईसाइयों का तीर्थ स्थान है। इसके अतिरिक्त जिले में ३० के लगभग ईसाइयों के गढ़ विद्यमान हैं। इनसे टक्कर लेने एवं इनके चंगुल में फंसे हुये दलित जाति के बन्धुओं को मुक्त करने के अनेक आयोजन किये गये हैं। सहस्रों ईसाइयों की शुद्धियां की गई हैं। ईसाइयों के बेकराबाद बाघू, संरघना भीकमपुर केन्द्रों पर विशाल प्रदर्शन किये हैं। बाघू में तो केन्द्र की मन्त्रिणी श्रीमती अमृतकौर से टक्कर ली गई। बेकराबाद केन्द्र के ऐतिहासिक प्रदर्शन में गाजियाबाद की लगभग ८००० जनता ने भाग लिया इस प्रदर्शन की चर्चा तो इटली, इंगलैंड आदि के समाचार पत्रों तक में हुई।

भीकमपुर प्रदर्शनों में गोरे पादरियों ने पं० शिवदयालु जी एवं स्वामी

वेदानन्दजी को झूठे आरोप लगाकर पुलिस से गिरफ्तार करवाया और उनको जान से मारने का भी उपक्रम किया; किन्तु अन्ततोगत्वा गोरे पादरियों को भारत छोड़ने पर सरकार द्वारा विवश किया गया।

जिले के धार्मिक मेलों पर और विशेषकर गढ़मुक्तेश्वर में प्रचार की योजना की जाती है।

आर्य समाज मेरठ नगर—जिले में सबसे पुराना आर्य समाज है। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वतीजी महाराज ने २६ दिसम्बर सन् १८७८ ई० में अपने कर-कमलों से इसकी स्थापना की थी। इस समाज को इस बात का और भी विशेष गौरव है कि समाज के द्वितीय वार्षिकोत्सव की शोभा स्वयं ऋषि ने पधार कर बढ़ाई थी। उत्तर प्रदेशीय सभा की स्थापना का श्रेय भी इसी आर्य समाज को है। इसी आर्य समाज के द्वितीय वार्षिक उत्सव पर सैद्धान्तिक मतभेद हो जाने के कारण महर्षि ने कर्नल आलकाट एवं मेडम ब्लवाटस्की की थियोसोफिकल सोसाइटी से समाज के सम्बन्ध विच्छेद की घोषणा की थी।

आर्य समाज मेरठ नगर ने आर्यजगत् को उच्चकोटि के विद्वान् एवं नेता प्रदान किये हैं। स्व० पं० तुलसीराम स्वामी, स्व० पं० घासीराम एम० ए०, श्री पं० गंगाप्रसाद जी एम० ए० कार्यमुक्त चीफ जज टिहरी राज्य इसी समाज की विभूतियां हैं। श्री रघुवीरशरण बी० ए०, प्रबन्धक आर्यभास्कर प्रेस इसी समाज के मान्य कार्यकर्ता रहे हैं। पं० जयराम शर्मा, पं० रामसहाय वैद्य, पं० छुट्टनलाल स्वामी, पं० इन्द्रमणि वकील, बा० जयदेवसिंह जी, चौ० मुख्त्यार सिंह, बा० बृजनाथ मित्थल एडवोकेट इसी समाज के नररत्न थे।

इस आर्य समाज का अपना विशाल मन्दिर है। १००० से ऊपर की संख्या में कन्याओं को शिक्षा देने वाला आर्य कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय है। समाज से सम्बन्धित आर्यकुमार सभा भी यहां दीर्घकाल से कार्य कर रही है। नवयुवकों में वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार करने के उपक्रम यह सभा निरन्तर करती रहती है।

इस समाज के अनेक सदस्यों ने भारत स्वाधीनता संग्रामों में जिले का नेतृत्व किया है। बा० ज्योति प्रसाद वकील, मा० जगन्नाथ प्रसाद, चौबे विजयपाल सिंह वकील, बा० मुत्सद्दीलाल एम०ए०, श्री विश्वम्भर सहाय प्रेमी आदि इस समाज के राजनैतिक क्षेत्र के प्रमुख कार्यकर्ता रहे हैं।

आर्यसमाज ने हैदराबाद सत्याग्रह, हिन्दी रक्षा आन्दोलन आदि में धन जन से पूरी-पूरी सहायता की है। श्री इन्द्रराजजी ने मेरठ के एक सत्याग्रही जत्थे का

नेतृत्व किया। प्रान्तीय सभा की स्वर्णजयन्ती एवं द्वितीय आर्य महासम्मेलन को सफल बनाने में इस समाज का विशेष हाथ रहा है।

आर्य स्त्री समाज मेरठ शहर—इस समाज की स्थापना ५ दिसम्बर १९१४ ई० को हुई थी। महिला जगत् में इसने वैदिक धर्म का विशेष प्रचार किया है। इसकी अनेक सदस्याओं यथा श्री विद्यावती जी, श्री सत्यवती जी पूर्व एम०एल०ए० श्री वस्सोदेवी, श्री प्रकाशवती जी, श्री शकुन्तला जी उपमन्त्री आदि ने राष्ट्रीय आन्दोलन में भी विशेष भाग लिया है। अछूतोद्धार आन्दोलन, हैदराबाद सत्याग्रह, हिन्दी रक्षा आन्दोलन एवं भारत सुरक्षा कोष संग्रह के कार्यों में समाज की देवियां अग्रसर रही हैं। समाज की देवियों ने हिन्दी सत्याग्रह में जत्था भेजा। श्री सत्यवती, श्री शकुन्तला गोयल, श्री प्रकाशवती आदि देवियों ने सुरक्षाकोष के निमित्त सैकड़ों ग्राम सोना एवं १ हजार से ऊपर रुपया आपस में एकत्रित कर भेजा है।

आर्य समाज सदर—स्थापना सन् १८९४ ई०।

मेरठ नगर का यह दूसरा प्रमुख आर्य समाज हैं। इसका आर्यभवन तो उत्तर प्रदेश के बड़े से बड़े आर्य भवन से मुकावला करता है। एक लक्ष से ऊपर धन इस मन्दिर के निर्माण में लगा है। इसका सर्वाधिक श्रेय श्री मोतीलाल ऐडवोकेट को है। श्री मुकन्दलाल मालिकजी ने भी मन्दिर निर्माण में प्रशन्सनीय कार्य किया है। मन्दिर का निर्माण श्री कालीचरणजी की देख रेख में हुआ।

इस समाज के कर्मठ नेता पं० शिवदयालुजी (लेखक इतिहास) मेरठ जिले में ३० वर्ष निरन्तर राष्ट्रीय कार्यकर्ता रहे हैं। कई वर्ष जिला कांग्रेस के मन्त्री एवं प्रधान रहे तथा जीवन में ७ बार कारागार की यातनाएं सहीं।

इस समाज ने भी आर्य जगत् को अन्य कई प्रतिष्ठित कार्यकर्ता एवं विद्वान् दिये हैं यथा श्री मोतीलालजी ऐडवोकेट, श्री बा० रतनलाल ऐडवोकेट, आदि। समाज के पुराने कार्यकर्ताओं में श्री भवानीप्रसाद, श्री जीवनलाल, श्री पृथ्वी सिंह, श्री रामचन्द्र वर्मा, श्री राजाराम, श्री हरिशरण मराल, श्री विश्वम्भर सहाय आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इस समाज के अन्तर्गत एक आर्य डिबैटिंग क्लब नाम की संस्था रही है जिसने अनेकों वर्ष तक बड़े-बड़े शास्त्रार्थ पौराणिकों, मुसलमानों, एवं ईसाइयों से कराये हैं। इन शास्त्रार्थों में आर्य जगत् के दिग्गज विद्वानों ने यथा स्वामी दर्शनानन्द पं० गणपति शर्मा, आचार्य रामदेव, पं० रामचन्द्र देहलवी, पं० धर्म भिक्षु शास्त्रार्थ महारथी, पं० मुरारीलाल शर्मा आदि ने भाग लिया है।

इन शास्त्रार्थों की धूम निकट के अनेक जिलों तक रहती थी।

इस समाज के आधीन एक आर्य कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय है जिसमें ५०० से ऊपर कन्यायें शिक्षा पाती हैं। इसकी स्थापना २६-२-१८६९ ई० में हुई। इसकी प्रधानाचार्या श्री पुष्पा देवी एम० ए० हैं तथा प्रबन्धक श्री पं० धर्मेन्द्र-नाथ शास्त्री हैं। इस विद्यालय का अपना एक प्रथक विशाल भवन है जो इस समाज का पहला मन्दिर था। पाठशाला में धार्मिक शिक्षा एवं नैतिकता पर विशेष बल दिया जाता है। सम्प्रति समाज के प्रधान श्री बा० रोशनलालजी तथा मन्त्री श्री अशोककुमार बी० ए० हैं।

समाज ने अपने गत वार्षिकोत्सव पर जो कि ठीक चीन के भारत आक्रमण के समय दीवाली पर किया गया, सभा प्रधान पं० प्रकाशवीर शास्त्री एम० पी० के ओजस्वी भाषण के उपरान्त भारत सुरक्षा कोष के लिये धन एवं स्वर्ण की जनता से अपील की और नगर के समस्त आर्य समाजों ने मिलकर पं० शिवदयालु जी की अध्यक्षता में एक भारत सुरक्षा समिति का निर्माण किया। समिति ने १०००० रु० एवं लगभग ४०० ग्राम स्वर्ण संचित कर भारत सुरक्षा कोष में भेजा।

आर्य स्त्री समाज सदर—यह समाज लगभग तीस वर्ष से स्थापित है। समाज विशेष प्रगतिशील है। सब प्रकार की धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं राजनी-तिक प्रगतियों में इस समाज ने आगे बढ़कर हिस्सा लिया है।

देश के स्वाधीनता संग्रामों में श्री रामकली देवी ने सन् १९३० ई० में तीन नन्हे बालकों को लेकर कपड़े की दूकानों पर धरना दिया और सत्याग्रह किया। कारागार की यात्रा की। श्री शोभावती देवी, श्री अम्बा देवी जी जो आज दिन हलद्वानी में हैं, स्वाधीनता आन्दोलन में आगे बढ़कर कार्य किया है।

अछूतोद्धार आन्दोलन में भी यह समाज आगे रहा है। श्री पुष्पादेवी एम०ए०, श्री विष्णु देवी श्री शकुन्तला देवी गोयल इस क्षेत्र की मुख्य कार्यकर्त्री हैं। हिन्दी रक्षा आन्दोलन में भी श्री मेला देवी, तथा श्री शकुन्तला देवी गोयल, महिलाओं का जत्था लेकर पंजाब गईं, सत्याग्रह किया और पंजाब जेल की यातनाएं सहन कीं। अन्य कार्य करने वाली देवियों में श्री कमला देवी, श्री गोदावरी देवी के नाम उल्लेखनीय हैं।

आर्य समाज लालकुर्ती (जवाहरनगर)—समाज की स्थापना सन् १८८२ में की गई।

इस समाज के प्रमुख नेता श्री वा० कालीचरणजी हैं जिनका सारा जीवन आर्यसमाज के निमित्त बीता है। समाज का अपना सुन्दर भवन है। इस समाज ने भी विभिन्न मतावलम्बियों से अनेक बड़े बड़े शास्त्रार्थों का सफल आयोजन किया है। समाज के आधीन एक आर्य कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय बहुत समय से चल रहा है। आर्य समाज के विभिन्न आन्दोलनों में भी इस समाज ने यथाशक्ति भाग लिया है। समाज के कर्मठ कार्यकर्ता श्री शादीरामजी ने स्वतन्त्रता आन्दोलन में अग्रसर होकर कार्य किया है। मा० नन्दकिशोर एम० ए० श्री वेदप्रकाश जी ला० जौहरीयलादि मुख्य कार्यकर्त्ता हैं।

आर्यस्त्री समाज लालकुर्ती—स्थापना सं० १८९६ वि०।

इस समाज ने क्षेत्र के महिला जगत् में विशेष कार्य किया है। आर्य समाज के विभिन्न आन्दोलनों में भी इसका भाग रहा है। श्री सावित्री देवी इस समाज की प्रमुख कार्यकर्त्री महिला हैं।

आर्य समाज ब्रह्मपुरी (मेरठ)—इस समाज की स्थापना १९३८ ई० में श्री गजाधर सिंह जी द्वारा की गई। दानियों की सहायता से यज्ञशाला तथा भवन का निर्माण हुआ। श्रीमती चावला देवी ने कई कमरों का निर्माण कराकर आर्य समाज को श्री चावला देवी आर्य कन्या पाठशाला के नाम से दान कर दिया। जिसमें अष्टम् श्रेणी तक कन्या पाठशाला चल रही है। आर्य समाज की ओर से सात सौ रुपया राष्ट्र सुरक्षा कोष को दान दिया गया। आर्य समाज मन्दिर में नगर पालिका की ओर से प्राथमिक पाठशाला भी चल रही है। कन्याओं को धार्मिक शिक्षा दी जाती है। मास्टर नन्दरामजी तथा गुरुकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन के स्नातक श्री वैद्य बलबीर शास्त्री आयुर्वेद शिरोमणि के उद्योग से समाज अच्छा कार्य कर रहा है।

आर्य समाज मवाना—स्थापना तिथि ११ अप्रैल १८८६ ई०।

मेरठ जिले की मवाना तहसील का मुख्य एवं केन्द्रीय पुराना आर्य समाज है। ला० हरस्वरूप जी पूर्व कोषाध्यक्ष आ० प्र० नि० सभा ला० मुरलीधरजी, श्री रघुनन्दनशरण जी दुबलिश, एम० ए० आदि इसके पुराने कर्मठ कार्यकर्ता रहे हैं। इस समाज के कार्यकर्ताओं ने तहसील के अन्दर अनेक आर्य समाजों की स्थापना की है तथा उनको प्रगतिशील बनने में सदा सहयोग दिया है। विष्णुशरणजी दुबलिश यहाँ के नवयुवक कार्यकर्ता रहे हैं। उन्होंने सन् १९२१ ई० के स्वतन्त्रता आन्दोलन में बीच बाजार में गोरे अधिकारियों की बेतों की मार हंसते-हंसते सही है। इनको काकोरी षडयन्त्र केस में बन्दी बनाकर अन्डमान भेज

दिया गया था। आप अनेक वर्षों तक लोक सभा के सदस्य रहे हैं।

समाज के अन्तर्गत निम्न संस्थायें कार्य कर रही हैं :-

१. आर्य उच्च माध्यमिक कन्या विद्यालय जिसमें लगभग ५०० कन्यायें शिक्षा पाती हैं। प्रवन्धक श्री हरिश्चन्द्रजी।

२. सन् १८९४ ई० में श्री गुलाव देवी क० पा० मवाना के नाम पर स्थापित की गई। देवीजी ने सर्व प्रथम १५०० रु० इस निमित्त दान दिया था। इसकी ही वड़ी शाखा उपर्युक्त उच्च माध्यमिक विद्यालय है।

३. आर्यकुमार सभा सन् १९१२ में स्थापित हुई। इस सभा ने नवयुको में विशेष जाग्रति की है। सम्प्रति इसके प्रधान श्री विश्वम्भर सहाय सर्राफ एवं मन्त्री श्री धर्मेन्द्र कुमार जी हैं।

आर्यकुमार पाठशाला—सन् १९१० ई० में यह पाठशाला स्थापित हुई थी। अनेक वर्षों से इसका संचालन आर्य कुमार सभा कर रही है। पाठशाला में २२१ विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं।

आर्यवीर दल—इसकी स्थापना १९४४ ई० में हुई इसकी स्थापना में विशेप हाथ श्री रूमाल सिंह का रहा है। दल ने निकट के अनेक क्षेत्रों में सुन्दर सेवा कार्य किया है, खोये हु ये बच्चों को उनके संरक्षकों तक पहुंचाना प्रारम्भिक चिकित्सा आदि कार्यों की भी बड़े उत्साह से दल ने किया है।

स्त्री समाज मवाना—स्थापना तिथि २० सितम्बर १९२६ ई०।

प्रधाना—श्रीमती शारदा देवी जी धर्मपत्नी श्री रघुनन्दशरण जी एम० ए०।

मन्त्रिणी श्रीमती सत्यवती धर्मपत्नी श्री हरिश्चन्द्र जी।

आर्य समाज सरधना—स्थापना सन् १९०३ ई०।

संस्थापक—श्री सुनहरा सिंह त्यागी। आपके दिवंगत होने पर अनेक वर्ष तक कार्य शिथिल रहा। किन्तु जब से आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता श्री दरयाव सिंह जी का सर्धना में आगमन हुआ समाज का कार्य सुसंगठित रूप से चालू हो गया। आपके प्रयत्न से १०००० रु० की लागत का सुन्दर आर्य भवन बनकर तैयार हो गया, साप्ताहिक अधिवेशन उन्सवादि उत्साह के साथ किये जाने लगे। समाज के वर्तमान प्रधान श्री रणवीर सिंह कैप्टिन (फिटकरी ग्राम निवासी सेना के कार्यमुक्त कैप्टिन) मन्त्री श्री ज्वालाप्रसाद शारदा हैं।

आर्य समाज अग्रवाल मंडी टटीरी—इस समाज की स्थापना सन् १९२० ई० से पूर्व हुई। इस आर्य समाज ने विरोधियों के घोर संघर्ष दो हुये शुद्धि आन्दो-

लन में अच्छी सफलता प्राप्त की अनेक बिछड़े हुये भाइयों को हिन्दू धर्म में दीक्षित किया। १९५९ ई० में वैदिक कन्या जूनियर हाई स्कूल की स्थापना की। मुन्शीलाल जी की व्यवस्था में यह संस्था भले प्रकार चल रही है। हैदराबाद सत्याग्रह और हिन्दू आन्दोलन में इस समाज के अनेक सदस्यों ने भाग लिया। पं० ज्योति प्रसाद जी ने अपनी पत्नी सहित पंजाब में सत्याग्रह किया।

आर्य समाज छपरौली (मेरठ)—यह समाज समीपवर्ती ग्रामों में भी अच्छा प्रचार करता रहा है। हलका छपरौली के चौबीस ग्रामों की वेद प्रचारिणी सभा भी यहां स्थापित है। कन्हड़ ग्राम में देवी के सामने बकरे कटते और मांस भक्षण किया जाता था उसे इस समाज ने बन्द कराया। कितने ही व्यक्तियों की शुद्धि भी बड़ी सफलता से हुई। कितने ही विधवा-विवाह भी कराये। छूत-छात निवारण के लिए भी अच्छा प्रयत्न किया। श्री स्वामी योगानन्दजी के उद्योग से आर्य-समाज भवन का निर्माण हुआ। चौधरी मंसाराम तथा चौ० अतल सिंहजी ने इस कार्य में सहयोग किया।

आर्य समाज पाली (मेरठ)—इस समाज को स्थापना मिती माघ बदी १ सम्वत् १९८६ वि० में हुई। महात्मा लटूर सिंह जी ने प्रारम्भ में बड़ी सेवा की और उन्होंने ही समाज को स्थापित किया। समाज मन्दिर निज का है जिसकी लागत १० सहस्र रु० के लगभग है। मन्दिर निर्माण में महाशय रामचन्द्र जी का प्रशंसनीय प्रयत्न रहा। समाज की ओर से धार्मिक शिक्षा का भी प्रबन्ध रह चुका है। ब्रह्मचारी हेमचन्द्र शास्त्री ने इस दिशा में बहुत कार्य किया। हैदराबाद सत्याग्रह में भी समाज के कई सदस्य सम्मिलित हुये। हिन्दी सत्याग्रह में भी आर्थिक सहायता की, समाज मन्दिर निज का है। कई सदस्यों ने देश के स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया। जेल यात्रा भी की। वार्षिक उत्सव उत्साहपूर्वक होते रहते हैं।

आर्य समाज हापुड़—स्थापना १८९० ई०।

आरम्भ में समाज का साप्ताहिक अधिवेशन ला० शिवचरणलालजी के शुभ स्थान पर होता था। समय आया कि आर्य समाज का एक विशाल भवन दिल्ली-गढ़मुक्तेश्वर रोड पर बनकर खड़ा हो गया। भवन के साथ हराभरा उपवन भी तैयार किया गया। यहाँ वर्षों से प्रतिदिन सत्संग होता है। समाज का अपना पुरोहित भी रहता है जो गृहों में यज्ञ संस्कार कराता और निकट के ग्रामों में समय-समय पर जाकर प्रकार का कार्य करता है। यहाँ आर्य ममाज से सम्बन्धित

आर्य कन्या पाठशाला तथा आर्य कन्या डिग्री कालेज भी चल रहे हैं। समाज के सदस्यों की संख्या ३०० के लगभग है। नगर में आर्य समाज का विशेष मान है। नगर के अनेक प्रतिष्ठित व्यक्ति इसके सदस्य हैं।

स्वाधीनता संग्राम में आर्य समाज हापुड़ के कार्यकर्ताओं का विशेष भाग रहा है। श्री लालाप्यारेलालजी, लाला बख्तावरलालजी श्री अमोलकचन्द्रजी आदि अनेकों कार्यकर्ताओं ने आगे बढ़कर कार्य किया और कारागारों की शोभा बढ़ाई। सन् १९३१ ई० में इसी समाज में पं० शिवदयालुजी की अध्यक्षता में विराट तहसील राजनीतिक सम्मेलन किया गया और नमक सत्याग्रह का श्रीगणेश किया गया।

दलितोद्धार, शुद्धि, समाजसुधार के कार्यों में यह समाज सदा आगे रहा है। प्राय: सभी आर्य आन्दोलनों में इस समाज का पूरा सहयोग रहा है।

आर्य समाज जानी—स्थापना सन् १९१८ ई०। समाज का अपना भवन है। इसका निर्माण सन् १९४८ ई० में हुआ। समाज स्थापना का श्रेय श्री स्वामी शान्तानन्द जी को है।

इस समाज के वार्षिकोत्सव को भी पुलिस ने रोका था, किन्तु जब पं० शिवदयालुजी ने पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट एवं जिलाधीश से वहां जाकर सत्याग्रह करने की बात कही तो धारा १४४ के अन्तर्गत जो प्रतिबन्ध लगाया था वह हटा लिया गया और कई सहस्र जनसंख्या की उपस्थित में रात्रि के दो बजे तक उत्सव होता रहा।

यह समाज शुद्धि एवं दलितोद्धार कार्यों में सदा अग्रसर रहा है। पिछले दिनों एक ईसाई कन्या की शुद्धि कर श्री बलदेव सिंह आर्य उप-मन्त्री उ० प्र० सरकार के सुपुत्र के साथ उसका अपने मन्दिर में विवाह संस्कार कराया गया था। सिन्ध सत्यार्थ प्रकाश सत्याग्रह तथा हिन्दी रक्षा सत्याग्रह में यहां के ३ तथा ५ सज्जनों ने क्रमश: भाग लिया।

वर्तमान अधिकारी प्रधान—श्री छोटन सिंहजी, मन्त्री—श्री मंगलसेन हैं।

आर्य समाज बकसर—स्थापना सन् १९१८ ई० में श्री ज्वालाप्रसाद जी आर्य के करकमलों द्वारा की गई। समाज के पुराने विशेष कार्यकर्ता श्री ज्वालाप्रसाद जी आर्य, श्री लक्ष्मणप्रसाद जी, श्री शम्भूदयाल जी, श्री बालमुकन्द आदि रहे। समाज का अपना भवन निर्मित हो चुका है। हैदराबाद सत्याग्रह में समाज ने धन जन से पूरा सहयोग प्रदान किया।

हैदराबाद सत्याग्रह के उपरान्त यहाँ समाज भवन में एक छोटा सा गुरुकुल

भी स्थापित किया गया। किन्तु ८ वर्ष चलने के उपरान्त ही समाप्त हो गया।

वर्तमान अधिकारी—श्री गंगाराम वैद्य, प्रधान; श्री महेशप्रसाद एम० ए० मन्त्री।

आर्य समाज बागपत—बागपत में अनेक वर्षों से आर्य समाज स्थापित है। मुसलिम बाहुल्य होते हुये भी शुद्धि, अछूतोद्धार आन्दोलन में यहां के कार्यकर्ताओं का बराबर भाग रहा है।

वर्तमान अधिकारी श्री डा० जगदीश जी प्रधान, श्री मा० मुरारीलाल शास्त्री मन्त्री।

आर्य समाज सरौरा—स्थापना सन् १९४० ई०। ग्रामीण क्षेत्र होते हुये भी कार्यकर्ताओं में उत्साह है। सन् १९४९ ई० में गांव में स्वाँग रचा गया इसके विरोध में महाशय लक्ष्मीचन्द ने अनशन आरम्भ कर दिया। अगले दिन उनकी माता ने तथा सपनावत निवासी एक सज्जन ने भी अनशन शुरू कर दिया। इसके प्रभाव स्वरूप स्वांग बन्द कर दिया गया।

हैदराबाद सत्याग्रह में यहां का सहयोग रहा। हिन्दी रक्षा सत्याग्रह में कई सज्जनों ने करनाल कारागार की यात्रा की। सत्याग्रह में भाग लेने वाले थे, श्री राज सिंह प्रधान ग्राम सभा, श्री महीराम श्री भरत सिंह जी। विशिष्ट कार्यकर्ताओं में स्व० श्री जियाराम, स्व० जीतराम, महाशय मुरली सिंह, महा बालकराम, श्री शिवचरणदास, मा० बुध सिंह, स्व० लिखीराम के नाम उल्लेखनीय हैं।

आर्य समाज खिर्वा जलालपुर—इस समाज की स्थापना स्वामी टोडरमल जी के करकमलों से १९ वीं शती के अन्त में हुई। श्री स्वामी जी ने सन्यासाश्रम धारण करने के उपरान्त अनेक आर्यसमाजों की जिले में स्थापना की। समाज के आधीन एक कन्या पाठशाला श्री ला० मुन्ना लाल जी के दान से स्थापित है। श्री कैलाश चन्द्र वैश्य पाठशाला के प्रबन्धक हैं।

आर्य समाज गढ़मुक्तेश्वर—गढ़मुक्तेश्वर वह स्थान है जहाँ महर्षि दयानन्द का दो बार आगमन हुआ है। यहीं उन्होंने उत्तराखंड में सीखे हुये हठयोग की गंगा में बहते हुये एक शव को चीरकर परीक्षा ली थी। हठयोग की बात असत्य प्रतीत होने पर उन्होंने पर तत्सम्बंधी पुस्तकों को गंगा की धारा में प्रवाहित कर दिया था। यहां स्वामी जी संस्कृत में वार्तालाप किया करते थे।

पं० तुलसीराम स्वामी ने यहां आकर अनेक विभिन्न वर्गों के जनों को यज्ञोपवीत प्रदान किया था। आर्य समाज के पुराने कर्मठ कार्यकर्ता जिन्होंने

आर्य समाज को संगठित किया निम्न रहे। श्री कृष्णलाल जी, श्री शिवचरणदास जी, श्री म० रघुवीरशरण, श्री राधेलाल जी, श्री बाबूराम जी, श्री गणेशी लाल जी, श्री सूर्यभान जी, श्री सोहनलाल जी श्री छैलबिहारीलाल जी, आदि।

सन् १९१९ में यहां आर्य मन्दिर का निर्माण हुआ इसमें स्वामी महेशानन्द व माता लक्ष्मी देवी का प्रयत्न सराहनीय था।

इस समाज ने हैदराबाद सत्याग्रह में श्री राम सिंह जो, श्री अरिदमन सिंहजी श्री राधे लाल आदि का एक जत्था भेजा जिन्हों ने पन्जाब की जेलों की यात्रा की।

सन् १९४२ में पं० भगवान स्वरूप वैद्य प्रधान व श्री ला० जयन्ती प्रसाद मन्त्री ने आर्यवीर दल की स्थापना की। सन् १९४४ ई० में समाज की बड़े समारोह के साथ रजत जयन्ती मनाई गई इसमें, श्री दामोदर दास प्रधान व सीताराम आर्य मन्त्री का उत्साह प्रशन्सनीय था।

सन् १९५७ ई० में हिन्दी रक्षा आन्दोलन में श्री पं० सत्यपाल शास्त्री महौपदेशक आ० प्र० सभा की अध्यक्षता में जो जिले मेरठ का एक बड़ा जत्था गया उसमें श्री सीताराम जी, श्री हरिश्चन्द्र जी, श्री शिवचरण दास जी, श्री बालक राम जी, श्री पहलादराय जी, श्री पुरुषोत्तम दास जी, श्री सूरत सिंह जी, श्री कर्णसिंह जी, श्री रघुवीर सिंह, श्री रिसाल सिंह जी, आदि आर्य पुरुषों ने सम्मिलित हो, पंजाब में सत्याग्रह किया।

सन् १९५८ ई० में अमर सिंहजी ने यहां पौराणिकों के साथ प्रभावशाली शास्त्रार्थ किया।

वर्तमान अधिकारी—प्रधान श्री लक्ष्मी चन्द गुप्त जी।
मन्त्री श्री शिवचरण दास जी।

आर्य समाज आलमपुर—समाज की स्थापना सन् १९६० ई० में की गई। श्री मुल्तान सिंह आर्य प्रमुख उत्साही कार्यकर्ता हैं। कमाल पुर के मुल्ला से आपने शास्त्रार्थ किया और उनको परास्त किया। सिकैड़ा ग्राम में हंसादेव के चेलों से शास्त्रार्थ की आपने व्यवस्था की जो श्री सत्य पाल शास्त्री ने सफलता पूर्वक किया। आर्य समाज के जन्म दाता श्री वलवीर सिंह आर्य है।

अधिकारी प्रधान श्री नेमिनारायण जी।
मन्त्री श्री जयचन्द जी।

आर्य समाज बाजीदपुर—स्थापना श्री निरन्जन सिंह प्रचारक उस सभा के प्रयत्न से १७-९-१९५९ को की गई।

आर्य समाज का प्रचार इस गांव में ३० वर्ष से चल रहा है। वाबा वस्तीराम ने यहाँ महीनों प्रचार किया है। टैक्टों के मुक्त वितरण द्वारा चलता फिरता प्रचार विशेष रूप सेकिया जाता है। अब तक ५,००० से ऊपर ट्रैक्ट बाँटे जा चुके हैं। श्री दानवीर लाल सिंह जी समाज के कार्यों में विशेष आर्थिक सहायता करते रहते हैं।

अधिकारी प्रधान—श्री मुख्त्यार सिंहजी।

मन्त्री—श्री श्रीचन्द तोमर।

आर्य समाज घौलड़ी—स्थापना तिथि २३-१०-१९२४ ई०।

मन्दिर बनाया जा रहा है। दो व्यक्तियों को जो हिन्दू से मुसलमान हो गये थे शुद्ध कर हिन्दू बनाया गया। प्रचार लगन से कराया जाता है। जिला उपसभा के प्रचारक समय-समय पर यहाँ पहुंचकर प्रचार करते हैं। यहाँ उत्साही कार्यकर्ता श्री वेदपाल गुप्त मन्त्री समाज हैं।

आर्य समाज खेड़ा हटाना—स्थापना तिथि १-१-१९६० ई० संस्थापक श्री पं० केशव देव शर्मा हैं। ग्राम के अनेक प्रतिष्ठित व्यक्ति इसके सदस्य हैं। प्रचार कार्य वर्ष में कई वार चलता रहता है। मन्दिर के लिये भूमि की व्यवस्था हो गई है।

आर्य समाज सलावा—आर्य समाज का अपना मन्दिर है। अमावास्या तथा पूर्णिमा को विशेष यज्ञ होते हैं। साप्ताहिक अधिवेशन भी नियम से होते हैं।

अधिकारी—प्रधान श्री ब्रह्मसिह जी मन्त्री श्री रणजीत सिंह जी

आर्य समाज दतियाना—समाज का अपना २००० रू० की लागत का मन्दिर है। हैदराबाद एवं हिन्दी रक्षा आन्दोलन के सत्याग्रहों में भाग लिया। यहाँ के मन्त्री श्री रिसालसिंह जी हैं।

आर्य समाज मुरादनगर—स्थापना सं० १९७९ विक्रमी में की गई।

यह कस्वा मुस्लिम बाहुल्य है। समाज की स्थापना से पूर्व यहाँ हिन्दुओं की दशा दयनीय थी। श्री सागरमल तथा श्री वनवारी लाल यहाँ के मुख्य कार्यकर्ता रहे हैं। श्री सागरमल अत्यन्त उत्साही निर्भिक कार्यकर्ता थे। श्री वनवारी लाल जी ने १९२१ ई० के स्वतन्त्रता आन्दोलन में विशेष भाग लिया। सन् १९२२ ई० में मन्दिर के लिये भूमि प्राप्त की जहाँ अब दो बहुमूल्य भवन निर्मित हो गये हैं। गाजियाबाद जाकर भी श्री वनवारी लाल ने आर्य समाज का अनथक कार्य किया। आप ने अपने ज्येष्ठ पुत्र हर्षवर्धन को गुरुकुल वृन्दावन से स्नातक वनवाया।

हिन्दी आन्दोलन में आपने पूर्ण लगन से कार्य किया। २२-९-५७ को गाजियाबाद में जो हिन्दी रक्षा आन्दोलन निमित्त अखिल भारतीय कनवेन्शन हुई थी इसका भार भी आप ही पर विशेष रूप से था। आप सार्वदेशिक सभा के आजीवन सदस्य हैं।

महिला आर्य समाज गाजियाबाद—आर्य समाज के पूर्व युग में गाजियाबाद में महिला समाज की स्थापना का प्रयत्न श्रीमती रामप्यारी देवी धर्मपत्नी श्री बनारसी दास वकील श्री चन्द्रावती डा० वलवन्त राय, देवकी देवी, जानकी देवी, माता अनसूया सुन्दरी ने किया; किन्तु वास्तविक सफलता सन् १९२४ ई० में मिली जब विधिवत् महिला समाज का संगठन किया गया।

सम्प्रति सदस्याओं की संख्या ७५ है। साप्ताहिक सत्संग नियम पूर्वक होते हैं। सीताष्टमी, हरियाली तीज, आदि पर्व विशेष रूप से मनाये जाते हैं। समाज की ओर से मुहल्लों एवं ग्रामों में भी प्रचार किया जाता है। अनाथ वनिताओं की रक्षा के काम में भी श्री सरस्वती देवी, श्री तारावती आदि का प्रयत्न एवं साहस सराहनीय है।

हैदराबाद एवं हिन्दी रक्षा सत्याग्रहों में इस समाज ने प्रशन्सनीय सहयोग दिया।

आर्यवीर दल गाजियाबाद—गजियाबाद में आर्यवीरदल का संगठन प्रान्त में अपना विशेष महत्व रखता है। सन् १९४३ ई० में दल की स्थापना की गई और उसी समय से निरन्तर उत्साह एवं लगन के साथ कार्य किया जा रहा है। भारत विभाजन से पूर्व दल के मुख्य कार्यकर्ता श्री परमानन्द जी, श्री व्रजमोहनजी, श्रीलहरचन्द्र जी, श्री प्रकाशचन्द्रजी, श्री श्रीकृष्णजी, श्री वेदप्रकाश जी आर्य तथा अमरनाथ जी रहे।

विभाजन के दिनों में दल ने मुस्लिम लीगियों का डटकर सामना किया एवं शरणार्थियों की भरसक सहायता की। मेरठ आर्य महा सम्मेलन १९५१, मथुरा दीक्षा शताब्दी १९५९ तथा देहली आर्य महासम्मेलन १९६१ के अवसरों पर अपने कार्यकर्ताओं को भेजकर सेवा प्रवन्ध कार्यों को दक्षतापूर्वक किया।

सन् १९५९ की यमुनाबाढ़ के अवसर पर प्रशंसनीय साहसपूर्ण कार्य किया। बाढ़ के कन्ट्रोल आफ़िस का सन्चालन एवं अन्य स्वयं सेवक दलों का नेतृत्व इस दल के ही वीर सैनिकों के हाथ में था। हिन्दी रक्षा आन्दोलन में पूरे मनोयोग के साथ दल ने कार्य किया तथा गोवा सत्याग्रह के लिये अपना एक जत्था तैय्यार

किया। सत्याग्रह बन्द हो जाने के कारण वीरों को बड़ी खिन्नता हुई किन्तु गोआ पर अपना अधिकार हो जाने पर वह खिन्नता प्रसन्नता में बदल गई। दल ने अनेक बौद्धिक शिविरों का भी आयोजन किया। दल के वर्तमान अधिकारी निम्न हैं।

१. श्री कृष्णजी नगर संचालक २. श्री वेदप्रकाशजी सहायक सं० ३. श्री सत्य पालजी बौद्धिक नायक व कोषाध्यक्ष, ४. श्री रघुवर दयालु सिंघल, संरक्षक।

वीरदल के विभिन्न कार्यक्रमों में श्री ओंमप्रकाश त्यागी, श्री सुखदेव शास्त्री, श्रीनैपाल सिंह आर्य, श्री चन्द्रप्रकाश, श्री जगदेवजी सिद्धान्ती एम० पी०, श्री बाल दिवाकर हसं, श्री पुरुषोत्तम लाल, आचार्य देवव्रत एम० ए०, श्री रघुवीर सिंह शास्त्री, श्रीरतन सिंह जी एम० ए०, श्री वेदभानु जी, श्री बा० पूर्ण चन्द्रजी श्री काशी नाथ शास्त्री ने समय समय पर पधार कर अपने भाषणों से आर्यवीर ऐडवोकेट, दल के कार्यकर्ताओं के उत्साह एवं ज्ञान का सवंर्धन किया।

आर्य समाज दौराला—स्थापना तिथि मार्च १९२३ ई०।

आर्य समाज के प्रारम्भिक युग के महारथी स्व० प्रधान रामसिंहजी थे। दौराला तथा निकट के ग्रामों में आर्य समाज का व्यापक प्रचार किया गया।

सन् १९४१ ई० में दौराला शुगर मिल्स वर्क्स के संस्थापक एवं प्रथम जनरल मैनेजर स्व० चौ० मुख्त्यार सिंहजी की प्ररणा से समाज में पुनः प्रगति आई। सन् १९४३ में चौधरी तुलसीराम ने अपनी ७ विस्वा भूमि मन्दिर के निमित्त दान कर दी। भवन बनना शुरू हुआ और सन् १९४५ में बनकर तैय्यार हो गया।

सन् १९५४ ई० में निकट के ग्राम मटौर में मल्हू सिंह आर्य कन्या पाठशाला की स्थापना हुई जो अब जूनियर हाई स्कूल बन गया है और सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त है।

अधिकारी—प्रधान श्री पं० सत्यभूषण वेदालंकार, मन्त्री श्रीरामेश्वरदयालु, विद्यालय प्रबन्धक श्री रामदास जी।

आर्य समाज गाजियाबाद—प्रगतिशील समाज है। अपना विशाल मन्दिर है। शम्भूदयाल इन्टर कालेज, आर्य कन्या वैदिक इण्टर कालेज आदि शिक्षा संस्थायें हैं। इसी समाज के चौ० चरण सिंह जी मन्त्री उ० प्र० सरकार कभी प्रधान रहे हैं। लाला हरशरणदास जी इस समाज के पुराने महारथी हैं। वर्तमान कार्यकर्ताओं में श्री जनार्दन जी, श्री रत्न सिंह जी एम० ए० आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

आर्य समाज जीतपुर—स्थापना तिथि १ मई १९४६ ई०। ५००० की लागत का पक्का मन्दिर है। शहीद स्व० परमानन्दजी का समाज को विशेष सहयोग रहा। सत्याग्रह आन्दोलन में तन-धन से सहयोग प्रदान किया। जगतसिंह आर्य आरम्भ से आज दिन तक समाज के मंत्री हैं। समाज प्रगति शील है।

आर्य समाज ढहाना—स्थापना तिथि १७-६-१९५७ ई०। आर्य समाज की धार्मिक परीक्षाओं की ओर विशेष ध्यान रहता है; अनेक विद्यार्थी पं० हरस्वरूप शर्मा शास्त्री द्वारा तैय्यार किये जा रहे हैं। वार्षिकोत्सव होता है।

ठा० अमर सिंह ने शास्त्रार्थ भी किया। प्रभाव अच्छा रहा।

जिला बुलन्दशहर

बुलन्दशहर वह सौभाग्यशाली जिला है जिसके अनेक स्थानों को महर्षि दयानन्द ने अपने चरणों से पवित्र किया है। गंगातट का कर्णवास स्थान तो महर्षि की साधना का एक सुन्दर केन्द्र रहा है। सं० १९२३ से १९३३ तक की अपनी प्रचार यात्राओं में ऋषि ने कर्णवास में सात बार पदार्पण किया है और कई चतुर्मास वहाँ तप एवं साधना में व्यतीत किये हैं।

बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश के उन इने-गिने ६ जिलों में से एक है जिसके गाँव-गाँव में ऋषि का दिव्य नाद गून्जा है। जिले का कौन-सा वह ग्राम है जहाँ आर्य समाज का प्रचार नहीं हुआ है। देश की स्वाधीनता के संग्रामों में भी बुलन्दशहर ने बढ़कर बलिदानों का तांता लगाया है। इस जिले के कई सौ आर्य सामाजिकों ने कारागारों की कठोर यातनायें सही हैं। भारतवर्ष में सबसे अधिक आर्य समाज के प्रचारक यदि किसी जिले ने दिये हैं तो वह बुलन्दशहर है। शास्त्रार्थ महारथी स्वामी दर्शनानन्दजी महाराज ने भारत के सर्वप्रथम गुरुकुल सिकन्दराबाद की स्थापना इसी जिले में की थी।

स्व० सेठ मदनमोहनजी एम० ए० प्रधान उ० प्र० एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, शास्त्रार्थ महारथी ठाकुर अमरसिंहजी, महान् प्रचारक कुँवर सुखलालजी आर्य मुसाफिर, ठाकुर तेजसिंहजी, कर्मवीर पं० जियालाल अजमेर, श्री बाबूलालजी एम० एस० सी०, सेवामुक्त मध्यभारत सर्वोच्च शिक्षाधिकारी, प्रधान मध्यभारत आ० प्र० नि० सभा ग्वालियर, मध्यभारत आ० प्र० नि० सभा के मुख्य मन्त्री श्री भारतभूषण त्यागी एम० ए०, प्रधानाचार्य दयानन्द कालेज ग्वालियर एवं श्री ओमप्रकाश पुरुषार्थी सेनापति आर्यवीर दल, महाशय शिवलालजी आदि इसी जिले की विभूतियाँ हैं।

सभा से सम्बन्धित आर्य समाजों की संख्या बुलन्दशहर में ५१ हैं। अन्य अनेक आर्य समाज भी हैं जिनका सम्बन्ध अभी सभा से नहीं हो पाया है। जिला आर्य उप-प्रतिनिधि सभा को स्थापित हुये बहुत वर्ष व्यतीत हो चुके हैं और इस उप-सभा द्वारा निरन्तर ग्रामों में प्रचार की व्यवस्था चलती रहती है।

आर्य समाज बुलन्दशहर—जिले का सबसे पुराना आर्य समाज है।

नगर की सामाजिक सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक प्रगतियों में इसका विशेष हाथ रहा है। ग्रामों में प्रचार कार्य में भी यह समाज प्रयत्नशील रहता है। कन्याओं की शिक्षा के लिये एक उच्च माध्यमिक विद्यालय बहुत समय से समाज की संरक्षता में मन्दिर में संचालित है। महाशय शिवलालजी आदि इसके प्रमुख कार्य-कर्ता हैं।

आर्य समाज खुर्जा—स्थापना तिथि सन् १८९८ ई०।

पुराना प्रगतिशील आर्य समाज है। लगभग ४०,००० रु० की लागत का विशाल मन्दिर है। कन्याओं की शिक्षा के लिये एक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय चल रहा है। इस समाज ने अनेक बड़े-बड़े शास्त्रार्थ अपने जीवन में किये हैं। शुद्धि तथा अछूतोद्धार के कार्यों में अग्रसर रहा है।

आर्य समाज सिकन्दराबाद—स्थापना तिथि १८८८ ई०।

अपना लगभग २५,००० रु० की लागत का विशाल मन्दिर है। समाज सुधार के कार्यों में अग्रसर रहा है।

आर्य समाज गुलावठी—स्थापना तिथि १-१-१९२५ ई०।

इस समाज का अपना मन्दिर है जिसका निर्माण सन् १९४० ई० में किया गया। इस समाज द्वारा शुद्धि क्षेत्र में पर्याप्त कार्य किया गया है। १५० ईसाइयों की शुद्धि की। स्वामी श्रद्धानन्दजी, लाला देशबन्धु गुप्त, स्वामी रामानन्दजी एवं कुँवर सुखलालजी ने विशेष भाग लिया। समाज का रजतजयन्ती महोत्सव बड़ी धूम-धाम के साथ मनाया गया।

आर्य समाज के अन्तर्गत आर्यकुमार सभा भी अपना नवयुवकों में कार्य कर रही है तथा एक आर्य कन्या पाठशाला भी समाज के जन्मकाल से ही चल रही है। जिसने अब उच्च माध्यमिक विद्यालय का रूप धारण कर लिया है। छात्रा संख्या ५५० है। भवन का अनुमानिक मूल्य ४०,००० रु० है।

समाज के वर्तमान प्रधान डा० अमरसिंह व मन्त्री श्री छेदालालजी हैं।

आर्य समाज जहाँगीराबाद—की स्थापना नवम्बर १८९७ ई० में की गई। समाज का अपना मन्दिर बनकर तैयार हो गया है। इस मन्दिर के निर्माण कार्य में अनेक गण्यमान्य स्थानीय महानुभवों का हाथ रहा है। समाज मन्दिर में कई वर्ष तक संस्कृत पाठशाला भी चलती रही है। समाज के वार्षिकोत्सव प्रायः होते रहते हैं। आर्य समाज के दिग्गज विद्वानों के यहाँ भाषण हुये हैं। समाज की ओर से मेलों में प्रचार होता रहा है। आर्य समाज की प्रगति में विशेष सहायक श्री सत्येन्द्रवन्धु प्रतिष्ठित सभासद हैं। ठा० बिहारीसिंह कोठरा, पं० रामप्रसाद जोशी, ठा० टीकमसिंहजी ने ३० वर्ष तक यहाँ अनवरत प्रचार किया है।

वर्तमान प्रधान पं० रामशरण शर्मा व मन्त्री ला० मुकटलालजी हैं।

आर्य समाज करौरा—स्थापना तिथि २-२-१९३१ ई०।

समाज का अपना मन्दिर है जिसका मूल्य ४००० रु० है। एक पुस्तकालय है जिसकी पुस्तकों की लागत ६०० रु० है। समय-समय पर वार्षिकोत्सव होते रहते हैं। दलितोद्धार का विशेष कार्य किया। अनेक दलितवर्ग के बन्धु समाज के सदस्य भी हैं। एक मुस्लिम महिला की शुद्धि कर उसका हिन्दुओं में विवाह किया। सदस्य संख्या ५६ है।

वर्तमान अधिकारी प्रधान पं० मेवारामजी, मंत्री श्री हरपालसिंहजी।

आर्य समाज वीरगाँव ढिटौडा—स्थापना सन् १८९२ ई० में की गई।

निकट के ११ ग्रामों में निरंतर यज्ञ एवं भजनों द्वारा प्रचार किया जाता रहा है। क्षेत्र में समाज का प्रभाव सुन्दर है। इस प्रचार कार्य में स्व० श्री ठा० कुँवरसेन प्रधान एवं ठा० बिहारीसिंह मन्त्री हवन प्रचारिणी सभा का प्रयत्न सराहनीय रहा है। समाज को शिथिल होता देख जिले के प्रमुख आर्य समाज के कार्यकर्ता श्री सत्येन्द्र बन्धु ने अपना विशेष समय लगाकर इसको जाग्रत किया है। वर्तमान प्रधान कुँवर समर्थसिहजी, मन्त्री कुँवर अमरसिहजी।

आर्य समाज चौंढेरा—यह समाज १९४९ ई० में स्थापित हुआ। शुद्धियाँ तथा अन्तर्जातीय विवाह किये गये। वार्षिकोत्सव प्रतिवर्ष उत्साह से मनाया जाता है। समीपवर्ती गाँवों में समाज की ओर से प्रचार किया जाता है। साप्ताहिक अधिवेशन एक स्थान पर न होकर प्रत्येक गृहस्थी के यहाँ होते हैं। समाज मन्दिर बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है। श्री डालचन्द गोवर्धनदासजी ने अपना कुल मकान तथा एक हजार नकद रुपया समाज को अर्पित किया है। श्री शिवचरनलालजी आर्य मुसाफिर शुद्धि कार्य बड़े उत्साह से करते हैं।

आर्य समाज जेवर—यहाँ के निवासी स्वर्गीव सेठ भगवतदयालजी ने बम्बई से आकर १९७५ वि० में इस समाज की स्थापना की। उक्त सेठजो (थाकड़वारो) बम्बई आर्य समाज के मन्त्री रह चुके थे। साप्ताहिक अधिवेशन व मासिक सम्मेलन तथा वार्षिकोत्सव नियमित रूप से होते हैं। समाज की ओर से शुद्धि कार्य भी बड़े उत्साह से हुआ। हैदराबाद सत्याग्रह में इस समाज की ओर से पच्चोस आर्य-वीरों का एक जत्था सम्मिलित हुआ था। इन वोर सत्याग्रहियों में प० किशन-लालजी और पं० शिवलालजी व पं० रामस्वरूपजी के नाम विशेप रूप से उल्लेख-नीय हैं। सन् १९४१ ई० में स्थानीय हिन्दू मुस्लिम कलह के समय शान्ति स्थाप-नार्थ इस समाज ने प्रशंसनीय प्रयत्न किया। दानवीर सेठ भगवतदयालजी एवं सेठ छुट्टनलालजी ने धन द्वारा अच्छी सहायता की। हिन्दी-सत्याग्रह और हैदराबाद सत्याग्रह में सब प्रकार की सहायता दी।

आर्य समाज कौंदू—यह आर्यसमाज १९५० ई० से प्रचार कार्य कर रहा है। वार्षिकोत्सव उत्साह पूर्वक मनाये जाते हैं। महाशय छिद्दासिंह आर्य और महाशय जैन्तीप्रसाद शर्मा सतत सक्रिय सहयोग करते रहते हैं। श्रीमती हुकुम कौर आर्य आर्य समाज की विदुपी और कवियत्री सदस्या हैं। इन्होंने आदर्श लहरी नामक गीतों की पुस्तक लिखी है। इसे यह मुफ्त वितरित करती रहती हैं।

आर्य समाज दनकौर—इस समाज का कार्य सन् १९३० ई० से आरम्भ हुआ। सन् १९२४ में श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज इस नगर में पधारे और आपने कितने ही मुसलमानों की शुद्धि की। निज का समाज मन्दिर नहीं है। सब कार्य बड़े उत्साहपूर्वक होता है। स्वामी अनन्तानन्दजी बड़े परिश्रम से प्रचार कार्य करते हैं।

आर्य समाज डिबाई—यह समाज सन् १९०० ई० में ठा० लखपतिसिंह आदि के प्रयत्न से स्थापित हुआ। इन्हीं ठाकुर साहब के पारिवारिक जनों ने मन्दिर के लिये भूमि दान दी जहाँ समाज का मन्दिर बनवाया गया।

प्रारम्भिक विशिष्ट कार्यकर्ताओं में श्री पं० फूलचन्द, ठा० गणपतसिंह आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

महत्वपूर्ण शुद्धि—स्वर्गीय पं० लेखरामजी महर्षि जीवन सम्बन्धी घटनाओं का पता चलाने के लिये इधर पधारे थे। प्रशंसित पं० जी के कर्णवास, राजघाट वेलोन आदि स्थानों पर भाषण हुये। पिलखन निवासी मेवाती मुसलमान हैदरखान ने पं० जी के भाषणों से प्रभावित होकर पण्डित जी द्वारा बालगोपाल सहित

वैदक धर्म की दीक्षा ली और ठा० हीरासिंह नाम रक्खा गया। मेवाती मुसल्मानों द्वारा उनको नाना प्रकार के कष्ट दिये गये; किन्तु इस बीर ने सबका सहर्ष सामना किया और जीवन की अन्तिम घड़ी तक दृढ़ आर्य बने रहे और आर्य समाज का कार्य करते रहे। हैदराबाद सत्याग्रह में इस समाज ने धन एवं जन से पूर्ण सहयोग दिया। पं० शंकरदत्त शर्मा ने गांव-गांव घूमकर जनता में चेतना उत्पन्न की जब पं० धुरेन्द्र शास्त्री चतुर्थ सर्वाधिकारी इधर पधारे तो उनका स्टेशन पर विशेष स्वागत किया गया और श्री विचारानन्द श्री शंकरलाल गौतम आदि एक दर्जन सत्याग्रही तथा १००० रु० उनको भेंट दिये गये। हिन्दी रक्षा आन्दोलन में पूर्ण सहयोग दिया। यहां आर्य समाज में अनेक प्रभावशाली उत्सव एवं शास्त्रार्थ हुये हैं। सन् १९४० ई० में श्री पं० देवेन्द्रनाथ शास्त्री, पं० कालीचरण जी पं० शिवशर्माजी ने यहाँ पं० अखिलानन्द पं० कालूराम शास्त्री, पं० गंगाविष्णु के साथ शास्त्रार्थ किये।

वर्तमान प्रधान श्री पं० जगन्नाथ प्रसाद मन्त्री श्री पं० शंकरदत्त शर्मा

आर्य समाज कलौन्दा—सन् १९३९ ई० में यहां से निम्न ७ सज्जन जो पक्के आर्य विचारों के हैं हैदराबाद सत्याग्रह में जत्था लेकर गये। सत्याग्रह की समाप्ति पर ग्राम पहुँचते ही आर्य समाज की स्थापना की। बालकों की शिक्षा के निमित्त एक पाठशाला खोली गई शनैः शनैः इस पाठशाला ने उच्च माध्यमिक विद्यालय का रूप धारण कर लिया है। पाक्षिक यज्ञ सत्संगों की व्यवस्था है। पर्व सब मनाये जाते हैं। सदस्यों में स्वाध्याय एवं यज्ञ करने की विशेष आस्था है। सम्प्रति समाज के मन्त्री श्री सरजीतसिंहजी हैं।

आर्य समाज दादरी—इस समाज की स्थापना सन् १९४७ ई० में हुई। मूल कार्यकर्ता श्री वैद्य यशपाल शास्त्री हैं। आपके सहयोगी श्री तेजपाल मास्टर व श्री लाजपतरायजी रहे। फरवरी १९४८ ई० में आ० स० का प्रथम वार्षिकोत्सव किया गया। उत्सव में श्री पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, स्वामी परमानन्दजी आचार्य ज्योतिस्वरूप आदि के भाषण हुये।

१२-२-५५ ई० को स्वामी ध्रुवानन्दजी के कर कमलों से आर्य मन्दिर का शिलान्यास कराया गया।

हिन्दी सत्याग्रह में पं० यशपालजी ज़िला बुलन्दशहर के सत्याग्रही जत्थे के नेता बनकर गये और अम्बाला जेल की यात्रा की।

अन्यप्रमुख समाज

बेलोन—आर्य मन्दिर है। जिले का विराट् सम्मेलन यहां पीछे हुआ था। इस ग्राम में स्वामीजी महाराज ने पदार्पण किया था।

अनूपशहर—पुराना आर्यसमाज है। यहां आर्य कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय है। इस स्थान में भी ऋषि जीवन में दो वार पधारे।

ज़िला अलीगढ़

यह ज़िला भी उत्तर प्रदेश के उन इने गिने ज़िलों में से एक है जिसमें आर्य समाज का सन्देश गांव-गांव पहुंचा है। ज़िले में सभा से सम्बन्धित आर्य समाजों की संख्या ८४ है तथा इसके अतिरिक्त अन्य अनेक छोटे-छोटे समाज हैं जिनका अभी तक सभा से संबंध स्थापित नहीं हो पाया है। देश के स्वाधीनता संग्रामों में यह ज़िला अनेकों से आगे रहा है। भारी संख्या में आर्य समाज के कार्यकर्ताओं ने देश की स्वतन्त्रता हेतु बलिदान किया है।

ज़िले के केन्द्र स्थान अलीगढ़ में महर्षि का दो बार पदार्पण हुआ तथा ज़िले के अन्दर हाथरस, मुरसान, छलेसर एवं अतरौली में भी महर्षि ने पधार कर वैदिक ज्योतिः जगाई है।

इस जिले को भी बुलन्दशहर की भाँति यह सौभाग्य प्राप्त है कि इसने भी अधिक संख्या में आर्य समाज के भजनोपदेशक उत्पन्न किये हैं, तथा प्रान्त को अनेक वरिष्ठ नेता एवं विद्वान् दिये हैं यथा स्वामी ध्रुवानन्द सरस्वती, स्वामी ब्रह्मानन्द दण्डी, पं० शिवकुमार शास्त्री, पं० सुरेन्द्रशर्मा गौड़, बा० पीतमलाल जी एम० ए०, कवि सम्राट पं० नाथु राम शंकर, माता लक्ष्मी देवी, ठा० खमान सिंह, श्रीप्रेमचन्द शर्मा एम० एल० सी०, पं० बाबूलाल दीक्षित एम० ए०, डाक्टर महावीर प्रसाद प्रधान आ० प्र० सभा मध्य भारत आदि।

वीतराग स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज का अमर कीर्ति स्तम्भ साधु आश्रम हरदुआगंज इसी ज़िले में कालन्दी तट पर स्थापित है।

वैदिक आश्रम अलीगढ़, जहाँ पं० गंगा प्रसाद जी उपाध्याय एम० ए०, डा० महावीर सिंह जी आदि ने रहकर शिक्षा प्राप्त की है, इसी ज़िले में है।

उत्तर प्रदेश का कन्या गुरुकुल महाविद्यालय हाथरस भी इस ज़िले में स्थित है जिसने सैकड़ों कन्याओं को उच्चकोटि की संस्कृतादि की विदुषियां बनाई हैं।

आर्य समाज अलीगढ़—इस समाज की स्थापना सन् १८८५ ई० हुई। इसके प्रारम्भिक युग के प्रशंसनीय कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री मूलचन्द आर्य, श्री नारायणदास जी, पं० सुन्दरलाल जी, ला० मिट्ठनलाल जी, श्री कृष्णलाल जी, ठाकुर मुकुन्द सिंह आदि रहे हैं। समाज मन्दिर के निर्माण की रूपरेखा सन् १९०८ ई० से प्रारम्भ हो गई। सन् १९२० ई० में श्रद्धेय स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज के कर कमलों द्वारा मुख्य भवन की आधार शिला रखी गई। मन्दिर के निर्माण में

५,००० रु० से ऊपर धन दान द्वारा प्राप्त कर लगाया गया। भवन निर्माण में श्री सुरेन्द्र कुमार जी, श्री नारायण दास, श्री रूपवती जी, श्री भगवती देवी, श्री विश्म्भर दयालु वकील, श्री क्षेमाचन्द्र गुप्ता। ला० वुद्धसेन जी, वावू पीतमलाल वकील, श्री कन्हैयालाल जी, श्री वनवारीलाल वर्मा, श्री भोलानाथ जी, विजयपाल जी, श्री चन्द्रसेन जी व श्री व्रतपाल जी आदि के प्रयत्न सराहनीय हैं।

समाज की ओर से धर्म प्रचार का प्रशंसनीय कार्य श्री म० रामनारायण जी, पं० वेदनिधि जी, म० कृष्णचन्द जी ने किया। यह समाज शुद्धि आन्दोलन, समाज सुधार आदि कार्यों में सदा अग्रसर रहा है।

हैदरावाद सत्याग्रह एवं हिन्दी रक्षा आन्दोलन में भी इसका प्रशंसनीय सहयोग रहा है। समाज के वर्तमान प्रधान श्री सुरेन्द्र कुमार जी तथा मंत्री श्री जयनारायण आर्य हैं।

आर्य स्त्री समाज अलीगढ़—इस समाज की स्थापना सन् १९०८ ई० में श्रीमती सरस्वती देवी द्वारा हुई। जिन देवियों ने मन्दिर निर्माण के निमित्त २५ सहस्र रु० स्वयं दिया है अथवा सञ्चित किया उनमें श्री कृष्ण कुमारी, श्री गोपी देवी, श्री गुलाव देवी, श्री ब्रह्मा देवी, श्री हेमलता देवी, श्री गायत्री देवी, श्री सूरजबाई, श्री आशारानी, श्री शान्ति देवी एवं श्री सरला देवी के नाम उल्लेखनीय हैं।

डी० ए० वी० कालेज, अलीगढ़—इस संस्था ने सन् १९१३ में हाई स्कूल की मान्यता प्राप्त की और राजा महेन्द्र प्राप सिंह जी प्रदत्त भूमि में ले जाया गया। सम्प्रति यह इंटर कालेज के रूप में विद्यमान है और शीघ्र ही इसको डिगरी कालेज बनाने की योजना है।

इसके कुशल परिश्रमी मंत्री श्री व्रतपाल जी आर्य हैं।

आर्य वीर दल की स्थापना सन् १९४६ ई० में श्री रुद्रमित्र जी शास्त्री की प्रेरणा से हुई। इस समय में इस मुस्लिम बाहुल्य नगर में मुसलमानों की ओर से हिन्दुओं को नाना प्रकार से सताया जाता एवं भयभीत किया जाता था। आर्य वीर दल ने संगठित होकर इस आतंक को समाप्त करने का भरसक प्रयत्न किया। सम्प्रति दल के सदस्यों की संख्या २० है इसके संचालक श्री जयनारायण आर्य हैं।

आर्य समाज मुरसान—इस ऐतिहासिक नगर में महर्षि ने अपने जीवन में दो बार पदार्पण किया। यहां राजा साहिब स्वर्गीय टीकमसिंह जी के आमंत्रण पर पधारे थे और महान् संयोग की बात है कि इन्हीं राजा साहिब के आमंत्रण पर

मथुरा से सोरों जाते हुए पूज्यपाद दण्डी विरजानन्द जी महाराज ने भी इस नगर को पवित्र किया था। मुरसान में भाषण देते हुए महर्षि ने 'वेदाध्ययनं सर्वेभ्यः' की घोषणा की थी। महर्षि के प्रभाव से श्री बाबूलाल जी नागर ने जो नगर के प्रसिद्ध पौराणिक कर्मकाण्डी विद्वान् थे अपनी पौराणिक वृत्ति को त्यागकर आर्य समाज में प्रवेश किया और जीवन पर्यन्त वैदिक धर्म का प्रचार किया। आर्य समाज मुरसान की स्थापना सन् १८९१ ई० में की गई। सन् १९३१ ई० में यहाँ आर्य समाज मन्दिर की प्रतिष्ठा की गई।

इस समाज के निम्न सज्जन उल्लेखनीय प्रतिष्ठित कार्यकर्ता रहे हैं :—

श्री वनवारी लाल चतुर्वेदी, श्री भगवान प्रसाद पचौरी, ठा० रामसिंह, सेठ रामगोपाल राठी, पं० शिवदत्त शर्मा, पं० राधावल्लभ मिश्र, श्री बाबूलाल निर्भय वर्तमान अधिकारी श्री राधाबल्लभ मिश्र प्रधान एवं श्री पूरनमल मंत्री हैं।

आर्य समाज हाथरस—हाथरस नगर का भी यह सौभाग्य है कि क्रान्तिकारी युग पुरुष दयानन्द का यहां दो बार पदार्पण हुआ और जीवन में क्रान्ति उत्पन्न करने वाले आध्यात्मिक प्रवचन हुए।

सन् १९१० ई० को नियमित रूप से आर्य समाज की स्थापना की गई। श्री डा० कृष्ण प्रसाद जी, चौवे कन्हैयालाल जी, बाबा श्री डालचन्द जी तथा श्री पन्नालाल जी आदि के प्रयत्न से सन् १९१६ ई० में विशाल आर्य भवन बनकर तैयार हो गया। मन्दिर निर्माण में लगभग एक लक्ष रुपया लगा। आर्य समाज से संबंधित महिला आर्य समाज भी है जिसका अपना प्रथक मंदिर भी है। जो सन् १९५६ में यहां के यशस्वी कार्यकर्ता श्री शंकरलाल मुख्त्यार की देखरेख में तैयार हुआ।

महिला समाज की प्रधाना श्रीमती हरदेवी शर्मा हैं जो श्री प्रो० तोताराम एम० एस० सी० की पत्नी है तथा मन्त्रिणी श्रीमती गुलाब देवी जी हैं।

दर्शनानन्द वैदिक पुस्तकालय—स्वामी दर्शनान्द्र सरस्वती जी की स्मृति में आर्य समाज ने एक पुस्तकालय भी स्थापित किया हुआ है जिसमें वैदिक ग्रंथों का अच्छा संग्रह है।

सम्प्रति इस पुस्तकालय के संचालक श्री दुर्गाचरण दत्त जी हैं।

आर्य कुमार सभा—नवयुवकों तक वैदिक सन्देश पहुंचाने की भावना से यहां आर्य कुमार सभा की स्थापना की गई है।

इसके प्रधान श्री रघुनन्दन शर्मा एवं मंत्री श्री विजय देव शर्मा तथा कोषाध्यक्ष श्री सुरेशचन्द्र वैद्य आयुर्वेद शिरोमणि हैं।

आर्य समाज हाथरस की अपनी २० दुकानों से किराए की अच्छी आमदनी है जिसे प्रचारार्थ कार्यों में व्यय किया जाता है। इस समाज ने नोआखाली काण्ड, हैदराबाद सत्याग्रह, सिन्ध सत्यार्थ प्रकाश-रक्ष, हिन्दी रक्षा आन्दोलनों में सराहनीय कार्य किया है। सन् १९५९ ई० में इस समाज ने बड़े पैमाने पर अपनी स्वर्ण जयन्ती मनाई तथा इसी अवसर पर आ० प्र० सभा का बृहत् अधिवेशन भी हुआ। श्री पं० शिव देव एडवोकेट प्रधान एवं श्री पं० प्रेमचन्द शर्मा एम० एल० सी० मंत्री का कार्य सम्पादन कर रहे थे।

श्री प्रेमचन्द्र शर्मा एम० एल० सी० यहां के एक विशिष्ट उदीयमान नेता हैं जिनका परिचय पाठक अन्यत्र पढ़ेंगे।

समाज के दिवंगत कार्यकर्ताओं में श्री ठा० मलखान सिंह उपमंत्री उत्तर प्रदेश सरकार एवं डाक्टर कृष्ण प्रसाद जी तथा बाबू नारायण दत्त जी के नाम उल्लेखनीय हैं तथा वर्तमान कार्यकर्त्ताओं में प्रो० तोताराम जी श्री विद्यासागर शर्मा, श्री शंकर लाल जी व वर्तमान पुरोहित श्री पं० दुर्गादत्त जी के नाम उल्लेखनीय हैं।

प्रधान श्री प्रेमचन्द शर्मा एम० एल० सी० मंत्री श्री हरि शंकर शर्मा हैं।

आर्य समाज अतरौली—आर्य समाज अतरौली की स्थापना ३ अक्टूबर सन् १८९१ में की गई। अतरौली को भी यह सौभाग्य प्राप्त है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इसको अपने पदार्पण से पवित्र किया। प्रारम्भिक युग के कार्यकर्त्ता श्री ठाकुर रघुनाथ सिंह, बा० कालीचरण, पं० बद्रीदत्त, बा० संतलाल आदि रहे हैं। पूर्व एक छोटा सा मंदिर था बाद में वेद-मंदिर नाम से समाज का भवन ८,०००) रुपये की लागत से बनवाया गया।

प्रधान पं० राजेन्द्र जी, रानी सत्यवती एवं ठा० महेन्द्र पाल सिंह जी के नाम विशेष दान देने के कारण उल्लेखनीय हैं। पं० राजेन्द्र जी अच्छे विचारक एवं लेखक हैं। आपने अनेक ग्रंथों का निर्माण किया। वेद मंदिर प्रकाशन के आप संस्थापक हैं।

आर्य समाज कचौरा—स्थापना सन् १९०५ ई० में की गई।

समाज की स्थापना में श्री बलदेव सिंह जी का विशेष हाथ रहा है। सन् १९९२ ई० को यहां अनेक वर्गों के युवकों के यज्ञोपवीत संस्कार कराये गये जिससे

विशेष स्फूर्ति उत्पन्न हुई। विधवा-विवाह एवं अस्पृशता निवारण आदि कार्यों में अग्रसर रहने के कारण यहां के कार्यकर्त्ताओं को पर्याप्त कष्ट उठाने पड़े हैं। सन् १९४४ ई० में मंदिर निर्माण कार्य आरम्भ हुआ जिस पर अब तक ९००० रुपया व्यय हो चुका है।

सन् १९४५ ई० को यहां स्वामी करपात्री जी के शिष्य पं० चन्द्रशेखर शास्त्री के साथ पं० विहारी लाल शास्त्री काव्यतीर्थ का मूर्ति पूजा व श्राद्ध विषय पर प्रभावशाली शास्त्रार्थ हुआ।

१९४६ ई० में यहां आर्य वीर-दल की स्थापना विधिवत् की गई। श्री निरन्जनदेव आर्य, श्री नाथूराम आर्य, श्री शिवप्रसाद आर्य ने अन्य स्थानों पर भी दल की शाखाएं स्थापित कीं तथा दीक्षा शताब्दी पर काम किया। सन् १९४८ ई० से यहां आर्यकुमार सभा भी स्थापित है। सन् ५३ में यहां एक संस्कृत पाठशाला भी स्थापित हो गई।

वर्तमान प्रधान श्री रामचन्द्र वर्मा मंत्री श्री पन्नालाल वैद्य हैं।

आर्य समाज इगलास—स्थापना सन् १९११ ई० में श्री बृजबल्लभ किशोर सब रजिस्ट्रार तथा मुंशी रामस्वरूप पेशकार द्वारा हुई। प्रति वर्ष वसंत पञ्चमी पर वार्षिकोत्सव होता है। प्रभात फेरी व नगर कीर्तन निर्भीकतापूर्वक किये जाते हैं। दो विशेष शास्त्रार्थ भी पौराणिकों के साथ सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए। अनेक ईसाई मुसलमानों की शुद्धियां भी की गईं। इस समाज के उत्साही सज्जन श्री शोभाराम जी एवं श्री उत्तमचन्द्र जी सन्यासाश्रम की दीक्षा लेकर स्वामी भूमानंद जी एवं स्वामी योगानंदजी बने और निरंतर प्रचार कार्य करते रहते हैं।

यहां के प्रमुख कार्यकर्ताओं में श्री छेदीलालजी, श्री बनवारीलाल शार्दा, पं० नारायण प्रसाद जी, वा० गुलाबराय जी आदि हैं। श्री छेदालाल जी तथा उनके पिता श्री देवी प्रसाद जी को सरकार ने आर्यसमाजी होने के कारण पटवारगिरी से पदच्युत कर दिया। अस्पृश्यता आन्दोलन को प्रगति देने के कारण बिरादरी बहिष्कार का सामना अनेक कार्यकर्ताओं को करना पड़ा है। समाज का अपना पक्का मन्दिर बन चुका है। सन् ९९३६ में समाज की रजत जयन्ती बड़े समारोह के साथ की गई।

आर्य समाज काज़िमाबाद—इस आर्य समाज की स्थापना महर्षि के निधन के चार वर्ष बाद ही हो गई थी। स्थापना के समय नाना बाधाओं का सामना करना पड़ा। स्थापना करने वालों में श्री खमानीराम जी, चौ० मक्खनलाल जी, ला०

विद्याराम जी, ला० रामप्रसाद जी, ला० वृन्दावनदास जी आदि सज्जन श्री ला० मुकन्दीलाल संस्थापक के विशेष सहयोगी थे। संस्थापक महोदय ने एक पुस्तकालय भी स्थापित किया। गुरुकुल वृन्दावन को पुष्कल दान दिया। संस्थापक के निधन पर चौ० मक्खनलाल जी ने विशेष उत्साह से कार्य किया। यहां एक जूनियर हाई स्कूल समाज भवन में चल रहा है।

वर्तमान प्रधान श्री सोमेन्द्र आर्य मन्त्री श्री इन्द्रपाल वार्ष्णेय हैं।

आर्य समाज आलमपुर—स्थापना सन् १९४६ में हुई। संस्थापक पं० क्षेत्रपाल शर्मा उपदेशक सभा। सन् १९५३ में स्वामी हरहरानन्द जी ने विशेष रूप से एक यज्ञ कराया जिससे ग्राम का वातावरण ही बदल गया। ४००० रुपया व्यय करके बड़ा उत्सव किया गया। स्वामी ब्रह्मानन्द जी दण्डी यज्ञ के ब्रह्मा एवं प्रबंधक स्वामी हरिहरानन्दजी साधु आश्रम हरदुआगंज थे।

इस समाज के तीन मुसलमान सज्जन भी सदस्य हैं जिनके नाम श्री लाल खां, श्री अमीर खान व श्री अलाउद्दीन हैं। रक्षाकोष एवं हीरक जयन्ती के लिए ६०० रु० व ५० रु० क्रमशः भेजा।

श्री विजयपाल सिंह प्रधान, श्री नौबतराम जी मन्त्री हैं।

आर्य समाज इनायतपुर बझेड़ा—यह समाज बहुत पुराना है यहां आर्य समाज के बड़े प्रचारक पं० नन्दकिशोर देव शर्मा, पं० मुरारीलाल शर्मा आदि ने पधार कर नवजीवन का संचार किया है। यहां के पुराने उत्साही कर्मठ कार्यकर्ता ठा० टीकम सिंह व जयराम सिंह जी हैं। इन्होंने निकट के ग्रामों में भी आर्य समाज का विशेष प्रचार कराया है।

आर्य समाज मई—स्थापना तिथि ११ अक्टूबर १९२४ ई०। समाज का अपना मंदिर है। इस समाज ने ४५ शुद्धियां एवं १५ विधवा विवाह कराये हैं। कुरीति निवारण, समाज-सुधार के कार्यों में भी यह समाज अग्रसर है। सरदारसिंह आर्य के परिश्रम से यह काम सिद्ध हुये हैं।

आर्य समाज न्हौटी मडराक—स्थापना सन् १९०० ई०। संस्थापक पं० शोभाराम जी। पं० शोभाराम जी ग्रामीण क्षेत्र में कुशलतापूर्वक कार्य करने वाले सभा के उपदेशक हैं। दलित वर्ग में भी समाज ने काम किया है। म० गंगाराम भड़भूजा यहां का एक उत्साही कार्यकर्ता था जिनको झोका मिश्र के नाम से विनोद में पुकारते थे। आसपास के सब ठाकुरों के ग्रामों में इस समाज ने पर्याप्त प्रचार किया है। समाज के उत्थान में पं० इन्द्र वर्मा जी महोपदेशक का प्रयत्न सराहनीय रहा

है। पं० श्यामलालजी उपदेशक सभा तथा ठा० वंशीधरसिंह के सुपुत्र ठा० नरपत सिंह के समय में यह समाज ज़िले का प्रमुख आर्य समाज रहा है। ठा० नाहरसिंह जी इस समाज के मान्य नेता थे जो ज़िला सभा के मंत्री एवं भूसम्पत्ति विभाग (सभा) के अधिष्ठाता रहे हैं। समाज ने अनेक शास्त्रार्थ भी कराये हैं। शुद्धि आन्दोलन में ठा० इन्द्र वर्मा जी, पं० श्यामलाल जी ने स्वा० श्रद्धानन्द जी के साथ विशेष कार्य किया है।

ठा० इन्द्रवर्मा ने अपने भाई का विवाह शुद्धशुदा मलकाने राजपूतों में किया। इस समाज के सदस्य ठा० उदयसिंह व ठा० हुकुमसिंह वर्षों सभा के कुशल प्रचारक रहे हैं। श्री पं० शिवकुमार शास्त्री महोपदेशक पंजाब इस समाज के अधिकारी रहे हैं। श्री सुरेन्द्रपालजी आयुर्वेद शिरोमणि एम० ए०, सम्प्रति समाज के प्रधान तथा ठा० राजेन्द्रजी मन्त्री हैं।

महिला आर्य समाज बरोठा—सन् १९५७ ई० में इस समाज की स्थापना श्री महेशचन्द्र शर्मा अन्तरंग सदस्य आर्य प्रतिनिधि सभा उ० प्र० द्वारा की गई।

समाज की प्रधाना श्रीमती गुलाबदेवी यादव हैं तथा मन्त्रिणी श्रीमती कृष्ण कुमारी चौहान हैं जो कविता भी अच्छी करती हैं और इन्होंने ५ पुस्तकें भी प्रकाशित की हैं।

आर्य समाज कौड़ियागञ्ज—सन् १९३८ में इस समाज की स्थापना की गई। श्रीमती चम्पावती पत्नी ला० चेतराम ने अपना एक मकान समाज को दान कर दिया है जिसमें समाज के साप्ताहिक अधिवेशन होते हैं। सन् १९५५ में बाज़ार में एक सरकारी भूमि पट्टे पर ले ली है और चारदीवारी बनवाली है। वार्षिकोत्सव इसी भूमि पर होते हैं। स्वामी ध्रुवानन्दजी सरस्वती व पं० शिवदयालुजी मन्त्री सभा आदि बड़े-बड़े विद्वान् व नेता इसके उत्सव पर आ चुके हैं।

आर्य समाज सासनी—सन् १९१३ ई० को इस समाज की स्थापना स्वर्गीय पं० मुकुन्दलालजी के प्रयत्न से हुई। सन् १९२५ में इसको पुनर्जीवित किया गया और सभा में प्रविष्ट किया गया। समाज का अपना भवन एवं पुस्तकालय है। यहाँ नित्य यज्ञ भी होता है। शुद्धि भी एक की है।

आर्य समाज जलाली—यह समाज सन् १९१९ ई० से पूर्व श्री स्वर्गीय पं० नारायणप्रसाद, श्री पन्नालालजी व श्री व्रतपाल आदि ने स्थापित किया। कुछ वर्ष शिथिल रहने के पश्चात् फिर जाग्रत हो गया। इसके प्रधान श्री सालिगरामजी व मन्त्री श्री विष्णुचन्द्रजी हैं। समाज द्वारा सन् १३ से ६२ तक ५००

से ऊपर संस्कार कराये गये, ५ मुस्लमानों की शुद्धियाँ तथा ५ पुर्नविवाह भी कराये हैं।

हैदराबाद सत्याग्रह एवं हिन्दी रक्षा सत्याग्रह में इस समाज ने सत्याग्रहियों के जत्थे भी भेजे हैं। समाज के संरक्षण में एक आर्य कन्या पाठशाला तथा एक वैदिक पाठशाला चल रही है।

आर्य समाज अगराना—समाज की स्थापना सन् १९२१ ई० में हुई। समाज ने अस्पृश्यता निवारण, शुद्धि, आन्दोलनों में मुसलमानी रियासत के अन्तर्गत होते हुये भी सराहनीय कार्य किया है। श्री विहारीसिंह, श्री लालसिंह आदि इसके वीर कर्मठ कार्यकर्ता रहे हैं। समाज ने एक माध्यमिक विद्यालय स्थापित किया किन्तु वाद में जिला परिषद् के संरक्षण में दे दिया। आर्य कन्या पाठशाला भी स्थापित की गई। पं० प्रियदर्शनजी इस समाज के रत्न हैं जो बाहर प्रचार कार्य करते हैं।

आर्यसमाज कुतुबपुर—स्थापना १९३० ई० में की गई। यह समाज भी मुसलमानी रियासत में रही है। पौराणिकों का भी यहाँ काफी जोर रहा है। आरम्भ में उत्सव आदि भी नहीं करने दिये गये। किन्तु स्वर्गीय हुकुमसिंह वैद्य ठा० नेत्रपालसिंहजी, पं० जयशंकरजी की धर्मनिष्ठा एवं साहस के सामने हुकूमत की कुछ भी नहीं चली। डटकर प्रचार किया गया और उत्पाती मुस्लमानों का सामना किया गया। सन् १९५५ में समाज की रजतजयन्ती बड़े समारोह के साथ मनाई गई।

समाज के व्यवस्थापक श्री ठा० नेत्रपालसिंहजी, प्रधान श्री पं० जयशंकरजी, मन्त्री श्री चन्द्रपालजी हैं।

आर्य समाज मेण्डू—मेन्डू कट्टर साम्प्रदायिक मुसलमान जिमींदारी का क़स्बा है। अब से ५१ वर्ष पूर्व यहाँ आर्य समाज स्थापित करना एक साहसपूर्ण कार्य था। १२ मार्च १९१२ ई० को आर्य समाज की स्थापना पं० रामप्रसाद आर्य, पं० राजनलाल, डा० जमुनाप्रसाद, श्री वेदराम व श्री नेकराम के सराहनीय प्रयत्नों के द्वारा हुई। समाज में नित्य यज्ञ, सत्संग का कार्यक्रम रहता है। यहाँ के कर्मठ व निर्भीक कार्यकर्ताओं ने धर्म एवं देश के निमित्त बड़े-बड़े कष्ट सहे हैं और त्याग किये हैं। शुद्धि आन्दोलन में भी मेन्डू आर्य समाज का पूरा सहयोग रहा है।

प्रधान श्री नेत्रपाल शर्मा आयुर्वेदाचार्य तथा मन्त्री श्री सूर्यपालसिंह जी हैं।

आर्य समाज बोरना—स्थापना तिथि १ मई, १९१२ ई०

संस्थापक स्व० म० आत्मारामजी। सभा से सम्बन्धित हुआ २३ जनवरी १९२७ ई०। आर्य समाज ने अनेक शास्त्रार्थ कराये हैं :—

१. शास्त्रार्थ महारथी श्री पं० मुरारीलाल शर्मा, श्री पं० नन्दकिशोर देव शर्मा, पं० शिवशर्मा जी ने पौराणिक पं० अखिलानन्दजी से शास्त्रार्थ किया। पराजित होने पर पौराणिकों ने उपद्रव खड़ा किया।

२. सन् १९२९ ई० में ईसाइयों से बृहत् शास्त्रार्थ हुआ। इस शास्त्रार्थ के अवसर पर समाज के तात्कालिक प्रधान म० आत्मारामजी व पं० इन्द्रदत्तजी शर्मा मन्त्री से जिलाधीश ने पाँच-पाँच हजार की जमानत व मुचलके लिये थे और बोरने के ५ मील तक १४४ धारा लगा दी थी। इस शास्त्रार्थ में ५० हजार से अधिक जनता सम्मिलित हुई। इस शास्त्रार्थ में कालीचरणजी शर्मा मौलवी फाज़िल व शास्त्रार्थ महारथी पं० शिवशर्मा, पं० इन्द्रवर्माजी, ठा० अमरसिंहजी आदि ने आर्य समाज की ओर से भाग लिया। शास्त्रार्थ के निर्णायक मौलाना हबीबुलरहमान प्राध्यापक, अलीगढ़ मुसलिम विश्वविद्यालय थे। शास्त्रार्थ पादरी अब्दुल हक़ से हुआ था। पादरी साहब बुरी तरह पराजित हुये। समाज सुधार के कार्यों में समाज आगे रहा है। निकट के ७ ग्रामों के मलकानों की शुद्धियाँ इस समाज की ओर से हुईं।

आर्यसमाज बांकनेर—श्री सरदारसिंहजी मंत्री जिला-सभा तथा श्री आत्माराम जी वानप्रस्थी के उद्योग से इस आर्य समाज की स्थापना १९५५ ई० में हुई। ४ जून सन् १९६० को पौराणिकों से आर्य विद्वानों का शास्त्रार्थ हुआ जिसका बहुत प्रभाव पड़ा। अलीगढ़ निवासी बा० सुरेन्द्र कुमार जी ने अपने दान द्वारा समाज भवन निर्माण करने का सूत्रपात कराया है।

आर्यसमाज प्रेमनगर—यह आर्यसमाज श्री लाला बाबूप्रसाद जी प्रेम के उद्योग से माघ शुक्ला ५, सम्वत् १९८५ वि० को स्थापित हुआ। कई शास्त्रार्थ भी हुये। एक रात्रि पाठशाला है जिसमें प्रौढ़ों और वृद्धों को शिक्षा दी जाती है। दलितोद्धार भी होता रहता है। आर्य कन्या पाठशाला भी चल रही है। प्रचार कार्य बड़ी सफलता से होता है। श्री प्रकाशचन्द्रजी ने समाज मन्दिर के लिए कुछ भूमि प्रदान की है।

आर्य समाज बाघनू—इस समाज की स्थापना ठा० गजाधरसिंहजी के उद्योग से

हुई। सन् १९३३ में विजयगढ़ के श्री पं० गुरूदत्त जी वैद्य ने यहाँ एक आर्य कन्या विद्यालय की स्थापना की। यह विद्यालय ८ वर्ष चलकर बन्द हो गया परन्तु वह फिर पुनर्जीवित किया गया है। श्रीमती जामवती देवी विद्यालय की अधिष्ठात्री हैं और गत तीन वर्ष से उसकी अवैतनिक सेवा कर रही हैं।

आर्य समाज महुआ—स्थापना ति० सन् १९११ ई० संस्था० ठा० होतीलालजी

सन् ११ में स्व० सर्वदानन्दजी, ठा० खमानसिंहजी आदि के उत्सव पर विशेष प्रभावशाली भाषण हुये। ठा० तेजसिंह, ठा० नत्थासिंहजी के प्रचार से ग्राम का कायापलट हो गया। स्वराज्य आन्दोलन में भाग लिया। विदेशी वस्त्रों की होली जलाई गई। ठा० हीरासिहजी व ठा० खड्गसिंह ने अपने पौत्रों के विवाह शुद्ध हुये मलकानों की कन्याओं से किये। स्मरणीय का० क० ठा० रघुवीर सिंहजी, वर्तमान प्रधान ठा० अजयपालसिंह मंत्री ठा० रोशनसिंह जी।

जिला मथुरा

मथुरा जिला उत्तर प्रदेश में ही नहीं अपितु सम्पूर्ण भारतवर्ष में परम सौभाग्यशाली है यहाँ वैदिक व्याकरण तथा साहित्य के सूर्य महान् संत विरजानन्द दण्डीजी के आश्रम में युग पुरुष महर्षि स्वामी दयानन्द का निर्माण हुआ। आर्य-धर्म, आर्य-जाति एवं आर्यावर्त के उद्धार का उस ऋषि राज ने पावन व्रत जहाँ धारण किया था वह पुण्य नगरी मथुरा ही है।

अब से ५००० वर्ष से पूर्व अन्याय, अत्याचार पर, अनीति अनाचार पर पूर्ण विजय पाने वाले योगि राज कृष्ण की पावन जन्म भूमि यही मथुरा नगरी है।

वैदिक संस्कृति का पावन प्रतीक गुरूकुल विश्वविद्यालय वृन्दावन भी इसी जिले में यमुना के तट पर विद्यमान है। स्वाधीनता संग्राम में इस जिले के सहस्त्रों आर्य बन्धुओं ने प्रशंसनीय त्याग किया है।

मथुरा जिले में सभा से संबंधित आर्य समाजों की संख्या ३२ है इस जिले में उप-सभा भी अनेक वर्षों से कार्य कर रही है तथा ऋषि दयानन्द के संदेश को गाँव-गाँव पहुँचाने में प्रयत्नशील है।

आर्य समाज मथुरा (जवाहर द्वार)—स्थापना फाल्गुन कृ० ५ सं० १९३८ वि०

इस समाज ने अपने प्रारम्भिक एवं पूर्व युग में रूढ़िवादिता से बड़ा लोहा लिया। पण्डे पुजारियों के प्रवल विरोध को सहर्ष सहन किया। वैदिक विचार धारा का नाना विघ्न वाधाओं के होते हुए भी निर्भीकता के साथ प्रचार किया

है। आरम्भिक उल्लेखनीय कार्यकर्ता—पं० दयाशंकर दूबे, बा० रामनारायण भटनागर, बा० नानकचन्द व पं० केशवदेव चतुर्वेदी, बा० लक्ष्मणप्रसादजी, पं० क्षेत्रफल शर्मा आदि हैं।

सन् १९२५ ई० में जब आर्यों का सार्वदेशिक महामेला अर्थात् ऋषि दयानन्द जन्म-शताब्दी मनाई गई, जिसका वृतान्त पाठक अन्यत्र पढ़ेंगे तो मथुरा आर्य समाज ने पूरी शक्ति से उसमें सहयोग दिया और इसी प्रकार सन् १९५९ ई० में जब दीक्षा शताब्दी का महान् पर्व इस मथुरा नगरी में मनाया गया तो आर्य समाज ने तन, मन, धन से पूरा-पूरा सहयोग प्रदान किया। इसी समाज के कर्मठ कार्यकर्ताओं में श्री कर्णसिंह छोंकर ने उस भूमि को आर्य समाज के विमित्त उपलब्ध करके में जी.जान से प्रयत्न किया तथा श्री रमेशचन्द्र अग्रवाल वकील, श्री माताप्रसाद (प्रधान जिला सभा) आदि अन्य प्रमुख कार्यकर्ता हैं। सन १९५६ ई० में इस उपलब्ध भूमि का उद्धार करने में आर्य समाज मथुरा ने प्रशंसनीय कार्य किया है। आर्य समाज मथुरा का अपना सुन्दर विशाल भवन है, पुस्तकालय है तथा कन्याओं को शिक्षा के हेतु एक आर्य कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय है जिसमें ५०० से ऊपर कन्याएँ शिक्षा पाती हैं। इस विद्यालय की स्थापना सन १९१४ ई० में की गई थी तथा सन् १९५४ ई० में इसने उच्च माध्यमिक विद्यालय का रूप धारण कर लिया। इसकी प्रधानाचार्या कुमारी शकुन्तला द्विवेदी एम० ए०, एल० टी० हैं। श्री ललिताप्रसाद गर्ग एडवोकेट इसके प्रबंधक हैं और श्री जगदीशशरणजी एम० ए० इसके प्रधान हैं।

आर्य समाज वृन्दावन—सभा का गुरुकुल जब फर्रुखाबाद से १९११ ई० में वृन्दावन लाया गया तो उसके उपाध्यायवर्ग ने आर्य समाज की स्थापना की। आरम्भ में वह राजा महेन्द्र प्रतापसिंह के प्रेम महाविद्यालय में जाकर यज्ञ आदि करते रहे और वहाँ ही साप्ताहिक सत्संग लगाते रहे। सन १९१४ ई० में महात्मा नारायण स्वामीजी के प्रयत्न एवं सेठ कन्हैयालालजी चौखानी आदि के प्रशंसनीय दान से आर्य समाज मंदिर का निर्माण हो गया।

आर्य समाज सुरीर—स्थापना तिथि २२ जून, सन् १९०४ ई०।

संस्थापक स्व० म० किशोरीलालजी व रोशनलालजी

आरम्भ में ५५ सदस्य थे। सन् १९०५ ई० में शास्त्रार्थ महारथी पं० मुरारीलालजी शर्मा का पं० भीमसेन शर्मा पं० ज्वालाप्रसाद शर्मा से शास्त्रार्थ हुआ।

पं० भीमसेनजी आर्य समाज छोड़कर पौराणिक बन चुके थे। पौराणिक पंडित शास्त्रार्थ से कतरा गये जिससे सुरीर में आर्य समाज की धाक जम गई। प्रतिवर्ष धूमधाम से वार्षिकोत्सव होते रहे और निकट के ग्रामों तक की जनता अत्यधिक प्रभावित होती रही।

१९२५ ई० में शुद्धि के क्षेत्र में विशेष कार्य किया। तेहरा सुल्तानपुर, परसोतीगढ़ी, वैकुण्ठपुर. लोहई आदि ५ ग्रामों के १००० नौ मुस्लिमों की शुद्धि की और उनके विवाह शादी करे, कराये गये।

सन् १९३९ ई० के हैदरावाद सत्याग्रह में समाज के सदस्य स्वामी परमानन्दजी (श्रीराम) व वृजभूषण ने गुलवर्गा जेल की शोभा बढ़ाई। २२ जून सन् १९५४ ई० को आर्य समाज की अर्वशताब्दी मनाई गई। समाज ने अपना मंदिर १०००० रु० के मूल्य का तैयार कराया है।

पंजाव हिन्दी रक्षा सत्याग्रह में निम्न सदस्यों ने पंजाव की विभिन्न जेलों की यात्रा की।

१. म० श्रीराम (स्वा० परमानन्दजी) पं० रघुवरदयाल ३. म० मोतीलाल आर्य। ४. म० राधावल्लभ व चम्पारामजी आदि।

आर्य समाज खोण्डा—जिले का प्राचीनतम समाज है।

स्थापना सन् १८९९ ई० में हुई। १२ वर्ष चलने के उपरांत शिथिल पड़ गया। सन् १९२४ ई० में पुनः जाग्रत हुआ। प्रचारकार्य बराबर चलता रहा। प्रतिवर्ष वार्षिकोत्सव होते रहे। पं० शिवशर्माजी, पं० निरंजनदेवजी, कुँवर सुखलालजी उपदेशक पधारते रहे। सन् १९२९ ई० में गोपालदास की शुद्धि की गई जिनको सादाबाद में विधर्मी बना लिया गया था। शहबाजपुर मण्डौरा आदि गाँवों के नौ मुस्लिमों को शुद्ध किया गया। शुद्धिकार्य में समाज के सदस्य श्री सुग्रीवसिंहजी, श्री श्यामलालजी, ठा० नेत्रपालसिंह, श्री अमृतलालजी, श्री बदनसिंहजी, श्री जसवंतसिंहजी, श्री बिहारीनाथजी, श्री बिहारीसिंहजी आदि का उत्साह व परिश्रम सराहनीय था। सन् १९४८ ई० में श्यामलाल प्रधान समाज ने अपने पौत्र सत्यपाल का विवाह शुद्ध हुये मुस्लमानों में किया। विधवा विवाह एवं ईसाइयों की शुद्धि करने में भी इस समाज का सफल प्रयत्न रहा। वर्तमाव प्रधान श्री ठा० श्यामलालजी व मंत्री ठा० यशवंतसिंहजी हैं।

आर्य समाज अडींग—स्थापना ३ जून सन् १९२५ ई०।

संस्थापक श्री ठाकुर कुँवर हुकुमसिंह आगंई।

प्रारम्भिक मुख्य कार्यकर्ता श्री पं० रतनलालजी, पं० गोपीराम शर्मा, श्री चौ० डालचन्दजी आदि थे। वार्षिकोत्सव बड़े समारोह के साथ प्रतिवर्ष होते रहे। ४ जून १९२८ ई० को पं० कालीचरणजी अरबी फाजिल द्वारा एक मुसलमान की शुद्धि की गई। गोवर्धन के मेले में समाज नियम से प्रचार करता रहा है। हैदराबाद सत्याग्रह में पं० सत्यप्रकाश त्यागी ने जेलयात्रा की। हिन्दी रक्षा सत्याग्रह में मुख्य कार्यकर्ता श्री मथुराप्रसादजी आर्य श्री ईश्वरीप्रसादजी प्रेम के जत्थे में गये।

वर्तमान प्रधान श्री चौ० डालचन्द्रजी व मंत्री श्री मथुराप्रसाद आर्य हैं।

आर्य समाज सहपऊ—श्री वैद्य राजवहादुर 'सरस' द्वारा इस समाज की स्थापना सं० २००४ वि० में की गई। इसके साथ महिला समाज की भी स्थापना की गई। दोनों समाज ठीक चल रहे हैं। सरस जी ने निकट के ग्राम रामपुर घाघऊ खोण्ड़ा, नगला विहारी, गड़ीचिन्ता में आर्य समाजों की स्थापना की है। आर्य समाज सहपऊ का इतिहास श्री सरस जी का इतिहास है। आरम्भ से आज़ तक श्री सरस जी ही समाज के प्रधान पद को सुशोभित करते रहे हैं। श्री सरस जी अत्यन्त सरल सात्विक जीवनवाले स्वाध्यायशील व्यक्ति हैं। आप कर्मकाण्डकुशल व्यक्ति हैं। जिला सभा के अनेक पदों पर रहकर आपने कार्य किया है। आप सभा की अन्तरंग में भी रहे हैं।

आर्य कुमार सभा की धार्मिक परीक्षाओं का आपने विशेष क्रियात्मक प्रचार किया है। पंजाब हिन्दी सत्याग्रह में आप एक जत्था लेकर गये। सत्याग्रह कर करनाल जेल को अलंकृत किया।

स्वामी वेदानन्दजी तीर्थ ने जो सत्यार्थप्रकाश संशोधन किया है उसमें आपने विशेष बौद्धिक सहयोग दिया। आप ग्रामसभा के निर्विरोध प्रधान चुने जाते रहे हैं। आप अच्छे लेखक हैं; आपने गद्य पद्य दोनों में पुस्तकें लिखी हैं।

आर्य समाज सौंख—सं० १९६० वि० में इसकी स्थापना हुई। स्व० पं० गोवर्धन पाठक इसके मुख्य संस्थापक थे। १९२१ ई० में स्वराज्य आंदोलन में समाज के अनेक सदस्यों ने प्रशन्सनीय भाग लिया। ईसाइयों की शुद्धि में प्रशंसनीय कार्य किया है। सं० १९९२ वि० में पं० गोवर्धनदास एवं वैद्य पं० जगन्नाथ प्रसाद ने आर्य भवन का शिलान्यास किया। आर्य भवन बनकर तैयार हो गया है।

शिक्षा क्षेत्र में विशेष कार्य किया है। सौंख का गांधी स्मारक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय आर्य समाज के ही प्रयत्न से स्थापित हुआ है। गत तीन वर्ष से

समाज का कार्य पुनः 'वेग से प्रगति कर रहा है। पं० गोवर्धनदास आर्य समाज सौंख, कांग्रेस सेवा समिति शुद्धि आंदोलन आदि के प्राण थे। कर्मठ कार्यकार्ता, संयमी तथा स्वाध्यायशील व्यक्ति थे। सं० २००२ वि० को आपका निधन हो गया।

वर्तमान प्रधान श्री जगन्नाथ प्रसाद वैद्य,

मन्त्री श्री देवीदास अग्रवाल।

आर्य समाज ऊँचागाँव—स्थापना तिथि १-१-१९२० ई०।

शुद्धि आंदोलन में विशेष भाग लिया। हैदराबाद सत्याग्रह में यहाँ से १८ आर्य सत्याग्रही वीरों का जत्था श्री भमरसिंहजी के नेतृत्व में गया। जत्थे के अन्य प्रमुख व्यक्ति श्री रोशनलालजी, श्री सुखरामजी, श्री खूबीराम, श्री नन्दकिशोरजी व श्री बाबूलालजी थे।

स्वामी सत्यानन्द की प्रेरणा से आर्य कुमार सभा स्थापित हुई। धार्मिक परीक्षाओं का केन्द्र खुला और अनेक आर्य नवयुवक धार्मिक परीक्षा देने लगे।

शुद्धि आंदोलन—निकट के करसोरा ग्राम में ईसाइयों का अड्डा था। ग्राम के सब चमारों को प्रलोभन देकर ईसाई बनाया जा चुका था। आर्य समाज ने वहाँ एक वर्ष तक निरंतर प्रचार कर उनको शुद्ध किया। गोरे पादरी थोमस हेरी ने दावा किया, ३० कार्यकर्ता गिरफतार हुये। समाज की ओर से केस लड़ा गया। फैसले में समाज की जीत हुई। विराट् सभा का आयोजन किया गया और स्वामी ध्रुवानन्दजी ला० रामगोपाल शालवाले व० प्रो० रामसिंह ने कार्यकर्ताओं को बधाई दी।

हिन्दी आन्दोलन में ४४ आर्य वीरों का शानदार जत्था भेजा गया। जत्थे के वीरों की जेल तक में धाक थी। पहलवानों का जत्था करके पुकारा जाता था। जत्थे के श्री रोशनलाल जत्थेदार, श्री देवेन्द्रजी। क्षेत्रपालजी, श्री वेदप्रकाशजी, चरनसिंहजी आदि ४४ वीरों ने पंजाब की जेलों की यातनायें हँसते-हँसते सहन कीं।

दीक्षा शताब्दी के अवसर पर श्री नरेन्द्रजी के पधारने पर समाज ने ५०१ रु० की थैली भेंट की। समाज विशेष प्रगतिशील है। श्रीदेवेन्द्रजी इसके मन्त्री हैं।

आर्य समाज चौक मथुरा—राष्ट्रीय क्षेत्र में कार्य करनेवाले आर्य पुरुषों ने २७ अगस्त १९४४ ई० को इस समाज की स्थापना की। समाज अपने आरम्भ काल से ही ग्राम-प्रचार, शुद्धि, दलितोद्धार, अनाथ विधवाओं की गुन्डों से रक्षा एवं सामाजिक सेवा के कार्यों में संलग्न है। अनेक ग्रामों में नवीन आर्य समाज स्था-

पित करने का श्रेय भी इस आर्य समाज को है। समाज ने स्थान-स्थान पर आर्य वीर दल की शाखाओं को स्थापित किया और अश्लील साहित्य व सिनेमा के विरुद्ध आन्दोलन किया। गुरु विरजानन्द के नाम से एक ट्रस्ट स्थापित किया जिसके अंतर्गत एक प्राथमिक विद्यालय तथा एक डी० ए० वी० उच्च माध्यमिक विद्यालय चल रहा है। इसी ट्रस्ट के आधीन साहित्य प्रकाशनादि का भाग भी है, जिसके द्वारा अनेक उपयोगी पुस्तकों का प्रकाशन किया गया तथा तपोभूमि नाम की एक मासिक पत्रिका अनेक वर्षों से प्रकाशित की जा रही है।

ईसाई मिशनरी विरोध का कार्य भी व्यापक पैमाने पर किया गया। मिशनरियों की ओर से २७ कार्यकर्ताओं पर अभियोग चलाया गया किन्तु उसमें मिशनरियों को मुँह की खानी पड़ी। बिड़लाजी के आर्य हिन्दु धर्म सेवा संघ ने भी इस कार्य में विशेष सहायता की। हिन्दी रक्षा आंदोलन में समाज के उत्साही कर्मठ कार्यकर्ता श्री ईश्वरीप्रसाद प्रेमजी की संरक्षता में १०१ सत्याग्रही वीरों का जत्था चण्डीगढ़ गया और सत्याग्रह कर पंजाब की जेलों की यातनाएँ सहीं, तत्पश्चात् समाज की ओर से और भी जत्थे भेजे गये। अकेले इस एक समाज ने २०० से ऊपर सत्याग्रही भेजे हैं।

आर्य समाज सेरसा—यह समाज गत् पचास वर्ष से स्थापित है। समाज सुधार और शुद्धि आंदोलन में प्रशंसनीय काम किया। विधवा विवाह प्रचार में भी काफी योग दिया। लगभग ५०० अछूतों को विधर्मी होने से बचाया।

आर्य समाज गोवर्धन (मथुरा)—इस समाज की स्थापना सन् १९५६ में हुई यहाँ का डी० ए० वी० जूनियर हाई स्कूल सफलतापूर्वक चल रहा है।

स्कूल भवन लगभग पच्चीस हजार रुपये की लागत से बना है। स्वर्गीय सेठ कन्हैयालालजी ऐडवोकेट तथा स्वर्गीय श्री जगतनाराणजी सरकारी वकील तथा श्री रूपनारायणजी मित्तल आदि की आर्थिक सहायता से इस समाज ने बहुत लाभ उठाया है। समाज के सदस्यों ने हिन्दी रक्षा आंदोलन आदि में विशेष भाग लिया।

आर्य समाज फालैन (प्रहलादनगर)—इस समाज की स्थापना २४ अक्टूबर सन् १९५१ को श्री शिवचरणलालजी आर्य द्वारा हुई। आर्य जी के उद्योग से ही यहाँ के आर्य समाज मंदिर और कूप का निर्माण हुआ। आर्य जी ने मेहतरों के लिये भी एक कुँआ बनवाया। हिन्दी सत्याग्रह में भी आर्यजी १५ व्यक्तियों का

एक जत्था लेकर सम्मिलित हुये। आपको इसमें आर्थिक कष्ट भी बहुत भोगना पड़ा। आप आर्य समाज की सेवा में सदैव संलग्न रहते हैं।

जिला आगरा

आगरा उत्तर प्रदेश का वह सौभाग्यशाली जिला है जिसमें युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने जीवन में तीन बार पदार्पण किया। संवत् १९२१ और २२ तो निरंतर दो वर्ष आगरे में निवास कर महर्षि ने गंभीर वेदानुशीलन किया था। प्रांत के उन नौ आर्य समाजों में जो ऋषि ने अपने कर कमलों से स्थापित किये थे आगरा भी एक है। इसी आगरे से महर्षि ने उत्तर प्रदेश से अंतिम विदा ली थी और राजस्थान आदि में दो वर्ष प्रचार करते हुए इह लीला समाप्त की थी। आगरा जिले के सहस्रों आर्य वीर मातृ-भूमि के स्वतंत्रता के संग्रामों में जूझे हैं और अपने पावन राष्ट्रीय धर्म का दृढ़ता पूर्वक पालन किया है। आगरा को यह सौभाग्य भी प्राप्त है कि इसने आर्य समाज को अनेक कर्मठ कार्यकर्ता एवं नेता प्रदान किये हैं। यथा:—ठा० माधवसिंह, श्री नाथमलजी, श्री श्रीरामजी, श्री पूर्णाचन्द्रजी, एडवोकेट, डा० हरिशंकर शर्मा कविरत्न, श्री शालिगरामजी, श्री नत्थासिंह, शास्त्रार्थ महारथी पं० कालीचरण एवं पं० भोजदत्त आर्य मुसाफिर आदि।

अमर शहीद पं० लेखरामजी के बलिदान के उपरांत इस्लाम से टक्कर लेने के लिये योग्य विद्वान् एवं शास्त्रार्थ महारथी निर्माण करने का काम आगरा नगर से स्व० पं० भोजदत्तजी ने मुस्तफिर विद्यालय खोलकर किया था। स्व० राहुल सांस्कृत्यायन ने भी इस विद्यालय में शिक्षा पाई थी।

आर्य समाज आगरा—स्थापना तिथि २५-१२-१८८० ई०।

आगरे में यह समाज ही महर्षि के कर कमलों से स्थापित किया गया था। ९ वर्ष तक अनेक घरों व मुहल्लों में मकान किराये पर लेकर कार्य चलता रहा। सन् १८८९ ई० को हींग की मंडी में समाज स्थिर हो गया। समाज मंदिर का निर्माण कार्य आरम्भ हुआ। अब मंदिर का आकार बहुत वृहद् हो. गया है। ११ लाख रुपये की लागत इस पर आ चुकी है। इसी में डी० ए० वी० इण्टर कालेज भी लगता है। जिसमें १६०० छात्र शिक्षा पाते हैं।

वार्षिक उत्सव शिवरात्रि पर होता है। हैदराबाद सत्याग्रह एवं हिन्दी रक्षा आंदोलन में सक्रिय भाग लिया। मुख्य जेल यात्री समाज के मंत्री श्री केशव देव वानप्रस्थी थे। सन् १९३८ में दिवाकर प्रेस खोला तथा 'दिवाकर' समाचार प्रकाशित किया। सन् १९४२ के आंदोलन में सरकार ने उसे बंद कर दिया। समाज

ने अपनी जन्म अर्ध शताब्दी तथा हीरक जयन्ती बड़े समारोह से मनाई। समाज के स्मरणीय व्यक्तियों में स्व० बा० नाथमलजी स्व० शोभारामजी, स्व० ठा० माधवसिंहजी, स्व० बा० रामप्रसाद वकील, स्व० ठा० नत्थासिंहजी भजनोपदेश, स्व० श्री छोटेलालजी, स्व० स्वामी मंगलदेवजी (संस्थापक अनाथालय) स्व० परमानन्दजी, स्व० पं० भोजदत्त शर्मा हैं। वर्तमान में प्रमुख कार्यकर्ता एवं मंत्री समाज श्री रामदयालजी हैं। श्री पं० गंगाप्रसादजी एम० ए० मेरठ तथा पं० घासीराम जी एम० ए० मेरठ ने अपने विद्यार्थी जीवन में इस समाज में विशेष कार्य किया।

इस समाज ने पौराणिकों, ईसाइयों, मुस्लमानों से ६ बड़े शास्त्रार्थ कराए हैं। जिले में प्रचार कार्य को दीर्घकाल तक इस समाज ने सफलता पूर्वक संचालित किया है। समाज के अन्तर्गत एक विधवा आश्रम सन् १९०९ ई० से संचालित है। सन् १९२१ तक अनाथालय भी इसके साथ था किन्तु इस वर्ष से दोनों प्रथक-प्रथक कर दिये गये हैं। प्रांत का संम्भवतः यह पहला अनाथालय एवं विधवा आश्रम हैं जिसने जाति की महती सेवा की है। समाज के अन्तर्गत ३ कन्या पाठशालाएँ भी चल रही है। शुद्धि, अछूतोद्धार आंदोलनों में इस समाज का प्रशंसनीय सहयोग रहा है।

आर्य समाज नगर—लगभग ३० वर्ष पूर्व स्थापित हुआ। इसकी स्थापना में श्री बाबू पूर्णचन्द्र, ऐडवोकेट, बाबू सालिग राम, स्वर्गीय अवधनारायण, ऐडवोकेट, स्व० वैकुन्ठनाथ, स्व० परमेश्वरी सहाय वकील, डा० रामपाल, सिंह, बा० मथुरा प्रसाद ऐडवोकेट, स्व० स्वामी परमानन्द सरस्वती, लाला लक्खोमल, श्रीयुत मोहन लाल जी का विशेष प्रयत्न था। यह आर्य भवन सेठ श्री केदारनाथ जी सेकसरिया ने अपने धन से बनवाकर समाज को अर्पित किया था। बाद में अन्य सज्जनों ने भी इसमें कुछ भवन, दूकानें व यज्ञशाला बनवाईं। समाज का अपना पुरोहित है। नित्य सत्संग होता है।

समाज का अपना सुन्दर पुस्तकालय एवं प्रकाशन विभाग भी हैं। समाज की संरक्षता में सेकसरिया आर्य कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यलाय, दो अन्य माध्यमिक विद्यालय तथा दयानन्द अनाथालय संचालित हैं। स्व० बाबू श्री राम जी भी इसी समाज के एक उज्जवल रत्न थे।

आर्य समाज नाई की मंडी—स्थापना २७-१२-१९५३ ई०।

संस्थापक—श्री डा० कृष्ण गोपाल जी, पं० ब्रह्मदत्त जी व श्री चंदन दास

कपूर । आरम्भ में दैनिक व साप्ताहिक सत्संग डाक्टर जी के स्थान पर होते रहे बाद में कस्टोडियन से दो टूटे-फूटे मकान किराये पर लेकर और कुछ धन लगाकर उनको समाज मन्दिर का रूप दिया गया । ६-४-५४ को यहां स्वामी कृष्णानन्द जी ने पुस्तकालय का उद्घाटन किया ।

२१-४-५४ को समाज की संरक्षता में महिला आर्य समाज की स्थापना की गई । श्रीमती कमलादेवी प्रधाना तथा श्रीमती रानी देवी मन्त्रिणी चुनी गईं ।

२१-३-५५ को आर्य वीर दल की शाखा भी स्थापित की गई जिसके दलपति श्री नरेश चन्द्र आर्य नियुक्त किये गये ।

हिन्दी रक्षा सत्याग्रह में इस समाज ने १८,००० रु० एकत्रित करके दिया था निम्न सज्जनों ने सत्याग्रह कर पंजाब की जेल यात्रा की .—श्री मूलचन्द आर्य, श्री पुरुषोत्तम लाल आर्य तथा श्री प्रकाश स्वरूप आर्य ।

८-१०-५९ को नये विशाल मन्दिर की आधार शिला स्वामी ब्रह्मानन्द जी दण्डी के कर कमलों द्वारा रखी गई । इस मन्दिर में १२,००० रु० लगा । डा० कृष्णगोपाल जी की देख-रेख में यह विशाल भवन बनकर तैयार हो गया । २१-१२-६० को वेदकुमार आर्य कन्या तिलाई विद्यालय तथा वेद कुमार आर्य पुस्तकालय व वाचनालय स्थापित किये गये । सेठ जस्सा राम जी, श्री अर्जुन देव जी तथा श्री फतहचन्द जी का सहयोग इन संस्थाओं के संचालन व उत्थान में सराहनीय है ।

समाज के वर्तमान प्रधान श्री डा० कृष्णगोपाल जी तथा मन्त्री श्री शिवलाल जी हैं ।

आर्य समाज फिरोजाबाद—इस समाज को स्थापित हुये ७७ वर्ष हो गये । समाज ने अब तक निम्न ५ शिक्षा संस्थाओं की स्थापना की ।

१. डी० ए० वी० उच्चतर माध्यमिक विद्यालय छा० सं० ८५० इसका निजी भवन है ।

२. आर्य कन्या विद्यालय पुरानी मन्डी में स्थापित है । ५०,००० रु० का अपना भवन है । ३५० छात्राएँ शिक्षा पाती हैं तथा तीन प्रारम्भिक वैदिक पाठ-शालाएं हैं ।

समाज के संस्थापकों में श्री कमलापति चतुर्वेदी, श्री हजारीलाल चतुर्वेदी, श्री कुन्दनलाल चतुर्वेदी श्री पतिलाल आर्य, पं० उमादत्त शर्मा इंजीनियर श्री रतनलाल गोयल आदि के नाम उल्लेखनीय हैं ।

इस समाज ने कई ऐतिहासिक शास्त्रार्थ कराये हैं जो बाद में पुस्तकाकार प्रकाशित भी हुये हैं। निम्न सज्जनों ने समाज के उत्थान में उल्लेखनीय कार्य किये हैं :—पं० राम सहाय जी, पं० रोशनलाल जी, पं० अमोलक चन्द, पं० कुंवरलाल जी आर्य पुरोहित, डा० प्यारे लाल गहलौत, पं० मथुरा प्रसाद जी, पं० चिरंजीलाल शर्मा तथा श्री नवरतन लाल चतुर्वेदी, पं० उमादत्त जी कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं तथा २५ वर्षों से मन्त्री चुने जाते रहे हैं। वर्तमान युग के विशिष्ठ कार्य कर्त्ताओं में डा० केशवदेव सिंह, श्री ओंकार दत्त आर्य, श्री कृष्ण लाल 'कुसुमाकर' तथा आचार्य ओंकार मिश्र 'प्रणव' शास्त्री आदि हैं। वर्तमान प्रधान श्री पं० चिरंजीलाल जी तथा मन्त्री महावीर प्रसाद वर्मा हैं।

आर्य समाज मिढ़ाखुर—स्थापना तिथि ३०-१-१९२७ ई० समाज का अपना निजी भवन है जिसकी लागत लगभग २,००० रु० है। समय-समय पर प्रचार कार्य एवं वार्षिकोत्सव होता रहता है। वर्तमान अधिकारी प्रधान श्री राम शरण व मंत्री पं० दुलीचन्द शर्मा हैं।

आर्य समाज कुण्डेल—समाज की स्थापना दिनांक १०-१०-५७ को श्री रणजीत सिंह आर्य द्वारा की गई। प्रचार कार्य उत्साह जनक है।

सन् १९६० ई० में श्री रणजीत सिंह द्वारा डी० ए० वी० विद्यालय स्थापित किया गया। विद्यालय में २०८ क्षात्र शिक्षा पाते हैं। श्री ओंकार सिंह जी समाज के प्रधान, श्री शम्भूनाथ मंत्री एवं श्री रणजीत सिंह जी विद्यालय के सञ्चालक हैं।

आर्य समाज रुद्रमुली—यह समाज अनेक वर्षों से स्थापित है। श्री केशव सिंह जी आर्य इसके परिश्रमी मंत्री हैं। श्री पं० ब्रह्मदेव जी तथा श्री अमृत सिंह जी ने पं० विश्व बन्धु वेदालंकार के जत्थे में सम्मिलित होकर हिन्दी रक्षा सत्याग्रह में भाग लिया। मेहतरों को ईसाई मिशनरियों के जाल से निकालने का सफल प्रयत्न किया।

समाज के उल्लेखनीय कार्यकर्ताओं में श्री ब्रह्मदेव जी वानप्रस्थी जो अनाथालय आगरा में २० वर्ष तक उपदेशक रह चुके हैं तथा आपने हिन्दी रक्षा आन्दोलन में भाग लिया।

१. स्व० श्री अमृत सिंह जी—आपने भी सत्याग्रह में भाग लिया।
२. श्रीसरनाम सिंह जी अनाथालय आगरा के २० वर्ष तक प्रचारक रहे हैं।

आर्य समाज किरावली—यह समाज बहुत पुराना है। सन् १९१२ ई० में

समाज की वास्तविक नींव श्री मूलचन्द तथा अमैदो पुरा के पं० वासुदेव जी द्वारा पड़ी। गुरुकुल वृन्दावन के उत्सव से प्रभावित होकर आप आर्य समाजी वने। श्री मूलचन्द जी ने अपने पुत्र डा० प्यारेलाल गहलौत फिरोजावाद तथा पुत्री हर प्यारी देवी को आर्य समाज के प्रचार कार्य में लगा दिया। अपना निज का कच्चा मकान भी समाज को अर्पित कर दिया। वैदिक विचार धारा का ग्राम में प्रभाव जमने लगा। समय-समय आर्यं उपदेशक एवं प्रचारकों द्वारा यहां प्रचार कार्य भी होता रहा।

श्री शंकरलाल जी, जो दाऊ जी के मन्दिर के पैतृक पण्डे थे, आर्य समाजी वने और मन्दिर की आय से मुंह मोड़ स्वतंत्र व्यवसाय में लग गये। अपनी पुत्रियों का विवाह वैदिक रीति से कराया जिसमें विरादरी वालों ने भारी कोलाहल मचाया किन्तु आपने धैर्यपूर्वक इसका सामना किया।

श्री वासुदेव जी ने अपने दोनों पुत्रों श्री ओंकार नाथ शर्मा एवं श्री देवकी नन्दन शर्मा को तहसील की हाटों और मेलों में प्रचार करने भेजते थे। दोनों बालकों ने वैदिक गीत गा गा कर जनता को आर्य धर्म की ओर आकर्षित किया।

श्री महेन्द्रनाथ शर्मा सम्प्रति समाज के मन्त्री हैं। आपने अजमेर विद्या परिषद् से विद्या-वाचस्पति उपलब्ध की है। श्री पं० सीताराम जी अपनी पौराणिक वृत्ति त्याग कर आर्य बने। यहां के उल्लेखनीय व्यक्तियों में श्री दयाशंकर जी तथा श्री छोटेलाल जी हैं जिन्होंने १९३५ में चन्दे से आर्य भवन बनवाकर खड़ा कर दिया। मन्दिर का मूल्य ५ सहस्त्र रुपया है।

इस समाज के निम्न कर्मठ कार्यकर्ता भारत के स्वाधीनता संग्राम में तहसील में कार्य करते हुए बृटिश सरकार के मेहमान वने। श्री शान्ति स्वरूप श्रीवास्तव, श्री ओंकार नाथ शर्मा, श्री पं० सीताराम जी, मुं० दयाराम सिंह ला० शंकरलाल गोयल, श्री प्यारेलाल गहलौत, श्रीमती हरिप्यारी देवी।

आर्य समाज रेशम माजरी—सन् १९६२ ई० में स्थापित हुआ। रक्षा कोष में इसने धन से सहायता की। इसके मन्त्री श्री दर्शनलाल जी हैं।

आर्य समाज धिनिश्री—यह आर्य समाज श्री ठा० चन्द्र बहादुर सिंह जी के उद्योग से सन् १९३९ में स्थापित हुआ। शुद्धि कार्य में इस समाज को अच्छी सफलता मिली। विधवा विवाह भी कराये। समाज द्वारा संस्थापित डी० ए० वी० जूनियर हाई स्कूल सफलतापूर्वक चल रहा है। आर्य समाज भवन निर्माण हो रहा है।

आर्य समाज देवनगर (फिरोजाबाद)—इस समाज की स्थापना ११ जनवरी १९५९ को हुई। महाशय बहोरीलाल आर्य ने समाज के संस्थापन और संचालन में प्रशंसनीय यत्न किया। श्री कृष्णनारायण जी 'कुसुमाकर' साहित्यरत्न इस समाज को उन्नत बनाने के लिये सदैव सचेष्ट रहते हैं। डा० प्यारेलाल आर्य, गोस्वामी मुंशीलाल जी, श्री मथुरा प्रसाद जी 'मानव' एम० ए०, श्री ओंकार मिश्र 'प्रणव' एम० ए०, श्री सुखस्वरूप जी कुलश्रेष्ठ, श्री दीवानचन्द जी, महाशय रतनलाल जी अग्रवाल अपने उपदेशादि से समाज की सक्रिय सहायता करते रहते हैं। यह समाज अशिक्षित मजदूरों में सामाजिक सुधार की आवश्यकता अनुभव कर स्थापित किया गया है।

आर्य समाज नमानेर—इस समाज की स्थापना सन् १९०६ ई० में हुई। संस्थापकों में पं० तुलसीराम जी, पं० टीकाराम जी, पं० छीतरसिंह जी, श्री प्रियालाल जी आदि प्रमुख हैं। कुछ समय पश्चात् प्रसिद्ध विद्वान पं० भोजदत्त जी आ० मु० आगरा में आबसे और इस समाज की उन्नति में आपने योग दिया। अपने कार्य काल में उक्त पंडित जी ने आर्य मुसाफिर नामक एक साप्ताहिक पत्र निकाला और मुसाफिर उपदेशक विद्यालय की स्थापना की। पं० बिहारीलाल शास्त्री, श्री कु० सुखलाल सिंह जी आर्योपदेशक पं० अमरसिंह जी और श्री महेश प्रसाद जी तथा पं० केदारनाथ पाण्डे (स्व० श्री राहुल सांस्कृत्यायन) इसी विद्यालय की देन हैं। पं० भोजदत्त जी की मृत्यु के पश्चात् उनके दोनों पुत्र अर्थात् डा० लक्ष्मीदत्तजी तथा पं ताराचन्द जी ने बड़ी योग्यता पूर्वक आर्य समाज का संचालन किया। फिर सन् १९३३ में पं० प्यारेलाल जी का आगरा में आना हुआ उनके सहयोग द्वारा शिथिल आर्य समाज का पुनरुद्धार हुआ। इनके सहयोगियों में श्री श्याम सुन्दरलाल, श्री कालिका प्रसाद, श्री भगवानदास खन्ना, श्री रामभरोसे लाल, श्री रामनारायण, श्री कैलाश नाथ आदि कार्यकर्ताओं के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। सन् १९४० ई० में उपर्युक्त महानुभावों के सहयोग सें ऐंग्लो वैदिक मिडिल स्कूल की स्थापना हुई जो इस समय एन० सी० वैदिक इण्टर कालेज के रूप में विद्यमान है। इस समाज का एक दूसरा विद्यालय भी है जो श्री बेनीसिंह जूनियर हाई स्कूल के नाम से चलाया जा रहा है। श्री भगवान स्वरूप जी, श्री आत्मानन्द जी, श्री रघुवीर सहायजी, श्री बुलाकीदास जी, श्री रोशनलाल जी, श्री पूरनमल जी आदि प्रमुख कार्यकर्ता हैं।

आर्य समाज कोटला—आगरा जिला में कोटला रियासत एक प्रसिद्ध स्थान है। यहाँ के राजा बहादुर श्री कुशलपाल सिंह जी एम० ए० एल० एल० बी० प्रान्तीय शिक्षा विभाग के मंत्री रहे थे। कोटला पौराणिकों का गढ़ रहा है। ऐसे स्थान में आर्य समाज का कायम होना कठिन था। परन्तु कुछ उत्साही नवयुवकों के प्रयत्न से सन् १९४८ में इस समाज की स्थापना हुई। इसके प्रधान श्री पं० जगन्नाथ प्रसाद जी शर्मा बने और उप-प्रधान श्री ला० उमराव लाल जी। आर्य समाज के प्रधान बनने पर श्री जगन्नाथ प्रसाद जी को रियासत और गांव की जनता दोनों का सामना करना पड़ा। यहां तक कि इनका सामाजिक वहिष्कार तक किया गया पर ऋषि दयानन्द के सच्चे भक्त ने सिर नहीं झुकाया। सारे गांव के लोगों ने इनसे सामाजिक सम्बन्ध छोड़ दिया। केवल आर्य-मित्र के व्यवस्थापक श्री नारायण गोस्वामी जी इनके ऐसे मित्र थे जिन्होंने इनका सदैव साथ दिया। अब तो वह सारा भेद भाव दूर हो गया। आर्य समाज के बड़े सफल उत्सव हुए, इनमें चोटी के विद्वान् वक्ता पधारे। राजा बहादुर श्री कुशलपाल सिंह जी भी दो वर्ष तक आर्य समाज के प्रधान रहे। श्री उमराव लाल जी उप-प्रधान इस समाज के प्राण हैं। जब जब समाज के लिए धन की आवश्यकता पड़ती है, वे अच्छी धनराशि समाज को प्रदान करते हैं। आपके पुत्र श्री बालकृष्ण जी गुप्त फिरोजाबाद के प्रमुख उद्योगपतियों में हैं, और वे भी समाज के प्रत्येक कार्य में सदैव सहयोग प्रदान करते रहते हैं।

जिला एटा

यह जिला भी देश के स्वाधीनता संग्राम में अधिक से अधिक बलिदान करने-वाले जिलों में से एक है। एटा के आर्य समाजों ने इस दिशा में आगे बढ़कर कार्य किया है। इस जिले को यह महान् सौभाग्य प्राप्त है कि आर्य समाज के प्रवर्तक महान् क्रांतिकारी युग-पुरुष दयानन्द उत्तराखंड के अतिरिक्त किसी जिले के अधिक से अधिक स्थानों को अपने चरणों से यदि पवित्र किया है तो वह एटा जिला है। श्री स्वामी जी महाराज अपनी प्रचार योजनाओं में एटा के निम्न स्थानों पर पधारे हैं और यहां की जनता को अपना दिव्य संदेश सुनाया है:—

सोरों संवत् १९२३ व १९२६ वि०	अम्बागढ़ संवत् १९२३ वि०
सरदौल „ १९२३ वि०	शहबाजपुर „ १९२३ वि०
कासगंज „ १९२७ व १९३० वि०	बलरामपुर „ १९२७ वि०

चकेरी „ १९२७ वि०   हन्नौट „ १९२७ वि०
क़ादिरगंज „ १९२५ वि०   ककोड़ा „ १९२५ वि०

इस जिले में सभा से सम्बन्धित आर्य समाजों की सं० ३१ है। इनमें कुछ समाजों का संक्षिप्त परिचय यहां अंकित किया जाता है।

आर्य समाज एटा:—जिले का प्रमुख आर्य समाज है। स्थापना सन् १८८५ ई० में हुई। समाज का अपना विशाल मंदिर है। जिसकी आनुमानिक लागत ५००००) है। समाज का अपना पुस्तकालय है। जिसमें २०००) के मूल्य की पुस्तकें हैं। सामाजिक सुधार के कार्यों में अग्रसर रहता है।

१. **आर्य समाज कासगंज:**—स्थापना सन् १८८६ ई०। समाज के प्रारम्भिक युग के प्रधान माननीय लाला टीकाराम जी थे। जिन्होंने अपने निज व्यय से ३५०००) मूल्य की लागत का आर्य भवन वनवाकर खड़ा कर दिया। महर्षि दयानन्द जी इस नगर में दो बार पधारे थे और अपने यहां एक संस्कृत पाठशाला की स्थापना की थी। यह पाठशाला पर्याप्त समय तक चलती रही, बाद में तोड़ दी गई। स्वतंत्रता आन्दोलन के समय समाज के यशस्वी कार्यकर्त्ता श्री मानपाल जी अपने अन्य सब साथियों सहित उसमें कूद पड़े और जेलों की यातनायें सहीं। कासगंज में शास्त्रार्थ महारथी पं० शिवशर्मा एवं दर्शनानंद जी के पौराणिकों, ईसाइयों एवं मुसलमानों से विशेष प्रभावशाली शास्त्रार्थ हुए हैं। शुद्धि आन्दोलन का कासगंज एक केन्द्र रहा है। पं० रुचीराम जी, पं० हरविलास जी ने यहां शुद्धि का विशेष प्रचार किया और कितने ही ग्राम मलकानों के शुद्ध किये।

इस वर्ष समाज ने अपनी ७५ वीं वर्षगांठ हीरक जयन्ती के रूप में मनाई है। इस अवसर पर स्वामी ब्रह्मानन्द जी दंडी ने यजुर्वेद पारायण यज्ञ की भी व्यवस्था की। कासगंज में ऋषि के एक परम भक्त वा० आनन्द किशोर जी हुए हैं जो महान् तपस्वी एवं सिद्धवाक् व्यक्ति थे। श्री पं० हरविलास जी इस समाज के एक महान् कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं। ९५ वर्ष की आयु होते हुए भी वह आर्य समाज का काम तत्परता से कर रहे हैं। डा० श्रीराम यहाँ के एक और विशेष उल्लेखनीय कर्मठ कार्यकर्त्ता एवं विद्वान् लेखक हैं। आपने खंडन मंडन की अनेक पुस्तकें लिखी हैं। आप अनेक वर्ष तक इस समाज तथा जिला सभा के मंत्री रहे हैं और इस समय आप ही जिला सभा के प्रधान हैं। आपने २० के लगभग पुस्तकें लिखी हैं उनमें कुछ निम्न हैं:—(१) अवतार रहस्य (२) मृतक श्राद्ध

(३) मुनि समाज मुख-मर्दन, (४) पौराणिक गप्प दीपिका, (५) पुराणों के कृष्ण आदि ।

आर्य समाज आर्य नगर:—इस समाज ने प्रचार कार्य में प्रशंसनीय सेवा की । अनेक शुद्धियाँ कराईं । हैदराबाद सत्याग्रह में धन द्वारा सहायता की तथा स्वयं-सेवक भी भेजे । यहाँ के कितने ही सदस्यों ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भी क्रियात्मक सहयोग दिया । मादकता निवारण में भी समाज के सदस्यों ने काफी कार्य किया । अंतर्जातीय विवाह भो कराये । सूरजसिंह जी आर्य, स्वामी सुंदरानंद जी, महाशय मुकंदी लाल जी आदि का सराहनीय सहयोग रहा । पं० भीष्मानन्द जी वकील बड़े सात्विक तथा कर्मण्य आर्य थे । आपने समाज की उन्नति में सराहनीय सहयोग दिया ।

आर्य समाज सराय अगस्त:—समाज की स्थापना स० १९६१ वि० में स्व० पं० बल्देवप्रसाद जी के प्रयत्न से हुई । जिन्होंने वैष्णव मत त्याग कर आर्य समाज को अपनाया था और अपनी पाषाण मूर्तियों को जल में विसर्जन कर दिया था । समाज के पुराने कार्यकर्त्ताओं में श्री बाबूरामजी केवल जीवित हैं । एक बार अमरशहीद पं लेखराम जी के भी यहाँ प्रभावशाली भाषण हुए थे । जिनसे प्रभावित हो अनेक व्यक्ति आर्यसमाजी बने । मुसलमान आर्य समाज के उत्सव पर भाले, बर्छे लेकर चढ़ आये । उनका डट कर सामना किया गया । ताजमोहम्मदखाँ के साथ पं० भोजदत्त आर्य मुसाफिर का शास्त्रार्थ हुआ । ताजमुहम्मदखाँ बुरी तरह परास्त हुआ और लज्जा के कारण वर्षों तक सराय अगस्त में नहीं आया । श्री हरसुख लाल व सालिगराम जी पर पुनः मुसलमान गुण्डों ने घातक आक्रमण किया न्यायालय द्वारा गुण्डों को दण्ड मिला ।

अनेक मुसलमानों की शुद्धि की गई । अस्पृश्यता निवारण में भी समाज अग्रसर हुआ । अनेक वर्षों तक कार्य शिथिल रहने के उपरान्त सन् १९६१ ई० में श्री जंगबहादुरसिंह सूबेदार मेजर सेना की सेवा से मुक्त होकर यहाँ आकर जम गये और आर्य समाज को पुनः जीवनदान दिया । आप ही सम्प्रति समाज के प्रधान हैं, तथा श्री शिवरतन लाल जी यहाँ के मन्त्री हैं ।

आर्य समाज देवरी प्रहलादपुर—स्थापना तिथि १०-११-१९५५ ई० । संस्थापक श्री पं० मिश्रीलाल चतुर्वेदी, स्वामी गरीबानन्द व श्री पन्नालाल जी । उत्साह के साथ उत्सव किये जाते हैं । ईसाई मिशनरियों के विरोध का भी काम होता है । सन् ५९ के अवसर पर पौराणिकों की शिकायत पर पुलिस ने बाधा डाली । प्रांतीय

सरकार से लिखा-पढ़ी की गई। पुलिस पर झाड़ पड़ी। अब पुलिस से सब कामों में सहयोग मिलता है। सन् १९४७ ई० में आर्य कन्या पाठशाला की स्थापना की जो आज भी चल रही है। उक्त स्वामी जी ने देश की स्वतंत्रता में पर्याप्त काम किया है। आपने अनेक आर्य समाजों की स्थापना, ईसाइयों की शुद्धि आदि कार्य किए हैं।

आर्यसमाज अलीगंज—यह मुस्लिम जमींदारी का केन्द्र रहा है। मुसलमानों का हिन्दू जनता पर विशेष आतंक रहा है। सन् १८९० ई० में डा० वंशीधर जी के प्रयत्न से आर्यसमाज स्थापित किया गया। हिन्दुओं में निर्भीकता एवं स्वाभिमान जागा। चार गाँव के चमारों को मुसलमान होने से बचाया। समाज के तत्कालीन मंत्री श्री बाबूराम गुप्त ने मौलवियों से लोहा लिया। अछूतोद्धार और सहभोज के आयोजन किये गये। हैदराबाद सत्याग्रह में यहाँ से ५ सत्याग्रही गए। अमरसिंह नगला के मलकानों की शुद्धि का इस समाज को ही महात्मा हंसराज जी ने केन्द्र बनाया था। अनेकों विधवा विवाह कराए गये। समाज मंदिर अपना है। जिसकी लागत १५०००) है। श्री बाबूलाल जी ४० वर्षों से यहाँ समाज के लिये अपने आपको खपाये हुए हैं। इनके पुत्र श्री रामेश्वर दयाल गुप्त जो डी० ए० वी० कालेज के ग्रेजुएट हैं उन्होंने स्कूल की स्थापना की। जो आज डी० ए० वी० उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के रूप में चल रहा है। जिसमें ६०० छात्र शिक्षा पाते हैं। इसका प्रबन्ध सभा द्वारा नियुक्त ३ सज्जनों की समिति करती है। राष्ट्रीय आंदोलनों की गतविधियों का केन्द्र सदा से आर्यसमाज ही यहाँ रहा है। वर्तमान के उत्साही कार्यकर्त्ताओं में श्री कन्हैयालाल आढ़ती, श्री नरोत्तमसिंह बसन्त, श्री रामचंद्र गुप्त, श्री रामप्रकाश गुप्त, श्री पं० रामभरोसेलाल आदि हैं। श्री बाबूराम गुप्त समाज के उत्साही मंत्री हैं।

आर्यसमाज गंज-डुडवारा—सन् १९३३ में यहाँ आर्य सत्संग की योजना श्री महेशचंद्र आर्य तथा श्री लालसिंह जी ने की। पौराणिकों और मुसलमानों ने मिलकर कड़ा विरोध किया। हवन का सामान व पुस्तकें आदि फेंक दी। इस पर श्री महेशचंद्र ने अनशन किया। हिन्दुओं की आखें खुली और इनसे क्षमा माँगी। और मिश्रीलाल रामगोपाल की धर्मशाला में सत्संग की व्यवस्था करादी; कुछ गुण्डों ने पुनः धर्मशाला का ताला तोड़ा और सामान उठा ले गये। सन् १९३४ ई० में विधिवत् आर्यसमाज की स्थापना की गई। बाद में यहाँ माहौर सभा ने एक भवन समाज को दान में दिया। भारत विभाजन के समय सन्

१९४७ ई० में श्री महतावराय प्रधान समाज की कपड़े की कोठी में आग लगाई गई। मुस्लिम गुन्डों पर अभियोग चला। लम्बी लम्बी सजाएँ हुईं। अलीमशाह फक़ीर ने यहाँ अड्डा जमाया। कुछ हिंदू इसके असर में आ गये। आर्यसमाज ने इसका अड्डा उखाड़ा। इसी प्रकार के अनेक संघर्षों को करते हुए यहाँ का आर्य-समाज आगे बढ़ रहा है। यहाँ के वर्तमान मंत्री श्री मुंशीलाल जी हैं।

आर्यसमाज सोरों—स्थापना सन् १९३४ ई०। समाज का मंदिर २००००) की लागत का है। मेलों में प्रचार करता रहता है।

आर्यसमाज कुशौलिया—गत् वर्ष ही स्थापित हुआ है। संस्थापक श्री पं० रामावतार द्विवेदी जी हैं। वर्तमान अधिकारी—प्रधान श्री बद्रीप्रसाद भारती, मंत्री श्री बहादुरसिह जी हैं। द्विवेदी जी ने २०००) व्यय कर मन्दिर के लिये भूमि आदि खरीदी है।

जिला इटावा

इस जिले में सभा सम्बन्धित आर्यसमाजों की संख्या १९ है। जिला उपसभा भी पर्याप्त समय से स्थापित है।

आर्यसमाज इटावा—स्थापना सन् १८८८ ई० में की गई लगभग एक लाख रुपयों की लागत का विशाल मंदिर है। इसी भवन में समाज की संरक्षता में ज्वालाप्रसाद उच्चतर माध्यमिक विद्यालय चल रहा है। विद्यालय के व्यवस्थापक समाज के प्रधान श्री मित्रप्रकाश वकील एवं श्री महेश्वरीदयाल वकील हैं। समाज के मंत्री श्री छेदालालजी हैं।

आर्य समाज नयाशहर नखाशा—गत् वर्ष स्थापित हुआ। सभा से सम्बंधित है। सुचारु रूप से कार्य कर रहा है। प्रधान श्री रत्नाकर शास्त्री, स्नातक गुरुकुल वृन्दावन एवं मंत्री श्री केदारनाथ जी रि० इंजीनियर हैं।

आर्यसमाज भर्थना—स्थापना सन् १९२३ ई० में हुई। संस्थापक श्री भगवत दयालु जी मुख्तार सिद्धांत वाचस्पति। मंदिर का अनुमानिक मूल्य १००००) है। प्रारम्भिक कार्यकर्त्ताओं में स्व० शिवदयालु जी, स्व० उमाशंकर जी के नाम उल्लेखनीय हैं। अन्य प्रमुख कार्यकर्त्ता श्री रामेश्वरदयालु जी पूर्व प्रधान, श्री झावरमल जी पूर्व प्रधान समाज व मंत्री 'श्यामा-आर्य कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय' भर्थना रहे। श्री बुद्धदेव जी वर्तमान प्रधान आर्य समाज, एवं श्री धर्मपाल जी सिद्धान्त वाचस्पति मंत्री समाज (हिन्दी सत्याग्रह में भाग लेने वाले) आदि हैं।

स्त्री समाज भर्थना—प्रधाना-धर्मपत्नी श्री रामेश्वरदयालु जी। मंत्राणी श्री सुमित्रा देवी आर्या (हैदराबाद सत्याग्रह में भाग लिया)

आर्यकुमारसभा भर्थना अनेक वर्षों से स्थापित है। सभा प्रगतिशील है।

आर्य समाज औरैया—स्थापना १९०० ई० में की गई। निज का विशाल मंदिर है। लागत लगभग ३८०००) है। इसमें १० दूकानें भी हैं। वर्तमान प्रधान श्री रामनाथ गुप्त तथा मंत्री श्री रामचंद्र जी गुप्त हैं। दोनों उत्साही कार्यकर्त्ता हैं। श्री तेजबहादुर शील जी उत्साही नवयुवक हैं। आर्य समाज के मंत्री एवं आर्य वीरदल के बौद्धिक शिक्षक रहे हैं। अनेक सदस्यों ने हैदराबाद सत्याग्रह में भाग लिया। श्री स्वामी पूर्णानन्द जी समाज के मुख्य प्रेरक एवं उपदेष्टा हैं।

आर्य समाज बिधूना—नवीन आर्य समाज है। उत्साही कार्यकर्त्ता श्री गंगाचरण जी प्रधान समाज एवं श्री श्यामसुन्दरलाल जी मंत्री हैं। श्री पुरुषोत्तमदेव जी भी समाज के मुख्य कार्यकर्त्ता हैं तथा स्वामी प्रेमानन्द जी जिले में विशेष प्रचार कार्य करते और इस समाज के कार्यकर्त्ताओं को सदा प्रोत्साहित करते रहते हैं। स्वामी जी ने स्वराज्य आंदोलन में भी भाग लिया और जेल की यातना सही।

आर्य समाज अजीतमल—पुराना समाज है। श्री आनन्दतीर्थ जी, श्री रामकृष्ण जी आदि इसके संस्थापक वर्ग में से हैं। समाज का अपना १००००) की लागत का मंदिर है। वर्तमान प्रधान श्री वृजेन्द्रमित्र आर्य उत्साही कार्यकर्त्ता हैं।

आर्य समाज बकेवर—समाज पुराना है। मंदिर निज का है। जिसमें दूकानें भी बनी हैं। मंदिर की भूमि श्री दाऊ जी ने दान दी थी। श्री भास्कर जी प्रधान एवं मंत्री श्री राम रतन जी हैं जो उत्साह पूर्वक समाज का कार्य करते रहते हैं।

आर्य समाज जसवन्तनगर—स्थापना सन् १८८४ ई० में हुई। तीस वर्ष तक कार्य अच्छा चलता रहा। बाद में शिथिलता आ गई। सन् १९५० ई० में श्री कंवर लाल मंत्री समाज ने इसको पुनर्जीवित किया। समाज भवन जो गिर गया था दोबारा बनवाया गया। मंदिर की लागत लगभग ४००००) है। सन् १९५४ ई० में श्री कुंवरपाल जी ने ड़ी० ए० वी० स्कूल स्थापित किया। यहाँ के पुराने कार्यकर्त्ताओं में श्री जगन्नाथप्रसाद जी एवं डाक्टर आर० जी शास्त्री के नाम उल्लेखनीय हैं। श्री हरिश्चन्द्र शर्मा समाज एवं विद्यालय के संचालक हैं और विशेष उत्साही कार्यकर्त्ता हैं।

जिला-मैनपुरी

मैनपुरी जिले में सभा से सम्बधित आर्य समाजों की संख्या २८ है। इस

जिले का भी यह सौभाग्य है कि युग प्रवर्तक ऋषि दयानंद ने इसके केन्द्र स्थान मैनपुरी नगर को सं० १९३७ वि० में अपने पदार्पण से कृत्यकृत्य किया। जिले में उपसभा भी २४-८-२४ से स्थापित है। संस्थापक बाबू श्यामसुन्दरलाल वकील। सभा प्रचार कार्य में संलग्न है। वर्तमान प्रधान श्री विशेश्वरसिंहजी, मंत्री श्री दयाराम जी हैं।

मैनपुरी—सं० १९२७ वि० तदनुसार सन् १८८१ ई० में महर्षि दयानंद मैनपुरी पधारे और श्री थानसिंह लोहिया के बाग़ में ठहरे। और मोतीगंज में उनका भाषण हुआ। स्वामी जी के मैनपुरी से चले जाने के उपरांत उनके भाषण से प्रभावित जनता ने आर्य समाज स्थापित कर दिया। स्थापना श्री सुन्दर लाल रायजादा की अध्यक्षता में की गई। कार्य साधारण गति से चलता रहा, किन्तु सन् १९०३ ई० में जब स्व० बा० श्यामसुन्दरलाल एडवोकेट ने मैनपुरी में वकालत करनी आरम्भ की तो यहाँ आर्य समाज में विशेषगति आने लगी। स्व० पं० छोटेलाल भार्गव जी (पिता श्री वशिष्ट भार्गव न्यायाधीश हाईकोर्ट प्रयाग) का सम्बन्ध भी आर्य समाज से हो गया और भार्गव जी तथा एडवोकेट साहब ने मिलकर आर्य भवन बनाने का कार्य पूरे वेग से आरम्भ कर दिया। और कुछ ही समय में एक सुंदर भवन तैयार हो गया।

शुद्धि आंदोलन को प्रगति दी गई। नगला कपूरपुर में मलकानों की शुद्धियां की गई। इस कार्य में श्री क्षेत्रपालसिंह मंत्री सोलजर्सबोर्ड का नाम उल्लेखनीय है। स्वामी दर्शनानंद जी की यहाँ पादरी मुलायमसिंह से धर्मचर्चा हुई और उसका जनता पर विशेष प्रभाव पड़ा। सन् १९१७ ई० में आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता स्व० गोपीनाथ जी तथा महाशय प्रेमविहारीलाल एडवोकेट के प्रयन्न से एक शिक्षणालय स्थापित हुआ जो सन् १९२१ ई० में तिलक स्वराज्य विद्यालय के रूप में परिवर्तित कर दिया गया। मैनपुरी में स्व० खूबचंद चतुर्वेदी, पं० राधाकृष्ण, श्री शंभुदयाल शुक्ल, श्री युगुल किशोर जी आदि ने महर्षि के सम्पर्क से विशेष प्रेरणा ली थी। इन लोगों के पुरुषार्थ से यहां एक स्कूल खोला गया जो इस समय दयानंद उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के रूप में चल रहा है और जिसमें ७०० छात्र शिक्षा पाते हैं।

श्री ज्ञानप्रकाश जी इसके प्रधानाचार्य हैं। श्री ठा० दुनिया सिंह जी ने यहां एक प्रेम पाठशाला (बेसिक स्कूल) की स्थापना की जो आज भी विद्यमान है। हैदराबाद सत्याग्रह के समय स्व० कृष्ण कुमारी, श्रीमती ओंकार देवी के परिश्रम

से पुष्कल धन एकत्रित कर भेजा गया । मुसलमानों ने भी चन्दा दिया । हैदराबाद सत्याग्रह में यहां से अनेक सत्याग्रही गये । उनमें से नाहिली ग्राम निवासी श्री छोटेलाल जी हैदराबाद में शहीद हुए । सन् १९५६ ई० में समाज की स्वर्ण जयन्ती समारोह पूर्वक मनाई गई ।

आर्य समाज शिकोहाबाद—समाज की स्थापना सन् १९०५ ई० में की गई । पौराणिकों द्वारा नाना विरोध बाधाओं के उपस्थित किये जाने पर भी समाज चलता रहा । पं० भोजदत्त आर्य मुसाफिर की यहां पौराणिकों से कड़ी टक्कर हुई । श्री बौहरे बृजलाल पालीवाल, ठा० सज्जन सिंह, श्री शिवलाल, म० शिव-सहाय आदि का प्रयत्न इस कार्य में सराहनीय है । सन् १९२४ ई० में श्री बद्रीनारायण जी द्वारा समाज को लगभग ८०००) की विस्तृत भूमि दान में प्राप्त हुई । जिसमें महात्मा नारायण स्वामी जी द्वारा आर्य भवन की आधारशिला रखवाई गई । मंदिर निर्माण में श्री शिवलाल जी, ठा० कल्याण सिंह, श्रीमती जानकी देवी, स्व० सुशीलादेवी, व बा० वीरेश्वर सिंह के दान प्रशंसनीय हैं । सन् १९४७ में चौ० चरण सिंह वर्तमान कृषि मंत्री उत्तर प्रदेश के सभापतित्व में यहां अखिल भारतीय आर्य कुमार सम्मेलन सम्पन्न हुआ । सम्मेलन का उद्घाटन श्री चांदकरण शारदा अजमेर ने किया ।

मई १९५६ ई० को यहां सभा का बृहदाधिवेशन किया गया । सन् १९४५ ई० में यहां स्त्री समाज की स्थापना हुई । जिसका कार्य नियमित रूप से चल रहा है । मथुरा जन्म शताब्दी में समाज का विशेष सहयोग रहा । हिन्दी रक्षा आन्दोलन में तन, मन व धन से सहयोग दिया । २०००) रु० तथा सत्याग्रही भेजे । शुद्धि कार्य में भी इस समाज का हाथ रहा है । सन् १९३३ में आनन्द पुस्तकालय भी स्थापित किया गया । इसमें विशेष पुरुषार्थ श्री हरचरणलाल जी व श्री विश्वम्भरनाथ जी का है । संक्षेप में समाज प्रगतिशील है जनता पर इसका प्रभाव है । यहाँ के उत्साही कार्यकर्त्ता ठा० फूलन सिंह जी सभा के सन् १९५८ में मंत्री रह चुके हैं । पं० दयाराम जी समाज के परिश्रमी मंत्री हैं ।

आर्य समाज जगतपुर—स्थापना तिथि २० जनवरी सन् १९३८ ई० । श्री पं० रामचन्द्र जी भजनोपदेशक सठगवां ने इसकी स्थापना की । मंदिर अपना है । जिसकी लागत लगभग ६०००) है । समाज के प्रधान श्री रघुवीर सिंह जी, मंत्री श्री जगदीश सिंह जी । हैदराबाद सत्याग्रह में इस समाज ने दो निम्न जत्थे भेजे—

१—श्री विश्राम सिंह, श्री भरत सिंह, श्री बसन्त सिंह, श्री लाल सिंह जी ।

२—श्री पं० प्यारेलाल वानप्रस्थी, श्री पं० श्रीराम, श्री भजनानन्द जी का। हिन्दी सत्याग्रह में श्री उम्मेद सिंह, श्री ब्रजेश सिंह जी ने भाग लिया।

आर्य समाज मदनपुर—स्थापना तिथि ३ जनवरी १९४३ ई० स्थापना में श्री जौहरी सिंह जी का त्याग सराहनीय है। आप हिन्दी सत्याग्रह में भी सम्मिलित हुए थे सुन्दरता के साथ सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में श्री बा० श्यामगोपाल जी का कार्य भी सराहनीय था। प्रधान श्री जौहरी सिंह व मंत्री श्री अमीर सिंह जी हैं।

आर्य समाज नौनेर—आर्य समाज की स्थापना से पूर्व यहां वाम-मार्ग का जोर था। एक भंगन को नंगा करके नौनेर तथा निकट के गांव के लोग उसकी गुप्तेन्द्री की पूजा आदि करते थे। नौनेर के कुछ व्यक्ति पं० प्यारेलाल जी के साथ शाहजहांपुर गये जहां महर्षि वेद-कथा कर रहे थे। घटना सुनकर महर्षि ने मैनपुरी के दौरे के समय नौनेर आने की बात कही थी। किन्तु उनको आने का अवकाश न मिला। कई वर्ष के आन्दोलन के उपरान्त यह घृणित प्रथा समाप्त हुई पं० प्यारेलाल जी ने नौनेर में आर्य समाज की स्थापना की। आचार्य वाचस्पति एवं पं० शंकरदेव के उद्योग से समाज का कार्य सुन्दर चल रहा है। समाज के प्रधान श्री रामनाथ जी एवं मन्त्री श्री विद्यासागर जी हैं।

आर्य समाज आर्यपुर खेड़ा—स्थापना तिथि १२-३-४४ ई०। श्री रंगनाथ प्रसाद जी ज़मींदार के विशेष प्रयत्न तथा पं० रामचन्द्र जी प्रचारक गुरुकुल बदायूं के प्रभाव से हुई। श्री रंगनाथ जी ही समाज के प्रथम प्रधान निर्वाचित हुए। २५-१२-४६ को सभा में प्रविष्ट हुई। ८-७-४९ ई० में एक पाठशाला स्थापित की गई जो सम्प्रति उच्च माध्यमिक विद्यालय के रूप में चल रही है। स्कूल के पूर्व प्रबन्धक श्री रंगनाथ जी एवं वर्तमान श्री धर्मेन्द्र नारायण जी हैं।

आर्य समाज अधार—स्थापना तिथि सन् १९५१ ई०। साथ ही डी० ए० वी० माध्यमिक विद्यालय भी स्थापित किया गया। संस्थापक श्री कृष्णगोपाल दास 'कृष्ण' वैद्य विशारद जी हैं। इस क्षेत्र में पिछड़ी हुई तथा परिगणित जातियों को नामधारी ब्राह्मणों द्वारा बहुत पीड़ित और अपमानित किया जाता था। आर्य समाज एवं स्कूल के बन जाने से वातावरण कुछ बदला है किन्तु विरोध अभी भी चल रहा है। श्री कृष्णगोपालदास जी यहां के प्रमुख कर्मठ कार्यकर्ता हैं आप ही विद्यालय के प्रबन्धक एवं आर्य समाज के मन्त्री हैं। विद्यालय के आचार्य श्री रामसेवक बी० ए०, बी० टी० हैं।

आर्य समाज भोगांव—समाज की स्थापना सन् १९०८ ई० के लगभग हुई। श्री पं० बल्देव सहाय भटनागर सब ओवरसियर ने समाज की स्थापना की। मंदिर का शिलान्यास यहां की कुमार सभा के दिवंगत मन्त्री श्री फतेहबहादुर जी की स्मृति में सन् १९२३ ई० में कानपुर के प्रसिद्ध आर्य नेता बा० ज्वालाप्रसाद जी वकील द्वारा सम्पन्न हुआ। यहां के प्रधान श्री सतीशचन्द्र दीक्षित एम० ए० एल० टी० प्रधानाचार्य इन्टर कालेज, उप प्रधान श्री रामरतन जी, मंत्री श्री सदानन्द आर्य एवं कोषाध्यक्ष श्री भोलानाथ जी हैं।

आर्य समाज कौरारा खुर्द—स्थापना तिथि चैत्र कृ० १ सं० १९८४ वि० को श्री पं० सुखलाल जी कौराराखुर्द निवासी के सत्प्रयत्न से हुई। वार्षिकोत्सव प्रतिवर्ष निरन्तर होते हैं। स्थापना के कुछ वर्ष उपरान्त कार्य में शिथिलता आ गई किन्तु बाद में फिर जीवन आ गया। १९५० ई० में श्री रामदेव जी प्रधान व श्री जनक सिंह जी मंत्री थे उनके प्रयत्न से ३ ईसाई परिवार शुद्ध किये गये। इस समाज के उद्योग से कुतुबपुर व सूरजपुर में आर्य समाज स्थापित हुए। यहां के परिश्रमी कार्यकर्ता श्री छदम्मीलाल वानप्रस्थी हैं।

आर्य समाज घिरोर—स्थापना तिथि २९-१२-२८ ई०। हैदराबाद सत्याग्रह में श्री वंशीधर जी, राजगुरू पं० धुरेन्द्र शास्त्री जी के जत्थे में गये। श्री रामकुमार जी ने १९५२ में एक पक्की दूकान समाज को दान में दी। श्री रामकुमार जी समाज के मंत्री व सभा के अवैतनिक उपदेशक हैं, श्री रामगोपाल जी प्रधान हैं।

आर्य समाज नाहिली—दिनांक २५-११-३७ में श्री रामगोपाल जी एवं श्रीरामकुमार जी ने यहां आर्यसमाज की स्थापना की। श्री देवी सिंह जी ने एक बीघा पक्की भूमि दान में दी। जिसमें हैदराबाद सत्याग्रह के हुतात्मा स्व० छोटे लाल जी की स्मृति में एक भवन निर्मित है। इस समाज से दो सज्जन हैदराबाद सत्याग्रह में गये। देवी सिंह जी यहां के उत्साही कार्यकर्ता हैं। समाज के आधीन एक दयानन्द विद्यालय नाम की संस्था चल रही है।

आर्य समाज केसरी—यह समाज सन् १९२९ ई० में प्रतिनिधि सभा से सम्बन्धित हुआ। हैदराबाद सत्याग्रह और पंजाब हिन्दी आन्दोलन में भी इस समाज के कई कई सदस्यों ने भाग लिया था।

जिला फर्रुखाबाद

फर्रुखाबाद भी उत्तर प्रदेश का बड़ा सौभाग्यशाली जिला है। महामानव

दयानन्द ने अपनी प्रचार यात्राओं में अनेक बार पधार कर और वैदिक ज्ञान गंगा प्रवाहित कर इसे पवित्र किया है। कर्णवास मेरठ और काशी को महर्षि ने सात-सात बार दर्शन दिये हैं किन्तु फर्रुखावाद को तो नौ बार ऋषि दर्शन का सौभाग्य उपलब्ध हुआ है। इस जिले में निम्न सात स्थानों में ऋषि ने पदार्पण किया है—

१—जलालाबाद, २—शृंगीरामपुर, ३—कायमगंज, ४—कम्पिल, ५—शकरुल्लापुर, ६—फतेहगढ़, ७—कन्नौज।

फर्रुखावाद गंगा के तीर नवाव बंगश खां का वसाया हुआ २५० वर्ष पुराना नगर है। यहां साध लोगों की भी वस्ती है। जिनकी गणना हिन्दुओं में है, किन्तु इनके विचार, पूजा-पाठ, मान्यताएं एवं रीति रस्म प्रायः हिन्दुओं से भिन्न हैं। ऋषि ने इनके यहां भोजन कर ऊंच नीच की भावनाओं पर क्रियात्मक रूप से कुठाराघात किया और इनको अपनाने की कृपा की। सभा से सम्वन्धित आर्य समाजों की संख्या इस ज़िला में ३७ है। ज़िला उपसभा भी यहां वहुत समय से वनी हुई है।

आर्य समाज फर्रुखाबाद—यह आर्य समाज प्रान्त के उन ९ आर्य समाजों में से एक है जिसकी स्थापना महर्षि दयानन्द जी ने स्वयं अपने कर कमलों से की थी। स्थापना तिथि १९-५-१८८० ई० है। यहां ऋषि ने अनेक पौराणिक पण्डितों से शास्त्रार्थ किए जिनका प्रभाव यह हुआ कि यहां के प्रायः सब ही गणमान्य हिन्दू आर्य समाज में प्रविष्ट हो गये और उन्होने सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं शैक्षणिक क्षेत्रों में अगुआ वन कर कार्य किया। ज़िले फर्रुखावाद का इतिहास वास्तव में आर्य समाज की गतविधियों का ही इतिहास है। इस समाज के पुराने गणमान्य प्रतिष्ठित कार्यकर्ताओं में कुछ निम्न है :—श्री गोपालराव हरि पुन्ताँकर जो 'भारतसुदशा-प्रवर्तक' मासिक पत्र के संपादक रहे हैं, और जिन्होंने पाखंड-तिमिर-नाशक, दयानन्द दिग्विजयार्क, ज्ञान–सागर, सुन्दरी-सुधा आदि पुस्तकों की रचना की है। २–ला० द्वारिका प्रसाद सेठ, जिन्होंने स्वामी जी महाराज की संस्कृत पाठशाला के लिए पुष्कल धन प्रदान किया। ३-४–लाला कालीचरण जी व रामचरण जी रईस जो दोनों स्वामी जी द्वारा निर्मित परोपकारिणी सभा के माननीय सदस्य रहे हैं। ५-मुन्शी नारायणदास वैश्य जिन्होंने आरम्भिक युग में २५०००) की राशि आर्य समाज को दान दी थी। ६--ला० सरयू प्रसाद जी रईस जो कई वर्षों तक आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष रहे हैं। ७–पं० लक्ष्मीदत्त जी पांडे आर्य समाज के प्रसिद्ध उपदेशक रहे हैं। स्वामी

जी महाराज ने इस नगर में एक संस्कृत विद्यालय स्थापित किया था और उसके द्वारा आर्ष व्याकरण एवं साहित्य के विद्वान् एवं प्रचारक निर्माण करना उनका उद्देश्य था। उद्देश्य की पूर्ति होते न देख स्वामी जी ने उसे तोड़ दिया। बालिकाओं की शिक्षा के क्षेत्र में यहां आर्य समाज ने अपना पग बढ़ाया और एक विद्यालय स्थापित किया जो अब उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के रूप में चल रहा है। विद्यालय में लगभग ५०० कन्यायें शिक्षा पाती हैं।

आर्य समाज जलालाबाद—स्वामी जी महाराज ने अपनी प्रचार यात्रा में इस स्थान पर एक रात्रि विश्राम किया। उनके प्रवचन को सुनकर जनता अत्यधिक प्रभावित हुई और सन् १८८० ई० में ही आर्य समाज स्थापित कर दिया। प्राचीन मुख्य कार्यकर्ताओं में श्री पं० कन्हैयालाल चतुर्वेदी, पं० गयाप्रसाद शुक्ल, पं० प्रयागदत्त चतुर्वेदी, पं० पुत्तूलाल दुबे, पं० माधवराव मिश्र, पं० मुन्नीलाल तिवाड़ी, पं० शिवराखनलाल शुक्ल, पं० रामलाल पाठक कर्मकाण्डी, पं० ज्वाला प्रसाद तिवारी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। समाज का अपना भवन है। सालाना अधिवेशन, उत्सव आदि प्रभावपूर्ण होते हैं। शुद्धि, विधवा-विवाह, मादक द्रव्य निषेधादि कार्यों में समाज का मुख्य भाग रहता है। स्वाधीनता संग्राम में इस समाज के अधिकतर कार्यकर्ताओं एवं सदस्यों ने भाग लेकर समाज के नाम को उज्ज्वल किया है।

आर्य समाज खड़गपुर—यह समाज १५ मई सन् १९४९ में स्थापित हुआ। १९५२ में 'गोकृष्यादि रक्षिणी सभा' स्थापित हुई। समाज का पुस्तकालय अच्छी सेवा कर रहा है। प्रचार करने में भी इस समाज को अच्छी सफलता प्राप्त हुई है। श्री बाबूराम जी का प्रयत्न प्रशंसनीय है।

आर्य समाज कमालगंज—इस समाज की स्थापना २६ मार्च सन् १९२३ को हुई। हैदराबाद सत्याग्रह के लियें एक जत्था भेजा गया तथा आर्थिक सहायता भी दी गई। शास्त्रार्थ हुए। पं० रघुनन्दन सिंह जी के उद्योग से समाज मंदिर में एक कमरा निर्मित हुआ है। सन् १९५४ ई० से आर्य समाज द्वारा होम्योपैथिक डिस्पैन्सरी चलाई जा रही है। जिसमें रोगियों की निःशुल्क चिकित्सा होती है। डा० कृष्णगोपाल सक्सेना का इस डिस्पेन्सरी में पूर्ण सहयोग है। श्रीमती मनलो देबी जी के धन से समाज मंदिर के बाहर अछूतों के लिये एक कुएं का निर्माण कराया गया। रामलीला आदि मेलों पर सफलता पूर्वक प्रचार किया जाता है।

आर्य समाज कायमगंज—संवत् १९२५ वि० में महर्षि दयानन्द गंगा तट पर

घूमते हुए इस नगर में भी पधारे थे और ला० गिरधारीलाल महाजन के पक्के कुएं पर ठहरे थे। वहां से पं० हरिशंकरलाल पाण्डे के शिवालय में आ गए। संवत् १९३५ वि० में यहां आर्य समाज की स्थापना हुई और सन् १९०६ में समाज मन्दिर निर्माण हुआ। अमर शहीद पं० लेखराम जी भी इस नगर में पधारे थे। स्वामी परमानन्द जी वेधड़क ने हिन्दी सत्याग्रह में भाग लिया। हैदराबाद सत्याग्रह में भी आप एक जत्थे को साथ लेकर सम्मिलित हुए। शुद्धि आन्दोलन में आपने बहुत योग दिया। आप आर्य समाज की सेवा बड़ी संलग्नता पूर्वक कर रहे हैं। देश के स्वतन्त्रता सग्राम में भी आप सोत्साह सम्मिलित हुए। इस समाज ने शुद्धि आन्दोलन में भी बहुत भाग लिया और इसके कार्यकर्ता वैदिक धर्म प्रचार में सदैव अग्रसर रहे हैं।

आर्य समाज श्रीचक्रपुर—इस समाज की स्थापना सन् १९१३ ई० में हुई है। अलीगंज तहसील के तहसीलदार श्री दयाराम जी ने १८९५ ई० में यहां आर्य समाज का प्रचार करने में अधिक सहायता दी। उन दिनों अनेक विद्वानों के प्रभावशाली व्याख्यान हुए। समाज की स्थापना में ठा० भीष्मसिंह जी ने बहुत उद्योग किया। स्वतन्त्रता आन्दोलन में अनेक आर्य जेल गये। समाज ने अनेक शुद्धियां भी कराईं।

आर्य समाज तिर्वा—श्री म० शंकरलाल जी यहां के मूल स्तम्भ रहे हैं। आपके अनथक उद्योग से यहां आर्य समाज की विचारधारा फैली। सन् १९१७ ई० में यहां आर्य समाज के प्रचार की विशेष योजना की गई। सभा के महोपदेशक पं० नन्दकिशोरदेव शर्मा, पं० राम दुलारे लाल चतुर्वेदी, कुंवर सुखलाल आर्य मुसाफिर जैसे उच्चकोटि के विद्वानों को बुलवा कर भाषण करवाये गए। सन् १९२५ ई० में यहां के माननीय नरेश श्री दुर्गानारायण सिंह जन्म शताब्दी मथुरा में शुद्धि सम्मेलन के अध्यक्ष बने और तत्पश्चात् शुद्धि एवं महिला रक्षा कार्यों में आपका कार्य प्रशंसनीय रहा। ३१ दिसम्बर १९३२ को यहां नियमानुसार आर्य समाज संगठित किया गया। हैदराबाद सत्याग्रह आदि में आर्थिक सहयोग दिया।

आर्य समाज कर्णपुरदत्त—१६-१०-१९४४ को स्वामी आत्मानन्द जी साधु-आश्रम हरदुआगंज की अध्यक्षता में समाज की स्थापना की गई। दिनांक ३ व ४ जन० १९४६ को सभा के महोपदेशक श्री सत्यमित्र जी शास्त्री का पौराणिक पण्डित रामदेव से मूर्ति पूजा पर शास्त्रार्थ हुआ। इसका प्रभाव जनता पर इतना पड़ा कि आर्य समाज की वह खुली समर्थक बन गयी २३-११-४७ को समाज ने

हुसेनपुर हड़दाई ग्राम के तीन मुस्लिम परिवारों को शुद्ध किया १००० जनों का विराट् सहभोज भी किया गया। २०-१२-५३ को डा० रघुवीरदत्त शर्मा फर्रुखाबाद के कर कमलों से आर्य मन्दिर का शिलान्यास हुआ। सम्प्रति मन्त्री श्री गंगासिंह जी हैं।

आर्य समाज तेराजाकट—स्थापना तिथि १-१०-१८९१ ई०। राजकुमार वमोली की स्त्री को विधर्मी होने से बचाया। श्री गंगाराम व श्री लक्ष्मीनारायण जी अपने जीवन को जोखिम में डालकर उसको यवनों के फन्दे से निकाल कर लाये। श्री श्यामलाल जी आदि यहां के पुराने कर्मठ कार्यकर्ता रहे हैं। आपने शुद्धियों में विशेष भाग लिया। समाज का अपना मन्दिर है। श्री शिवकुमार वैद्य सम्प्रति समाज के प्रधान हैं पं० गुरुदत्त द्विवेदी मन्त्री हैं।

आर्य समाज रम्पुरा—स्थापना तिथि २-३-१९३१ ई०। संस्थापक श्री चौ० गंगासहाय जी श्री सच्चिदानन्द आर्य के विशेष प्रयत्न से आर्य मन्दिर का निर्माण हुआ। आर्य जी ने अन्य अनेक स्थानों पर भी आर्य समाज स्थापित किये तथा ज़िला उप सभा की स्थापना में भी आपका हाथ था। श्री बनवारीलाल आर्य ने हैदराबाद सत्याग्रह में सक्रिय भाग लिया। विहार भूकम्प में २००) की सहायता भेजी। हिन्दी रक्षा आन्दोलन में भी समाज का सहयोग रहा। २५ अछूतों को ईसाई होने से बचाया। गुंडों से हिन्दू नारियों की रक्षा की। अनेक विधवा विवाह कराये।

आर्य समाज ठठिया—यहां समाज स्थापना का श्रेय श्री चौ० बद्रीप्रसाद, पं० नारायण प्रसाद वैद्य शास्त्री, श्री रामचन्द्र पांडेय, पं० बंगाली पांडेय को है। मन्दिर बन गया है। श्री राजा दुर्गानारायण सिंह जी की अध्यक्षता में यहां चार व्यक्तियों की शुद्धि की गई। पं० जगदीशचन्द्र मन्त्री आर्य समाज तिर्वा ने भी यहां एक शुद्धि की। स्वामी शिवानन्द जो यहां के विशेष कर्मठ व्यक्ति हैं। स्वाधीनता संग्राम में चार बार कारागार की यात्रा की। आपका मकान भी नष्ट किया गया। सन् ४२ में आपको सरकार ने बाग़ी भी करार दिया। तब से उनका पता नहीं है। डा० लक्ष्मीनारायण जी पूर्व प्रधान समाज ने स्वराज्य आन्दोलन में दो बार जेल यात्रा की। समाज के वर्तमान मन्त्री श्री कृष्ण कुमार वैद्य शात्री हैं।

आर्य समाज खुदागंज—समाज की स्थापना १९०२ ई० में श्री स्वामी सर्वदानन्द जी ने की। प्रथम प्रधान मुन्शी भोलानाथ व मन्त्री श्री लक्ष्मीनारायण थे।

२५००) की लागत का मन्दिर बन गया है। समाज के अनेक उत्सव हुए हैं। वर्तमान प्रधान श्री धर्मेन्द्रकुमार व मन्त्री श्री वृजकिशोर जी हैं।

आर्य समाज सौरिख—स्थापना ति० सन् १९२० ई०। श्री स्व० पुतन्नीलाल, श्री ठा० प्रकाश स्वरूप, श्री अटलविहारी, श्री मंगली प्रसाद के प्रयत्न से हुई। सन् १९५० ई० में डा० अश्विनी कुमार के उद्योग से समाज पुनः प्रगतिशील बना। स्थानीय मेलों में प्रचार होता है। हिन्दी रक्षा आन्दोलन में श्री अनुभवानन्द सदस्य समाज ने कारागार की यात्रा की। स्वराज्य आन्दोलन में समाज के कार्यकर्ता श्री अटल जी व अनुभवानन्द जी ने कई बार जेल यात्रा की। कवि सम्मेलन एवं गोपाष्टमी पर गोरक्षा सम्मेलन किये जाते हैं। श्री डा० धर्म पाल सिंह जी समाज के संरक्षक श्री रघुवीर सिंह यादव प्रधान एवं श्री अनुभवानन्द मन्त्री हैं।

आर्य समाज छिबरामऊ—समाज के प्रमुख व्यक्तियों में श्री डा० माणिकचन्द्र, पं० मेवाराम, पं० जयराम मुख्त्यार हैं। ठा० मथुरासिंह जी वर्तमान मन्त्री हैं।

आर्य समाज सकरावां—समाज स्थापना सन् १८९९ ई० में हुई। श्री मन्नूलाल श्रीवास्तव को स्थापना का श्रेय है। पं० अनन्तराम उपदेशक के प्रचार से यहां जाग्रति हुई। जब आर्य समाज को देश-द्रोही की दृष्टि से बृटिश सरकार देखती थी तो पुलिस के दरोगा मुन्नालाल चौबे ने यहां आकर जांच की और वह स्वयं ही बाद में आर्य समाजी बन गये। हिन्दी रक्षा आन्दोलन एवं हैदराबाद सत्याग्रह में आर्थिक सहायता की। गो बध बन्द कराने में समाज ने कार्य किया। बाजार से गो मांस की बिक्री बन्द कराई यहां के हिन्दुओं में जीवन फूंकने में आर्य समाज ने प्रशंसनीय कार्य किया है।

आर्य समाज मेरापुर—स्थापना तिथि १५-८-१९४३ ई०। हैदराबाद सत्याग्रह के वीर सेनानी पं० प्यारेलाल मिश्र ने की। अकबरपुर, सिकन्दरपुर आदि ग्रामों में ३० नव मुस्लिम परिवारों को शुद्ध किया गया। मेरापुर के निकट बौद्धों का प्रसिद्ध तीर्थ स्थान सांकाश्यपुरी (संकिसा) विद्यमान है।

ज़िला कानपुर

उत्तर प्रदेश का सबसे बड़ा औद्योगिक केन्द्र है। भारत के प्रथम स्वातंत्र्य समर में कानपुर का विशेष भाग रहा है। इसी जिले के अन्तर्गत बिठूर में जो हिन्दुओं का तीर्थस्थान है, नाना धूंधू पंत के पूर्वज निवास करते थे। महारानी लक्ष्मी बाई झांसी का बाल्यकाल इसी बिठूर में व्यतीत हुआ। यहाँ उन्होंने नाना

जी के साथ में अस्त्र-शस्त्र संचालन की शिक्षा पाई थी। इस ज़िले के अन्दर अनेक आर्य वीरों ने भारत के स्वातन्त्र्य समरों में बढ़कर भाग लिया है।

आर्य समाज कानपुर को यह सौभाग्य प्राप्त है कि महर्षि स्वामी दयानन्दजी ने अपनी प्रचार यात्रा में चार बार यहाँ पदार्पण किया और वेद धर्म की पावनी गंगा प्रवाहित की। कानपुर में स्वामी जी महाराज ने अनेक शास्त्रार्थ किये और जन-मानस को वेदों की ओर आकर्षित किया। अन्तिम वार अक्टूबर १८७९ में ई० में स्वामी जी महाराज कानपुर पधारे तथा उनके जाने के कुछ दिन बाद ही अर्थात् १६ नवम्बर १८७९ ई० को आर्य समाज स्थापित कर दिया गया। प्रारम्भिक अधिवेशन बाबू माधवप्रसाद चक्रवर्ती के गृह पर हुआ करते थे। सन् १८८४ ई० में आर्य समाज का प्रथम वार्षिकोत्सव बड़े समारोह से मनाया गया। प्रारम्भिक काल में कवि सम्राट् पं० नाथूराम शंकर शर्मा, पं० प्रताप नारायन जी तथा श्री गदाधर सिंह जी पूर्व सभा मन्त्री भी इस समाज के सदस्य रहे हैं। सन् १८९० ई० में प्रथम बार लाला लाजपत राय जी का यहाँ आगमन हुआ। आपसे प्रभावित होकर मुंशी ज्वालाप्रसाद आदि समाज में प्रविष्ट हो गये। इसी वर्ष पं० लेखराम आर्य मुसाफिर भी ऋषि जीवन की सामग्री की खोज करते हुए यहाँ पधारे थे।

आर्य समाज के नगर कीर्तन एवं वार्षिकोत्सव प्रति वर्ष बड़े समारोह के साथ होते हैं। शुद्धि के क्षेत्र में इस समाज ने विशेष कार्य किया है। लगभग ५० शुद्धियां प्रति वर्ष करने का यहाँ औसत रहा है। बिठूर के मेले में इस समाज की ओर से बड़े पैमाने पर प्रचार कार्य किया जाता है।

ज़िला प्रचार की ओर इस समाज का विशेष ध्यान रहता है। स्वामी ओंकार सच्चिदानन्द, पं० देवदत्त शास्त्री आदि ने ज़िले में प्रचार का विशेष कार्य किया।

आर्य समाज का प्रथम मन्दिर ठंडी सड़क पर था, बाद में मेस्टन रोड पर एक विशाल मन्दिर लगभग दो लाख रुपयों की लागत से बनवाया गया। जो भारतवर्ष में उच्च कोटि का माना जाता है। इस मन्दिर का शिलान्यास ३ मार्च, १९१६ ई० को महात्मा हंसराज जी ने अपने कर कमलों से किया।

डी० ए० वी० कालेज—डी० ए० वी० कालेज सोसाइटी उत्तर प्रदेश के सन् १९१७ ई० में राय बहादुर बाबू आनन्दस्वरूपजी प्रधान बने तथा यहाँ जो आर्य समाज के अन्तर्गत डी० ए० वी० माध्यमिक विद्यालय चलता था उसको इस सोसाइटी के सुपुर्द कर दिया गया जिसने विकसित होते-होते वर्तमान

विशाल रूप धारण किया है। इस कालेज में इन्जियरिंग विभाग भी खुल गया है। छात्रों की संख्या लगभग ६ सहस्र है, उत्तर प्रदेश में आर्यसमाज का सबसे बड़ा कालेज है। इस सोसाइटी को आर्य समाज मेस्टन रोड ने कई लाख रुपया दिया है।

इस डी० ए० वी० कालेज की स्थापना सन् १८७९ ई० में की गई थी। लाला दीवानचन्द्रजी एम० ए० को इसका प्रधानाचार्य बनाया गया। सन् १९२१ में आर्य समाज कानपुर ने अपनी रजिस्ट्री प्रथक कराई। इस कालेज ने आर्य समाज कानपुर को अनेक उच्चकोटि के विद्वान् एवं कर्मठ कार्यकर्ता, लेखक एवं व्याख्याता दिये हैं यथा पं० मुंशीराम एम०ए०, पं० सूर्यदेव शर्मा एम०ए० आदि।

कानपुर आर्य समाज के अन्तर्गत स्त्री समाज, आर्य कुमार सभा, आर्य वीर दल आदि अनेक संस्थायें हैं जो विधिवत् कार्य करती हैं। हैदराबाद सत्याग्रह, हिन्दी रक्षा आन्दोलन तथा अन्य समाज के विशेष सांस्कृतिक एवं सामाजिक कार्यों में कानपुर पूर्ण सहयोग देता रहा है। स्व० मुंशी ज्वाला प्रसाद जी एवं स्व० राय बहादुर बाबू आनन्द स्वरूपजी, स्व० बृजेन्द्रस्वरूपजी आदि इसके पुराने प्रतिष्ठित कार्यकर्ता रहे हैं। वर्तमान में इस समाज के प्रमुख कार्यकर्ताओं में श्री मुंशी राम एम० ए०, बाबू कालिकाप्रसाद जी, लाला दीवानचन्द्रजी, पं० विद्याधरजी, श्री हरिदत्त जी शास्त्री, श्री देवेन्द्रस्वरूपजी, श्री राधाकृष्णजी व श्री शारदाप्रसाद जी आदि हैं।

आर्य समाज सीसामऊ—श्री सूर्यबलीजी ठेकेदार के प्रयत्न से २९ जनवरी १९३४ ई० को यह समाज स्थापित हुआ। गांधी नगर में लेनिन पार्क के समीप भूमि क्र्य करके विशाल मन्दिर बनाया गया। सदस्यों की संख्या २५० से ऊपर है। बड़ा पुस्यकालय तथा वाचनालय है। महर्षि दयानन्द धर्मार्थ औषधालय है। प्रारम्भिक कार्यकर्ताओं में श्री अम्बिकाप्रसाद जी, श्री रघुनन्दनप्रसादजी इंजिनियर श्री विश्वम्भरनाथ तिवारी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

हैदराबाद सत्याग्रह, हिन्दी रक्षा आन्दोलन में विशेष सहयोग प्रदान किया। भारत विभाजन के उपरान्त पंजाब से आये आर्यजनों के सहयोग से समाज़ ने विशेष उन्नति की। शुद्धि, विधवा विवाह आदि कार्यों में समाज अग्रसर रहता है। आर्य संस्थाओं को एवं आर्य समाज सम्बन्धी विशेष कार्यों में आर्थिक सहयोग देता रहता है। राष्ट्रीय सुरक्षा कोष में २००० हजार रुपये एवं १६० ग्राम सोना भेजा।

वर्तमान प्रधान श्री कृष्णचन्द्र कपूर, उप प्रधान डा० शिवदत्तजी तथा मंत्री श्री बलराम गंभीर हैं।

आर्य समाज नवाबगंज—सन् १९०४ ई० में स्व० मूलचन्द्रजी शर्मा एवं लाला परागीलाल के उद्योग से स्थापित हुआ। समाज का अपना मन्दिर है। कार्यकर्ताओं के बाहर जाते रहने के कारण बीच-बीच में समाज शिथिल पड़ता रहा। सन् १९४७ से कार्य सुचारु रूप से चलता आ रहा है।

स्त्री समाज भी स्थापित हो गया है। एक पुस्तकालय भी स्थापित कर दिया गया है। वर्तमान प्रधान श्री देशराजजी तथा मंत्री श्री रामकृष्णजी हैं।

आर्य समाज रेल बाजार, कानपुर—स्थापना सन् १९१० ई० में की गई। मुख्य प्रवर्तक पं० शिवदुलारेलाल शुक्ला, डा० फकीरे राम, बाबू किशनलाल, पं० विश्वम्भरनाथ शुक्ल तथा डा० बलबीर सिंह, बृजमोहनलाल व पं० कालीचरण शर्मा रहे। सन् १९१८ ई० में पौराणिकों के साथ शास्त्रार्थ किया गया। पं० शान्तीस्वरूपजी (मौलाना मुहम्मद अली कुरेंसी) तथा डब्लू डीन की शुद्धियाँ यहाँ ही की गई थीं। विधवा-विवाह, शुद्धि कार्यों में इस समाज ने विशेष भाग लिया है। कुछ वर्षों तक कन्या पाठशाला भी चली। आपस के मनमुटाव के कारण कार्य शिथिल पड़ गया। ७-४-१९६३ ई० को इस ससाज का नवीन चुनाव सभा द्वारा कराया गया।

आर्य समाज दर्शनपुरवा—स्थापना तिथि १८-१०-१९३९ ई०।

स्व० स्वामी हरविलासजी ने लगभग ८,००० रुपयों की भूमि प्रदान की। सन् १९४८ में मन्दिर निर्माण प्रारम्भ हुआ। कुछ भाग बन चुका है तथा २८००० रुपया लग चुका है। १९५३-६१ तक धर्मार्थ औषधालय चलता रहा। वार्षिकोत्सव, शुद्धि संस्कार, विधवा-विवाह, अनाथ-रक्षा आदि कार्य होते हैं। सन् १९४३ ई० में आर्य वीर दल स्थापित किया गया तथा शिक्षण शिविर लगाये गये। दल का कार्य संतोषजनक है। सुन्दर पुस्तकालय भी चल रहा है।

आर्य समाज मूसानगर—स्थापना सन् १९१८ में पं० खुशालीराम शुक्ल के प्रयत्न से की गई। स्व० पं० जी कर्मठ कार्यकर्ता एवं प्रचारक थे। आपने सैकड़ों अनाथ विधवाओं की रक्षा की। सन् १९४२ के स्वराज्य आन्दोलन में पंडित जी के साथ अनेक आर्य समाजी कार्यकर्ताओं ने सक्रिय भाग लिया।

पंडित जी ने गांव-गांव जाकर १०,००० रुपया इकट्ठा किया और भवन बनवाया। अनेक शास्त्रार्थ किये गये। पंडित जी के निधन पर समाज शिथिल

पड़ गया । सन् १९४८ ई० में पुनर्गठन हुआ । कार्य अभी भी मन्द गति से चल रहा है ।

आर्य समाज नानापुर—स्थापना तिथि सन् १९११ ई० है ।

प्रथम प्रधान श्री गिरधारीलालजी तथा मन्त्री श्री मन्नीलाल निर्वाचित हुए । वर्तमान प्रधान श्री शिवकुमारजी एवं मन्त्री श्री गयाप्रसादजी नेत्र विशेषज्ञ हैं ।

५ मुसलिम परिवारों को शुद्ध किया तथा तीन हिन्दू लड़कियों को मुसलमान गुंडों के चंगुल से निकलवाया गया । गौ-वध के विरोध में विशेष आन्दोलन किया गया तथा अनेक गावों में गौवध बन्द कराया गया ।

नानाराव का यह ग्राम नानापुर जिसे अंग्रेजीकाल में ध्वस्त कर दिया गया था, डा० गयाप्रसादजी के प्रयत्न से पुनः प्रगति पथ पर आरूढ़ है ।

आर्य समाज उमरी—स्थापना ४-३-१९२३ में मनुदत्त प्रेम तीर्थ उपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा हुई । समाज के पास साढ़े सात बीघा भूमि है । पक्का आर्य भवन है । अच्छा पुस्तकालय है । पं० मनुदत्तजी स्वामी ईश्वरानन्द सरस्वती बनने के बाद जीवन पर्यन्त समाज की सेवा करते रहे । श्री हीरालाल आर्य आरम्भ से आज तक समाज के मन्त्री रहते आये हैं । समाज के निर्माण में आपने तन एवं धन से पूरा सहयोग दिया है । हिन्दी रक्षा आन्दोलन में आपने कारागार की यात्रा की ।

आर्य समाज पुखरायाँ—स्थापना श्री विजयबहादुर जी वकील द्वारा सन् १९३० में हुई । श्रीमती रामप्यारी देवी ने मन्दिर निमित्त भूमि दान की । सन् १९३४ में मन्दिर बनकर तैयार हो गया । शुद्धि संस्कार कराये गये । वार्षिकोत्सव होता है । रात्रि पाठशाला चल रही है । महिला विद्यापीठ प्रयाग की परीक्षाओं का केन्द्र है । व्यायामशाला तथा औषधालय स्थापित हैं । प्रधान श्री प्रभुदयालजी तथा मन्त्री श्री शिवगोविन्द जी हैं ।

आर्य समाज चौबेपुर—स्थापना सन् १९-१२-१९५४ ई० को हुई । संस्थापक एवं प्रधान पं० सुरेन्द्रनाथ अवस्थी, मन्त्री श्री राजकिशोर मिश्र हैं । कार्य साधारण है ।

आर्य समाज, हरिहरनाथ शास्त्री नगर—इस समाज की स्थापना सन् १९५६ में हुई । वार्षिकोत्सव तथा अनेक संस्कार बड़े उत्साह से हुए । इस समाज के अनेक सभासद आर्य समाज का प्रचार बड़ी संलग्नता से कर रहे हैं ।

आर्य समाज निगोहि—इस समाज की स्थापना सन् १९१२ में पंडित मदन मोहन जी दूबे के द्वारा हुई। समाज के उद्योग से सैंकड़ों बकरे कटना बंद हुए। समाज मन्दिर का निर्माण हो चुका है। वार्षिकोत्सव होते रहते हैं। हिन्दी सत्याग्रह में समाज के सदस्यों ने भाग लिया। इस स्थान में आर्य समाज को विरोधियों से बड़ा कड़ा मुकाबला करना पड़ा परन्तु अंत में सत्य की विजय हुई।

आर्य समाज, गंगागंज—स्थापना १ जनवरी १९०२ को हुई।

यज्ञ व संस्कारों का विशेष क्रियात्मक प्रचार किया गया। निकट के ग्राम मैथान, जसवापुर के मलकानों की शुद्धि में सहयोग दिया। विधवा विवाह, अछूतोद्धार के कार्य किये। प्रधान ठा० गजाधरसिंह हिलौठी तथा मंत्री श्री विश्वनाथ प्रसाद वाजपेयी गंगागंज हैं।

आर्य समाज रंजीतपुर—स्थापना तिथि ३ दिसम्बर, १९४५ है। प्रतिवर्ष होली पर सामूहिक यज्ञ होता है। होली स्थान पर पक्की यज्ञशाला बनाई गई। समाज बीच-बीच में शिथिल होता रहा है। सम्प्रति कार्य साधारण गति से चल रहा है।

आर्य समाज घाटमपुर—स्थापना सन् १९४६ ई० में हुई।

श्री बाबूराम जी प्रधान एवं मंत्री श्री रामजीवन जी बनाए गये। स्वामी शिवानन्द जी सरस्वती समय-समय पर प्रचार करते रहे। वैदिक पुस्तकालय चल रहा है। पुस्तक बिक्री की भी व्यवस्था है। प्रधान श्री बाबूराम जी एवं मन्त्री श्री शिवनारायण जी आर्य हैं।

आर्य समाज, बाढ़ापुर—स्थापना तिथि १५ जनवरी सन् १९५१ ई० है।

संस्थापक श्री शिवस्वामीजी एवं श्री भद्रजीतजी अकबरपुर मन्त्री आर्य समाज हैं। अछूतोद्धार कार्य में विशेष कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। दयानन्द ग्रामोद्योगिक माध्यमिक विद्यालय संचालित हैं।

श्री रामचन्द्रसिंह जी मंत्री हैं।

आर्य समाज जवाहर नगर—स्थापना सन् १९४८ ई० में हुई। साप्ताहिक अधिवेशन सदस्यों के घरों पर होते हैं। प्रधान श्री रमेशचन्द्र शास्त्री एम० ए०, पी० एच० डी० हैं तथा मन्त्री श्री रामचन्द्र गुप्त एम० ए० प्रोफेसर हैं।

आर्य समाज दिबली—स्थापना तिथि १४ जनवरी, १९४८ ई० है। प्रधान श्री भागीरथ जी, मन्त्री श्री भूरेलालजी हैं।

आर्य समाज भखरैली—स्थापना सन् १९२० ई० में हुई। प्रधान श्री राज बहादुरजी आर्य तथा मन्त्री श्री रघुबंशसिंहजी हैं।

आर्य समाज कनवांपुर—स्थापना सन् १९२० ई० में हुई। प्रधान श्री ईश्वर पाल सिंह जी व मन्त्री श्री सूर्यभानसिंह जी हैं।

आर्य समाज बिहूपुर—स्थापना तिथि १८ अक्तूबर, सन् १९६० ई० है। संस्थापक स्वामी योगानन्दजी, प्रधान श्री जगरूपसिंह जी तथा मन्त्री श्री शिवहरी लाल जी हैं।

आर्य समाज सर्वन खेड़ा—स्थापना तिथि २३ दिसम्बर, १९६२ ई० है। संस्थापक कुंवर वीरेन्द्र बहादुर सिंह जी हैं। प्रधान कुं० दिलीपसिंह जी तथा मंत्री श्री सूरत सिंह जी हैं।

जिला फतेहपुर

उत्तर प्रदेश के पूर्वीय क्षेत्र का यह भी एक वीरों का जिला है। स्वाभिमान के निमित्त मरना और मारना यहाँ के लोगों का एक खेल है। महर्षि दयानन्द का पदार्पण तो इस जिले में नहीं हुआ किन्तु इसके आस पास कानपुर और प्रयाग में ऋषिवर का अनेक बार पदार्पण एवं प्रचार हुआ है। ऋषि भक्त श्री देवीशंकर नागर ने इस जिले के केन्द्र स्थान फतेहपुर में सर्व प्रथम आर्यसमाज का वीजारोपग किया। जिले में सभा से सम्बन्धित आर्यसाजों की संख्या २६ है तथा १३ असम्बन्धित समाज और हैं। उपसभा की स्थापना को हुए अभी केवल १६ वर्ष व्यतीत हुये हैं। जिला सभा की ओर से नवीन समाजों की स्थापना एवं मेलों आदि में प्रचार की योजना निरन्तर की जाती है। समय समय पर प्रचार की दृष्टि से जिले के विभिन्न स्थानों में जिला सम्मेलन भी किये जाते हैं। १५ से २० अप्रेल १९६० ई० में पंचम जिला सम्सेलन बहुआ में संगठित हुआ। समाज के प्रचार की दृष्टि से यह एक प्रगतिशील जिला है। इस प्रगति का श्रेय विशेष रूप से यहाँ के कर्मठ एवं उत्साही नेता श्री बा० उमाशंकर वकील को है। जिला सभा के मुख्य कार्यकर्त्ता श्री पं० रामनारायण जी शास्त्री हैं।

आ०स० फतेहपुरः—स्थापना तिथि २२-२-१९०४ ई०। संस्थापक श्री देवीशंकर जी नागर जिला शिक्षा संचालक। प्रथम प्रधान श्री ठा० दलगंजन सिंह व मंत्री ठा० शिवरतनसिंह जी थे। समाज का अपना भव्य एवं विशाल मंदिर है। जिसका मुख्य द्वार दर्शनीय है। मंदिर निर्माण का श्रेय श्री सेठ मन्नीलाल जी को है।

जिन्होंने सन् १९५७ ई० में संकटकाल में सभा की भी १५००) से सहायता की थी। समाज का अपना सुन्दर पुस्तकालय है। शुद्धि एवं अनाथ, अवला संरक्षण कार्यों में यह समाज सदा अग्रसर रहा है। सन् १९२४ ई० में स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा संचालित धौलपुर सत्याग्रह के अवसर पर इस समाज की ओर से श्री सुखदेवप्रसाद एवं श्री मन्नीलाल जी ने भाग लिया।

आर्यसमाज के जलूसों एवं प्रभातफेरियों पर अनेक बार मुसलमानों ने आक्रमण किये। किन्तु सदा उनको मुंहकी खानी पड़ी। हैदराबाद सत्याग्रह के अवसर पर सभा की ओर से श्री बा० उमाशंकर जी आठवें सर्वाधिकारी नियुक्त किये गये थे। आपने सम्पूर्ण प्रान्त में तूफानी दौरा करके सत्याग्रह के लिये अकथनीय प्रयास किया। इस सत्याग्रह में श्री रामेश्वरप्रसाद एवं बच्चूसिंह आदि ने भाग लिया। हिन्दी सत्याग्रह में समाज ने जन धन से सहायता की। श्री मनवोधनसिंह, पं० रामनारायण शास्त्री आदि ने पंजाव की जेलों की यात्रा की। विहार भू-कम्प में भी इस समाज का कार्य सराहनीय रहा। भूकम्प पीड़ित ७५ अनाथ बालकों को यहाँ के कार्यकर्त्ता अपने साथ लाये और दयानन्द अनाथालय अजमेर में उनको भेजा। स्त्री समाज एवं कुमारसभा भी यहां अच्छा कार्य कर रही हैं। सन् १९३२ से ३४ तक सभा का कार्यालय भी फतेहपुर में रहा है। जिसमें उत्पाती मुसलमानों ने आग लगा दी थी। समाज के अन्य भूत कालीन प्रतिष्ठित कार्यकर्त्ताः——

१——स्व० श्रीराम रईस आपने समाज को पुष्कल धन दिया। २—स्व० मथुराप्रसाद शिवहरे आर्य साहित्य मंडल अजमेर के संस्थापक एवं संचालक आपने फतेहपुर में दो शिक्षा संस्थाएं स्थापित की। इनमें से एक ने डिग्री कालेज का रूप धारण कर लिया है। ३—स्व० हृदयराम वकील, अंग्रेजी, संस्कृत के उच्चकोटि के विद्वान् सन् १९३३-३४ ई० में सभा के उपमंत्री रहे। सन् १९३४ विहार भूकम्प में प्रशंसनीय कार्य किया। वर्तमान अधिकारीः—श्री केशवशरण जी वकील प्रधान, श्री शिवनारायणलाल वकील उपप्रधान, श्री रूपकिशोर जी मंत्री, श्री दीनदयालु जी उपमंत्री हैं।

आर्यसमाज बिन्दकीः——स्थापना सन् १९०८ ई०। सभा से सम्बन्ध सन् १९१० ई०। समाज के संस्थापकों में श्री पं० आशादत्त त्रिपाठी, पं० सुखदेव आचार्य, श्री ठा० जीतसिंह जी, श्री मटरूलाल एवं श्री अयोध्याप्रसाद जी के नाम उल्लेखनीय हैं।

सन् १९२५ ई० में मुसल्मानों के साथ बड़ा शास्त्रार्थ हुआ। समाज की ओर से पं० मुरारीलाल शर्मा, पं० कालीचरण एवं पं० शान्तिस्वरूप जी ने भाग लिया। प्रभाव अत्यन्त हर्षप्रद रहा। शुद्धि कार्य में समाज अग्रसर रहा। सन् १९४७ ई० में दयानन्द विद्यालय की स्थापना हुई। जिसमें सम्प्रति ६०० छात्र शिक्षा पा रहे हैं। इसके प्रथम संचालक एवं प्रधान अध्यापक पं० सत्यनारायण द्विवेदी रहे। धार्मिक शिक्षक गुरुकुल महाविद्यालय बदायूं के स्नातक पं० रामनारायण मिश्र हैं। विद्यालय में श्रीमती रामजी देवी अपने पति पूर्व संचालक की स्मृति में ५००००) से भवन निर्माण करवा रही हैं। स्वराज्य आन्दोलन में यहाँ के अनेक कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री पं० शिवदत्त तिवारी जी, श्री रामदास गुप्त श्री केदारनाथ आदि अग्रसर रहे। बृटिश कारागार की यातनायें सहन कीं। श्री पं० शिवदत्त जी यहाँ की आर्यसमाज की गति विधियों के सूत्रधार हैं। सन् १९५७ ई० हिन्दी सत्याग्रह में पं० रामनारायण शास्त्री ११ सत्याग्रहियों का जत्था लेकर गये। और पंजाब की जेलों की यात्रा की। समाज की ओर से ६०१) भेंट किया गया। समाज प्रगतिशील है। निकट के ग्रामों में विशेष प्रचार करता है।

सन् १९१७ ई० में माता प्रभावती जी के प्रयत्न से स्त्री समाज की स्थापना की गई जो सुचारु रूप से चल रही है। समाज का अपना विशाल भवन है।

आर्यसमाज अमोली:—सन् १९०२ ई० में श्री रामनारायण थानेदार के भाई ने इस की स्थापना की। श्री कालीचरण जी के गृह पर साप्ताहिक अधिवेशन होते रहे। सन् १९२८ ई० में शुद्धि करने पर पौराणिकों की ओर से आर्य कार्यकर्त्ताओं का बहिष्कार किया गया। शास्त्रार्थ रचा गया और पौराणिकों को पराजित होना पड़ा। समाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री रामेश्वरदयाल जी जिन पर कानपुर में समाज का रंग चढ़ा था "पाँच पैर की गौं" नामक ट्रैक्ट लिखकर उसका घूमघूम कर प्रचार किया। आपने १९४६ ई० में आर्य कन्या पाठशाला की स्थापना की। श्री पं० धुरेन्द्र शास्त्री के आगमन पर उनको १००१) की थैली भेंट की और मरने से पूर्व अपनी सब सम्पत्ति समाज को दान कर दी। स्वराज्य आन्दोलन में समाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री रामचरण तिवारी एवं श्री रामेश्वरदयाल आर्य ने जेल यातनायें सहन कीं। मंत्री श्री दुर्गाप्रसाद जी हैं।

आर्य समाज खागा—यह समाज १५ जून १९१५ में स्थापित हुआ था। यह समाज अच्छा प्रचार कार्य कर रहा है। हैदराबाद सत्याग्रह में भी सहायता

दी थी। जाति-पांत के बन्धन तोड़ कर कई विवाह कराये हैं। अनाथ रक्षा में भी सहायक हुआ है। श्री वीरेन्द्रप्रकाश जी का यहां धर्मार्थ औषधालय अच्छा कार्य कर रहा है।

जिला इलाहाबाद (प्रयाग)

प्रयाग भारतवर्ष का एक माना हुआ तीर्थ स्थान है। गंगा, यमुना का सुन्दर संगम स्थान है। महर्षि दयानन्द ने अपनी प्रचार यात्रा में प्रयाग नगर को तीन बार कृतार्थ किया और पौराणिक पंडितों से अनेक बार धर्म चर्चा और शास्त्रार्थ किये हैं। इस नगर ने आर्य समाज को पं० क्षेमकरणदास त्रिवेदी अथर्ववेद भाष्यकार एव पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय जैसे नर रत्न प्रदान किये हैं। जिन्होंने अपने जीवन में वैदिक वाङ्गमय की अतुलित सेवा की है। डा० बाबूराम सक्सेना जैसे गंभीर विचारक एवं कर्मठ कार्यकर्ता को भी प्रयाग ने जन्म दिया है।

प्रयाग जिले में सभा सम्वन्धित आर्य समाजों की संख्या २२ है। जिला उपसभा भी यहां स्थापित है। जिले के अन्दर निम्न प्रमुख समाज हैं। चौक, कटरा, रानीमंडी कृष्णनगर, सिरसा, मेजा व आकिल। साप्ताहिक सत्संग, वार्षिकोत्सव नियम पूर्वक होते हैं। उपसभा की ओर से माघ मेला आदि में प्रचार की व्यवस्था रहती है। मेले में ईसाइयों के प्रभाव को नष्ट करने के लिये भारी संख्या में टैक्ट भी बांटे जाते हैं। श्री पं० रामनिवास जी उपदेशक जिला सभा निरन्तर ग्रामों में प्रचार कार्य करते हैं। समय-समय पर उपसभा को निम्न विद्वानों की सेवायें प्रचार कार्य के लिये उपलब्ध होती हैं:—श्री पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय, श्री बुद्धदेव शास्त्री, श्री विश्वप्रकाश जी, पं० देवीदास जी, श्री मातागुलाम जी सक्सेना। सभा के निम्न उत्साही अधिकारी हैं:—श्री राजाराम गुप्त प्रधान, श्री खजान सिह जी मंत्री सुखदेवलाल अधिष्ठाता प्रचार।

आर्य समाज चौक—स्थापना तिथि सन् १८७६ ई०। श्री रामदीन वैश्य एवं श्री रमाकान्त के उद्योग से सन् १९१६ ई० में १८००) में भूमि क्रय की गई। श्री पं० गंगाप्रसाद जी ने भवन निर्माणार्थ ३२९०) दान दिया। कला भवन के नाम से विशाल मंदिर जिसकी लागत २५०००) है, बनाया गया। आर्य कन्या उच्चत माध्यमिक विद्यालय १३ नवम्बर १९०७ में स्थापित किया गया। श्री लक्ष्मी नारायण जी, श्री रामदीन वैश्य तथा श्री जसवन्तराय जी की सेवायें उल्लेखनीय हैं। विद्यालय में १४०० कन्यायें शिक्षा पा रही हैं। के भवन का

मूल्य लगभग ४ लाख रु० है। श्री रतनकुमारी एम० ए० डी० फिल् इसकी सुयोग्य प्रधानाचार्या हैं। आर्य समाज द्वारा नियुक्त उपसमिति इसका संचालन करती है। वर्तमान अधिकारी श्री ईश्वरी प्रसाद जी प्रधान एवं श्री खजान सिंह जी प्रबन्धक हैं।

ट्रैक्ट विभाग—आर्य समाज का यह एक आदर्श प्रकाशन केन्द्र है। श्री पं० गंगा प्रसाद जी उपाध्याय द्वारा लिखित १३८ हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी के ट्रैक्ट ५० लाख की संख्या में प्रकाशित हो चुके हैं। प्रचार की दृष्टि से यह ट्रैक्ट विशेप महत्वपूर्ण हैं। समस्त आर्य जगत् में इनका मान है तथा आर्य समाजों द्वारा इनका पर्याप्त वितरण किया जाता है। धार्मिक क्रान्ति ग्रन्थमाला में १० अंग्रेजी की उत्तम पुस्तकें भी प्रकाशित की गई हैं। समाज के अपने पुस्तकालय एवं वाचनालय भी हैं। अथर्ववेद भाष्यकार श्री पं० क्षेमकरणदास त्रिवेदी जी इसी समाज के प्रधान पद को अनेक वर्ष तक सुशोभित कर चुके हैं। श्री पं० गंगा-प्रसाद जी २० वर्ष से अधिक इस समाज के प्रधान रहे हैं।

दयानन्द उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की स्थापना १९१४ ई० में हुई। श्री रमाकान्त वकील की माता जी ने इस विद्यालय को भूमि दान में दी थी। वकील साहब २५ वर्ष तक इसके प्रबन्धक रहे और पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय ३० वर्ष तक इसके प्रधानाचार्य रहे हैं। इस संस्था के विकास में आप दोनों का परिश्रम सर्वाधिक रहा है। सन् १९३६ ई० में विद्यालय की रजत जयन्ती मनाई गई। श्री बलदेव विहारी एम० ए०, बी० एस० सी०, एल० टी० इस समय यहां के प्रधानाचार्य हैं। वर्तमान अधिकारी—श्री विश्वप्रकाश एम० ए० प्रधान, श्री खजान सिंह मंत्री, श्री राधेमोहन जी उपमंत्री हैं।

आर्य समाज कटरा—दीर्घकाल से स्थापित है। समाज का अपना भव्य मंदिर है मंदिर का आनुमानिक मूल्य १५०००) है। आर्य समाज प्रगतिशील है। श्री डा० बाबूराम सक्सेना एम० ए० इस आर्य समाज के विशेष प्रान्त विख्यात व्यक्ति हैं। डाक्टर साहब अनेक वर्ष तक इस समाज के प्रधान रहे हैं।

आर्य स्त्री समाज कटरा—स्थापना तिथि फरवरी १९२६ ई० संस्थापिका श्रीमती विद्यावती जौहरी हैं। समाज की पुरानी कार्यकर्त्री देवियों में श्रीमती श्यामदेवी, माता प्रेमसुलभायती, रामदुलारी, रामरक्खी देवी, शन्नो देवी, माधुरी देवी, (पी० सी० एस०), कृष्णादेवी, सीतादेवी, व रामदेवी, के नाम उल्लेखनीय हैं। वर्तमान उल्लेखनीय कार्य करने वाली देवियों में श्री शन्नो देवी, ऊषादेवी,

प्रमिला देवी, चन्द्रवती, दुर्गा देवी सूद, सत्यवती सोनी, तथा कुमारी कृष्णाकपूर हैं। हैदराबाद सत्याग्रह आदि सब कार्यों में आर्थिक सहयोग रहा है।

आर्य समाज सुभाषनगर—स्थापना तिथि १५-७-१९५६ ई०। संस्थापक श्री सत्यव्रत जी। समाज की ओर से एक निःशुल्क होम्योपैथिक औषधालय चल रहा है। श्री विश्वम्भरदयाल जी मंत्री हैं।

आर्य समाज करारी—श्री पं० रामदेव शर्मा उपदेशक उपसभा के प्रयत्न से ६-१०-१९४७ में यहां आर्य समाज स्थापित किया गया। २-४-५० को सभा प्रधान की अध्यक्षता में प्रथम वार्षिकोत्सव बड़े समारोह के साथ मनाया गया। मुसलमानों को आर्य समाज का उत्कर्ष सहन न था अतः श्री पं० हीरालाल शुक्ल को दि० १४-४-५० बुधवार रात्रि ८ बजे कुछ आततायियों ने भाले, छुरियों से मार डाला। समाज का काम बराबर चलता रहा। प्रभावशाली वार्षिकोत्सव किये जाते रहे। वर्तमान प्रधान श्री नन्दकिशोर जायसवाल, मन्त्री श्री इन्द्रपाल आर्य हैं।

आर्य समाज दयालनगर—अलियापुर (फतेहपुर)—इस समाज की स्थापना १ जनवरी सन् ९९५६ ई० हुई। चार वार्षिकोत्सव हो चुके हैं। पं० रामगोपाल भारद्वाज बड़े सुदृढ़ कार्यकर्ता हैं। सारा समय प्रचार में ही बीतता है।

आर्य समाज सिरसा इलाहाबाद—महर्षि दयानन्द इस नगरी में भी पधारे थे। समाज की ओर में कई शास्त्रार्थ हुये। और सफलतापूर्वक प्रचार किया गया। समाज के उत्सव बड़ी सफलता से होते हैं। स्व० बा० काशीनाथ जी खत्री बड़े प्रतिष्ठित आर्य रहे हैं। सुप्रसिद्ध पत्रकार पं० माता सेवक पाठक ने भी इस समाज की उन्नति करने में यथेष्ठ प्रयत्न किया।

जिला उन्नाव

उन्नाव जिले में सभा से सम्बन्धित १३ आर्य समाज हैं। जिला उपसभा भी स्थापित है। आर्य समाज उन्नाव की स्थापना कटियारी निवासी श्री ठा० मशाल सिंह जी की प्रेरणा से १९०० ई० में कालाकांकर के महराज अवधेशनारायण सिंह जी ने की। महाराज ने मंदिर निर्माणार्थ प्रचुर धन दान में दिया। मन्दिर का निर्माण हुआ। जिसमें श्री रामभरोसे पांडे का भी सहयोग सराहनीय है। मंदिर बीच शहर में विद्यमान है। इस पर लगभग २५०००) लागत आई है। सभासद संख्या २५ है। समाज पर कानपुर एवं लखनऊ के आर्य विद्वानों एवं नेताओं की सदा कृपा रहती है। श्री रघुवीर सिंह वकील, श्री खैरातीलाल भारतीय, श्री

हजारीलाल वकील, श्री मुन्नालाल विद्यारत्न वर्तमान मन्त्री आदि इसके कार्य-कर्ता हैं।

जिला मिर्जापुर

ऐतिहासिक एवं प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर यह जिला है। इसके केन्द्र स्थान मिर्जापुर नगर के एक पार्श्व में सतत कल्लोलिनी पवित्र सलिला जान्हवी उच्छृंखल तरंगे ले रही है तो दूसरे पार्श्व में विन्ध्यागिरी विराजमान है, जहां कोकिल और मयूर अपनी कूक और केका से स्वर्गीय संगीत की सृजना करते हैं। इस नगर को यह गौरव प्राप्त है कि महान् क्रान्तिकारी युग पुरुष महर्षि दयानन्द का यहां प्रचार यात्रा करते हुये पांच बार आगमन हुआ। स्वामी जी के जीवन काल में ही चैत्र शुक्ला १० बृहस्पतिवार सं० १९३२ वि० में आर्य समाज स्थापित हो गया। प्रारम्भिक काल के उल्लेखनीय पुरुषों में श्री रामचन्द्र घोष, चौ० गुरुचरण रईस, मुंशी भगवती प्रसाद जी, म० गोपाल जी, कविवर पं० रामप्रकाश जी, पं० भोलानाथ जी, पँ० घनश्यामाचार्य, श्री कालिका प्रसाद, श्री रामचन्द्र तिवारी महा० रामदीन जी सेठ, श्री पुरुतोत्तम दास जी आर्य, श्री श्रीराम जी एवं मुंशी लक्ष्मण प्रसाद जी हैं। दिनांक २६-७-१८८७ ई० में समाज की सभा में प्रविष्टि हुई। सन् १८९८ ई० में भूमि क्रय कर मंदिर का निर्माण कराया गया। स्वामी दर्शनानन्द जी पं० लेखराम जी आर्य मुसाफिर के यहां अनेक भाषण हुए। शास्त्रार्थों के लिये आह्वान करने पर भी कोई न आया।

सन् १९०१ ई० में आर्य कन्या पाठशाला की स्थापना की गई जो अब बढ़ते-बढ़ते उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बन गई है। इसमें ८०० कन्यायें शिक्षा पाती हैं। श्री ज्वाला प्रसाद जी एम० ए० डिपुटी कलेक्टर अनेक वर्ष तक इसके प्रधान रहें। ठा० गजाधर सिंह यहां के अद्भुत वीर कार्यकर्ता थे। आपने उस समय में जब आर्य समाज पर सरकार की कोप दृष्टि थी सेना में कार्य करते हुये भी खुलकर आर्य समाज का कार्य किया और मंच से प्रचार कार्य भी किया। आप समाज के उच्चाधिकारी रहे और आपने ही लाला लाजपत राय को यहां बुलाकर भाषण कराये। समाज के वर्तमान कार्यकर्ताओं में श्री डा० गणेशप्रसाद पं० आशाकरण पांडे के नाम उल्लेखनीय हैं जिन्होंने जिला के प्रधान व मंत्री रह कर बड़ी सेवायें की हैं। पं० सूर्यदेव शर्मा यहां धर्म प्रचार के कार्य में सतत संलग्न रहते हैं और विशेष उत्साही कार्य कर्ता हैं। आप ही अनेक वर्षों से समाज के मन्त्री चले आ रहे हैं।

आर्य समाज चुनार—स्थापना तिथि १४-१-१९२७ ई०। बाल-विवाह निरोध एवं नारी रक्षा कार्यों में विशेष उत्साह दिखलाया है। हैदराबाद सत्याग्रह में आर्थिक सहयोग दिया तथा अनेक सत्याग्रही जत्थों का नगर में स्वागत किया। सन् १९४६ से ५३ तक समारोह पूर्वक वार्षिकोत्सव मनाए। सन् १९४८ ई० में आर्यवीर दल स्थापित किया किन्तु महात्मा जी की हत्या होने पर वह बन्द हो गया। श्री अनन्त राम जी समाज के मन्त्री हैं।

आर्य समाज मगरहा—श्री पं० जगदेव सिंह जी काशी में संस्कृत पढ़ते थे वहां वह महर्षि के भाषण सुनकर आर्यसमाजी बन गये और आपने सन् १८८० ई० में समाज की स्थापना की। आपको प्रचार की अजब धुन थी। नित्य नियम से सड़क चलते लोगों से मीलों साथ जाकर धर्म चर्चा करते थे। श्री रामऔतार सिंह ने यहां कन्याओं को पढ़ाना आरम्भ किया। विद्यालय खोला गया। सन् १९२४ में पं० शेर सिंह जी महोपदेशक सभा के यहां ईसाई व पौराणिकों से शास्त्रार्थ हुए और जनता में आर्य समाज की धाक जम गई। स्वराज्य आन्दोलन में यहां के अनेक कर्मठ कार्यकर्ताओं ने सक्रिय भाग लिया और जेल यात्रा की।

आर्य समाज चोपन—स्थापना तिथि २३-४-१९६१ ई०। २००००) की लागत का विशाल मंदिर और यज्ञशाला बनवाई हैं। मंदिर का उद्घाटन ३ जून सन् ११६२ ई० को सभा प्रधाम श्री पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री एम० पी० ने किया। सदस्य संख्या ६७ है। मासिक चन्दा १०७॥) है। प्रचार कार्य पर विशेष ध्यान है। ईसाई निरोध के कार्य में भी समाज संलग्न है।

आर्य समाज हांसीपुर—स्थापना तिथि १५-६-१९३९ ई०। सभा में प्रविष्ट १-९-१९४४ ई०। कुल सदस्य संख्या ४६ है। आर्यवीर दल का प्रचार हो रहा हैं। शीघ्र शाखा स्थापित होगी।

आर्य समाज रामगढ़—स्थापना १९२९ में की गई। संस्थापक चौ० राजाराम जी हैं। मुख्य कार्यकर्ताओं में श्री दामोदर सिंह, श्री अयोध्याप्रसाद, श्री जोखूलाल जी के नाम उल्लेखनीय हैं। प्रचार कार्य चलता है। वैदिक संस्कारों पर बल दिया जाता है। आर्य मंदिर बन गया है। सदस्यसंख्या ३० है। ब्र० भगवानसहाय जी का कार्य सराहनीय है। प्रधान श्री भूपनाथ सिंह एवं मत्री श्री परीक्षित सिंह जी हैं।

आर्य समाज बगही—भागीरथी के तट पर बसा हुआ सुरम्य स्थान है। चुनार (चरणाद्रिगढ़) तहसील के अन्तर्गत है। और कभी यह काशी नरेश के

राज्य में रहा है। काशी नरेश के उच्च कर्मचारी श्री सुखसागरलाल महर्षि के काशी में भाषणों को सुनकर उन के पूर्ण भक्त वन चुके थे, यहां स्थानान्तरित होकर पधारे और उन्होंने नवयुकों को स्वयं सत्यार्थ प्रकाश पढ़ाना आरम्भ किया और आर्य समाज के लिये अनेक नवयुकों को तैयार किया। १४ अगस्त १९१४ ई० को यहां विधिवत् आर्य समाज स्वापित किया गया। मुसलमानों की यहां तीन विशेष शुद्धियां की गईं। परिणाम स्वरूप जाति बहिष्कार का दंड कार्यकर्ताओं को कुछ काल भुगतना पड़ा। श्री गंगेश्वरीप्रसाद न अपनी धर्मपत्नी के निधन पर घटबन्धन, शैय्यादान आदि पौराणिक रीतियों का विसर्जन किया तो पौराणिकों ने भारी कोलाहल मचाया किन्तु कुछ काल ही में वगही से इस कुरीति का अन्त हो गया।

प्रचार का कार्य निरन्तर किया जाता रहा। और जनता आर्य समाज की ओर आर्कषित होती चली गई। सन् १९४६ ई० में आर्यवीर दल स्थापित किया गया। जिसने अनाथ रक्षा एवं विधर्मियों के चंगुल से हिन्दू वनिताओं को निकालने के कार्यों में पूर्ण वीरता का परिचय दिया।

हिन्दी रक्षा आन्दोलन में समाज की ओर से निम्न ४ सत्याग्रही भेजे गये :— श्री राजनारायध सिंह जी, श्री बैजनाथ सिंह, श्री विक्रम सिंह तथा श्री मूरत सिंह जी। १०५६ में समाज कर मन्दिर वनकर तैयार हो गया। राष्ट्रीय सुरक्षा कोष में ३५१) समाज ने भेजा। संक्षेप में समाज विशेय प्रगतिशील है।

जिला वाराणसी

वारणा एवं असी सरिताओं के बीच बसा होने के कारण इस क्षेत्र का नाम वाराणसी पड़ा है। वाराणसी भारतवर्ष का संस्कृत विद्या का महान् एवं प्राचीन केन्द्र है। आर्ष एवं नव्य व्याकरण के, दर्शन एवं ब्राह्मण ग्रंथों के उच्च कोटि के विद्वान् यदि कहीं उपलब्ध होते थे वा होते हैं तो वह इसी वाराणसी में। अत्यन्त सात्विकता एवं त्याग वृत्ति से पढ़ाने वाले सैकड़ों धुरन्धर विद्वान् यहाँ होते आये हैं। देश के कोने-कोने से संस्कृत का उच्च ज्ञान प्राप्त करने के लिये यहाँ शिक्षार्थी आते रहे हैं और आज दिन भी आते हैं। इसी जिले में महात्मा बुद्ध का वह तीर्थ क्षेत्र सारनाथ भी है जहां उन्होंने सर्व प्रथम धर्म चक्र प्रवर्तित किया था। महामना पं० मदनमोहन मालवीय ने हिन्दू संस्कृति-रक्षा हित हिन्दु विश्व विद्यालय की स्थापना भी इसी वाराणसी में की थी।

वाराणसी को यह सौभाग्य प्राप्त है कि युग पुरुष ऋषि दयानन्द अपने जीवन में सात बार इस नगर में पधारे और यहाँ के रूढ़िवादी विद्वज्जनों को अच्छी तरह झकझोरा। वाराणसी में अनेक शास्त्रार्थ पौराणिक पंडितों के साथ ऋषि के हुए हैं। महाराज काशी नरेश ने मूर्ति पूजक होने के कारण स्वामी जी के प्रचार से उद्विग्न होकर एक बार २७ पंडितों को उनसे भिड़ाया और भारी कोलाहल मचवाकर विजय की दुन्दुभि बजवाई। किन्तु सांच को आंच कहाँ। दुवारा जब ऋषि का आगमन हुआ तो काशी नरेश ने स्वामी जी महाराज से रामनगर राजमहल में पधारने का आग्रह किया। स्वामी जी ने प्रार्थना स्वीकार कर रामनगर राजमहल में प्रवेश किया। नरेश ने उनका विशेष स्वागत सत्कार किया और अपने किये की क्षमा माँगी।

स्वामी जी ने काशी के पंडितों को पुनः शास्त्रार्थ के लिये ललकारा। किन्तु अब किसी का साहस उनसे शास्त्रार्थ करने का न हुआ। स्वामी जी का महीनों अखंड प्रचार चलता रहा। काशी में स्वामी जी महराज ने स्वयं अपने कर कमलों से १५ अप्रैल १८८० ई० को आर्य समाज की स्थापना की। इस जिले में सभा से सम्बन्धित आर्य समाजों की संख्या १० है। ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचार कार्य को बल देने की दृष्टि से जिला उपसभा भी अनेक वर्षों से संचालित है।

आर्य समाज बुलानाला काशी—इसी आर्य समाज की स्वामी जी महाराज ने अपने कर कमलों से स्थापना की थी। समाज का अपना एक लाख रुपयों के अनुमान का भव्य मंदिर है। मंदिर के निकट कचौड़ी गली में काशी में पढ़ने वाले आर्य विद्यार्थियों के लिये छात्रावास भी स्थापित है जिसमें निवास करके आर्य समाज के दिग्गज विद्वानों ने काशी में महा-भाष्य एवं दर्शनों का अध्ययन किया है। काशी का यह आर्य समाज कभी वाराणसी की सांस्कृतिक एवं सामाजिक गतिविधियों का केन्द्र रहा है।

आर्य समाज के आधीन एक अनाथ आश्रम भी अनेक वर्षों तक चलता रहा। इस आश्रम के द्वारा कई हजार हिन्दु देवियों व बच्चों की रक्षा की गई। श्री आचार्य देवदत्त शर्मा उपाध्याय श्री जे०पी० चौधरी एवं श्री राजितसिंहजी आदि इस समाज के सम्प्रति प्रमुख व्यक्ति हैं। स्व० श्री बाबू गौरीशंकरप्रसादजी पं० रामनारायण मिश्र यहाँ के प्रसिद्ध नेता रहे हैं। महर्षि दयानन्द के नाम से यहाँ एक डिग्री कालेज शिक्षा क्षेत्र में विशेष कार्य कर रहा है। कालेज की स्थापना का श्रेय पं०

केशवदेव शास्त्री को है। इसी काशी में नैष्ठिक ब्रह्मचारी स्व० स्वामी नित्यानन्द सरस्वती की पुण्य स्मृति में नित्यानन्द वेद विद्यालय स्थापित किया गया।

मातृ-मंदिर कन्या गुरुकुल, काशी—कुमारी पुष्पावती एम० ए० आचार्या ने गत वर्ष नई बस्ती रामापुरा वाराणसी में मातृ मंदिर नाम की संख्या स्थापित की है। जिसके अन्तर्गत कन्या गुरुकुल बालिका सदन एवं कन्या संस्कृत विद्यालय चलाने की व्यवस्था की गई है। उपदेशिका श्रेणी खोलने की भी योजना है।

आर्य समाज बनारस—छावनी भोजूबीर—स्थापना तिथि ९-११-१९२४ ई०। संस्थापक श्रीयुत राजेन्द्र नारायण जी। आप ही सन् १९४० ई० प्रर्यन्त इस समाज के मंत्री रहे। तत्पश्चात् श्री नानकराम मंत्री बने जो आज तक उसी पद पर कार्य कर रहे हैं। प्रधान श्री चन्द्रिकाप्रसाद जी हैं।

आर्य समाज लल्लापुरा—स्थापना—इस समाज की स्थापना सर्व प्रथम ७-१२-१९३५ ई० को आर्य नवयुवक सभा के रूप में श्री बा० गौरीशंकर प्रसाद एडवोकेट के कर कमलों द्वारा की गई। तत्पश्चात् ५-३-१९४३ ई० को श्री पं० रामदत्त शुक्ल मंत्री सभा के कर कमलों से विधिवत् आर्य समाज स्थापित हुआ। नवयुवक सभा ने एवं तत्पश्चात् आर्य समाज ने शुद्धि, दलितोद्धार अनाथ सेवा एवं इलाके के अवांछनीय तत्व के फंदों से हिन्दू देवियों का उद्धार किया। आर्य समाज लल्लापुरा ने अब तक १०० से ऊपर शुद्धियाँ की हैं। आर्य समाज के उत्सव एवं नगर कीर्तनों में गुण्डातत्व के विघ्नों का डटकर सामना किया है। ललनाओं के उद्धार कार्य में अनेक प्रकार के कष्ट सहन करने पड़े हैं।

हैदराबाद सत्याग्रह में यहाँ से श्री नरोत्तमदास एवं श्री रामचन्द्रप्रसाद ने सक्रिय भाग लिया। सिन्ध सत्यार्थ प्रकाश प्रतिबन्ध विरोध आन्दोलन में आर्थिक सहयोग दिया। पंजाब हिन्दी रक्षा आन्दोलन में यहाँ से तीन सत्याग्रही जत्थे ४, ३ एवं ४ स्वयं सेवकों के क्रमशः भेजे गये। आर्य वीर दल भी स्थापित है और सराहनीय कार्य कर रहा है। समाज का अपना पुस्तकालय एवं वाचनालय भी हैं। वर्तमान प्रधान श्री रामकृष्ण आर्य व मंत्री श्री बुद्धदेव आर्य हैं।

आर्य समाज मुगलसराय—यह समाज सन् १९२५ ई० में स्थापित हुई। सर्व श्री गणपतिजी, बेचूलालजी केदारनाथजी आर्य आदि के सहयोग से समाज मंदिर का निर्माण हो चुका है। हैदराबाद सत्याग्रह में सहयोग दिया। हिन्दी रक्षा आन्दोलन में भाग लिया। अन्तरजातीय विवाह कराये। हरिजन भाइयों की शुद्धि की। ग्रामों तथा मुहल्लों में भी प्रचार होता रहता है।

प्रमुख कार्यकर्ता—श्री केदारनाथ आर्य, श्री वेचूलालजी, श्री गणपतिजी, श्री रामजी प्रसादजी गुप्त, श्री रामविलास शास्त्री प्रधान एवं श्री भगवतीप्रसादजी मन्त्री हैं।

जिला जौनपुर

मुग़लिया काल में जौनपुर सर्वोच्च काजी का केन्द्र स्थान माना जाता था। यहाँ के फतवे का मूल्य काशी की धर्म व्यवस्था के समान कूता जाता था। जौनपुर में अटालादेवी का एक विशाल मंदिर था जिसको मुसलिम धर्म स्थान की शक्ल में परिवर्तित कर दिया गया। आज भी कुछ संस्कृत वाक्यों से युक्त पत्थर कहीं-कहीं लगे हुए दृष्टिगोचर होते हैं। जौनपुर इस्लाम का एक गढ़ समझा जाता था और इसके अन्दर खेतासराय, शाहगंज आदि कस्बों में हिन्दुओं की दशा अत्यन्त शोचनीय बन चुकी थी। जबरदस्ती हिन्दू स्त्रियों व बच्चों को मुस्लमान बनाया जाता। ताज़िये उठवाये जाते थे। हिन्दु अपना कोई धर्म स्थान नहीं बना सकते थे। शंख भी नहीं बजा सकते थे। गाजोमियां आदि मेलों में हिन्दुओं को अत्यन्त अपमानित किया जाता था। आर्य समाज की स्थापना होने पर हिन्दुओं को कुछ होश आया। उनका स्वाभिमान जागा और आर्य समाज के झंडे के नीचे इकट्ठा होकर त्राण पाया।

जौनपुर में संवत् १९३३ वि० में महर्षि दयानन्द के पवित्र चरण भी पड़े। ऋषि के प्रवचनों से वैदिक विचारधारा प्रवाहित हुई। जिले में सभा से सम्बन्धित ११ आर्य समाजें हैं। ग्रामों में प्रचारार्थ जिला उपसभा भी स्थापित की गई है।

आर्य समाज जौनपुर—स्थापना तिथि २२-१-१९३१ ई० लगभग ३८००० रु० की लागत का समाज का अपना मंदिर है। सदस्य संख्या ५९ है। दलितों का उद्धार एवं नारी रक्षा आदि का कार्य किया गया। पं० सूर्यबली पाण्डेय समाज का विशेष प्रचार कार्य करते हैं। एक अनाथालय भी स्थापित किया गया। श्री राजाराम सिद्धान्त शास्त्री यहाँ के मंत्री हैं।

आर्य समाज खेतासराय—स्थापना तिथि ४-६-१९२८ ई०।

३१-१२-१९२८ ई० को आर्य समाज का नगर कीर्तन रुकवाया गया। सभा-मंत्री बा० उमाशंकर फतेहपुर ने जो उस समय विधान सभा के सदस्य भी थे धारा सभा में इस प्रश्न को उठाया। परिणाम स्वरूप नगरकीर्तन ४-२-१९२९ ई०

को धूम-धाम के साथ निकाला गया। गाजीमियां के मेले में आर्य समाज के प्रचार को रोका गया। आर्य समाज ने डटकर विरोध किया और मेले में प्रचार किया। परिणाम स्वरूप हिन्दुओं के सर से गाजीमियां की पूजा का भूत उतर गया। हिन्दू स्त्रियों को उड़ानेवाले मुस्लिम गुण्डों के दल का डटकर सामना किया गया। अनेक गुण्डों को कारागार की यातना सहन करनी पड़ी और हिन्दू देवियों को संरक्षण मिला।

अनेक मुस्लमानों की शुद्धियाँ की गईं। भोले हिन्दुओं ने आर्य समाज के कार्यकर्ताओं का जाति बहिष्कार किया। किन्तु इसकी कोई चिन्ता आर्यों ने नहीं की। सन् १९३७ ई० में आर्य समाज के नगर कीर्तन को पुनः रुकवाया गया। सभा की दौड़-धूप से जिलाधीश द्वारा भारी संख्या में हथियार बन्द पुलिस यहाँ भेजी गई और बड़े समारोह के साथ नगर कीर्तन निकला। हैदराबाद सत्याग्रह में दो आर्यवीरों ने भाग लिया। निजाम शाही के कारागार की यातना सही। समाज का अपना मंदिर बन गया है। कार्य सुचारुरूप से चल रहा है।

आर्य समाज शाहगंज—यह भी मुस्लमानी बस्ती है। यहाँ का हिन्दू भी आर्य समाज की स्थापना से पूर्व आतंकित और मृत-प्राय था। सन् १९२६ ई० में यहाँ आर्य समाज की स्थापना की गई। अनेक वार्षिकोत्सव किये गये। समारोह के साथ नगर कीर्तन निकाले गये। नगर कीर्तनादि पर यहाँ भी पहले से प्रतिबन्ध लग गया। विरोध स्वरूप उत्सव बन्द रक्खा। सभा के प्रयत्न से प्रतिवन्ध हटा और धूम-धाम से नगर कीर्तन निकला और उत्सव हुआ। इन अवसरों पर हिन्दू जनता का सहयोग अत्यन्त प्रशन्सनीय रहा। ऐसा प्रतीत होता था कि मानों सारी हिन्दू जनता आर्य समाजी हो गई है। हिन्दू लाल-ललनाओं के त्राण के लिये आर्य वीर दल की स्थापना की गई और लगभग ४०० स्त्री बच्चों को मुस्लिम गुण्डों के पंजों से निकाला गया। हैदराबाद सत्याग्रह में यहाँ के दो आर्य वीरों ने भाग लिया। समाज का अपना भवन है। पुस्तकालय है। यहाँ के कर्मठ कार्यकर्ताओं में श्री रामेश्वरप्रसाद आर्य, श्री मन्नालाल आर्य (मंत्री) तथा श्री सन्तलाल व श्री दयाशंकर आर्य के नाम उल्लेखनीय हैं।

आर्य समाज मीरगंज—यह समाज १६ अप्रैल सन् १९३८ ई० को स्थापित हुआ। शास्त्रार्थ और प्रचार कार्य में इस समाज ने अच्छा भाग लिया। हैदराबाद सत्याग्रह में भी कई आर्य सदस्यों ने भाग लिया। कई अनाथ और अबलाओं की रक्षा की और शुद्धियाँ भी हुईं।

आर्य समाज केराकत—स्वर्गीय बा० जगदम्बाप्रसादजी मुख्तार के उद्योग से यह समाज ३ अक्तूबर १९२४ ई० को स्थापित हुआ। श्री झक्कड़प्रसाद जी साहू की दान की हुई भूमि पर समाज भवन निर्माण हो रहा है। आर्य वीर दल का कार्य भी प्रशंसनीय है। श्री बैजनाथ जी 'भ्रमर' अवैतनिक रूप से भजनों द्वारा प्रचार करते रहते हैं। कई विधवा-विवाह भी हुए और कितने ही अनाथों को विधर्मियों के पंजे में पड़ने से बचाया। वार्षिक उत्सव और साप्ताहिक अधिवेशन नियमित रूप से होते रहते हैं।

जिला ग़ाज़ीपुर

वाराणसी कमिश्नरी का एक बहादुर ज़िला है। सन् १९४१ ई० में जब खाकसारों से टक्कर लेने की उत्तर प्रदेश में तैयारी की जा रही थी और आर्य वीरदल स्थान २ पर संगठित किया जा रहा था तो इस जिले के केन्द्र गाज़ीपुर में ५०० से ऊपर वीर युवक संगठित हुए। सार्वदेशिक आर्यवीर दल के संचालक पं० शिवदयालु जी के आगमन पर दफ़ा १४४ तोड़ कर नगर में जलूस निकाला गया और गाधी किले के मैदान में एक विराट् सभा की गई, मुसलमान गुण्डों के चंगुल से हिन्दू देवियों का त्राण करने में हर खतरे को आर्यवीरों ने ओटा है।

इस जिले में सभा से सम्बन्धित १० आर्य समाज हैं। जिले में प्रचार कार्य को सुव्यवस्थित करने की दृष्टि से जिला उपसभा भी बनाई गई है।

आर्य समाज गाज़ीपुर—स्थापना तिथि १९०२ ई०। जिले का पहला प्रमुख आर्य समाज है भव्य मंदिर लगभग २५०००) की लागत का बना हुआ है। मंदिर के निर्माण में श्री प्रभुदयाल जी आर्य का प्रयत्न सराहनीय है। सन् १९१६ ई० में आर्य कन्या पाठशाला की स्थापना की गई। सन् १९१२ ई० में आर्यकुमार सभा स्थापित हुई। सन् २४ में आर्यवीरदल स्थापित किया गया जिसने अजमेर व मथुरा शताब्दियों में सराहनीय कार्य किया। हैदराबाद सत्याग्रह में श्री प्रभूदयाल जी के नेतृत्व में एक जत्था गया। महिला समाज भी है और यहां एक स्वतंत्र उच्च माध्यमिक विद्यालय भी स्वामी दयानन्द जी के नाम पर स्थापित है। श्री नन्दलाल जी प्रसिद्ध भजनोपदेशक जिनकी हिन्दी रक्षा आन्दोलन में धूम थी, इस समाज के प्रधान रहे हैं।

आर्य समाज बहरियाबाद—स्थापना सन् ३९०८ ई० में हुई। तथा १९१० में आर्य समाज के मंदिर का निर्माण किया। सन् १९३० ई० तक इस मुस्लिम बाहुल्य कस्बे में आर्य समाज का नगर कीर्तन नहीं निकल सका। स्व० विहारीलाल

व स्व० जयन्तीलाल के प्रयत्न से सन् १९३० ई० में नगर कीर्तन निकाला गया। विधर्मियों ने संगठित रूप से नगरकीर्तन पर आक्रमण किया। विहारीलाल जी बहुत घायल हुए। सन् ३५ में पुनः धूमधाम से समाज का उत्सव किया गया। किन्तु सम्प्रति कार्य शिथिल है।

आर्य समाज ग़ोरा बाजार—स्थापना तिथि २३-१-२७ ई०। एक हज़ार रुपये की लागत का मंदिर है। पुस्तकालय भी है। कार्य साधारण गति से चलता है।

जिला बलिया

भारत स्वाधीनता के इतिहास में बलिया का नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखा जायगा। बलिया ने जो महान् वीरता युक्त साहसिक कार्य किये हैं उनसे बलिया का नाम इतिहास में अमिट हो गया है। बलिया के नगर तक में अभी पाश्चात्य सभ्यता का विशेष दौरदौरा नहीं हो पाया है। यहाँ के लोग सीधे, सरल, स्वभाव के हैं किन्तु साहसी और कर्मठ हैं। इस जिले में आर्य समाज का सूत्रपात श्री स्वामी मंगलानन्द सरस्वती जी ने सन् १९१२ ई० में किया। सभा सम्बन्धित आर्यसमाजों की संख्या १० है। उपसभा अनेक वर्षों से स्थापित है जिले में प्रचार का कार्य समय-समय पर किया जाता है।

वर्तमान प्रधान श्री राधामोहन जी

मंत्री श्री सुरेन्द्रदेव शास्त्री।

जिले के कर्मठ कार्यकर्त्ता एवं प्रचारकों में श्री स्वामी अभयानन्द जी एवं श्री महेन्द्र मिश्र वानप्रस्थी के नाम उल्लेखनीय हैं।

आर्य समाज बलिया—स्थापना तिथि सन् १९१२ ई०।

संस्थापक—श्री मंगलानन्द सरस्वती।

समाज का अपना लगभग ४०००) का भवन है। प्रारम्भिक कार्यकर्त्ताओं में श्री जानकीप्रसाद, श्री श्रीलाल जी सहाय, श्री मदनमोहनसिंह, श्री दुःखभंजनसिंह, श्री नाज़िरसिंह के नाम उल्लेखनीय हैं। अन्य प्रमुख कार्यकर्त्ताओं के निम्न नाम भी उल्लेखनीय हैं।

१—श्री रामधारीराम जी प्रधान—कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं। दो बार स्वराज्य आन्दोलन में कारागार की यात्रा की।

२—श्री भृगुराम सर्राफ उपप्रधान—विशेष दानी हैं।

३—श्री कैलाशप्रसाद मंत्री—सभा में बलिया का प्रतिनिधित्व करते हैं। पुराने कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं।

४—श्री बैजनाथसिंह उपप्रधान—धर्म एवं राष्ट्र के कार्यों में आप अनेक वार जेल गये ।

५—श्री शिवगोविन्दसिंह—अनाथालय के पुराने कार्यकर्त्ता हैं ।

६—श्री भगवतीप्रसाद अग्रवाल—ईसाई निरोध समिति के तीन जिलों के प्रधान मंत्री रहे हैं । अनेक शुद्धियां भी कराई हैं ।

७—श्री सुरेन्द्रदेव शास्त्री गुरुकुल के स्नातक हैं । कर्म काण्ड-पटु, कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं ।

८—श्री वीरवहादुर जी—सपत्नीक हिन्दी रक्षा आन्दोलन में जेल गये ।

९—चरित्रराम जी आर्य—हैदराबाद सत्याग्रह तथा हिन्दी रक्षा आन्दोलन में जेल यात्रा की ।

आर्य समाज मनियर—स्थापना तिथि सन् १९१४ ई० । संस्थापक श्री गौरी शंकर त्रिपाठी बालूपुर निवासी एवं ठा० सूर्यनारायणसिंह पूर्व एम० एल० ए० ।

प्रारम्भिक कार्यकर्त्ता—श्री शिवकुमारसिंह, श्री बलदेव पाठक, श्री बावूनन्दन लाल जी ।

सन् १९१५ ई० में स्वामी अनुभवानन्द शान्त का शुभ आगमन हुआ । आपने वैदिक सिद्धान्तों की धाक जनता पर बैठा दी । सन् १९२१ ई० में स्वतंत्रता आन्दोलन में यहाँ के प्रायः सभी युवक कार्यकर्त्ता प्राणपण से कूद पड़े । और ऊँचे बलिदान किये । सन् १९२७ ई० में ६ वर्ष की शिथिलता के उपरान्त श्री नन्दनलाल द्वारा पुनः चेतना आई; प्रचार कार्य होने लगा । सन् १९३९ ई० में स्वामी त्यागानन्द, स्वामी वेदानन्द तीर्थ, आदि के विशेष प्रभावशाली प्रवचन हुये तथा पौराणिक पण्डित गंगाविष्णु जी से शास्त्रार्थ भी हुआ । समाज का कार्य अब सुचारु रूप से चल रहा है । श्री इन्द्रदत्त पाण्डेय बी० ए० बी० एड० साहित्यरत्न समाज के प्रधान हैं ।

आर्य समाज सीपर, बिलथरा रोड—यह आर्य समाज लगभग ४० वर्ष पुराना है, सन् १९२२ ई० में ठा० राम अधार सिंह के प्रयत्न से उत्सव मनाया गया । ठा० गंगा सिंह भजनोपदेशक ने उत्सव को सफल बनाने में विशेष प्रयत्न किया । सन् १९२७ ई० में निकट के बड़ा गांव में मुसलमान गोबध करने पर उतारू थे । बिलथरा आर्य समाज ने इसका सक्रिय प्रतिरोध किया । ८००० जनता का दल बनाकर बड़े गांव पर धावा बोला । मुसलमान डर गये और गोबध करना भूल

गये। सन् १९२८ ई० में समाज के उत्सव के साथ पौराणिकों से जमकर शास्त्रार्थ हुआ और जनता पर आर्य समाज का विशेष प्रभाव पड़ा।

हैदराबाद सत्याग्रह में यहां से निम्न सत्याग्रहियों का जत्था गया और जत्थे के वीरों ने जेल की यातनायें सहन कीं।

१—श्री राम अधार सिंह, २—श्री यज्ञिय लाल, ३—श्री सत्य नारायण सिंह आदि। समाज अब विशेष प्रगतिशील है। नव रक्त का संचार हो रहा है।

आर्य समाज हरपुर—स्थापना १३ सितम्बर सन् १९४६ ई०।

संस्थापक—श्री दहारी राम जी वर्मा।

प्रति वर्ष प्रचार की योजना की जाती रही। बीच में कार्य शिथिल हो गया। सन् १९५६ में जाग्रति आई। श्री रामखेलावनराय ने अपना मकान समाज को दे दिया। जिसमें अब अधिवेशन होते हैं। वर्तमान अधिकारी श्री झगरूप्रसाद वर्मा प्रधान एवं श्री बब्बन प्रसाद मन्त्री हैं।

आर्य समाज रसड़ा—स्थापना तिथि सन् १९१८ ई०।

समाज का अपना मन्दिर है। जिसकी लागत लगभग ४०००) है। समाज सुधार कार्यों में अग्रसर रहता है।

जिला आज़मगढ़

उत्तर प्रदेश का यह भी एक पूर्वीय वीरों का जिला है। इस्लाम के अनेक छोटे-बड़े गढ़ इस जिले में विद्यमान हैं। आर्य समाज को अपने पूर्व युग में आर्य संस्कृति की रक्षा के हेतु इस्लाम से बड़ी-बड़ी टक्करें लेनी पड़ी हैं। इस जिले में सभा सम्बन्धित २३ आर्य समाज हैं। जिला उपसभा भी अनेक वर्षों से स्थापित है जो दृढ़ता पूर्वक ग्रामीण क्षेत्र में प्रचार कार्य में संलग्न है और उसके प्रचार के कारण जिले में अनेक आर्य समाजों की स्थापना हुई है।

जिले के स्वर्गीय कर्मठ कार्यकर्ताओं में श्री शीतलदत्त राय, श्री ब्रजबिहारी लाल, श्री हेमचन्द्र, सेठ रामगोपाल, श्री राजाराम, पं० रामचन्द्र, श्री व्रजबहादुर, श्री द्वारिका प्रसाद आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। वर्तमान युग के कर्मठ कार्यकर्ताओं में अग्रगण्य निम्न महानुभाव हैं :—श्री अक्षयवरनाथ जी, श्री श्यामलाल जी, महाशय बालूराम जी आदि।

आर्य समाज आजमगढ़—स्थापना तिथि सन् १८९४ ई०।

संस्थापक—श्री पं० वासुदेव सहाय गणिताचार्य।

सन् १९०६ में समाज सभा से सम्बन्धित किया गया। सन् १९१० ई० में समाज भवन का निर्माण हुआ जो कच्ची खपरैलों का था। सन् १९५३ में लगभग ३००००) की लागत का पक्का आर्य भवन बन कर तैयार हो गया। मंदिर निर्माण में श्री पं० गणपतराय, श्री शिवशंकर मुख्तार, श्री अक्षयवर नाथ तथा बा० श्यामलाल जी का प्रयत्न सराहनीय है।

शिक्षा—१९२५ ई० में डी० ए० वी० स्कूल का बीजारोपण हुआ। जिसने विकसित होते-होते अब डिग्री कालेज का रूप धारण कर लिया है। स्कूल और कालेज का नियंत्रण आर्य विद्या सभा द्वारा होता है। धार्मिक तथा नैतिक शिक्षण पर विशेष बल दिया जाता है। छात्र संख्या लगभग २००० है तथा ६० अध्यापक शिक्षण-कार्य में संलग्न हैं।

आर्यवीर दल तथा आर्य कुमार सभा भी स्थापित हैं जो नवयुकों में कार्य कर रही हैं। स्वाधीनता संग्राम में भी आर्य समाज के अनेक कर्मठ कार्यकर्ताओं का सक्रिय योगदान रहा है। श्री पं० अलगूराय जी शास्त्री का नाम उनमें विशेष उल्लेखनीय है।

सत्याग्रह तथा हिन्दी रक्षा सत्याग्रहों में इस समाज का पूरा सहयोग रहा है। श्री केशवप्रसाद, श्री शीतलप्रसाद जी तथा श्री भोलानाथ जी ने हैदराबाद सत्याग्रह में तथा श्री गुरुदत्त जी, एवं श्री विश्वनाथ जी आदि ने हिन्दी रक्षा सत्याग्रह में सक्रिय भाग लिया। ईसाई प्रचार निरोध की दिशा में भी विशेष कार्य किया गया है। अनेक ईसाइयों की शुद्धि की गई तथा इन्दारा में आर्यवीर दल शिविर लगाकर वहां के ईसाई मिशन को हतप्रभ किया गया। अन्य समाज सुधार आन्दोलनों में समाज प्रगतिशील रहा।

आर्य समाज मऊनाथ-भंजन—स्थापना तिथि १-८-१९०४ ई०।

सभा से सम्बन्ध—१९-१०-१९०६ ई०। मंदिर का आनुमानिक मूल्य २९०००)। संस्थापक स्व० श्री रायबहादुरलाल जी। सन् १९०६ ई० में स्व० सेठ रामगोपाल जी ने समाज में प्रवेश किया। सन् १९१७ से १९४३ ई० तक आप अनवरत सर्व सम्मति से समाज के प्रधान चुने जाते रहे। आप सभा के अन्तरंग सदस्य एवं उपप्रधान भी रहे। आपने आर्य समाज मंदिर निर्माण, स्कूल आदि में प्रचुर मात्रा में धन प्रदान किया। आपने ४७०००) का एक ट्रस्ट सभा के नाम स्थापित किया। सन् १९४० ई० में डी० ए० वी० स्कूल की स्थापना की गई जो सम्प्रति उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के रूप में चल रहा है।

समाज के दिवंगत कार्यकर्ताओं में श्री जगदेवप्रसाद, श्री तुलसीराम, श्री लाल बिहारीलाल, स्वामी अभयानन्द, श्री देवदत्त जी, श्री रामाचन्द्र राय, श्री रामलक्ष्मणराय, श्री वनवारीलाल, श्री रामलखनलाल, पं० हरिदेव शर्मा के नाम उल्लेखनीय हैं।

वर्तमान कार्यकर्त्ताओं में श्री अम्बिकाराय, श्री मंगला राय, श्री धर्मदत्त जी के नाम उल्लेखनीय हैं।

यह मुस्लिम वाहुल्य नगर है। मुसलमानों से बराबर समाज की टक्कर होती रहती है। सन् १९३६ ई० में पुराने समाज मंदिर के सहन में इन्होंने इमामवाड़ा बना डाला। अभियोग चला और इमामवाड़ा ढ़ाया गया। श्री मंगतराम जी एवं श्री सत्यव्रत का कार्य इसमें विशेष महत्वपूर्ण रहा। वर्तमान प्रधान श्री धर्मदत्त व मन्त्री श्री देवशरण जी हैं।

आर्य समाज गोंठा—स्थापना सन् १९१० ई० में हुई। श्री त्रिभुवनराय ने समाज मन्दिर निर्माणार्थ अपना एक मकान दे दिया है। मन्दिर अभी नहीं बना।

समाज के पुराने कर्मठ कार्यकर्ता एवं प्रभावशाली वक्ता श्री पं० तीर्थराज थे। सदस्य संख्या १५ है।

आर्य समाज बड़ा गांव—स्थापना सन् १९४६ ई०। ९००) की भूमि मन्दिर निमित क्रय की गई। प्रशंसनीय कार्यकर्ता श्री जगमोहनराम जी तथा श्री सीताराम जी हैं। वर्तमान प्रधान श्री विजयमिश्र तथा मन्त्री श्री फागूलाल जी हैं।

आर्य समाज घोसी—स्थापना सन् १९१४ ई०। मन्दिर का मूल्य लगभग १००००) है। पुराने कार्यकर्ता श्री रमाशंकरलाल, श्री बलदेव सहाय तथा श्री लखपतिराय जी थे। वर्तमान कर्मठ कार्यकर्ता श्री गयाप्रसाद जी हैं।

आर्य समाज कोपागंज—स्थापना सन् १९१७ ई०।

आर्य मंदिर है। मूल्य अनुमानतः १००००) -

पूर्व कार्यकर्ता—श्री घूरालाल जी, श्री वृन्दावन प्रसाद जी, श्री बलभद्रप्रसाद जी, श्री गयाप्रसाद जी, श्री केशवलाल जी। यहाँ पं० शिवशर्मा जी महोपदेशक सभा का पं० अखिलानन्द जी के साथ शास्त्रार्थ हुआ। सदस्य सं० २१ है। वर्तमान प्रधान श्री रामधन प्रसाद जी, मन्त्री श्री व्रजभूषण प्रसाद जी हैं।

आर्य समाज रानी की सराय—स्थापना २५-६-१९४३ ई०।

संस्थापक स्वामी आत्मानन्द जी स्वाध्यायी।

स्वामी जी ने इस क्षेत्र में अनेक स्थामों पर आर्य समाज स्थापित किये । आप बड़े भावुक कर्मठ कार्य कर्ता थे ।

शेख अब्दुल व रहीम को शुद्ध कर धर्मदेव एवं ओंकारनाथ बनाया गया । विधवा-विवाह अनेक कराये गये । अनाथ-रक्षा एवं नारी-रक्षा में यह समाज सदा प्रयत्नशील रहा । आर्यवीर दल का संगठन अच्छा है । ५०००) की लागत से आर्य मन्दिर बन चुका है । प्रधान श्री भूदेव रावत जी । मंत्री श्री नन्हकूराम जी हैं ।

आर्य समाज दोहरीघाट—स्थापना सन् १९४३ ई० ।

मंदिर के लिये श्री रामदास जी ने भूमि दान की है । आपका स्वर्गवास हो गया है । समाज प्रगतिशील है । अनाथ विधवा आदि की रक्षा के कार्य बराबर करता रहता है । प्रधान—श्री मुन्नीलाल जी, मंत्री—श्री गंगाप्रसाद जी हैं ।

आर्य समाज सरांवा—स्थापना—सन् १९१४ ई० ।

श्री सेठ चरित्तर जी ने इस समाज की स्थापना की आप स्वाध्यायशील व्यक्ति थे, बड़े-बड़े पौराणिक आचार्यों से भी टकरा जाते थे । सेठ जी के निधन पर श्री रामचन्द्र सिंह, छेदीलाल गुप्त, सीताराम आदि ने समाज का कार्य संभाला । बाद में कार्य शिथिल पड़ गया । समाज के उत्थान में स्वा० आत्मानन्द स्वाध्यायी का विशेष प्रयत्न रहा । सम्प्रति समाज की गति मन्द है ।

आर्य समाज अहिरौला—स्थापना तिथि ३१-१०-४३ ई० ।

सभा प्रवेश—५-११-४४ ।

१०००) समाज मंदिर हेतु पोस्ट आफिस में जमा है ।

आर्य समाज अमिला—इस समाज का कार्य सन् १९३० से चल रहा है । बीच-बीच में कई बार शिथिल भी हो चुका है । स्व० श्री रामलक्ष्मणराय जी वकील ने इस समाज की प्रशंसनीय सेवा सहायता की । साप्ताहिक अधिवेशन तथा प्रचार कार्य बड़ी सफलता से हो रहे हैं । अमिला श्री पं० अलगूराय जी शास्त्री जी का जन्म स्थान है । सन् १९४२ ई० के आंदोलन के समय अंग्रेजी सेना ने आपका घर फूंक दिया था ।

ज़िला गोरखपुर

गोरखपुर कमिश्नरी का केन्द्र स्थान है । नैपाल राज्य का सीमावर्ती जिला है । पहले देवरिया इसकी ही एक तहसील थी । स्वराज्य के बाद इसको प्रथक

जिला बना दिया गया है। गोरखपुर में सभा से सम्बन्धित आर्य समाजों की संख्या २२ है। दोनों जिलों की मिलाकर एक जिला उपसभा भी १८ वर्षों से स्थापित है और अच्छा कार्य कर रही है। उपसभा की स्थापना में श्री ला० केसरजी नारंग मैनेजर शुगर मिल्स एवं प्रधान आर्य समाज घुघुली का विशेष हाथ है। श्री नारंगजी को आर्य समाज तथा आर्य संस्थाओं के प्रति अगाध प्रेम है। मुक्त हस्त से इनके लिये दान करते हैं। घुघुली में दयानन्द उच्चतर माध्यमिक विद्यालय आपके ही प्रयत्न से चल रहा है और आपने ही इसकी स्थापना की थी। आर्य कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय गोरखपुर के संस्थापक भी आप ही हैं। आर्य समाज गोरखपुर, कप्तानगंज, सिसवा बाज़ार, असुरन, पनंवा आदि के भवनों के निर्माण में आपने प्रशंसनीय आर्थिक सहायता प्रदान की है। शुद्धि एवं अछूतोद्धार आन्दोलनों में भी आपका विशेष सहयोग रहता है। केसरराम नारंग ट्रस्ट स्थापित कर आप सैकड़ों छात्रों को प्रतिवर्ष आर्थिक सहायता देते हैं। जिले के अन्य प्रमुख कर्मठ कार्यकर्ताओं में श्री होतीलाल इन्जीनियर, श्री कन्हैयालाल जी एवं श्री सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम० ए० के नाम उल्लेखनीय हैं। उपसभा की देख-रेख में सन् १९६२ ई० में वृहद् कमिश्नरी सम्मेलन सम्पन्न हुआ। आर्य समाज बाढ़-पीड़ित सेवा समिति की स्थापना की गई। सहस्त्रों रुपयों का अनाज एवं औषधियाँ श्री श्यामलालजी की देख-रेख में पीड़ित क्षेत्र में वितरित की गईं।

गोरखपुर देश की स्वाधीनता संग्राम में कभी किसी से पीछे नहीं रहा। चौरी-चोरा जहां सन् १९२१ ई० के आन्दोलन में पुलिस चौकी फूँकी गई थी और अनेक सिपाहियों को मार दिया गया था और जिसके कारण महात्मा गाँधी जी को आन्दोलन स्थगित करना पड़ा, इसी जिले में हैं।

उपसभा की ओर से चरित्र निर्माण कार्य में विशेष बल दिया जाता है। श्री कन्हैयालाल जी ने सर्वोत्तम चरित्र वाले छात्र को पारितोषिक देने की घोषणा की हुई है। उप सभा के वर्तमान अधिकारीः—

श्री केसरराम नारंग संरक्षक
श्री होतीलाल इन्जीनियर प्रधान
श्री सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम० ए० मन्त्री
श्री फूलनचन्द्र गुप्त उपप्रधान
श्रीमती अमृतवाला चोपड़ा उपमन्त्रिणी
श्री कन्हैयालाल जी कोषाध्यक्ष।

आर्य समाज गोरखपुर—स्थापना तिथि १८९७-९८ ई०

संस्थापक—श्री पुरुषोत्तमदासजी के पूर्वज ।

पूर्वकालीन प्रतिष्ठित कार्यकर्त्ता—स्व० रामचन्द्रप्रसाद वकील,

२. स्व० ठाकुर मिश्रीलाल, स्व० हृदयनरायण जी एवं श्री वंशबहादुरजी (पिता श्री पं० सत्याचरणशास्त्री एम० ए०) स्व० श्री कृष्णावतार जी ने आर्य समाज मन्दिर में डी० ए० वी० स्कूल की नींव डाली जो अब विकसित होकर दयानन्द उच्चतर माध्यमिक विद्यालय हो गया है जिसमें दो हज़ार से ऊपर छात्र शिक्षा पाते हैं। इसके यशस्वी प्रधानाचार्य श्री उमाशंकर लाल एम० ए० हैं। आर्य कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की स्थापना सन् १९१८ ई० में की गई जिसमें १५०० के लगभग कन्यायें शिक्षा पाती हैं। दयानन्द उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के अन्तर्गत एक दयानन्द शिशु सदन भी चल रहा है जिसमें २५० बालक शिक्षा पाते हैं। गोरखपुर गुरुकुल की स्थापना १९३७ ई० में की गई जिसको अब श्रद्धानंद शिशु-सदन के रूप में परिवर्तित करने की योजना है। इस गुरुकुल ने अच्छा कार्य किया है। श्री सर्वेन्द्र शास्त्री उच्चाधिकारी शिक्षा विभाग बिहार यहाँ के ही छात्र हैं। गोरखपुर की आर्य सामाजिक प्रगतियों में श्री होतीलाल इन्जीनियर, श्री कन्हैयालालजी, श्री रामप्रसादजी, श्री सुरेशचन्द्र वेदालंकार आदि का विशेष हाथ है। श्री होतीलालजी यहां के कर्मठ कार्यकर्ता हैं कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय का निर्माण आपके ही सद प्रयत्नों से हुआ है। श्री रामप्रसाद घड़ीसाज—यहाँ के भामाशाह करके प्रसिद्ध हैं आप अछूतोद्धार आन्दोलन के सूत्रधार हैं। आर्य समाज के वर्षिकोत्सव पर, जो प्रान्त सबसे बड़ा उत्सव होता है, अछूतों के हाथ से सर्व साधारण के लिये खानपान की व्यवस्था की जाती है। आपने नगर में अछूतों का हिन्दु वैण्ड चालू किया। बाले जी के मेले में अन्ध विश्वासों के विरुद्ध प्रचार की व्यवस्था की। आर्य महिला शिक्षा केन्द्र को २५०० रु० दान दिया तथा समाज के सर्व कार्यों में मुक्तहस्त से दान देते हैं। ७३ वर्ष की आयु में आप हिन्दी रक्षा आन्दोलन में सत्याग्रही जत्था लेकर गये और पटियाला जेल की यात्रा की। श्री कन्हैयालाल जी—आर्य समाज के हर कार्य में झण्डा लेकर आगे रहते हैं। हैदराबाद सत्याग्रह, हिन्दी रक्षा सत्याग्रह में आपका महत्वपूर्ण योगदान है। आप स्वाध्यायशील कर्मकाण्डी सरल स्वभाव के व्यक्ति हैं।

श्री सुरेशचन्द्र वेदालंकार उच्चकोटि के वक्ता एवं लेखक हैं। आर्य मित्र आदि पत्रों की लेखों द्वारा आप निरन्तर सेवा करते हैं, तथा जनता को उच्च

विचार भावनाएं प्रदान करते रहते हैं। श्री विष्णुजी एवं श्री हरनामदासजी भी यहाँ के उल्लेखनीय व्यक्ति हैं। महिला आर्य समाज ५ वर्षों से उत्साहपूर्वक कार्य कर रहा है। श्री वुच्चन देवी, श्री कौशल्या शर्मा, श्री शकुन्तला रस्तोगी इसकी उत्साही कार्यकर्त्री देवियाँ हैं। श्रीमती साविश्री देवी पत्नी डि० कमिश्नर की प्रेरणा से समाज की स्थापना की गई, बाढ़ में विशेष कार्य किया।

आर्य समाज नौतनवां—स्थापना तिथि सन् १९४० ई० में हुई।

समाज की स्थापना से पूर्व यहाँ का हिन्दू अधिकतर ताजिये पूजता था। समाज के प्रचार से यह लज्जाजनक प्रथा लगभग समाप्त हो गई। यहाँ दस मुस्लमान परिवारों में हिन्दू देवियाँ थीं जिन्होंने अपने पतियों को हिन्दू बनने के लिये विवश किया जिनकी बाद में शुद्धि की गई। यहाँ के प्रतिष्ठित कार्यकर्ता श्री ब्रह्मेश्वर शर्मा आयुर्वेदाचार्य, वैद्यभास्कर, प्रधान आर्य समाज नवतनवां है। १५ वर्षों से आप ही समाज के प्रधान हैं। आपके पिता श्री सूर्यप्रसादजी शर्मा ने सन् १९४०-४१ और ४२ के स्वराज्य आन्दोलनों में जेल यात्रा की और ४० वर्ष की आयु में सन्यास धारण किया। बलिया व शाहाबाद में आपके पढ़ाये कम से कम २००० छात्र हैं।

आर्य समाज बढ़हलगंज—स्थापना तिथि १९१८ ई०।

संस्थापक श्री कुँवर सुखलाल आर्य मुसाफिर।

समाज प्रगतिशील है। समाज मन्दिर के लिये भूमि हस्तगत हो चुकी है। यज्ञशाला बन गई है मन्दिर निर्माण कार्य चल रहा है।

वर्तमान प्रधान श्री विद्यासागरजी,

मन्त्री श्री रामनारायण आर्य

आर्य समाज बाँसगाँव—स्थापना तिथि जून १९४२ ई०।

स्व० मुन्शी विन्ध्याचल प्रसाद, पं० दयाराम शर्मा मुन्शी हरिहरप्रसाद एडवोकेट की प्रेरणा व परिश्रम से समाज स्थापित हुआ। समाज के पुराने कार्यकर्ता श्री राजकुमार लाल, श्री छत्रधारी लाल, डा० कृष्णसिंह, श्री सत्यदेव पाण्डेय तथा श्री वेणीमाधव सिंह जी हैं। एक हिन्दू बालिका को यवनों के पंजों से निकाला।

हैदराबाद सत्याग्रह में धन जन से सहयोग दिया। सन् १९६० ई० में समाज में पुनः स्फूर्ति आ गई है।

आर्य समाज वृजमनगंज—स्थापना सन् १९३७ ई०।

अनाथ विधवाओं की सहायता की । कार्य मन्द है ।

वर्तमान प्रधान श्री ठाकुर गौरीशंकर सिंह जी

मन्त्री मं० स्वामीनाथ आर्य ।

जिला देवरिया

यह जिला नैपाल राज्य की तराई से लगा हुआ बहादुर जिला है । इस जिले में सभा से सम्बन्धित ११ आर्य समाज हैं । प्रचार की दृष्टि से यह गोरखपुर देवरिया उपसभा के साथ मिला हुआ है ।

आर्य समाज देवरिया—समाज की स्थापना सन् १९०१ ई० में श्री सेठ घनश्यामदासजी मारवाड़ी ने की । आपके पिता श्री निर्भयरामजी महर्षि के समकालीन थे और फर्रुखाबाद में महर्षि के प्रवचनों से उनके अन्दर वैदिक जीवन ज्योति का संचार हुआ था । अतः आर्य समाज का प्रेम सेठजी को अपने पिता से विरासत में मिला था । सेठजी ही इस समाज के सर्वप्रथम प्रधान निर्वाचित हुये । श्री विन्ध्याचल प्रसाद समाज के प्रथम मन्त्री बनाये गये । सन् १९०२ ई० में यहाँ पं० रुद्रदत्त सम्पादकाचार्य ने पौराणिक पंडित विष्णुदत्त के साथ मूर्तिपूजा पर ऐतिहासिक शास्त्रार्थ किया दूसरा ऐतिहासिक शास्त्रार्थ मौलाना सनाउल्ला के के साथ, जिनके साथ ५१ मौलाना पधारे थे, स्वामी दर्शनानन्द जी महाराज का हुआ । यह दोनों शास्त्रार्थ पुस्तकाकार प्रकाशित हैं । सन् १९३२ ई० में सेठ रामेश्वर लाल ने अपने पिताजी की स्मृति में घनश्यामदास आर्य वैदिक विद्यालय की स्थापना की जो सुचारु रूप से चल रहा है इसके आचार्य पं० इन्द्रदेवजी हैं । इसी प्रकार आपने अपनी माताजी की स्मृति में एक आर्य कन्या पाठशाला की स्थापना की । इन दोनों संस्थाओं में आपने अपना एक लाख रुपया व्यय किया । आपके भाई सेठ विश्वम्भर लालजी ने समाज का कार्य बड़ी निष्ठा के साथ किया । पहले एक साधारण खपरैल का मन्दिर था अब तीन वर्ष से एक विशाल आर्य मन्दिर का निर्माण किया जा रहा है ।

आर्य समाज के अन्तर्गत एक अनाथालय भी है । पं० इन्द्रदेव आचार्य उच्चकोटि के दर्शन के विद्वान् हैं इनका समस्त पौराणिक पण्डितों पर लोहा है । शुद्धिकार्य में समाज उत्साहपूर्वक भाग लेता है । हैदराबाद सत्याग्रह में यहाँ से श्री सीताराम आर्य तथा रामदेव विद्यार्थी सम्मिलित हुये । यह समाज सामाजिक एवं राष्ट्रीय कार्यों में अग्रसर रहा है ।

आर्य समाज लार—स्थापना तिथि १९२० ई० ।

कुछ काल बाद यह समाज शिथिल पड़ गया । सन् १९६० ई० में पं० सुरेशचन्द्रज़ी वेदालंकार के प्रयत्न से जाग्रति आ गई है । बाढ़ के समय इस समाज ने प्रशंसनीय कार्य किया । अनाथ रक्षा के कार्यों में समाज अग्रसर है । वर्तमान प्रधान श्री राधारमण सहाय एवं मन्त्री श्री बदरी प्रसाद आर्य हैं ।

जिला बस्ती

नैपाल राज्य की सीमा से लगा हुआ उत्तर प्रदेश का एक ऐतिहासिक जिला है । इसी बस्ती के लुम्बिनी कानन में महात्मा बुद्ध का जन्म हुआ था और इसी जिले के कुशीनारा ग्राम में महात्मा बुद्ध ने निर्वाण पद प्राप्त किया । महान् संत महात्मा कबीर का जन्म स्थान मगहर भी इसी जिले में विद्यामान है ।

जिले में सभा से सम्बन्धित आर्य समाजों की संख्या १८ है । सन् १९४७ ई० से जिला उपसभा भी स्थापित है जो समय-समय पर ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचार की व्यवस्था करती है ।

आर्य समाज बस्ती—स्थापना तिथि १९०९ ई० ।

इसके संस्थापकों एवं पूर्व कार्यकर्ताओं में लाला हरदयालजी, श्री भगवानदास जी, पं० दुर्गाप्रसाद डिप्टी इंसपेक्टर स्कूल्स, डा० लालबिहारी के नाम उल्लेखनीय हैं । सन् १९१७ ई० में समाज मन्दिर निर्माण का सूत्रपात हुआ । श्री ठा० विश्वनाथसिंह ने मन्दिर का शिलान्यास किया । यहाँ आर्य समाज का एक अनाथालय है जिसकी स्थापना श्री भगवानदासजी ने की । बस्ती के नररत्न पं० वेदव्रत (स्वामी अभेदानन्दजी) जब हैदराबाद सत्याग्रह के ८ वें सर्वाधिकारी बनकर गये तो बस्ती से श्री सीताराम यादव, श्री रामचरण आर्य, श्री पांचूराम आर्य, पं० सुरेन्द्र शुक्ल पिकौरा, सत्याग्रहियों ने उनका साथ दिया । हिन्दी रक्षा आन्दोलन में श्री रामचरित्र वैद्य ने प्रशंसनीय कार्य किया । सन् १९५९ ई० में समाज की स्वर्ण जयन्ती बड़े समारोह के साथ मनाई गई । समाज के प्रमुख व्यक्ति—

१. श्री लक्ष्मीनारायण टन्डन अनेक वर्ष आर्य समाज के प्रधान रहे । हिन्दू सभा जिला बस्ती के प्रधान रहे । अनाथालय के उत्थान में विशेष कार्य किया ।

२. स्व० ठा० राममूर्ति सिंह वकील ने जिला प्रचार का विशेष कार्य किया । अजमेर शताब्दी में आपने उत्तर प्रदेश की ओर से ओजस्वी भाषण दिये । आपके पुत्र श्री रघुराजसिंहजी बस्ती स्वर्णजयन्ती के स्वागताध्यक्ष रहे हैं । बड़े कर्मठ कार्यकर्ता हैं ।

३. श्यामबहादुर वकील—आपने कन्या पाठशाला की स्थापना की। आपकी स्मृति में आपकी धर्मपत्नी ने आर्य समाज के पिछले भाग का निर्माण कराया।

४. लाला देशराज नारंग कई बार समाज के प्रधान रहे। आप उदार दानी हैं। अनाथालय पर आपका वरद हस्त रहता है। मन्दिर में भी पर्याप्त धन लगाया।

५. श्री रामप्रसाद साहु दानी पुरुष हैं आपने समाज मन्दिर में काफी धन लगाया है।

आर्य समाज शोहरतगढ़—शोहरतगढ़ वाण गंगा तट पर बसी हुई सुन्दर नगरी है। सन् १९२६ ई० में वर्षा की रिमझिम में एक राँत्रि में एक आर्योपदेशक सहस्त्राब्दियों से सोने वाले हिन्दुओं को अपने सुमधुर संगीत से जगा रहा था। रामावतार व देवीप्रसाद नवयुवकों के हृदयों में उसका संगीत कार्य कर गया। इन्होंने गांव-गांव घूमकर हिन्दू जाति के उद्धार का व्रत धारण किया। इसी अवसर पर श्री सम्पूर्णानन्द श्रीवास्तव सब पोस्ट मास्टर बदलकर यहां आ गये। आर्य समाज स्थापित कर डाला। सन् ३० के स्वतन्त्रता आन्दोलन में यहा के नवयुवक कूद पड़े और समाज का कार्य शिथिल पड़ गया। सन् ५१ में पुनः चमका। सन् १९६१ ई० में समाज ने अपनी रजत जयन्ती बड़े समारोह से मनाई। अनेक यवन महिलाओं की शुद्धि की गई।

वर्तमान प्रधान श्री दुलीचन्द्र अग्रवाल, मन्त्री श्री हरनारायणलाल आर्य।

आर्य समाज बांसी—श्री बा० रामेश्वर प्रसाद जी की अध्यक्षता में सन् १९०६ में समाज की स्थापना हुई तथा १७-२-१९२५ में समाज सभा में प्रविष्ट हुआ। पौराणिकों एवं मुसलमानों ने मिलकर बड़ा विरोध किया। आर्य समाज के कार्यकर्ताओं का ईंट तथा पत्थर से स्वागत किया।

स्व० बाबू गुरुप्रसाद एडवोकेट आदि ने सन् १९२६ में समाज का भव्य मन्दिर बनाकर खड़ा कर दिया। वार्षिकोत्सव शुद्धि-संस्कार, वृहद् यज्ञों का आयोजन होता रहता है। दिवंगत कार्यकर्ताओं में श्री तमेश्वरप्रसाद जी, श्री हरनारायण जी वर्मा, श्री बालकरामजी, श्री रामनारायण जी, श्रीं बाढ़ूराम जी व पं० परमेश्वरी प्रसाद जी के नाम उल्लेखनीय हैं।

वर्तमान मन्त्री श्री हरिहर प्रसाद जी हैं।

आर्य समाज कलवारी—स्थापना तिथि १४-१०-३७ ई०

इसी वर्ष आर्य समाज मन्दिर की आधार शिला रामलखनलाल जी के कर

कमलों से रक्खी गई। स्व० श्री झिनकूलाल जी इस समाज के प्राण थे। आपका जन्म वैष्णवपुर नामक ग्राम में हुआ था। आपने ऋषि के अमर सन्देश का ग्रामों में घूम-घूम कर अलख जगाया। देश के स्वाधीनता संग्रामों में आपने ८ वार ब्रिटिश नौकरशाही की जेलों में जाकर कठोर यातनायें सहीं। समाज की स्थापना में आपका सर्वाधिक श्रेय था। आपकी हृदयविदारक मृत्यु पर सारे जिले में भारी शोक मनाया गया। कलवारी में आपकी पुण्यस्मृति में झिनकूलाल उच्चतर माध्यमिक विद्यालय स्थापित किया गया। विद्यालय में ५०० छात्र शिक्षा पाते हैं। श्री ठाकुर हरिचरण सिंह जी यहां एक और कर्मठ वीर कार्यकर्ता थे और वीर झिनकूलाल जी की आप दक्षिण भुजा थे। यहां के कार्यकर्ता श्री उदयप्रताप सिंह जी हैदराबाद सत्याग्रह में सैनिक बनकर गये। आर्य समाज विशेष प्रगतिशील है। वर्तमान प्रधान श्री उदयप्रताप सिंह जी तथा मंत्री श्री माता वदल सिंह जी हैं।

आर्य समाज डुमरियागञ्ज—श्री चन्द्रपाल सिंह द्वारा सन् १९२९ ई० में स्थापना हुई। समाज का कार्य आगे चलकर शिथिल पड़ गया। सन् ५७ में पुनः चेता। श्री सदानन्द प्रसाद वर्मा प्रधान एवं श्री ओमप्रकाश मन्त्री चुने गये। सन् ६८ ई० में पुस्तकालय एवं सांस्कृतिक केन्द्र की स्थापना आर्य मन्दिर में की गई।

आर्य समाज गजाधरपुर—पुराना आर्य समाज है इसकी स्थापना श्री शिवभीख त्रिपाठी ने की थी आपने अपने पैसे से ५ वड़े २ वार्षिकोत्सव कराये। एक हिन्दू परिवार को मुसलमानों से निकाल कर शुद्ध किया। विधवा-विवाह कराये। सन् १९३७ में बालक एवं बालिकाओं के लिये दो पाठशाला खुलवाईं। अछूत जाति के बच्चों को उनमें प्रविष्ट किया। हिन्दुओं की ताजियादारी छुड़वाई। हरिजनों का मांस भक्षण छुड़वाया। त्रिपाठी जी का ८० वर्ष की आयु में १९४८ में निधन हो गया।

आर्य समाज चौखटा—रामदेव त्रिपाठी इस समाज के मन्त्री हैं। समाज स्थापना लगभग ३५ वर्ष पूर्व की गई सात शुद्धियां हुईं। पुराने कार्यकर्ता सब बाहर चले गये। कार्य शिथिल पड़ गया।

आर्य समाज बढ़नी—की स्थापना सन् १९३६ ई० में की गई।

यह नैपाल राज्य की सीमा से बिलकुल लगा हुआ कस्बा है। सेमरी निवासी ठा० मनबहाल सिंह ने कुछ भूमि क्रय कर समाज को दान कर दी और लाला रामनाथ नारंग ने मन्दिर निर्माण कराया। कर्मठ कार्यकर्ता श्री काशीराम के

उद्योग से आर्य कन्या पाठशाला की स्थापना हुई। सन् ३६ से ५० तक सैकड़ों विधर्मियों की शुद्धि अनाथ अबलाओं की रक्षा की गई। श्री काशीराम जी के निधन पर उनकी धर्मपत्नी सरस्वती देवी के अनुरोध पर सभा ने पं० शिवनारायण शास्त्री देवपाठी को स्थायी रूप से कार्य करने के लिए यहां भेजा। कन्या पाठ-शाला जो बीच में टूट गई थी पुनः श्री सत्यवती देवी पत्नी श्री ईश्वरशरण जी के विशेष पुरुषार्थ से चालू की गई।

पाठशाला में १०० कन्यायें शिक्षा पाती हैं, श्री त्रिपाठी जी ही समाज के पुरोहित एवं मन्त्री हैं और इस क्षेत्र में सभा की ओर से संलग्नता के साथ कार्य कर रहे हैं।

आर्यसमाज उस्काबाजार बस्ती—यह समाज १९३५ ई० में स्थापित हुआ। समाज मन्दिर निज का है। उत्सव और प्रचार कार्य सफलतापूर्वक होते हैं। पर्वों पर यज्ञादि किये जाते हैं। अनेक शुद्धियाँ हुई हैं। स्व० बाबू शंकु प्रसाद तथा स्व० बा० लोचनराम जी ने समाज की प्रशंसनीय सेवा, सहायता की है।

आर्य समाज मेंहदावल—इस समाज की स्थापना १९१५ ई० में हुई। कन्या पाठशाला और विद्यावर्धिनी संस्कृत पाठशाला की स्थापना भी हुई। कन्या पाठ-शाला इस समय मिडिल तक की शिक्षा दे रही है। समाज मन्दिर निज का है। सार्वजनिक आर्य वाचनालय चल रहा है। एक हरिजन पाठशाला भी चलती रही कितनी ही शुद्धियाँ हुईं। कई सदस्य राष्ट्रीय आन्दोलन और हिन्दी रक्षा आन्दो-लन में जेल गये। हैदराबाद सत्याग्रह में भी समाज ने सहायता की। आर्य समाज से सम्बन्धित डी० ए० वी० औद्योगिक स्कूल ४ जुलाई सन् १९५४ से चल रहा है। इस पाठशाला के निर्माण में श्री नामेश्वर प्रसाद वकील का बड़ा हाथ है। पं० कालीचरन जी, श्री मुन्शी श्यामसुन्दर लाल जी आदि प्रमुख कार्य-कर्ता हैं।

जिला गोंडा

गोरखपुर कमिश्नरी का पूर्वी जिला है। सभा सम्बन्धित आर्य समाजों की संख्या १६ है जिला उपसभा अभी तक स्थापित नहीं की जा सकी।

आर्य समाज गोंडा—स्थापना सन् १८९० एवं ९५ के बीच हुई।

संस्थापक श्री गोविन्द सहाय वैश्य सहायक मैनेजर, भिनगा राज्य कायम गंज के निवासी। प्रारम्भिक सहयोगियों में श्री कालीचरण, श्री श्यामाशरण,

श्री हरदयाल सिंह तथा श्री सीताराम ठेकेदार बरेली के नाम उल्लेखनीय हैं। प्रारम्भ में कार्य की गति असन्तोषजनक रही। सन् १९०३ में पुनः संगठन किया गया। सन् १९११ ई० में समाज सभा में प्रविष्ट हुआ। सन् १९०८ ई० में श्री ताराचन्द्र ओवरसियर पी० डब्ल्यू० डी० के सहयोग से समाज मन्दिर का निर्माण हुआ।

नारायण स्वामी भवन लखनऊ के निर्माण में श्री श्रीराम टेलर मास्टर ने ५०० रुपया तथा इसी प्रकार अन्य सज्जनों ने १७६ रू० भेजा। श्री श्यामशरण की स्मृति में उनके पुत्रों ने यज्ञशाला बनवाई तथा श्री हनुमान प्रसाद वैद्य द्वारा टेढ़ी नदी के तट पर पक्की श्मशानशाला बनवाई गई। स्वर्गीय भारत केसरी लाला लाजपतराय के पदार्पण के समय यहाँ एक अनाथालय भी स्थापित किया गया जो बहुत वर्षों तक चलता रहा। यहाँ एक प्रारम्भिक पाठशाला भी स्थापित की गई थी। आर्य वीरदल भी यहाँ खुला था। श्री रामदास आर्य वाचनालय एवं संस्कृत पाठशाला यहाँ सुचारु रूप से चल रही है। दयानन्द धर्मार्थ औषधालय भी स्थापित किया गया है।

श्री शम्भूप्रसाद सक्सेना, श्री जगमोहननाथ चौबे, पं० रामदुलारे आर्य, गुरू गोविन्द सक्सेना, रामविहारी सक्सेना, डा० रामबदलसिंह, श्री देवकलीप्रसाद आर्य, श्री जागेश्वर प्रसाद सक्सेना तथा श्री विन्धेश्वरी प्रसाद जी आदि यहाँ के प्रमुख कार्यकर्ता रहे।

वर्तमान प्रधान श्री हरिशंकर हलेजा तथा मन्त्री श्री जगदेवसिंह जी हैं।

आर्य समाज मबई—स्थापना सन् १९५३ ई० में हुई। यहाँ के नवयुवक श्री द्वारिका प्रसाद मिडिल पास करके बम्बई चले गये और वहाँ पं० विजयशंकर जी की कृपा से वह पक्के आर्य समाजी बने। घर लौटने पर श्री रामरत्न मिश्रजी पर आपने पूरा रंग चढ़ाया। उत्सव व प्रचार कार्य चलता है। एक ब्राह्मण को मुसलमान होने से बचाया।

आर्य समाज बलरामपुर—स्थापना तिथि १-२-१९२७ ई०

समाज का अपना विशाल मन्दिर है जिसकी आनुमानिक लागत २५००० रु० है। प्रचारकार्य में विशेष उत्साह प्रदर्शित किया है। समाज सुधार शुद्धि आदि कार्यों में भाग लेता रहा है। इसके आधीन एक डी० ए० वी० उच्चतर माध्यमिक विद्यालय संचालित है तथा एक दयानन्द बाल शिक्षा मन्दिर भी स्थापित किया गया है। समाज प्रगतिशील है।

आर्य समाज रेहराबाज़ार गोन्डा—समाज स्थापना का श्रेय श्री दशरथलाल जी को है आप जब पटवारी स्कूल फैज़ाबाद में पढ़ाते थे तब स्कूल के आचार्य पं० शिवदास शर्मा द्वारा आपके विचारों में परिवर्तन हुआ। आपने गाँव पहुँचकर उतरौला आदि आर्य समाजों के कार्यकर्ताओं को बुलाकर प्रचार कराया और ४-४-१९४५ ई० को आर्य समाज की स्थापना की। श्री ठा० विजयसिंह प्रधान एवं पं० वल्देव प्रसाद शास्त्री मन्त्री ने सन् १९५६ ई० में एक डी० ए० वी० स्कूल स्थापित किया किन्तु बाद में उसने जनता विद्यालय का रूप धारण कर लिया। समाज साधारण है। श्री दशरथलाल मन्त्री हैं।

आर्य समाज नवाबगंज (गोंडा)—इस समाज की स्थापना ७ अगस्त १९२५ ई० को हुई। महाशय रामानन्द जी मुनीम ने अपनी भूमि समाज को दान में दी जिसपर सन् १९२८ ई० में श्री सेठ कृष्णदेव जनरल मैनेजर नवाबगंज शुगरमिल्स ने भवन का निर्माण करा दिया। समाज की ओर से नोआखाली संकट में सहायता की गई। और कई आर्यवीर हैदरावाद सत्याग्रह में सम्मिलित हुये। आर्थिक सहायता भी भेजी गई। एक डी० ए० वी० हाई स्कूल नगर में चल रहा है जिसमें धार्मिक शिक्षा भी दी जाती है। आर्यवीर दल और एक बड़ा पुस्तकालय भी हैं। ईसाई प्रचार निरोध तथा हिन्दी रक्षा आन्दोलन के लिये आर्थिक सहायता भी दी गई। वार्षिकोत्सव प्रतिवर्ष होता है मेलों पर प्रचार भी किया जाता है।

ज़िला बहराइच

नैपाल की सीमा से लगता हुआ यह एक सौभाग्यशाली जिला है। बहराइच का प्राचीन नाम बालार्क पुरी है। इसी जिले में बौद्धों का तीर्थ स्थान श्रावस्ती विद्यमान है। जिस स्थान पर सम्प्रति सैयद सालार मसऊद गाज़ी की समाधि बनी हुई है अब से ठीक ६१२ वर्ष पूर्व हिन्दुओं का मान्य तीर्थ स्थान बालार्क विद्यमान था। १०३४ ई० में कुटिला नदी के तीर वीरकेसरी सुहेलदेव ने सैयद सालार मसऊद गाजी का युद्ध में बध किया था। जहाँ अब सुलेहदेव के नाम से मेला लगता है। १८५७ ई० में इस जिले के अमरशहीद बलभद्रसिंह (चहलारी), श्री हरदत्तसिंह (बौहड़ी),अदितसिंह (इकौना) राजा जोतसिंह चर्दा आदि ने सक्रिय भाग लिया था।

नैपाल की सीमा के साथ-साथ ईसाई मिशनों के अनेक अड्डे हैं जो जनता को पथभ्रष्ट करने पर रात्रि दिन प्रयत्नशील रहते हैं। इनके प्रचार की गति को

रोकने के लिये तथा जिला में आर्यसमाज का विशेष प्रचार व संगठन करने की दृष्टि से २-८१९५३ ई० को जिला उपसभा की स्थापना की गई। उपसभा के प्रथम प्रधान श्री खुशीराम जी, मन्त्री श्री भोला नाथ जी तथा लक्ष्मीनारायणजी गिलौला निवासी कोषाध्यक्ष बनाये गये। सभा से सम्बन्धित आर्यसमाजों की संख्या इस समय १३ है।

हिन्दी रक्षा आन्दोलन में उपसभा ने एक सत्याग्रही जत्था भेजा। इकौना में समाज की रजतजयन्ती महोत्सव के समय जिला सम्मेलन किया गया। सम्मेलन के अध्यक्ष श्री आचार्य बृहस्पति जी थे। स्वाधीनता संग्राम में जिले के सैकड़ों आर्यवीरों ने वृटिश कारागारों की यातनायें सही हैं जिनमें श्री अयोध्या प्रसाद वर्मा [illegible] लालता प्रसाद, श्री राम त्रिपाठी, बच्छराज त्रिपाठी, बराती लाल, पं० रामहर्ष विद्रोही, पं० चिन्ताराम, पं० शिवनारायण तिवारी, भगवान दीन गुप्त आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

जिले के कार्यकर्त्ताओं में श्री महाशय देवकली (देव स्वामी) का नाम उल्लेखनीय है। सरकरी नौकरी में रहते हुये भी आपको प्रचार की धुन रहती थी।

वर्तमान मन्त्री—श्री कृष्णलाल भदोरिया (नानपारा) हैं।

आर्य समाज बहराइच—स्थापना तिथि २०-८-१८९८ ई०

संस्थापक—श्री लाला अमीचन्द्रजी।

समाज विशेष प्रगतिशील है। सन् १९४८ ई० में समाज ने अर्ध शताब्दी उत्सव बड़े समारोह के साथ मनाया। आर्य समाज के प्रत्येक आन्दोलन में तन धन से सहयोग दिया।

आर्य समाज इकौना—स्थापना तिथि ८-९-१९३२ ई०

पूर्व प्रधान श्री रामनारायण आर्य एवं मन्त्री श्री नवनिधिलाल जी, हैदराबाद सत्याग्रह में सक्रिय भाग लिया। श्री शोभाराम जी तथा श्री रामविलास जी श्रीवास्तव सत्याग्रही जत्थे में गये। सन् १९५८ ई० में आर्य समाज का विशाल मन्दिर ७००० रुपयों की लागत से तैयार हो गया जिसकी आधार शिला एक वर्ष पूर्व सभा मन्त्री श्री पं० शिवदयालु जी ने रक्खी थी। मन्दिर निर्माण में श्री पूर्णचन्द्र जी प्रधान तथा श्री शालिग्राम आर्य मन्त्री समाज का उत्साह सराहनीय रहा। इकौना का मन्दिर जिले में अपना विशेष स्थान रखता है। यहाँ से हिन्दी आन्दोलन में श्री अशर्फीलाल जो आर्य सत्याग्रही जत्थे में गये और कारागार की

यातना सहन की। सन् १९६० में रजत जयन्ती समारोह मनाया गया। इस अवसर पर जिला सम्मेलन भी किया गया।

आर्य समाज नानपारा—स्थापना तिथि ९-१२-१९२४ ई०

संस्थापकों में उल्लेखनीय नाम श्री पं० मायादास का है। आपके प्रयत्न से १०-८-२५ को मुजफ्फर निवासी श्री नानचन्द्र जी की पत्नी श्री अनारोदेवी ने अपना मकान आर्य मन्दिर के हेतु दान कर दिया। नानपारा, जो एक मुस्लिम रियासत थी, में आर्य समाज का सराहनीय कार्य श्री देवकली प्रसाद जी ने अपने अदम्य उत्साह एवं पौरुष के बल पर किया। सन् १९३७ के वार्षिकोत्सव पर मुसल्मानों ने भारी उत्पात मचाया और उत्सव छिन्न भिन्न कर दिया। सन् ३८ में श्री मुन्नालाल जी वहाँ के प्रधान बने। आपने अपने प्रत्यन से सहस्त्रों रुपया इकठ्ठा करके मन्दिर का निर्माण कराया। यहाँ के दिवंगत कार्य-कर्त्ताओं में श्री रामलाल का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। वर्तमान कार्यकर्त्ताओं में श्री किशन लालजी ने स्वराज्य आन्दोलन में कारागार की यातना सहन की अब आप निरन्तर आर्य समाज के प्रचार कार्य में ही रत रहते हैं।

२. श्री सुखलाल जी ने यवनों के चंगुल से अनेक हिन्दू देवियों का त्राण किया।

३. श्री श्याम लाल जी ने नेनानपारा में १९४७ में आर्यवीर दल की स्थापना एवं उसका सञ्चालन किया। तथा सन् १९५० में आर्यकुमार सभा भी स्थापित की। सन् १९२७ ई० से यहाँ आर्य कन्या पाठशाला स्थापित है जिसमें ४० छात्राएँ शिक्षा पाती हैं। शुद्धि, संस्कार, पंजाब हिन्दी रक्षा आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया। नैपाल राज्यान्तर्गत नैपाल गंज में भी यह समाज समय-समय पर अच्छा प्रचार करता है। सन् १९५१ ई० में समाज मन्दिर बनकर तैयार हो गया वर्तमान प्रधान श्री किशन लाल व मन्त्री श्याम लाल जी है।

आर्य समाज भिनगा—यह आर्य समाज १९४९ ई० में स्थापित हुआ। ५०० गद्दियों की शुद्धि कर उन्हें हिन्दू बनाया। गोरक्षा आन्दोलन तथा हिन्दी रक्षा आन्दोलन में भी पर्याप्त सहायता दी। कुरीति निवारण के लिये भी प्रयत्न किया। यहाँ की राजमाता शाहपुराधीश की सुपुत्री माननीया ज्योति प्रभा जी हैं। इनकी कृपा से वैदिक धर्म प्रचार में बड़ी सफलता मिलती है। इस समाज की ओर से एक विद्यालय भी चल रहा है। इस आर्य समाज की स्थापना के पूर्व भिनगा राज्य के महाराज राजेन्द्र बहादुर सिंह सर्वप्रथम वैदिक धर्मानुयायी बने

थे और उन्होंने पत्रव्यवहार द्वारा महर्षि दयानन्द से अपनी शंकाओं का समाधान कराया था।

आर्य समाज गंगा जमुनी—स्थापना तिथि १९४६ ई०। स्थापना के पूर्व यहाँ कुवंर सुखलाल ने ३ दिन तक विशेष प्रचार किया। सन् १९५९ ई० में पं० रामनरेश द्विवेदी वर्तमान मन्त्री के प्रयत्न से समाज में विशेष स्फूर्ति आ गई।

आर्य समाज जरवल—म० भगवानदीन नामक पुलिस सिपाही जिसने महर्षि के भाषणों में प्रवन्ध किया, भाषण सुनकर अत्यन्त प्रभावित हुये। पुलिस से सेवा निवृत्त हो उसने जरवल में आर्य समाज का वीजारोपण किया। अमर शहीद लाला बद्री शाह जो कट्टर पौराणिक थे महाशय भगवान दीन के प्रयास से आर्य समाजी बने। सन् २४ में यहाँ मुसल्मानों से पं० कलीचरण का भारी शास्त्रार्थ हुआ। सन् २५ में हिन्दुओं के शंख व रामायण पाठ पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। सादुल्ला गुन्डे ने लाला बद्रीशाह का कत्ल कर दिया समाज कार्य में शिथिलता आ गई जिसको आगे चलकर अनेक कर्मठ कार्यकर्ताओं ने दूर किया और वार्षिकोत्सव आदि विधिवत् होने लगे। शुद्धि आन्दोलन के दिनों में स्वामी श्रद्धानन्द जी का अनेक बार जरवल में पर्दापण हुआ।

वर्तमान प्रधान—श्री शम्भूदयाल जी,

मन्त्री—श्री सीताराम जी

आर्य समाज फखरपुर—स्थापना तिथि सन् १९३० ई०

संस्थापक मथुरा प्रसाद जी (वहराइच) तथा बा० मनोहर लाल जी। ३-२-६३ को मन्दिर का शिलान्यास श्री कृष्ण लाल मदेशिया के कर कमलों से सम्पन्न हुआ। कार्य उत्साह जनक हो रहा है।

आर्य समाज अकबरपुर बुज़ुर्ग—स्थापना सन् १९६० ई०

आर्य समाज गिलौला—स्थापना ३० जून, १९३० ई०

पूर्व अधिकारी श्री ठा० नागेश्वर वक्स सिंह जी प्रधान,

श्री द्वारिका प्रसाद मन्त्री रहे।

यहाँ पर एक संस्कृत विद्यालय की स्थापना की गई। मध्यमा व शास्त्री तक की पढ़ाई होती है। १०० बीघा भूमि इसके पास है। सरकारी सहायता मिलती है।

समाज की ओर से नारी-रक्षा आदि कार्य द्रढ़ता पूर्वक किया जाता है। श्री लक्ष्मी नारायण जी मन्त्री हैं।

आर्य समाज यमला अर्जुनपुर—स्व० देवकली प्रसाद (श्री देव स्वामी जी) के प्रयास से यहाँ आर्य समाज की स्थापना हुई। २६ से २८ फरवरी १९१५ को प्रथम वार्षिकोत्सव मनाया गया। यहाँ स्वामी सर्वदानन्द जी, स्वामी सत्यानन्द जी के भी प्रवचन हुये हैं। समाज साधारण गति से चल रहा है।

श्री राजेन्द्र देव मन्त्री हैं।

जिला फैजाबाद

फैजाबाद जिले में सर्व प्रथम आर्य समाज की स्थापना भगवान राम की लीला भूमि अयोध्या में २६ सितम्बर १८८५ ई० में हुई थी। युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द का अयोध्या में शुभागमन १८ अगस्त १८७६ ई० को हुआ था और गुरुचरण लाल रईस के सर्यू बाग में ४१ दिन महर्षि ने ठहर कर वैदिक ज्ञानामृत की वर्षा की थी। अयोध्या को यह सौभाग्य प्राप्त है कि २० अगस्त १९७६ ई० को यहां ही महर्षि ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका को लिखना आरम्भ किया था।

इस जिले में सभा से सम्बन्धित आर्य समाजों की संख्या ११ है। जिला उपसभा अनेक वर्षों से स्थापित है। जिले के सम्भ्रान्त व्यक्तियों में श्री देवस्वामी (म० देवकलीप्रसाद), महाशय केदारनाथ आर्य, श्री मदनमोहन वर्मा एम० ए०, आचार्य प्रभामित्र शास्त्री एम०ए०, पं० रामबिहारी शास्त्री एडवोकेट एवं महाशय अयोध्याप्रसाद जी आर्य के नाम उल्लेखनीय हैं। पावन सलिला सर्यू के तट पर शोभायमान गुरुकुल अयोध्या इसजिले की धवल कीर्ति ध्वजा है। जिसकी स्थापना त्यागमूर्ति श्री स्वामी त्यागानन्द सरस्वती जी ने की थी।

आर्य समाज फैजाबाद—श्री पं० देवदत्त जी शास्त्री का समाज की स्थापना (१८८५ ई०) में विशेष सहयोग रहा। सर्व प्रथम स्थापना अयोध्या में ही की गई और श्री चौ० कवकूमल जी इसके सर्व प्रथम प्रधान बनाये गये। एक वर्ष उपरान्त इसके अधिवेशन सत्संग आदि फैजाबाद में ही होने लगे और इसका नाम आर्य समाज फैजाबाद पड़ गया। सन् १८८७ ई० में समाज का सम्बन्ध आर्य प्रतिनिधि सभा से हुआ। सन् १९२३ ई० में तत्कालीन जिलाधीश मि० होवार्ट द्वारा नगर के बीच विशाल भूमि आर्य समाज के मन्दिर आदि के हेतु उपलब्ध हो गई। तत्पश्चात् आर्य समाज के विशाल मन्दिर का निर्माण हुआ।

सन् १९११ ई० को यहाँ आर्य कुमार सभा की स्थापना की गई जिसके द्वारा नवयुवकों में वैदिक विचार धारा का पर्याप्त संचार किया गया। सन् १९३५ ई० में फ़ैजावाद में आर्य कुमार सभा का प्रान्तीय अधिवेशन भी हुआ। सन् १९११ ई० में आस्ट्रेलिया निवासी मि० रोज का फैजावाद में ऐतिहासिक धर्म-दीक्षा समारोह किया गया था। सन् १९१४ ई० में फ़ैजावाद से १० मील दूर भदसरा नामक स्थान में पौराणिकों से ऐतिहासिक शास्त्रार्थ हुआ। समाज की ओर से स्व० शास्त्रार्थ महारथी पं० मुरारीलाल शर्मा सिकन्दराबाद, पं० भोजदत्त आर्य मुसाफिर आगरा एवं पं० अखिलानन्द शर्मा ने भाग लिया।

सन् १९२६ ई० में विधवाओं की सुरक्षा के निमित्त विधवा-आश्रम की स्थापना की गई। जिसने अपने ३६ वर्षों के अब तब के जीवन में प्रशंसनीय कार्य किये हैं। सन् १९४० ई० में आर्य वीर दल की स्थापना की गई। हैदराबाद सत्याग्रह में आर्य समाज का विशेष योगदान रहा। आर्यवीरों के कई जत्थे सत्याग्रह में भेजे गये। तथा १०४३) भी भेजा गया। सदस्य संख्या सम्प्रति १५० है। पर्व संस्कार, उत्सवादि नियमपूर्वक होते हैं।

राजकरण वैदिक पाठशाला—इसकी स्थापना सन् १९११ ई० में स्व० मुंशी राजकरण जी के १००००) के प्रशंसित दान द्वारा की गई। विकसित होते-होते अब इस पाठशाला ने उच्चतर माध्यमिक विद्यालय का रूप धारण कर लिया है। छात्र संख्या ५५० है बालकों को वैदिक सिद्धान्तों की शिक्षा देने की यहां सुन्दर व्यवस्था है। इस संस्था के विकास में श्री मदन मोहन वर्मा एडवोकेट वर्तमान अध्यक्ष विधान परिषद् उत्तर प्रदेश का प्रशंसनीय उद्योग रहा है।

श्यामलाल राजे आर्य कन्या पाठशाला—बालिकाओं की शिक्षा का सर्व प्रथम प्रबन्ध आर्य समाज ने ही इस नगर में किया। महात्मा नारायण स्वामी के लघु भ्राता स्व० बा० ज्वालाप्रसाद जी पेशकार ने सन् १९३९ ई० में अपना एक मकान, बाटिका तथा २०००) दान देकर आर्य कन्या पाठशाला को जन्म दिया। पाठशाला उन्नति करते-करते अब उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बन गई है। जिसमें ७५० कन्याएं शिक्षा पाती हैं। सन् १९५७ में नगर के रईस स्वर्गीय श्यामलाल राजे ने १७०००) पाठशाला को दान दिया और कन्या पाठशाला का नाम उनकी स्मृति में श्यामलाल राजे कन्या पाठशाला कर दिया गया।

आर्य समाज टांडा—यह समाज सन् १८९२ में स्थापित हुआ, समाज मंदिर निज का है। जिसका अनुमानिक मूल्य पचास हजार रुपये है। समाज के अन्तर्गत

एक पुस्तकालय भी चल रहा है। श्री कच्चूराम जी के उद्योग से ग्राम सालहपुर रजौर में गत पच्चीस वर्षों से एक वानप्रस्थ-आश्रम स्थापित है इसके कोष में २८०००) जमा है। यह आश्रम पन्द्रह वर्षों से गुरुकुल महा-विद्यालय की शाखा बना दिया गया है। एक आर्य इन्टर कालेज भी चल रहा है। श्री बा० मिश्री-लाल जी इसके मुख्य संचालक हैं। भवन आदि का मूल्य लगभग एक लाख रुपये के है। छात्रावास का प्रबन्ध भी उत्तम है। हिन्दी रक्षा आन्दोलन में भी इस समाज के सदस्यों ने सक्रिय भाग लिया। समाज की ओर में निकटवर्ती ग्रामों में प्रचार कार्य होता रहता है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भी इस समाज के सदस्यों ने सम्यक् भाग लिया था और जेल यातनाएं सही थीं।

जिला सुल्तानपुर

फैज़ाबाद कमिश्नरी का यह एक सुन्दर वीरों का जिला है। प्रथम भारत स्वातंत्र्य समर है १८५७ ई० में इस जिले ने विदेशी नौकर शाही के विरुद्ध खुला विद्रोह किया था और जिले के अन्दर सात स्थानों पर अंग्रेजी पलटनों के दांत खट्टे किये थे। प्रान्त के किसान आन्दोलन का सूत्रपात्र इसी जिले से हुआ था। बावा रामचन्द्र एवं बाबा रामनारायण जी इसके जन्म दाता थे। सन् १९२१ ई० के स्वाधीनता संग्राम में जिले के अनेकों आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ताओं ने प्रशंसनीय त्याग एवं बलिदान किये हैं।

महर्षि दयानन्द का पदार्पण इस जिले में नहीं हुआ। किन्तु उन्होंने जिस वैदिक अग्नि को प्रज्वलित किया था उसका प्रकाश इस जिले में भी पर्याप्त पड़ा है। कालाकांकर और अमेठी के राजघरानों तक में ऋषि की ज्योति जगमगाई है। इस जिले में सभा से सम्बन्धित आर्य समाजों की संख्या ७ है तथा ४ समाज ऐसे हैं जिनका सम्बन्ध सभा से अभी नहीं हुआ है।

सुल्तानपुर—जिले का यह पहला आर्य समाज है। इसकी स्थापना सन् १८८७ ई० में की गई। तथा १९११ ई० में यह सभा से विधिवत् सम्बन्धित किया गया। आर्य समाज मन्दिर का प्रश्न उपस्थित होने पर माननीय राजा रणंजय सिंह ने ५००) दान देकर मन्दिर का निर्माण कार्य आरम्भ कराया। श्री गणपति सहाय एडवोकेट ने भी मन्दिर निर्माण में पुष्कल धन दिया। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने जब शुद्धि आन्दोलन छेड़ा तो राजा कालाकांकर एवं राजा रणंजय सिंह जी ने अवध में इसकी धूम मचा दी। खानज़ादा मुसलमानों की

सामूहिक शुद्धि की तैयारी की गई। दुर्भाग्य से राजा कालाकांकर हमसे छिन गये और आन्दोलन जैसा चाहते थे न चल सका। तथापि अनेक मुसलमान व्यक्तिगत शुद्ध हुये। ईसाइयों की शुद्धि में भी सुल्तानपुर आगे रहा है। सुल्तानपुर आर्य समाज ने अपने इस ७५ वर्ष के जीवन में लगभग ६०० विधवा-विवाह एवं १३०० स्त्रियों को पथ-भ्रष्ट होने से बचाया है।

दलित जाति के युवक एवं बालिकाओं की शिक्षा के निमित्त तीन रात्रि पाठशालायें एक प्राथमिक विद्यालय, तथा एक कन्या पाठशाला खोली। स्वतंत्रता के उपरान्त कन्या पाठशाला का प्रबन्ध नगरपालिका ने अपने हाथों में ले लिया और उसका नाम श्री मद्दयानन्द प्राइमरी पाठशाला रखा। समाज की आर्य कन्या पाठशाला अब लाला प्रागदीन सेठ की स्व० पत्नी रामकली देवी के नाम पर माध्यमिक विद्यालय के रूप में विकसित हो गई है। सेठ जी ने इस पाठशाला के भवनादि पर एक लाख रुपया व्यय किया। सुल्तानपुर के प्रसिद्ध आर्य कार्यकर्त्ता श्री रामनरायण सिंह ने सन् १९२१ के स्वराज्य आन्दोलन में कारागार में दपार्पण कर "प्रकाश-पुंज" नामक एक अच्छी ज्ञान बर्द्धक पूस्तक लिखी है।

हैदराबाद सत्याग्रह में यहाँ के वीरों ने जेल की कठोर यातनायें सही हैं। उनमें श्री संगमलाल वकील, विन्ध्येश्वरी पाण्डे, रामआसरे जी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। पंजाब हिन्दी सत्याग्रह में श्री गयाबक्स सिंह वकील, बाबा रामानन्ददास आदि अनेक आर्यवीरों ने भाग लिया और जेल यातनायें सहीं। समाज का एक अपना पुस्तकालय भी है। सुल्तानपुर निवासी श्री महादेवप्रसाद मिश्र कलकत्ता ने समाज के वर्तमान मन्त्री श्री रामकिशोर त्रिपाठी आदि की प्रेरणा से आर्य भवन निर्माणार्थ ७०००) दान दिया। जिससे समाज के वर्तमान मन्दिर में एक बड़ा हाल बनवाया गया।

आर्य समाज अमेठी—स्थापना तिथि विजय दशमी सं० १९८० वि० (१९२३ ई०)।

१९-५-१९२७ ई० में समाज सभा में प्रविष्ट हुआ। समाज का प्रादुर्भाव अमेठी राज्य के द्वितीय राजकुमार श्री रणवीरसिंह जी द्वारा हुआ। ११ वर्ष की आयु में ही राजकुमार पर आर्य समाज का पूरा रंग सत्यार्थ प्रकाश के अध्ययन से चढ़ चुका था। दैव दुर्विपाक से २१ वर्ष की युवावस्था में ही ब्रह्मचारी राजकुमार का स्वर्गवास हो गया। उनके स्वर्गवास हो जाने पर उनके अनुज राजकुमार रणजयसिंह (अब राजा रणंजयसिंह एम० पी०) ने वैदिक ज्योति को

जाग्रत किया। आपकी कृपा से अमेठी में एक सुन्दर आर्य भवन का निर्माण हुआ। मन्दिर का शिलान्यास युवराज जंगबहादुर सिंह के कर कमलों से १४-४-१९२७ को सम्पन्न हुआ। सभासद संख्या २८ है। प्रति वर्ष वार्षिकोत्सव समारोह पूर्वक मनाया जाता है। वर्तमान प्रधान श्री चन्द्रभानु वकील, मंत्री—श्री लालता प्रसाद जी हैं।

स्व० राजकुमार रणवीरसिंह जी की स्मृति में सन् १९५९-६० ई० में राजा रणंजय सिंहजी ने रणवीरसिंह डिग्री कालेज की स्थापना की और कालेज के लिये ४ लाख रुपये की चल व अचल सम्पत्ति दान दी। कालेज का प्रबन्ध एक रजिस्टर्ड समिति द्वारा होता है। कालेज में क्षात्रों के धार्मिक वं सांस्कृतिक विकास की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है। कमिश्नरी भर में कालेज की इस दृष्टि से विशेष मान्यता है। इसके अध्यक्ष जिलाधीश महोदय, कार्याध्यक्ष—श्री राजा रणंजयसिंह एम० पी० तथा प्रबन्धक श्री चन्द्रभानु एडवोकेट हैं। प्रधानाचार्य श्री जगदीशचन्द्र दीक्षित हैं।

आर्य समाज रामनगर (अमेठी)—स्थापना तिथि १०-४-१९४९ ई०।

सभा सम्बन्ध २६-८-१९५१ ई०।

लगभग प्रति रविवार को साप्ताहिक सत्संग में राजा रणंजयसिंह विद्यारत्न एम० पी० का प्रवचन होता है। सुधार के कार्यों में समाज अग्रसर रहता है। उल्लेखनीय घटना यह है कि—

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी जब १९२६ वि० में काशी पधारे थे, तब दुर्गा कुण्ड के समीप अमेठी राज्य के आनन्दबाग में ठहरे थे और वहीं पर वह ऐतिहासिक शास्त्रार्थ हुआ था, जिसमें काशी के समस्त विख्यात विद्वान् सम्मिलित हुए थे तथा महर्षि ने उन्हें परास्त किया था। तत्कालीन अमेठी नरेश महाराजा लाल माधवसिंह ने महर्षि के दर्शन किये थे। उनके उत्तराधिकारी अमेठी राज्य के अधिपति स्व० महाराजा राजर्षि श्री भगवानबक्स सिंहजी के० आई० एच० को सत्यार्थ प्रकाश बहुत प्रिय था और महर्षि दयानन्द के प्रति अगाध श्रद्धा थी। अतः राजकुमारों की शिक्षा दीक्षा का प्रबन्ध प्राचीन पद्धति के अनुसार विशेष रूप से किया गया था और संस्कृत तथा अंग्रेजी के शिक्षक विशिष्ट विद्वान् थे जिन्होंने महर्षि दयानन्द के दर्शन प्राप्त किये थे तथा सनातनधर्मी होते हुए भी वह महर्षि के परम प्रशंसक थे।

जिला रायबरेली

उत्तर प्रदेश के पूर्वीय क्षेत्र के अन्तर्गत एक वीर जिला है। जिसने देश की स्वाधीनता में पर्याप्त बलिदान किया है। इस जिले में सभा सम्बन्धित आर्य समाजों की संख्या केवल ४ है। प्रचार की दष्टि से यह जिला पिछड़ा हुआ है।

आर्य समाज रायबरेली—सई सरिता के तीर यह नगर स्थापित है। जिले का केन्द्र स्थान है। इस जिले को महर्षि के दर्शन का सौभाग्य उपलब्ध नहीं हुआ। ऋषि के अनेक भक्त जो सरकारी नौकरी में थे स्थानान्तरित होकर यहाँ आए और उनके प्रयत्न से सन् १८९५ ई० में आर्य समाज की स्थापना की गई। प्रारम्भिक कार्यकर्ताओं में स्व० पं० सूर्यप्रसाद शुक्ल का नाम विशेष उल्लेखनीय है। जिन्होंने अपने जीवन के अन्तिम क्षण तक निरन्तर ६० वर्ष आर्य समाज की सेवा की। सन् १९२५ ई० में पं विष्णुभास्कर केलकर एम० ए० जो यहाँ एक हाई स्कूल के मुख्याध्यापक होकर आए थे, इस समाज के सुदृढ़ स्तम्भ थे। समाज के अन्य पुरातन कार्यकर्ताओं में श्री पं० सत्यनारायण जी शुक्ल वकील, डा० शंकरदत्त शर्मा, बा० नौहरियाराम ओवरसियर, बा० नन्दकुमार रि० मुंसरिम, श्री रामनारायण विद्यार्थी वर्तमान उपदेशक सभा, बा० रामगुलाम वर्मा, बा० हरप्रसादजी रिटायर्ड एकाउन्ट आफीसर, चौ० नारायणदीन, ठा० रणवीरसिंह वकील, पं० जयदेव शुक्ल, पं० यमुनाप्रसाद मिश्र आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

इस समाज का नगर व जिला के सब आन्दोलनों में हाथ रहा है। शुद्धि, मद्यनिषेध आदि क्षेत्रों में प्रशंसनीय कार्य किया है। राजनैतिक आन्दोलनों तथा शिक्षा के क्षेत्र में आर्य समाज का पथ-प्रदर्शन रहा है। समाज की ओर से रात्रि पाठशालाएँ, प्रौढ़ पाठशालाएँ चला कर निरक्षरता निवारण के क्षेत्र में कार्य किया गया। सन् १९६० ई० में वैदिक बाल-मन्दिर की स्थापना की गई, जिसमें मान्टेसरी पद्धति से बच्चों को शिक्षा दी जाती है। रायबरेली का आर्य समाज मंदिर सन् १९३५ ई० में ईसाइयों से खरीदा गया था। यह मन्दिर नगर के केन्द्र में विद्यमान है जो यहां की प्रायः सब सांस्कृतिक, सामाजिक, शैक्षणिक प्रगतियों का केन्द्र माना जाता है, समाज की ओर से मेलों में प्रचार की योजना है। ग्रामों में भी समय-समय पर यहाँ के कार्यकर्ता जाते हैं। वर्तमान मंत्री श्री महेन्द्रशास्त्री एम० ए० हैं।

आर्य समाज गौतम निवास गौरा—स्थापना श्रावणी पूर्णिमा सं० २०१८ वि०। संस्थापक भारतीय जनसंघ के कर्मठ कार्यकर्ता डा० छोटेलाल सिंह गौतम

'हिमांशु' शास्त्री, साहित्य रत्न हैं। यहाँ इस अल्पकाल में ही आर्य समाज ने पुस्तकालय, व्यायामशाला एवं चिकित्सालय स्थापित कर लिये हैं। मंत्री श्री रामनरेशसिंह गौतम हैं। समाज अभी सभा से सम्बन्धित नहीं है।

आर्य समाज लालगंज—इस समाज की स्थापना सन् १९४२ ई० में अंग्रेजों भारत छोड़ो के आन्दोलन के युग में हुई। संस्थापक—श्री ठा० जनेश्वरसिंहजी। आप दृढ़ आर्य हैं एवं राष्ट्रवादी हैं। कलकत्ते से यहाँ आने पर आपने समाज की स्थापना की; आपको यह कहकर कि आर्य समाज और कांग्रेस दो प्रथक-प्रथक संस्थाएँ नहीं हैं बन्दी बना दिया गया था। आपके प्रयत्न से यहां आर्य मन्दिर बन चुका है।

समाज शुद्धि, शास्त्रार्थ, संस्कार आदि क्षेत्रों में प्रशंसनीय कार्य करता रहा है। वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाए जाते हैं। यहाँ की राष्ट्रीय जाग्रति एवं प्रगतियों का श्रेय आर्य समाज को ही है। ठा० जनेश्वरसिंह संस्थापक आर्य समाज ही यहाँ के अत्यन्त संभ्रान्त व्यक्ति हैं। सब शैक्षाणिक राष्ट्रीय एवं सामाजिक प्रगतियों के सूत्रधार हैं, एवं युग सन्देश हिन्दी साप्ताहिक के आप संचालक एवं सम्पादक हैं।

जिला प्रतापगढ़

आर्य समाज के प्रचार की दृष्टि से अनुन्नत जिला है। सभा सम्बन्धित केवल ४ आर्य समाज हैं। इस जिले में वैदिक ज्योति की किरणें बाहर से आने वाले सरकारी कर्मचारियों द्वारा यदाकदा पड़ती रहीं। अन्ततोगत्वा यहीं के एक छात्र श्री पं० रामहित शर्मा द्वारा जो दृढ़ आर्य विचारों के कर्मठ कार्यकर्ता थे, सन् १९०६ ई० में आर्य समाज की स्थापना प्रतापगढ़ में की गई। सन् १९११ ई० में समाज सभा से सम्बन्धित हो गया। प्रचार कार्य साधारण चलता रहा। यदाकदा उत्सवादि होते रहे। सन् १९२७ ई० में श्री राजा बहादुर राजा प्रताप बहादुर सिंह ताल्लुकेदार प्रतापगढ़ ने अपनी कुछ भूमि समाज को प्रदान की। समाज मंदिर का निर्माण कार्य आरम्भ किया गया। सन् १९२९ ई० में राजा अवधेश सिंह कालाकांकर ने राजा साहब दलीपपुर की कोठी खरीद कर उसका आधा भाग ८००० रुपये के अनुमान का समाज को प्रदान किया। जो अब आर्य समाज के रूप में विद्यमान। पं० रामहित शर्मा ने सन् १९३२ ई० में डी० ए० वी० स्कूल की स्थापना की। वर्तमान प्रधान श्री जगन्नाथप्रसादजी हैं।

आर्य समाज गौरडांड—स्थापना तिथि ३-३-१९५९ ई० ।

संस्थापक—श्री भगवानदीन गुप्त हैं ।

पुस्तकालय है जिसमें ३०० पूस्तकें हैं । राजा रणंजयसिंह जी ने यहाँ एक व्यायामशाला की स्थापना की ।

समाज के उत्साही कार्यकर्ता श्री अवधेश बहादुर सिंह, डा० छोटेलाल सिंह गौतम, श्री गंगाबक्स सिंहजी, श्री मुंशीरजा, श्री जगन्नाथ सिंह गौतम तथा श्री हिमांशु शर्मा साहित्यरत्न मंत्री हैं ।

समाज प्रगति-पथ पर आरूढ़ है । समाज अभी सभा से सम्बन्धित नहीं हुआ है । कालाकांकर राज्य में भी एक आर्य समाज स्थापित है ।

जिला. झांसी

वीर बुन्देलों का ऐतिहासिक केन्द्र है । वीरांगना लक्ष्मीबाई के महान् शौर्य एवं बलिदान की गाथा घर-घर गूंजती सुनाई देती है । १८५७ ई० में भारतवर्ष से विदेशी अंग्रेजी शासन को समाप्त करने के लिये जो प्रथम स्वातन्त्र्य युद्ध लड़ा गया था उसमें झांसी की रानो पूजनीया लक्ष्मीबाई का सर्वोत्तम भाग रहा है । युद्ध के मैदान में इस वीरांगना ने गौरों की फौजों के वह छक्के छुड़ाये कि महारानी दुर्गा की याद ताजा कर दी । आज स्वतन्त्र भारत में झान्सी एक तीर्थ स्थली वन गई है । झान्सी के किले की दीवारों से स्वाधीनता का अमर संगीत सुनाई देता है । इस जिले में सभा से सम्बन्धित आर्य समाजों की संख्या १५ है । अनेक और भी आर्य समाज हैं जो अभी सभासे सम्बन्धित नहीं हो सके हैं । जिले के अन्दर प्रचार कार्य को तीव्र करने एवं आर्य समाजों की शक्ति को संगठित करने की दृष्टि से जिला उपसभा स्थापित हो गई है ।

आर्य समाज सीपरी बाजार झान्सी—इस समाज की स्थापना अप्रैल १९१२ को श्री स्वामी धर्मदेव (करनल रार्बट्सन) के द्वारा की गई । प्रारम्भिक कार्यकर्ताओं में श्री लद्धा राम साहनी, श्री बाबूलाल शर्मा, श्री प्यारे मोहन खत्री, ला० बोध राज साहनी, श्री हंसराज आनन्द, श्री गुरुदास मल एवं श्री हरिश्चन्द्र ओवरसियर के नाम उल्लेखनीय हैं ।

सन् १९१७ में आर्य भवन निर्माण कार्य आरम्भ हुआ । अनेक शास्त्रार्थ पौराणिकों व मुसलमानों से किये गये जिससे जनता आर्य समाज की ओर आकृष्ट हुई । हैदराबाद सत्याग्रह के अवसर पर भारी संख्या में उत्तर भारत के सत्याग्रही यहाँ

रुककर विश्राम करते थे उनके भोजनादि की सम्यक् व्यस्था की गई। श्री सोहन लाल जी आनन्द कर्मठ कार्यकर्ता हैं। आप ६ वर्षों तक लगातार मन्त्री रहे यह सत्याग्रह स्वागत कार्य सब आपकी देखरेख में होता रहा। श्री लद्धाराम जी पूर्व प्रधान ने ग्राम प्रचार कार्य को विशेष बल दिया। पं० इन्द्र वर्मा एवं पं० रघुनन्दन शर्मा जी जैसे प्रसिद्ध विद्वानों द्वारा ग्रामों में प्रचार करवाया। सन् १९४७ ई० में भारत विभाजन के समय अनेक आर्य बन्धुओं ने पंजाब से आकर समाज के कार्य को विशेष गति दी। यहाँ आर्य कन्या पाठशाला समाज के जन्म काल से स्थापित है जो अब बढ़कर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बन गया है और उसमें १६०० कन्यायें शिक्षा पाती हैं। शीघ्र ही डिग्री कालेज बनने वाला है। श्री बोधराज साहनी, प्रान्त के उच्चतम शिक्षाधिकारी जो समाज के जन्म दाताओं में हैं। का इसके उत्थान में सराहनीय प्रयत्न रहा है। विद्यालय में धर्म शिक्षा की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है। विद्यालय के उत्थान में श्री डा० मथुरा प्रसाद जी सक्सेना, श्री बाबूलाल सक्सेना, श्री सोहन लाल आनन्द एवं श्री ऋषिकेशजी के नाम उल्लेखनीय हैं। समाज के नवीन कार्यकर्ताओं में श्री चमन लाल, श्री रघुनाथ जी, श्री कृष्ण सिंह जी, श्री दुर्गा प्रसाद, श्री निर्मल चन्द्र जी, श्री सुरेश मोहन सक्सेना के नाम उल्लेखनीय हैं।

वर्तमान प्रधान—श्री बाबूलाल शर्मा

मन्त्री—श्री दुर्गा प्रसाद जी

आर्य समाज नगर झाँसी—दिनांक १-३-१९२४ ई० को श्री लाला लद्धाराम साहनी एवं अन्य सहयोगियों की सहायता से समाज स्थापित हुआ। सभा-प्रवेश दिनांक २-४-१९२६ को हुआ। स्व० सेठ मदनमोहन जी एम० ए० सिविल जज के कर कमलों से समाज का शिलान्यास हुआ। समाज भवन की लागत ५००० रुपया है वर्तमान प्रमुख कार्यकर्ता श्री बालमुकुन्द शर्मा, श्री मंगत प्रसाद जी, श्री हरवंशलाल सक्सेना, बाबा राम लाल जी, श्री मोहन लाल जी श्री चिरन्जी लाल जी एवं श्री वेणीलाल जी के नाम उल्लेखनीय हैं। श्री हरि सिंह जी सेना की सेवा से मुक्त हो स्थाई रूप से यहाँ जिला में आर्य समाज की उन्नित में पूर्ण शक्ति से जुट गये। तब से आप ही निरन्तर समाज के प्रधान चले आ रहे हैं। यहाँ की २० हजार की मजदूरों की बस्ती में अकेला यह आर्य समाज ही जनता की धार्मिक पिपासा शांन्त करने वाला है।

वर्तमान मन्त्री श्री केदारलाल आर्य हैं।

आर्य समाज शहर झाँसी—स्थापना सन् १८८६ ई० में राय साहब शंकर सहाय जी द्वारा हुई। सन् १९०१ में सभा में प्रविष्ट हुआ। आप ही आरम्भ से १९१९ ई० तक इसके प्रधान भी रहे। वर्तमान प्रधान श्री जयचन्द्र आर्य एवं मन्त्री श्री बूटामल शर्मा सन् १९१२ से १८ तक आर्य कुमार सभा भी स्थापित रही। १९१८ से १९४० तक यहाँ एक आर्य व्यायामशाला भी रही। सन् १९१४ ई० में एक आर्य कन्या पाठशाला स्थापित की गई जिसे सन् १९४८ में नगरपालिका के संरक्षण में दे दिया गया। पाठशाला की संस्थापिका श्रीमती दुर्गा देवी जी प्रधाना स्त्री आर्य समाज हैं। सन् १९१८ ई० में स्वदेशी दूकान खोली गई। सन् १९२५ ई० में खादी भण्डार खुलने पर दूकान उसको दे दी गई। सन् १९२३ ई० में रात्रि श्रमिक पाठशाला खोली गई। १९ अगस्त १९६२ ई० को पालर में आर्य समाज का उद्‌घाटन करने के लिये यहाँ से १५० के लगभग आर्य नरनारी गये वहां पौराणिकों ने घोर विरोध किया। श्री जयचन्द्र आर्य ने अनशन आरम्भ कर दिया। अन्त को उनकी विजय हुई और ओ३म् ध्वज लहराया गया समाज के पुराने कर्मठ कार्यकर्ताओं में श्री फूगामल जी श्री केदारनाथ जी रि० ई०, श्री जयचन्द्र (मालिक जागरण हिन्दी दैनिक), श्री बूटामल जी शर्मा तथा श्रीमती तारावती जी संस्थापिका स्त्री आर्य समाज के नाम उल्लेखनीय हैं। सन् १९२८ ई० में श्री आत्मा राम गोविन्द खेर एवं श्री आर० वी० धुलेकर की प्रेरणा से अर्न्तजातीय सहभोज किया गया। पौराणिक जगत् में भूकम्प आ गया। सामाजिक वहिष्कार किये गये। किन्तु स्वामी मुनीश्वारानन्द ने अपने प्रचार द्वारा विरोध असफल कर दिया। हैदराबाद सत्याग्रह में पूर्ण सहयोग किया, हिन्दी सत्याग्रह में यहाँ से एक जत्था भी चन्डीगढ़ गया। ईसाई निरोध भी बड़े पैमाने पर किया गया।

आर्य समाज जौरीबुर्जु ग झांसी—नया आर्य समाज है। गत वर्ष ही स्थापित हुआ है। पौराणिकों ने होने वाले उत्सव का घोर विरोध किया किन्तु उत्सव हुआ और धूमधाम से हुआ। उत्सव की सफलता का श्रेय: श्री जय चन्द्र आर्य, श्री बूटामल शर्मा एवं श्री गंगा राम जी को है।

आर्य समाज पुलिया नं० ९ झांसी—स्थापना तिथि १२-९-५४ ई०

समाज की स्थापना का श्रेय श्री उदय भानु जी को है। वार्षिकोत्सव किये जाते हैं। मन्दिर के लिये २७०० रु० की भूमि चन्दा करके क्रय की गई। यह समाज भी मजदूरों की बस्ती से लगता है। समाज के उत्साही कार्यकर्ता श्री

बावा रामप्यारे, ठाकुर विशन सिंह, श्री शिवनाथ पाल, श्री नन्द कुमार राठौर एवं श्री उमाशंकर अग्निहोत्री (मन्त्री समाज) हैं।

आर्य समाज चिरगाँव—चिरगाँव भारत के प्रसिद्ध हिन्दी कवि श्री मैथिली शरण की जन्म भूमि है। श्री मदन मोहन जी के प्रयत्न से सन् १९४५ ई० में यहाँ आर्य समाज स्थापित हुआ। सन् १९४८ ई० में विधिवत् चुनाव हुआ। श्री नारायण दास जी प्रधान बनाये गये। स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती जी ने यहाँ विशेष प्रचार किया। सब आर्य आन्दोलनों में सहयोग रहा सन् १९५६ ई० को श्री मा० रघुवरदयालु जी ने समाज के प्रधान बनकर उसकी बागडोर सम्हाली आपको राष्ट्रपति पुरस्कार से भी विभूषित किया गया। विधवा-विवाह, अनाथा-लय, शुद्धि कार्यों में समाज अग्रसर रहा। आर्य कुमार सभा स्थापित हो चुकी है। आर्य पुस्तकालय बनाया जा रहा है। श्री रघुवर दयाल जी प्रधान एवं रामेश्वर प्रसाद गुप्त मन्त्री हैं।

आर्य समाज मीठ—स्थापना तिथि २०-७-१९३९ ई०

मन्दिर का मूल्य लगभग १०००० रु० है। समाज सुधारादि के कार्यों में अग्रसर रहता है। अनेक शास्त्रार्थ भी किये हैं।

जिला हमीरपुर

यह बुन्देल खण्ड वर्तमान झांसी डिवीजन का बहादुर जिला है। महाराणा छत्रसाल की वीर गाथाये इस जिले के गाँव २ में सुनने को मिलेगीं। इस जिले में आर्य समाजों की संख्या केवल ५ है। जिले में आर्य समाज का बीज स्व० श्री पं० राम प्रसाद जी चरथावल जि० मुजफ्फर नगर निवासी ने बोया था आप जिले में डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के ओवर सियर थे आपने ही मुसकरा, राठ आदि में आर्य समाज स्थापित कराये।

आर्य समाज राठ—श्री रोशन लाल जी के उद्योग से इस समाज की स्थापना सन् १९१२ ई० में हुई। आप ही के उद्योग से यहाँ समाज मन्दिर का निर्माण हुआ। इस समाज पर पं० राम प्रसाद जी ओवर सियर का सदैव वरद हस्त रहा। कांगड़ी गुरकुल के स्नातक स्वामी अभयदेव जी आप ही के सुपुत्र हैं। पं० राम सनेही जी तिवारी यहां के प्रसिद्ध प्रचारक हैं। स्वामी ब्रह्मानन्द जी के उद्योग से राठ में एक डिगरी कालेज और एक इन्टर कालेज चल रहा है। हैदराबाद सत्याग्रह में इस समाज की ओर से भी एक जत्था गया था। समाज मन्दिर निज

का है। समाज का पुस्तकालय भी बहुत अच्छा है। जनता खूब लाभ उठाती है। ठा० लक्ष्मी नरायराण जी बड़े कर्मण्य आर्य हैं।

आर्य समाज कुलपहाड़—आर्य समाज की स्थापना १९२० ई० में की गई। संस्थापकों में श्री दुर्गा प्रसाद जी (बम्बई वाले) म० वलिदीन र्जा पेशकार, म० गोपाल सिंह यादव तथा म० बल्देव प्रसाद के नाम उल्लेखनीय है। श्री चतुर्भुज जी पाराशर चतुरेश विशारद ने अपनी ओजस्वी कविता द्वारा कुलपहाड़ राठ आदि पहाड़ों में समाज का विशेष प्रचार किया और ईसा ईयों का विशेष रूप से प्रवाह रोका। सन् २१ में आर्य समाज का मन्दिर बन गया जिसमें संस्कृत पाठ-शाला चलती रही और सन् ३० में यहाँ स्वातन्त्र्य संग्राम के सैनिकों का शिविर श्री भगवान दास बालेन्दु के संचालन में स्थापित हुआ और अनेक वीरों ने कारागार यात्रा की। शुद्धि का कार्य भी होता रहता है विधवा विवाह भी होते हैं। श्री बालगोविन्द जी अग्रवाल, यहां के प्रमुख कार्यकर्ता एवं सम्भ्रान्त व्यक्ति हैं।

आर्य समाज मुसकरा—इस समाज की स्थापना १९०० में पं० रामप्रसाद जी के प्रयत्नों से हुई। सन् १९०४ ई० में आर्य समाज का मन्दिर बनकर तैयार हो गया स्व० सेठ रामलाल जी, स्व० पं० कालिका प्रसाद जी, स्व० बैजूलाल जी महतों, स्व० देशराज महतों, एवं स्व० रामनारयण जी व्यास आर्य समाज के प्रारम्भिक युग के कर्मठ कार्यकर्ताओं में रहे हैं। वर्तमान मन्त्री श्री भजनलाल जी आर्य हैं।

जिला जालौन

इस जिले का केन्द्र स्थान उरई है। यह भी बुन्देलखन्ड का एक वीर जिला है। इस जिले में सभा से सम्बन्धित केवल दो आर्य समाज हैं।

आर्य समाज उरई—दीर्घकाल से यहां आर्य समाज स्थापित हैं। अपना विशाल आर्य मन्दिर है। नगर की सामाजिक शैक्षणिक प्रगतियों का केन्द्र आर्य समाज ही है। यहाँ आर्य समाज के निम्न प्रमुख विद्यालय प्रशंसनीय रूप में कार्य कर रहे हैं।

१. डी० ए० वी० उच्चतर माध्यमिक विद्यालय
२. डी० ए० वी० डिग्री कालेज
३. आर्य कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय।

तीनों में छात्रसंख्या लगभग २००० है।

यहाँ के वयोवृद्ध कर्मठ कार्यकर्ता श्री श्रीधर दयालु जी ने गुरुकुल वृन्दावन को २०००० रु० बीस हजार वैदिक अनुसन्धान के लिये प्रदान किया है।

आर्य समाज कालपी—स्थापना तिथि सन् १८८६ ई०

अपना मन्दिर है जिसकी लागत ५००० रु० है। यहाँ समाज का अपना एक आर्य कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय चल रहा है। समाज के पुराने कर्मठ कार्य-कर्ताओं में स्व० शिवचरण लाल आर्य पुरोहित का नाम उल्लेखनीय है।

जिला बान्दा

बुन्देलखण्ड वर्तमान कमिश्नरी झान्सी का एक जिला है। बुन्देलों की वीरता की गथायें इस जिले में भी गूंजा करती हैं। सभा से सम्बन्धित आर्य समाजों की संख्या यहाँ केवल ३ है। आर्य समाज के प्रचार की दृष्टि से यह एक वहुत पिछड़ा हुआ जिला है। केन्द्र स्थान बान्दा में ही आर्य समाज का कुछ उल्लेखनीय कार्य हो रहा है। बान्दा समाज की स्थापना सन् १८८५ ई० में हुई थी। सन् १९०४ में आर्य समाज मन्दिर का निर्माण हुआ। प्रारम्भिक युग के प्रमुख कार्य-कर्ताओं में स्व० राय साहब केदार नाथ, स्व० कुंवर हर प्रसाद सिंह जी, स्व० आनन्दी प्रसाद जी, ला० झांडीलाल जी, स्व० भानामल जी, स्व० सूरजवली जी, श्री वंशी लाल जी के नाम उल्लेखनीय हैं।

कुंवर हर प्रसाद जी दीर्घकाल तक समाज के मन्त्री रहे। पं० अनन्तराम जी द्वारा बुन्देलखण्ड में आर्य समाज का प्रचार कार्य कराया गया तथा बान्दा में बुन्देलखण्ड आर्य सम्मेलन किया गया।

वर्तमान अधिकारी—कुंवर आनन्द देव सिंह जी वकील प्रधान (सुपुत्र श्री कुंवर हरप्रसाद सिंह जी)

डा० सुशील कुमार शर्मा—अध्यक्ष नगरपालिका उपप्रधान

श्री कृष्ण कुमार त्रिपाठी वकील उपप्रधान

पं० मन्नी प्रसाद पाण्डे मन्त्री

श्री रमेशचन्द्र गुप्त उपमन्त्री

सन् १९०८ में अनाथालय स्थापित किया गया। बुन्देलखण्ड का यह पहला अनाथालय है। सन् १९०७ के दुर्भिक्ष में अनाथ बालक बालिकाओं आदि की दुर्दशा देखकर और ईसाइयों के चंगुल से इनको बचाने के लिये इसकी स्थापना

की गई थी। स्थापना का श्रेय स्व० सेठ केदार नाथ जी, स्व० सेठ युगुल किशोर जी, स्व० लाला वच्चा लाल जी एवं स्वर्गीय कुंवर हर प्रसाद जी को हैं। अनाथ-लय का अपना भवन है। अनाथालय के बालक पढ़ लिखकर ऊँचे-ऊँचे पदों पर पहुंचे हैं। अनाथालय के प्रधान सेठ हरी कृष्ण रईस एम० ए० हैं तथा मन्त्री कुंवर आनन्ददेव सिंह जी वकील हैं। अनाथालय का नाम अब बदल कर वैदिक सेवा सदन कर दिया गया है।

डी० ए० वी० स्कूल—वान्दा में एक मिशन स्कूल था इसके संचालक पादरी हिल थे। आर्य समाज के प्रचार से पादरी साहव का उद्देश्य पूरा न हो सका। मिशन ने अपना स्कूल तोड़ दिया। आर्य समाज ने इसको खरीद लिया और डी०ए०वी स्कूल स्थापित किया जो अब डी० ए० वी कालेज का रूप धारण कर गया है।

कालेज के प्रधानाध्यापक—श्री वैजनाथ सिंह जी हैं।

आर्य कन्या पाठशाला—श्री अनन्त प्रसाद जी ने अपने समाज के मन्त्रित्वकाल में पाठशाला की स्थापना की जो शनै. शनै. प्रगति कर रही है।

पुस्तकालय—मथुरा शताब्दी १९२५ ई० के अवसर पर दयानन्द पुस्तकालय की स्थापना की गई।

आर्य समाज बवेरू—यह समाज अनेक वर्षों से स्थापित है। सभा से सम्ब-न्धित है। हैदराबाद सत्याग्रह में यहाँ के निम्न ४ आर्य बन्धुओं ने भाग लिया। म० बलभद्रप्रसाद जी मन्त्री, म० जमुना प्रसाद जी आर्य म० बनवारी लाल जी म० गोपाल जी आर्य समाज ने सत्याग्रह कोष में १०८ रु० इकट्ठा करके भेजा।

वर्तमान प्रधान—श्री राम कृष्ण गुप्त हैं।

जिला बरेली

रुहेल खंड कमिश्नरी का केन्द्र है। आर्य समाज के संगठन की दृष्टि से यह एक सम्मानित जिला है। सभा से सम्बिन्धित आर्य समाजों की संख्या यहाँ ३६ है। अनेक वर्षों से जिला उप-सभा भी यहाँ कार्य कर रही है। पंडित सत्यपाल जी शास्त्री वैद्य एवं श्री ज्ञानेन्द्र जी इसके प्रमुख कार्यकर्ता हैं।

आर्य समाज बिहारीपुर, बरेली—बरेली नगर का यह ही प्रमुख आर्य समाज है। बरेली की समस्त आर्य सामाजिक प्रगतियों का यह सूत्र-धार रहा है। समाज की स्थापना सन् १८८३ ई० में की गई। बरेली नगर को यह सौभाग्य

प्राप्त है कि आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि स्वामी दयानन्द जी का यहाँ दो बार शुभागमन हुआ है। जीवन में क्रांति उत्पन्न करने वाले महर्षि के प्रवचनों से बरेली शहर के कोतवाल श्री नानक चन्द्र जी के पुत्र श्री मुंशीराम जी की यहाँ ही काया पलट हुई थी। समय के प्रवाह में बहने वाला एक नवयुवक मुंशीराम आगे चलकर महात्मा मुंशीराम और फिर स्वामी श्रद्धानन्द बना।

डा० श्याम स्वरूप सत्यव्रत बरेली आर्य समाज के प्राण थे। बरेली में आर्य समाज का चहुँमुखी विकास आपके अनथक परिश्रम एवं त्याग के द्वारा ही सिद्ध हुआ। आपने प्रारम्भिक युग में आर्य समाज के विरोधियों से भारी टक्करें लीं पग-पग पर विरोधियों को मुंह की खानी पड़ी है। आर्य समाज का अपना विशाल मन्दिर है जिसकी लागत ६,०००० रुपयों से कम नहीं है। इसी मन्दिर की पवित्र वेदी को सन् १९२७ ई० में मुसलमान कर्मचारियों ने जूते से भ्रष्ट किया था और इस घटना का सारे देश में घोर विरोध किया गया था।

शुद्धि, दलितोद्धार, समाज सुधार, अनाथ-रक्षा आदि कार्यों में यह समाज सदा अग्रसर रहा है। दलित वर्ग के बालकों की शिक्षा के लिए यहाँ ३२ कल्याणी पाठशालायें खोली गई थीं। अनाथ बालक-बालिकाओं की रक्षा के निमित्त अनाथालय खोला गया जिसका अपना विशाल भवन है। बालकों की शिक्षार्थ सरस्वती उच्च माध्यमिक विद्यालय स्थापित किया हुआ है। इस विद्यालय का भी अपना विशाल भवन प्रथक बना हुआ है।

बालिकाओं की शिक्षा हेतु स्त्री सुधार उच्च माध्यमिक विद्यालय दीर्घकाल से प्रशंसनीय कार्य कर रहा है। बाबू चन्द्रनारायण सक्सेना वकील अनेक वर्षों से इस समाज के प्रधान एवं संचालक अनाथालय रहे हैं।

आर्य समाज भूड़—इस समाज की स्थापना सन् १९०२ ई० में हुई। संस्थापकों में निम्न सज्जनों के नाम उल्लेखनीय हैं :—

श्री लाला मुकुट विहारी लाल, श्री श्याम बिहारी लाल, श्री बृज बिहारी लाल जी, श्री लालता प्रसाद जी, भोलानाथ जी, एवं श्री मुरारी लाल जी।

समाज के कुल सदस्य १२५ हैं। समाज का अपना सुन्दर विशाल भवन है। समाज द्वारा वार्षिकोत्सव एवं प्रचार कार्य नियमित रूप से किया जाता है। आर्य कुमार सभा भूड़ का इस प्रचार कार्य में पूरा-पूरा सहयोग रहता है।

समाज ने नवयुवकों के स्वास्थ्य निर्माण की दृष्टि से एक नवयुवक व्यायामशाला चला रखी है।

सन् १९४९ ई० में संस्कृत पाठशाला की स्थापना की गई थी जो निरन्तर संस्कृत विस्तार के क्षेत्र में कार्य कर रही है। आचार्य विश्वश्रवाः इसी पाठशाला के पुरातन छात्र हैं। सन् १९०२ ई० में एक पुत्री पाठशाला स्थापित की गई थी जो आर्य कन्या उच्चतर माध्यमिक पाठशाला के रूप में विकसित हो गई है तथा १३०० कन्यायें इसमें शिक्षा पा रही हैं। श्रीमती चन्द्रमुखी देवी इस पाठशाला की प्रधानाचार्या हैं।

स्त्री समाज भूड़—स्थापना तिथि ४ जून सन् १९०६ ई० है।

यह समाज मेलों में प्रचार कार्य में भाग लेता है। समाज प्रगतिशील है। वर्तमान प्रधाना श्रीमती चन्द्रमुखी जी तथा मन्त्राणी श्रीमती भाग्यवती जी हैं।

आर्य समाज आंवला—यह एक मुसलिम बाहुल्य क़स्बा है। यहाँ भारी विरोधों के बीच श्री नेतराम जी, श्री नन्हेंमल जी, महाशय बनवारी लाल जी, श्री हरसहाय जी व श्री अंगनलाल जी ने समाज स्थापित किया।

सन् १९१७ ई० में मुसलमानों द्वारा आर्य समाज का नगर कीर्तन रोका गया। विरोध स्वरूप उत्सव स्थगित किया गया। प्रान्तीय सरकार ने जिलाधीश को नगर कीर्तन निकलवाने को कहा और यहाँ धूम-धाम से नगर कीर्तन निकला।

सन् १९२४ ई० में यहाँ पंडित रामशरन जी की धर्मशाला में शुद्धि शिविर लगाया गया। राजा रणंजय सिंह आदि शिविर में पधारे। अनेक शुद्धियाँ भी की गईं और विशाल सहभोज भी किये गये। सन् १९२६ ई० में मुसलमानों ने फिर नगर कीर्तन रोका। जिलाधीश श्री ब्रट महोदय ने स्वयं आकर मुसलमानों को पीट कर हटाया तथा नगर कीर्तन निकलवाया। इसी वर्ष मुसलमानों से एक शास्त्रार्थ भी किया गया।

सन् १९३१ ई० में पुनः नगर कीर्तन रोका गया। नगर कीर्तन १ मील लम्बा था। पुलिस के भारी प्रबन्ध के बीच नगर कीर्तन निकला; चिढ़कर मुसलमानों ने सन् १९३६ में होली जुलूस पर हमला किया हिन्दू मुहल्ले-पक्के कटरे में आग लगाई जिसमें २ देवियां जल कर मर गईं। सन् १९३८ ई० में एक मुसलमान मजिस्ट्रेट ने शंख, घड़ियाल पर पाबन्दी लगा दी। आंवला में सत्याग्रह किया गया। ५२ व्यक्तियों ने भाग लिया तथा अनेकों को सजायें हुईं।

हैदराबाद सत्याग्रह में श्री दीनानाथ गुप्ता जेल गये। सन् १९४४ ई० में आर्य वीर दल एवं आर्य कुमार सभा की स्थापना की गई। उत्साह से कार्य

चलता रहा। सन् १९५० ई० से शिथिलता का चक्र आरम्भ हुआ जो अब तक घूम रहा है।

आर्य समाज ढकिया—यह एक पुराना आर्य समाज है। पर्याप्त प्रचार कार्य किया है। स्व० प्यारे लाल जी इस समाज के अग्रगण्य नेता थे। आप हैदराबाद सत्याग्रह में यहाँ के दो सज्जनों श्री बाबूराम व श्री ढांकन लाल जी को साथ लेकर गये। हिन्दी रक्षा सत्याग्रह में इस समाज ने श्री इन्द्रदेव जी के नेतृत्व में आठ सत्याग्रहियों का जत्था भेजा।

आर्य समाज फरीदपुर—समाज की स्थापना पंडित बिहारी लाल शास्त्री की प्रेरणा से लाला गोपी नाथ जी ने १३ अक्तूबर, सन् १९१४ ई० को की। समाज के विशेष कार्यकर्ता श्री राम भरोसे लाल, श्री रामदास जी, श्री श्यामलाल जी तथा श्री सुन्दर लाल जी रहे।

इसी वर्ष आर्य संस्कृत पाठशाला भी स्थापित की गई। पंडित बुद्धदेव विद्यालंकार का पौराणिक पंडित रामलोचन शास्त्री से शास्त्रार्थ हुआ। आर्य समाज के लिए भूमि खरीदी गई तथा सन् १९२५ ई० में आर्य समाज का मन्दिर तैयार हो गया। सन् १९३० ई० में आर्य कन्या पाठशाला के लिए मकान प्राप्त हुआ। आर्य वीर दल स्थापित किया गया। यहाँ के विशिष्ट कार्यकर्ताओं में—

श्री म० गोपाल राम जी स्वतंत्रता आन्दोलन में ३ बार ज़ेल गये, पं० रामप्रसाद जी उपाध्याय शास्त्री, साहित्यरत्न, एम० ए० स्नातक गुरुकुल सूर्यकुण्ड, बदायूं तथा देवेन्द्र कुमार आर्य (मंत्री जिला उप-सभा) कर्मठ कार्यकर्ता हैं।

आर्य समाज नवाबगंज—स्थापना तिथि २६ जनवरी सन् १९५४ ई० है।

कुछ वर्ष कार्य उत्साह से चला। सन् १९६० ई० में शिथिलता आई। आर्य वीर दल स्थापित हुआ। भवन अभी पूरा नहीं बना है। कई शुद्धियाँ तथा विधवा विवाह आदि किये गये हैं।

आर्य समाज फैज़ुल्लापुर—यह समाज पुराना है। स्वामी दर्शनानन्द जी ने स्थापित किया था। हैदराबाद सत्याग्रह में वैद्य जगन्नाथ प्रसाद जी तथा हिन्दी सत्याग्रह में श्री विश्वदेव जी पुत्र श्री बाबूराम जी ने जेल यात्रा की। समाज प्रगतिशील है।

जिला मुरादाबाद

इस जिले के नगर और कस्बे प्राय: सब मुसलिम बाहुल्य हैं, तदपि आर्य समाज का प्रचार विशेष रूप से यहाँ किया गया। अनेक विघ्न बाधाओं

का सामना करते हुए और ईंट पत्थर खाते हुए आर्य समाज के प्रचारकों ने जिले में डटकर प्रचार किया और ४० आर्य समाजें स्थापित कीं।

मुरादाबाद को यह सौभाग्य प्राप्त है कि आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने यहां अपनी प्रचार यात्राओं में चार बार पदार्पण किया और अपनी ओजस्वी वाणी द्वारा वैदिक ज्ञान की वर्षा की, तथा २० जुलाई सन् १८७९ ई० में स्वयं अपने कर कमलों से यहाँ आर्य समाज स्थापित किया।

जिले में प्रचार कार्य को व्यवस्थित करने के लिए एवं आर्य समाजों को संगठित रखने की दृष्टि से अनेक वर्षों से जिला उप-सभा भी स्थापित है।

इस जिले ने आर्य जगत् को कई रत्न प्रदान किये हैं जिन्होंने शुद्धि अछूतोद्धार, शास्त्रार्थ एवं प्रचार कार्य को दूर तक चमकाया है। यथा:— प० शिवशर्मा जी म० उ० सभा, २. पं० विहारीलाल जी शास्त्री का० तीर्थ ३. पं० शंकरदत्त शर्मा, ४. पं० प्रकाशवीर शास्त्री एम० पी०।

आर्य समाज, मंडी-बाँस मुरादाबाद:—जिले एवं नगर में यह ही प्रथम आर्य समाज है जिसकी स्थापना २० जुलाई, सन् १९७९ ई० में ऋषि ने अपने कर-कमलों से की थी। मुंशी इंद्रमणि जी इसके प्रथम प्रधान निर्वाचित किये गये थे। समाज का अपना सुन्दर मन्दिर है। सदस्य संख्या ३९ है।

प्रधान श्री धर्मवीर जी आयुर्वेदालंकार तथा मन्त्री श्री राजेन्द्र कुमार जी गुप्त हैं।

आर्य समाज, गंज (स्टेशन रोड) मुरादाबाद:—स्थापना सन् १९१६ ई० में की गई थी। आर्य सदस्यों की संख्या ५० है। समाज का अपना विशाल मन्दिर है जिसकी लागत लगभग २ लाख रुपया होगी। इसी के एक भाग में समाज का कन्या शिक्षणालय जिसका नाम आर्य कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय है, चल रहा है।

श्री राममोहन जी आर्य आदि प्रमुख कार्यकर्ता हैं। श्री राम मोहन जी प्रान्तीय आर्य कुमार परिषद के मंत्री भी रहे हैं।

महिला आर्य समाज, मुरादाबाद:—इस समाज की स्थापना सन् १९१७ में हुई। इस समाज के वार्षिक उत्सव सफलतापूर्वक सम्पन्न होते हैं। साप्ताहिक सत्संगों में देवियां पर्याप्त संख्या में आती हैं। खूब भजन व्याख्यान होते हैं।

ऋषि बोध उत्सव के समय प्रत्येक मुहल्ले में समाज की ओर से वैदिक प्रचार किया जाता है। इस समाज के अतिरिक्त यहाँ स्त्री समाज और भी हैं।

आर्य समाज, चन्दौसी, मुरादाबादः—इस समाज की स्थापना सितम्बर, १८८५ ई० में हुई।

समाज के संस्थापक बलिया निवासी श्री बाबू भगवान दास जी कड़प्पा थे जो चन्दौसी में रेलवे इंजीनियर थे। सन् १९३१ ई० में एक बहुत बड़ा शास्त्रार्थ हुआ। यह शास्त्रार्थ पं० देवेन्द्र नाथ शास्त्री और पं० अखिलानन्द जी के बीच संस्कृत भाषा में लेखबद्ध हुआ था, इस समाज के अन्तर्गत एक कन्या पाठशाला है जिसमें हाई स्कूल तक पढ़ाई होती है। १६ अध्यापिकायें तथा ६०० कन्यायें हैं। श्रीमती शान्ति गुप्त एम० ए० प्रधानाध्यापिका हैं। पाठशाला का पृथक ट्रस्ट है जिसके प्रधान हैं श्री बाबू श्यामबिहारी लाल जौहरी। यहाँ की स्त्री समाज भी अच्छा कार्य कर रही हैं। प्रधाना हैं श्रीमती लक्ष्मी देवी। समाज का निज का भवन है जिसका मूल्य लगभग १५ सहस्त्र हैं। एक बड़ा पुस्तकालय भी है। हैदराबाद सत्याग्रह में इस समाज की ओर से कई व्यक्ति निजाम हैदराबाद की जेल में गये। हिन्दी सत्याग्रह में पुष्कल धनराशि भेजी गई। यहाँ आर्य कुमार सभा भी है जो नवयुवकों में प्रचार कार्य करती रहती है। इसके प्रधान श्री वेद प्रकाश जी हैं।

वर्तमान प्रधान श्री सतीश चन्द्र अग्रवाल वकील तथा मन्त्री श्री ज्ञानचन्द्र शर्मा एम० ए० हैं। पं० प्रकाशवीर शास्त्री इसी समाज के सदस्य हैं।

आर्य समाज अमरोहा—स्थापना तिथि १९ अक्टूबर, १९०२ ई०।

समाज का अपना भव्य मन्दिर है जिस पर ५८००० रुपये लागत आई है। नगर की सब सांस्कृतिक, सामाजिक प्रगतियों का केन्द्र यह आर्य समाज है। कार्यकर्त्ता प्रायः सब उत्साही नवयुवक हैं। समाज की संरक्षकता में श्री मक्खन लाल व श्री रामस्वरूप आर्य धर्मार्थ औषधालय चलता है जिसके द्वारा जनता की विशेष सेवा की जाती है।

प्रचार कार्य में इस समाज का प्रयत्न सराहनीय है समाज में पुरोहित रहता है जो नगर में तथा ग्रामों में भी समय-समय पर प्रचार करने के लिये जाता है। नित्य सत्संग यज्ञादि की व्यवस्था रहती है। हिन्दी रक्षा आंदोलन आदि में समाज का पूर्ण सहयोग रहा है।

आर्य समाज बहजोई—स्थापना तिथि : १५ अक्टूबर, सन १९११ ई०।

आर्य समाज मन्दिर है और साथ ही लगा हुआ महिला आर्य समाज मन्दिर भी है। लागत लगभग ५०००० रु० है। समाज प्रगतिशील है। सन् १९४५ ई० में आर्य वीर दल का विशाल शिविर लगा था। सैकड़ों शुद्धियाँ की गई हैं। अन्तर्जातीय विवाह कराये गये। स्वर्ण जयन्ती गत वर्ष मनाई गई। हैदराबाद सत्याग्रह, हिन्दी आंदोलनों में तन, मन, धन का सहयोग दिया गया। श्रीमती गंगादेवी की प्रधानता में स्त्री समाज भी संचालित है।

आर्य समाज के उल्लेखनीय व्यक्ति स्व० द्वारिकाधीश, स्व० बनवारी लाल तथा स्व० बाबूराम जी हैं। वर्तमान प्रमुख कार्यकर्ताओं में श्री आनन्द प्रकाश जी आर्य हैं।

आर्य समाज सम्भल:—स्थापना सन् १८८५ ई० में की गई। संस्थापक :— साहू श्याम सुन्दरलाल श्री प्यारेलाल अग्रवाल ला० बिहारीलाल जी।

समाज का कार्य साधारण है। स्व० श्री पं० शिव शर्मा आर्य महोपदेशक इसी समाज के प्रमुख कर्मठ कार्यकर्ता एवं नेता थे समाज के अधीन व्रजरत्न सुन्दर आर्य कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय चल रहा है।

आर्य समाज हयात नगर सराय तरीन—स्थापना तिथि : २१-४-६३ ई० है।

समाज का अपना मन्दिर है। लागत २०००० रुपये है। समाज की स्थापना श्री सेठ नन्दराम जी ने की। आपके ही प्रशंसनीय धन से ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका का अंग्रेजी अनुवाद, जिसे प्रसिद्ध विद्वान् पंडित घासीराम जी एम० ए० ने किया था, सभा द्वारा प्रकाशित किया गया।

इस समाज के द्वितीय दानवीर साहू शिवचन्द्र जी जिनके दान से सभा द्वारा यजुर्वेद का सरल भाषानुवाद वैदिक संस्थान द्वारा तैयार करा कर प्रकाशित कराया गया। इस कस्बे में आर्य समाज का बीज शहीद पंडित लेखराम जी आर्य मुसाफिर ने अपने मार्मिक हृदयस्पर्शी भाषणों द्वारा बोया। सेठ नन्दराम जी जी एवं श्रीं सुखदेव जी के विचारों में आपके भाषण से एकदम क्रांति उत्पन्न हो गई। समाज की स्थापना हो गई। सेठ जी प्रधान एवं श्री सुखदेव जी ने मन्त्री का कार्य सँभाला।

सन् १९०२ ई० में यहाँ पंडित भीमसेन एवं वामनाचार्य से स्वामी दर्शनानन्द जी ने शास्त्रार्थ किया। शास्त्रार्थ का प्रभाव जनता पर अत्यधिक पड़ा। स्वामी दर्शनानन्द जी के अनुरोध पर सेठ नन्दराम जी और उनके कनिष्ठ पुत्र श्री साहू

जयराम जी ने समाज मन्दिर के तथा वैदिक पाठशाला संचालन के लिए भूमि और जमींदारी प्रदान की। उसी से मन्दिर का निर्माण हुआ।

२३ नवम्बर, सन् १९१४ ई० को रविवार साप्ताहिक अधिवेशन में यज्ञ करते हुए आर्यों पर मुसलमानों ने मन्दिर में घुसकर हमला किया। लाठियों और डंडों से प्रहार किया। अभियोग चला तथा १४ मुसलमानों को जेल की सजा हुई। मुकदमे का सारा व्यय लगभग २५०० रु० सेठ नन्दराम जी ने किया।

समाज का पुस्तकालय है। समय-समय पर समाज की ओर से ट्रेक्ट प्रकाशित होते रहते है। कुमार परिषद् की धार्मिक परीक्षाओं का केन्द्र भी खोला गया। आर्य वीर दल स्थापित किया गया। १९१९ ई० में आर्य कुमार सभा की स्थापना की गई। सन् १९३८ ई० में स्त्री समाज की भी स्थापना की गई।

हैदराबाद सत्याग्रह में १०१ रु० मासिक आर्थिक सहायता दी गई। हिन्दी रक्षा आंदोलन में आर्थिक सहयोग दिया गया। श्रीमती दुर्गावती जी पत्नी स्व० सेठ शिवचन्द्र जी स्त्री आर्य समाज की प्राण हैं। निष्ठावती देवी हैं।

सेठ देवेन्द्र आर्य स्व० सेठ शिवचन्द्र जी के होनहार पुत्र हैं। आर्य जगत् के उदीयमान नवयुवक हैं। आप सार्वदेशिक सभा के आजीवन सदस्य हैं। सभा के सहायक कोषाध्यक्ष एवं हीरक जयन्ती समिति के कोषाध्यक्ष हैं।

वर्तमान समाज-प्रधान श्री मित्रानन्द सिद्धानन्द शास्त्री हैं।

आर्य समाज, कांठ—स्थापना तिथि : १ जनवरी, १९१२ ई०।

संस्थापक : श्री मुंशी शिवराज सिंह जी तथा मुंशी छिद्दासिंहजी आदि थे।

इसी वर्ष समाज का प्रथम वार्षिकोत्सव बड़े समारोह के साथ किया गया। आगे भी प्रति वर्ष समारोह होते रहे। २० अगस्त, १९१९ ई० को संस्थापक महोदय ने मन्दिर के लिये अपनी भूमि दान दी। अप्रैल १९२२ ई० में मन्दिर का उद्घाटन महात्मा नारायण स्वामी जो द्वारा कराया गया। मन्दिर निर्माण में श्री तोताराम जी ने २००० रुपये की विशेष राशि प्रदान की।

सन् १९३२ ई० में ईसाई पादरी के पास हिन्दु युवकों को अँग्रेजी पढ़ने से रोकने की भावना से मन्दिर में एक अँग्रेजी का प्राइवेट स्कूल खोला गया। पादरी ने चिढ़कर श्री तोता राम गुप्त, पं० रामेश्वर त्रिवेदी शास्त्री, महाशय रामचन्द्र गुप्त, बाबू फकीर चन्द्र, साहु कुँवर सेन तथा साहू लस्मी चन्द्र के विरुद्ध अभियोग लगाया जो खारिज हो गया।

हरिजनों को ईसाई होने से रोका और गाँवों में उनके लिये प्रथक पक्के कुएँ

बनवाये। राम गंगा के तीर २००० रुपयों के लागत की एक अन्त्येष्टिशाला बनवाई। दोनों बड़े सत्याग्रहों में धन जन से सहयोग दिया। स्थानीय कालेज के छात्रों धर्म में शिक्षा प्रसार का प्रयत्न किया। सन् १९२४ ई० में आर्य कुमार सभा की स्थापना हुई। समाज के उपप्रधान भारतीय आर्य कुमार परिषद के भी उप-प्रधान रहे। आर्य सार्वजनिक पुस्तकालय एवं वाचनालय स्थापित किये हुए हैं।

आर्य समाज मसेवी—स्थापना तिथि २८-२-१९३४ ई०।

साहू मुन्नालाल के विशेष उद्योग से ६ मास में ४००० रुपये की लागत का मन्दिर तैयार हो गया। एक पाठशाला भी स्थापित की गई। साहू साहब की प्रधानता में अछूतोद्धार कार्य किया गया। साहू साहब के सुपुत्र श्री लक्ष्मीनारायण जी समाज के वर्तमान प्रधान हैं। श्री केशव शरण ने ३००० रुपये लगाकर यज्ञ-शाला बनवाई समाज का अपना पुस्तकालय भी है। श्री रामधन जी मंत्री हैं जिन्होंने पाठशाला के संचालन में भी विशेष योग दान किया है।

आर्य समाज ठाकुरद्वारा—समाज की स्थापना पं० बृहस्पति जी शास्त्री द्वारा हुई। समाज की प्रारम्भिक अवस्था में स्व० राम बल्लभ जी व श्री बालकृष्ण जी, पं० श्रीराम व लाला गंगासहायजी विशेष कार्यकर्ता रहे हैं। एक प्राथमिक पाठशाला स्थापित की गई। वर्तमान प्रधान लाला हरीराम जी तथा मंत्री श्री रामेश्वर शरणजी हैं।

आर्य समाज सदरपुर—स्थापना तिथि ३ जून, सन् १९२८ ई०।

मन्दिर निमित्त भूमि चौ० शेरसिंह जी ने दान की। मन्दिर का निर्माण कार्य चल रहा है। १०००० रु० लग चुका है। वार्षिकोत्सव होते हैं। समाज प्रगति-शील है।

चौ० शेरसिंह जी जो जिला उप-सभा के प्रधान रहे हैं, पंजाब हिन्दी सत्याग्रह में एक जत्था लेकर गये। चौ० साहब आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता हैं। प्रचार कार्य में सदा संलग्न रहते हैं।

आर्य समाज टांडा अफजल—लाला चन्दन लाल व डा० कुंज बिहारी जी ने मुरादाबाद में महर्षि के भाषणों से प्रभावित होकर सन् १८९० ई० के लगभग आर्य समाज की स्थापना की।

पं० भोजदत्त आर्य मुसाफिर का यहाँ मिर्जा अल्ला यार खाँ लाहौरी के साथ शास्त्रार्थ हुआ। शुद्धि आन्दोलन के समय यहाँ अनेकों शुद्धियाँ की गई। हरिजनों के लिए शिव मन्दिर खुलवाया गया। शुद्ध होने वालों तथा हरिजनों के घर

जाकर खानपान भी किया गया। बाल-विवाह निरोध में सक्रिय भाग लिया। कन्याओं की शिक्षा के लिये पाठशाला खोली गई। सन् १९५५ ई० में यहाँ जिला सम्मेलन एवं वृहद् यज्ञ किया गया। हिन्दी रक्षा आन्दोलन में जन धन से सहयोग दिया गया। आर्य मन्दिर का कुछ भाग बन गया है। जाति-पाँति तोड़कर मंडल में भी सक्रिय भाग लिया है।

आर्य समाज अगवानपुर—स्थापना तिथि १ अप्रैल, १९०९ ई०।

संस्थापक—महात्मा नारायण स्वामी जी।

स्व० रामस्वरूप जी एवं स्व० श्याम सिंह वर्मा पुराने कर्मठ कार्यकर्ताओं में से थे जिन्होंने समाज के उत्थान में विशेष कार्य किया। १०००० रुपये के आनुमानित मूल्य का अपना मन्दिर है। चौ० शेरसिंह जी इस समाज के प्रधान हैं। श्री रामेश्वर प्रसाद उत्साही लगन से कार्य करने वाले समाज के मंत्री हैं।

आर्य समाज कुडेसरा—लगभग सन् १९३८ ई० में स्थापित हुआ। हैदराबाद सत्याग्रह में यहाँ के पाँच सज्जनों ने भाग लिया।

आर्य समाज फतेहपुर-विश्नोई—स्थापना तिथि १९२७ ई०।

महात्मा लटूर सिंहजी के विशेष प्रचार तथा प्रभाव से स्थापना हुई। कांठ आर्य समाज का विशेष सहयोग रहा।

श्री कैलाश बिहारी जौहरी बदायूँ वालों ने नवयुवकों में अपनी त्यागवृत्ति से विशेष कार्य किया। प्रचार कार्य चलता रहता है। सन् १९४५ ई० में पं० गंगा प्रसाद उपाध्याय की अध्यक्षता में जिला सम्मेलन किया गया। स्वामी अभेदानन्द जी एवं ठा० अमरसिंह जी ने सम्मेलन के अवसर पर जनता पर अपने भाषणों से विशेष प्रभाव डाला।

समाज मन्दिर सन् १९४५ ई० में कुछ बन गया है। कन्या पाठशाला स्थापित की गई। वर्तमान प्रधान महाशय राम गोपाल जी तथा मंत्री डा० जगदीश शरण जी हैं।

आर्य समाज हरथला (रेलवे कालौनी)—पंजाब से आने वाले अनेक शरणार्थियों को इस कालोनी में बसाया गया। इनके पुरुषार्थ से सन् १९४८ ई० में आर्य समाज स्थापित हुआ। श्री हरि कृपाल जी प्रधान बनाये गये।

सन् १९६० ई० में दो सप्ताह तक स्वामी महेश्वरानन्दजी ने यहाँ रामायण की कथा कही तथा समाज मन्दिर की अपील की। समाज मन्दिर का कुछ भाग

बन चुका है। प्रचार कार्य बराबर चलता है। समाज प्रगतिशील है। सदस्य संख्या ५० है।

आर्य समाज सुरजन नगर—स्थापना तिथि ९ मई सन् १८९७ ई०।

१०००० रुपये की लागत का अपना मन्दिर है। श्री अमरसिंह जी समाज के मंत्री हैं कार्य लगन से करते हैं।

आर्य समाज कुन्दरानी—स्थापना तिथि २५ फरवरी सन् १९४० ई०।

हैदराबाद सत्याग्रह में भाग लिया। निकट के ग्रामों में प्रचार कार्य चलता है। मन्दिर के लिये भूमि मिल गई है। प्रधान श्री रामचन्द्र ठेकेदार तथा मन्त्री वेद कुमार जी हैं।

आर्य समाज हसनपुर—स्थापना महाशय प्यारेलाल जी मुख्तार के सतत उद्योग से सन् १९०५ ई० में हुई। पुराने कार्यकर्ताओं में श्री शिवनारायण जी, श्री रघुवीर शरण साहू तथा भूषण शरण आदि हैं।

श्री साहू जी ने कस्बे के बीच में अपनी भूमि मन्दिर निर्माण के निमित्त प्रदान की। मन्दिर बनना आरम्भ हो गया है। मन्दिर निर्माण समाज के प्रधान श्री रघुवीर शरणजी, महाशय रामशरण दास जी, साहू जी, श्री भगवत शरणजी, डा० मुरारी लाल (रामपुर) श्री कृष्ण कुमार जी, माता मूलवती देवी के दान प्रशंसनीय हैं। वार्षिकोत्सव होते हैं। साहू भूषण शरणजी ने अपने स्व० पुत्र रोहिताश्वकुमार की स्मृति में ५०० रुपये लगाकर एक मृतक कुण्ड बनवाया है। निकट के ग्रामों में प्रचार कार्य समय-समय पर किया जाता है।

वर्तमान प्रधान श्री शिवनारायण जी मुख्तार।

मंत्री डा० महेन्द्र कुमार जी।

आर्य स्त्री-समाज हसनपुर—स्थापना १९३९ ई० में की गई।

हसनपुर महिला जगत् में सांस्कृतिक, सामाजिक आदि क्रांतियों का श्रेय इस समाज को है। समाज की उल्लेखनीय कार्यकर्त्री देवियों में श्री द्रोपदी देवी, श्री प्रेमवती देवी, सुशीला रस्तौगी, हन्सवती देवी (प्रधाना), प्रेमवती आर्या (मन्त्रिणी) श्री मनभरी देवी, ओंकार देवी आदि हैं।

समाज प्रगतिशील है।

जिला रामपुर

रुहेलखंड कमिश्नरी का यह एक छोटा सा जिला है। भारत की स्वतंत्रता के उपरान्त रामपुर राज्य का विलय हो जाने पर इसको एक जिले का रूप

दे दिया गया है। इस जिले में १४ आर्य समाज हैं जो सभा से सम्बन्धित हैं। सन् १९४९ ई० में जिला उप-सभा की स्थापना भी की गई। निम्न समाजों के अपने पक्के भवन हैं :—

रामपुर, धमौरा, रहमत गंज, विलासपुर तथा मिलक।

इनमें साप्ताहिक सत्संग नियमित रूप से होते हैं।

जिले के प्रतिष्ठित व्यक्तियों में श्री पंडित माथुर शर्मा ग्राम हल्दुआ निवासी का नाम उल्लेखनीय है जिन्होंने पंजाब प्रान्त में विशेष रूप से कार्य किया तथा ब्रह्मा और अफ्रीका में भी प्रचार किया है तथा स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेकर कारागार की यात्रा की। हिन्दी सत्याग्रह में भी भाग लिया तथा जेल यात्रा की। अपनी भतीजी की जाति-बंधन तोड़कर शादी की।

श्री हरप्रसाद जी इस जिले के दूसरे उल्लेखनीय कार्यकर्ता हैं ज़िन्होंने सर्वदा जिले में समाजों की उन्नति करने का प्रयत्न किया है। आप ३ वर्ष से सभा के कोषाध्यक्ष हैं तथा आपने चारों वेदों से एक विशेष यज्ञ कराकर धमौरा की हिन्दु जनता की धार्मिक भावनाओं को जाग्रत किया है।

जिले के तीसरे उल्लेखनीय व्यक्ति श्री पंडित कन्हैया लाल जी 'मुमुक्षु' हैं जिन्होंने "ईश्वर प्राप्ति का साधन योगाभ्यास या मूर्ति पूजा" तथा "श्री कृष्ण की सच्ची कथा" एवं ईसाई पादरियों को खुला चैलेंज नामक ट्रैक्ट तथा पोस्टर प्रकाशित कर जिले में जाग्रति उत्पन्न की है।

चौथे प्रमुख व्यक्ति स्वामी सेवानन्द जी हैं जो हिन्दी सत्याग्रह में जिले से १५ सत्याग्रहियों का जत्था लेकर गये। सब सत्याग्रहियों ने कारागार की यातनायें सहन कीं। सत्याग्रहियों में श्री चोखेलाल, श्री हजारी लाल, श्री राममूर्ति, श्री बालकराम, श्री स्वामी योगानन्द तथा श्री राम लाल जी के नाम उल्लेखनीय हैं।

आर्य समाज रहमतगंज—समाज की स्थापना को ५८ वर्ष हो गये। इसके संस्थापक स्वामी चिद्‌घनानन्द जी रहे। आपका पूर्व नाम श्री चूरामल जी था। आप गड़रिया जाति के साधारण कृषक थे। मुरादाबाद में महर्षि के दर्शन एवं प्रवचन से प्रभावित होकर आप आर्य समाजी बने। सन्यास धारण कर आर्य समाज का आपने विशेष प्रचार किया।

समाज की स्थापना में श्री मणिराम जी का सराहनीय सहयोग रहा। सन् १९५३ ई० में यह समाज सभा से सम्बन्धित हो गया। सदस्य संख्या २२ है।

समाज के पास ५ बीघा पक्का बाग है जिसमें एक पक्का छोटा भवन भी है तथा एक यज्ञशाला निर्मित है।

इस मन्दिर के निर्माण में श्री होरीलाल हकीम ने विशेष सहयोग दिया।

आर्य समाज रामपुर—यह जिले का मुख्य समाज है। सुन्दर विशाल मन्दिर है। यज्ञ सत्संग आदि नियम से होते हैं। स्वा० अथर्वानन्द जी यहाँ के प्रतिष्ठित कार्यकर्ताओं में से हैं जिन्होंने अपनी सर्व सम्पत्ति आर्य मन्दिर निर्माण में लगा दी। स्वामी श्री वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर के भी मन्त्री रहे हैं।

जिला पीलीभीत

रुहेलखंड कमिश्नरी का यह भी एक प्रगतिशील जिला है। आर्य समाज का सर्वप्रथम बीजारोपण जिले के केन्द्र स्थान में ही किया गया।

इस जिले में सभा से सम्बन्धित आर्य समाजों की संख्या १८ है। इनके अतिरिक्त १४ समाज असम्बन्धित हैं। जिला उप-सभा सन् १९४४ ई० से कार्य कर रही है। उप-सभा की स्थापना पूज्य महात्मा नारायण स्वामी जी के कर कमलों द्वारा की गई।

उप-सभा के सर्वप्रथम प्रधान स्व० श्री जगदम्बा प्रसाद जी ऐडवोकेट एवं श्री लालता प्रसाद जी मन्त्री बनाये गये। वर्तमान प्रधान श्री रामबहादुर जी पूरनपुर एवं मन्त्री श्री सुरेन्द्र कुमार एम० ए० हैं। उप-सभा द्वारा प्रचार की दृष्टि से जिले के निम्न तीन स्थानों में बड़े सम्मेलन किये गये :—

१. पूरनपुर :—अध्यक्ष श्री महात्मा नारायण स्वामी जी।

२. वीसलपुर :— " " "

३. पीलीभीत :—अध्यक्ष श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी सरस्वती।

स्व० हेड मास्टर श्री नत्थूसिंह जी ने कार्यमुक्त होकर अपना सारा जीवन ग्रामों में कार्य करने में व्यतीत किया।

आर्य समाज पीलीभीत—स्थापना तिथि सन् १८८५ ई०।

समाज का अपना विशाल मन्दिर है जिसका आनुमानिक मूल्य ३०००० रु० है। नगर की सामाजिक प्रगतियों का यह समाज केन्द्र रहा है।

कन्याओं की शिक्षा की दृष्टि से एक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय चल रहा है।

आर्य समाज वीसलपुर—स्थापना तिथि सन् १९०२ ई०। समाज का अपना मन्दिर है। लागत ८००० रु० है। समाज-सुधार कार्य में सदा अग्रसर रहता है।

आर्य समाज पूरनपुर—इस समाज की स्थापना सन् १९०१ ई० में हुई। स्व० श्री लाला हुलासराय जी के उद्योग और दान द्वारा आर्य समाज मन्दिर का निर्माण हुआ। इस समय आर्य समाज के पास निज का मन्दिर, दूकान, मकान, पाठशाला भवन तथा धर्मशाला आदि हैं। यह सम्पत्ति २००००० रु० से अधिक की है। यहाँ की आर्य स्त्री समाज भी प्रशंसनीय प्रचार कर रही है। निज का भवन है। कन्याओं के लिये शिक्षा की भी व्यवस्था है। श्री नन्नूमल जी भगत ने इस समाज के स्थापना में बड़ा सहयोग दिया। स्व० नत्थूसिंह जी रिटायर्ड हेडमास्टर ने अवैतनिक रूप से प्रचार किया। आपके प्रचार कार्य का बहुत प्रभाव पड़ा। श्री राम बहादुर जी मुख्तार की सेवायें बहुत प्रशंसनीय हैं। आप उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा के अंतरंग सदस्य और शिक्षा विभाग के अधिष्ठाता हैं। आपके उद्योग से यहाँ एक इण्टर कालेज की स्थापना हुई है। स्व० हुलास राय जी की स्मृति में एक विद्यालय और स्व० श्री नत्थू सिंह जी की स्मृति में एक पुस्तकालय एवं वाचनालय आर्य समाज द्वारा चलाये जा रहे हैं। एक संस्कृत पाठशाला भी स्थापित की गई थी। जिस बाजार में आर्य समाज की दूकानें, मन्दिर और धर्मशाला है उसका नाम नारायण स्वामी बाजार रक्खा गया है। समाज की ओर से धर्मशाला भी स्थापित की गई है।

आर्य स्त्री समाज पूरनपुर—यह समाज १९५६ ई० से प्रचार कार्य कर रहा है। प्रति सोमवार को साप्ताहिक सत्संग होते हैं। हिन्दी रक्षा आन्दोलन में भी समाज ने आर्थिक सहायता की। वेद-प्रचार-सप्ताह उत्साहपूर्वक मनाया जाता है।

आर्य समाज जतीपुर—श्री पंडित इन्द्रदेव जी आर्य वेद-रत्न, विद्या-वाचस्पति के उद्योग से इस समाज की स्थापना २१ मार्च, सन् १९४७ ई० को हुई। समाज यथाशक्ति प्रचार कार्य कर रहा है। पं० इन्द्रदेव जी ने हैदराबाद सत्याग्रह में भाग लिया। सन् ४२ के स्वराज्य आन्दोलन में भी आपने भाग लिया। आप क्रान्तिकारी व्यक्ति थे जेल से कूदकर केरल पहुँचे और वहाँ आ० स० का प्रचार किया। हिन्दी आन्दोलन में आपने जिले में प्रशंसनीय कार्य किया।

आर्य समाज शेरपुर कलां—इस आर्य समाज ने गोवध रोकने में बहुत सफलता प्राप्त की। दलित भाइयों को विधर्मी होने से बचाया। उनकी अन्य प्रकार से भी सहायता की। श्री भगवानदीन जी वर्मा बड़े निर्भीक और उत्साही कार्यकर्ता हैं। आप प्रतिकूल परिस्थिति का बड़े साहस से मुकाबिला करते हैं।

आर्य समाज खांडेपुर—समाज दिसम्बर १९२६ ई० में स्थापित किया गया। स्थापनकर्ताओं में श्री लाला रघुवर दयाल जी, श्री केदार नाथ जी, लालता प्रसाद जी, श्री दुर्गाप्रसाद जी तथा श्री नत्थूलाल जी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

सन् १९४२ ई० के स्वतन्त्रता आन्दोलन में २० सदस्यों ने लम्बी-लम्बी जेल यातनायें सहन कीं। उनमें से श्री रैलाराम जी, श्री चन्दन लाल जी, श्री छोटे लाल जी, श्री जगदीश प्रसाद जी, श्री लहरी सिंह जी, श्री अयोध्या प्रसाद जी व श्री वद्रीप्रसाद जी का स्वर्गवास हो चुका है। अनेक शुद्धियाँ की गईं तथा अनेकों को विधर्मी होने से बचाया।

आर्य कुमार सभा पीलीभीत—स्थापना सन् १९५८ ई० में श्री डा० लक्ष्मी चन्द्र गुप्त की अध्यक्षता में हुई। गुप्त जी इसके प्रथम प्रधान एवं श्री आनन्द कुमार जी मन्त्री चुने गये। सदस्य संख्या १०० तक पहुंच गई।

सभा ने आर्य वीर दल की शाखा भी स्थापित की जिसके संयोजक भी गुप्त जी ही बने। वर्तमान प्रधान श्री अजय कुमार वर्नवाल एवं मन्त्री श्री वीरेन्द्र कुमार सूरी हैं।

श्री लक्ष्मी चन्द्र गुप्त प्रादेशिक आर्य कुमार परिषद् उत्तर प्रदेश के मन्त्री निर्वाचित हुये हैं।

आर्य समाज पंजीपुर—यह समाज कई वर्ष से स्थापित है। अभी तक सभा से सम्वन्धित नहीं हुआ। इस समाज ने हिन्दी रक्षा आन्दोलन में निम्न सत्याग्रही भेजे :—

१ श्री कुन्दन लाल जी २ श्री सुमेरसिह जी ३ श्री नन्नेलाल जी ४ श्री पंडित चेतराम जी ५ श्री नारायण लाल जी ६ श्री बुधसेन जी ७ श्री राम भरोसेलाल जी ८ श्री ख्यालीराम जी ९ श्री मेलाराम जी एवं १० श्री रामदेव जी।

जिला शाहजहाँपुर

रुहेलखंड कमिश्नरी के अन्तर्गत यह एक प्रसिद्ध जिला है। इस जिले में अपनी प्रचार यात्रा में ३ बार महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने पदार्पण किया है। शाहजहाँपुर नगर में महर्षि के अनेक व्याख्यान हुये हैं। महर्षि के व्याख्यानों से प्रभावित होकर अनेक सम्भ्रांत व्यक्ति आर्य समाजी बने। इस जिले के चांदापुर के प्रसिद्ध मेले में सन् १८७६ ई० में महर्षि के ईसाई पादरियों से अनेक शास्त्रार्थ हुये हैं। जिले के अनेक आर्य सामाजिक कार्यकर्ताओं ने देश के स्वाधीनता

संग्रामों में प्रशंसनीय कार्य किये हैं तथा कारागार आदि की यातनायें सहन की हैं। जिला में सर्वप्रथम आर्य समाज शाहजहाँपुर में ही स्थापित हुआ था। जिले में उपसभा भी अनेक वर्षों से स्थापित है। सभा से सम्बन्धित जिले में १९ आर्य समाज हैं।

आर्य समाज शाहजहाँपुर—इस नगर में महर्षि दयानन्द जी का शुभागमन कई बार हुआ। वहाँ के आर्य समाज का अंकुर यों तो सन् १८७७ ई० में ही जम गया था किन्तु १८९६ ई० से वह निरन्तर नियमानुसार कार्य कर रहा है। महाशय बख्तावर सिंह जी, हकीम प्रसादी लाल जी, महाशय शिवलाल वकील, दारोगा लक्ष्मी नारायण जी, महाशय जवाहर लाल जी, मास्टर देवी प्रसाद जी, महाशय इन्द्रजीत जी, महाशय लालमन अत्तार आदि आर्य कार्यकर्ताओं ने यहाँ आर्य सामाजिक परिस्थिति को सुदृढ़ बनाने में बड़ा काम किया। सन् १९०० ई० में आर्य समाज मन्दिर का निर्माण हुआ। सन् १९०४ ई० में उत्तर प्रदेशीय आर्य प्रतिनिधि सभा का वार्षिक वृहद् अधिवेशन यहीं पर हुआ। समाज मन्दिर में कुछ दानियों ने और भी भवन बनवाये। शाहजहाँपुर नगर में दो आर्य समाजें हैं। आर्य समाज अपना वार्षिकोत्सव तथा वैदिक धर्म प्रचार बड़े उत्साह से करता रहता है। आर्य समाज द्वारा सन् १९२४ ई० में श्री दयानन्द अनाथालय की स्थापना हुई। सन् १९२९ ई० में इस अनाथालय के लिये भवन भी निर्मित हो गया। बाबू महाराज शरण जी ने अपना एक मकान तथा २५०० रु० नकद उपर्युक्त अनाथालय के लिये दान दिये। वेद वाणी संस्कृत का ज्ञान बढ़ाने के उद्देश्य से एक वैदिक पाठशाला भी स्थापित की गई अछूत पाठशाला और आर्य विद्यार्थी आश्रम की स्थापना की गई। आर्य कन्या पाठशाला और आर्य महाविद्यालय ने भी अच्छा कार्य किया। तथा अब भी ये संस्थायें प्रशंसनीय सेवा कर रही हैं। आर्य महाविद्यालय में धर्म शिक्षा, गृहशास्त्र तथा सादगी पर विशेष बल दिया जाता है। आर्य महिला विद्यालय भवन लगभग ५०००० रु० की लागत का है। इसमें आजकल ७५० लड़कियाँ पढ़ती हैं। इसका परीक्षा परिणाम प्रति वर्ष बड़ा अच्छा रहता है। इस विद्यालय के लिये स्व० महाशय अनोखेलाल जी पेशकार की धर्मपत्नी श्रीमती गौरी देवी ने सन् १९४१ ई० में अपने पति की स्मृति में ४००० रु० का दान दिया था। यहाँ का आर्य स्त्री समाज भी अच्छा कार्य कर रहा है। इस समाज ने शुद्धि आन्दोलन में भी सक्रिय भाग लिया। अनेक शास्त्रार्थ कराये। स्वामी श्रद्धानन्द जी, लाला लाजपत राय

जी, महात्मा नारायण स्वामी जी आदि के भाषण भी समाज मन्दिर में हुये। इस समाज के ऐसे अनेक प्रतिष्ठित सदस्य रहे जिन्होंने आर्य कार्यकर्ता के रूप में आर्य समाज और वैदिक धर्म की प्रशंसनीय सेवायें कीं।

आर्य समाज तिलहर—इस समाज की स्थापना २९ फरवरी सन् १८९७ ई० में हुई। मुख्य संस्थापक श्री मुन्शी चिम्मन लाला जी आर्य थे। मुन्शी जी की लिखी नारायणी शिक्षा आदि अनेक पुस्तकें प्रसिद्ध हैं। इनके पिता मुन्शी इन्द्रजीत आर्य ने भी कई पुस्तकें लिखीं। इस समाज के सदस्यों ने लेखनी तथा वाणी द्वारा आर्य समाज का प्रशंसनीय प्रचार किया। कई सदस्यों ने हैदराबाद सत्याग्रह में भी भाग लिया। १ जनवरी, सन् १९४० ई० को गुरुकुल तिलहर की एक धर्मशाला में स्थापना हुई। अब यह गुरुकुल (पाठशाला) रुद्रपुर में चल रहा है। हिन्दी सत्याग्रह में भी यहाँ के कई व्यक्तियों ने भाग लिया। श्री चोखेलाल सत्य-पाल जी यहाँ के एक प्रमुख कार्यकर्ता हैं।

आर्य समाज जलालाबाद, शाहजहाँपुर—इस समाज की स्थापना सन् १८८४ ई० में स्व० स्वामी परमानन्द जी महाराज के कर कमलों द्वारा की गई।

समाज का अपना सुन्दर मन्दिर है। स्वामी परमानन्द जी द्वारा आर्य समाज को प्रदत्त दो दूकानों की आय से वेद प्रचार का काम किया जाता रहा है। समाज का कार्य उत्साहपूर्वक चल रहा है।

श्री लक्ष्मी चन्द्र आर्य इसके उत्साही मन्त्री हैं।

इस समाज के सर्वश्रेष्ठ प्रतिष्ठित व्यक्ति श्री स्वामी जी महाराज ही हैं। आपने सन्यास की दीक्षा पूज्य महात्मा नारायण स्वामी जी से ली थी। आपने अपने जीवन की उपार्जित सारी सम्पत्ति दान कर दी। २००० रु० गुरुकुल वृन्दा-वन को देकर एक छात्रनिधि स्थापित की। सभा भवन के निमित्त ५०० रु० गंगाप्रसाद उपाध्याय जी सभा प्रधान को भी भेंट किया।

आर्य समाज बहरिया—स्थापना तिथि २ नवम्बर सन् १९५६ ई०।

संस्थापक : श्री स्वामी नारदा नन्द जी सरस्वती।

२० फरवरी सन् १९६० ई० को सभा में प्रविष्ट हुआ।

संस्कारों को कराने की ओर विशेष ध्यान रहता है। समाज ने अपना मन्दिर बनवा कर तैयार कर लिया है। पुस्तकालय है। सदस्य संख्या ६० है।

समाज की एक अपनी भजन मंडली है। इसके मुख्य कार्यकर्ता समाज के

प्रतिष्ठित सदस्य श्री सूरदास जी हैं। जो सुन्दर गायक एवं कवि भी हैं। यह मंडली ग्रामों में जाकर समाज का प्रचार करती है।

समाज के दूसरे प्रतिष्ठित कार्यकर्ता श्री छोटे सिंह जी हैं जिन्होंने ग्राम के बाहर एक आर्य विरक्ताश्रम की स्थापना की है।

आर्य समाज छूत-छात निवारण के कार्यक्रम को सहभोजादि के रूप में करता रहता है।

समाज के तृतीय प्रतिष्ठत कार्यकर्ता श्री रामपाल सिंह जी "मित्र" विद्या वाचस्पति हैं जो निरन्तर आर्य समाज को उन्नत करने में प्रयत्नशील रहते हैं। जिला में भी आपका कार्य सराहनीय है। आप जिला उप-सभा के अध्यक्ष भी, अपनी कार्य-कुशलता एवं लगन के कारण निर्वाचित कर लिये गये हैं।

जिला बदायूं

मुग़ल काल में इस जिले के केन्द्र तथा कस्बों में यवनों का विशेष आतंक रहा है। यहाँ भी आर्य समाज को पग-पग पर संघर्ष करना पड़ा है।

सभा से सम्बन्धित आर्य समाजों की संख्या इस जिले में २४ है। अनेक वर्षों से जिला उपसभा भी स्थापित है।

आर्य समाज बदायूँ—स्थापना तिथि ३१ जुलाई, सन् १८७९ ई०। इसी वर्ष महर्षि स्वामी दयानन्द जी अपनी प्रचार यात्रा में मुरादाबाद से यहाँ पधारे थे। तथा १५ दिनों तक निरन्तर यहाँ पावनी वैदिक विचारधारा का प्रचार किया था। समाज के प्रारम्भिक उत्साही कार्यकर्ताओं में श्री दीवान सिंह जी, श्री देवी प्रसाद जी, श्री कन्हैया लाल, श्री बाल मुकन्द जी, श्री भगत दुर्गा प्रसाद जी, श्री रामलाल जी, श्री चुन्नीलाल आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

मुहल्ला सिद्धपुरा कूंचा पाण्डा में ३००० रुपये की लागत से समाज मन्दिर का निर्माण हुआ।

श्री बनवारी लाल जी, श्री माता प्रसाद जी व श्री राजबहादुर जी आदि ने समाज के प्रचार में विशेष उद्योग किया। सन् १९०३ में बदायूं के निकट गुरुकुल सूर्य कुंड की स्थापना स्वामी दर्शनानन्द द्वारा की गई। पं० धर्मपाल विद्यालंकार स० मु० अधिष्ठाता गु० कु० वि० वि० काँगड़ी इस समाज की एक विशेष विभूति हैं।

पार्वती आर्य कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय—इस विद्यालय की स्थापना

सन् १९०६ ई० में मुन्शी सकटूमल जी ने अपनी धर्मपत्नी श्रीमती पार्वती देवी के नाम पर की थी। अब यह उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के रूप में विकसित हो गया है। छात्राओं की संख्या ५८१ है। धार्मिक शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाता है। विद्यालय की लगभग १ लाख रुपयों की चल तथा अचल सम्पत्ति है जिसे संस्थापक महोदय ने इस पुण्य कार्य हेतु दान किया।

दयानन्द सेवाश्रम—श्री जयनारायण जी पोस्ट मास्टर कार्य मुक्त होकर आर्य समाज में प्रविष्ट हुए और अपना सर्व धन जो ५० हजार रुपया था, आर्य समाज को समर्पित कर दिया। इस धन से दानी महोदय की स्व० पत्नी की स्मृति में दयानन्द-सेवा-आश्रम के नाम से एक भवन बनाया गया जिसमें अब समाज लगता है।

श्री जयनारायण जी ने बदायूँ में एक नरमेध शाला, सिद्धपुर में एक धर्म-शाला तथा कानपुर, बरेली आर्य शिक्षणालयों में कमरे भी बनवाये हैं। आप हैदराबाद सत्याग्रह में जत्था लेकर भी गये। आपने भावलपुर में भी एक कन्या पाठशाला स्थापित की थी। आप वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर के मन्त्री भी रहे और सन् १९४५ ई० में परलोक सिधारे।

बदायूं आर्य समाज का एक बड़ा पुस्तकालय है जिसमें कई सहस्त्र अच्छे-अच्छे ग्रंथों का संग्रह है।

आर्य समाज बिलसी—स्थापना तिथि सन् १९१९ ई०।

समाज का मन्दिर है। महाशय तुलसी राम आर्य ने मन्दिर के निर्माण में विशेष उद्योग किया। श्री बन्नेलाल जी द्वारा अनेक शुद्धियाँ की गईं। हैदराबाद सत्याग्रह में धन एवं सत्याग्रही भेजे।

श्री रूपकिशोर जी आर्य यहां के उत्साही कर्मठ कार्यकर्ता हैं। प्रायः सभी बड़े आन्दोलनों में आपने भाग लिया।

वर्तमान प्रधान श्री सेठ ज्ञान चन्द्र जी हैं तथा मन्त्री श्री शिवराज सिंह जी हैं।

बिलसी में एक उच्चतर माध्यमिक आर्य कन्या विद्यालय भी स्थापित है। जिसकी स्थापना लाला कड्डी मल एवं श्रीमती केवल देवी द्वारा हुई। प्रेरणा देने वालों में स्व० कलावती जी का नाम उल्लेखनीय है। संस्थापक महो-दयों ने अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति (बारह दूकानें) इस निमित्त दान की तथा स्व० लाला नेतरामजी ने अपना भवन इस विद्यालय के लिये अर्पित किया।

आर्य समाज, उझानी—यह लगभग ६० वर्ष पुराना समाज है। सन् १९०० ई० में भूमि की रजिस्ट्री पं० सीताराम जी ने सभा के नाम की। साप्ताहिक सत्संग पंडित जी के स्थान पर ही होते रहे। सन् १९१४ ई० में श्री मेवारामजी के उद्योग से मन्दिर का निर्माण कार्य आरम्भ हुआ। मन्दिर निर्माण में सर्वप्रथम सेठ मूलचन्द्र जी ने ११०० रुपये प्रदान किये। बाबू राजकुमार जी ने यज्ञशाला बनवाई और ५००० रु० श्री राजा पुरुषोत्तम जी भदवार बैरिस्टर ने प्रदान किये। इस समाज के उत्थान में पं बिहारीलाल जी शास्त्री काव्यतीर्थ, पं० छेदा लाल जी, श्री मिश्रीलाल वंसल तथा श्री मक्खनलाल जी का सहयोग सराहनीय रहा।

समाज ने एक डी० ए० वी० स्कूल भी उझानी में स्थापित किया है। समाज के वर्तमान मन्त्री श्री बनवारी लाल जी हैं।

आर्य समाज, गवां—स्थापना तिथि १ अक्टूबर, सन् १९५० ई०। संस्थापक स्व० श्री आत्माराम सिंह जी (बोरना), स्व० श्रवण सिंह जी तथा श्री रघुनन्दन सहाय जी हैं।

सभा से सम्बन्ध १३ मार्च सन् १९२८ ई० को हुआ।

श्री महाशय रघुनन्दन सहाय जी कर्मठ तपस्वी विद्वान् व्यक्ति थे। आपने जीवन के अन्त समय तक आर्य समाज की प्रशंसनीय सेवा की। समाज के वार्षिकोत्सव बड़े समारोह के साथ किये गये। महाशय जी के सुपुत्र श्री सच्चिदानन्द जी भी बड़े उत्साही कार्यकर्ता हैं और आप ही समाज के वर्तमान प्रधान हैं। मन्दिर निर्माण का कार्य आरम्भ हो गया है। वर्तमान मन्त्री श्री रामकुमार जी तथा प्रचार मंत्री श्री ओम् प्रकाश जी शर्मा, बी० आई० एम० एस० हैं।

हिन्दी रक्षा आन्दोलन में समाज ने आर्थिक सहयोग दिया है।

आर्य समाज नवादा मधुकर—स्थापना सन् १९२४ ई० में की गई। समाज की स्थापना से पूर्व इस ग्राम में होली पर वेश्या का नृत्य एवं सामूहिक मदिरापान का आयोजन होता था। समाज के प्रचार से यह कुप्रथा नष्ट हो गई।

समाज के वीर कर्मठ कार्यकर्ता श्री ठा० उमराव सिंह जी हैं जिन्होंने अब तक लगभग १००० शुद्धियाँ की हैं। ईसाई प्रचार निरोध में भी आपका कार्य सराहनीय रहा है। ईसाइयों को हिन्दू धर्म में वापिस लाने के लिए आपका निरंतर प्रयत्न चलता रहता है।

आर्य समाज मुंढिया धुरेकी—स्थापना तिथि : सन् १९०४ ई०। संस्थापक

लाला ताराचन्द्र जी हैं। संस्थापक के प्रयत्न से १२००० रुपये की लागत का भव्य आर्य मन्दिर बन गया है। लाला बुधसेन व लाला हीरालाल जी तथा श्री प्रभूदयाल जी भी यहां के कर्मठ कार्यकर्ता रहे हैं। श्री मिश्रीलाल जी ने समाज को प्रबल दान देकर इसकी वृद्धि में सहायता की है।

वर्तमान प्रधान :— श्री चुन्नीलाल जी।

वर्तमान मन्त्री :—श्री अजेन्द्र पाल जी।

वर्तमान कोषाध्यक्ष :— श्री हरिशंकर जी हैं।

आर्य समाज, दातागंज—समाज की स्थापना अब से लभग ६० वर्ष पूर्व हुई थी। वार्षिकोत्सव होते रहे हैं। शुद्धियाँ कराई गईं।

हिन्दी संस्कृत पाठशाला भी स्थापित की थी। स्वामी स्वरूपानन्द जी इसके प्रभावशाली कर्मठ कार्यकर्ता हैं। प्रचार कार्य में सदा संलग्न रहते हैं।

इसके मन्त्री श्री लेखराम जी गुप्त भी पुराने कार्यकर्ता हैं।

आर्य समाज, ककराला—यह एक ऐतिहासिक स्थान है। सन् १८५७ ई० में यहाँ के निवासियों के साथ अंग्रेजी फौज का खुला सामना हुआ था। यह एक मुस्लिम बाहुल्य कस्बा है। सन् १९५८ ई० में यहाँ आर्य समाज की स्थापना हुई। सन् १९६२ ई० में सभा से सम्बन्ध हुआ। समाज का मन्दिर बनना प्रारंभ हो गया है।

वर्तमान प्रधान : श्री पुत्तूलाल जी।

वर्तमान मन्त्री : श्री गंगाराम जी।

आर्य समाज, अल्लापुर—३० वर्ष पूर्व समाज संस्थापित हुआ था। शिथिलता के उपरान्त सन् १९५६ ई० पुनः जाग्रत हुआ है। श्री रामभरोसे लाल ने अपनी धर्मशाला समाज को दान कर दी है। पं कालीचरण शर्मा समय-समय पर यहाँ पधारते रहते हैं। यह ग्राम ईसाइयों का केन्द्र रहा है। समाज से उनकी कई बार टक्कर हुई।

वार्षिकोत्सव होते हैं। सभा से सम्बन्ध अभी नहीं हुआ है; मन्त्री श्री रामचन्द्र जी गुप्त हैं।

आर्य समाज, आर्यनगर (इस्लामनगर)—यह समाज सन् १८९६ ई० में संस्थापित हुआ समाज मन्दिर निज का है जिसकी लागत तीस हजार रुपया है। तीन दुकानें किराये पर उठी हुई हैं। आर्य समाज के आधीन एक आर्य कन्या विद्यालय तथा जूनियर हाई स्कूल हैं। दोनों विद्यालयों की भूमि श्रीमती गंगादेबी

जी तथा श्रीमती केतकी कुँवारी ने दान दी। समाज में एक अच्छा पुस्तकालय भी हैं। सन् १९५८ ई० में इस समाज ने अपना स्वर्णजयन्ती महोत्सव बड़े समारोह से मनाया था। इस आर्य समाज ने शिक्षा-विस्तार और वैदिक-धर्म-प्रचार में प्रशंसनीय कार्य किया। स्वतन्त्रता संग्राम में समाज के सदस्यों ने सोत्साह भाग लिया। हैदराबाद आन्दोलन में भी भाग लिया। श्री पं० कृष्णस्वरूप जी विद्यालंकार इस समाज के बड़े विद्वान् संचालक तथा सहायक हैं। आप गीता के बड़े मर्मज्ञ हैं व सुलेखक हैं। आपने कई ग्रंथ लिखे हैं। स्त्री चिकित्सालय तथा ए० एम० हायर सेकेन्डरी स्कूल की स्थापना आपही के प्रशंसनीय पुरुषार्थ द्वारा हुई। विद्यालंकार जी वानप्रस्थी हैं। आपके अतिरिक्त महाशय भजनानन्द जी तथा महाशय राम नारायण जी नामक दो वानप्रस्थी; इस समाज ने आर्य जगत् को दिये हैं।

जिला बिजनौर

उत्तर प्रदेश के उन इने गिने जिलों में से एक है जिसके गांव-गांव में वैदिक धर्म का पावन नाद निनादित हुआ है। महर्षि दयानन्द सरस्वती का पदार्पण तो इस जिले में नहीं हुआ है किन्तु उनके शिष्य स्वामी सहजानन्द जी महाराज ने जिले में पधार कर वैदिक ज्ञान गंगा प्रवाहित की और राजा जयकृष्ण दास जी के० सी० आई०, श्री कुंवर भारत सिंह जी ज्वाइंट मजिस्ट्रेट (प्रथम प्रधान आर्य समाज बिजनौर) की सहायता सें बिजनौर, मोहम्मदपुर देवमल, नगीना, नहटौर आदि स्थानों में विशेष रूप से धर्म प्रचार किया और आर्य समाजों की स्थापना कराई। ३१ मार्च सन् १९१९ ई० को आर्य समाज बिजनौर के वार्षिकोत्सव पर विधिवत् आर्योप प्रतिनिधि सभा जिला बिजनौर का निर्माण किया गया और उपसभा के प्रथम प्रधान श्री जगन्नाथ शरण जी वकील निर्वाचित हुये। प्रारम्भ में बिजनौर और गढ़वाल आर्य समाजों की संयुक्त उपसभा आर्योप प्रतिनिधि सभा जिला बिजनौर गढ़वाल के नाम से रही। गढ़वाल के शिल्पकारों को वैदिक धर्म में दीक्षित कर उन्हें आर्य लिखाने का आन्दोलन इसी उपसभा के अन्तर्गत किया गया।

उपसभा के अन्तर्गत दलितोद्धार का कार्य श्रद्धेय ला० ठाकुर दास जी, श्री चौधरी शिवराम सिंह जी, श्री मा० गुमानी सिंह के नेतृत्व में सफलतापूर्वक चलाया

गया। इस उपसभा के अन्तर्गत कई सौ मुकदमें इस आशय के लड़े गये कि चमारों को कुंऐ पर घड़े रखकर पानी भरने का अधिकार है। यह मुकदमा राज्य में सर्व प्रथम लड़ा गया था जो हाई कोर्ट के फैसले के साथ नजीर बना और दलितों के इस अधिकार को स्वीकार किया गया। सभी मुकदमे सभा के तात्कालीन प्रधान श्री बाबू जगन्नाथ शरण जी वकील ने निःशुल्क लड़े थे।

उपसभा की उन्नति में श्री जगन्नाथ शरण जी वकील, श्री ला० ठाकुर दास जी, श्री पं० भवानी प्रसाद जी, श्री मा० गुमानी सिंह जी, श्री ला० बनारसी लाल जी आर्य श्री चौधरी रघुराज सिंह जी, श्री सेठ ध्यान सिंह आर्य, श्री मगन सिंह वकील, श्री शिवराज सिंह जी, श्री चौ० बलवीर सिंह जी, श्री पं० कान्तीचन्द्र जी प्रभाकर, श्री ईश्वर दयालु आर्य सरीखे महानुभावों का विशेष हाथ रहा है। श्री पं० प्रेम शंकर जी, श्री पं० बासुदेव जी, श्री बिहारी लालजी शास्त्री काव्यतीर्थ, श्री पं० रामचन्द्र जी आर्य मुसाफिर, श्री छज्जू सिंह जी रागी, श्री स्वामी ऋतानन्द जी इत्यादि महानुभावों ने ग्राम-ग्राम में न केवल वैदिक धर्म का प्रचार एवं आर्य समाजों की स्थापना ही की अपितु ईसाई पादरियों के कुचक्र से सहस्त्रों चमारों और मेहतरों को भी निकाला। पादरी ज्वाला सिंह जी से पं० बिहारी लाल जी शास्त्री काव्यतीर्थ के शास्त्रार्थ हुये। पंडित जी ने डट कर मुकाबला किया और ईसाई मिशन की इस जिले में बुनियादें हिला दी। जिले में लगभग ८० आर्य समाजें हैं। अनेक वर्षों से जिला उपसभा का नेतृत्व श्री ईश्वर दयालु जी कर रहे हैं। उपसभा का कार्य प्रगति पथ का अनुसरण कर रहा है।

आर्य समाज बिजनौर—आर्य समाज बिजनौर सन् १८८३ ई० में स्वामी सहजानन्द के धर्मोपदेशों के फलस्वरूप स्थापित हुआ।

श्री कुंवर भारत सिंह जी ज्वाइंट मजिस्ट्रेट बिजनौर इसके प्रथम प्रधान तथा श्री बाबू जीराज सिंह जी वकील अध्यक्ष व सम्पादक साप्ताहिक तोहफे हिन्द इसके प्रथम मन्त्री हैं। प्रारम्भ में आर्य समाज मन्दिर न होने के कारण आर्य समाज के अधिवेशन विभिन्न निज स्थानों पर किये जाते रहे। सन् १८९६ ई० में श्री सेठ शिवराज सिंह जी, श्री मुंशी भगवानदास जी चौधरी चुन्नी सिंह जी, महत्मा मुंशी राम जी आदि, महानुभावों के उद्योग से आर्य समाज के लिये भूमि क्रय की गयी। आदि में महात्मा मुंशीराम जी पं० लेखराम जी आर्य मुसाफिर, श्री मुंशी भगवानदास जी तथा सेठ शिवराज सिंह जी रईस मोहम्मदपुर देवमल

आर्य समाज मन्दिर बिजनौर के ट्रस्टी बनाये गये थे अर्थात् इन्ही के नाम से भूमि क्रय की गई थी।

१५ अप्रैल, १९१८ को आर्य समाज बिजनौर के भवन की रजिस्ट्री श्रद्धेय महात्मा मुंशीराम जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के नाम में कर दी।

आर्य समाज के कार्यकर्ताओं में श्री चौधरी शेर सिंह जी, श्री सेठ शिवराज सिंह जी, मुंशी भगवानदास जी, श्री सेठ भूप सिंह जी, श्री लाला गौरी शंकर जी, राजा ज्वाला प्रसाद जी, श्री जगन्नाथ शरण जी वकील, श्री पं० जयनारायण जी, श्री हरलाल सिंह जी, श्री बाबू जियालाल जी, श्री चौधरी रघुराज सिंह जी के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। आर्य समाज ने शुद्धि, दलितोद्धार, वैदिक धर्म प्रचार एवं विधर्मियों से शास्त्रार्थ का विशेष कार्य किया। सन् १९०९ में संस्कृत पाठशाला की स्थापना की। सम्प्रति एक प्राइमरी पाठशाला जिसमें लगभग ४०० बालक शिक्षा पाते हैं तथा एक कन्याओं का जूनियर हाई स्कूल जिसमें लगभग ८० छात्रायें विद्याध्ययन कर रही हैं आर्य समाज द्वारा चलाये जा रहे हैं।

लगभग ४० हजार रुपये की लागत से एक सुन्दर "वेद भवन" आर्य समाज में बनाया गया है। इस भवन का उद्घाटन श्री पं० अलगूराय जी शास्त्री मन्त्री वन विभाग तथा शिलान्यास स्वामी ध्रुवानन्द जी प्रधान सार्वदेशिक सभा द्वारा किया गया। आर्य समाज के वर्तमान कार्य कर्ताओं में सेठ ध्यान सिंह आर्य, श्री रामस्वरूप हितैषी, पं० लक्ष्मी नारायण उपाध्याय, श्री ईश्वर दयालु आर्य, ठा० केवल सिंह जी, मुंशी लखपत राय जी, श्री द्वारिका प्रसाद रि० ओवरसीयर, श्री मगन सिंह वकील, इत्यादि महानुभावों के नाम उल्लेखनीय हैं।

स्त्री समाज भी स्थापित है। श्री भगवान देवी जी इसकी मुख्य कार्यकर्त्री हैं।

आर्य समाज हल्दौर—अपने कार्यों की दृष्टि से इस समाज का जिले में विशेष गौरवपूर्ण स्थान है। हल्दौर में आर्य समाज का सन्देश सर्व प्रथम चौ० बख्शीराम (भिलाई) ने पहुंचाया। उनके विचारों से प्रेरित हो लाला ठाकुर दास जी एवं भवानी प्रसाद जी उनके सहयोगी बने और ९-९-१९१० ई० को यहां आर्य समाज की स्थापना की।

हिन्दी भाषा के प्रचार में हल्दौर आर्य समाज ने प्रशंसनीय कार्य किया। भिलाई ग्राम में देवनागरी पाठशाला की स्थापना की। यह पाठशाला यहां के जीवन का स्तम्भ एवं स्वराज्य आन्दोलन की जिले में सूत्रधार बनी। सरकारी कागजात में हिन्दी को स्थान दिलाने में यहां के कार्यकर्ताओं ने विशेष परिश्रम

किया। यहां की अनेक देवियों ने शास्त्री तथा हिन्दी साहित्य सरस्वती आदि उच्च परीक्षायें उत्तीर्ण कीं यथा—१. श्रीमती कृपादेवी जी, माननीय पत्नी चन्द्रभाल पू० अध्यक्ष विधान सभा उत्तर प्रदेश, श्री सुशीला देवी पत्नी प्रो० सत्यकेतु विद्यालंकार, अम्बादेवी जी पत्नी श्री प्रभुदास गाँधी।

अछूतोद्धार के क्षेत्र में भी हल्दौर समाज का कार्य प्रशंसनीय एवं आदर्श रहा है। बूआपुर के धर्म दीक्षा यज्ञ के विराट् सहभोज का आयोजन यहाँ के कर्मठ नेता लाला ठाकुर दास ने किया।

ठाकुर दास जी, म० शिवराज सिंह, म० गणेश सिंह तथा मा० टीकाराम जी ने ईसाई पादरियों, मौलवियों तथा सिख ग्रंथियों से अनेक शास्त्रार्थ किये और हिन्दुओं को इनके जाल से बचाया। अनेक हिन्दू स्त्रियों को मुस्लिम गुन्डों के घरों से निकाला।

हैदराबाद सत्याग्रह में यहां के अनेकों कर्मठ कार्यकर्ताओं ने सक्रिय भाग लिया तथा १०० रु० मासिक सत्याग्रह को समाज देता रहा।

स्वाधीनता आन्दोलन में यहां के आर्यों ने जिले भर का नेतृत्व किया है। यहां के प्रायः सब श्री प्रमुख कार्यकर्ताओं ने बृटिश की जेलों की शोभा बढ़ाई है।

हिन्दी रक्षा आन्दोलन में समाज ने धन व जन से सहायता की। यहां के कार्यकर्ताओं में श्री ला० ठाकुरदास जी, पं० भवानीप्रसाद जी, वैद्य गोपीनाथ जी, पं० टीकाराम जी, म० गणेश सिंह जी, म० शिवराज सिंह, ला० प्यारेलाल जी, श्री श्यामसुन्दर लाल जी, ला० हीरालाल जी, श्री डालचन्द आर्य, श्री अम्बादेवी, मा० हरिहर सिंह जी, म० कन्हैया सिंह जी, म० यादराम जी व श्री फूल सिंह जी के नाम उल्लेखनीय हैं।

आर्य समाज सैन्द्वार—सन् १९०२ ई० में मा० रंगाराम सिंह लाहौरी ने यहां आर्य समाज का बीज बोया। म० नत्था सिंह जी पहले व्यक्ति हैं जो यहां आर्य समाजी बने तब ही से आप को आर्य समाज का सन्देश घर-घर पहुंचाने की धुन लगी। आपने अब सन्यास धारण कर अपना नाम स्वामी संकल्पानन्द रखा है। आपने रैदास चमारों में बहुत कार्य किया। अनेक ट्रैक्ट भी लिखे हैं। ८० वर्ष की आयु में भी प्रचार कार्य में संलग्न हैं। प्रारम्भ में यहां एक वैदिक पाठशाला स्थापित की गई जिसमें निकट के ग्रामों की भी कन्यायें पढ़ने आने लगीं। १९२० ई० में समाज सभा में प्रविष्ट हुआ। समाज का लगभग २ सहस्त्र की लागत का अपना मन्दिर है। एक छोटा सा पुस्तकालय भी है।

वर्तमान प्रधान—श्री रामस्वरूप जी। मन्त्री—श्री धीरज सिंह जी।

आर्य समाज चांदपुर—स्थापना सन् १८९१ ई०।

चान्दपुर में ईसाइयों का जोर रहा है। उनका यह एक प्रमुख केन्द्र माना जाता था। शास्त्रार्थ महारथी पं० विहारी लाल शास्त्री काव्यतीर्थ, पं० रामचन्द्र आर्य मुसाफिर ने ईसाइयों से भारी टक्कर ली और इनके प्रचार से ईसाई अपना केन्द्र छोड़कर खिसक गये।

सम्पादकाचार्य पं० पद्म सिंह शर्मा, स्वामी केवलानन्द जी अध्यक्ष निगमागम आश्रम दारा-नगर-गंज, ला० ठाकुर दास जी हल्दौर आदि ने भी यहां समय-समय पर आकर वैदिक धर्म का, पावन सन्देश सुनाया। समाज के प्रारम्भिक २० वर्ष जाति बहिष्करण कष्ट सहन में बीते। प्रारम्भिक कार्यकर्ताओं में श्री ज्वाला सिंह, ला० दुर्गादास, लाला गौरीलाल आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। सन् १९१६ में समाज का मन्दिर लगभग १९००० रु० की लागत का बनकर खड़ा हो गया। मन्दिर निर्माण में सर्वाधिक श्रेय श्री ला० बैजनाथ जी महेश्वरी को था। मा० मक्खनलाल जी, जो मध्यभारत की अनेक रियासतों के दीवान रह चुके हैं, यहां के विशेष प्रतिष्ठित आर्य सभासद थे।

आर्य स्त्री समाज, आर्य कुमार सभा एवं आर्य वीर दल भी स्थापित हैं। वर्तमान मन्त्री श्री अमीरचन्द गुप्त हैं।

आर्य समाज नजीबाबाद—समाज की स्थापना सन् १८९४ ई० में की गयी।

संस्थापक मुन्शी लक्ष्मी नारायण जी एवं पंडित बालमुकुन्द जी। ईसाई मुसलमानों को शुद्ध करने में यह समाज विशेष प्रयत्नशील रहा है। सन् १९०० ई० में आर्य कन्या पाठशाला की आधार शिला रखी गई। रानी फूल कुवांरी यहां की प्रथम छात्रा हैं। प्रारम्भ में जनता स्त्री शिक्षा की विरोधिनी थी। पाठशाला में शिक्षा का कोई शुल्क नहीं रखा गया तथा पुस्तकें भी समाज ही देता रहा। अब इस पाठशाला ने वृद्धि करते-करते उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय का रूप धारण कर लिया है। इसमें ७०० कन्याएं शिक्षा पाती हैं।

यहाँ स्त्री समाज भी स्थापित है तथा आर्य कुमार सभा भी अनेक वर्ष से कार्य कर रही है। इस समाज के प्रमुख कार्यकर्ताओं में श्री शिवचरण जी आर्य, श्री बनारसीलाल जी आर्य, श्री धर्मेन्द्र नाथ एवं श्री लक्ष्मण प्रसाद जी हैं।

श्री शिवचरण जी आर्य कुमार संगठन आन्दोलन के मुख्य कार्यकर्ता हैं। हिन्दी रक्षा आन्दोलन में आप २२ सत्याग्रहियों का जत्था लेकर चण्डीगढ़ गये थे। आप

प्रान्तीय आर्य वीर दल के अधिष्ठाता भी रहे हैं। आजकल विशेष लगन से कार्य करने वालों में श्री चानन शाह का नाम भी उल्लेखनीय हैं।

वर्तमान मन्त्री श्री चन्द्र प्रकाश आर्य हैं।

आर्य समाज भोजपुर खेड़ी—स्थापना ग्राम बरमपुर में अषाढ़ कृष्ण २ सं० १९७२ वि० को की गई। सन् १९२३ ई० में सभा में प्रविष्ट हुआ। उत्सव प्रति वर्ष होता है। शुद्धि, अछूतोद्धार में अग्रसर होने के कारण जाति वहिष्कार का डट कर सामना करना पड़ा। स्वतन्त्रता संग्राम में इस आर्य समाज ने तन, मन, धन से पूर्ण सहयोग दिया। अनेक कार्यकर्ताओं ने जेल यात्रा की। हिन्दी रक्षा आन्दोलनादि में सहयोग दिया। शरणार्थियों के बसाने में भी कार्य किया। सन् ४४ में वैदिक कन्या पाठशाला स्थापित की तथा १९५० ई० में आर्य जूनियर हाई स्कूल की स्थापना की। हिन्दी रक्षा आन्दोलन में यहां से तीन सत्याग्रही भेजे गये। आर्य वीर दल तथा आर्य कुमार सभा भी यहां स्थापित हैं। भोजपुर खेड़ी में ५००० रु० की लागत से आर्य मन्दिर बनवाया गया जिसकी आधार शिला श्री स्वामी ध्रुवानन्द जी ने अपने कर कमलों से रखी। वर्तमान मन्त्री श्री कुन्दन सिंह जी हैं।

आर्य समाज गोहावर—स्थापना सन् १९०४ ई० से पूर्व हुए। सन् १९०४ में पौराणिकों से यहां स्वामी दर्शनान्द जी ने शास्त्रार्थ किया। समाज का अपना मन्दिर है। मन्दिर में कन्याओं का एक शिक्षणालय चल रहा है। ५५ छात्राएं हैं। प्रमुख कार्यकर्ता श्री हरगुलाल सिंह प्रधान, श्री लाल सिंह मन्त्री, श्रीमती मुनिया देवी ज्ञानवती देवी आदि भी अनेक महिलाएं इस समाज की सदस्या हैं।

आर्य समाज शिवहारा—८ सितम्बर १८९२ ई० में शिवहारे में आर्य समाज स्थापित किया गया। समाज का अपना भवन है जिसकी लागत अनुमानतः १००००) है। समाज का अपना पुस्तकालय है। ईसाई मुसलमानों से कई शास्त्रार्थ हुए हैं। शुद्धि कार्य किया गया है। कुमार सभा स्थापित है। १९४७ ई० से वैदिक पाठशाला चालू है। नित्य सत्संग होता है।

हैदराबाद सत्याग्रह में दो सज्जन तथा हिन्दी सत्याग्रह में चार सज्जनों ने भाग लिया और कारागार गये। सन् १९४७ ई० में समाज की हीरक जयन्ती मनाई गई। सम्मेलन में अनेक मतावलम्बियों से शास्त्रार्थ किये गये।

वर्तमान प्रधान श्री हरस्वरूप रस्तौगी। समाज जागरुक हैं।

आर्य समाज जटपुरा—स्थापना तिथि ३१-८-१९२९ ई०। समाज का अपना

मन्दिर है और एक धर्मशाला भी है। लागत दोनों की १०००० रु० है । आर्य समाज ने स्वतन्त्रता आन्दोलन में पूर्णतया भाग लिया। सन् १९३२ के आन्दोलन में १२ तथा १९४२ के आन्दोलन में ३ सदस्यों ने कारागार की यात्रा की।

वर्तमान प्रधान श्री हरिदेव सिंह मन्त्री श्री रोशनलाल सिंह।

आर्य समाज हीमपुर दीपा—१२ मुसलमानों को शुद्ध किया। पं० देवदत्त जी बरेली इसी ग्राम के निवासी मुसलमान थे। अछूतोद्धार का भी विशेष कार्य किया गया। सन् १९२४ ई० से जूनियर हाई स्कूल चला रखा है। यह समाज अभी सभा से सम्बन्धित नहीं है।

आर्य समाज नगीना—इस समाज की स्थापना सन् १९०४ ई० के पूर्व हुई। भवन निर्माण १९०९ में हुआ। सन् १९०४ में मुसलमानों से एक ऐतिहासिक शास्त्रार्थ हुआ। आर्य समाज की ओर से शास्त्रार्थ का संचालन पं० भगवान दीन जी मिश्र तत्कालीन प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश ने किया। शास्त्रार्थ महारथियों में स्वामी दर्शनानन्द जी, श्री योगेन्द्रपाल जी, पं० मुरारीलाल जी शर्मा, राज्य रत्न पं० आत्माराम जी अमृतसरी आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। मुसलमानों की ओर से मौलाना सनाउल्ला खां साहब थे। इस शास्त्रार्थ का प्रभाव सारे देश पर पड़ा। आर्य समाज की सफलता को सबने सराहा। पं० हरिशंकर दीक्षित और श्री नन्दराम जी इस आर्य समाज के प्रधान संचालक थे। दीक्षित जी प्रसिद्ध वैद्य और ग्रन्थकार भी थे। यहां पर्वों पर आर्य समाज की ओर से प्रचार होता है। वार्षिकोत्सव और साप्ताहिक अधिवेशन नियमित रूप से होते हैं। समाज भवन निज का है। इसके निर्माण में पं० हरिशंकर जी दीक्षित प्रधान तथा राय साहब साहू विश्वेश्वर नाथ जी आनरेरी मजिस्ट्रेट ने प्रशंसनीय योगदान किया। एक दूकान श्री हरिकिशन दास जी ने तथा एक मकान स्वर्गीय लाल सिंह जी ने समाज को दान दिया। आर्य समाज मन्दिर का एक पुस्तकालय भी है। इससे जनता लाभ उठाती है।

आर्य समाज धामपुर—जिले के प्रमुख समाजों में इसकी गणना है इसकी स्थापना ११-१०-१९०० ई० में हुई थी। समाज का अपना भव्य मन्दिर है। जिसकी आनुमानिक लागत ३०००० रु० है।

प्रारम्भिक शिक्षा की दृष्टि से एक वैदिक पाठशाला स्थापित की हुई है। जिसमें १०० के लगभग छात्र शिक्षा पाते हैं।

यह समाज शुद्धि, दलितोद्धार के कार्यों में अग्रसर रहा है। यहां के पौराणिकों

से अनेक शास्त्रार्थ आर्य समाज के द्वारा हुए हैं। प्रमुख कार्यकर्ता स्व० . ला० रूपचन्द जी, ला० माधव शरण जी, ला० रामशरण दास जी आदि हैं।

आर्य समाज नहटौर—सन् १८८३ ई० में की गई थी। समाज का अपना विशाल मन्दिर है जिसका इस समय आनुमानिक मूल्य ३०००० रु० से न्यून न होगा। सामाजिक सुधारादि कार्यों में सदा अग्रसर रहा है। यहाँ एक आरम्भिक वैदिक पाठशाला तथा एक आर्य कन्या वैदिक विद्यालय संचालित हैं जिनमें लगभग ४०० छात्र व छात्राएँ शिक्षा पाती हैं।

प्रमुख कार्यकर्ता स्व० चौ० अनपसिंह जी, चौ० चुन्नी सिंह जी, चौ० बलवन्त सिंह जी आदि हैं।

आर्य समाज पुरैनी—श्री मुंशी दौलत सिंह जी के उद्योग से इस समाज की स्थापना सन् १९१२ ई० में हुई। श्री चौधरी हरदयाल सिंह जी रईस ने आर्य समाज मंदिर के लिये भूमि तथा आर्थिक सहायता प्रदान की थी। श्री मा० गुमानी सिंह जी और श्री छज्जू सिंह जी रागी घूम-घूम कर जिले में आर्य समाज का प्रचार करते रहे। उन दिनों कई शुद्धियाँ भी की गईं। मलकाना शुद्धि आंदोलन के समय भी इस समाज के सदस्यों ने क्रियात्मक भाग लिया। अछूतोद्धार में भी यह समाज सदैव प्रयत्नशील रहा है। अनाथ रक्षा आदि कार्यों में भी हर तरह सहायता दी है।

नोट—जिले के नांगल ग्राम के एक विशिष्ट कार्यकर्ता श्री मुंशी हेतराम जी 'हितकर' थे। आपका सन् १९४८ ई० में स्वर्गवास हो गया। आपने जिले में विशेष प्रचार किया। हीमपुर में आर्य समाज स्थापित किया। आपने अनेक शुद्धियाँ कराई, दलित वर्ग में विशेष कार्य किया।

जिला लखनऊ

गोमती के तट पर बसा हुआ लखनऊ एक सुन्दर नगर है। उद्यानों की बहुतायत के कारण इसको उद्यानों का नगर नाम से पुकारा जाता है। लखनऊ उत्तर प्रदेश के मध्य में स्थित है। अँग्रेजों के समय से यह प्रान्त की राजधानी है। इससे पूर्व अवध के नवाबों का भी लखनऊ ही केन्द्र था। आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश का भी यह सन् १९२९ ई० से केन्द्र स्थान है। आर्य जगत् का मुख्य पत्र आर्यमित्र भी सन् १९४० ई० से यहाँ से ही प्रकाशित हो रहा है।

महान् क्रान्तिकारी युग पुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपनी प्रचार

यात्राओं में लखनऊ को चार बार कृत-कृत्य किया है और वैदिक स्थान की पवित्र गंगा यहाँ प्रवाहित की है। चौथी बार ५ मई सन १८८० ई० को महर्षि जब यहाँ पधारे तो नाका हिन्डोले के पास राणा शंकर बक्स की बाटिका में आपने अपना डेरा जमाया तथा नवाब अमीनुद्दौला के इमामबाड़े के चौतरे पर आपने व्याख्यान माला प्रारम्भ कर दी तथा ९ मई सन् १८८० ई० को अपने कर कमलों से उस चौतरे पर ही आर्य समाज की स्थापना की।

हर्ष का विषय है इस समाज के प्रथम सभासद मौलवी मोहम्मद हुसैन साहब बने। समाज के प्रथम प्रधान श्री इन्द्र नारायण मसालदान जी तथा प्रथम मंत्री श्री पं० राम दुलारे बाजपेयी बनाए गये।

लखनऊ नगर में आर्य समाजों की संख्या शनैः शनैः बढ़कर अब १९ हो गई है तथा जिले में ६ आर्य समाज इनके अतिरिक्त और स्थापित हैं।

जिला उपसभा अनेक वर्षों से यहाँ कार्य कर रही है। जिला सभा के वर्तमान प्रधान श्री तेज नारायण ऐडवोकेट तथा मंत्री श्री नाथूराम आर्य हैं।

आर्य समाज गणेशगंज—जिले का यह ही प्रथम एवं प्रमुख आर्य समाज है। इस ही की स्थापना ऋषिवर ने निज कर कमलों से की थी। आरम्भ में समाज के अधिवेशन सत्य-प्रकाश पाठशाला में होते रहे जिसे आर्य सज्जनों ने समाज स्थापना के तुरन्त उपरान्त वैदिक सिद्धान्तों का सदस्यों को बोध कराने के लिये स्थापित की थी। अनेक वर्ष प्रयत्न करते रहने के उपरान्त १२ जनवरी १८९६ ई० को वर्तमान स्थान में श्री पं० रामदुलारे बाजपेयी एवं श्री बा० सरजू दयाल जी के कर कमलों से मन्दिर का शिलान्यास किया जा सका। शनैः शनैः एक विशाल आर्य मन्दिर का निर्माण हो गया जिसका आनुमानिक मूल्य ४०००० रु० से ऊपर ही होगा।

समाज के पुराने प्रमुख कार्यकर्ताओं में श्री पं० रामदत्त शुक्ल, श्री पं० रास बिहारी तिवारी, श्री पं० रामचन्द्र शर्मा, श्री पं० देवदत्त बाजपेयी, श्री पं० भृगुदत्त तिवारी, ठा० कामता सिंह, श्री बाँकेलाल निगम के नाम उल्लेखनीय हैं।

आर्य समाज के आधीन निम्न संस्थाएँ कार्य कर रही हैं—

१. डी० ए० वी० डिग्री कालेज—सन् १९१८ ई० में डी० ए० वी० स्कूल के रूप में स्थापित हुआ जो बढ़ते-बढ़ते अब उपाधि कक्षाओं की शिक्षा प्रदान करने लगा है और जिसने प्रान्त की सर्वोच्च शिक्षा संस्थाओं में अपना स्थान बना लिया है। कालेज का संचालन आ० स० गणेशगंज द्वारा नियुक्त उप-सभा द्वारा

होता है। कालेज में इस समय २४०० छात्र शिक्षा पा रहे हैं। ७८ प्राध्यापक कार्य कर रहे हैं तथा कालेज का बड़ा पुस्तकालय है जिसमें १५००० के लगभग ग्रंथों का संग्रह विद्यमान है। कालेज के प्रधानाचार्य श्री देवकी नन्दन एम० ए० हैं। प्रधान श्री अम्बिका प्रसाद वाजपेयी एवं मन्त्री श्री चन्द्रदत्त तिवारी हैं।

२. विद्या मन्दिर—माध्यमिक विद्यालय है जिसमें ३५० से ऊपर छात्र शिक्षा पाते हैं। ८ जूलाई १९४९ को स्व० पं० भृगुदत्त तिवारी जी ने इसकी स्थापना की। धार्मिक शिक्षा पर विशेष बल रहता है।

बालिका विद्यालय—यह विद्यालय भी सन् १९४९ ई० में स्व० श्री भृगुदत्त जी तिवारी द्वारा महिला आश्रम मोती नगर के प्राङ्गण में स्थापित किया गया। विद्यालय अब उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के रूप में कार्य कर रहा है। ७०० छात्राएँ शिक्षा ग्रहण कर रही हैं। ६०००० रू० की लागत का नूतन भवन निर्मित किया गया है। विद्यालय में धर्म शिक्षा की समुचित व्यवस्था की गई है। इसके निर्माण कराने वालों में श्री बाँकेलाल जी, माता शर्मदा देवी ध० प० स्व० पं० रास बिहारी तिवारी एवं तलवार ब्रादर्स के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं, प्रधानाचार्या कुमारी सन्तोष एम० ए० हैं जो इसमें आरम्भ काल से अनवरत दक्षतापूर्वक कार्य कर रही हैं।

प्रधान—श्री अम्बिका प्रसाद बाजपेयी एवं मंत्री श्री चन्द्रदत्त तिवारी हैं।

४. आर्य समाज टेलरिंग स्कूल—स्व० पं० रास बिहारी तिवारी जी द्वारा अगस्त १९२६ ई० में स्थापित किया गया। इसमें सिलाई, कढ़ाई, सल्मे का काम व चित्र कला आदि की शिक्षा प्रदान कर छात्रों को स्वावलम्बी बनाया जाता हैं परिगणित जाति के बालकों की शिक्षा की इसमें सुन्दर व्यवस्था है। समाज की उप-समिति इसका संचालन करती है। लगभग १०० छात्र शिक्षा पाते हैं। अध्यक्ष श्री तेज नारायण ऐडवोकेट तथा मन्त्री श्री चन्द्रदत्त तिवारी हैं।

५. आर्य समाज औषधालय—औषधालय गणेशगंज मन्दिर के एक भाग में दीर्घकाल से जनता की निःशुल्क सेवा कर रहा है। समाज के आधीन आर्य कुमार सभा, आर्य सेवा समिति, आर्य छात्रावास, आर्य व्यायामशाला, आर्य वीर दल स्थापित हैं जो अपना-अपना कार्य सुन्दरता के साथ कर रहे हैं। यह समाज जन-सेवा, दलितोद्धार, नारी रक्षा आदि कार्यों में सदा आगे रहा है। नगर के शैक्षणिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक जीवन के विकास में इस समाज का अपना गौरवपूर्ण स्थान

है। समाज के वर्तमान प्रधाद श्री तेज नारायण ऐडवोकेट तथा श्री गंगा प्रसाद वाजपेयी जी मंत्री हैं।

महिला आर्य समाज गणेशगंज—स्थापना सन् १९४९ ई० ।

प्रधाना : श्री सुशीला देवी आर्य, मंत्रिणी श्री कमलेश कुमारी जी हैं। साप्ताहिक अधिवेशन, पर्व आदि नियमित रूप से किये जाते हैं। महिला जगत् में जाग्रति उत्पन्न करने में यह समाज प्रशंसनीय कार्य कर रहा है।

आर्य समाज सिविल लाइन्स नरही—स्थापवा ७-९-१९१८ ई०। संस्थापक श्री देवी प्रसाद जौहरी, प्रारम्भिक काल के उल्लेखनीय व्यक्तियों में श्री बाबू गणेश प्रसाद जी, पं० डालचन्द्र शर्मा, पं० रमाशंकर बाजपेई, पं० ज्ञानेन्द्रनाथ अग्निहोत्री, आदि हैं। स्व० पं० गणेश प्रसाद जी ने समाज की स्थापना से लेकर ३०-१०-१९५७ ई० अपनी निधन तिथि तक अवाधगति से विभिन्न पदों पर रहते हुए सेवा की है।

२०-१०-१९२३ ई० को कन्याओं की शिक्षा के हेतु श्री विश्वम्भर नाथ श्रीवास्तव द्वारा आर्य कन्या पाठशाला की स्थापना की गई जो विकसित होकर अब सरस्वती विद्यालय कन्या इन्टर कालेज के रूप में विद्यमान है। ५५० कन्याएं शिक्षा पा रही हैं। समाज द्वारा नियुक्त उपसभा इसका संचालन करती है। इसकी वर्तमान प्रधानाचार्या डा० कुमारी प्रसिन्नी सहगल हैं। इस विद्यालय के विकास में डा० सरयूप्रसाद जी अग्रवाल आदि की सेवाएं स्मरणीय हैं। समाज के प्रधान श्री पं० शिवनारायण शर्मा तथा मंत्री श्री जितेन्द्र प्रताप जी हैं।

आर्य कुमार सभा—सन् १९२८-२९ ई० में इसकी स्थापना की गई। कार्य प्रशंसनीय है। इस कुमार सभा के प्रयत्न से लखनऊ आर्य कुमार परिषद् की स्थापना की गई। कुमार सभा ने अपना एक बैन्ड भी बनाया था।

आर्य महिला-समाज नरही—इसकी स्थापना १९४३ ई० को की गई। प्रथम प्रधाना श्रीमती जियालाल जी एवं मंत्रिणी श्री सुशीला देवी जी थीं। कुछ वर्षों के उपरान्त यह आर्य समाज में ही लीन हो गया।

आर्य समाज बादशाह नगर—स्थापना सन् १९२५ ई०। संस्थापक श्री पुत्तूलाल जी आर्य। इस क्षेत्र में ईसाई मिशनरियों का पर्याप्त प्रचार रहा है। परिगणित जातियों को हिन्दू धर्म से पतित करने की दिशा में मिशन प्रयत्नशील था म० रसिक लाल जी, श्री पुत्तूलाल जी, श्री अलोपी सिंह जी, श्री महावीर प्रसाद जी आदि ने मिशन के इस अराष्ट्रीय कार्य का कड़ा प्रतिरोध किया।

सन् १९२४ ई० में कुछ भूमि नजूल पर लेकर आर्य कन्या पाठशाला की स्थापना की गई। इसके संचालन में श्रीमती शान्ति सक्सेना का उद्योग प्रशंसनीय है। श्री रामेश्वर सहाय सक्सेना की देख-रेख में कुमार परिषद् की धार्मिक परीक्षाओं का केन्द्र यहाँ स्थापित किया गया। अछूतोद्धार एवं मद्य निषेध कार्यों में भी समाज ने विशेष भाग लिया। समाज के वर्तमान प्रधान श्री नन्दकिशोर दुबे, उप-प्रधान श्री कृष्णनारायण टन्डन, मंत्री श्रीश ान्ति सक्सेना एवं कोषाध्यक्ष श्री पुत्तूलाल जी हैं।

आर्य समाज नगर सिटी—डेवढ़ी आगामीर, रकाबगंज में ३-३-१८९४ ई० को इसकी स्थापना की गई। स्व० श्री बनारसी दास (स्वामी निर्भयानन्द) एवं श्री रघुनन्दन प्रसाद जी (मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश सन् १९२३ ई०) इसके उल्लेखनीय आरम्भिक काल के कार्यकर्ता थे। श्री बनारसी दास जी ने श्रीमद् दयानन्द अनाथालय के अधिष्ठाता के रूप में भी विशेष कार्य किया।

इस समाज ने स्व० पं० धर्म्म भिक्षु जैसे अरबी, फारसी के विद्वान् शास्त्रार्थ-महारथी को आर्य जगत् को प्रदान किया है। श्री पं० विष्णुस्वरूप जी भिक्षुक जी के एक योग्य शिष्य हैं जो अरबी फारसी के भी विद्वान् हैं और मौलवियों के साथ शास्त्रार्थ करते रहते हैं।

समाज का गंगा प्रसाद रोड पर एक सुन्दर भवन बन गया है। भवन की लागत ३०००० रु० के लगभग होगी।

समाज के उल्लेखनीय व्यक्तियों में श्री अनन्त विहारी निगम ऐडवोकेट एवं श्री शिवशंकर सहाय जी के नाम हैं। समाज ने शुद्धि के क्षेत्र में तथा आततायियों के चक्र से हिन्दू स्त्रियों व बालकों को निकालने में प्रशंसनीय कार्य किया है। श्री नाथूराम जी उत्साही कर्मठ कार्यकर्ता इसी समाज के मान्य सदस्य हैं।

समाज के प्रधान श्री मित्रानन्द जी (सुपुत्र स्व० रघुनन्दन प्रसाद जी) तथा मंत्री श्री मुनेन्द्र कुमार जी (सुपुत्र स्व० शिवशंकर सहाय जी) हैं। स्वतंत्रता संग्राम में प्रशंसनीय कार्य करने वालों में समाज के कार्यकर्ता श्री शिवशंकर सहाय जी एवं श्री मित्रानन्द जी रहे हैं। आपने कारागार में विशेष यातनायें सहन कीं। हैदराबाद सत्याग्रह में तथा हिन्दी रक्षा आन्दोलन में श्री विष्णु स्वरूप जी का कार्य विशेष उल्लेखनीय है।

आर्य समाज सदर (कैन्टून्मेन्ट)—आर्य समाज सदर (कैन्टून्मेन्ट) की स्थापना तिथि १४-१२-१९३३ ई० है। संस्थापक श्री चेतराम जी, श्री शीतल प्रसाद वर्मा,

ला० रघुवर दयालु जी, ठा० प्रयाग सिंह जी व श्री मुरलीधर जी। वैशाख शुदी १४ सं० २०१४ विक्रम को समाज मन्दिर का शिलान्यास स्वामी त्यागानन्द जी के कर कमलों द्वारा किया गया तथा उद्घाटन राजा रणञ्जय सिंह जी द्वारा सम्पन्न हुआ। मन्दिर की लागत ३०००० रु० है। मन्दिर निर्माण में श्री अर्जुन देव जी तथा स्व० लाला हीरालाल जी का सहयोग उल्लेखनीय है।

गोमती पिपराघाट पर एक अन्त्येष्टि यज्ञशाला बनवाई। हैदराबाद सत्याग्रह में दो सदस्यों ने सक्रिय भाग लिया। हिन्दी रक्षा आन्दोलन में भी धन से सहायता की। लगभग १२५ शुद्धियाँ की गईं। मेलों तथा हरिजन बस्तियों में प्रचार किया जाता है।

वर्तमान प्रधान श्री केदारनाथ कक्कड़, मन्त्री श्री सच्चिदानन्द जी ऐडवोकेट।

आर्य समाज माल—स्थापना तिथि १९-४-१९५९ ई०। प्रचार व सत्संग होते हैं। अपना मन्दिर है। आनुमानिक मूल्य ९००० रु० है। प्रधान श्री सुरेन्द्र बक्स सिंह, मंत्री श्री लल्लू सिंह जी।

आर्य समाज आर्यनगर लखनऊ—इस समाज की स्थापना सन् १९३६ ई० में हुई। इस समाज के वार्षिकोत्सव बड़ी सफलता से सम्पन्न हुए। अनेक शुद्धियाँ कीं। हैदराबाद के सत्याग्रह में धन-जन द्वारा पर्याप्त सहायता प्रदान की। श्री भगवान चन्द्र गुप्त, श्री वाल्मीकि शर्मा, श्री लम्भूराम जी ऐडवोकेट, श्री बैजनाथ शर्मा आदि आर्य कार्य-कर्ताओं के सहयोग से समाज को बड़ा बल मिला।

आर्य समाज हसनगंज (लखनऊ)—इस समाज की स्थापना १० जनवरी सन् १९१५ ई० को हुई। इसी वर्ष आर्य समाज मन्दिर की आधार-शिला का आरोपण हुआ। पं० गोकरन नाथ मिश्र जज चीफ कोर्ट, श्री उमराव बहादुर अग्रवाल श्री बनारसी लाल आर्य, श्री नारायण प्रसाद वैद्य, श्री विशेश्वर नाथ चीफ जज आदि की विशेष सहायता से समाज मन्दिर निर्मित हुआ और समाज की भी अच्छी उन्नति हुई। यह समाज धर्म, राष्ट्र और समाज सेवा में संलग्न रहा है। सन् १९६० की बाढ़ में समाज मन्दिर की भयंकर क्षत हुई थी। डा० प्रकाशचन्द्र जी, श्रीमती तारामती अहूजा, श्रीमती फूलकुमारी शुक्ला और श्री नारायण दीन चौधरी के विशेष उद्योग द्वारा समाज और समाज मन्दिर का जीर्णोद्धार हो गया। सन् १९६१ ई० में श्रीमती फूलकुमारी द्वारा आर्य-साहित्य-परिषद् की स्थापना की गई जो निरन्तर उन्नति पथ पर अग्रसर है। इस समाज के सबसे अधिक

वयोवृद्ध सदस्य आर्य कार्यकर्ता श्री वैजनाथ जी शुक्ल हैं। आप चालीस वर्ष से इस समाज की सेवा में लगे हुये हैं।

आर्य समाज चन्द्र नगर—स्थापना जनवरी १९५३ ई० में की गई। समाज का अपना विशाल मन्दिर लगभग २०००० रुपये की लागत का बनकर तैयार हो गया है।

समाज के प्रथम प्रधान श्री बाबू रामजीदास जी तथा मन्त्री श्री लाला गोविन्द राम जी रहे। वर्तमान प्रधान श्री विश्वेश्वर नाथ वर्मा एवं मन्त्री श्री काशीराम जी हैं। समाज मन्दिर आदि निर्माण में विशेष उल्लेखनीय कार्य करने वाले श्री कैप्टिन श्रीराम मलहोत्रा, श्री धर्मदेव महता, श्री वरमानी जी, श्री चरणदास जी तथा श्री इन्द्र भानु जी हैं।

आर्य स्त्री समाज चन्द्र नगर—स्थापना जनवरी १९५३ ई०।

महिला जगत् में विशेष कार्य कर रहा है। वर्तमान प्रधाना :—श्रीमती जगरानी वर्मा जी तथा मन्त्रिणी :—श्रीमती लीलावती वरमानी जी हैं।

आर्य समाज शृंगार नगर—स्थापना सन् १९५२ ई० में की गई।

समाज का अपना लगभग ३५००० रु० की लागत का भव्य मन्दिर बनकर तैयार हो गया है। संस्थापकों में श्री मेहता रघुवीर चन्द जी का तथा विशिष्ट कार्यकर्ताओं में श्री कृष्ण बलदेव जी, श्री अर्जुन देव जी, श्री चावला जी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। मन्दिर के लिये ला० केशवराय जी के सुपुत्र श्री मदनलाल जी, श्री रामगोपाल जी व श्री जयगोपाल जी के नाम उल्लेखनीय हैं तथा श्री चरण सिंह जी ने भी विशेष दान दिया।

वर्तमान प्रधान :—श्री हरिवंशलाल जी महता वेदमनीषी तथा मन्त्री श्री डा० ओंप्रकाश जी हैं। आर्य स्त्री समाज भी स्थापित है जो महिलाओं में उत्साह-जनक कार्य कर रहा है।

आर्य समाज आदर्श नगर—स्थापना सन् १९६१ ई० में की गई। समाज का मन्दिर बनना आरम्भ हो गया है, इस समय तक लगभग ४००० रु० लग चुका है। समाज के संस्थापक श्री आनन्द जी हैं तथा वर्तमान प्रधान श्री त्रिलोक चन्द तलवार एवं मन्त्री श्रीं इन्द्रसैन जी हैं।

नोट :—ऐशबाग़, आनन्द नगर, चौक, स्त्री आ० स० लाजपत नगर आदि भी लखनऊ में और अनेक आर्य समाज हैं।

जिला हरदोई

एक रणवाँकुरा जिला है। स्वतन्त्रता संग्रामों में प्रशंसनीय बलिदान दिये हैं। ज़िले के बलिदानों की गाथा आर्य वीरों के बलिदानों की गाथा है।

इस जिले में सभा से सम्बन्धित आर्य समाजों की संख्या ३० है। ज़िला उप-सभा अनेक वर्षों से संलग्नता पूर्वक कार्य कर रही है। अनेक स्थानों पर नूतन समाजों का निर्माण किया है तथा दलित जातियों के उत्थान में प्रशंसनीय कार्य किया है। ज़िला उप-सभा के प्रधान पं० रामस्वरूप जी शुक्ल एक कर्मठ कार्य-कर्ता हैं तथा मन्त्री पं० अनन्त राम शर्मा हैं।

हरदोई ज़िले को यह गर्व है कि इसने श्री पं० भगवानदीन जी मिश्र (जो ६ वर्ष सभा के प्रधान एवं २ वर्ष सार्वदेशिक सभा के मन्त्री रहे)

२. रा० ब० ठा० मशाल सिंह जी (जो ४ वर्ष तक सभा के प्रधान रहे।)

३. श्री पं० रघुनन्दन शर्मा जिन्होंने देश और धर्म के संग्रामों में भारी बलिदान किये हैं, सिन्ध सत्यार्थ प्रकाश आन्दोलन के समय १ सहस्र सत्यार्थ प्रकाश मंगाकर ज़िले में वितरित किया।

४. श्री पं० शान्ति स्वरूप जी पूर्व सदस्य विधान सभा तथा ५ डा० जगदम्बा प्रसाद जी जैसे नर रत्नों को जन्म दिया है।

आर्य समाज हरदोई—स्थापना तिथि २५ सितम्बर सन् १८८४ ई० है।

संस्थापक श्री पं० भगवानदीन जी मिश्र थे। सन् १९२६ ई० में आर्य समाज का विशाल मन्दिर बनकर तैयार हो गया। जिसका मूल्य २०००० रु० से न्यून नहीं हैं। समाज के प्रारम्भिक कार्यकर्ताओं में उपर्युक्त महानुभावों के अतिरिक्त स्व० पं० रामप्रसाद जी, स्व० लालता प्रसाद जी वर्मा, श्री शिव नारायण जी मिश्र, श्री स्वामी स्वरूपानन्द जी महाराज, श्री पं० सुरेन्द्रनाथ जी मिश्र, श्री हक़ीम वख्त बहादुर जी, श्री बृजकिशोर जी, श्री मुरली धर जी, श्री पं० गुलजारी लाल जी आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। साथ ही श्री डा० पूर्ण देव जी, श्री कृष्ण चन्द्र जी आर्य, श्री विश्वम्भर दयालु जी, ठा० मनोहर सिंह जी, श्री राधेश्याम जी, श्री अवध विहारी जी, श्री वृजबिहारी लाल जी कपूर, श्री शिव वर्मा जी, श्री जयदेव जी कपूर, श्री राम किशोर जी, श्री काशीराम जी, श्री पं० शिवकुमार जी शास्त्री एम० ए० व्याकरणाचार्य आदि के नाम भी उल्लेखनीय हैं. जिन्होंने देश की स्वतन्त्रता में प्रशंसनीय कार्य एवं बलिदान किये हैं।

आर्य समाज का अपना एक कन्या विद्यालय है जिसकी स्थापना सन् १९०६

ई० में की गई जो अब वृद्धि करते-करते आर्य कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के रूप में विकसित हो गया है। एक हजार के लगभग कन्यायें शिक्षा पाती हैं। धार्मिक शिक्षा की सुन्दर व्यवस्था है। ८० प्रतिशत कन्यायें धार्मिक परीक्षा में उत्तीर्ण होती हें। प्रबन्धक श्री बा० सरदार सिंह जी हैं। धर्म शिक्षक श्री पं० सुरेन्द्र शर्मा जी गौड़ शास्त्री, वेद काव्यतीर्थ हैं। आर्य कुमार सभा की स्थापना १९१४ ई० में की गई। इसके अनेक सदस्यों ने देश हित बलिदान किये हैं। उनके नाम ऊपर दिये जा चुके हैं।

हरदोई आर्य समाज ने सामाजिक सुधार दलितोद्धार, आदि क्षेत्रों में भी प्रशंसनीय कार्य किया है।

हैदराबाद सत्याग्रह में समाज ने तीन जत्थे भेजे और तीसरा जत्था आर्य नेता श्री पं० रघुनन्दन शर्मा एवं स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती जी ८८ सत्याग्रहियों को लेकर गये और निजाम शाही के दमन को समाप्त कर के ही लौटे।

श्री शर्मा जी के सुपुत्र ब्र० दयानन्द जी एवं भतीजे पं० देव शर्मा जी शास्त्री गु० कु० महाहिद्यालय ज्वालापुर के जत्थे में हैदराबाद गये। वहां से आकर ब्र० दयानन्द जी का स्वर्गवास कारागार की अकथनीय यातनाओं के कारण हो गया।

श्री शर्मा जी के द्वितीय पुत्र श्री पं सच्चिदानन्द जी शास्त्री स्नातक गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर एवं महोपदेशक सभा (वर्तमान अंतरंग सदस्य) पंजाब में होने वाले हिन्दी रक्षा आन्दोलन में लखनऊ से एक बड़ा जत्था लेकर गये और पंजाब सरकार के द्वारा फिरोज़पुर जेल में लाठियाँ खाईं।

स्त्री आर्य समाज—कितने ही वर्षों से यहां स्त्री-समाज भी स्थापित है जो स्त्री जाति में जाग्रति उत्पन्न करने में संलग्न है। माता प्रियम्वदा देवी जी का इस समाज को उन्नति करने में सराहनीय यत्न रहता है। माता जी ने प्रान्त के अन्दर स्त्री जाति में विशेष कार्य किया है। आप प्रान्तीय महिला मण्डल की अध्यक्षा एवं सभा की उप-प्रधाना भी रहीं हैं। आप प्रभावशालिनी वकृत्व-शक्ति सम्पन्ना देवी हैं।

आर्य समाज सोरसा—आर्य समाज मन्दिर की आधार शिला श्री नारायण स्वामी जी महराज द्वारा रक्खी गई। इस समाज की ओर से हैदराबाद सत्याग्रह में ३ सत्याग्रही जेल गये। हिन्दी रक्षा आन्दोलन पंजाब में इस समाज से तीन सत्याग्रही सर्व श्री पं० रामसेवक जी, स्वामी सुरेन्द्राश्रम तथा स्वामी महेश्वरा-

नन्द जी ने भाग लिया । इस जत्थे के जत्थेदार समाज के पितामह श्री पं० राम-सेवक जी मिश्र थे ।

आर्य समाज गोरिया—स्थापना तिथि क्वार शुदी सम्वत् १९९१ सभा में प्रवेश तिथि १९१०—३४ ई० ।

आर्य समाज गोरिया के प्रयत्न से सन् २३ में ग्राम मिर्वौल के मलकाने राजपूतों की शुद्धि स्वामी चिदानन्द जी सरस्वती के द्वारा हुई । इस शुद्धि में भाग लेने के कारण श्री ठा० रणजीत सिंह, श्यामल सिंह, भारत सिंह जी बिरादरी से प्रथक किये गये, जो आज अब सम्माननीय पुरुषों में सर्वश्रेष्ठ माने जाते हैं । हैदराबाद के जत्थे में इस समाज से श्री गुरूदत्त जी व भारत सिंह जी ने भाग लिया । इस समाज के प्रधान श्री ठा० रणजीत सिंह जी दयानन्द साल्वेशन मिशन होशियारपुर की ओर से १२ वर्ष तक उपदेशक रहे । जिन्होंने हरदोई, फर्रुखाबाद, शाहजहांपुर आदि जिलों से बहुत से ग्रामों में शुद्धियां कराई और नये आर्य समाज स्थापित किये ।

आर्य समाज पाली—आर्य समाज पाली के प्रधान श्री सूर्यसेन, मंत्री, श्री भोला-नाथ जी हैं । स्थापना तिथि मई सन् १९१५ ई० है . हैदराबाद सत्याग्रह में १०१ रु० की सहायता की । समाज मन्दिर लगभग १०००० रु० की लागत का है । स्व ०श्री दुर्गा प्रसाद जी मिश्र, कालिका प्रसाद, ठा० भगवान सिंह जी, मुंशी शिवराम, श्री राम बाजपेई जी यहां के प्रमुख कार्यकर्ता रहे ।

आर्य समाज चठिया—आर्य समाज की स्थापना श्री चित्र जी वानप्रस्थी द्वारा सन् १९१७ ई० में हुई । पुत्री पाठशाला व संस्कृत पाठशाला इस समाज की ओर से चल रही हैं जिसके अध्यक्ष चित्रजी बानप्रस्थी हैं । मन्दिर २५०० रु० की लागत का बनवा दिया है । श्री वानप्रस्थी जी ने २१०० रु० दान सभा को दिया इस समाज के उपदेशक श्री सोमदत्त जी सभा के वैतनिक उपदेशक बहुत दिनों तक रहे ।

आर्य समाज सांडी—स्थापना तिथि १४-२-१९२९ ई० सभा से सम्बन्ध १९३५ ई० । सन् ५८-५९ में मन्दिर लगभग १२००० रु० की लागत का बन गया है । आर्य समाज के सर्वेसर्वा श्री केशवदेव जी शास्त्री हैं इनके प्रयत्न से आर्य समाज का कार्य नियमित रूप से चल रहा है । श्री डा० छोटेलाल जी, गंगा प्रसाद जी, राधाकृष्ण आर्य, पं० बनवारी लाल और राधाकृष्ण गुप्त कोषाध्यक्ष के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं ।

आर्य समाज खसौरा—स्थापना तिथि १९०२ सभा प्रवेश १९०५ ई०। स्थापना श्री चतुभुज शर्मा द्वारा हुई। कटियारी राजा के अमानुषिक व्यवहार से आर्यों को अनेक यातनायें सहनी पड़ी। जनेऊ तुड़वाये गये, हवन आदि पर प्रतिवन्ध लगाये गये तो भी आर्यों ने अपना धर्म कर्म नहीं छोड़ा। इन संकटों को सहने वाले श्री चतुर्भुज शर्मा, श्री धर्म देव, श्री नाथूराम, श्री मंगली प्रसाद और श्री गयालाल जी थे।

अब इस समय श्री सत्यदेव, श्रीधर इन्द्रदेव, रामचन्द्र, रामकृष्ण जी आदि के नाम कार्यकर्ताओं में विशेष उल्लेखनीय हैं।

आर्य समाज नरौथाबाग—स्थापना तिथि २९-१०-५९। इस समाज के मुख्य कार्यकर्ता श्री खुशीराम कर्मकाण्डी यादव हैं इनके प्रभाव से पूरे गांव में वैदिक संस्कार होते हैं तथा यह प्रति वर्ष वार्षिकोत्सव करा देते हैं।

आर्य समाज शाहाबाद—स्थापना तिथि १८८५ ई०। स्वर्गीय महेशप्रसाद मिश्र पोस्ट मास्टर (अनुज स्वर्गीय श्री पं० भगवानदीन जी मिश्र भू० पू० प्रधान सभा) द्वारा हुई। उनके इस कार्य में स्व० राधाशरण मिश्र, पं० प्यारे लाल, पं० रामविलास, लालारामाश्रय ने अपनी अपनी सेवायें अर्पित कीं। समाज मन्दिर का निर्माण श्री रामप्रसाद जी ओवरसियर के कर कमलों द्वारा हुआ जिसकी लागत १२००० रु० है। समाज का हवनकुंड सनातनियों ने खोद डाला। अतः समाज को अदालत की शरण लेनी पड़ी। फलस्वरूप जिन लोगों ने यज्ञ कुण्ड खोदा था उन्हें अदालत में क्षमा याचना करनी पड़ी और क्षति-पूर्ति कर के यज्ञ कुण्ड वनवाना पड़ा। यहाँ मौलवियों व पादरियों से शास्त्रार्थ पं भोजदत्त जी शास्त्री आर्य मुसाफिर द्वारा करा कर विधर्मियों को परास्त कराया। फलस्वरूप आज आर्य समाज की धाक कस्बा में पूर्ण रूप से जम गई। वर्तमान कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री ब्रह्मदत्त मिश्र, श्री महावीर प्रसाद मिश्र बी० ए०, श्री लाला राम और डा० जगपाल जी आर्य हैं।

आर्य समाज कासिमपुर—वर्तमान प्रधान श्री चन्द्रिका सिंह एवं मन्त्री श्री क्षमापति जी हैं। श्री केशवदेव जी शास्त्री सांडी निवासी के प्रयत्न से यहाँ गौ-रक्षा सप्ताह मनाया गया परिणामस्वरूप गोवध बन्द हो गया तथा बाजारों में बकरों का कटना भी बन्द हो गया। ताजियादारी भी बन्द सी ही हो गई है। एक ग्राम-सोतार में भ्रूण हत्या रोकी गई वह जन्मा हुआ बालक आज भी जीवित है।

मृतक श्राद्ध बिल्कुल वन्द हो गया। गौरक्षा के सम्वन्ध में समाज ने सराहनीय कार्य किया। पौराणिक कुप्रथाओं को रोकने में समाज को सफलता प्राप्त हुई।

आर्य समाज किरतियापुर—स्थापना : ४-४-५४ ई० को की गई तथा सभा से सम्वन्ध १२-१०-५६ में हुआ। इस समाज के मुख्य कार्यकर्ता श्री पं० अनन्तराम जी शर्मा जो सभा की ओर से जिला हरदोई के निरीक्षक गत लगभग १४ वर्षों से हैं जिनके प्रयास से सभा को ७५०० रु० और ५०० गौरक्षा आन्दोलन में स्वामी ध्रुवानन्द जी सरस्वती को प्राप्त हुआ। किरतियापुर गाँव में अनेक घरों में प्रतिदिन अग्निहोत्र होता है।

आर्य समाज सिमरिया—आर्य समाज सिमरिया की स्थापना सन् १९२४ ई० में की गई। सभा से सम्वन्धित है। आर्य समाज सिमरिया के दानवीर श्री माधव प्रसाद जी आर्य ने अपनी समस्त चल व अचल सम्पत्ति सभा को दान कर दी जिसकी वसीयत रजिस्ट्री सभा के नाम करके सभा कार्यालय को अर्पण कर दी। इसके अतिरिक्त सभा को ७५०० रु० देकर सभा भवन में दो वास गृह बनवा दिये हैं तथा ५०१ रु० गौरक्षा आन्दोलन में स्वामी ध्रुवानन्द जी सरस्वती के कर-कमलों में भेंट किया। आपने अपना रहने का मकान भी समाज मन्दिर हेतु दे दिया।

आर्य समाज सवायजपुर—स्थापना तिथि : २६-१०-६२ ई० है। सभा से सम्बन्धित होने की तिथि १५ मई १९६१ है। इस समाज के कर्मठ कार्यकर्ता श्री रँगीलाल पांडे हैं। इनके कर्म काण्ड की धाक राजा सवायजपुर तक पर है। आप राजा साहब के गृह में भी नित्य यज्ञ कराने के लिए जाते हैं।

जिला बाराबंकी

यह भी अवध की नवाबी का एक जिला है। आर्य समाज के प्रादुर्भाव से पूर्व जिले के नगर व कस्बों में मुसलमानों का पूरा पूरा आतंक छाया हुआ था। हिन्दुओं की धार्मिक स्वाधीनता पूर्णतया छिनी हुई थी। नगर व कस्वे में आर्य समाज स्थापित किया गया। आरम्भ में भारी विरोध एवं संकटों का सामना करना पड़ा है।

इस जिले में सभा से सम्बन्धित आर्य समाजों की संख्या केवल ४ है। वैसे ६ व ७ आर्य समाज जिले में और स्थापित हैं जिनका अभी तक सम्बन्ध नहीं हो सका है।

आर्य समाज बाराबंकी—सन् १८९० ई० में स्थापित हुआ। आर्य समाज का अपना बिशाल मंदिर है जिसका निर्माण सन् १९०२ ई० में आरम्भ हुआ।

सुन्दर पुस्तकालय है जिसमें १७०० पुस्तकों का संग्रह है। समाज के अन्तर्गत एक श्री कृष्णानन्द नाथ खरे नामक ट्रस्ट है जिसका निर्माण समाज के एक यशस्वी कार्यकर्ता ने अपने नाम से किया था। समाज के पुराने कार्य कर्ताओं में श्री गंगाप्रसाद जी, बा० निरादरमल, श्री हरी कृष्ण, श्री रामनरेश, श्री विश्वेश्वर दयाल आर्य, श्री आदित्यप्रसाद, श्री द्वारिका प्रसाद वकील, श्री मंगल प्रसाद, श्री कृष्ण चन्द्र एवं श्री मथुरा प्रसाद जी के नाम उल्लेखनीय हैं।

समाज के अनेक कार्यकर्ताओं ने देश की स्वाधीनता के सग्रामों में भाग लिया हैं यथा :—स्वर्गीय सत्यप्रेमी जी एम० एल० ए०, स्वर्गीय विशेश्वर दयालु आर्य, स्वर्गीय कृष्णानन्द एम० एल० ए० आदि।

सन् १९४९ में आर्य वीर दल की शाखा भी यहाँ स्थापित की गई। समाज के अन्तर्गत एक माध्यमिक शिक्षणालय चल रहा है जिसके मुख्याध्यापक श्री अवध शरण वर्मा हैं।

वर्तमान अधिकारी—प्रधान श्री विहारी लाल वैद्य। समाज कार्यों में मुक्त हस्त से दान देते हैं।

उप-प्रधान श्री वालमुकुंद जी। मंत्री श्री राम सजीवन लाल जी दयानन्द विद्यालय के आप प्रवन्धक भी हैं।

आर्य समाज रूदौली—स्थापना तिथि १-१-१९२३ ई०। संस्थापकों में श्री राम हृदय जी अग्रवाल, श्री गुरू चरण जी, श्री शालिगराम तथा श्री भगवती प्रसाद के नाम उल्लेखनीय हैं। सन् १९२९ ई० में मन्दिर का निर्माण हुआ। प्रचार कार्य दृढ़ता के साथ किया गया। लम्बी शिथिलता के उपरान्त सन् १९४८ ई० में पुनर्जीवन आया। वर्तमान प्रधान श्री विहारी लाल जी।

मन्त्री श्री विद्याभिक्षु आर्य (अरबी-फारसी के विद्वान् शास्त्रार्थ महारथी)। आप हिन्दू उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य हैं।

हैदरावाद सत्याग्रह में इस जिले से एक जत्था स्वा० अच्युतानन्द जी के नेतृत्व में गया।

आर्य समाज स्नेहीघाट—स्थापना सन् १९४५ ई०। संस्थापक : श्री स्वामी अच्युतानन्द जी। समाज के द्वारा अनेक हिन्दू अबलाओं को मुसलमान गुन्डों के चंगुल से छुड़ाया, शुद्धियाँ की, दलितोद्धार कार्य में योग दिया, अनाथों की रक्षा का कार्य किया। १५-१-६० ई० को आर्य मन्दिर का शिलान्यास श्री वृज बिहारी

लाल जी द्वारा कराया गया। मन्दिर अभी अधूरा है। पुराने कार्यकर्ताओं में श्री बनारसीलाल, श्री श्रीधर आर्य हैं। श्री दयाशंकर आर्य समाज के उप-मंत्री हैं।

जिला सीतापुर

इस जिले में सभा से सम्बन्धित केवल ८ आर्य समाज हैं।

आर्य समाज सीतापुर—की स्थापना सन् १९०१ ई० में हुई। महर्षि दयानन्द जी के लखनऊ, शाहजहांपुर आदि के भाषणों से प्रभावित होकर श्री मुरलीधर जी, श्री मथुरादत्त बंगाली तथा श्री किशोरीलाल जी आदि ने इस नगर में सर्व प्रथम आर्य समाज का बीज बोया। बाहर से आर्य विद्वानों को बुला बुलाकर उनके उपदेश और शास्त्रार्थ कराये। सन् १९०१ ई० में श्री पं० लक्ष्मण प्रसाद कानूनगो ने अपनी एक दुकान आर्य समाज के निमित्त दान में दी तो मुसलमानों की शिकायत पर आप पर अभियोग चलाया गया किन्तु अन्त में जिलाधीश मि० वैन ने वह दुकान आर्य समाज को ही दिलवा दी।

आरम्भ में अधिशेशनादि इस दूकान् में होते रहे। सन् १९०९ ई० में समाज सभा में प्रविष्ट हुआ। आर्य वैदिक पाठशाला स्थापित की गई जिसके द्वारा कितने ही नवयुवक कार्यकर्ता समाज को मिले।

मौलाना गुलाम हैदर एवं मि० जार्ज राबर्टसन को शुद्धकर महाशय सत्य देव एवं धर्म देव क्रमशः बनाया गया। श्री सत्य देव जी के भाषणों से मुसलमानों में खलबली मची और उन्होंने अनेक बार उत्पात मचाए। शास्त्रार्थ भी कई किये गये। इसी समाज के प्रयत्न से जिले में ८ आर्य समाजों की स्थापना हुई।

पं० रामानन्द जी कर्मठ कार्यकर्ता थे उनको मुसलमानों ने अनेकबार सताया। श्री झम्मनलाल ने मुसलमान गुण्डों से अपने जीवन को खतरे में डालकर एक हिन्दू देवी की रक्षा की। इसी प्रकार अनेक हिन्दू देवियों और लड़कों को मुसलमानों के चंगुल से निकाला गया। शास्त्रार्थ महारथी श्री पं० धर्मभिक्षु जी के यहाँ मुसलमानों के साथ अनेक शास्त्रार्थ हुए।

हैदराबाद सत्याग्रह में ३००० रु० इक्ट्ठा करके भेजा गया तथा नगर से तीन जत्थे सत्याग्रहियों के भी गये। यहाँ के एक आर्य नवयुवक श्री सुरेन्द्र शुक्ल ने गुरुकुल वृन्दावन से धनुर्विद्या सीखकर आधुनिक अर्जुन की प्रसिद्धि प्राप्त की।

स्वामी प्रेमानन्द जी ने यहाँ एक गुरुकुल भी खोला है। आर्य समाज का अपना विशाल मन्दिर बनकर तैयार हो गया है। अपना सुन्दर वैदिक पुस्तकालय है जिसमें २००० के लगभग पुस्तकें हैं।

यहाँ के प्रमुख कार्यकर्ताओं में श्री रामप्रसाद वकील, श्री शम्भूनाथ जी, बा० गौरी सहाय वकील, पं० गंगाधर शर्मा, श्री जगदम्बा प्रसाद वकील, पं० हरगोविंद शर्मा, श्री रामसूचित जी, श्री रामसिंह जी, ला० सीताराम जी, श्री मूलचन्द जी, श्री महावीर प्रसाद जी, मथुरा प्रसाद जी, श्री धोखेलाल जी, श्री कन्हैयालाल जी, श्री उमाशंकर जी एवं मातादीन आर्य के नाम उल्लेखनीय हैं—

वर्तमान प्रधान—श्री जगदम्वाप्रसाद वकील,

मंत्री—श्री मातादीन आर्य ।

दयानन्द रामेश्वरप्रसाद हंसरानी आर्य कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की स्थापना १ जूलाई १९६० ई० को हुई थी। विद्यालय में ६०० कन्याएँ शिक्षा पाती हैं। धर्म शिक्षा की व्यवस्था है। विद्यालय की व्यवस्था एक प्रबन्धक समिति के आधीन है। प्रबन्धक श्री मथुरा प्रसाद आर्य हैं।

जिला लखीमपुर

नैपाल-राज्य की सीमा पर स्थित है और क्षेत्रफल की दृष्टि से प्रान्त का सबसे बड़ा जिला है। सीमा से लगे हुए अनेक क्षेत्रों में विदेशी ईसाई मिश्नरी कार्य कर रहे हैं। जिले में सभा सम्बन्धित आर्य समाजों की संख्या २३ है। सन् १९६२ ई० में श्री वीरेन्द्र वहादुर सिंह के प्रयत्न से जिला उप-सभा भी स्थापित हो गयी है। आपही इसके मंत्री भी हैं तथा प्रधान श्री निर्मलचन्द्र राठी हैं।

आर्य समाज लखीमपुर—स्थापना सन् १८९० ई० में की गई।

समाज के संस्थापकों में श्री पं० भगवानदीन मिश्र का नाम उल्लेखनीय है। आपके ही विशेष प्रयत्न से आर्य मंदिर का निर्माण हुआ है। आपने स्वयं ईंट-गारा ढोकर मंदिर निर्माण में भाग लिया। पण्डितजी अनेक वर्षों तक समाज के प्रधान रहे। समाज का अपना विशाल मंदिर है। नगर की सर्व सामाजिक, शैक्षणिक, प्रगतियों का यह समाज केन्द्र रहा है। श्री चन्द्रभानु गुप्त मुख्यमंत्री का सब परिवार इसी जिले में रहा है और आर्य समाज के कार्यों में पूरा-पूरा भाग लेता रहा है। गुप्तजी भी आर्य कुमार सभा लखीमपुर के प्रमुख कार्यकर्ता रहे हैं। श्री शिवनारायण जी शुक्ल समाज के प्रधान हैं।

आर्य समाज के अन्तर्गत एक कन्या विद्यालय है। जिसकी स्थापना सन् १९१९ ई० में श्री पं० भगवानदीन जी मिश्र की पुण्य स्मृति में की गई। यह विद्यालय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के रूप में विकसित हो चुका है। विद्यालय

का एक सुन्दर पुस्तकालय है। जिसमें ५५०० से ऊपर पुस्तकें हैं। श्रीमती सुशीला देवी एम० ए० टी० डी० (र्बालन) एफ० आर० जी० एम० (लन्दन) इसकी प्रधानाचार्या हैं। श्री पं० शिवनारायण जी शुक्ल प्रधान एवं श्री लक्ष्मीनारायण सर्राफ प्रबन्धक हैं।

आर्य स्त्री समाज लखीमपुर—स्थापना तिथि १९-१-१९१० ई० समाज प्रगतिशील है।

वर्तमान अधिकारी—प्रधाना श्रीमती देवेश्वरी देवी, उप-प्रधाना सुशीला देवी
मन्त्रिणी—श्रीमती उमादेवी गुप्त
उप मन्त्रिणी—श्रीमती काशीबाई शुक्ल आदि हैं।

आर्य समाज गोला गोकरणनाथ—यह हिन्दुओं का इस उत्तरीय क्षेत्र में एक तीर्थ स्थान माना जाता है। आर्य समाज की स्थापना १ जनवरी १९०० ई० में श्री लाला बिहारी लालजी, ला० मूलचन्दजी गुप्त एवं पं० पुरुषोत्तम देव गुप्त के प्रयत्न से हुई। स्व० संस्थापक लाला बिहारीलाल जी तथा श्री हेमनलाल जी ने समाज मन्दिर के लिये विशाल भू-क्षेत्र प्रदान किया। सन् १९११ ई० में स्व० लाला वेणी प्रसाद जी की देख-रेख में ५०००० रु० की लागत का विशाल आर्य मन्दिर बनकर तैयार हो गया।

कन्याओं की शिक्षा के निमित्त सन् १९५० ई० में पाठशाला स्थापित की गई। पाठशाला में प्रवेशिका का एवं कन्या विनोदिनी की कक्षाओं की पढ़ाई की व्यवस्था की गई।

२०० छात्राएं पढ़ने लगीं। सन् १९५५ में पाठशाला को बन्द कर दिया। इधर तीन वर्ष से डी० ए० वी० स्कूल चल रहा है। हैदराबाद सत्याग्रह में यहाँ के दो सदस्यों ने सक्रिय भाग लिया।

हिन्दी सत्याग्रह में भी समाज का पूर्ण सहयोग रहा। समाज की ओर से अनेक शास्त्रार्थ कराये। श्री राजबहादुर जी यहाँ के प्रमुख कार्यकर्ता एवं ओजस्वी वक्ता हैं।

शुद्धि और अछूतोद्धार में समाज अग्रसर रहा। ग्राम प्रचार की ओर भी समाज का विशेष ध्यान रहता है। हैदराबाद सिमरई, पलिया, कुकुरा एवं कुकुलपुर आदि ग्रामों में समाज की शाखाएं स्थापित की गई हैं।

वर्तमान प्रधान—श्री डा० गिरधारी लाल शर्मा तथा
मंत्री—श्री निर्मल चन्द्र राठी जी हैं।

आर्य समाज पुलिया कलां—स्थापना १९३८ संस्थापक श्री उमा शंकर, वकील फतेहपुर। सन् १९३९ ई० में वार्षिकोत्सव पर अनेक यवनों की शुद्धियां की गई। विशेष उल्लेखनीय शुद्धि चौधरी नवाब खाँ मेवाती की थी। २२ जुलाई, १९३९ को हैदराबाद सत्याग्रह के सम्बन्ध में यहाँ एक भारी जूलूस निकालागया मुसलमानों ने तैयारी के साथ जुलूस पर हमला किया लगभग १०० व्यक्ति दोनों ओर से विशेष घायल हुए। मुसलमानों को सजाएं हुई। कुछ दिन बाद सिगाती में बेगम नूरजहाँ की ऐतिहासिक शुद्धि हुई। तत्पश्चात् शुद्धियों का तांता लगा रहा। सन् १९४३ में ईसाइयों से भारी शास्त्रार्थ हुआ। श्री बलदेव प्रसाद आर्य मंत्री समाज ने ८००० रु० की भूमि मन्दिर के लिये दान कर दी है। कार्य अच्छा चल रहा है।

उत्तर प्रदेश से बाहर के आर्य समाज (सभा सम्बन्धित)

आर्य समाज बैंकाक (थाई लैण्ड)...उत्तर प्रदेश के गोरखपुर, बलिया, बस्ती, फैजाबाद, आजमगढ़ जिलों से वृत्ति की खोज में गये हुये सज्जनों ने जो वहाँ जाकर बस गये थे इस समाज की सर्व प्रथम सन् १९२० ई० में वैदिक धर्म प्रचारिणी सभा के रूप में स्थापना की। आगे चलकर इसको विधिवत् आर्य समाज का रूप दे दिया गया। समाज का अपना विशाल मन्दिर है। थाईलैण्ड में वैदिक संस्कृति के प्रचार करने का इसको ही श्रेय प्राप्त है।

वार्षिकोत्सव प्रतिवर्ष बड़े समारोह के साथ मनाये जाते हैं। आर्य पर्वों को मनाने की ओर भी समाज का पूरा-पूरा ध्यान रहता है, वैदिक संस्कार एवं साहित्य विक्रय का कार्य भी उत्साहपूर्वक किया जाता है।

सभा के कार्यों में इस समाज की ओर से समय-समय पर आर्थिक सहायता भी की जाती है। इतना ही नहीं भारत के सर्व आर्य सामाजिक आन्दोलनों आदि में भी मुक्तहस्त से सहायता की जाती है। आर्य-मित्र की ४० प्रतियाँ मंगाकर बैंकांक आदि के आर्य पुरुषों में बाँटी जाती हैं। दीक्षा शताब्दी के अवसर पर २५० रु० भेज कर विद्वदभिनन्दन ग्रन्थ बंटवाया। हिन्दी रक्षा आन्दोलन एवं दीक्षा शताब्दी के अवसरों पर दो-दो सहस्त्र रुपया उपलब्ध हुवा। समाज का ४३ वां वार्षिकोत्सव १० मार्च १९३६ ई० को श्री डी० आर० कपूर एम० ए० की अध्यक्षता में समारोह पूर्वक मनाया गया। इस शुभावसर पर भारत के राजदूत श्री निरन्जन सिंह गिल ने सम्मिलित होकर कार्यकर्ताओं का उत्साह बढ़ाया।

समाज के वर्तमान अधिकारी—

प्रधान—श्री सहदेव सिंह जी,

उपप्रधान—गोकुल सिंह जी

मन्त्री—श्री बाबूलाल सिंह जी

उपमन्त्री— श्री रामपलट पाण्डेय

सहायक-मन्त्री—श्री भगवती प्रसाद मिश्र

कोषाध्यक्ष—म० सुन्दर चन्द्र जी

पुस्तकाध्यक्ष—श्री गोपी नाथ दूबे

निरीक्षक—श्री राममणि पाण्डेय

संचालक—श्री शीतल पाण्डेय जी हैं।

आर्य समाज महाराज पुर (मध्य प्रदेश)—यह समाज कार्तिक कृष्ण ५, सम्वत् १९७० वि० में स्थापित हुआ।

संस्थापक श्री लल्ला सुजान सिंह जमीन्दार महाराज पुर हैं।

समाज के यशस्वी संस्थापक का ज्येष्ठ शु० १२ सं० १९८२ वि० में सामाजिक कार्यों के कारण बलिदान हुआ। इसी तिथि को आर्य समाज के उपप्रधान श्री बाबू राम जी का भी इन्हीं कारणों से बलिदान हुआ।

वर्तमान अधिकारी—प्रधान श्री दीनदयाल जी। मन्त्री—श्री हरगोविन्द जी

आर्य समाज खन्दिया मुहल्ला महाराज पुर—स्थापना तिथि—मार्गशीर्ष कृ० ५, संवत् २०११ वि०संस्थापक—स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती प्रधान—श्री कामता प्रसाद जी। मन्त्री—श्री घासी राम जी।

गढ़वाल आर्य समाज दिल्ली—उत्तराखण्ड के गड़वाल टिहरी एवं चमोली निवासी आर्य बन्धुओं ने जो दिल्ली में बस गये हैं इस समाज की स्थापना १३-९-१९४२ को की।

स्थापना—वच्चन सिंह आर्य, श्री भोपाल सिंह आर्य तथा श्री सत्य प्रकाश आर्य। सभा में प्रवेश २५-१२-१९४६ ई०

समाज के पुराने कार्यकर्ता श्री स्व० कोतवाल सिंह नेगी, आप कांडई (पौड़ी) के निवासी थे। शिक्षा मिशन हाई स्कूल चोपड़ा में पाई। डी० ए० वी० स्कूल की स्थापना में आपका विशेष सहयोग रहा। राष्ट्रीय आन्दोलन में भी आपका विशेष हाथ रहा।

स्व० छ्वाण सिंह नेगी। जन्म स्थान कोल्सी ग्राम (उदेपुर वल्ला पट्टी)

सन् १९४६ में स्वामी श्रद्धानन्द जी से आर्य समाज की दीक्षा ली। गढ़वाल दुर्भिक्ष में विशेष कार्य किया। भृगुखाल में श्रद्धानन्द विद्यालय स्थापित करने में आपका विशेष हाथं रहा। राष्ट्रीय आन्दोलन में विशेष भाग लिया। जिला कांग्रेस के प्रधान रहे। सरकार ने आपको बागी घोषित किया। १ जुलाई सन् ४९ में आपका देहान्त हो गया।

स्व० बखतार सिंह लिंगवालभृगुखाल विद्यालय के अध्यापक रहे। कर्म भूमि का सम्पदन किया। राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लिया २६-१०-५९ को आपका निधन हो गया।

परिशिष्ट भाग

परिशिष्ट 'क'

सूची सभा के प्रधान व मन्त्री सन् १८८७ से १९६२ तक

सन्	नाम प्रधान	नाम मन्त्री
१८८७-८८	श्री लक्ष्मणस्वरूप देहरादून	श्री बिहारीलाल मुजफ्फरनगर
१८८९	श्री सुन्दरलाल रायजादा मैनपुरी	" " "
१८९०	श्री दुर्गाप्रसाद फर्रुखाबाद	श्री भगवानदीन मिश्र हरदोई
१८९१-९२	श्री देवीप्रसाद	" " "
१८९३	श्री ज्योतिस्वरूप देहरादून	" " "
१८९४-९६	श्री राजाफतहसिंह पुवायां (शाहजहाँपुर)	" " "
१८९७	श्री लखपतराय गाजियाबाद	श्री नारायणप्रसाद मुरादाबाद
१८९८-१९००	श्री भगवानदीन मिश्र	" " "
१९०१	श्री हुकुमसिंह आंगई, (मथुरा)	श्री श्यामसुन्दरलाल मैनपुरी
१९०२	श्री भगवानदीन मिश्र हरदोई	" " "
१९०३	" " "	श्री नारायणप्रसाद मुरादाबाद
१९०४-६	" " "	श्री श्रीराम आगरा
१९०७	" " "	श्री नारायणप्रसाद मुरादाबाद
१९०८	श्री रामदुलारे लाल फतेहगढ़	" " "
१९०९	श्री तुलसीराम स्वामी मेरठ	श्री गुलराज गोपाल फतेहगढ़
१९१०	" " "	श्री रघुबीरशरण मेरठ
१९११-१३	" " "	श्री मदनमोहन सेठ बुलन्दशहर
१९१४-१६	श्री घासीराम मेरठ	" " "
१९१७	श्री हुकुमसिंह आंगई (मथुरा)	" " "
१८१८	श्री घासीराम मेरठ	" " "
१९१९	श्री हुकुमसिंह आंगई (मथुरा)	श्री पूर्णचन्द्र आगरा
१९२०	" " "	श्री गदाधरसिंह सचेंडी (कानपुर)

सन्	नाम प्रधान	नाम मन्त्री
१९२१	,, ,, ,,	श्री सालिगराम आगरा
१९२२	श्री सीताराम लखीमपुर(खीरी)	,, ,, ,,
१९२३	,, ,, ,,	श्री रघुनन्दनप्रसाद लखनऊ
१९२४	श्री विश्वम्भरदयालु मुजफ्फनगर	श्री इन्द्रमणि बुलन्दशहर
१९२५-२७	श्री घासीराम मेरठ	श्री ब्रजनाथ मित्थल मेरठ
१९२८-३१	श्री मशालसिंह हरदोई	श्री रासबिहारी तिवारी लखनऊ
१९३२	,, ,, ,,	श्री उमाशंकर फतेहपुर
१९३३	श्री पूर्णचन्द्र आगरा	,, ,, ,,
१९३४	श्री बाबूराम सक्सेना इलाहाबाद	,, ,, ,,
१९३५-३७	श्री मदनमोहन सेठ बुलन्शहर	श्री प्रीतमलाल अलीगढ़
१९३८	श्री प्रीतमलाल अलीगढ़	श्री कालीचरण मेरठ
१९३९	श्री राजगुरु धुरेन्द्र शास्त्री	,, ,, ,,
१९४०	श्री मदनमोहन सेठ बुलन्दशहर	,, ,, ,,
१९४१-४३	श्री गंगाप्रसाद उपाध्याय प्रयाग	श्री महेन्द्रप्रताप शास्त्री
१९४४	,, ,, ,,	श्री रामदत्त शुक्ल लखनऊ
१९४५	श्री मदनमोहन सेठ बुलन्दशहर	,, ,, ,,
१९४६	श्री राजगुरु धुरेन्द्र शास्त्री	,, ,, ,,
१९४७	,, ,, ,,	श्री उमाशंकर फतेहपुर
१९४८	,, ,, ,,	श्री रामदत्त शुक्ल लखनऊ
१९४९	,, ,, ,,	श्री प्रीतमलाल अलीगढ़
१९५०	श्री मदनमोहन सेठ बुलन्दशहर	श्री धर्मपाल विद्यालंकार बदायूं
१९५१	,, ,, ,,	,, ,, ,,
१९५२	,, ,, ,,	श्री कालीचरण आर्य मेरठ
१९५३	श्री पूर्णचन्द्र आगरा	,, ,, ,,
१९५४	,, ,, ,,	श्री जयदेवसिंह मेरठ
१९५५	,, ,, ,,	श्री नेत्रपालसिंह अलीगढ़
१९५६	,, ,, ,,	श्री शिवदयालु मेरठ

सन्	नाम प्रधान	नाम मन्त्री
१९५७	श्री युवराज रणंजयसिंह अमेठी	,, ,, ,,
१९५८	श्री हरिशंकर शर्मा आगरा	श्री फूलनसिंह शिकोहाबाद
१९५९	,, ,, ,,	श्री प्रेमचन्द्र शर्मा एम० एल० सी० हाथरस
१९६०	श्री प्रकाशवीर शास्त्री एम० पी० चन्दौसी	,, ,, ,,
१९६१	,, ,, ,,	,, ,, ,,
१९६२	,, ,, ,,	श्री ईश्वर दयालु आर्य

परिशिष्ट (ख)

सभा का उपलब्ध प्रकाशन

नाम पुस्तक	नाम लेखक	मूल्य
यजुर्वेदसंहिता भाग १	वैदिक संस्थान	२.००
,, भाग २	,, ,,	२.५०
वेद-सुधा	स्व० पं० घासीराम एम० ए०	०.२५
ज्योतिश्चन्द्रिका	पं० गंगाप्रसाद एम०ए० रि० जज	०.२५
मनुष्य-समाज	,, ,,	०.०६
सूर्य सप्ताश्व वर्णन	,, ,,	०.०६
प्राबलम्ब्स आफ लाइफ (अं०)	,, ,,	०.०६
,, ,, यूनिवर्स (अं)	,, ,,	०.०६
गायत्री उपनिषद्	स्व० पं० रामदत्त शुक्ल एम०ए०	०.५०
वैदिक निघंटु	,, ,,	०.३७
आत्म शारीरिकोपनिषद्	,, ,,	०.१२
पिप्पलाद संहिता (अं०)	,, ,,	०.१९
ईशोपनिषद् (अं०)	स्व० महात्मा नारायण स्वामी	०.२५
विरजानन्द चरित	,, देवेन्द्रनाथ जी	०.६२
मन की लहर	,, रामप्रसाद बिस्मिल	०.७५
ब्रह्मवेद का रहस्य	पं० प्रियव्रत आर्ष	०.१९
ऋग्वेद-रहस्य	पं० अलगूराय शास्त्री	५.००
सत्यनारायण की कथा	श्री वासुदेवशरण अग्रवाल एम०ए०	०.५०
पिंडारी हिम प्रवाह	डा० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री एम० ए० तर्कशिरोमणि	०.२५
संस्कृति लिविंग लैंग्वेज (अं०)	,, श्याम जी कृष्ण वर्मा	०.०६
इंग्लैंड का इतिहास	,, ब्रजमोहन शर्मा	१.००
कलावती उपन्यास	श्री दामोदर प्रसाद जी	०.४४
आर्यों का प्राचीन गौरव	पं० कालीचरण शर्मा	०.३७

नाम पुस्तक	नाम लेखक	मूल्य
भौतिक विज्ञान	,, ब्रह्मानन्द जी	०.३७
जन्म शताब्दी उपहार	श्रीमती सुनीतिदेवी जी	०.३१
कैथालिक ईसाइयों का नग्नचित्र	पं० शिवदयालु जी	०.१२
नव सस्येष्टि यज्ञ	,, ,,	०.०६
क्राइस्ट वरसज क्रिश्चीएनिटी (अं०)	,, ,,	०.०६
ब्रह्माकुमारी दर्पण	,, ,,	०.१२
अग्निहोत्र (अं०)	श्री ताराचन्द एम० ए०	०.१०
वैंजिटेरियन डाइट (अं०)	,, मदनमोहन एम० ए०	०.०६
पेपर्स रैड ऐट फर्स्ट एरियन एज्यूकेशन कान्फ्रेंस कानपुर	,, परमात्मा शरण एम० ए०	०.३७
स्त्री ज्ञान दर्पण	,, देवपाल सिंह कटियार	०.५०
जीवनोद्देश्य	,, ,,	०.५०
सुखमय जीवन	,, ,,	०.५०

परिशिष्ट (ग)

अवैतनिक उपदेशक संघ उत्तर प्रदेश

संघ के सदस्यों की संख्या २३६ है किन्तु जिनका परिचय इतिहास में अंकित नहीं किया जा सका केवल उनके शुभ नाम ही इस तालिका में दिये गये हैं।

संन्यासी वर्ग

१. स्वामी वेदानन्द जी सरस्वती आर्यसमाज मेष्टन रोड, कानपुर।
२. स्वामी शिवमुनिजी परिव्राजक अकबरपुर, कानपुर।
३. स्वामी शान्तानन्द जी शान्तिकुटी, नदरौली गुन्नौर, बदायूँ।
४. स्वामी केशवानन्द जी सरस्वती गुरुकुल महाविद्यालय, अयोध्या।
५. स्वामी नारायणानन्द जी, आर्य समाज बुलन्दशहर।
६. स्वामी परमानन्द जी दण्डी, शिवालपुरवा, खीरी।
७. स्वामी इष्टानन्द जी, गुरुकुल महाविद्यालय अयोध्या।
८. श्री भारद्वाज जी वानप्रस्थी।
९. स्वामी सुखानन्द जी सरस्वती निगमागमाश्रम, दारानगरगंज विजनौर।
१०. स्वामी परमानन्द दण्डी खानपुर, फर्रुखाबाद।
११. स्वामी देवानन्द जी सरस्वती दयानन्द कुटिया कर्णवास, बुलन्दशहर।
१२. श्री ज्ञानदेव वानप्रस्थी (एटा)
१३. स्वामी स्वरूपानन्द जी आर्य ससाज दातागंज (बदायूँ)
१४. स्वामी विशुद्धानन्द जी सरस्वती उझियानी (बदायूँ)
१५. स्वामी ज्ञानेश्वरानन्द जी, दीवान-हाल देहली।

महिला वर्ग

१६. श्रीमती प्रियम्वदा देवी जी हरदोई।
१७. ,, जगधात्री देवी जी आर्यनगर एटा।
१८. ,, राजरानी जी नई मण्डी मुज़फ्फरनगर।
१९. ,, दुर्गादेवी जी कन्या गुरुकुल सासनी, हाथरस।
२०. ,, विद्यादेवी जी प्रेमनगर, कानपुर।
२१. ,, शकुन्दला देवी गोयल मेरठ सदर।

२२. „ हेमलता देवी खाई-डोरा, अलीगढ़ ।

२३. „ कृष्णादुलारी देवी खाई-डोरा अलीगढ़ ।

२४. „ सुखदादेवी जी आर्य समाज घामावाला, देहरादून ।

२५. „ सरलादेवी शास्त्री ब्राह्मणपुरी, अलीगढ़ ।

२६. „ गोपीदेवी जी चौमुखापुल, मुरादाबाद ।

२७. „ यशोदारानी आर्यनगर, सहारनपुर ।

२८. „ सत्यभामादेवी जी स्त्री-सुधार विद्यालय, बरेली ।

अन्य

२९. श्री रघुनन्दन शर्मा आर्य समाज गहरौली, हमीरपुर ।

३०. पं० शिवदयालु जी तिलकपार्क मेरठ सदर ।

३१. „ रामनारायण शास्त्री बिन्दकी (फतेहपुर)

३२. श्री महेशचन्द्र जी सिद्धान्त शास्त्री बरौठा, अलीगढ़ ।

३३. „ बालकराम जी आर्य, आर्य समाज नजीबाबाद, बिजनौर ।

३४. „ सत्यदेव आर्य मुसाफिर, रजतपुर मुरादाबाद ।

३५. „ विश्वनाथ आर्यवीर, दौराला, मेरठ

३६. „ रतनसिंह धनधोरिया, मनोहरीगंज बान्दा ।

३७. „ तेजपाल जी आर्य, आर्य समाज पूरनपुर पीलीभीत ।

३८. „ रामेश्वर सहाय सिद्धान्त शास्त्री, शिक्षा-निकेतन निशातगंज, लखनऊ ।

३९. „ प्रकाशचन्द्र जी प्रेमनगर अतरौली (अलीगढ़)

४०. „ यज्ञनारायण सिंह सिद्धान्तशास्त्री, आर्य समाज हांसीपुर (मिर्जापुर) ।

४१. „ रामकुमार आर्य, घिरौर (मैनपुरी) ।

४२. „ सुवर्णसिंह आर्य, जवां (अलीगढ़) ।

४३. „ विद्याभास्कर जी शास्त्री देहरादून ।

४४. „ छुट्टनलाल जी कालन्द मेरठ ।

४५. „ श्री प्रियव्रत शास्त्री सरधना मेरठ ।

४६. „ कृष्णस्वरूप विद्यालंकार, इस्लामनगर, बदायूं ।

४७. „ श्री रामदयालु शास्त्री, कृष्णटोला अलीगढ़ ।

४८. „ शान्तिस्वरूप जी हाथरस, (अलीगढ़) ।

४९. „ अभिमन्त सिंह जी आर्य समाज बादशाह नगर लखनऊ ।

५०. „ वेदव्रत अवस्थी शास्त्री, रामा एण्ड कम्पनी अमीनुद्दौला-पार्क लखनऊ ।

५१. „ अयोध्या प्रसाद आर्य, आर्य समाज फैजाबाद।
५२. „ अनन्तराम शर्मा, किरितियापुर पो० टिकार, हरदोई।
५३. „ हेमचन्द्र शर्मा, सिकन्दरपुर बरौली, अलीगढ़।
५४. „ धर्मवीर सिंह सिद्धांतशास्त्री, ९३ सराय-गुसाईं बुलन्दशहर।
५५. „ विश्वनाथ त्यागी वकील, आर्य समाज मुरादाबाद।
५६. „ डा० श्रीकृष्ण जी बनारसीबाग़ लखनऊ।
५७. „ देशबन्धु अधिकारी ग्वालियर।
५८. „ मथुराप्रसाद एम० ए० वकील आगरा।
५९. „ किशोरीलाल एम० ए० आर्य समाज मन्दिर अलीगढ़।
६०. „ धर्मदत्त सिद्धान्त भूषण कैलोर पो० हाथरस (अलीगढ़)।
६१. „ आर्येन्द्र वेदशिरोमणि एम० ए०, द्रोणाचार्य डिगरी कालेज, गुड़गाँव।
६२. „ नारायणसिंह वानप्रस्थी मथुरा।
६३. „ विद्याभूषण आ० शि० भूषण औषधालय एटा।
६४. „ धर्मवीर जी पटवागली बरेली।
६५. „ हरस्वरूप शर्मा डहाना, मेरठ।
६६. „ जमुनाप्रसाद जी गुरुकुल वृन्दावन, मथुरा।
६७. „ जयेन्द्र शास्त्री हीरावाली नगीना (बिजनौर)
६८. „ सुरेन्द्रदेव शास्त्री एम० ए० टाउन डिग्री कालेज, बलिया।
६९. „ रघुनन्दन शर्मा शास्त्री रायगंज गोरखपुर।
७०. „ मुरलीसिंह आर्य मेंहदावल, बस्ती।
७१. „ आर्यभानु शास्त्री वीहट वीरम, सीतापुर।
७२. „ सूर्यदेव शर्मा, जयजय राम गिरी का बगीचा, मिर्जापुर।
७३. „ विद्याभिक्षु आर्य, एम०ए०,एल०टी० इन्टर कालेज रुदौली (बाराबंकी)।
७४. „ सूर्यनारायण शर्मा ग्राम पुण्डा, पो० पाली, गोरखपुर।
७५. „ बैजनाथ आर्य—प्रचारक, आर्य समाज केराकत, जौनपुर।
७६. „ पुहुपदत्त शर्मा आर्य कोठामारचा, प्रयाग।
७७. „ श्रीराम आर्य कासगंज, एटा।
७८. „ रमेशचन्द्र एम० ए० गणेशगंज, लखनऊ।
७९. „ रघुनन्दन स्वरूप गोयल एम० ए०, एल०-एल० बी० वकील मेरठ।
८०. „ वेदव्रत जी वेदोपदेशक वेदकुटीर, शेरकोट, बिजनौर।

८१. ,, सोमाहुति भार्गव सिद्धान्तभूषण, फफूंड़ा (मेरठ)।
८२. ,, आचार्य श्यामकुमार जी, आगरा।
८३. ,, साहबसिंह आर्योपदेशक, अलीगढ़।
८४. ,, रामेश्वरदयालु शास्त्री सिद्धान्त शिरोमणि एम० ए०, गुरुकुल वृन्दावन मथुरा।
८५. ,, शोभाराम सिद्धान्त शास्त्री, गुरुकुल वृन्दावन (मथुरा)
८६. ,, किशोरीलाल आर्यसमाज चौक, मथुरा।
८७. ,, बल्देव प्रसाद सोजन, बरेली।
८८. ,, शेरसिंह जी सदंरपुर (मुरादाबाद)।
८९. ,, मुरलीधर आर्य, आर्य समाज पूरनपुर, पीलीभीति।
९०. ,, दशरथ ओत्रयाचार्य शास्त्री एम०ए० विद्याभूषण नं० ४ सुभापनगर (उरई)
९१. ,, नरेन्द्रनाथ शास्त्री एम० ए०, लखनऊ।
९२. ,, सूर्यबली पाण्डेय आर्य समाज, जौनपुर।
९३. ,, हरिप्रसाद वानप्रस्थी, लउनऊ।
९४. ,, जयदेव प्रसाद गुप्त एम० ए० आदर्शनगर चन्दौसी, मुरादाबाद।
९५. ,, बालकराम आर्य, आर्य समाज, गोरखपुर।
९६. ,, ब्रह्मदत्त शास्त्री काव्यतीर्थ आगरानी, अलीगढ़।
९७. ,, श्रीकृष्ण अवस्थी, १२० रंजीतपुरवा, कानपुर।
९८ ,, देवनाथ भारद्वाज, आर्य समाज भुवाली, नैनीताल।
९९ ,, शिवप्रसाद बी० ए० विशारद रामतीर्थ मार्ग, लखनऊ।
१०० ,, भरतसिंहजी सरोजनी नगर देहली।
१०१ ,, चन्द्रशेखर बाजपेयी एम० ए० ए० टी, ८ डी० रोड प्रयाग।
१०२ ,, भगवानप्रसाद एम० ए०, लखनऊ।
१०३ ,, जे० पी० चौधरी काव्यतीर्थ, आर्य समाज खीरी।
१०४ ,, विश्वनाथ शास्त्री, आर्य समाज मुगलसराय वाराणसी।
१०५ ,, रामलक्षण आर्य सिद्धान्त-शिरोमणि, विस्कोहर बाजार, बस्ती।
१०६ ,, चन्द्रमणि शर्मा वैद्य आर्य समाज खालापार सहारनपुर।
१०७ ,, बी० एन० पाल बी० एस० सी० वकील सदर बाजार लखनऊ।
१०८ ,, श्यामसुन्दर विद्याभास्कर शास्त्री लखनऊ।
१०९ ,, प्रसादीलाल शर्मा बी० ए० एल० एल० बी० अतरौली (अलीगढ़)।

११० „ विश्वम्भरनाथ तिवारी आनन्दबाग, कानपुर ।
१११ „ धर्मवीर शास्त्री जसपुर नैनीताल ।
११२ „ रामगोपाल प्रेमी आर्य समाज पीलीभीत ।
११३ „ शान्तिस्वरूप शास्त्री, लखनऊ ।

परिशिष्ट (घ)

आर्य प्रतिनिधि सभा के वैतनिक उपदेशक एवं प्रचारक, जिन्होंने सभा के उपदेश विभाग को सुशोभित किया व कर रहे हैं। ऋषि के मिशन को गांव-गांव पहुंचाने का सर्वाधिक श्रेय इन्हीं महानुभावों को है।

सर्व श्री पं० नन्दकिशोरदेव शर्मा,	पं० मुकुन्दराम शर्मा,	पं० बद्रीदत्त शर्मा,
,, प्रयागदत्त शर्मा	,, भूमित्र शर्मा	,, शंकरदयालु शर्मा
,, इन्द्रदत्त शर्मा	,, जानकीप्रसाद शर्मा	,, प्रभुदयालु शर्मा
,, हनुमानप्रसाद शर्मा	,, कृष्णदेव शर्मा	,, रामेश्वर शर्मा
,, द्वारिकादत्त शर्मा	,, बसन्तलाल शर्मा	,, मनुदत्त शर्मा
,, मनुदत्त प्रेमतीर्थ	,, बिहारीलाल जी	,, मुत्सद्दीलाल शर्मा
,, निरंजनदेव शर्मा	,, भवदेव जी	,, रुद्रदत्त शर्मा
,, शान्तिस्वरूप जी	,, ज्वालादत्त जी	,, योगेन्द्रदेव जी
,, विष्णुदत्त जी	,, वाचस्पति जी	,, श्रीकृष्ण अवस्थी
,, धर्मदत्त जी	,, रामानन्द जी	,, शालिग्राम जी
,, देवीशंकर शर्मा	,, श्रीराम शर्मा	,, ऋषिराम जी
,, वंशीधर पाठक	,, कृष्णलाल नागर	,, गदाधरसाद जी
,, गणेशदत्त जी	,, सोमदत्त जी	,, राजेन्द्रदेव जी
मुंशी सिंह जी	,, भान सिंह जी	,, सत्यव्रत शर्मा
,, इन्द्रजीत जी	,, स्वामी बालानन्दजी	,, डोरीलाल जी
,, गोविन्दराम जी	,, शिवदत्त जी	,, रूपनारायण शर्मा
,, रतन सिंह जी	,, गंगा सिंह जी	,, बस्तीराम जी
,, ललिता प्रसाद जी	,, पूर्णानन्द जी	,, यादव सिंह जी
,, रामदयाल जी	,, शिवशर्माजी	,, अयोध्याप्रसाद जी
,, तृषाराम जी	,, प्यारेलाल शर्मा	,, चैनसुख जी
,, मनोहर सिंह जी	,, गंगासहाय जी	,, बद्रीनाथ जी
,, बुलीचन्द जी	,, रामचन्द्र शास्त्री	,, श्रवण सिंह जी
,, शेरसिंह कश्यप	,, खूबसिंह जी	,, नानकचन्द्र शास्त्री
,, यशपाल विद्याभूषण	,, दीवानचन्द जी	,, भगवान सिंह जी

,, रेवानन्द जी ,, सुधाकर आयुर्वेद शिरोमणि ,, रुद्रदेव शास्त्री
,, उदय सिंह जी ,, द्वारिकादत्त जी ,, जियानन्द जी
,, राजाराम जी शास्त्री ,, सरस्वतीदेवी जी ,, काशीनाथ शुक्ल
,, कुंवरपाल सिंह जी ठा० तेज सिंह जी ,, धर्मसिंह जी
,, वाबूराम शर्मा पं० विन्ध्येश्वरीप्रसादजी,, वि० भा० पं० गोपालदत्त शास्त्री

ओंकार मिश्र शास्त्री 'प्रणव' वि०भा० पं० प्रकाशवीर जी शास्त्री
वि०भा० पं० वाचस्पति शास्त्री वि०भा० पं० रुद्रदत्त जी शास्त्री
,, ,, सच्चिदानंद शास्त्री ,, ,, रुद्रमित्र शास्त्री
,, ,, ओंमप्रकाश शास्त्री श्री पं० सत्यमित्र जी शास्त्री
,, वृज वहादुर जी ,, नारायण सिंह जी ,, वुद्धिराम जी
,, सत्यदेव जी ,, रघुवीरदत्त शर्मा ठा० नत्था सिंह जी
,, होरीलाल जी ,, भूपनारायण जी श्री बसन्त सिंह त्यागी
,, रामस्वरूप शर्मा ,, गेंदाराम जी ,, हुकुम सिंह जी
,, बल्देवप्रसाद जी ,, रमेशदत्त शास्त्री ,, रामचन्द्र शर्मा
,, खेमसिंह जी ,, महिपाल सिंह जी ,, कुंवरबहादुर जी
,, देशवन्धुअधिकारी ,, सत्यव्रत जी ,, धर्मराज सिंह जी
,, यशपालशास्त्री काव्यतीर्थ ,, विश्वप्रिय जी ,, पीताम्वर सिंह जी
,, वेदानन्द जी ,, कान्तिचन्द्र प्रभाकर ,, भगवानदत्त शर्मा
,, सर्वगुण प्रसाद जी ,, सूर्यवली सिंह जी ,, हेमचन्द्र शर्मा
,, रुद्रदत्त सिंह जी ,, सुखराम जी ,, राधिकाप्रसाद जी
,, गंगासिंह जी ,, रामनाथ सिंह जी ,, तोताराम जी जुगराण

,, रामशरण शर्मा ,, विश्वप्रिय जी ,, कार्थेन्द्रशास्त्री
,, विपिनराय जी ,, विद्याभास्कर जी ,, रामचन्द्र शास्त्री काव्यतीर्थ

,, महादेवप्रसाद शास्त्री ,, महेश्वरप्रसाद जी ,, सूर्यनारायणजी शर्मा
वि०भा० पं० विश्वेश्वर जी ,, भारत मित्र शास्त्री ,, लक्ष्मणदेव सिद्धांत-भूषण

,, ,, शिवचंद्र शास्त्री जी	,, धर्मदत्त आनन्द	,, शिवनारायण वेदपाठी
,, रामकौशिक जी	,, भगवानदास शर्मा	,, मानसिंह शर्मा
,, भानुचरणसिद्धांत शास्त्री	,, रामपालसिंह जी	,, खजानसिंह जी
,, महीपाल सिंह जी	श्रीमती गायत्रीदेवी जी	,, शिवबिहारी सिंह जी
,, जगदीशभूषण जी	श्री खड़गपालसिंह जी	,, मंगलदेव शर्मा
,, श्यामसुन्दर शास्त्री	,, रामप्रताप जी	,, ब्रह्मदत्त जी
,, कुंवरभद्रपाल सिंह जी	,, नरपत सिंह जी	,, गजराज सिंह जी
,, निरंजन प्रसाद जी	,, देवव्रत जी	,, हरिदेवशर्मा शास्त्री
,, सत्यपाल शास्त्री	,, स्वर्णलता देवी	,, मेघराज जी
,, प्रकाशवीर जी	,, खेमचन्द्र जी	,, ताराचन्द्र जी
,, कृष्णलाल आर्य	,, घनानन्द शर्मा	,, रामस्वरूप आर्य मुसाफिर
,, लालचन्द्र शर्मा	,, महाबीर प्रसाद जी	,, विश्वम्भरदत्त धनुर्धर
,, बालकृष्ण शर्मा	,, श्रीपाल सिंह जी	

परिशिष्ट (ङ)

सभा के उल्लेखनीय कर्मचारी

१. श्री नारायण गोस्वामी कोटला (आगरा)—आप आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता हैं। स्वराज्य आन्दोलन में भी आपने विशेष भाग लिया। पं० हरिशंकर शर्मा के आप अनन्य भक्त हैं। उनकी प्रेरणा पर अपनी वैद्यक त्याग कर सन् १९२० ई० से सभा में कार्य कर रहे हैं। आर्य मित्र और आर्यभास्कर प्रेस के विशेष अनुभवी कार्यकर्ता हैं।

श्री बाबूराम जी भारती, अतरौली (अलीगढ़)—जनवरी सन् १९२२ से आज दिन तक आप सभा कार्यालय में कार्य कर रहे हैं। सन् ३८ ई० से सभा के मुख्य लेखक एवं कार्यालयाध्यक्ष आप ही हैं। सभा के कार्यालय के संचालन में आपका प्रयत्न सराहनीय है।

श्री सत्येन्द्रबन्धु वीरगांव टिटौटा, (बुलन्दशहर)—आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता हैं। लगभग ३० वर्ष तक आपने सभा के उपदेशक विभाग में बड़े मनोयोग से कार्य किया। अब आप अपने जिले की आर्यसमाजों को प्रगतिशील बनाने में निरन्तर योगदान कर रहे हैं।

श्री बनवारीलाल जी मुरादाबाद—आप आर्यसमाज के उत्साही कार्यकर्ता रहे हैं। सभा में लगभग २० वर्ष भूसम्पति विभाग का कार्य बड़ी निपुणता के साथ करते रहे। इस समय अपने गांव में हैं।

श्री राजबहादुर जी विद्यारत्न, गोलागोकरननाथ, (खीरी)—आपने भी ३ वर्ष के लगभग सभा का कार्य संलग्नता पूर्वक किया है।

श्री पन्नालाल जी शर्मा, मर्थना इटावा—आप सभा कार्यालय में सन् १९४६ से कार्य कर रहे हैं। सभा एवं मित्र और प्रेस के प्रत्येक विभाग में कार्य कर चुके हैं।

श्री कृष्णगोपाल शर्मा सिकन्दराराऊ (अलीगढ़)—आप भी लगभग ३ वर्ष से कार्य कर रहे हैं। इस समय कोष विभाग के एकाउन्टेन्ट पद पर बड़ी संलग्नता से साथ कार्य कर रहे हैं। सभा भवन की स्थापना काल से आज दिन तक संलग्नता से कार्य करने वाला माली भदई है।